पण्डित ईश्वर कौल कृत

कश्मीरशब्दामृतम्

अनुवाद और व्याख्या

डॉ. सुशीला सर



पण्डित ईश्वर कौल कृत

कश्मीरशब्दामृतम्

अनुवाद और व्याख्या

डॉ. सुशीला सर





पण्डित ईश्वर कौल

कृत

कश्मीरशब्दामृतम्



पण्डित ईश्वर कौल

कृत

कश्मीरशब्दामृतम्

अनुवाद और व्याख्या

डॉ. सुशीला सर

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

ISBN : 978-81-7408-669-3

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (Deemed University), नई दिल्ली
के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित



अयन प्रकाशन
1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030
दूरभाष : 2664 5812 / 9818988613
e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com
website : www.ayanprakashan.com

•

मूल्य : 245.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2014

KASHMIRSHABDAMRITAM (Translation and commentary)
by Dr. Sushila Sar



मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

आभार

श्री ईश्वर कौल कृत 'कश्मीरशब्दामृतम्' एक महत्त्वपूर्ण कृति है। कश्मीरी भाषा सम्बन्धी ऐसा विश्लेषणात्मक चिंतन किसी अन्य ग्रन्थ में दुर्लभ है। प्रस्तुत अध्ययन इस गहन चिंतन की व्याख्या का एक विनम्र प्रयास है।

अध्ययन-यात्रा में प्रतिष्ठित व्याकरणाचार्य प्रोफेसर हर्षनाथ मिश्र मेरी हर छोटी-बड़ी शंका का निवारण, पिता सन्निभ स्नेह से करते रहे। उन के उत्साह वचन ही मेरे मनोबल का आधार बने रहे। तपस्वी पिता पंडित प्रेमनाथ कौल के आशीर्वाद ने मुझे निरन्तर गतिशील रखा। मेरा यह प्रयास उन की आकांक्षा का आंशिक प्रतिफलन ही है।

प्रख्यात भाषाविद् प्रोफेसर ब्रज बिहारी काचरू के तात्कालिक उद्बोधन ने मुझे तन्द्रा से मुक्त किया, और इस परियोजना में गति आ गई। उन के सम्प्रेरण ने संजीवनी का कार्य किया। श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ के पूर्व उपकुलपति प्रोफेसर श्रीधर वशिष्ठ के बहुमूल्य परामर्श से यह कार्य प्रकाशन स्वरूपता को प्राप्त हुआ। उन के सहज और सरल स्वभाव ने मार्ग के सभी अवरोधों का परिहार कर दिया।

एशियाटिक सोसाईटी कलकत्ता द्वारा प्रकाशित 'कश्मीरशब्दामृतम्' सौ वर्ष से अधिक पुरातन कृति है। जीर्ण और भंगुर पृष्ठों को सम्भालना कठिन है। इस समस्या के समाधान हेतु समकालीन भाषाविज्ञान के विशेषज्ञ, प्रोफेसर पेरी भास्कर राव देवदूत के रूप में अवतरित हुए। उन्होंने ग्रन्थ की सुपाठ्य और सुबन्ध प्रति उपलब्ध कराई।

शब्द-शास्त्री आचार्य नन्द लाल मेहता 'वागीश' का महत्त्वपूर्ण परामर्श, सामान्य कथन को भी आनन्दवर्द्धन का ध्वन्यात्मक विमर्श प्रदान करता है। यह परामर्श मुझे समय समय पर उपलब्ध रहा।

पतिदेव डॉ. मोहन लाल सर मेरी प्राणोर्जा हैं। मेरे प्रति जो उन का विश्वास है, उस से मैं अभिभूत हूँ, इसलिए औपचारिक शब्द-विधान मेरे लिए सहज नहीं है। समीर और ऋतुराज का सहयोग अकथनीय है। रेणु और सुषमिता के कर्त्तव्यपरायण भाव से मेरा कार्य सुकर हो गया। यास्क, दिव्यांशी, प्रशस्ति और कामाक्षी का आमोद-प्रमोद मेरे हर प्रयत्न को पंख प्रदान करता रहा।

कृति को प्रकाशन योग्य बनाने के लिए श्री भूपाल सूद ने अथक परिश्रम किया। उन की दृढ़ इच्छाशक्ति से मार्ग के सभी व्यवधान परास्त हो गए, और पुस्तक का प्रकाशन संभव हो सका। उन के लिए मेरी अनन्त शुभकामनाएँ। प्रिय अतुल अग्रवाल ने पांडुलिपि के कम्प्यूटरीकरण का कार्य पूर्ण मनोयोग से सम्पन्न किया। अतुल को असीम आशीर्वाद।



विषय सूची

भूमिका

ईश्वर कौल का 'कश्मीरशब्दामृतम' 1898 ईसवी में, जार्ज ग्रियर्सन ने, पंडित मुकुन्दराम शास्त्री के सहयोग से सम्पादित किया, तथा एशियाटिक सोसाईटी द्वारा प्रकाशित हुआ। मंगलाचरण में ग्रंथ का प्रारंभ सोमवार कार्तिक शुक्ल पंचमी 1932 वि. संवत उल्लिखित है। यह संकेत भी प्रस्तुत है, कि उक्तकार्य सम्पन्न करने में पाँच वर्ष लगे हैं।

ग्रियर्सन ने ग्रन्थ के लिए दो प्राक्कथन लिखे हैं। पहले का शीर्षक 'नोट' (Note) तथा दूसरे का 'प्रीफ़ेस' (Preface) दिया गया है। दोनों के कथ्य में कुछ समानताएँ तो हैं, किन्तु प्रीफ़ेस में ईश्वर कौल के संक्षिप्त जीवन वृत के साथ-साथ आख्यात प्रक्रिया का भी वर्णन है। लेखों में ग्रन्थ की सीमित समीक्षा भी की गई है। ये दोनों महत्त्वपूर्ण लेख वर्तमान अध्ययन में यथावत विद्यमान है।

ग्रन्थ की विषय-वस्तु इस बात का प्रमाण है, कि ईश्वर कौल कश्मीरी भाषा की सम्पूर्ण व्याकरणिक व्यवस्थाओं के प्रति सचेत थे। इन सभी व्यवस्थाओं को यथा संभव अभिव्यक्त भी किया गया है। इन के द्वारा कश्मीरी-संस्कृत शब्दकोश 'ईश्वरकोश' का निर्माण यह बात सिद्ध करता है, कि कश्मीरी भाषा पर इन का अधिकार अप्रतिम था। ईश्वर कौल इस कोश को पूरा नहीं कर सके। यह कार्य जार्ज ग्रियर्सन ने सम्पन्न किया।

वर्तमान अध्ययन में सूत्र तथा उन का स्पष्टीकरण यथावत अंकित हैं। इस के पश्चात स्पष्टीकरण का हिन्दी में भाषान्तरण दिया गया है। भाषान्तरण के उपरान्त व्याख्यात्मक टीका प्रस्तुत है। प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए, कहीं कहीं पर टीका का स्वरूप विस्तृत है। भाषान्तरण और व्याख्या में कश्मीरी उदाहरणों के लिए वर्तमान उच्चारण तथा प्रचलित देवनागरी चिन्हों का ही उपयोग किया गया है। कालान्तर में यदि किसी शब्द के उच्चारण में परिवर्तन आ गया है, तो, संदर्भ की आवश्यकता अनुसार कहीं कहीं पर वर्तमान उच्चारण के पश्चात् पूर्व उच्चारण को कोष्ठक में रखा गया है। 'ले' धातु का कश्मीरी पर्याय है, – **हे**। पूर्व में इस का उच्चारण **'हि'** था, अतः सन्दर्मित स्थानों पर **हे** के आगे **हि'** कोष्ठक में अंकित है, यथा – **हे (हि)**।

'कश्मीरशब्दामृतम्' भाषा का विस्तृत रूपात्मक विश्लेषण तो है ही, साथ

ही साथ यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ भी है, जिस में उस समय के शब्द, पद और पदरूप सुरक्षित हैं। वर्तमान भाषा रूप के संदर्भ में, इस व्यतिरेक का अध्ययन भाषा के विकास क्रम का परिचय प्रस्तुत करता है।

उस समय कश्मीरी लिखने के लिए देवनागरी की व्यवस्थित विधा उपलब्ध न होने के कारण रूपात्मक परिवर्तन अंकित करना जटिल कार्य था। इसी कारण, वर्तमान में, सूत्र का अध्येता टीका के अभाव का अनुभव करता रहा। अक्षर संकेत परिपाटी के अन्तर्गत वर्णित 'अप्रसिद्ध संकेत' लिपि संकोच प्रदर्शित कते हैं। **दरु** शब्द में **द** के ऊपर डंडी तथा **पपू** में **प** के ऊपर की डंडी का ध्वन्यात्मक मूल्य अलग अलग है।

हिन्दी अनुवाद और टीका में, कश्मीरी शब्दों के लिए, संशोधित और प्रचलित चिन्हों के प्रयोग से उक्त संकोच का निवारण हो गया है। शब्दांत की हल चिन्ह युक्त ु, ू तथा ि मात्राओं को भी तत्सम्बद्ध सूत्रों में स्पष्ट किया गया है। उदाहरण के लिए 2.1.21, 30 सूत्र देख सकते हैं। उच्चारण के धरातल पर हल चिन्ह युक्त ु अथवा ू मात्रा की प्रतीति नहीं होती। हल चिन्ह युक्त ि मात्रा की प्रतीति तालव्यकरण में है। ग्रन्थ में तालव्यकरण को 'यत्व की संज्ञा दी गई है। वर्तमान अध्ययन में इस को **य** से ही अंकित किया गया है।

रूपात्मक प्रक्रिया में उच्च अथवा मध्य पश्च वर्तुलाकार स्वर यदि निम्न हो जाता है, तो उस को 'वत्व' की संज्ञा से अभिहित करके **व** से अंकित किया गया है। देवनागरी में कश्मीरी लिखने का कार्य अतीत में भी हो रहा था, परन्तु पिछले पाँच-सात वर्षो में यह कार्य तब गतिमान हो गया, जब वर्तमान संशोधित चिन्हों का प्रयोग व्यापक होने लगा। ये चिन्ह टकसाली तो हो गए हैं, पर वर्तनी को स्थिर होने में अभी समय लग सकता है। प्रस्तुत पुस्तक ने इस क्षेत्र में भी कुछ प्रयत्न किया है। कश्मीरी भाषा का निम्न-पश्च-अवर्तुलाकार स्वर अर्थात **ऑ** यदि नाक से उच्चरित है, तो चन्द्रबिन्दु डालना भी आवश्यक है। (हिन्दी में अनुनासिक स्वर को चन्द्रबिन्दु से ही अंकित किया जाता है।) 'चील' के लिए जो कश्मीरी शब्द है, उस में, इसी कारण, अर्द्धचन्द्र भी चाहिए और चन्द्रबिन्दु भी। ऐसी अवस्था में शब्द की वर्तनी **गॉँठ** होगी। स्पष्ट है, कि वर्तमान कुंजि पटल ऐसे शब्दों की शिरोरेखा तोड़ता है। सॉफ्टवियर का संशोधन ही यह दोष दूर कर सकता है। वर्तनी की एक और समस्या है, संयुक्त व्यंजन के साथ वत्व अंकित करना। मुझे विश्वास है कालांतर में प्रयोग की व्यापकता, वर्तनी की ऐसी सभी असुविधाओं का समाधान खोज निकालेगी।

मूल शब्द के साथ संयुक्त न होने वाले प्रयोजन परक पद को भी ग्रन्थ में प्रत्यय कहा गया है। 'सुन्द' सम्बन्ध कारक का प्रयोजन परक पद है। 2.3.14

सूत्र इस को प्रत्यय स्वीकार करता है। वर्तमान में ऐसे प्रयोजन परक पदों को परसर्ग कहा जाता है। प्रत्यय वह अंश हैं, जो मूल शब्द के साथ संयुक्त हो जाते हैं। 8.3.77 सूत्र सहायक क्रिया के वर्तमान कालिक रूप **छु** को भी प्रत्यय मानता है। भाषा-विश्लेषण में सहायक क्रिया की सत्ता प्रत्ययात्मक नहीं है।

कश्मीरी भाषा में सहायक क्रिया **आसुन** 'होना', मुख्य रूप से काल विमर्श का द्योतक है। तीन कालोंमें इस के रूप हैं – **छु** 'है' **ओस** 'था' तथा **आसि** 'होगा'। ये तीनों रूप अन्य पुरुष एकवचन के हैं। मध्यम् पुरुष और उत्तम पुरुष रूप निर्दिष्ट सार्वनामिक प्रत्यय ग्रहण करते हैं। ग्रन्थ में वर्तमान कालिक रूप **छु** को **छुह्** अंकित किया गया है। 8.3.77 सूत्र की व्याख्या में उक्त हकार की चर्चा प्रस्तुत है।

ग्रन्थ में कश्मीरी उदाहरणों को संस्कृत में अनुवाद करके स्पष्ट किया गया है। मध्यम पुरुष सर्वनाम **चु** और **तोह्य** संस्कृत में 'त्वं' और 'भवान' हैं। अतः अनुवाद में कोई समस्या उत्पन्न नहीं हो सकती, परन्तु हिन्दी में इन दो सर्वनामों के लिए क्रमशः 'तू' और 'आप' के अतिरिक्त 'तुम' का प्रयोग भी संभव है। कश्मीरी भाषा के हिन्दी भाषान्तरण में **चु** के लिए 'तू' और 'तुम' दोनों उपलब्ध हैं। उदाहरण के आशय को ध्यान में रखते हुए इन में उपयुक्त सर्वनाम का चयन किया गया है।

इसी प्रकार हिन्दी की नित्य और सातत्य व्यवस्था, यथाः– 'राम पानी पीता है।' और 'राम पानी पी रहा है।', संस्कृत और कश्मीरी में, संरचना की दृष्टि से समान ही हैं। दोनों भाषाओं में ऐसे वाक्यों के लिए एक ही वाक्य संरचना उपलब्ध है। यथाः– संस्कृत – 'रामः जलं पिबति।', कश्मीरी – **राम छु त्रेश चवान।** उक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए हिन्दी अनुवाद करते समय कश्मीरी वाक्य के मूल अभिप्राय को ही व्यक्त करने का प्रयत्न किया गया है।

भाषा की सार्वनामिक प्रत्यय मूलक व्यवस्था दिलचस्प और नियमबद्ध है। ये प्रत्यय स्पष्ट रूप से दो प्रकार के हैं। 1. अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय तथा 2. निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्यय। ईश्वर कौल अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्ययों को 'प्रत्यय', (देखें 8.1.11, 12 सूत्र) तथा निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्ययों को 'संबन्ध प्रत्यय' (देखें 8.1.46 सूत्र) की संज्ञा देते हैं। 8.3.41 सूत्र में उक्त संबंध प्रत्ययों की संयुक्ति भी निर्दिष्ट है। दोनों प्रकार के प्रत्ययों में कुछ प्रत्यय समरूपी होने के कारण यह व्यवस्था अधिक प्रश्नोत्तेजक बन जाती है। **स** उत्तम पुरुष एक वचन का अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय है। यथाः– **बु पोकुस** 'मैं चला'। इस वाक्य में क्रिया पद का **स** इसी प्रकार का प्रत्यय है। **स** अन्य पुरुष एकवचन का निमित्तार्थ प्रत्यय भी है। यथाः– **हु पोकुस** 'वह उस के निमित्त चला'। वाक्य में

ये दोनों प्रकार के **स** एक साथ भी प्रयुक्त हो सकते हैं। यथा:– **बु पोकसस** 'मैं उस के निमित्त चला'। 8.1.33 सूत्र में उक्त प्रत्यय की विशद व्याख्या प्ररतुत है।

इसी प्रकार **ख** मध्यम पुरुष एकवचन का अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय है। **चु पोकुख** 'तू चला/तुम चले'। अन्य पुरुष बहुवचन का निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्यय भी **ख** है। **हु पोकुख** 'वह उन के निमित्ता चला। दोनों प्रकार के **ख** एक साथ प्रयुक्त नहीं हो सकते। ऐसी स्थिति में पहला **ख, ह** में परिणत होता है। **चु पोकहख** 'तू उन के निमित्त चला'।

भूत पाद के अन्तर्गत स्पष्ट किया गया है, कि भूत, सामान्यभूत, पूर्णभूत तथा अपूर्णभूत, भूतकाल के चार भेद हैं। भाषा का वर्तमान स्वरूप इस वर्गीकरण की पुष्टि नहीं करता। इस पाद के अन्तर्गत **आव** प्रत्यय युक्त धातु पूर्णभूत का रूप माना गया है। परन्तु, यदि **आव** प्रत्यय युक्त धातु के दिए गए संस्कृत अनुवाद पर ध्यान दें तो ज्ञात होता है, कि **आव** युक्त धातु दूरवर्ती भूतकाल का रूप है। आधुनिक भाषा प्रयोग में दूरवर्ती भूतकाल व्यक्त करने के लिए, अन्य पुरुष और उत्तम पुरुष हेतु **एयव** तथा मध्यम पुरुष एकवचन हेतु **एयोथ** और बहुवचन हेतु **एयोवु** प्रत्यय संयुक्त होते हैं। **आव** युक्त रूपों का प्रयोग उक्त अर्थ में अव्याप्त है। 8.3.14 एवं 46 सूत्र इस तथ्य को विस्तृत रूप से निरूपित करते हैं।

कश्मीरी में क्रिया से भाववाचक संज्ञा की व्युत्पत्ति व्यापक है। कृदन्त प्रक्रिया के भाव पाद में इस का विवेचन है। क्रिया के भाववाचक संज्ञा रूप का हिन्दी पर्याय उपलब्ध न होने की स्थिति में क्रिया के नामधातु रूप को ही लिया गया है। **वुठ** 'बट' धातुरूप है। **उन** प्रत्यय संयुक्त होने पर **वुठुन** 'बटना' को नामधातु मान सकते हैं। (शब्दकोश में क्रिया की प्रविष्टि जिस रूप में की जाती है, उसी को नामधातु मान सकते हैं)। **वुठ** धातु के साथ **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होने पर भाववाचक संज्ञारूप **वुठिन्य** व्युत्पन्न होता है। इस का हिन्दी अनुवाद 'बट' संभव है, परन्तु **नहव** 'मिटा' से व्युत्पन्न भाववाचक संज्ञा **नहवन** का हिन्दी अनुवाद नामधातु रूप में 'मिटाना' दिया गया है, क्योंकि इस शब्द का भाववाचक संज्ञा रूप हिन्दी में संभव नहीं है।

विदेशी विद्वानों ने ईश्वर कौल के इस व्याकरण का यथेष्ठ उपयोग किया है, और इस पर चर्चाएँ भी की हैं, परन्तु भारत में और विशेषकर कश्मीर में इस व्याकरण पर अधिक कार्य नहीं हो सका। यह प्रयत्न यदि भारतीय विद्वानों और अध्येताओं का ध्यान इस ओर आकृष्ट कर सके तो श्लाध्य होगा।

NOTE.

(PRELIMINARY.)

This edition of the Kaçmīraçabdāmṛta of Īçvara-kaula has been prepared from a single MS. which the Editor owes to the courtesy of Bābū Nilāmbara Mukarji. The MS. was presented to that gentleman by the Author himself, and has been carefully revised by him in his own handwriting. It may therefore be taken as the Author's final statement of his views on Kāçmīrī Grammar. Considering the authoritative nature of the MS. the Editor has not felt justified in making any alterations when preparing it for the Press. All that he has done has been to correct obvious slips of the pen. In most cases, when the Author in the course of his revision, altered a rule, he carefully made the necessary corrections in other portions of the work to which the rule incidentally applied. Here and there he has omitted to do so, and the Editor has exercised his discretion in making the necessary corrections or not. When it has been merely a question of spelling, he has usually done so, so as to secure uniformity in this most important particular. In more serious points, even when the Author is clearly wrong, *e.g.*, when he marks the first ु *u* in गुर् *gurᵘ*, a horse, as modified when it is certainly not modified (thus, गुर् *gurᵘ*), the Editor has left the text unaltered, and has contented himself with adding a footnote. Any additions made by the Editor, which are principally cross-references and a few rules added to make the work more accurate and more complete, are enclosed in square brackets. The reader can thus at once see what is the Author's and what is the Editor's.

Īçvara-kaula's work is a Grammar of the Kāçmīrī language written in Sanskrit, on the model of an ordinary *vyākaraṇa*. It is an excellent work, and might have been composed by Hēmacandra himself. Kāçmīrī is a language which is very little known, but which is of great importance for the purposes of comparative philology. Existing Grammars of it have been made by foreigners, and are imperfect. They all suffer from at least one grave fault, *viz.*, that they are based on the representation of the language which is displayed to them by the Persian alphabet, a system of characters which is quite unable to express the many broken vowel sounds in the language. Īçvara-kaula has adopted the Dēvanāgarī character, ingeniously modified to suit his purpose. With his system, there is no doubt, whatever, as to what is the exact sound of each word in the language. The phase

of the language which is illustrated by him is that spoken by Hindūs of the City of Çrīnagar. It differs slightly from the dialect used by Musalmāns and from that used in the rest of the valley. Former Grammars have been based on the Musalmān language, which is that used by 90 per cent. of the population of the Happy Valley. The Hindū dialect has, however, its value. It is the language of the educated ruling class, and its contamination with Persian has been prevented by a wholesome tradition, which had no hold on the Muḥammadan inhabitants. It is hence much the purest form of the tongue.

Īçvara-kaula is not always consistent in his spelling. At least in two cases, he represents the same sound by various modes of spelling. It is important to note these in order to understand his Grammar. In the first place, he treats ञ् *ñ* and ञ *ñ*ª as convertible terms. He nowhere says this, and unless the reader is forewarned he will find himself puzzled more than once. Thus on p. 14 he writes चामञ् *tsāmąñª*, but on p. 24 क्रपरामञ् *krpārāmąñ*, and again, on p. 103, he writes words like वञ् *wąñ*, although he has, only a page or two back, said that these feminines must end in *ū-mātrā*, and we should hence except वञ *wąñª*. In the second place, he is not consistent in his spelling of words which etymologically end in *i* followed by a consonant followed by *u-mātrā*. Take, for instance, the word किटु *kitª*. This is no doubt the correct etymological spelling, but the word is pronounced क्युत् *kyut*, and thus he occasionally writes similar words, as in the case of मंज़्युम् *manzyum*, on p. 64. He generally, however, spells it क्युटु *kyutª*, which is no doubt the best way of dealing with the problem; for to omit the *u-mātrā* would be to play havoc with all the Author's rules of declension. Sometimes Īçvara-kaula uses one system of spelling, and sometimes another, and, in this case, the Editor has not felt himself at liberty to choose only one method, as it would entail too free a treatment of the text.

The Editor had intended to prefix to the present instalment of the Grammar, an account of the rules of the Kāçmīrī language, as given by the Author; but an affection of the eyes has put a stop for the present to his studies, and he must postpone a formal introduction to the completion of the work. The part now issued takes the student down to the end of Declension. The work will be completed in one more instalment which will deal with the Verb. The Author commences his Grammar with a chapter on the rules of Sandhi or Combination of Vowels only. Then follows a chapter on Declension, divided into three sections, the first describing the declension of Nouns, Substantive and Adjective, the second the luxuriant varieties of the Vocative Case, and the third the declension of Pronouns. We next have a short chapter on Concordance and Composition of Nouns, and a long one on Secondary Suffixes, or the Formation of Nouns and Adjectives from other nouns and adjectives. The first part, now issued, concludes with a chapter on Indeclinables and another on the Formation of Feminines. The

second part will contain a *Dhâtupâṭha*, a chapter on Conjugation, and a chapter on Primary Suffixes, or the formation of Substantives, Adjectives, and various Verbal Forms from Roots.

In default of an exposition of the peculiarities of Kāçmīrī pronunciation, which, for the reason above stated the Editor is unable at present to give, he would refer the reader to his article on the Kāçmīrī vowel system which has appeared in the *Journal* of the Bengal Asiatic Society for 1896, pp. 280 & ff. This will be found to give all the necessary information, and to explain the system of spelling adopted by Īçvara-kaula.

The Editor has read the Grammar carefully through with Paṇḍit Mukunda Rāma Çāstrī, a Kāçmīrī born and bred in Çrīnagar, who came down to Patna for the purpose. The Paṇḍit has also read the proof sheets with him and has elucidated many doubtful points. The Editor is glad to have an opportunity of acknowledging the assistance which he has received from so learned and intelligent a co-worker.

The printing, which was a more complicated business than ordinary, has been carried out at Patna, under the Editor's personal supervision, and his thanks are due to the printers, Babu Rām Dīn Singh and Babu Sāhib Prasād Singh for the care with which the work has been carried out.

BANKIPUR:
17*th March*, 1897.

PREFACE.

This edition of the Kaçmīraçabdāmṛta of Īçvara-kaula has been prepared from a single MS. the possession of which I owe to the courtesy of Bābū Nīlāmbara Mukarji. The MS. was presented to that gentleman by the author himself, and has been carefully revised by him in his own handwriting. It may therefore be taken as the author's final statement of his views on Kaçmīrī Grammar. Considering the authoritative nature of the MS. I have not felt justified in making any alterations when preparing it for the Press. All that I have done has been to correct obvious slips of the pen. In most cases, when the author, in the course of his revision, altered a rule, he made the necessary corrections in other portions of the work to which the rule incidentally applied. Here and there he has omitted to do so, and I have exercised my discretion in making them myself or not. When it has been merely a question of spelling, I have usually done so, so as to secure uniformity in this most important particular. In more serious points, even when the author is clearly wrong, *e.g.*, when he marks the first उ *u* in गुर् *gur*ᵘ, a horse, as modified when it is certainly not modified (thus गुर् *gur*ᵘ), I have left the text unaltered, and have contented myself with adding a footnote. Any additions made by me, which are principally cross-references and a few rules added to make the work more accurate and more complete, are enclosed in round or in square brackets. The reader can thus at once see what is the Author's and what is the Editor's.

I am indebted to the kindness of Mr. Rishibar Mukherji, Chief Justice of Kaçmīr, for the following information regarding Īçvara-kaula, the author of this work. He was born on 2nd Çrāvaṇa, *kṛṣṇa-pakṣa*, 1890 V.S., corresponding to Thursday, July 4th, 1833 A.D., and died on 2nd Bhādrapada, *kṛṣṇa-pakṣa*, 1950 V.S., corresponding to Tuesday, August 29th, 1893 A.D., of heart disease, at the age of sixty or, according to Hindū reckoning, fifty-nine years. He came of a family which was learned in Sanskrit, and his father was Paṇḍit Gaṇēça-kaula, who died when his son was only three years old. Īçvara-kaula first studied under Pandit Ṭīkārāma Rāzdān, who was at the time one of the most renowned paṇḍits of Kaçmīr, and subsequently under Pandit Dēva-kṛṣṇa Jyautiṣī, of Benares, who had come to Jammū in the service of the late Mahārāja Raṇa-vīra Siṁha of Kaçmīr. He was also a good Persian scholar, and had a fair knowledge of Arabic. In the year 1861 A.D., he was employed by the Mahārāja in translating Persian and Arabic books into Sanskrit and Bhāṣā, and ten years later, in 1871 A.D., he was appointed Head Teacher of the Sanskrit School which was then opened by the Mahārāja in Çrīnagar on the suggestion of

Bābū Nīlāmbara Mukarji, the Prime Minister of the State. According to the Preface to his Grammar it was composed in 1932 V.S., corresponding to 1875 A.D., but his son, Paṇḍit Ānanda-kaula informs me that it was composed in 1931 V.S., and revised and added to in 1936 V.S. (1879 A.D.). In the year 1881 A.D., Mahārāja Raṇa-vīra Siṁha started a Translation Department in which books of various languages were translated into Sanskrit and Bhāṣā, and Īçvara-kaula was appointed its Director. The Mahārāja died in the year 1884, and fifteen days after his death the department was abolished, and Īçvara-kaula was appointed Jyautiṣī to the present Mahārāja Pratāpa Siṁha, which appointment he held till his death in the year 1893 A.D. Besides the Grammar which is now edited, he was author of several other works, including a Kōṣa, or Dictionary, of the Kāçmīrī language. None of these have been seen by me.

The present book is a Grammar of the Kāçmīrī language written in Sanskrit, on the model of an ordinary *vyākaraṇa*. It is an excellent work, and might have been composed by Hēma-candra himself. Kāçmīrī is a language which is very little known, but which is of great importance for the purposes of comparative philology. Existing Grammars of it have been made by foreigners, and are imperfect. They all suffer from at least one grave fault, *viz.*, that they are based on the representation of the language which is displayed to them by the Persian alphabet, a system of characters which is quite unable to express the many broken vowel sounds in the language. Īçvara-kaula has adopted the Dēva-nāgarī character, ingeniously modified to suit his purpose. With his system, there is no doubt whatever as to what is the exact sound of each word in the language. The phase of the language which is illustrated by him is that spoken by Hindūs of the City of Çrīnagar. It differs slightly from the dialect used by Musalmāns and from that used in the rest of the valley. Former Grammars have been based on the Musalmān language, which is that used by 90 per cent. of the population of the Happy Valley. The Hindū dialect has, however, its value. It is the language of the educated ruling class, and its contamination with Persian has been prevented by a wholesome tradition, which had no hold on the Muhammadan inhabitants. It is hence much the purest form of the tongue.

Īçvara-kaula is not always consistent in his spelling. At least in two cases, he represents the same sound by various modes of spelling. It is important to note these in order to understand his Grammar. In the first place, he treats ञ़ ṅ and ञ ṅ° as convertible terms. He nowhere says this, and unless the reader is forewarned he will find himself puzzled more than once. Thus on p. 14 he writes त्रामञ् tsāmaṇū°, but on p. 24 क्रपरामञ् krpārāmaṇū, and again on p. 103, he writes words like वञ् waṇū, although he has, only a page or two back, said that these feminines must end in ū-mātrā, and we should hence expect वञ् waṇū°. In the second place, he is not consistent in his spelling of words which etymologically end in i followed by a consonant followed by u-mātrā. Take, for instance, the word किल kilᵘ. This is no doubt the correct etymological spelling, but the word is pronounced क्युत् kyut, and he occasionally writes similar words in this way, as in the case of मनृयुम् maṇzyum, on p. 64. He generally, however, spells it क्युत् kyutᵘ, which is no doubt the best way of dealing with the problem; for to omit the

u-mātrā would be to play havoc with his rules of declension. Sometimes Īçvara-kaula uses one system of spelling, and sometimes another, and, in this case, I have not felt myself at liberty to choose only one method, as it would entail too free a treatment of the text.

It is unnecessary to give here an account of the rules of the Kāçmīri language as developed by the author in this Grammar. This has already been done by me in the pages of the *Journal* of the Asiatic Society of Bengal for the years 1896–1898, and the series of articles will shortly be republished in book form. Suffice it to say that the author commences his Grammar with a chapter on the rules of Sandhi or Combination of Vowels only. Then follows a chapter on Declension, divided into three sections, the first describing the declension of Nouns, Substantive and Adjective, the second the luxuriant varieties of the Vocative Case, and the third the declension of Pronouns. We next have a short chapter on Concordance and Composition of Nouns, and a long one on Secondary Suffixes, or the Formation of Nouns and Adjectives from other nouns and adjectives. The portion dealing with the Noun concludes with a chapter on Indeclinables and another on the Formation of Feminines. The latter half of the work, dealing with the Verb contains a *Dhātupāṭha*, a chapter on Conjugation, and a chapter on Primary Suffixes, or the formation of Substantives, Adjectives, and various Verbal Forms from Roots. To the Grammar Proper, I have added an Index of Verbal Roots arranged according to their final letters, an Index of Sūtras, an Index of all Kāçmīrī words and sentences quoted, and a list of *gaṇas*. I trust that these will make the work more useful to the student.

An exposition of the peculiarities of Kāçmīrī pronunciation will be found in my article on the Kāçmīrī vowel system which has appeared in the *Journal* of the Bengal Asiatic Society for 1896, pp. 280 & ff. This will be found to give all the necessary information, and to explain the system of spelling adopted by Īçvara-kaula.

I have read the Grammar through with Paṇḍit Mukunda Rāma Çāstrī, a Kāçmīrī born and bred in Çrīnagar, who came down to Patna for the purpose. The Paṇḍit has also read the proof sheets with me and has elucidated many doubtful points. I am glad to have an opportunity of acknowledging the assistance which I have received from so learned and intelligent a co-worker.

The printing, which was a more complicated business than ordinary, has been carried out at Patna, under my personal supervision, and my thanks are due to the printers, Bābū Rām Dīn Singh and Bābū Sāhib Prasād Singh for the care with which the work has been accomplished.

BANKIPUR:
1st *May*, 1898.

जीवन परिचय

ऋषिपीर, आलीकदल के निवासी पंडित गणेश कौल का परिवार संस्कृत भाषा में निष्णात था। उन के तीन पुत्रों में कनिष्ठ थे ईश्वर कौल। इन का जन्म 4 जुलाई 1833 ई. को हुआ। बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि सम्पन्न। ये केवल तीन वर्ष के थे, जब इन की माँ का देहांत हो गया। जब दस वर्ष के थे, तो पिता का भी निधन हो गया। ज्येष्ठ भ्राताओं का आश्रय तो था, परन्तु माता-पिता का अभाव एक भयंकर त्रासदी थी। ऐसा होते हुए भी ईश्वर कौल की ज्ञान-पिपासा कभी कम नहीं हुई। भाग्य से इन का साक्षात्कार प्रधान रईस श्री तिलकचन्द्र के साथ हुआ। मेधावी बालक की प्रतिभा को पहचानते हुए, उन्होंने बालक के अध्यापन का उत्तरदायित्व प्रसिद्ध विद्वान पंडित कपिल भट्ट यक्ष को सौंपा। पंडित कपिल भट्ट यक्ष के प्रशिक्षण ने इस बालक को अनेक विषयों में पारंगत बनाया, ज्योतिष में भी। इसी मध्य ईश्वर कौल ने कश्मीर के एक और प्रख्यात विद्वान पंडित टीका राम राज़दान से भाषा विषयक शास्त्रीय ज्ञान भी प्राप्त किया।

विधाता का विधान कि पंडित कपिल भट्ट का अकस्मात देहावसान हो गया। ईश्वर कौल असहाय हो गए। तत्कालीन परिस्थितियों में राजानुकम्पा के बिना अध्यावसाय संभव न था। इसलिए ईश्वर कौल ने जम्मू जाने का निर्णय किया। वहाँ पहुँच कर, संयोग से, इन की भेंट एक राजकीय व्यक्ति से हुई। राजकीय व्यक्ति की मुखमुद्रा देख कर ईश्वर कौल ने कहा, आप के घर में जो पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ है, उस का भाग्य उज्जवल है। राजकीय पुरुष यह सुन कर चकित हो गए। यह सच था, कि कुछ दिन पूर्व उन को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी। वे उन्हें राजदरबार ले गए। वहाँ पर महाराजा रणवीर सिंह भी ईश्वर कौल की प्रखर प्रवीणता से प्रभावित हुए।

उस समय राजदरबार में वाराण्सी के विख्यात विद्वान पंडित देवकृष्ण ज्योतिषी के रूप में नियुक्त थे। शिक्षा-दीक्षा के लिए ईश्वर कौल को इन्हीं का मार्गदर्शन उपलब्ध रहा। ज्योतिष, व्याकरण, साहित्य और काव्यशास्त्र का ज्ञान प्रखर होता गया। साथ-साथ ईश्वर कौल ने फारसी भाषा का गहन अध्ययन भी किया। अरबी भाषा भी सीख ली।

महाराजा रणवीर सिंह के दरबार में, प्रायः विद्वत्सभाओं का आयोजन होता रहता था। ईश्वर कौल को इन सभाओं में भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वे एक परिश्रमी और मेधावी युवा के रूप में स्थापित हुए। उन को अनेक

पुरस्कारों से विभूषित भी किया गया।

1861 ईस्वी में ईश्वर कौल की नियुक्ति, फारसी और अरबी पुस्तकों के संस्कृत और कश्मीरी में अनुवाद के लिए की गई। दस वर्ष के उपरान्त 1871 ईस्वी में, जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन प्रधानमंत्री, बाबू नीलाम्बर मुखर्जी के परामर्श से, महाराज ने इन को श्रीनगर में स्थापित संस्कृत विद्यापीठ का प्राचार्य नियुक्त किया। कश्मीर में संस्कृत अध्ययन और अध्ययापन के सन्दर्भ में इस विद्यापीठ का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह ईश्वर कौल का ही प्रभाव था, कि विद्यापीठ लगभग सौ साल तक सक्रिय कार्य करता रहा। यह विद्यापीठ, बाग दिलावरखाँ, फतेहकदल में स्थित, सरकारी हाईस्कूल के परिसर में था।

संस्कृत, कश्मीरी तथा अन्य भाषा संबन्धी कार्यों के लिए 1881 ईस्वी में महाराजा रणवीर सिंह ने एक अनुसंधान विभाग की स्थापना की। ईश्वर कौल को इस विभाग का निदेशक नियुक्त किया गया। फारसी, अरबी और अन्य भाषाओं के अनुवाद के अतिरिक्त यहाँ पर कुछ मूलभूत अनुसंधान कार्य भी सम्पन्न हुए। अनुसंधानात्मक कार्यों की गुणवत्ता का विकास हो ही रहा था, कि नियति बलवती हुई, और 1884 ईस्वी में महाराजा रणवीर सिंह का देहावसान हो गया। उन के देहावसान के साथ ही अनुसंधान विभाग का कार्य भी रुक गया। ईश्वर कौल कुछ समय तक स्वतन्त्र कार्य करते रहे। परवर्ती शासक महाराजा प्रताप सिंह इन की प्रतिभा से पूर्णतया परिचित थे। वे अधिक समय तक इन्हें राजकीय उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं रख सके, अतः उन्हें राज्यज्योतिषी के पद पर विराजमान किया। 1893 ईस्वी में देह त्याग करने तक वे इसी पद पर बने रहे।

चिंतनशील होने के साथ-साथ, ईश्वर कौल परिमार्जित अभिव्यक्ति के स्वामी भी थे। इन्होंने जितने ग्रन्थों की रचना की, वे सभी उपलब्ध नहीं हैं। जम्मू के श्री रणवीर संस्कृत अनुसन्धान पुस्तकालय में जो पाण्डुलिपियां उपलब्ध हैं, उन के शीर्षक हैं– 1. कश्मीरशब्दामृतम् 2. दुर्भिक्षत्तारोदयास्ते 3. दशभाषोदयः 4. ग्रहदशाफलम् 5. ईश्वरकोशः।

दुर्भिक्षत्तारोदयास्ते पुस्तक शारदा लिपि में लिखी गई है। शेष चार कृतियों की लिपि देवनागरी ही है। जार्ज ग्रियर्सन ने 'कश्मीरशब्दामृतम्' और 'ईश्वरकोश' एशियाटिक सोसाईटी, कलकत्ता से प्रकाशित करवाए। 'कश्मीरशब्दामृतम्' यथावत प्रकाशित हुआ है, परन्तु ग्रन्थकार द्वारा 'ईश्वरकोश' को पूर्ण न किए जाने के कारण ग्रियर्सन ने ही उस को पूर्ण करने के उपरान्त प्रकाशित करवाया। ग्रंथों के शीर्षक ही इस बात को स्थापित करते हैं, कि पंडित ईश्वर कौल विलक्षण प्रतिभा के विद्वान थे।

ॐ श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

कश्मीरशब्दामृतं

लिख्यते ॥

यत्प्रसादादृना विघ्नगणा यान्ति ह्यगण्यताम् ।
अभीप्सिताय तं वन्दे शरदीव घनाघनाः ॥ १ ॥
तां वन्दे या चतुष्षष्टिवर्णरूपेण भारती ।
वागर्थरूपवन्यायां क्रीडयत्यखिलान्कृतीन् ॥ २ ॥
कश्मीरे संस्कृता भाषा ह्यभूदित्यनुमीयते ।
पूर्वं सैवाधुना कालवशात्संकरतामिता ॥ ३ ॥
सूत्रधातुनिबन्धेन शब्दाश्चाधुनिकाः क्रियाः ।
व्याक्रियन्ते तथा नोपभ्रष्टाः स्युस्ते पुनर्यथा ॥ ४ ॥
यस्य हृत्सदने वाञ्छे प्रभातो ऽच्छमपूरिते ।
इवाभीक्ष्णमसापत्न्यसूचके धरणीपतेः ॥ ५ ॥
तस्य राजाधिराजस्य जम्बूकश्मीरभूभुजः ।
श्रीमच्छ्रीरणवीराख्यसिंहस्यामिततेजसः ।
अतिवेलप्रसादाप्तवृत्तिना क्रियते त्विदम् ॥ ६ ॥
संवीक्ष्य कल्पनाभोगं हृष्यन्त्वस्मिन्सुपूरुषाः ।
स्वोत्पादने पितृद्वेषी कुहनो ऽन्यस्य का कथा ॥ ७ ॥

वेदव्याकरणे किल त्रिनयनाभ्यस्ते च सारस्वत
ऐन्द्रे सादर ऐन्दवे सुमनसां यो बाहुलेये ऽपि च ।
प्रीत्या ईश्वरकौल ईशनिरतः कश्मीरशब्दामृतं
सद्वर्षे सुतिथौ शुभोडुनि शुभे घस्रे च मासे व्यधात् ॥ ८ ॥

व्याख्या–

मंगलाचरण के रूप में उक्त श्लोकों के माध्यम से, पंडित ईश्वर कौल वागदेवी की स्तुति करते हुए विघ्नहर्ता श्री गणेश को नमस्कार करते हैं।

ईश्वर कौल का अनुमान है, कि पूर्व काल में कश्मीर जनपद की भाषा संस्कृत रही होगी। वे महाराजाधिराज श्रीमद् श्री रणवीर सिंह के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहते हैं, कि उक्त कार्य उनके प्रसाद का ही प्रतिफल है। आठवें श्लोक में ईश्वर कौल कूट शब्दों में कश्मीरशब्दामृतम् ग्रन्थ सम्पूर्ण होने की तिथि का वर्णन करते हैं। पाद टिप्पणी के आधार पर यह तिथि है : सोमवार, कार्तिक शुक्ल पंचमी संवत् 1932, और नक्षत्र ज्येष्ठा।

[८। अस्य श्लोकस्य श्लिष्टार्थपदेभ्यो ऽयमर्थान्तरो व्यज्यते, वेदव्याकरणे वेदा इति संख्यार्थे चत्वारि, व्याकरणानि अष्टौ, अङ्कानां वामतो गतिरिति नयेन तच्चतुरष्टरूपं संख्यानं चतुरशीतिर्भवति तस्मिंश्चतुरशीत्यात्मके ८४ संख्याने त्रिनयनाभ्यस्ते त्रिभिर्नयनाभ्यां द्वाभ्यां पूर्वरीत्या त्रयोविंशत्या अभ्यस्ते गुणिते सति द्वि२त्रि३नव९एका१त्मिका संख्या अर्थत एकोनविंशतिः शतं द्वात्रिंशच्च जायते, तत्संख्यात्मके सद्वर्षे एकोनविंशतिशताधिकद्वात्रिंशे वैक्रमे संवत्सरे इत्यन्वयः, तथा सारस्वते सुतिथौ सरस्वतीदेवतायां तिथौ पञ्चम्यामिति यावत्, पुनश्च ऐन्द्रे शुभोडुनि सति इन्द्रदेवतात्मके ज्येष्ठानक्षत्रे, घस्रे च शुभे ऐन्दवे इन्दुर्देवता-स्येत्यैन्दवः सोमवासरे इत्यर्थः, मासे च बाहुलेये बहुलाः कृत्तिकाः तद्युता पौर्णमासी यस्मिन्मासे कार्तिके इत्यर्थः. शुभपदेन अवशिष्टः शुक्लपक्षो ऽवगम्यते इति भावः ॥ तथाकृते । संवत् १९३२ कार्तिकशुक्लपञ्चम्यां सोमवासरे ज्येष्ठानक्षत्रे ईशनिरतः शिवभक्त ईश्वरकौलः सुमनसां सहृदयानां देवानां च प्रीत्यै कश्मीरशब्दामृतम् नाम इदं कश्मीरभाषाव्याकरणं व्यधात् निरमादिति ॥]

ॐ अक्षरसंकेतपरिपाटीयम् ।

तत्रादौ काश्मीरभाषायां वर्गचतुर्थाक्षराणि क्वचिन्नोच्चार्यन्ते ञकारश्च प्रसिद्धोच्चारणतया न शब्दायत इति बोध्यम् ॥

प्रसिद्धा वर्णाः ।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः क ख ग ङ च छ ज ट ठ ड त थ द न प फ ब म य र ल व श ष स ह क्ष ॥

अप्रसिद्धानां संकेतः ।

अं आं उं ऊं ऋं च्र छ्र ज्र स्र ॥

भाषाशब्दाः ।	अंगुन् ।	अंलुत् ।	आंश्विद् ।	उंजुर्ल् ।	ऋंथ् ॥	
संस्कृताः शब्दाः ।	अग्निः ।	अलक्तः ।	आश्विनः ।	उज्ज्वलः ।	ऋतुः ॥	
भाषाशब्दाः ।	पंप् ।	तंनु । दांडू ।	गुरुई [?] ।	तूरू ।	कृंमू ॥	
संस्कृताः शब्दाः ।	पङ्कः ।	तनु । श्मश्रु ।	अश्वः ।	शीतम् ।	कूर्मः ॥	
भाषाशब्दाः ।	वंरि ।	पंपि । दंरि ॥	वंरु ।	पंपु ।	दंरु ॥	
संस्कृताः शब्दाः ।	वलयाः ।	पङ्काः । दृढाः ॥	वलयः ।	पङ्कः ।	दृढः ॥	
भाषाशब्दाः ।	दंरू । पंपू । वंरू ॥	च्रंड् । छ्रंड् ।	जंड् ।	पोञ् ॥		
संस्कृताः शब्दाः ।	दृढा । पङ्का । अप्रसूता ॥	बहु । रिक्तम् ।	बधिरः ।	पानीयम् ॥		

अत्रोर्ध्वचिह्नं स्वरस्यार्धोबिन्दुर्व्यञ्जनस्य ज्ञेया । तथा ऊकारमात्रा (पू) इकारमात्रा (रि) उकारस्य (रु) ज्ञेया ॥

अनुवाद–

अक्षर संकेत परिपाटी

ये तथ्य प्रारम्भ में ही प्रस्तुत हैं कि कश्मीरी भाषा में वर्ग चतुर्थ अक्षर का प्रयोग नहीं किया जाता तथा ञकार के भी प्रसिद्ध उच्चारण का व्यवहार नहीं है।

अप्रसिद्ध संकेत

भाषा शब्द	ऑगुन,	ऑलुत,	ऑशिद,	वव्ज़ुल,	रयुथ	
हिन्दी शब्द	अग्नि,	आलता,	अश्विन,	लाल,	ऋतु	
भाषा शब्द	पॉप,	तॉन,	दॉर,	गुर,	तुर,	क्रम
हिन्दी शब्द	पका,	पतला,	दाढ़ी,	घोड़ा,	ठंड,	कछुआ
भाषा शब्द	कॅस्य,	पॅप्य,	दॅस्य,	कॉर,	पॉप,	दॉर
हिन्दी शब्द	कंगन (एक से अधिक)	पके, (एक से अधिक)	मज़बूत,	कंगन,	पका,	दृढ़
भाषा शब्द	दॅर, पोन्य	पॅप,	कॅर,	चॉर,	छॉर,	ज़ॉर,
हिन्दी शब्द	दृढ़, पानी (स्त्रीलिंग)	पकी,	अप्रसूती,	अधिक,	रिक्त,	बहरा,

यहाँ पर ऊपर का चिन्ह स्वर के लिए तथा नीचे का बिन्दु व्यंजन के लिए है। ऊकार की मात्रा (पू) ईकार की मात्रा (रि् तथा उकार की मात्रा (रु) के नीचे का चिन्ह मात्रा के लिए है।

व्याख्या–

भाषा के अक्षरों को सूचिबद्ध करते हुए ईश्वर कौल ने स्पष्ट किया है, कि देवनागरी वर्णमाला के वर्ग चतुर्थ व्यंजन अर्थात् **घ झ ढ ध** और **भ** का कश्मीरी भाषा में यथावत उच्चारण नहीं होता। तात्पर्य यह है कि भाषा व्यवहार में घोष महाप्राण ध्वनियाँ अव्याप्त हैं। वे इस बात का उल्लेख भी करते हैं कि ञकार का संस्कृत सम्मत उच्चारण भाषा में नही है। भाषा की व्युत्पन्न प्रक्रिया इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि कश्मीरी का ञकार रूपात्मक दृष्टि से **न** का तालव्यकृत रूप है।

प्रसिद्ध वर्णों के अन्तर्गत देवनागरी के वे सभी वर्ण अंकित हैं जिनका कश्मीरी भाषा में प्रयोग है। इस सन्दर्भ में यह बात उल्लेखनीय है कि, **ऋ ॠ ऌ ॡ ऐ औ अं अः ङ ष** तथा **क्ष** का उच्चारण केवल आगत शब्दों में ही संभव है।

अप्रसिद्ध संकेतों के अंतर्गत ऊपर की छोटी डंडी एक से अधिक ध्वनि मूल्य प्रतिपादित करती है। **ऑशिद** 'आश्विन' में छोटी डंडी युक्त **आ** मध्य पश्च अवर्तुलाकार स्वर है, जबकि **पप** 'पका' के ऊपर छोटी डंडी ह्रस्व **ओ** का संकेत है, जिस को प्रस्तुत पुस्तक में **ॲ** से अंकित किया गया है। हल चिन्ह युक्त उकार की मात्रा 'ु' अथवा ऊकार की मात्रा 'ू' का प्रयोग कहीं कहीं पर शब्दान्त में किया गया है। इन को मात्रिक स्वरों की संज्ञा दी गई है। इन के उच्चारण का व्यवहार वर्तमान नहीं है, हालाँकि व्युत्पति प्रक्रिया की दृष्टि से इन का महत्व, ग्रंथ में यत्र-तत्र परिलक्षित है।

शब्दान्त में कहीं कहीं पर इकार की मात्रा '**ि**' भी हल चिन्ह युक्त है।

शब्दान्त व्यंजन यदि तालव्यकृत हो, तो इकार की मात्रा के नीचे हल चिन्ह लगाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन तालव्यकरण के लिए 'य' का ही प्रयोग करता है, इकार की मात्रा के नीचे हलचिन्ह का नहीं।

तत्रादौ
संधिप्रकरण 1

परम्परागत दृष्टि से प्रायः समान सत्ता वाले शब्दों में ही संधि का विधान है। ईश्वर कौल ने शब्द और संयुक्त होने वाले प्रत्यय की संधि को महत्व दिया है। अष्टाध्यायी सूत्र 1.4.109 'परः सन्निकर्षः संहिता' के आधार पर प्रत्यय की संधि को भी स्वीकार किया गया है। प्रस्तुत ग्रंथ में इस प्रकरण के अन्तर्गत 11(ग्यारह) सूत्र कहे गए हैं।

संधिसिद्धिः पदेषु ॥ १ ॥

अत्र वक्ष्यमाणशब्दशास्त्रे संधेः (अक्षरसंयोगस्य) सिद्धिः (विधानं) पदेषु (लिङ्गस्वरूपेषु धातुस्वरूपेषु च) विज्ञेया ॥

अनुवाद– **सूत्र 1.1.1**

यहाँ शब्द का अभिप्राय, लिंगस्वरूप पद तथा धातुस्वरूप पद है।

व्याख्या–

ग्रन्थ में प्रातिपदिक के लिए 'लिंग' का प्रयोग किया गया है। सूत्र इस तथ्य का उल्लेख करता है, कि प्रातिपदिक अथवा धातु के साथ संयुक्त होने वाले प्रत्यय संधि प्रकरण का विषय है। प्रस्तुत सूत्र अधिकार सूत्र है। आगामी सूत्र भी इसी प्रकार का है।

॥ न वाक्येषु ॥ २ ॥

अत्र तिङन्तसुबन्तसमुदायरूपेषु वाक्येषु संधिर्नावधार्यः ॥

अनुवाद– **सूत्र 1.1.2**

वाक्यों में प्रयुक्त तिङन्त और सुबन्त पदों में संधि नहीं होती।

व्याख्या–

पाणिनी धातु और प्रातिपदिक पदों को क्रमानुसार तिङन्त और सुबन्त कहते हैं। प्रस्तुत सूत्र के अनुसार, वाक्य में उक्त पद निकट होने पर भी इन की संधि संभव नहीं है।

॥ व्यञ्जनं परेण संधेयम् ॥ ३ ॥

ताप् उकु । अनेन संधौ कृते । तापुकु । आतपस्य ॥ इति सिद्धम् ॥ कर् यान् । अनेन संयोगे कृते कर्यान् । चकार । इति सिद्धम् ॥ पदेषु किम् । तिम आय् । ते आयाताः । अत्रोभयोः सुबन्ततिङन्तयोर्विद्यमानत्वात्संधिनिषेधः ॥

अनुवाद– सूत्र 1.1.3

ताप् उक सूत्र के अनुसार संधि के पश्चात् **तापुक** 'धूप का' सिद्ध है। **कर यान** प्रस्तुत सूत्र से संयुक्त होने पर **कर्यान** 'किया (दूरवर्ती भूतकाल)' सिद्ध है। पदों में ही क्यों? **तिम आय** 'वे आए' में सुबन्त और तिङन्त दोनों पद विद्यमान होने के कारण संधि का निषेध है।

व्याख्या–

ताप 'धूप' संज्ञा पद के साथ **उक** प्रत्यय संयुक्त हो सकता है। **उक** सम्बन्ध कारक प्रत्यय है। संधि के पश्चात व्युत्पन्न रूप **तापुक** 'धूप का' सिद्ध है। इसी प्रकार **कर** 'कर' क्रिया पद के साथ **यान** प्रत्यय संयुक्त होकर **कर्यान** सिद्ध है। संज्ञा और क्रिया में पारस्परिक संधि संभव नहीं है।

॥ असवर्णे ऽकारस्य लोपः ॥ ४ ॥

ड्यक् उकु । गाट् उलु । अनेन अकारस्य लोपे कृते । ड्यकुकु । ललाटस्य ॥ गाटुलु । बुद्धिमान् । इति सिद्धम् ॥ पदेषु किम् । चुह् वल । त्वम् एहि । अत्र संधिर्न भवति ॥ [कचित्को ऽयं विधिरुकारादिष्वसवर्णेषु विध्यन्तरस्य वक्ष्यमाणत्वात्] ॥

अनुवाद– सूत्र 1.1.4

ड्यक् उक, गाट् उल प्रस्तुत सूत्र के अनुसार अकार का लोप करने पर **ड्यकुक** 'माथे का', **गाटुल** 'बुद्धिमान' सिद्ध है। पद में ही क्यों? **चु वलु** 'तू आ' में संधि नहीं होती। (उकार आदि असवर्णो की उच्चारण विधि में कुछ अन्तर है)

व्याख्या–

यहाँ 'असवर्ण' शब्द भाषा के उन स्वरों को संकेतित करता है, जो

संस्कृत अथवा हिन्दी में व्याप्त नहीं है। ये हैं पश्च अवर्तुलाकार स्वर **अ़** और **ॴ**। भाषा में इन के दीर्घ रूप **अ़ु** और **ऑ** भी विद्यमान हैं। संस्कृत तथा हिन्दी में पश्च स्वर सामान्यतया वर्तुलाकार ही होते हैं। यदि ऊ अथवा **ओ** का उच्चारण करते समय होंठ अवर्तुलाकार स्थिति में रखे जाएँ तो **अ़ु** अथवा **ऑ** उच्चरित होगा। यथा – **तु़र** 'ठंड' और **हॉर** मैना'।

ड्यकु़ 'माथा' **गाटु़** 'बुद्धि' दोनों शब्दों के अन्त में अ़ुकार है। सूत्र में इसी अकार के लोप का कथन है।

॥ स्वरः सवर्णे दीर्घपरलोपौ ॥ ५ ॥

करान् छ्य आ। अँछि इट्। अनेन दीर्घे परलोपे च कृते। करान् छ्या। [सा किं नु करोति]। अछीट्। [दुर्दृष्टिः] [सू० ४।३६]। इति सिद्धम्॥ पदेषु किम्। पँछ्य़ि इम्। अतिथय एते। इत्यत्र संधिर्न भवति॥

अनुवाद– सूत्र 1.1.5

करान छ्य आ, अँछि इट सूत्र के अनुसार दीर्घ होने के पश्चात परवर्ती लोप करके **करान छ्या?** 'क्या वह करती है?' **अछीट** 'कुदृष्टि वाला' (4.1.36 सूत्र) सिद्ध है। पद में क्यों नहीं? **पँछ्य़ इम** 'ये अतिथि' यहाँ संधि नहीं होती।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में भी स्वर लोप का कथन है, परन्तु यहाँ परवर्ती सवर्ण स्वर लुप्त होता है। **छय** 'है' (स्त्रीलिंग) में **य** का अकार प्रत्यय के आकार के कारण दीर्घ हो जाता है। दीर्घीकरण के उपरान्त, ग्रन्थकार प्रत्यय के आकार का लोप मानते हैं। यही स्थिति **अछीट** में भी है।

पँछ्य़ इम के स्थान पर **यिम पँछ्य़** वाक्यांश का वर्तमान में व्यवहार व्याप्त है। इन दो शब्दों में संधि का कोई विधान नहीं है।

[॥ अकारे ऽकारलोपः ॥ ५ क ॥

गर अन्। अनेन अकारस्य लोपः। गरन्। गृहाणि। इति सिद्धम्॥]

अनुवाद– सूत्र 1.1.5 क

गऱ अन इस सूत्र से अ़ुकार का लोप होता है। **गरन** 'घरों को' सिद्ध है।

[क। इदं सूत्रं ग्रन्थकर्त्रा न लिखितं नास्ति किन्तु पादस्य १२ सूत्रमध्ये ह्यनुक्तम्। तस्मादत्रास्य योग्यत्र मध्ये प्रक्षिप्तम्॥]

व्याख्या–

अकारान्त पुलिंग एकवचन शब्द **गरु** 'घर' के साथ बहुवचन कर्मकारक प्रत्यय **अन** संयुक्त होने पर **गरु** के अकार का लोप हो जाता है। 2.1.2 सूत्र में **अन** प्रत्यय की व्याख्या प्रस्तुत है। एकवचन कर्म कारक प्रत्यय **अस** संयुक्त होने पर भी अकार का लोप होकर **गरस** 'घर को' सिद्ध है। दोनों रूपों को निम्नांकित वाक्यों में देख सकते हैं।

यथा–

गरस लिव 'घर को लीपो', **गरन लिव** 'घरों को लीपो'

पाद टिप्पणी में उल्लेख है, कि ग्रन्थकार ने यह सूत्र यहाँ नहीं लिखा है, परन्तु लिंगपाद के 2.1.52 सूत्र में उसका संदर्भ प्रस्तुत है।

॥ अकार इकार ए ॥ ६ ॥

अकार इकारे परे एकारो भवति परलोपश्च ॥ च्य इन्। [च्येन् । तेन पीतानि] ॥ च्यकारादकारविश्लेषं कृत्वानेनाकारस्यैकारे कृते च्येन् इति सिद्धम् ॥

अनुवाद– सूत्र 1.1.6

अकार के पश्चात इकार होने पर उस का एकार होता है, और परवर्ती का लोप। **च्य इन च्येन** 'उस ने पिये'। चकार से अकार अलग करके, प्रस्तुत सूत्र के अनुसार अकार का एकार होने पर **च्येन** सिद्ध है।

व्याख्या–

स्पष्टीकरण में वर्णित **इन** मूलतः दो भिन्न प्रत्यय है। **इ** बहुवचनीय तथा **न** अन्य पुरुष एकवचन सार्वनामिक प्रत्यय है। बहुवचनीय प्रत्यय **इ च्य** के अंतिम स्वर **अ** के साथ संधि करके **ए** हो जाता है। **न** यथावत रहता है। अन्य पुरुष के स्थान पर यदि मध्यम पुरुष एकवचन का संदर्भ हो, तो **न** के स्थान पर **थ** प्रत्यय संयुक्त होगा। यथा – **च्येथ** 'तूने पिये' और उत्तम पुरुष एकवचन के लिए **म** यथा – **च्येम** 'मैंने पिये'।

चे 'पी' **खे** 'खा' **पे** 'गिर' आदि धातुओं का वर्तमान उच्चारण ह्रस्व एकार से ही किया जाता है। इसलिए कह सकते हैं ऐकार और इकार की संधि का परिणाम एकार होता है।

॥ उकार ओ ॥ ७ ॥

अकार उकारे परे ओकारो भवति परलोपश्च ॥ ख्य उन् । ख्योन् । तेन खादितम्] ॥ च्य उन् च्योन् । [तेन पीतम्] ॥ अत्राकारोकारयोः संधौ कृते अनेन ओकारपरलोपौ ॥

अनुवाद— सूत्र 1.1.7

अकार के पश्चात उकार होने पर उस का ओकार तथा परवर्ती का लोप होता है। **ख्य उन ख्योन** 'उस ने खाया'। **च्य उन च्योन** 'उस ने पिया'। यहाँ अकार और उकार की संधि, का परिणाम प्रस्तुत सूत्र के अनुसार ओकार तथा परवर्ती का लोप।

व्याख्या—

यहाँ भी यह बात स्पष्ट है, कि **उन** दो भिन्न प्रत्यय हैं। **उ** भूतकाल का एकवचन तथा **न** अन्य पुरुष एकवचन सार्वनामिक प्रत्यय है। अकार और उकार की संधि का परिणाम ओकार है। सार्वनामिक प्रत्यय **न** यथावत रहता है।

यहाँ पर भी उक्त धातुओं के संदर्भ में वर्तमान उच्चारण के अनुसार **खॆ** और **चॆ** का अंतिम स्वर अकार नही ऍकार ही है। तदनुसार कह सकते हैं ऍकार और उकार की संधि का परिणाम ओकार होता है।

॥ एकार ऐ ॥ ८ ॥

अकार एकारे परे ऐ संपद्यते ॥ ग एय् । [गैय् । ते गताः] ॥ प्य एय् । [प्यैय् । ते पतिताः] ॥ अनेन संधौ कृते गैय् प्यैय् इति भवति ॥

अनुवाद— सूत्र 1.1.8

अकार के पश्चात एकार होने पर **ऐ** होता है। **ग एय गैय** 'वे गए' **प्य एय प्यैय** 'वे गिरे' प्रस्तुत सूत्र के अनुसार संधि के पश्चात **गैय** और **प्यैय** होता है।

व्याख्या—

भाषा में आजकल **ऐ** स्वर का उच्चारण मात्र आगत शब्दों में किया जाता है। शेष शब्दों में इस का व्यवहार नहीं है। **गैय** और **प्यैय** के स्थान पर **गयि** और **पयि** का प्रयोग है।

॥ ओकार औ ॥९॥

अकार ओकारे परे औ भवति ॥ ग ओव्। प्य ओव् ॥ अनेन संधौ कृते । गौव [। स गतः] ॥ प्यौव् [। स पतितः] ॥

अनुवाद— **सूत्र 1.1.9**

अकार के पश्चात ओकार होने पर औ होता है। **ग ओव, प्य ओव** प्रस्तुत सूत्र के अनुसार संधि के पश्चात **गौव** 'वह गया' **प्यौव** 'वह गिरा'।

व्याख्या—

पूर्व सूत्र की व्याख्या के अनुसार यहाँ पर भी यह तथ्य स्पष्ट है कि **औ** का उच्चारण मात्र आगत शब्दों में संभव है शेष में नहीं। **गौव** और **प्यौव** का वर्तमान उच्चारण **गव** तथा **प्यव** है।

॥ इकारो ऽसवर्णे यो ऽपरलोपः ॥ १०॥

इकारो ऽसवर्णे स्वरे न परलोपो यस्य तथाविधो यः संपद्यते ॥ करि उक्। इकारस्य यत्वे परलोपाभावे च व्यञ्जनं परेण संधेयमिति (सू० ३)। कर्युक्। इति सिद्धम् ॥ पदेषु किम्। कति आय्। कुत आगताः। इत्यत्र वाक्ययोर्विद्यमानत्वात्संधिनिषेधः ॥

अनुवाद— **सूत्र 1.1.10**

इकार के पश्चात असवर्ण स्वर होने पर परवर्ती लोप नहीं होता। यहाँ यकार का विधान है। **करि उक**, इकार का यत्व तथा परवर्ती लोप का अभाव। 1.1.3 सूत्र के अनुसार **कर्युक** (कर्युक) सिद्ध है। पद में ही क्यों? **कति आय** 'कहाँ से आए'। यहाँ वाक्य होने के कारण संधि का निषेध है

व्याख्या—

असवर्ण उस स्वर की ओर संकेत करता है, जो **उक** प्रत्यय में **क** के पश्चात संकल्पित है। **कौर** 'कड़ा' के साथ **उक** प्रत्यय संयुक्त होने पर **कर्युक** 'कड़े का' रूप सिद्ध है। इस संयुक्ति के परिणाम स्वरूप उपधा का औकार अकार में परिणत होता है।

॥ उकारो वः ॥ ११ ॥

उकारो ऽसवर्णे स्वरे परे वकारो भवति परलोपाभावश्च ॥ करान् छु आ। अनेन वत्वे कृते। करान् छ्वा [। स किं नु करोति]। इति सिद्धम् ॥ पदेषु किम् पट्टु अन्। और्णमानय। अत्र संधिनिषेधः ॥

अनुवाद— **सूत्र 1.1.11**

उकार के पश्चात असवर्ण स्वर होने पर उस का वकार तथा परवर्ती लोप का अभाव होता है। **करान छु आ** प्रस्तुत सूत्र के अनुसार वत्व के पश्चात **करान छ्वा** 'क्या वह कर रहा है' सिद्ध है। पद में ही क्यों? **पोट अन** "पट्टू (गर्म कपड़ा) लाओ।' यहां संधि का निषेध है।

व्याख्या—

वर्तमान भाषा प्रयोग में ऐसी स्थिति में वत्व का विधान नहीं है। **छु** के साथ **आ** संयुक्त होने पर उकार का लोप हो जाता है। व्युत्पन्न रूप **छा** है। यथा – **करान छा?** 'क्या वह कर रहा है?'

इति
श्री शारदाक्षेत्र के भाषाव्याकरण कश्मीरशब्दामृत
का संधि प्रकरण समाप्त 1.1

लिंग प्रकरण 2
लिंग पाद 1

लिंग प्रकरण के अन्तर्गत, लिंग पाद, सम्बुद्धि पाद और सर्वनाम पाद का वर्णन है। सूत्र संख्या क्रमशः 79, 31 और 46 है। स्त्रीलिंगीकरण तथा बहुवचनीयता की व्याख्या लिंग पाद में की गई है। इस के अतिरिक्त कारकीय विकारों का उल्लेख भी यहीं पर है। व्युत्पन्न प्रक्रिया में मात्रिक स्वर की सत्ता भी स्पष्ट की गई है। सूत्र संख्या 2.1.12 सिद्ध करता है कि मात्रिक स्वर युक्त शब्दों का अन्तिम व्यंजन तालव्यकृत हो जाता है। अन्य शब्दों में, जहाँ इस स्वर की उपस्थिति नहीं है, अंतिम व्यंजन का तालव्यकरण नहीं होता।

॥ अकारान्तानां प्रथमैकबहुत्वे लिङ्गवत् ॥ १ ॥

अकारान्तानां लिङ्गानामेकवचनं बहुवचनं च स्त्रीपुंसोर्लिङ्गवद्विज्ञेयम् ॥
ड्यक। ललाटम् ॥ ड्यक। ललाटानि ॥ ब्यन्य। भगिनी ॥ ब्यन्य। भगिन्यः ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.1.1**

अकारान्त लिंग एकवचन, बहुवचन तथा स्त्रीलिंग पुंलिंग में लिंगवत ही रहते हैं। **ड्यक** 'माथा' **ड्यक** 'माथे' **ब्यन्य** 'बहन' **ब्यन्य** 'बहनें'।

व्याख्या–

अकारान्त लिंग से अभिप्राय है अकारान्त प्रातिपदिक। ईश्वर कौल के अनुसार पुंलिंग अथवा स्त्रीलिंग अकारान्त प्रातिपदिक कर्त्ता कारक के बहुवचन में यथावत ही रहते हैं। वर्तमान उच्चारण के आधार पर **डयक्** अकारान्त है तथा **ब्यनि** इकारान्त। इस प्रकार के सभी शब्द कर्त्ताकारक बहुवचन में यथावत रहते हैं

यथा–

पुंलिंग एकवचन	–	**येमिस छु डयक् बोड** 'इस का माथा चौड़ा है'।
बहुवचन	–	**यिमन छि डयक् बॅडय** 'इन के माथे चौड़े हैं।
स्त्रीलिंग एकवचन	–	**मे छि अख बेनि** 'मेरी एक बहन है'।
बहुवचन	–	**मे छे ज़ु बेनि** 'मेरी दो बहनें हैं।

॥ ऊदन्तानां पुंसि ॥ २ ॥

ऊकारान्तानां च लिङ्गानां प्रथमाया एकवचनं बहुवचनं च लिङ्गवद्विज्ञेयं पुंलिङ्ग एव ॥ अत्र शारदाक्षेत्रभाषाशब्दशास्त्रे इकारान्तं लिङ्गमुवर्णान्तं च लिङ्गं तत्तन्मात्रिकान्तमेव बोध्यम्। न तु संपूर्णम्। किंतु तेषु पूर्ववर्णसंबन्धिनः स्वरस्याप्रसिद्धता विज्ञेया। [७० सूत्रोक्तो विधिरयम्]। सा च आकारस्य अकारप्लुतस्वशब्दवद्भवतीति परिभाष्यते ॥ दानू। करकः। अनार ॥ दानू। करकाः। बहुत अनार॥ पुंसि किम्। बंडू। महती। बड़ी॥ बज्य। महत्यः। बड़ियाँ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.2

पुंलिंग ऊकारान्त लिंग प्रथमा एकवचन तथा बहुवचन में लिंगवत रहते हैं। शारदा क्षेत्र के भाषा शब्द शास्त्र में इकारान्त तथा उकारान्त लिंगों की अन्तिम मात्रिका विचारणीय है। सम्पूर्ण नहीं। इन में पूर्व वर्ण संबन्धी स्वर की अप्रसिद्धता है। विधि 2.1.70 सूत्र में स्पष्ट है। इस 'आ' वर्ण (अकार) की प्लुत अकार शब्दवत परिभाषा है। **दॉन** 'अनार' **दॉन** 'अनार (एक से अधिक)। पुंलिंग ही क्यों? **बॅड** 'बड़ी' **बजि** 'बड़ी'।

व्याख्या—

यह सूत्र संकल्पनात्मक मात्रिक स्वर अकार पर आधारित है। ग्रन्थकार ने स्पष्ट किया है, कि यह मात्रिक स्वर शारदा क्षेत्र के भाषा शब्द शास्त्र में ही विचारणीय है। पूर्व वर्ण के स्वर की अप्रसिद्धता के विषय में कहा गया है, कि यह 'अ' वर्ण का प्लुत रूप है। **दॉन** और **बॅड** दोनों शब्द वर्तमान उच्चारण में अकारान्त हैं। अकारान्त पुंलिंग शब्द कर्त्ता कारक बहुवचन रूप में यथावत रहते हैं, जिस का उल्लेख पूर्व सूत्र में निर्दिष्ट है, परन्तु स्त्रीलिंग अकारान्त शब्द कर्त्ता कारक बहुवचन रूप में यथावत नहीं रहते।

॥ व्यञ्जनान्तानां च ॥ ३ ॥

व्यञ्जनान्तानां पुंलिङ्गानां प्रथमैकबहुत्वे लिङ्गवद्भवतः ॥ दय्। ईश्वरः। ईश्वर ॥ दय्। ईश्वराः। बहुत ईश्वर ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.3

व्यंजनान्त पुंलिंग प्रथमा एकवचन तथा बहुवचन में लिंगवत ही रहते हैं। **दय** 'ईश्वर', **दय** 'ईश्वर' (एक से अधिक)।

व्याख्या—

दय 'ईश्वर' व्यंजनान्त शब्द स्वीकार किया गया है। इस का कर्त्ता

कारक बहुवचन रूप भी **दय** ही है। भाषा के अकारान्त शब्दों का 'अ' वर्ण प्रायः उच्चरित नहीं होता। अन्तिम 'अ' लोप हिन्दी में भी विद्यमान है। यथा – 'राम' आदि शब्दों का अंतिम अकार उच्चरित नहीं होता। कश्मीरी में भी यही स्थिति है, परन्तु प्रत्यय संयुक्त होने पर 'अ' का स्पष्ट उच्चारण किया जाता है। यथा – **रामस** 'राम को'।

॥ इप्रत्ययस्याकारो व्यञ्जने ॥ ४ ॥

व्यञ्जनान्तानां पुंल्लिङ्गानामकारान्तानां च व्यञ्जने परे इप्रत्ययस्य अकारो भवति॥ गर सूंतिन् । गृहेण । घर कर के ॥ वाल सूंतिन् । वालेन । वाल कर के ॥ गर शब्दात् वाल् शब्दात् च। हेतौ सूंतिन्नन्तौ सूंत्यन्तौ वा (सू० ५९) इत्यनेन इ सूंतिन्प्रत्ययः। अनेन इकारस्य अकारः। अकारव्यञ्जनान्तानां किम्। गुरि सूंतिन्। अश्वेन। घोडे कर के॥ व्यञ्जने किम् । गुरि ल्रोयु। अश्वेन हतः। घोडे ने मारा॥ पुंसि किम्। मालि सूंतिन्। मालया। माला कर के॥

अनुवाद– सूत्र **2.1.4**

व्यंजनान्त अथवा अकारान्त पुंलिंग के **इ** प्रत्यय का अकार होता है यदि इस के पश्चात व्यंजन हो। **गरु सुतिन** 'घर से', **वालु सुतिन** 'बाल से'। 2.1.59 सूत्र के अनुसार हेतु प्रत्यय **सुतिन** अथवा **सुत्य** के पूर्व **गर** और **वाल** शब्द के साथ **इ** प्रत्यय है। प्रस्तुत सूत्र से इस इकार का अकार होता है। अकार अथवा व्यंजनान्त क्यों? **गुरि सुतिन** 'घोड़े से'। पश्च में व्यंजन क्यों? **गुरय लोय** 'घोड़े ने मारा' पुलिंग क्यों? **मालि सुतिन** 'माला से'।

व्याख्या–

करण कारक परसर्ग **सुत्य** अथवा **सुतिन** के पूर्व **इ** प्रत्यय की संकल्पना है। पुंलिंग व्यंजनान्त अथवा अकारान्त शब्दों में यह इकार **अकार** हो जाता है। मूल शब्द अकारान्त होने की स्थिति में इस इकार की कोई भूमिका नहीं है। निम्नलिखित शब्दों के उदाहरण दृष्टव्य हैं। यथा–

थाल 'थाल' + **इ** + **सुत्य** → **थालु सुत्य** 'थाल से'

खोस प्याला (काँसी का) + **इ** + **सुत्य** → **खासि सुत्य** 'प्याले से'

अथु 'हाथ' + **इ** + **सुत्य** → **अथु सुत्य** 'हाथ से'

खोस शब्द के व्युत्पन्न रूप **खासि सुत्य** में इकार स्पष्ट विद्यमान है। पश्चगामी स्वर समतालता भी प्रभावी है अर्थात इकार के कारण उपधा का ओकार आकार में परिणत होता है। **अथु** शब्द अुकारान्त है, इसलिए इकार की कोई भूमिका नहीं है।

॥ न संख्यावाचिभ्यः ॥ ५ ॥

संख्यावाचिभ्यो व्यञ्जनान्तेभ्यो लिङ्गेभ्यः इप्रत्ययस्य अकारो न भवति॥ सति सूतिन्। सप्तभिः। सात कर के॥ ऐठि सूतिन्। अष्टाभिः। आठ कर के॥ सत् शब्दात् ऐठ् शब्दात् इ सूतिन् प्रत्ययः॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.5

व्यंजनान्त संख्या वाचक लिंग का **इ** प्रत्यय अकार नहीं होता। **सति सुतिन** 'सात से' **ऑठि सुतिन** 'आठ से'। **सथ** तथा **ऑठ** शब्दों के साथ **इ सुतिन** प्रत्यय यथावत है।

व्याख्या—

व्यंजनान्त संख्या वाचक शब्दों के साथ **सुतिन** परसर्ग प्रयुक्त होने पर इकार यथावत रहता है। अंतिम व्यंजन यदि महाप्राण है, तो वह अल्पप्राण में रूपांतरित हो जाता है। यथा —

अख 'एक' **अकि सुत्य** 'एक से' **सथ** 'सात' **सति सुत्य** 'सात से'।

स्वरान्त संख्यावाची शब्दों की स्थिति भिन्न है, यथा — **त्रे** 'तीन' **त्रेयि सुत्य** 'तीन से' **शे** 'छः' **शेयि सुत्य** 'छः से'। सर्वसामान्य नियम है, कि व्युत्पन्न प्रक्रिया में दो स्वरों के मध्य श्रुति के रूप में यकार का आगम होता है। इसी कारण **त्रे** और **शे** में यकार विद्यमान है।

॥ इतो लोपः ॥ ६ ॥

इकारात् इप्रत्ययस्य लोपो भवति॥ पोथि सूतिन्। पुस्तिकया। पोथी कर के॥ पूथि शब्दात् इ सूतिन् प्रत्ययः। पूर्ववर्णोकारस्यौकारः स्त्रियाम् (सू० ३३) इत्यनेन उपधाया ऊकारस्य ओकारः। अनेन इकारलोपः॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.6

इकारान्त में **इ** प्रत्यय का लोप होता है। **पोथि सुतिन** 'पोथी से'। **पूथ्य** शब्द के साथ **इ सुतिन** प्रत्यय। 2.1.33 सूत्र के अनुसार उपधा के ऊकार का ओकार। प्रस्तुत सूत्र से इकार का लोप।

व्याख्या—

पूथ्य स्त्रीलिंग शब्द है। ऐसे सभी शब्दों में इकार की सत्ता है। यदि मूल शब्द इकार युक्त है, तो प्रत्यय का इकार लुप्त हो जाता है। **पूथ्य** 'पोथी' **दूत्य** 'साड़ी' **हून्य** 'कुतिया' इन शब्दों का अंतिम व्यंजन तालव्यकृत है, जो इकार में

परिणत होता है। इस कारण प्रत्यय का इकार लुप्त हो जाता है।
यथा– **पोथि सुत्य** 'पोथी से' **दोति सुत्य** 'साड़ी से' **होनि सुत्य** 'कुतिया से'। जिन स्त्रीलिंग शब्दों में अंतिम व्यंजन तालव्यकृत नहीं है, वहाँ प्रत्यय का इकार विद्यमान रहता है यथा– **ज़ून** 'चन्द्रमा' **ज़ूनि सुत्य** 'चन्द्रमा से', **गॅर** 'घड़ी' **गरि सुत्य** 'घड़ी से'।

॥ यड्गावृथर्कठ्वड्भ्य ऊकारमात्रादेशः ॥ ७ ॥

एभ्यः शब्देभ्यः इप्रत्ययस्य ऊकारमात्रादेशो भवति ॥ यॅडू सूतिन् । उदरेण । पेट कर के ॥ यड् शब्दात् इ सूतिन् प्रत्ययः । अनेन इकारस्य ऊकारमात्रादेशः । ऊदन्तत्वे सिद्धे पूर्वस्वरस्याख्यातता ज्ञेया । व्यञ्जनं परेण संधेयम् (सू० १।३) यॅडू सूतिन् । इति सिद्धम् ॥ एवं । गोवू (सू०७२) सूतिन् । गवा । गऊ कर के ॥ थॅरू सूतिन् । पृष्ठेन । पीठ कर के ॥ कॅठू सूतिन् । कुष्ठेन । कुठ कर के ॥ वॅडू सूतिन् । व्याजेन । व्याज कर के ॥

अनुवाद– सूत्र 2.1.7

इन शब्दों में इ प्रत्यय का ऊकार मात्रा आदेश है। **यॅड सुतिन** 'पेट से'। **यड** शब्द के साथ **इ सुतिन** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से इकार का ऊकार मात्रादेश। अन्त में ऊ होने के कारण पूर्व स्वर अप्रसिद्ध हो गया। 1.1.3 सूत्र के अनुसार संधि तथा **यॅड सुतिन** सिद्ध। 2.1.72 सूत्र के अनुसार **गोव सुतिन** 'गाय से' **थॅर सुतिन** 'पीठ से' **क्वठ सुतिन** 'कुष्ठा (एक प्रकार की जड़ी-बूटी) से' **वॅड सुतिन** 'छल से'।

व्याख्या–

सूत्र में वर्णित ऊकार मात्रा संकल्पनात्मक है। भाषा में इस का उच्चारण नहीं होता। **यड** 'पेट' **गाव** 'गाय' **थर** 'पीठ' **क्वठ** 'कुष्ठा (एक प्रकार की जड़ी-बूटी)' **वड** 'छल'। इन शब्दों के संदर्भ में इ प्रत्यय का लोप तथा पूर्व स्वर की अप्रसिद्धता होती है।

वर्तमान प्रयोग में **गोव सुतिन** के स्थान पर **गॉव सुतिन** का ही प्रयोग है। **क्वठ** के पूर्व स्वर में कोई अन्तर नहीं होता।

॥ उदन्तानां लिङ्गवदेकत्वमेव ॥ ८ ॥

स्पष्टम् ॥ कॅरु । कटकः । कड़ा ॥

अनुवाद– सूत्र 2.1.8

सूत्र स्पष्ट है। **कॊर** 'कड़ा'।

व्याख्या–

सूत्र में वर्णित उ मात्रा संकल्पनात्मक है। वर्तमान में इस का व्यवहार नहीं है। **कौर** शब्द का पूर्व स्वर ह्रस्व **ओकार** अर्थात **ऑकार** है। सूत्र के अनुसार कारकीय विभक्ति अथवा प्रत्यय के अभाव में **कौर** शब्द यथावत रहता है। उस में कोई विकार नहीं होता। **फौत** 'टोकरा' **मौर** 'पिंजरा' के साथ भी यही स्थिति है।

॥ स्त्रियामिदूदन्तानाम् ॥ ९ ॥

इकारान्तानामूकारान्तानां च स्त्रियामेकवचनमेव लिङ्गवद्भवति ॥ पूथि । पुस्तिका । पोथी ॥ पंटू । पट्टिका । फट्टी ॥ एकवचनं किम् । पोथ्य । पुस्तिकाः । पोथियाँ ॥ पच्य । पट्टिकाः । फट्टियाँ ॥ स्त्रियां किम् । बांचू । कुटुम्बजनाः । टब्बर ॥

अनुवाद– सूत्र 2.1.9

स्त्रीलिंग इकारान्त और ऊकारान्त एकवचन में लिंगवत रहते हैं। **पूथ्य** 'पोथी' **पॅट** 'तख्ता'। एकवचन क्यों? **पोथि** 'पोथियाँ' **पचि** 'तख्ते'। स्त्रीलिंग क्यों? **बॉच़** 'कुटुम्ब जन'।

व्याख्या–

पूथ्य और **पॅट** के साथ कोई कारकीय विभक्ति प्रयुक्त नहीं है। ऐसी स्थिति में ये भी मूल शब्दवत रहते हैं। बहुवचन में ऐसी स्थिति नहीं है। वहाँ पर **पूथ्य** का **पोथि** और **पॅट** का **पचि** कारकीय विभक्ति के बिना भी संभव है। **बॉच़** पुंलिंग शब्द है। 2.1.2 सूत्र के अनुसार अकारान्त पुंलिंग शब्द बहुवचन रूप में मूल शब्दवत ही रहते हैं। यहाँ पर भी अन्त की ऊकार मात्रा संकल्पनात्मक मान कर, शब्द अकारान्त ही स्वीकृत है।

॥ व्यञ्जनान्तानां च ॥ १० ॥

व्यञ्जनान्तानां स्त्रीलिङ्गानामेकवचनमेव लिङ्गवद्भवति ॥ क्रख् । कोलाहलः । ऊँचा शब्द ॥ क्रक्शब्दस्य । वर्गप्रथमान्तानां प्रथमायां द्वितीय (सू० ६६) इत्यनेन कस्य खः ॥ एकवचनं किम् । क्रक । कोलाहलाः । ऊँचे शब्द ॥

अनुवाद– सूत्र 2.1.10

व्यंजनान्त स्त्रीलिंग एकवचन लिंगवत ही रहता है। **क्रख** 'शोर' प्रथमा में वर्ग का पहला वर्ण दूसरा बन जाता है। (2.1.66) सूत्र। इस प्रकार **क** का **ख** हो जाता है। एकवचन क्यों? **क्रक़** 'शोर (एक से अधिक)'।

व्याख्या–

ग्रन्थकार ने **क्रख** का मूलशब्द **क्रक** स्वीकार किया है। कर्ता कारक

में 2.1.66 सूत्र के अनुसार इसी **क** का **ख** निर्देश है।
यथा–

मे छनु क्रख पसंद 'मुझे शोर पसंद नहीं है।

विकारी रूपों तथा बहुवचन में अन्तिम वर्ण महाप्राण नहीं रहता। वह अल्पप्राण में परिणत होता है। यथा – **क्रकि सुत्य** 'शोर से'।

मूल शब्द का अन्तिम व्यंजन महाप्राण हो तो व्युत्पन्न प्रक्रिया में वह अल्पप्राण सिद्ध है। यह भाषा का एक सर्वसामान्य नियम है। अर्थात बहुवचन और विकारी रूपों में इस स्थिति का महाप्राण अल्पप्राण में बदलता है।
अतिरिक्त उदाहरण निम्नलिखित हैं। यथा–

अविकारी	**विकारी**	**बहुवचन**
थ्वख 'थूक'	थ्वकि सुत्य 'थूक से'	थ्वकु 'थूकें'
वथ 'मार्ग'	वति सुत्य 'मार्ग से'	वतु 'मार्ग (एक से अधिक)'

॥ बहुत्वे ऽकारागमः ॥ ११ ॥

व्यञ्जनान्तानाम् [इद्] ऊदन्तानां च स्त्रीलिङ्गानां बहुवचने अकारागमो भवति ॥ [पोथ्य । पुस्तकानि । पोथियाँ ॥] पच्य । पट्टिकाः । फटियाँ ॥ क्रक । कोलाहलाः । ऊँचे शब्द ॥ पंटू शब्दात् अनेन अकारागमे कृते । ऊदन्त-टवर्गस्य चवर्गः प्रथमाबहुत्वादिषु स्त्रियाम् (सू०२२) इत्यनेन सूत्रेण टकारस्य चकारे कृते । उवर्णान्तानामिकार (सू०३०) इति ऊमात्राया इकारः । इकारो ऽसवर्णे यो ऽपरलोप (सू०१।१०) इति यत्वम् । अन्यत् स्पष्टम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.1.11**

व्यंजनान्त तथा (इ) ऊ अन्त वाले स्त्रीलिंग रूपों के बहुवचन में अकारागम होता है। **पोथि** 'पोथियाँ' **पचि** 'तख्ते'। **क्रक** 'शोर', **पॅट** 'तख्ता' शब्दों में प्रस्तुत सूत्र से अकारागम। 2.1.22 सूत्र से टवर्ग का चवर्ग। 2.1.30 सूत्र से ऊमात्रा का इकार। 1.1.10 सूत्र से यत्व। शेष स्पष्ट है।

व्याख्या–

भाषा में बहुवचन प्रत्यय इकार सिद्ध है। स्त्रीलिंग रूपों में यह इकार अविकारी बहुवचन रूपों के पद रूप में प्रायः विद्यमान रहता है। यथा – **पोथि** 'पुस्तकें' **सेरि** 'ईटे' **खोरि** 'एड़ियाँ'। कुछ पद रूपों में यह इकार उकार बन जाता है। यथा – **क्रकु** 'शोर (एक से अधिक)' **वतु** 'मार्ग (एक से अधिक)' **ज़्यवु** 'जीभें'।

॥ न्प्रत्यये सर्वत्र ॥ १२ ॥

सर्वत्र स्त्रीलिङ्गे पुंलिङ्गे च न् प्रत्यये परे अकारागमो भवति ॥ गुर्यन् छुह् खसान। अश्वानारोहति। घोड़ियों को चढ़ता है॥ कोर्यन् छुह् रछान्। कन्याः पाति। कुड़ियों को पालता है॥ कटन् छुह् मारान्। मेषान्हन्ति। भेड़ओं को मारता है॥ गुड़् शब्दात्। द्वितीयायां स्नाच् (सू० ३८) इति न् प्रत्ययः। अनेना-कारागमः। उवर्णान्तानामिकार (सू०३०) इतीकारः॥ कूरू शब्दस्य। पूर्ववर्णो-कारस्यौकारः स्त्रियाम् (सू०३३) इत्यनेनोपधाया ऊकारस्यौकारः। यत्वम्। शेषं पूर्ववत् ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.12

स्त्रीलिंग तथा पुंलिंग में न प्रत्यय पश्च होने पर सर्वत्र अकारागम होता है। **गुर्‍यन छु खसान** 'घोड़ों पर चढ़ता है।' **कोर्‍यन छु रछान** 'लड़कियों को पालता है'। **कटन छु मारान** 'भेड़ों को काटता है' 2.1.38 सूत्र के अनुसार **न** प्रत्यय प्रस्तुत सूत्र से अकारागम। 2.1.30 सूत्र से इकार ।2.1.33 सूत्र से **कूर** शब्द के उपधा का ऊकार ओकर में परिणत। यत्व तथा शेष पूर्ववत।

व्याख्या—

संकल्पनात्मक मात्रिक स्वर की अवस्था में बहुवचन कर्मकारक प्रत्यय **न** संयुक्त होने पर अकारागम संभव है, तथा अंतिम व्यंजन तालव्यकृत भी होता है। यथा—

	एकवचन	बहुवचन	बहुवचन कर्मकारक रूप
पुंलिंग			
	गुर 'घोड़ा'	गुर्‍य	गुर्‍यन
	कुल 'वृक्ष'	कुल्य	कुल्यन
स्त्रीलिंग			
	कूर 'लड़की'	कोरि	कोर्‍यन
	वॉज 'अंगूठी'	वाजि	वाज्यन

यह रूपांतरण बहुवचन में पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग प्रायः दोनों में प्रभावी है। **कठ** 'भेड़' के व्युत्पन्न रूप से **ट** तालव्यकृत नहीं होता।

मात्रिक स्वर रहित शब्दों में तालव्यकरण संभव नहीं है। उदहारण,

	एकवचन	बहुवचन	बहुवचन कर्मकारक रूप
पुंलिंग			
	दांद 'बैल'	दांद	दांदन
	हॉँज़ 'केवट'	हॉँज़	हॉँज़न

अथु 'हाथ'	अथु	अथन
स्त्रीलिंग		
लब 'दीवार'	लब	लबन
अॅछ 'आँख'	अॅछ	अॅछन
माल 'माला'	मालु	मालन

॥ नोदन्तानां पुंसि ॥१३॥

ऊकारमात्रान्तानां पुंलिङ्गानां न् प्रत्यये परे अकारागमो न भवति ॥ दांनून् छुह् ख्यवान्। करकान् खादति। अनारों को खाता है॥ लांरून्। इन्द्रवारुणीः। खीरों को ॥ कान्जून्। काञ्जिकानि [। काँजी] ॥

अनुवाद— सूत्र **2.1.13**

ऊकार पुंलिंग रूपों में न प्रत्यय के पूर्व अकारागम नहीं होता। **दॉनन छु ख्यवान** '(वह) अनारों को खाता है।' **लॉरन** 'खीरों को' **कॉन्ज़न** 'कांजियों को'।

व्याख्या—

उच्चारण में ऊकार मात्रिक स्वर व्यक्त नहीं होता। वर्तमान भाषा प्रयोग में उक्त **न** प्रत्यय के पूर्व अकारागम होता है। यथा— **तॅम्य कौड दॉनन रस** 'उस ने अनारों का रस निकाला'। **लॉरन** और **कॉन्ज़न** में भी अकारागम स्पष्ट है।

॥ कृतादेशव्यञ्जनान्तेभ्यश्च ॥ १४ ॥

येषां व्यञ्जनान्तानां लिङ्गानामादेशः कृतो भवति न तु ऊमात्रान्तानां तेषां न् प्रत्यये परे अकारागमो न भवति ॥ रात्। ग्रन्द्। क्वथ्। इति शब्दाः (सू०२१) ॥ रांचून् छुह् परान्। रात्रीः पठति। रात्रियों को पढ़ता है ॥ ग्रंन्जून् छुह् वुछान्। संख्याः पश्यति। गिन्तियों को देखता है ॥ क्वछून् छुह् वुठान्। [सूत्रतन्तुराशीन् वेष्टयति। लच्छे के सूत बाटता है] ॥ कृतादेशव्यञ्जनान्तेभ्यः किम्। पच्यन् छुह् गरान्। पट्टिका घटयति। फट्टियों को गढ़ता है ॥

अनुवाद— सूत्र **2.1.14**

ऊमात्रान्त के अतिरिक्त जिन व्यंजनान्त लिंगों का आदेश किया गया हो उनमें भी **न** प्रत्यय के पूर्व अकारागम नहीं होता। **रात, ग्रन्द, क्वथ**। 2.1.23 सूत्र के अनुसार अन्तिम व्यंजन का अप्रसिद्ध चवर्ग आदेश। **रॉचन छु परान** 'रातों को पढ़ता है'। **ग्रन्ज़न छु वुछान** 'संख्याओं को देखता है। **क्वछन छु वुठान** 'सूत के लच्छों को बटता है। आदेशित व्यंजन ही क्यों? **पच्यन छु गरान** 'तख्तों को

गढ़ता है'।

व्याख्या—

यहाँ पर व्यंजनान्त शब्दों के साथ ऊमात्रा आदेश की संकल्पना की गई है, तथा अकारागम वर्जित माना गया है। वर्तमान भाषा व्यवहार में उक्त संकल्पनात्मक ऊमात्रा का उच्चारण नहीं किया जाता। अतः इन तीनों शब्दों **'राथ, ग्रन्द** और **क्वथ** में **न** प्रत्यय के पूर्व अकार का उच्चारण निश्चित है। यथा – **रॉच़न** 'रातों को' **ग्रन्ज़न** 'संख्याओं को', **क्वथन** 'सूत के लच्छों को।

व्युत्पन्न प्रक्रिया में तवर्ग का च़वर्ग रूपांतरण स्त्रीलिंग में सामान्यतया सर्वव्यापी है।

॥ वा गंन्ज़ूगांसूवाच़ूहांन्ज़ूभ्यः ॥ १५ ॥

एभ्यः शब्देभ्यः पुंस्त्वादकारागमो वा विकल्पेन भवति ॥ गंन्ज़ून छुह् मारान्। चर्मकारान्मारयति। चमिआरों को मारता है ॥ गांसून् । [तृणविक्रेतॄन्। घसियारों को] ॥ वांचून छुह् प्यतरान् । कुटुम्बजनान्पाति । कुटुम्ब को पालता है ॥ हांन्ज़ून् छुह् रछान् । नाविकान्पाति । हाँजियों को पालता है ॥ वा ॥ गन्ज़न्। गासन्। हान्ज़न्। वाच़न् ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.15

इन पुंलिंग शब्दों में विकल्प से अकारागम होता है। **गॅन्ज़न छु मारान** 'चर्मकारों को मारता है।' **गॉसन** 'घसियारों को', **बॉच़न छु प्यतरान** 'कुटुम्ब जनों को पालता है'। **हॉन्ज़न छु रछान** 'नाविकों को पालता है। विकल्प से – **गन्ज़न, गासन, हान्ज़न, बाच़न।**

व्याख्या—

आंचलिक प्रयोग में, उक्त संदर्भ में **हांजन** और **बाच़न** शब्दों का वैकल्पिक प्रयोग हो सकता है। सामान्य लोक व्यवहार में **गॅन्ज़न गॉसन, बॉच़न** तथा **हॉन्ज़न** का ही प्रयोग है। विकल्प के उदाहरणों में ग्रन्थकार उपधा के स्वर का रूपांतरण दर्शाते हैं। इस से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि संकल्पनात्मक ऊमात्रा केवल पूर्व स्वर के रूपांतरण का हेतु होता है।

॥ कृतादेशानामूमात्रा आगमः ॥ १६ ॥

कृतादेशशब्दस्य पुनर्ग्रहणम्। यत्र यत्र वचने व्यञ्जनान्तानां लिङ्गानामादेशः कृतः स्यात्तत्र ऊमात्रा आगमो भवति ॥ रात् । सत् । कथ् । ग्रन्द् । हान् । इति

लिङ्गानि (सू०२३)। रांच़ू। रात्रयः। रातियाँ॥ संच़ू। आशाः। आशाओं॥ क्छ़ू। [सूत्रतन्तुराशयः। लच्छे]॥ ग्रन्ज़ू। संख्याः। गिन्तियाँ॥ हांन्ज़ू। हानयः। हानियाँ॥ ऊमात्रान्तत्वे पूर्वस्वरस्याप्रसिद्धता॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.16

कृतादेश शब्द का पुनर्ग्रहण। व्यंजनान्त लिंगों का जहाँ जहाँ आदेश किया गया है, वहाँ पर ऊमात्रा का आगम होता है। **रात, सत, कोथ, ग्रन्द हान**। 2.1.23 सूत्र के अनुसार **रॉच़** 'रातें' **सॅच** 'आशाएँ' **क्वछ़** 'लच्छे' **ग्रॅन्ज़** 'संख्याएँ' **हॉन्य** 'हानियाँ'। ऊमात्रा अन्त में होने के कारण पूर्व स्वर की अप्रसिद्धता होती है।

व्याख्या—

2.1.14 सूत्र में स्पष्ट किया गया है, कि अन्त की उक्त ऊमात्रा संकल्पनात्मक है। कर्ताकारक बहुवचन रूप में उपधा का अकार अथवा आकार ॲकार अथवा ऑकार में परिणत होता है। इस प्रकार का रूपान्तरण वर्तुलाकार स्वरों में भी अपेक्षित है।

॥ यड़ावक्कठ्थर्वडां च कृतादेशाविधिः ॥१७॥

एषां शब्दानां च कृतादेशलिङ्गवद्विधिरागमानिषेधौ भवतः। अकारागमस्य निषेधः ऊमात्रागमस्य विधिः स्यात्॥ यंड़ू। उदराणि। पेटाँ॥ गोव़ू (सू०७२)। गावः। गऊआँ। क्वठ़ू॥ कुष्ठानि [औषधविशेषः]। कुठाँ॥ थंऱू। पृष्ठानि पीठाँ॥ वंड़ू। कलान्तराणि। व्याजाँ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.17

कृतादेशित इन शब्दों में लिंगवत् विधि तथा आगम का निषेध है। अकारागम का निषेध तथा ऊमात्रा आगम की विधि है। **यड़ु** 'पेट (एक से अधिक)' **गावु** 'गाएँ' **क्वठु** 'कुष्ठाएँ (एक प्रकार की जड़ी-बूटी)' **थरु** 'पीठ (एक से अधिक)' **वड़ु** 'छल (एक से अधिक)'।

व्याख्या—

इन शब्दों के कर्ताकारक बहुवचन रूप में उपधा के स्वर में कोई परिवर्तन नहीं होता। जबकि शब्दांत का अकार ुकार हो जाता है। ऊमात्रा आगम संकल्पनात्मक है, जैसे कि पहले भी कहा जा चुका है।

॥ खार्मासांर्शादीनां च ॥ १८ ॥

एतदादीनां व्यञ्जनान्तानां स्त्रीलिङ्गानां चाऽकारागमनिषेध ऊमात्राग-

मश्च भवति ॥ खार् । खारी । खांरू । खार्यः ॥ मार् । नाम नदी । मांरू । नद्यः ॥ सार् । पट्टीभेदः । सांरू । पट्ट्यः ॥ राश् । वणिग्धनम् । रांशू । धनानि ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.18

इनके अतिरिक्त व्यंजनान्त स्त्रीलिंगों में अकारागम का निषेध तथा ऊमात्रा आगम होता है। **खार** 'खरवार (तोल की इकाई, लगभग 80 किलो)' **खॉर** 'खरवारें' **मार** 'छोटी नदी' **मॉर** 'छोटी नदियाँ' **सार** 'बीम (छत की)' **सॉर** 'बीमें' **राश** 'राशि' **रॉश** 'राशियाँ'।

व्याख्या–

वर्तमान उच्चारण में भी उक्त स्त्रीलिंग शब्दों के कर्ताकारक बहुवचन रूप में उपधा का आकर ऑकार में परिणत होता है। शेष कोई परिवर्तन व्यवहार में नहीं है।

॥ हान्तानां शश्च ॥ १९ ॥

हकारान्तानां स्त्रीलिङ्गानां प्रथमाबहुत्वादिष्वऽकारागमनिषेध ऊमात्रागमा-श्चिर्भवति अन्त्यस्य हकारस्य च शकारो भवति ॥ काह् । एकादशी । कांशू । एकादश्यः ॥ बाह् । द्वादशी । बांशू । द्वादश्यः ॥ पाह् । विष्ठा । पांशू । विष्ठाः ॥ एवं । कांशूव् सूंतिन् । एकादशीभिरित्यादि ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.19

हकारान्त स्त्रीलिंग का प्रथमा आदि बहुवचनों में अकारागम का निषेध और ऊमात्रा आगम की प्राप्ति है। इसके अतिरिक्त अंतिम हकार का शकार हो जाता है। **काह** 'एकादशी' **कॉश** 'एकादशियाँ' **बाह** 'द्वादशी' **बॉश** 'द्वादशियाँ' **पाह** 'खाद' **पॉश** 'खादें' एवं **कॉशव सुतिन** 'एकादशियों से'।

व्याख्या–

उक्त हकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के कर्ता कारक के बहुवचन रूप में अकारागम नहीं होता। उपधा का आकार ऑकार बन जाता है। कथित ऊमात्रा का उच्चारण के स्तर पर प्रयोग नहीं है। **ऑकदोह** 'प्रथमा' के अन्त में भी हकार है, परन्तु यह हकार विकारी रूप में शकार नहीं होता, क्योंकि **ऑकदोह** पुंलिंग रूप है। शेष सभी हकारान्त तिथियाँ स्त्रीलिंग हैं, जिनका बहुवचन के अतिरिक्त एकवचन विकारी रूपों में भी ये रूपांतरण सिद्ध हैं। यथा–

तमिस छि च़्वदुश हुँज़ मकॉय खेन्य 'उस को चर्तुदशी की मकई खानी है'।

वाक्य में **च़्वदाह** 'चतुर्दशी' विकारी रूप में रूपांतरित होकर **च़्वदुश** हो गया है।

॥ ऊकाराद्‌ौकारस्य वत्वम् ॥ २० ॥

ऊमात्रायाः परस्य औकारस्य सर्वत्र पुंलिङ्गे स्त्रीलिङ्गे च वकारः स्यात् ॥ रॉचूव् सुतिन् । रात्रिभिः । रातियों कर के ॥ यॆड्रूव् पुछ्य् । उदरेभ्यः । पेटों वास्ते ॥ दॉनूव् सुतिन् । करकैः । अनारों कर के ॥ बॉचूव् सुत्य् । कुटुम्बैः । टब्बरों कर के ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.20

पुंलिंग और स्त्रीलिंग रूप में ऊमात्रा के पश्चात औकार का सर्वत्र वकार होता है। रॉचव सुतिन 'रातों से' यॅडव पुछ्य 'पेटों के लिए' दॉनव सुतिन 'अनारों से' बॉचव सुत्य 'कुटुम्ब जनों से'।

व्याख्या—

सुत्य, पुछ्य, प्यठ, किन्य आदि परसर्ग प्रयुक्त होने की स्थिति में बहुवचन रूप के साथ वकार प्रत्यय संयुक्त होता है। क्युत, हुन्द आदि परसर्गों की स्थिति में वकार के स्थान पर नकार प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा—

दॉनव सुत्य 'अनारों से' दॉनन हुन्द 'अनारों का'

सूत्र में वर्णित ऊमात्रा संकल्पनात्मक है। भाषा में औकार का उच्चारण अव्याप्त है। नवागत शब्दों में संभव हो सकता है।

॥ ऊदितोरकारागमः स्त्रियां सकारे ॥ २१ ॥

ऊकारान्तस्येकारान्तस्य च लिङ्गस्य सकारे परेऽकारागमो भवति स्त्रियाम् ॥ पॅट्रू । तंनू । ह्रूंटू । पूथि । शब्दाः ॥ पच्य । पट्टिकाम् । फट्टी ॥ तञ्य । तन्वीम् । पतली ॥ हच्य । काष्ठम् । लकड़ी ॥ पोथ्य । पुस्तिकाम् । पोथी ॥ द्वितीयायां स्नाव् (सू० ३८) इति स् प्रत्ययः [। स्लोपः स्त्रियां सर्वत्र (सू० ४०) इति सकारस्य। लोपः]। ऊदन्तटवर्गस्य (सू० २२) इति टस्य चः । उवर्णान्तानामिकार (सू० ३०) इति ऊमात्राया इकारः। इकारोऽसवर्णे योऽपरलोप (सू० ११०) इति यत्वम् । अनेनाकारागमः ॥ पूथि शब्दस्य चानेनाकारागमः । इकारोऽसवर्णे योऽपरलोप (सू० ११०) इति यत्वम् । व्यञ्जनं परेण संधेयम् (सू० ११९) । पूर्ववर्णोकारस्यौकार (सू० ३१) इत्यूकारस्यौत्वम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.21

स्त्रीलिंग में ऊकारान्त तथा ईकारान्त शब्दों के साथ सकार होने पर अकारागम होता है। **पॅट, तॅन्य, हॅट, पूथ्य** शब्दों का **पचि**, 'तख़्ते' **तनि** 'पतलीं', **हचि** 'लकड़ियाँ' **पोथि** 'पुस्तकें'।

2.1.38 सूत्र के अनुसार द्वितीया में **स** प्रत्यय (2.1.40 सूत्र के अनुसार स्त्रीलिंग रूपों में सर्वत्र सकार का लोप। 2.1.22 सूत्र के अनुसार टवर्ग का चवर्ग। 2.1.30 सूत्र के अनुसार ऊमात्रा का इकार। 2.1.10 सूत्र के अनुसार यत्व। प्रस्तुत सूत्र से अकारागम। **पूथ्य** शब्द में भी इसी सूत्र से अकारागम 1.1.3 सूत्र से संधि। 1.1.33 सूत्र से ऊकार का ओकार।

व्याख्या–

पॅट 'तख़्ता', **तॅन्य** 'पतली' और **हॅट** 'लकड़ी' स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन रूप में उपधा के ॲकार का अकार हो जाता है। इसके अतिरिक्त ऐसे बहुवचन रूपों में **तनि** 'पतलीं', **हचि** 'लकड़ियाँ' ही सिद्ध है। **पूथ्य** शब्द का बहुवचन रूप **पोथि** 'पुस्तकें' सिद्ध है, जहाँ उपधा का ऊकार ओकार में परिणत होता है। इन सभी शब्दों का अंतिम इकार बहुवचन का प्रत्यय है। स्त्रीलिंग एकवचन शब्दों के विकारी रूप का प्रत्यय भी इकार ही है।

यथा– **दॉर** 'खिड़की' का एकवचन विकारी रूप **दारि** 'खिड़कियाँ'।

उदाहरण– **दारि हुन्द रंग छु न्यूल** 'खिड़की का रंग नीला है।'

॥ ऊदन्तटवर्गस्य चवर्गः प्रथमाबहुत्वादिषु ॥२२॥

प्रथमाया बहुवचनादिषु ऊमात्रायुतस्य टवर्गस्य चवर्गादेशो भवति स्त्रीलिङ्गे ॥ पटू। काटू। बटू। इति शब्दाः ॥ पच्य छ्यह्। पट्टिकाः सन्ति। फट्टियाँ हैं॥ पच्यन् छुह् गरान्। पट्टिका घटयति। फट्टियों को गडता है॥ पच्य सूतिन्। पट्टिकया। फट्टी कर के॥ काछ्य छ्यह्। शाकादिकाष्ठानि सन्ति। सागों की लकडियाँ हैं॥ काछ्यन् छुह् फुटरान्। काष्ठानि भनक्ति। सागों की लकडियों को तोडता है॥ काछि सूतिन्। शाककाष्ठेन। सागों की लकडी कर के॥ बज्य छ्यह। महत्यः स्त्रे। बडियाँ हैं॥ बज्यन् छुह् दपान्। महतीर्वदति। बडी स्त्रियों को कहता॥ बज्यौ सूतिन्। महतीभिः। बडी स्त्रियों कर के॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.22

स्त्रीलिंग प्रथमा के ऊमात्रा युक्त शब्दों के टवर्ग का बहुवचन आदि रूपों में चवर्ग आदेश है। **पॅट, कॉठ, बॅड** शब्दों से – **पचि छे** 'तख्ते हैं', **पच्यन छु गरान** 'तख्ते गढ़ता हैं'। **पचि सुतिन** 'तख्ते से' **काछि छे** 'डंठल (साग सब्ज़ी की)'

हैं।' **काछन छु फुटरान** 'डंठल तोड़ता है'। **काछि सुतिन** 'डंठल से'। **बजि छे** 'बड़ीं हैं'। **बज्यन छु दपान** 'बड़ी (स्त्रियों को) कहता है'। **बजव सुतिन** 'बड़ी (स्त्रियों)' से।

व्याख्या–

स्त्रीलिंग में सर्वत्र कवर्ग का चवर्ग और तवर्ग का च़वर्ग हो जाता है, परन्तु मूर्धन्य ध्वनियों में इस प्रकार का स्पर्शसंघर्षी करण बहुवचन अथवा विकारी रूपों में ही संभव है। यह प्रक्रिया लकार को भी जकार में रूपांतरित करती है। इस रूपांतरण का उल्लेख 2.1.27 सूत्र में किया गया है।

पुंलिंग	**स्त्रीलिंग**
बतुक 'बतख'	बतुच 'बतख' (स्त्री)
थॊद 'ऊँचा'	थॅज़ 'ऊँची'
हॊल 'टेढ़ा'	हॅज 'टेढ़ी'

यह भी द्रष्टव्य है, कि स्त्रीलिंग में वर्तुलाकार स्वर अवर्तुलाकार हो जाते हैं। सूत्र में वर्णित ऊमात्रा प्रक्रियात्मक है। तवर्ग का च़वर्ग रूपांतरण अग्रिम सूत्र में वर्णित है।

॥ तवर्गान्तानामप्रसिद्धः ॥ २३ ॥

तवर्गान्तानां स्त्रीलिङ्गानां क्रमेण अप्रसिद्धः च़वर्गादेशो भवति अप्रसिद्धो दन्त्यः॥ रात्। क्वथ्। ग्रन्द् । ईरन्। च़ामन्। इति शब्दाः॥ रांच़ू छ्यह् । रात्रयः सन्ति। रातियाँ हैं॥ रांच़ून् छुह् निवान्। रात्रीर्हरति। रातियों को लेता है॥ रांच़ूव् सूतिन् । रात्रिभिः । रातियों कर के॥ क्वछ़ू छ्यह् [। सूत्रतन्तुराशयः सन्ति। लच्छे हैं]॥ क्वछ़ून् छुह् वुठान् [। सूत्रतन्तुराशीन् वेष्टयति। लच्छों को बाटता है]॥ क्वछ़ूव् सूतिन् [। सूत्रतन्तुराशिभिः। लच्छों कर के]॥ ग्रॅन्ज़ू छ्यह्। संख्याः सन्ति। गिन्तियाँ हैं॥ ग्रॅन्ज़ून् छुह् गॅन्ज़्रान्। संख्या गणयति। गिन्तियों को गिनता है॥ एवं। ईरॅञ्ज़ू [। स्थूणाः। निहाइयाँ]॥ ईरॅञ्ज़ूव् सूतिन् [। स्थूणाभिः। निहाइयों कर के]॥ च़ामॅञ्ज़ू [। आमिक्षाः। पनीर]॥ च़ामॅञ्ज़ूव् सूतिन् [। आमिक्षाभिः। पनीरों कर के]॥ (सू० १४,१६,२०)॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.23

तवर्गान्त स्त्रीलिंग रूपों का क्रम से अप्रसिद्ध च़वर्ग आदेश है, अर्थात अप्रसिद्ध दन्त्य। **रात क्वथ ग्रन्द, ईरन, च़ामन** शब्दों से **रॉच़ छे** 'रातें हैं' **रॉच़न छु निवान** 'रातों में ले जाता है'। **रॉच़व सुतिन** 'रातों से'। **क्वछ़ छे** 'लच्छे हैं'। **क्वछ़न छु वुठान** 'लच्छे बटता है'। **क्वछ़व सुतिन** 'लच्छों से' **ग्रॅन्ज़ छि** 'संख्याएँ हैं'। **ग्रॅन्ज़न छु गॅन्ज़रान** 'संख्याएँ गिनता है'। एवं – **ईरॅन्य** 'स्तम्भ (एक से

अधिक)'। **ईरॅन्यव सुतिन** 'स्तम्भों से' **चा़मॅन्य** 'पनीर (एक से अधिक प्रकार के)' **चा़मुन्यव सुतिन** 'पनीरों से'।

व्याख्या–

स्त्रीलिंग रूपों में तकार का च़कार, थकार का छ़कार तथा दकार का ज़कार हो जाता है। नकार तालव्यीकृत होकर न्यकार बन जाता है।

यथा–

मोत 'पगला' **मॅच़** 'पगली'

वोथ 'उठा' **वॅछ़** '(वह) उठी'

थोद 'ऊँचा' **थॅज़** 'ऊँची'

हून 'कुत्ता' **हून्य** 'कुतिया'

ऐसे सभी शब्दों का च़वर्ग आदेश बहुवचन में भी यथावत रहता है। सूत्र में वर्णित उदाहरणों का तवर्ग बहुवचन में च़वर्ग सिद्ध है। पूर्व सूत्र यह स्पष्ट करता है कि टवर्ग मात्र बहुवचन में ही यह रूपांतरण स्वीकार करता है।

॥ न ख्वन्तन्नान्स्वन्हन्बनादीनाम् ॥ २४ ॥

एषां शब्दानां वर्गाक्षरादेशो न भवति॥ ख्वन्। कफोणिः। आरकी॥ ख्वन। कफोणयः। आरकियाँ॥ तन्। तनुः। देह॥ तन। तन्वः॥ तनौ सूत्य्॥ नान्। नाभिः। नाभि॥ नान। नाभयः॥ नानौ सूतिन्॥ स्वन्। सपत्नी। साकन्॥ स्वन। सपत्न्यः। स्वनौ सूतिन्॥ हनि सूतिन्। अल्पेन॥ बनि सूतिन्। पुञ्जेन॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.24

इन शब्दों का वर्गाक्षर आदेश नहीं है। **ख्वन** 'कोहनी' **ख्वनु** 'कोहनियाँ', **तन** 'तन', **तनु** 'तनें', **तनव सुत्य, नान** 'नाल' **नानु** 'नालें' **नानव सुतिन, स्वन** 'सौत' **स्वनु** 'सौतें' **स्वनव सुतिन, हनि सुतिन** 'अल्प भाग से' **बनि सुतिन** '(लकड़ी के) ढेर से'।

व्याख्या–

यह अपवाद सूत्र है। यहाँ ऐसे नकारान्त स्त्रीलिंग शब्द उद्धृत हैं, जिन के बहुवचन अथवा विकारी रूपों में नकार का न्यकार नहीं होता। एकवचन विकारी रूपों में परसर्ग प्रयुक्त होने की स्थिति में इकारागम होता है। यथा– **ख्वनि सुत्य** 'कोहनी से'।

2.1.20 सूत्र में स्पष्ट किया गया है, कि बहुवचन रूप में **क्युत, हुन्द** आदि परसर्ग प्रयुक्त होने पर वकार के स्थान पर नकार प्रत्यय संयुक्त होता है।

॥ कथादीनां च ॥ २५ ॥

कथ् [। कथा] ॥ वथ् [। मार्गः] ॥ व्यथ् । (वितस्ता नाम नदी] ॥ लथ् [। लत्ताप्रहारः] ॥ दथ् [। लोष्टम्] ॥ थ्वथ् [। अन्तरायः] ॥ च़्वथ् [। गुदम्] ॥ च़िथ् [। नाडीस्तम्भः] ॥ चेंथ् [। शरीरपरिवर्तनेन क्रीडाविशेषः] ॥ गुथ् [। नदीप्रवाह वेगः] ॥ पीँथ् [। लेशः] ॥ तोंथ् [। चञ्चुः] ॥ इति कथादयः ॥ एषां शब्दानां च वर्गाक्षरादेशो न भवति ॥ कथ । कथाः । वार्ताः ॥ लत । लत्ताः । लत्ताँ ॥ दत । लोष्टानि [। ढेले] ॥ थ्वत । अन्तरायाः [। विघ्न] ॥ च़्वत । गुदानि । गाँडोँ ॥ चित । नाडीस्तम्भनानि । थंभना ॥ कथौ सूतिन् । कथाभिः ॥ लतौ सूत्य् । लत्ताभिः ॥ दतौ पुछ्य् । लोष्टेभ्यः ॥ थ्वति सूतिन् । अन्तरायेण ॥ च़्वतन् प्यठ् । गुदेषु ॥ च़िति सूतिन् । नाडीस्तम्भनेन ॥ चेंति सूतिन् ॥ गुथि सूत्य् । प्रवाहेन ॥ पीँति सूत्य् । अल्पेन ॥ तोंति सूतिन् । चञ्च्वा ॥

अनुवाद– सूत्र 2.1.25

कथ 'कहानी' वथ 'मार्ग', व्यथ 'वितस्ता नदी', लथ 'लात', दथ 'ढेरी (गूँदे हुए पदार्थ की)', **थ्वथ** 'रुकावट (लज्जावश)' **च़्वथ** 'गुदा' **च़िथ** 'लचक' **चेंथ** 'कलाबाज़ी' **गुथ** 'वेगबान लहर' **पींथ** 'लेशमात्र' **तोंथ** 'चोंच'। इन शब्दों का भी वर्गाक्षर आदेश नहीं होता। **कथ** 'कहानियां, बातें' **लत** 'लातें **दत** 'ढेरियां' **थ्वत** 'रुकावटें' **च़्वत** 'गुदाएँ' **च़ित** 'लचकें', **कथव सुतिन** 'बातों से' **लतव सुत्य** 'लातों से' **दतव पुछ्य** 'ढेरियों के लिए' **थ्वति सुतिन** 'रुकावट से' **च़्वतन प्यठ** 'गुदाओं पर' **च़िति सुतिन** 'लचक से' **चेंति सुतिन** 'कलाबाज़ी से' **गुति सुत्य** 'वेगवान लहर से' **पींति सुत्य** 'लेशमात्र से' **तोंति सुतिन** 'चोंच से'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में थकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अपवाद उद्धृत हैं। **कथ** को छोड़ कर शेष सभी शब्दों का अंतिम थकार अल्पप्राण तकार में परिणत होता है। **पींथ** के बहुवचन विकारी रूप में थकार का च़कार संभव है। यथा – **पींच़व सुत्य** 'लेश मात्रों से'

॥ टवर्गान्तानां च ॥ २६ ॥

टवर्गान्तानां ऊमात्रारहितानां स्त्रीलिङ्गानां च वर्गादेशो न भवति ॥ नद् । गर्वेंठ् । हड् । इति शब्दाः ॥ नदि सूतिन् । कम्पेन ॥ गर्वेंठि पुछ्य् । गृहोपकरणाय ॥ हडि सूतिन् । हठेन ॥ ऊमात्रारहितानां किम् । च़्वंट् । अपूपः ॥ च़्वच्य छुह् खयवान् । पूपान् खादति ॥ च़्वच्यौ सूतिन् । अपूपैः ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.1.26**

ऊमात्रा रहित टवर्गान्त स्त्रीलिंग का भी वर्गादेश नहीं होता। **नठ, गर्वेठ, हड** इन शब्दों से:— **नटि सुतिन** 'कम्पन से' **गर्वेठि पुछ्य** 'घरेलू सामान के लिए' **हॅडि सुतिन** 'हठ से'। ऊमात्रा रहित क्यों? **च़ोट** 'रोटी' **च़्वचि छु ख्यवान** 'रोटियाँ खाता है'। **च़्वचव सुतिन** 'रोटियों से'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र उन टवर्गान्त शब्दों का उल्लेख करता है, जिन का टवर्ग बहुवचन अथवा विकारी रूप में चवर्ग नहीं हो जाता। पूर्व में कथित है, कि शब्दान्त हल चिन्ह युक्त 'ऊ' की मात्रा संकल्पनात्मक है। **च़ोट** शब्द के उच्चारण में टकार के पश्चात वर्तमान में किसी भी स्वर का उच्चारण नहीं है।

॥ वाल्साल्ज़ाल्कलां जः ॥ २७ ॥

एषां शब्दानां अन्त्यस्य जकारो भवति स्त्रियाम् ॥ वाल्। सर्पादिबिलम् ॥ साल्। स्याली ॥ ज़ाल्। जालिका ॥ कल्। चिन्ता ॥ वांजू। बिलानि ॥ सांजू। स्याल्यः ॥ ज़ांजू। जालिकाः ॥ कंजू। चिन्ताः ॥ वांजूव् सूतिन् ॥ सांजूव् सूतिन् ॥ ज़ांजूव् सूत्य् ॥ कंजूव् सूतिन् ॥ साधनं पूर्ववत् ॥ स्त्रियां किम्। वाल सूतिन् ॥ एषां शब्दानां किम्। गल्। कपोलादधो गल्संज्ञः ॥ गलौ सूतिन् ॥ ज़ालि सूत्य्। कम्पेन ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.1.27**

स्त्रीलिंग में इन शब्दों का अंतिम व्यंजन जकार हो जाता है। **वाल** 'सर्प आदि की बिल', **साल** 'साली', **ज़ाल** 'जाल', **कल** 'चिन्ता'। **वाजि** 'बिलें', **सॉज** 'सालियाँ', **ज़ॉज** 'जाल (एक से अधिक)', **कॅज** 'चिन्ताएँ'। **वाजव सुतिन सॉजव सुतिन, ज़ॉजव सुतिन** इन्हीं शब्दों में क्यों? **गल** 'गाल', **गलव सुतिन, ज़ालि सुत्य** 'कंपकपी से'।

व्याख्या—

2.1.22 सूत्र में उल्लेख है कि पुंलिंग शब्द के अंतिम लकार का स्त्रीलिंग में जकार हो जाता है। प्रस्तुत सूत्र के स्पष्टीकरण में लकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के उदाहरण हैं, जिन के बहुवचन रूप में लकार का जकार सिद्ध हैं, पुंलिंग के विकारी रूप में लकार का जकार संभव नहीं है। **वाल** 'बाल' पुंलिंग शब्द है। इस के साथ **सुत्य** परसर्ग प्रयुक्त होने पर लकार अप्रभावी रहता है। स्पष्टीकरण में अपवाद शब्द **गल** भी दिया गया है, जिस के लकार का जकार नहीं होता।

॥ हाल्शब्दस्य स्त्रियां समासेऽपि ॥ २८ ॥

हाल् शब्दस्य लकारस्य जकारो भवति स्त्रीलिङ्गवर्तमानसमासपदान्तेऽपि ॥

हाल्। शाला। हांजू किन्य्। शालातः। हांजू प्यद्। शालोपरि॥ समासान्ते यथा। स्वरहांजू अंदर्। महानसे॥ हंस्तिहांजू अंदर्। हस्तिशालायां॥ स्त्रीलिङ्गे किम्। चाटहालस् अंदर्। पाठशालायाम्॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.28

स्त्रीलिंग तथा समास पद में हाल शब्द के लकार का जकार होता है। **हाल** 'शाला' **हॉज किन्य** 'शाला से' **हॉज प्यठ** 'शाला पर'। समास के अन्त में यथाः— **स्वरहॉज अंदर** 'रसोई में' **हॅस्तिहॉज अंदर** 'हाथीशाला में' स्त्रीलिंग में क्यों?' **चाटहालस अंदर** 'विद्यालय में'।

व्याख्या—

हाल शब्द का स्वतन्त्र प्रयोग संभव नहीं है। समस्त पद में यदि रूप स्त्रीलिंग है, तो लकार का जकार सिद्ध है। **स्वरहॉज** और **हॅस्तिहॉज** दोनों स्त्रीलिंग रूप हैं अतः लकार जकार में परिणत होता है तथा उपधा के स्वर में भी परिवर्तन है। **चाटहाल** पुंलिंग शब्द है इसलिए यहाँ कोई रूपांतरण नहीं होता।

॥ वा कुंडल्कर्तलोः ॥ २९ ॥

कुंडल् कर्तल् इत्यनयोः शब्दयोर्वा विकल्पेन लकारस्य जकारो भवति॥ कुंडल्। कपालिका। कुंडलि सूतिन्। कुंडजू सूतिन्॥ कर्तल्। खड्गः। कर्तलि सूतिन्। कर्तजू सूतिन्॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.29

कुंडल और **कर्तल** इन दानों शब्दों के लकार का जकार विकल्प से होता है। **कुंडल** 'मिट्टी का बरतन (कोयला जलाने के लिए)' **कुंडलि सुतिन,** विकल्प में- **कुन्डुजि सुतिन**। **कर्तल** 'तलवार' **कर्तलि सुतिन** विकल्प में- **कर्तजि सुतिन**।

व्याख्या—

कुंडल का वर्तमान उच्चारण **क्वंडुल** है। यह पुंलिंग रूप है। यहाँ लकार का जकार संभव नहीं है। **क्वन्डुज**-स्त्रीलिंग रूप है। इस के बहुवचन तथा विकारी रूप में लकार का जकार विकल्प से सम्भव है।

बहुवचन – **क्वंडजन छुन्द**, विकल्प में- **क्वंडलन हुन्द**।

एकवचन विकारी रूप- **क्वंडजि हुन्द**, विकल्प में- **क्वंडलि हुन्द**।

॥ उवर्णान्तानामिकारः ॥ ३० ॥

उकारान्तानां ऊकारान्तानां च लिङ्गानां प्रथमाबहुत्वादिविभक्तिगणे अन्त्यस्वरस्य इकारो भवति॥ गुरु। घोटकः॥ गुरिस् छुह् खसान्। अश्वमारोहति॥ एवं। गुर्यन्। गुरि सूतिन्। इत्यादि। गुरु शब्दात् द्वितीयायां स्नाव्

(सू० ३८) इति स् न् प्रत्ययौ। प्रत्यये सर्वत्र (सू० १२) इति अकारागमः। अनेन उकारस्य इकारः। यत्वम् ॥ पंटू। पट्टिका। पच्य। पच्यन्। पचि सुतिन्॥ प्रथमे। बहुत्वे ऽकारागमः (सू० ११) इति। अपरत्र प्रत्यये सर्वत्र (सू० १२) इति अकारागमः। ऊदन्तटवर्गस्य (सू० २२) इति टकारस्य चकारः। अनेन ऊकारस्य इकारः। तृतीये। इतो लोप (सू० ६) इति इप्रत्ययस्य लोपः॥

अनुवाद– सूत्र 2.1.30

प्रथमा के उकारान्त तथा ऊकारान्त शब्दों का अंतिम स्वर बहुवचन आदि विभक्तियों में इकार हो जाता है। गुर 'घोड़ा' **गुरिस छु खसान** 'घोड़े पर चढ़ता है'। एवं– **गुर्यन, गुरि सुतिन** इत्यादि। 2.1.38 सूत्र से **गुर** शब्द की द्वितीया में **स, न** प्रत्यय। 2.1.12 सूत्र से अकारागम। प्रस्तुत सूत्र से उकार का इकार। यत्व। पॅंट 'तख्ता', **पचि, पच्यन, पचि सुतिन**।

2.1.11 सूत्र से बहुवचन में अकारागम। 2.1.12 सूत्र से **न** प्रत्यय के साथ सर्वत्र अकारागम। 2.1.22 सूत्र से टकार का चकार। प्रस्तुत सूत्र से ऊकार का इकार। 2.1.6 सूत्र से **इ** प्रत्यय का लोप।

व्याख्या–

वर्तमान भाषा प्रयोग में उक्त उकार अथवा ऊकार का व्यवहार नहीं है। 2.1.12 सूत्र में उल्लेख है, कि बहुवचन तथा एकवचन विकारी रूप का प्रत्यय, इकार है। प्रस्तुत सूत्र में यही इकार निर्दिष्ट है। शेष सभी उद्धृत सूत्र यथा स्थान व्याख्यायित हैं।

॥ नोदन्तानां पुंसि ॥ ३१ ॥

ऊकारान्तानां लिङ्गानां पुंलिङ्गे अन्त्यस्वरस्य इकारो न भवति ॥ दांनू। करकः॥ दांनू। दाडिमान्। दांनूव् सुतिन्। दाडिमैः॥ हान्जूव् सुत्य्। नाविकैः॥ बांचूव् सुत्य्॥ कुटुम्बैः॥ गन्जूव् सुत्य्। चर्मकारैः॥ ऊदन्तानां पुंसि (सू० २) इति बहुवचनं लिङ्गवत्। द्वितीयायां स्नाव् (सू० ३८) इति न् प्रत्ययः। ऊकारादौकारस्य वत्वम् (सू० २०) इति सूत्रेण औ सुतिन् औ सुत्य् प्रत्यययोः औकारस्य वत्वम्। पुंसि किम्। व्यछ्यौ सुतिन्। स्थूलाभिः॥

अनुवाद– सूत्र 2.1.31

ऊकारान्त पुंलिंग शब्दों के अंतिम स्वर का इकार नहीं होता। **दॉन** 'अनार' **दॉन** (एक से अधिक), **दॉनव सुतिन** 'अनारों से', **हॉन्ज़व सुत्य** 'नाविकों

से' **बॉचव सुत्य** 'परिवार जनों से', **गॅन्ज़व सुत्य** 'चर्मकारों से'। 2.1.2 सूत्र के अनुसार ऊ अन्त वाले पुंलिंग बहुवचन में यथावत रहते हैं। 2.1.38 के अनुसार द्वितीया में न प्रत्यय। 2.1.20 सूत्र से औकार का वत्व। पुंलिंग क्यों? **व्यछव सुतिन** 'मोटियों से'।

व्याख्या–

पुंलिंग शब्दों में भी बहुवचन रूप के लिए **इ** प्रत्यय अभिधारित है। कुछ स्थितियों में **इ** प्रत्यय मूल शब्द को अपेक्षित रूप से प्रभावित नहीं करता। **दॉन, हॉन्ज़, बॉच** और **गॅन्ज़** बहुवचन में इसी कारण यथावत हैं, जबकि **मोल** 'पिता' **शुर** 'शिशु' **लॉट** 'दुम' बहुवचन में **इ** प्रत्यय के कारण **मॉल्य** 'पिता (एक से अधिक)' **शुर्य** 'शिशु (एक से अधिक) **लॅट्य** 'दुम (एक से अधिक)' हो जाते हैं।

पुंलिंग विकारी रूपों की भी यही स्थिति है। विशेषण शब्द **व्यॊठ** 'मोटा' का बहुवचन रूप **व्यॊठ्य** 'मोटे' है। इसका स्त्रीलिंग रूप **व्यॅठ** 'मोटी' तथा स्त्रीलिंग बहुवचन रूप **व्यछि** सिद्ध है। **व्यछि** में **इ** प्रत्यय स्पष्ट परिलक्षित है। जबकि पुंलिंग रूपों में यह प्रत्यय मूल शब्द में रूपांतरण करने के पश्चात लुप्त होता है।

॥ व्यञ्जनान्तस्योकारोपधाया अन् ॥३२॥

व्यञ्जनान्तस्य शब्दस्य उपधाभूतस्य उकारस्य प्रथमाबहुत्वादिषु अकारो भवति ॥ वाँदुर् शब्दः । वाँदर् । वानराः ॥ वाँदरौ सूत्य् । वानरैः ॥

अनुवाद– सूत्र 2.1.32

व्यंजनांत शब्दों के प्रथमा में उपधा भूत उकार का बहुवचन आदि रूपों में अकार होता है। **वान्दुर** 'बन्दर' **वान्दर** 'बन्दर (एक से अधिक)' **वान्दरव सुत्य** 'बन्दरों से'।

व्याख्या–

उपधा के उकार का अकार रूपांतरण निम्नांकित शब्दों में भी देख सकते हैं:–

वांगुन 'बैंगन' **वांगन** 'बैंगन (एक से अधिक)' **वातुल** 'मोची' **वातल** 'मोची (एक से अधिक)', **ओलुव** 'आलू' **ओलव** 'आलू (एक से अधिक)' **क्वकुर** 'मुर्गा' **क्वकर** 'मुर्गे'। निम्नलिखित शब्दों में यह परिवर्तन नहीं होता।

विशेषण:–

व्जुल 'लाल' **व्ज़ुल्य** 'लाल' (एक से अधिक)', **गाटुल** 'बुद्धिमान' **गाटुल्य** 'बुद्धिमान (एक से अधिक)'

संज्ञा–

लछुल 'बुहारी' **लछुल्य** 'बुहारियां', **नॆचुव** 'बेटा' **नॆचिव्य** 'बेटे', **छ़ावुल**

'बकरा' छ़ावुल्य 'बकरे'।

॥ पूर्ववर्णोकारस्योकारः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

स्त्रीलिङ्गे वर्तमानस्य पूर्ववर्णसंबन्धिन ऊकारस्य ओकारो भवति प्रथमाबहु-त्वादिविभक्तिगणे ॥ पूथि (प्र०ए०)। पुस्तकम् ॥ कूरू (प्र०ए०)। कन्या ॥ पोथ्य (प्र०ब०)। पोथ्य (द्वि०ए०) छुह् परान्। पोथि सूतिन् (तृ०ए०)। पोथ्यौ पुछ्य् (च०ब०)। इत्यादि॥ कोर्य (प्र०ब०)। कन्याः। कोर्य (द्वि० ए०) छुह् रछान्। कोर्यन् (द्वि० ब०)।कोर्यौ सूत्य् (तृ०ब०)। इत्यादि॥ अनेन पूर्ववर्णोकारस्य ओकारः। साधनं पूर्ववत्॥

अत्र स्थानेऽन्तरतम [पा० १।१।५०।] इति वचनाद्यथा पूर्ववर्णसंबन्धिन ऊकारस्य ओकारो भवति तथैव ईकारस्य एकारो भवतीति बोध्यम्॥ सीरू। इष्टिका। सेर्य। इष्टिकाः॥ खीति।क्षेत्रम्। खेत्य। क्षेत्राणि॥ इत्यादि॥ गीरा-दीनां तु न॥ गीरादयस्तु। गीरू [।गैरिकम्]॥ गीदू [। अर्भकविष्टा] ॥ चीरि [। चीरिका]॥ टींठू [। अहंकारः]॥ टीरू [। शीतस्यौदनस्य घनीभूतो राशिः]॥ पीरू [। पीठकम्]॥ इत्यादयः प्रायशो ज्ञेयाः। गीरू। गैरिकम्। गीरि सूतिन्। गैरिकेण॥ इत्यादीनि स्वरूपाणि भवन्ति॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.33

प्रथमा एकवचन स्त्रीलिंग के पूर्व वर्ण का ऊकार बहुवचन तथा विभक्ति रूप में ओकार हो जाता है। **पूथ्य** (प्रथमा एकवचन) 'पुस्तक', **कूर** (प्रथमा एकवचन) 'लड़की'। **पोथि** (प्रथमा बहुवचन) **पोथि** (द्वितीया एकवचन) छु परान। **पोथि सुतिन** (तृतीया एकवचन) **पोथ्यव पुछ्य** (चतुर्थी बहुवचन), इत्यादि। **कोरि** (प्रथमा बहुवचन) 'लड़कियां', **कोरि** (द्वितीया एकवचन) **छु रछान। कोरयन** (द्वितीया बहुवचन) **कोरयन सुत्य** (तृतीया बहुवचन), इत्यादि। प्रस्तुत सूत्र से पूर्व वर्ण के ऊकार का ओकार। सिद्धि पूर्ववत।

पाणिनी सूत्र 1.1.50 स्थानेऽन्तरतम के अनुसार जिस प्रकार पूर्व वर्ण के ऊकार का ओकार होता है, उसी प्रकार ईकार का एकार भी संभव है। **सीर** 'ईंट' **सेरय** 'ईंटे', **खीत** 'क्षेत्र' **खेत्य** 'क्षेत्र (एक से अधिक)', इत्यादि। **गीर** आदि में ऐसा नहीं है। **गीर** आदि में:– **गीर्य** 'केसरिया' **गीद** 'शिशु का मल' **चीरय** 'चीरिका' **टींठ** 'अहंकार' **टीर** 'ठंड़ा भात खंड' **पीर** 'चौकी', इत्यादि शब्द ऐसे हैं। **गीर** 'केसरिया' **गीरि सुतिन** 'केसरिया से' इत्यादि स्वरूप हैं।

व्याख्या–

स्त्रीलिंग एकवचन अविकारी शब्दों के अंतिम व्यंजन से पूर्व का उकार बहुवचन अथवा विकारी रूपों में ओकार हो जाता है। उद्धृत पाणिनी सूत्र के

अनुसार सादृश्यता के आधार पर ऐसी स्थिति का ईकार भी एकार हो जाता है। ईकार के एकार रूपांतरण में अपवाद भी हैं। सभी प्रकार के उदाहरण स्पष्टीकरण में प्रस्तुत हैं। खीत शब्द का वर्तमान भाषा में सीमित प्रयोग है।

॥ बहुषु पुंस्यप्रथमायाम् ॥ ३४ ॥

प्रथमाबहुवचनं वर्जयित्वा पुंलिङ्गे विद्यमानस्य पूर्ववर्णसंबन्धिन ऊकारस्य बहुवचनेषु ओकारो भवति ॥ गूर् । गोपः ॥ गूल् । फलसारः ॥ गोर्यन् (द्वि० ब०)। गोल्यन् । गोर्यौ सूविन् । इत्यादि ॥ द्वितीयायां न् प्रत्ययः। तृतीयायां औ सूविन् प्रत्ययः॥ इवर्णान्तानामिकारः (सू० ३०) न्प्रत्यये सर्वत्र (सू० १२) इत्यकारागमः। अनेनोपधाया ऊकारस्य ओकारः। यत्वम् ॥ बहुषु किम् । गूरिम् । गोपम् ॥ गूलिम् । फलसारम् ॥ अप्रथमायां किम् । गूरि । गोपाः ॥ गूल्लि । फलसाराः ॥ पुंसि किम् । कोर्य। कन्याः ॥ पोथ्य । पुस्तकानि ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.34

पुंलिंग में प्रथमा बहुवचन को छोड़ कर, पूर्व वर्ण संबंधी ऊकार का बहुवचन की अन्य विभक्तियों में ओकार हो जाता है। **गूर** 'ग्वाला', **गूल** 'फल का सार'। **गोस्यन** (द्वितीया बहुवचन) 'ग्वालों को', **गोस्यव सुतिन,** इत्यादि। द्वितीया का प्रत्यय **न**। तृतीया में **अव सुतिन** प्रत्यय। 2.1.30 सूत्र से इकार। 2.1.12 सूत्र से **न** प्रत्यय। अकारागम। प्रस्तुत सूत्र से उपधा के ऊकार का ओकार, यत्व। बहुवचन क्यों? **गूरिस** 'ग्वाले को', **गूलिस** 'फल के सार को'। अप्रथमा क्यों? **गुस्य** 'ग्वाले' **गूल्य** 'फल के सार' पुंलिंग क्यों? **कोरि** 'लड़कियाँ' **पोथि** 'पुस्तकें'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। पुंलिंग के बहुवचन विकारी रूपों में उकार का ओकार संभव है। उदाहरण स्पष्टीकरण में प्रस्तुत हैं। सूत्र संख्या 2.1.33 में ईकार के एकार रूपांतरण का कथन है। वहाँ पर इस रूपांतरण के कुछ अपवाद भी दिए गए हैं। पुंलिंग में भी इस प्रकार के अपवाद हैं। **तील** 'तेल' के बहुवचन विकारी रूप – **तीलव सुत्य** 'तेलों से', **तीलन हुन्द** 'तेलों का' **तीलन क्युत** 'तेलों के लिए'।

॥ न मूलादीनाम् ॥ ३५ ॥

मूल् [। मूलम्]॥ कस्तूर् [। पक्षि-विशेषः] ॥ कूट्ठ [। शुसस्तम्भः] ॥ चूँट्ठ [। पालीवतः, सेव् इति भाषायाम्]॥ छूल् [। निर्झरः]॥ दूट् [। पात्र-विशेषः, स्त्रीभिर्यस्मिन्नन्नं भुज्यते]॥ दूद् [। पुष्पादिलघुवाटिका] ॥ ईम् [। गदा विशेषः]॥

थुंरू [। शीतम्]॥ दूरू [। अल्पमार्गः, गलीति भाषायाम्] ॥ नस्तुरू [।नस्तितः]॥ बूथ् [। भूतः] ॥ मूरू [। अल्पशाखा]॥ रूद् [। वृष्टिः ॥ लूख् [। लोकाः, लोग् इति भाषायाम्] ॥ लूदुर् [। लोलुभः] ॥ लूबुर् [।लोलुभः]॥ वूँद् [। उष्ट्रः] ॥ सूर् [। भस्म]॥ हूस् [। कोलाहलः]॥ इत्यादयः प्रायशो बोध्याः॥ एषां शब्दानां पूर्ववर्णोकारस्य ओकारो न भवति॥

मूल् शब्दः ।

	प्र०	द्वि०	तृ०	च०
ए०	मूल् ।	मूलस् वा मूल्।	मूल सुतिन् ।	मूल पुछ्य् ।
ब०	मूल् ।	मूलन् वा मूल् ।	मूलौ सुतिन् ।	मूलौ पुछ्य् ।

	पं०	ष०	स०	आ०
ए०	मूल निश ।	मूलुकु	। मूलस् प्यठ् ।	हा मूल ॥
ब०	मूलौ निश ।	मूलन् हंन्दु	। मूलन् प्यठ् ।	हा मूलौ ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.35

मूल 'मूल' **कस्तूर** 'कस्तूर (पक्षी विशेष)' **कूट** 'स्तम्भ (लकड़ी का)' **चूँठ** 'सेब' **छुल** 'निर्झर' **दूर** 'पात्र (भात खाने का)' **डूर** 'क्यारी' **डुस** 'गदा' **तुर** 'ठंड़' **दूर** 'गली' **नॅस्तूर** 'नकेल' **बूथ** 'भूत' **मूर** 'सोटी' **रूद** 'वर्षा **लूख** 'लोग' **लूदुर** 'लोभी' **लूबुर** 'लोभी' **वूँठ** 'ऊँट' **सूर** 'राख' **हूस** 'कोलाहल' इत्यादि शब्द। इन के पूर्व वर्ण ऊकार का ओकार नहीं होता। मूल शब्द के रूप निम्नलिखित हैंः–

	प्रथमा	द्वितीया	तृतीया	चतुर्थी
एकवचन	मूल	मूलस/मूल	मूल सुतिन	मूल पुछ़्य
बहुवचन	मूल	मूल़न/मूल	मूलव सुतिन	मूलव पुंछ़्य

	पंचमी	षष्ठी	सप्तमी	सम्बोधन
एकवचन	मूल निश	मूलुक	मूलस प्यठ	हा मूल
बहुवचन	मूलव निश	मूलन हुन्द	मूलन प्यठ	हा मूलव

व्याख्या–

यह अपवाद सूत्र है। **तुर, दूर, नॅस्तूर** और **मूर** स्त्रीलिंग शब्दों के उदाहरण हैं। शेष सभी पुंलिंग शब्द हैं। पूर्व सूत्र में वर्णन है, कि पुंलिंग केवल बहुवचन विकारी रूप में ऊकार को ओकार में परिणत कर सकता है। स्त्रीलिंग में भी कुछ ही गिने चुने शब्द हैं जिन में ऊकार विद्यमान है। अधिकांश स्त्रीलिंग शब्दों में स्वर अवर्तुलाकार ही रहता है। ऊकार युक्त स्त्रीलिंग शब्दों में भी कुछ ही शब्दों का ऊकार ओकार बन जाता है

ज़ून 'चन्द्रमा' का ऊकार ओकार नहीं बनता। यथा – **ज़ूनि हुन्द** 'चाँद का' **ज़ूनि सुत्य** 'चाँद से'।

॥ व्यञ्जनान्तादकारागमो व्यञ्जने ॥३६ ॥

व्यञ्जनान्तात्पुंलिङ्गात् व्यञ्जने परे अकारागमो भवति ॥ काव् । काकः । काव सन्दु ॥ काव् शब्दात् । स्त्रीसंबन्धैकानेकत्वे स्नौ हंन्दु (सू० ४२) इति ह् हंन्दु प्रत्ययः । पुंप्राणिन (सू०४६) इति हस्य सः ॥ पुंसि संबन्धषष्ठ्यां च (सू० ४१) इति आदिसकारस्य लोपः । अनेन अकारागमः ॥ पुंसि किम् । मालि हंन्दु ॥ व्यञ्जनान्तानां किम् । गुरि सन्दु । अश्वस्य ॥ व्यञ्जने किम् । कावौ सूतिन् । काकैः ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.1.36**

व्यंजनांत पुंलिंग शब्दों के पश्चात व्यञ्जन होने पर अकारागम होता है। **काव** 'कौआ', **काव सुन्द**। **काव** शब्द की सिद्धि। 2.1.42 सूत्र के अनुसार **स हुन्द प्रत्यय**। 2.1.46 सूत्र के अनुसार **ह** का **स**। 2.1.41 सूत्र के अनुसार आदि सकार का लोप। प्रस्तुत सूत्र से अकारागम। पुंलिंग क्यों? **मालि हुन्द**। व्यंजनांत क्यों? **गुरि सुन्द** 'घोड़े का'। व्यंजन में क्यों? **कावव सुतिन** 'कौओं से'।

व्याख्या–

हिन्दी तथा अन्य उत्तर भारतीय भाषाओं में शब्दांत का अकार उच्चरित नहीं होता, परन्तु उक्त अंतिम व्यंजन पर हल चिन्ह लगाने की व्यवस्था नहीं है। **काव** शब्द के साथ **सुन्द** परसर्ग प्रयुक्त होने पर अकार का उच्चारण स्पष्ट होता है। अन्य किसी स्वर के अभाव में शब्द रूप की सीमा पर प्रायः इसी अकार का उच्चारण किया जाता है। **गुर** शब्द भी ऐसा ही उदाहरण है, परन्तु ऐसे कुछ शब्दों में कर्म कारक प्रत्यय **य** संयुक्त होने पर अकार इकार में परिणत होता है। अन्य उदाहरण हैं– **कॅमिस** 'कीड़े को' **कॉशरिस** 'कश्मीरी को' **लछ़लिस** 'झाडू को'।

॥ स्त्रियामिकारः ॥ ३७ ॥

व्यञ्जनान्तात् स्त्रियां वर्तमानात् लिङ्गात् व्यञ्जने परे इकारागमो भवति । माल् । माला ॥ मालि हंन्दु । मालायाः ॥ माल् शब्दात् । स्त्रीसंबन्धैकानेकत्वे स्नौ हंन्दु (सू० ४२) इत्यादिना स् हंन्दु प्रत्ययः । स्लोपः स्त्रियां (सू० ४०) इति स्लोपः । अनेन इकारागमः । व्यञ्जनान्तात् किम् । पच्य हंन्दु । पट्टिकायाः ॥ व्यञ्जने किम् मालौ सुतिन् । मालाभिः ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.1.37**

स्त्रीलिंग व्यंजनान्त रूपों के पश्चात व्यंजन होने पर इकारागम होता है। **माल** 'माला', **मालि हुन्द** 'माला का'। **माल** शब्द की सिद्धि। 2.1.42 सूत्र से **स हुन्द** प्रत्यय। 2.1.40 सूत्र से **स** का लोप। प्रस्तुत सूत्र से इकाराम। व्यंजनान्त क्यों? **पचि** (पच्य) **हुन्द** 'तख्ते का'। व्यंजन में क्यों? **मालव सुतिन** 'मालाओं से'।

व्याख्या–

2.1.21 तथा 30 सूत्र में वर्णन है, कि बहुवचन तथा एकवचन विकारी रूप का प्रत्यय, स्त्रीलिंग में इकार है। प्रस्तुत सूत्र में इसी इकार के आगम का कथन है। हुन्द अथवा सुत्य कारकीय परसर्ग है।

॥ द्वितीयायां स्नावसंबन्धषष्ठ्यां च ॥ ३८ ॥

स् न् इत्येतौ द्वितीयायाः एकत्वबहुत्वयोः प्रत्ययौ भवतः। संबन्धषष्ठीं वर्जयित्वा षष्ठ्याश्च क्रमेण प्रत्ययौ भवतः ॥ गुरु। घोटकः ॥ गुरिस् छुह् खसान्। अश्वमारोहति ॥ गुर्यन् छुह् रछान्। अश्वान्पालयति ॥ गुरु शब्दात् अनेन स् न् प्रत्ययौ। बहुत्वे। न्प्रत्यये सर्वत्र (सू० १२) इति अकारागमः ॥ उवर्णान्तानामिकार (सू० ३०) इति उकारस्य इकारः। यत्वम् ॥ षष्ठ्यां यथा। ग्वरस् करिज़ि नमस्कार्। गुरोर्नमस्कुर्यात् ॥ द्रब्यन् दिज़ि चादर्। रजकानां बृहतिकां दद्यात् ॥ ग्वर् शब्दात् अनेन स् प्रत्ययः। व्यञ्जनान्तादकारागमो व्यञ्जने (सू० ३६) इति अकारागमः ॥ द्रबु शब्दात् अनेन न् प्रत्ययः। न्प्रत्यये सर्वत्र (सू०१२) इति अकारागमः। उवर्णान्तानामिकारः (सू०३०)। यत्वम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.1.38**

द्वितीया एकवचन तथा बहुवचन के प्रत्यय क्रम से **स** और न हैं। सम्बन्ध षष्ठी को छोड़ कर षष्ठी में भी ये प्रत्यय संयुक्त होते हैं। **गुर** 'घोड़ा', **गुरिस छु खसान** 'घोड़े पर चढ़ता है'। **गुर्यन छु रछान** 'घोड़ों को पालता है'। प्रस्तुत सूत्र से **गुर** शब्द के साथ **स**/न प्रत्यय। 2.1.12 सूत्र से अकारागम। 2.1.30 सूत्र से उकार का इकार। यत्व। षष्ठी में यथा – **ग्वरस करिज़ि नमस्कार** 'गुरु को नमस्कार करना। **द्वब्यन दिज़ि चादर** 'धोबियों को चादर देना'। **ग्वर** शब्द के साथ प्रस्तुत सूत्र से **स** प्रत्यय। 2.1.36 सूत्र से अकारागम। **दोब** शब्द के साथ प्रस्तुत सूत्र से **न** प्रत्यय। 2.1.12 सूत्र से अकारागम। 2.1.30 सूत्र से यत्व।

व्याख्या–

भाषा में पुंलिंग रूपों के लिए कर्म कारक एकवचन **स** तथा बहुवचन प्रत्यय **न** है। **स** संयुक्त होने के पूर्व यदि पुंलिंग शब्द की उपधा में **उ, ऑ** अथवा इन के दीर्घ रूप विद्यमान हों, तो अंतिम अकार इकार हो जाता है। अन्यथा अकार यथावत रहता है। यथाः–

थाल 'थाली'→**थालस** 'थाली को'। **ख्वर** 'पैर' **ख्वरस** 'पैर को'। **गुर** 'घोड़ा' और **दौब** 'धोबी' शब्दों के उपधा में क्रम से **उ** और **ऑ** स्वर हैं इसलिए इन का कर्म कारक रूप **गुरिस** व **दौबिस** सिद्ध है। **ग्वर** 'गुरु' के संदर्भ में ग्रन्थकार का संस्कृत अनुवाद 'गुरोर्नमस्कुर्यात' वाक्य में **गुरोः** पद की विभक्ति षष्ठी है, परन्तु यह सम्बन्ध कारक विभक्ति नहीं है। भाषा में **ग्वरस** 'गुरु को' सम्बन्ध कारक समझना आवश्यक नहीं। यह कर्मकारक का ही उदाहरण है।

2.1.31 सूत्र की व्याख्या मे निर्दिष्ट है कि पुंलिंग बहुवचन रूप का प्रत्यय भी **इ** अभिधारित है। कर्मकारक प्रत्यय **न** संयुक्त होने के पूर्व यह **इ** पूर्व व्यंजन को तालव्यकृत करता है। यह तालव्यकरण भी तभी संभव है, यदि उपधा में **उ** अथवा **ऑ** या इन के दीर्घ रूप विद्यमान हों। उदाहरणः–

गुर+इ+न →**गुर्य्‌न** 'घोड़ों को'।
दौब+इ+न →**द्‌वब्य्‌न** 'धोबियों को'।
डून+इ+न →**डोन्य्‌न** 'अखरोटों को'।

यदि उपधा में उक्त स्वर विद्यमान न हो, तो अंतिम व्यंजन का तालव्यकरण नहीं होता। यथा–

थाल→**थालन** 'थालियों को'।
ख्वर→**ख्वरन** 'पैरों को'।

॥ वा प्रथमावद्सार्वनाम्नः ॥ ३९ ॥

सर्वनामशब्दान् वर्जयित्वा द्वितीयाया एकत्वबहुत्वे प्रथमावद्वा विकल्पेन भवतः । द्वितीयाषष्ठीसमुदायवाक्ये तु नित्यं प्रथमावद्भवत इति बोध्यम् ॥ केंह् छुह् गरान् । वा । कारिम् छुह् गरान् । वलयं घटयति ॥ च्वच्य छुह् रूयवान् । वा । च्वच्यन् छुह् रूयवान् । अपूपान्भक्षयति ॥ समुदायवाक्ये यथा ॥ दूबिस् दिजि चादर् । रजकस्य छहविकां दद्यात् ॥ अत्र दूबिस् इति षष्ठी । चादर् इति द्वितीया । समुदायवाक्यत्वान्नित्यं प्रथमावदेव स्यात् न तु दूबिस् दिजि चादरि इति संभवेत् ॥ असर्वनाम्नः किम् । तमिस् दपिसि । तं वदेत् ॥ कमिस् वनि । कं वदेत् ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद—

सूत्र 2.1.39

सर्वनाम शब्दों को छोड़ कर द्वितीया एकवचन और बहुवचन रूप विकल्प से एकवचनवत ही रहते हैं। वाक्य में यदि द्वितीया और षष्ठी एक साथ प्रयुक्त हों अर्थात समुदाय में हों तो द्वितीया नित्य प्रथमावत रहती है। **कोर छु गरान** विकल्प से **कॅरिस छु गरान** 'कंगन गढ़ता है'। **च़्वचि छु ख्यवान** विकल्प से **च़्वचन छु ख्यवान** 'रोटियाँ खाता है'। समुदाय वाक्य यथा — **दोबिस दिज़ि चादर** 'धोबी को चादर देना'। यहाँ **दोबिस** षष्ठी का रूप है और **च़ादर** द्वितीया का। ऐसे समुदाय वाक्य में परवर्ती कर्म नित्य प्रथमावत ही रहता है। **दोबिस दिज़ि च़ादरि** वाक्य सम्भव नहीं है। असर्वनाम क्यों? **तमिस दपिज़ि** 'उस को कहना' **कमिस वनि** 'किस को कहेगा', इत्यादि।

व्याख्या—

कुछ वाक्यों में कर्मकारक प्रत्यय के प्रयोग का विकल्प है, परन्तु ऐसी अवस्था में कर्मकारक का प्रयोग, अर्थ की दृष्टि से, कर्म को विशेष बना देता है। यथा — **कोर छु गरान** विकल्प से **करिस छु गरान** 'कड़ा गढ़ता है'। **करिस छु गरान** वाक्य में **कोर** 'कंगन' निश्चित रूप से एक विशेष कंगन है। हिन्दी में भी 'को' परसर्ग का प्रयोग कर्म को विशेष बनाता है। यथा — उस ने चोर को पकड़ा''वाक्य में चोर विशेष है, जबकि 'उस ने चोर पकड़ा' वाक्य में चोर निश्चित रूप से विशेष नहीं है। कश्मीरी का ऐसा वाक्य, कारक विभक्ति स्वीकार ही नहीं करता। **तॅम्य रोट च़ूरस** वाक्य संभव नहीं है।

यहाँ पर भी पूर्व सूत्र की तरह **स** संस्कृत अनुवाद के आधार पर ही षष्ठी का प्रत्यय माना गया है, जबकि यह कर्म कारक का ही प्रत्यय है। दो कर्मों की स्थिति में दूसरे कर्म के साथ कर्म कारक प्रत्यय संयुक्त नहीं होता। **तम्य रॅट च़ूरस नॅर** 'उस ने चोर की बाज़ू पकड़ी'। यहाँ पर **स** प्रत्यय का अनुवाद हिन्दी में सम्बन्ध कारक परसर्ग 'की' के द्वारा व्यक्त किया गया है। यह कह सकते हैं कि ऐसे वाक्यों में कर्म कारक प्रत्यय **स** संबन्ध कारक अर्थ भी व्यक्त कर सकता है। विकल्प में — **तॅम्य रॅट च़ूर सुन्ज़ नॅर** 'उस ने चोर की बाज़ू पकड़ी' भी संभव है। इस वाक्य में संबन्धकारक परसर्ग **सुन्ज़** का स्पष्ट प्रयोग किया गया है। सर्वनामों में **स** प्रत्यय के प्रयोग का विकल्प संभव नहीं है।

॥ स्लोपः स्त्रियां सर्वत्र ॥ ४० ॥

सर्वेषां स्त्रीलिङ्गानां सर्वत्र द्वितीयायां षष्ठ्यां च स् प्रत्ययस्य लोपो भवति ॥ मालि छुह् छुनान् । मालां पातयति ॥ मालि हॅन्दु पोप् । मालायाः पुष्पम् ॥ माल् शब्दात् प्रथमे स् प्रत्ययः । स्त्रियामिकार (सू० ३७) इति इकारागमः ।

अनेन स् प्रत्ययलोपः । अपरत्र स् हुन्द् प्रत्ययः । शेषं प्रथमवत् सर्वेषां स्त्रीलिङ्गानां बोध्यम् ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.40

सभी स्त्रीलिंग रूपों में द्वितीया और षष्ठी में **स** प्रत्यय का सर्वत्र लोप होता है। **मालि छु छुनान** 'माला' को पहनता है। **मालि हुन्द पोश** 'माला का फूल'। प्रथमा एकवचन का शब्द है **माल**। इस के साथ **स** प्रत्यय 2.1.37 सूत्र से इकारागम। प्रस्तुत सूत्र से **स** का लोप। अन्यत्र **स हुन्द** प्रत्यय। शेष सभी स्त्रीलिंगों में प्रथमावत रूप ही सिद्ध है।

व्याख्या—

2.1.21 तथा 30 सूत्र में वर्णित है, कि एकवचन विकारी अथवा बहुवचन रूप का प्रत्यय, स्त्रीलिंग में इकार है। प्रस्तुत सूत्र में भी इसी इकार के आगम का कथन है। बहुवचन कर्त्ता कारक रूप में, **माल** 'माला' **तार** 'तार' आदि शब्दों का इकार उकार हो जाता है। यथा – **जु मालु** 'दो मालाएँ', **जु तारु** 'दो तारें' **ॲछ** 'आँख' जैसे चवर्गान्त शब्दों का बहुवचन अथवा विकारी रूप यथावत रहता है। **मालि छु छुनान** जैसी संरचनाएँ वर्तमान में अव्याप्त हैं।

॥ पुंसि संबन्धषष्ठ्यां च ॥ ४१ ॥

सर्वेषां पुंलिङ्गानां संबन्धषष्ठ्यां स् प्रत्ययस्य लोपो भवति । ग्वर सुन्द् चाठ्। गुरोः शिष्यः ॥ ग्वर् शब्दात्। स्त्रीसंबन्ध (सू० ४२) इति स् हुन्द् प्रत्ययः । अनेन सकारलोपः । पुंप्राणिन (सू० ४६) इति हस्य सः । व्यञ्जनान्ताद् (सू० ३६) इत्यकारागमः ॥ ड्यकुक् । ललाटस्य ॥ ड्यक शब्दात् । अप्राणिना (सू० ४८) इति स् उक् प्रत्ययः । अनेन सलोपः । असवर्णे ऽकारस्य लोपः (सू० १।४) । संबन्धषष्ठ्यां किम् । ग्वरस् छुह् नमस्कार् करान् । गुरोर्नमस्कारं करोति । साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.41

सभी पुंलिंग शब्दों के सम्बन्ध षष्ठी रूप में **स** प्रत्यय का लोप होता है। **ग्वरु सुन्द चाठ** 'गुरु का शिष्य'। 2.1.42 सूत्र के अनुसार **ग्वर** शब्द के साथ **स हुन्द** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से सकार का लोप। 2.1.46 सूत्र से **ह** का **स**। 2.1.36 सूत्र से अकारागम। **ड्यकुक** 'माथे का' **ड्यक** अप्राणी शब्द है। 1.1.4 सूत्र से अकार का लोप। सम्बन्ध षष्ठी क्यों? **ग्वरस छु नमस्कार करान** 'गुरु को नमस्कार करता है'। साधन पूर्ववत।

व्याख्या–

सम्बन्ध कारक के लिए, व्यक्ति नाम छोड़ कर, पुंलिंग प्राणी शब्दों के साथ **सुन्द** परसर्ग प्रयुक्त होता है। यथा– **राजु सुन्द मॅहल** 'राजा का महल'। वर्तमान भाषा में व्यक्ति नाम के सन्दर्भ में भी **उन** प्रत्यय के साथ **सुन्द** परसर्ग का विकल्प है। यथा– **अशोकुन कोठ/अशोक् सुन्द कोठ** 'अशोक का कोट'। कर्मकारक प्रत्यय **स** की यहाँ कोई भूमिका नहीं है, परन्तु वाक्य में यदि दो प्राणी शब्दों के लिए सम्बन्धकारक परसर्ग प्रयुक्त करना हो, तो पहला प्राणी शब्द **स** प्रत्यय प्राप्त करता है। यथा – **मॉलिस तु पॊतरु सुन्द कुठ** 'पिता और पुत्र का कमरा'।

अप्राणी पुंलिंग शब्द, सम्बन्ध षष्ठी में **उक** प्रत्यय प्राप्त करते हैं। यथा – **मकानुक रंग** 'मकान का रंग'।

॥ स्त्रीसंवन्धैकानेकत्वे स्नौ हुंन्दून्तावेकत्वे ॥४२॥

पुंलिङ्गानां स्त्रीलिङ्गशब्दस्य एकत्वेन संवन्धे सति संवन्धलिङ्गादेकवचने स् हॆन्द्ध प्रत्ययः स्यात्। बहुत्वेन संवन्धे सत्येकवचने न् हॆन्द्ध प्रत्ययः स्यात्॥ माज्य हॆन्द्ध न्यचिव्व। मातुः पुत्रः॥ माज्यन् हॆन्द्ध न्यचिवु। मातृणां पुत्रः॥ न्यचिवु शब्दस्यैकस्य पुंलिङ्गस्य मॊजु शब्देन स्त्रीलिङ्गेन संवन्धात्संवन्धलिङ्गात् मॊजु शब्दात् स् हॆन्द्ध प्रत्यय न् हॆन्द्ध प्रत्ययौ। [ऊदितोरकारागमः स्त्रियां सकार (सू० २१) इत्यकारागमः]। स्लोपः स्त्रियां सर्वत्र (सू०४०) इति सकार-लोपः। उवर्णान्तानामिकार (सू० ३०) इत्यनेन ऊमात्राया इकारः। न्प्रत्यये सर्वत्र (सू० १२) इति अकारागमः। यत्वम्॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.42

स्त्रीलिंग एकवचन शब्द के साथ पुंलिंग एकवचन सम्बद्ध होने पर एकवचन सम्बन्ध शब्द के रूप में **स हुन्द** प्रत्यय प्रयुक्त होता है। बहुवचन के साथ एकवचन सम्बद्ध होने पर प्रत्यय **न हुन्द** है। **माजि हुन्द नॆचुव** 'माँ का पुत्र'। **माज्यन हुन्द नॆचुव** 'माताओं का पुत्र'। पुंलिंग एकवचन **नॆचुव** शब्द स्त्रीलिंग शब्द **मॉज** के साथ सम्बद्ध होने पर सम्बन्ध लिंग (शब्द) **स हुन्द** अथवा **न हुन्द** प्रत्यय प्राप्त करता है। 2.1.21 सूत्र के अनुसार अकारागम। 2.1.40 सूत्र के अनुसार सकार का लोप। 2.1.30 सूत्र के अनुसार ऊ मात्रा का इकार। 2.1.12 सूत्र से अकारागम, यत्व।

व्याख्या–

2.1.21 सूत्र तथा 30 सूत्र में वर्णित है, कि एकवचन विकारी अथवा बहुवचन रूप का प्रत्यय, स्त्रीलिंग में इकार है। **हुन्द** अथवा **सुन्द** परसर्ग के रूप

में कार्य करते हैं। **मॉज** शब्द के साथ **इ** प्रत्यय संयुक्त होने पर उपधा का ऑकार आकार में परिणत होता है। इस रूपांतरण के पश्चात **हुन्द** परसर्ग प्रयुक्त होता है। संबद्ध शब्द का लिंग वचन **हुन्द** परसर्ग को प्रभावित करता है। आगामी सूत्रों में यह परिवर्तन स्पष्ट किया गया है।

मॉज शब्द का बहुवचन रूप **माजि** है। **हुन्द** परसर्ग प्रयुक्त होने के पूर्व बहुवचन प्रत्यय **न, माजि** के साथ संयुक्त होकर **माजन** शब्द सिद्ध है, जिस में इकार का लोप स्पष्ट देख सकते हैं।

॥ वहुत्वे हंन्द्यन्तौ ॥ ४३ ॥

पुंलिङ्गानां स्त्रीलिङ्गस्यैकत्वेन संबन्धे सति संबन्धलिङ्गादेकवचने स् हंन्दि प्रत्ययः। बहुत्वेन संबन्धे न् हंन्दि प्रत्ययो भवति ॥ माज्य हंन्दि न्यचिवि। मातुः पुत्राः ॥ माज्यन् हंन्दि न्यचिवि। मातॄणां पुत्राः ॥ अत्र न्यचिवि शब्दस्य बहुवचनत्वात् मांजू शब्दात् स् हंन्दि न् हंन्दि प्रत्ययौ। स्लोपः। साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.1.43**

स्त्रीलिंग एकवचन के साथ पुंलिंग संबद्ध होने पर यदि संबन्ध शब्द बहुवचन में हो, तो **स हुन्द्य** का प्रयोग होता है। बहुवचन के साथ संबद्ध होने पर **न हुन्द्य** प्रत्यय होता है। **माजि हुन्द्य नैचिव्य** 'माँ के पुत्र'। **माजन हुन्द्य नैचिव्य** 'माताओं के पुत्र'। **नैचिव्य** शब्द बहुवचन होने के कारण **मॉज** शब्द के साथ **स हुन्द्य, न हुन्द्य** प्रत्यय। **स** लोप। साधन पूर्ववत।

व्याख्या—

नैचिव्य बहुवचन रूप है। पुंलिंग बहुवचन रूप होने के कारण ही **हुन्द्य** परसर्ग का प्रयोग है। एकवचन रूप **हुन्द** है। **नैचुव** 'बेटा' एकवचन रूप है, जो **हुन्द** परसर्ग ग्रहण करता है। यथा— **माजि हुंद नैचुव** 'माँ का बेटा'। शेष व्याख्या पूर्व सूत्र 2.1.42 में वर्णित है।

॥ स्त्रियां हंन्ज़ू अन्तावेकत्वे ॥ ४४ ॥

स्त्रीलिङ्गस्य स्त्रीलिङ्गैकत्वेन संबन्धे सति संबन्धलिङ्गादेकवचने स् हंन्जू प्रत्ययः स्त्रीलिङ्गानेकत्वेन संबन्धे सति न् हंन्जू प्रत्ययो भवति ॥ माज्य हंन्जू कूरू। मातुः कन्या ॥ माज्यन् हंन्जू कूरू। मातॄणां कन्या ॥ अत्रापि कूरू शब्दस्यैकत्वात्संबन्धलिङ्गात् मांजू शब्दात् स् हंन्जू न् हंन्जू प्रत्ययौ। साधनं पूर्ववत्॥

अनुवाद— **सूत्र 2.1.44**

स्त्रीलिंग के साथ स्त्रीलिंग एकवचन संबद्ध होने पर संबन्ध शब्द के

एकवचन का प्रत्यय **स हुन्ज़** है। संबन्ध स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन होने पर **न हुन्ज़** प्रत्यय का प्रयोग होता है। **माजि हुन्ज़ कूर** 'मां की बेटी'। **माजन हुन्ज़ कूर** 'माताओं की बेटी'। यहाँ **कूर** शब्द एकवचन में है। **मॉज** के साथ संबन्ध होने पर **स हुन्ज़** और **न हुन्ज़** प्रत्यय सिद्ध हैं। साधन पूर्ववत।

व्याख्या–

स्त्रीलिंग एकवचन के साथ स्त्रीलिंग एकवचन का संबन्धकारक परसर्ग **हुन्ज़** है। यथा–

गावि हुन्ज़ वछुर 'गाय की बछिया'। **गाव** 'गाय' के साथ **इ** प्रत्यय एकवचन विकारी रूप का प्रत्यय है। जिस का उल्लेख 2.1.21 और 30 सूत्रों में किया गया है। स्त्रीलिंग बहुवचन के साथ संबन्ध कारक की स्थिति में स्त्रीलिंग एकवचन का प्रयोग होने पर **हुन्ज़** परसर्ग के पूर्व, **न** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **गावन हुन्ज़ जाय** 'गायों की जगह'।

॥ बहुत्वे हृन्ज् अन्तौ ॥ ४५ ॥

स्त्रीलिङ्गानां बहुवचने स्त्रीलिङ्गैकानेकत्वसंबन्धतः संबन्धिलिङ्गात् स् हृन्ज न् हृन्ज प्रत्ययौ भवतः ॥ माज्य हृन्ज कोर्य । मातुः कन्याः ॥ माज्यन् हृन्ज कोर्य । मातृणां कन्याः ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.1.45**

स्त्रीलिंग एकवचन अथवा बहुवचन के साथ स्त्रीलिंग बहुवचन सम्बद्ध होने पर सम्बंध रूप में **स हुंज़ु** और **न हुन्ज़ु** प्रत्यय है। **माजि हुन्ज़ु कोरि** 'मां की बेटियाँ', **माजन हुन्ज़ु कोरि** 'माताओं की बेटियाँ'।

व्याख्या–

स्त्रीलिंग बहुवचन शब्द के साथ संबन्धकारक रूप में स्त्रीलिंग बहुवचन शब्द प्रयुक्त होने पर **हुंज़ु** परसर्ग का प्रयोग होता है। **हुंज़ु** परसर्ग प्रयुक्त होने से पहले पूर्व शब्द के साथ बहुवचन प्रत्यय **न** संयुक्त होता है। यथाः– **गावन हुंज़ु जायि** 'गायों के स्थान'।

ऐसी स्थिति में पूर्व शब्द एकवचन होने पर, उस के साथ विकारी प्रत्यय **इ** संयुक्त होता है, तत्पश्चात **हुंज़ु** परसर्ग का प्रयोग किया जाता है। यथाः– **गवि हुंज़ु वछ़रि** 'गाय की बछियाएँ'।

सम्बद्ध शब्द एकवचन स्त्रीलिंग होने की स्थिति में **हुंज़ु** के स्थान पर **हुंज़** परसर्ग का प्रयोग सिद्ध है। यथा– **गावि हुंज़ वछुर** 'गाय की बछिया'।

॥ पुंप्राणिन एकत्वसंबन्धे हस्य सः सर्वत्र ॥४६॥

पुंलिङ्गस्य प्राणिन एकवचनेन सह संबन्धे सति सर्वत्र स्त्रीलिङ्गे पुंलिङ्गे च हकारस्य सकारो भवति॥ मॉ़लि संन्दु न्यचिवु। पितुः पुत्रः ॥ मॉ़लि सन्ज कोर्य। पितुः कन्याः ॥ दान्द संन्दु ह्यंग्। वृषभस्य शृङ्गम् ॥ गुऱि संन्दु लंटु। अश्वस्य पुच्छः ॥ प्राणिनः किम्। कनुकु वाल्। कर्णस्य वालः॥ चॉंग्युकु तील्। दीपस्य तैलम् ॥ अथुकु माज़्। हस्तस्य मांसम् ॥ अत्र अथ कन् शब्दयोः प्राणित्वसंभवे ऽपि खण्डप्राणित्वादप्राणित्वमेव। प्राणिनः कर्णे छिन्ने ऽपि न कर्णस्य प्राणिसंज्ञा। नापि छिन्नकर्णेन प्राणिनो ऽप्राणित्वम् ॥ पुंलिङ्गस्य किम् ॥ गोवू हंन्दु वंछु। गावो वत्सः ॥ गोवू हंन्जू वंछूरू। गावो वत्सा ॥ कन्न हंन्दु प्यंतु। शिलाया अग्रम् ॥ कन्न हंन्ज़ू छल्। शिलायाः खण्डम्॥ माज्य हंन्दु मोलु। मातुः पिता ॥ माज्य हंन्ज़ू मॉजू। मातुर्माता ॥

अनुवाद— सूत्र **2.1.46**

पुंलिंग प्राणी एकवचन के साथ पुंलिंग अथवा स्त्रीलिंग सम्बन्ध होने पर सर्वत्र हकार का सकार होता है।

मॉल्य सुन्द् न्यचुव 'पिता का बेटा', **मॉल्य सुन्जु कोरि** 'पिता की बेटियाँ', **दान्दु सुन्द ह्यंग** 'बैल का सींग', **गुर्य सुन्द लॉट** 'घोड़े की दुम', पुंलिंग प्राणी क्यों?

कनुक वाल 'कान का बाल', **चॉंग्युक तील** 'दीये का तेल', **अथुक माज़** 'हाथ का माँस'

अथु 'हाथ' और **कन** 'कान' प्राणी के अंग होने पर भी खण्ड प्राणि होने के कारण अप्राणी हैं। प्राणी का कान कट जाने पर कान तो अप्राणी हो जाता है, लेकिन जिस का कान कटा है, वह प्राणी है।

पुंलिंग क्यों?

गॉव हुन्द वॊछ 'गाय का बछड़ा', **गॉव हुन्ज़ वछुर** 'गाय की बछिया', **कनि हुन्द प्यॊत** 'पत्थर की नोक', **कनि हुन्ज़ छल** 'पत्थर का खण्ड', **माजि हुन्द मोल** 'माता का पिता', **माजि हुंज़ मॉज** 'मां की मां'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र का कथन है, कि **हुन्द** परसर्ग का पूर्व वर्ण हकार पुंलिंग एकवचन में सकार हो जाता है। इस परसर्ग का अग्रिम भाग संबद्ध शब्द के लिंग और वचन से प्रभावित होता है। स्पष्टीकरण के उदाहरण – **मॉल्य सुन्द, मॉल्य सुन्ज़, दान्दु सुन्द** और **गुर्य सुन्द** वाक्यांश इन्हीं रूपों को व्यक्त करते हैं।

इस तथ्य को ऐसे भी प्रस्तुत कर सकते हैं, कि पुंलिंग संबन्धकारक परसर्ग एकवचन में **सुन्द** तथा बहुवचन में **हुन्द** है। स्त्रीलिंग कारक परसर्ग दानों वचनों में **हुन्द** ही है। **सुन्द** परसर्ग का प्रयोग व्यक्ति नाम को छोड़कर, शेष प्राणी एकवचन तक ही सीमित है। (व्यक्ति नाम का प्रत्यय 2.1.51 सूत्र में वर्णित है) **हुन्द** परसर्ग का प्रयोग व्यापक है। संबद्ध होने वाले शब्द का लिंग और वचन इन परसर्गों को प्रभावित करता है। निम्नलिखित तालिकाओं में दोनों परसर्गो के रूप अंकित हैं–

	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग	सुन्द	सुन्द्य	हुन्द	हुन्द्य
स्त्रीलिंग	सुंज़	सुंज़ु	हुंज़	हुंज़ु

॥ स्वन् रुप् शब्दयोर्वा ॥ ४७ ॥

स्वन् शब्दस्य रुप् शब्दस्य चैकत्वेन संबन्धे सति सर्वत्र स्त्रीलिङ्गे पुंलिङ्गे च विकल्पेन पुंप्राणिवत्स्वरूपं भवति ॥ स्वन संन्दु कंड् । स्वर्णस्य कटकः ॥ रुप संन्दु खोस् । रौप्यस्य कंसः ॥ स्वन संन्जू गंगूज् । स्वर्णस्य गळन्तिका ॥ रुप संन्जु लूर् । रौप्यस्य दण्डः ॥ स्वनुकु छ्यूर् । स्वर्णस्य छत्रम् ॥ रुपुकु थाल् । रौप्यस्य थालः ॥ स्वनंचू वांजू । स्वर्णस्योर्मिका ॥ रुपचू रज् । रौप्यस्य रज्जुः ॥

अनुवाद– सूत्र 2.1.47

एकवचन रूपी **स्वन** तथा **र्‌वफ** शब्द के साथ स्त्रीलिंग अथवा पुंलिंग शब्द सम्बद्ध होने पर विकल्प से, सर्वत्र पुंलिंग प्राणिवत् स्वरूप सिद्ध है। **स्वनु सुन्द कोर** 'सोने का कंगन', **र्‌वपु सुन्द खोस** 'चांदी का खोस' (काँसी का प्याला), **स्वनु सुंज़ गंगुज** 'सोने का करवा', **र्‌वपु संज़ लूर** 'चाँदी की छड़ी', **स्वनुक छॅथुर** 'सोने का छत्र', **स्वनुच वॉज** 'सोने की अंगूठी, **र्‌वपुच रज़** 'चाँदी की रस्सी'।

[४७ अत्र मूलपुस्तके रुप् इति पाठः। शुद्धोच्चारणं तु वंप् इत्यस्ति ॥]

[४७ स्वनुकु छ्यूर्, रुपुकु थाल्, स्वैनचू वांजू, र्वंचू रज़्, अस्मिन्वाक्यचतुष्टये सुवर्णाभिन्नं छत्रम्, रौप्यस्याधाराद्यर्थं थाली, स्वर्णाद्यर्थं तद्भिन्नोर्मिका, रौप्यस्य बन्धनार्थं तद्भिन्नरूपा रज्जुरित्येवमर्थो विवक्षितश्चेत्तदा मूलपाठः संगच्छते—अन्यथा स्वर्णमयं छत्रम्, रौप्यमयी थाली, स्वर्णमय्यूर्मिका, रौप्यमयी रज्जुरस्मिन्नर्थे, स्वन संन्दु छ्यूर्, वंप संन्दु थाल्, स्वन संन्जू वांजू । वंप संन्जु रज़् इत्येवं रूपाणि शुद्धानि सन्तीति ॥]

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में ग्रन्थकार ने इस तथ्य को रेखांकित किया है कि मात्र **स्वन** और **र्‌वफ** ऐसे दो पुंलिंग अप्राणि शब्द हैं, जो **सुन्द** परसर्ग ग्रहण कर सकते हैं। **शॅसतुर** 'लोहा' पुंलिंग अप्राणि शब्द है, परन्तु यह **सुन्द** परसर्ग ग्रहण नहीं कर सकता। **शॅसतुर सुन्द** पदबन्ध सम्भव नहीं है।

वर्तमान भाषा इस प्रकार के सम्बन्ध कारक को समस्त पद द्वारा भी व्यक्त करता है। यथा – **स्वनु कोर** 'सोने का कंगन, **र्‌वपु रज़** 'चांदी की रस्सी'।

सम्पादक ने पाद टिप्पणी में **रूप्** शब्द की 'शुद्ध वर्तनी' **र्वप** लिखी है। वर्तमान उच्चारण की दृष्टि से **र्‌वफ** शुद्ध वर्तनी सिद्ध है। दूसरी पाद टिप्पणी **उक** अथवा **अुच** प्रत्यय युक्त इन शब्दों के अर्थ को लेकर है। सम्पादक के अनुसार **स्वनुक छॅथुर** का अर्थ है 'सोने से भिन्न कोई छत्र, जो सोने के ऊपर रखा हो'। इसी प्रकार **र्‌वपुक थाल** का अर्थ है 'चाँदी धारण करने वाली थाली'।

भाषा व्यवहार में **उक** अथवा **अुच** प्रत्यय युक्त शब्द, ग्रन्थकार तथा सम्पादक दोनों के अर्थ, सन्दर्भ के अनुसार सम्प्रेषित कर सकते हैं।

॥ अप्राणिना पुंसोकुक्यौ पुंसि ॥ ४८ ॥

प्राणिव्यतिरिक्तस्य पुंलिङ्गस्य एकत्वेन संबन्धे सति पुंलिङ्गात् उकु कि क्रमेण भवतः। एकवचने उकु प्रत्ययः बहुवचने कि प्रत्ययो भवति ॥ दान्युकु त्वमुल् । धान्यस्य तण्डुलः ॥ हारुकु मूंग् । आषाढस्य मुद्गः ॥ कुलिकि वथूर् । वृक्षस्य पत्राणि॥ मागकि द्वह् । माघस्य दिवसाः ॥ एकत्वेन किम् । कुल्यन् हन्दि वथूर् । वृक्षाणां पत्राणि ॥ कुल्यन् हन्दु वथूर् । वृक्षाणां पत्रम् ॥ अप्राणिना किम् ॥ काव सन्दु । काकस्य ॥ गोवू हन्दु । गोः ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.1.48**

प्राणि के अतिरिक्त पुंलिंग एकवचन के साथ संबन्ध होने पर पुंलिंग का क्रम से **उक** अथवा **अुक्य** प्रत्यय है। एकवचन में **उक** तथा बहुवचन में **अुक्य** है। **दान्युक तोमुल** 'धान के चावल', **हारुक म्वंग** 'आषाड़ का मूँग', **कुलिक्य वॅथुर** 'वृक्ष के पत्ते', **मागुक्य दोह** 'माघ के दिन'। एकवचन में क्यो? – **कुल्यन हॅन्द्य वथुर** 'वृक्षों के पत्ते', **कुल्यन हुन्द वथुर** 'वृक्षों का पत्ता'। अप्राणी क्यों?– **काव सुन्द** 'कौए का', **गॉव हुन्द** 'गाय का'।

व्याख्या–

उक अप्राणी पुंलिंग एकवचन संबन्ध कारक प्रत्यय है। संबद्ध होने वाले शब्द का लिंग वचन **उक** प्रत्यय को प्रभावित करता है। ये चारों रूप

तालिका में अंकित हैं।

	एकवचन	बहुवचन
पुलिंग	उक	अ़क्य
स्त्रीलिंग	अ़च	अ़चि

उदाहरण–

मकानुक कुठ 'मकान का कमरा', **मकानुक्य कुठ्य** 'मकान के कमरे', **मकानुच दॉर** 'मकान की खिड़की', **मकानुचि दारि** 'मकान की खिड़कियाँ।

॥ चूचौ च स्त्रियाम् ॥ ४९ ॥

स्त्रीलिङ्गानां प्राणिव्यतिरिक्तस्य पुंलिङ्गस्यैकत्वेन संबन्धे संबन्धिपुंलिङ्गादेकवचने चू प्रत्ययः बहुवचने च प्रत्ययो भवति ॥ कुलिचू लंण्डू। वृक्षस्य शाखा ॥ कुलिच लञ्ज्य। वृक्षस्य शाखाः ॥ नॉगचू नॉरिजू। नागस्य प्रणालिका ॥ नागच नॉरिज। नागस्य प्रणालिकाः ॥ एकत्वेन किम्॥ कुल्यन् हुन्ज लञ्ज्य। वृक्षाणां शाखाः ॥ नागन् हुन्ज नॉरिज। अखातानां प्रणालिकाः ॥ अप्राणिना किम्। गुरि सन्जू जंग्। अश्वस्य जङ्घा ॥ कट सन्ज़ ज्ञोर्य। मेषस्य खुराः ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.49

प्राणी के अतिरिक्त पुंलिंग एकवचन के साथ स्त्रीलिंग संबद्ध होने पर एकवचन में **च** तथा बहुवचन में **चि** प्रत्यय होता है। **कुलिच लॉण्ड** 'वृक्ष की शाखा', **कुलिचि लंजि** 'वृक्ष की शाखाएँ', **नागुच नॉरिज** 'चश्मे की प्रणालिका' **नागुचि नॉरिजि** 'चश्मे की प्रणालिकाएँ'। एकवचन में क्यों? **कुल्यन हॅंज़ु लंजि** 'वृक्षों की शाखाऐं', **नागन हॅंज़ु नॉरिजि** 'चश्मों की प्रणालिकाएँ'। अप्राणी क्यों? **गुर्य सुन्ज़ ज़ंग** 'घोड़े की टाँग', **कट् सुन्ज़ु न्योरि** 'भेड़ के खुर'।

व्याख्या–

पूर्व सूत्र की तालिका में अंकित है, कि पुंलिंग एकवचन के साथ स्त्रीलिंग संबद्ध होने पर संबन्ध कारक प्रत्यय **अ़च** तथा बहुवचन के लिए **अ़चि** होता है। वर्तमान भाषा व्यवहार में प्रत्ययों के यही उच्चारण व्याप्त हैं।

शब्द का अन्तिम व्यंजन तालव्य अर्थात च, छ, ज, ल अथवा श होने की अवस्था में प्रत्यय का अ़कार इकार हो जाता है यथा–

गट्ट पछिच ज़ून 'कृष्ण पक्ष का चंद्रमा'। यहाँ **पछ** शब्द के छकार के कारण अ़कार का इकार हो गया है। यदि अंतिम व्यंजन तालव्य न हो **तो अ़कार** यथावत रहता है यथा– **दुकानुच हॉँकल** 'दुकान की साँकल'। **दुकान** शब्द का अंतिम व्यंजन **न** है, इसलिए **अ़च** के अ़कार का इकार नहीं हो जाता। अ़कार यथावत रहता है।

॥ मनुष्यसंज्ञयोनुन्यौ पुंसि ॥ ५० ॥

मनुष्यनाम्ना संबन्धे सति पुंलिङ्गे एकत्वबहुत्वयोः उनु नि प्रत्ययौ भवतः ॥ गण इति संज्ञा । गणुनु न्यचिवु । गणस्य पुत्रः ॥ राधाकृष्ण इति नाम । राधाकृष्णुनि गुरि । राधाकृष्णस्याश्वाः ॥ ज्यकुनु बत । ललाटस्य भक्तम् ॥ अत्र ज्यक शब्दस्य दैवार्थकत्वात् उनु प्रत्ययः । अन्यत्र ज्यकुकु रथ् । ललाटस्य रक्तम् ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.50

व्यक्ति के साथ संबद्ध होने पर पुंलिंग एकवचन का प्रत्यय **उन** तथा बहुवचन का **अुन्य** होता है। **गण** एक व्यक्ति नाम है। **गणुन नेचुव** 'गण का बेटा'। राधा कृष्ण भी व्यक्ति नाम है। **राधा कृष्णुन्य गुर्य** 'राधा कृष्ण के घोड़े', **ड्यकुन बतु** 'भाग्य/भरतार का भात' यहाँ **ड्यकु** शब्द का अर्थ भर्तार होने के कारण **उन** प्रत्यय संयुक्त हुआ है। अन्यत्र—**ड्यकुक रथ** 'माथे का रक्त'।

व्याख्या—

2.1.41 सूत्र की व्याख्या में वर्णन है, कि व्यक्ति नाम का संबन्ध कारक एकवचन पुंलिंग प्रत्यय **उन** है। बहुवचन में यही **उन अुन्य** हो जाता है। उक्त सूत्र में यही तथ्य व्यक्त किया गया है। वर्तमान भाषा प्रयोग में **उन** प्रत्यय के साथ **सुन्द** परसर्ग का विकल्प भी है। यथा— **बुलबुलुन बोय/बुलबुल सुन्द बोय** 'बुलबुल का भाई'।

॥ स्त्रियां न्यन्नौ च ॥ ५१ ॥

स्त्रीलिङ्गस्य मनुष्यनाम्ना संबन्धे सति संबन्धिलिङ्गादेकबहुवचनयोः न्य् न्नि प्रत्ययौ भवतः ॥ मनु इति नाम । मनिन्य् कूरू । मनु इत्यस्य कन्या ॥ मनिन्नि कोर्य । मनु इत्यस्य कन्याः ॥ कृपाराम इति नाम । कृपारामन्य् मांजु । कृपारामस्य माता ॥ कृपारामन्नि ब्यय । कृपारामस्य भगिन्यः ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.51

व्यक्ति नाम के साथ स्त्रीलिंग संबद्ध होने पर एकवचन का प्रत्यय **अुन्य** तथा बहुवचन का **अुनि** होता है। मनु एक व्यक्ति नाम है। **मनुन्य कूर** 'मनु की बेटी' **मनुनि कोरि** 'मनु की बेटियाँ'। **कृपाराम** एक व्यक्ति नाम है। **कृपारामुन्य मॉज** 'कृपाराम की मां'। **कृपारामुनि बेनि** 'कृपाराम की बहने'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र में **उन** प्रत्यय के स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन रूप

स्पष्ट किए गए हैं। **उन** प्रत्यय के चारों रूप तालिका में अंकित हैं।

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग	उन	अुन्य
स्त्रीलिंग	अुन्य	अुनि

॥ सप्तम्यां स्नावन्दर्मन्ज़्प्यठन्तौ स्वार्थभेदतः ॥५२॥

स्नौ प्रत्ययौ। अन्दर् अन्तौ। मन्ज़् अन्तौ। प्यठ् अन्तौ। स्वस्वार्थभेदतः सप्तम्यां प्रत्ययौ भवतः। अन्तरार्थे अन्दरन्तौ। मध्यार्थे मन्ज़न्तौ। उपर्यर्थे प्यठन्ताविति॥ अन्तर्वाणिभाषायां तु वेपान्तावपि प्रयुज्येते इति निर्णयम्॥ गरस् अन्दर्। गृहस्यान्तरे॥ नावि मन्ज़्। नौकाया मध्ये॥ गरन् अन्दर्। गृहाणामन्तरे॥ नावन् मन्ज़्। नौकानां मध्ये॥ गुरिस् प्यठ्। अश्वस्योपरि॥ गुर्यन् प्यठ्। अश्वानामुपरि॥ गर शब्दात् स् अन्दर् न् अन्दर् प्रत्ययौ॥ न्प्रत्यये सर्वत्र (सू० १२) इत्यकारागमः। अकारे ऽकारलोपः (सू० १।५ क)। नाव् शब्दात् स् मन्ज़् न् मन्ज़् प्रत्ययौ। स्लोपः सर्वत्र (सू० ४०) इति सकारलोपः। स्त्रियामिकार (सू० ३७) इति इकारागमः॥ गुरु शब्दात् स् प्यठ् न् प्यठ् प्रत्ययौ। उवर्णान्तानामिकार (सू० ३०) इति उकारस्य इकारः। न्प्रत्यये सर्वत्र (सू० १२) इत्यकारागमः। यत्वम्॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.52

सप्तमी कारक विभक्ति में स् न् प्रत्यय के बाद **अन्दर, मंज़** और **प्यठ** परसर्ग, अभिप्राय के अनुसार अन्त में लगते हैं। भीतर के अर्थ में **अन्दर**, मध्य के अर्थ में **मंज़** तथा ऊपर के अर्थ में **प्यठ़** होता है। सम्प्रेषण में इन परसर्गों का अन्तर प्रयोग भी सम्भव है।

गरस् अन्दर 'घर के भीतर', **नावि मंज़्** 'नौका में', **गरन् अन्दर्** 'घरों के भीतर', **नावन् मंज़्** 'नौकाओं में', **गुरिस् प्यठ्** 'घोड़े पर', **गुर्यन प्यठ्** 'घोड़ों पर'

गरु शब्द के साथ एकवचन में **स अन्दर** और बहुवचन में **न अन्दर** प्रत्यय हैं। 2.1.12 सूत्र के अनुसार अकारागम। 1.1.5 सूत्र से अकार का लोप। **नाव** शब्द के साथ **स मंज, न मंज़** प्रत्यय है। 2.1.40 सूत्र से सकार का लोप। 2.1.37 सूत्र से स्त्रीलिंग में इकारागम। **गुर** शब्द के साथ **स प्यठ, न प्यठ** प्रत्यय। 2.1.30 सूत्र से उकार का इकार। 2.1.12 सूत्र से अकारागम तथा यत्व।

व्याख्या–

अधिकरण कारक विभक्ति में प्रत्यय और परसर्ग दोनों प्रयुक्त होते

हैं। वचन के अनुसार प्रत्यय तो बदलता है, लेकिन परसर्ग में वचन के आधार पर कोई भेद नही है। **अन्दर, मंज़** और **प्यठ** वस्तु की तात्कालिक स्थिति पर आधारित है। एकवचन का प्रत्यय **स** और बहुवचन का प्रत्यय **न है।** 2.1.21 और 30 सूत्रों में कहा गया है कि स्त्रीलिंग प्रत्यय इकार ही है।

॥ अधिकरणे क्यथन्तौ ॥ ५३ ॥

स् नौ प्रत्ययौ क्यथ् अन्तावाधारसप्तम्या एकत्वबहुत्वयोः प्रत्ययौ भवतः ॥ थालस् क्यथ्। थाले ॥ नावि क्यथ्। नौकायाम् ॥ थालन् क्यथ्। थालेषु ॥ नावन् क्यथ्। नौकासु ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.1.53**

आधार सप्तमी के एकवचन बहुवचन में **स न** प्रत्यय के पश्चात **क्यथ** प्रत्यय है। **थालस क्यथ** 'थाली में' **नावि क्यथ** 'नौका में, **थालन क्यथ** 'थालियों में', **नावन क्यथ** 'नौकाओं में'।

व्याख्या—

ऊपर लिखे उदाहरणों में **क्यथ** के स्थान पर **मंज़** का प्रयोग भी संभव है, परन्तु इस से सामाजिक अर्थ में भेद परिलक्षित होता है। **थालस मंज़** के स्थान पर **थालस क्यथ** अधिक आदर और स्नेह का द्योतक है। **नावि मंज** और **नावि क्यथ** वाक्यांशों से भी इसी प्रकार का सामाजिक अर्थ अभिव्यक्त होता है। **नावि मंज़** की अपेक्षा **नावि क्यथ** में सुविधाजनक यात्रा का आभास है।

॥ चतुर्थ्यां कितुकिच़अन्तौ पुंस्त्रीकर्मैकतः ॥ ५४ ॥

वाक्येषु पुंलिङ्गैकत्वे कर्मणि सति स् नौ प्रत्ययौ कितु अन्तौ स्त्रीलिङ्गैकत्वे कर्मणि स् नौ किचू अन्तौ चतुर्थ्यामेकत्वबहुत्वयोः प्रत्ययौ भवतः ॥ मॉलिस् कितु अनुन् पोञ्ञ। पित्रे [तेन] आनीतं पानीयम् ॥ मॉलिस् किचु अंनून् गाव्। पित्रयानीता गौः ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.1.54**

वाक्य में, पुंलिंग एकवचन कर्म होने पर **स, न** प्रत्यय के बाद **क्युत्** लगता है। स्त्रीलिंग एकवचन कर्म की स्थिति में **स, न** के बाद **किच़** लगता है। **स न** चतुर्थी एकवचन और बहुवचन के प्रत्यय हैं। **मॉलिस क्युत् ऑनुन पोन्य** 'पिता के लिए जल लाया' **मॉलिस किच़ अनिन गाव** 'पिता के लिए गाय लाया'।

व्याख्या—

सम्प्रदान कारक में भी प्रत्यय के साथ परसर्ग का निर्देश है। **स** और

न यथापूर्व एकवचन और बहुवचन के प्रत्यय है। कर्ता के साथ ये प्रत्यय लगने के बाद कर्म के लिंग के अनुसार परसर्ग का निर्देश है। पुंलिंग एकवचन कर्म होने पर **क्युत** और स्त्रीलिंग एक वचन कर्म की स्थिति में **किच़** का प्रयोग किया जाता है। लिंग के अतिरिक्त कर्म का वचन भी परसर्ग को प्रभावित करता है। यथा– **मॉलिस कित्य ॲनिन पलव** 'पिता के लिए कपड़े लाया'। मॉलिस **किचु अन्यन किताबु** 'पिता के लिए पुस्तकें लाया'।
पलव 'कपड़े पुंलिंग है, इसलिए बहुवचन में **क्युत** परसर्ग **कित्य** बन जाता है। **किताब** स्त्रीलिंग है, इसलिए बहुवचन में परसर्ग का रूप **किचु** है। इन रूपों की अतिरिक्त व्याख्या अग्रिम सूत्र में प्रस्तुत है।

॥ कित्ि किचान्तौ कर्मबहुत्वतः ॥ ५५ ॥

वाक्ये पुंलिङ्गस्य बहुत्वे कर्मणि सति स् नौ प्रत्ययौ कित्ि अन्तौ स्त्रीबहुत्वे कर्मणि सति स् नौ किच़ अन्तौ चतुर्थ्यां प्रत्ययौ भवतः ॥ गुरिस् कित्ि ॲनिन् रव। अश्वायानीताः कम्बलाः ॥ गुर्यन् कित्ि। अश्वेभ्यः॥ ग्वरस् किच़ अन्नन् पोथ्य। गुरवे आनीतानि पुस्तकानि ॥ ग्वरन् किच़। गुरुभ्यः॥ अत्रेदं ध्येयम्। कर्मिधातूनां कर्मणः स्त्रीपुंरूपानुसारतः प्रोक्ताः प्रत्यया विज्ञेयाः। कर्तृधातूनां तु कर्तुः स्त्रीपुंलिङ्गैकवचनबहुवचनानुसारतो बोध्याः ॥ यथा। व्यठनस् कितु आव्। स्थूलीभवनायागतः ॥ व्यठनम् कित्ि आय्। स्थूलीभवनायागताः ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.55

वाक्य में पुंलिंग बहुवचन कर्म होने पर **स न** प्रत्यय के बाद **कित्य** लगता है और स्त्रीलिंग बहुवचन कर्म की स्थिति में **स, न** के बाद **किच़**। ये चतुर्थी के प्रत्यय हैं।

गुरिस कित्य ॲनिन रवु 'घोड़े के लिए कम्बलें लाए', **गुर्यन कित्य** 'घोड़ों के लिए', **ग्वरस किचु अन्यन पोथि** 'गुरु के लिए पुस्तकें लाए', **ग्वरन किचु** 'गुरुओं के लिए'।

यहाँ पर सकर्मक क्रियाओं की स्थिति में कर्म के स्त्रीलिंग अथवा पुंलिंग स्थिति के अनुसार प्रत्ययों का उल्लेख है। अकर्मक क्रियाओं में कर्ता का लिंग वचन प्रत्यय को निर्धारित करता है। यथा–

व्यठनस क्युत आव 'मोटा होने लगा'। **व्यठनस कित्य आयि** 'मोटे होने लगे'।

व्याख्या–

पूर्ववर्ती सूत्र में कर्म के एकवचन का उल्लेख है। प्रस्तुत सूत्र बहुवचन में **क्युत** परसर्ग के रूपों का वर्णन करता है। अकर्मक क्रिया में केवल भाव प्रयोग संभव है।

व्यठनस क्युत आव और **ब्यठनस कित्य आयि** दोनों वाक्यों में भावे प्रयोग की स्थिति है, दोनों वाक्य अस्वाभाविक हैं। सामान्य स्थिति में इस आशय के लिए **व्यठुन ह्यौतुन** 'मोटा होने लगा' **व्यठ्न्य ह्यतिन** 'मोटे होने लगे'। उक्त दोनों वाक्यों में सम्प्रदान कारक का प्रयोग नहीं है। **क्युत** परसर्ग की व्याख्या 9.1.20 सूत्र में भी प्रस्तुत है।

॥ कर्तृतृतीयायामिदौतौ ॥ ५६ ॥

तिसृषु कर्तृतृतीयाहेतुतृतीयासहार्थतृतीयासु मध्यात् इदौतौ इ औ इत्येतौ प्रत्ययौ कर्तृतृतीयाया एकत्वबहुत्वयोः प्रत्ययौ भवतः। अत्रापि पुंलिङ्गे इकारस्यार्धमात्रता बोध्या। स्त्रीलिङ्गे तु पूर्णता विज्ञेया॥ गुरि मोरु। अश्वेन हतः॥ तमि वनु। तेन वणितम्॥ गुर्यौ मोरु। अश्वैर्हतः॥ तिमौ वनु। तैर्वणितम्॥ कोरि दपु। कन्यया प्रोक्तम्॥ कोर्यौ दपु। कन्याभिः प्रोक्तम्॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.56

कर्तृतृतीया, हेतुतृतीया, सहार्थतृतीया तीनों में **इ, व (औ)** प्रत्यय लगते हैं। यहाँ पर कर्तृतृतीया एकवचन, बहुवचन के प्रत्यय प्रस्तुत हैं। पुंलिंग में इकार की अर्धमात्रता और स्त्रीलिंग में पूर्णता निर्दिष्ट है। **गुर्य मोर** 'घोड़े ने मारा', **तॅम्य वौन** 'उस ने कहा'। **गुर्य्यव मोर** 'घोड़ों ने मारा', **तिमव वौन** 'उन्होंने कहा'। **कोरि दौप** 'लड़की बोली' **कोर्य्यव दौप** 'लड़कियाँ बोलीं'

व्याख्या–

इकार की अर्धमात्रता के लिए ग्रंथकार 'इ' मात्रा पर हल चिह्न अंकित करते हैं। इस का वर्तमान उच्चारण व्यंजन के तालवीकरण से व्यक्त है। सूत्र में वर्णित बहुवचन प्रत्यय **औ** का वर्तमान उच्चारण **व** है। यह प्रत्यय तालव्यकृत व्यंजन के पश्चात संयुक्त होता है। यथा– **गुर्य्यव** 'घोड़ों ने'।

2.1.21 तथा 30 सूत्र की व्याख्या में उल्लेख है, कि बहुवचन तथा एकवचन विकारी रूप का प्रत्यय स्त्रीलिंग में इकार है। स्त्रीलिंग रूप **कोरि** 'लड़की' के साथ यही इकार संयुक्त है। कर्तृतृतीया के बहुवचन रूप में वकार संयुक्त होने पर यह इकार यत्व अर्थात तालव्यकरण में परिणत होता है यथा– **कोर्य्यव** 'लड़कियों ने'।

॥ अन्द्रान्तौ निर्धारणे च ॥ ५७ ॥

इ औ प्रत्ययौ अन्द्र अन्तौ निर्धारणे एकत्वबहुत्वयोः प्रत्ययौ भवतः। एकत्वे इ अन्द्र प्रत्ययः। बहुत्वे औ अन्द्र प्रत्ययो भवति ॥ गर अन्द्र छुह् जान् छौंक। गृहे ऽमुकः साधुरस्ति ॥ गरौ अन्द्र छुह् जान् आँगुन्। गृहाणां साध्वङ्गनमस्ति ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.57

निर्धारण के अर्थ में एकवचन और बहुवचन के इ, व (औ) प्रत्यय होते हैं। जिन के अन्त में ॲन्द्र प्रत्यय भी लगता है। गर् ॲन्दर् छु जान लॉ॑क 'घर के अन्दर अमुक अच्छा है'। गरव ॲन्दर् छु जान आँगुन 'घरों के अन्दर आंगन अच्छा है'

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र में इ और व (औ) प्रत्ययों के प्रयोग का विस्तार बताया गया है। यह सूत्र करणकारक विभक्ति की व्याख्या नहीं करता, इस से अधिकरण कारक विभक्ति का बोध होता है। पाद टिप्पणी में उल्लेख है 2.1.4 सूत्र के अनुसार गर् शब्द में प्रत्यय इ का अकार हो जाता है, तथा ॲन्दर् परसर्ग के स्थान पर मंज़ परसर्ग का प्रयोग भी संभव है।

2.1.4 सूत्र की व्याख्या में स्पष्ट किया गया है, कि उक्त अकार का वर्तमान उच्चारण अुकार ही है। जैसा कि ऊपर अंकित है। लॉ॑क 'अमुक' शब्द का वर्तमान भाषा में व्यापक प्रयोग नहीं है। उदाहरण के ये दोनों वाक्य वर्तमान भाषा में व्यावहारिक नहीं हैं।

॥ अकारव्यञ्जनान्तानां पुंस्येकवचने वाऽन ऽसर्वनाम्नाम् ॥ ५८ ॥

चानुकृष्टं नानुवर्तते इति निर्धारण इति निवृत्तम्। पुंलिङ्गानामकारव्यञ्जनान्तानां कर्तृतृतीयाया एकत्वविषये विकल्पेन अन् भवति असर्वनाम्नाम् सर्वनामशब्दान्वर्जयित्वा। तत्रेदानीन्तनभाषायामन्प्रत्यय एव साधुतयोच्चार्यते।

[५७। गर अन्द्र छुह् जान् छौंक। ईदृशेषु वाक्येषु स्वरे परे ऽपि (सू० ४) उक्तो विधिरिप्रत्ययलोपो ऽवगन्तव्यः ॥ किं चैतद्वाक्यार्थे विवक्षिते प्रायशो गर मञ्ज् छुह् जान् छौंक इत्येवं रूपवाक्यमेवोच्चार्यते इति। एवं गाग अन्द्र इत्यादिष्वपि ज्ञेयम् ॥]

इ प्रत्ययविकल्पः प्राचीनभाषयैवेति बोध्यम् ॥ ईश्वरन् दॊप् । ईश्वरेणोक्तम् । दॆयि दॊप् । ईश्वरेणोक्तम् ॥ ड्यकन् कॊर् । ललाटेन कृतम् ॥ खरन् नॊच् । खरेण नर्तितम् ॥ अकारव्यञ्जनान्तानां किम् । शुरि वॊद् । बालेन रुदितम् ॥ पुंसि किम् । ज़ंगि लॊय् । जङ्घया क्षिप्तम् ॥ एकवचने किम् । ईश्वरौ दॊप् । ईश्वरैः प्रोक्तम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.1.58**

'पूर्वोक्त की आवृति न करते हुए निर्धारित को निवृत माना जाए'। सर्वनाम को छोड़ कर कर्तृतृतीया के अकार व्यंजनान्त पुंलिंग एकवचन में विकल्प से **अन** प्रत्यय होता है। आधुनिक भाषा में **अन** का अधिक प्रयोग है। प्राचीन भाषा में विकल्प से **इ** प्रत्यय प्रयुक्त होता है।

ईश्वरन दॊप 'ईश्वर ने कहा', **दॆयि दॊप** 'प्रभु ने कहा' **ड्यकन कॊर** 'भाग्य ने किया', **खरन नॊच** 'गधा नाचा'। अकारव्यंजनांत क्यों? **शुरु वॊद** 'बच्चा रोया'। पुंलिंग क्यों? **ज़ंगि लोय** 'टाँग ने प्रहार किया'। एकवचन क्यों? **ईश्वरव दॊप** 'ईश्वरों ने कहा'।

व्याख्या—

पुंलिंग अकारान्त शब्दों में विकल्प से **इ** के स्थान पर **अन्** प्रत्यय लगता है। वर्तमान भाषा में भी **अन्** का अधिक प्रयोग है। अकार से इतर अन्त वाले शब्दों में यह विकल्प सम्भव नहीं है। ऊपर दिए गए उदाहरणों से स्पष्ट है कि वाक्य करण कारक विभक्ति वाले नहीं हैं। संस्कृत भाषा में उक्त उदाहरणों का अनुवाद करण कारक में सम्भव है। ईश्वर कौल ने कश्मीरी वाक्यों का संस्कृत में ही अनुवाद किया है। उनके द्वारा किया गया अनुवाद है— **ईश्वरन् दॊप** ''ईश्वरेणोक्तम्', **ड़्यकन कॊर** 'ललाटेन कृतम्', **खरन नॊच** 'खरेण नर्तितम्' संस्कृत के ये तीनों वाक्य करण कारक के उदाहरण हैं, लेकिन हिन्दी में इन का अनुवाद कर्ताकारक में ही सम्भव है। यही बात कश्मीरी वाक्यों के लिए भी सत्य है। भाषा में ये तीनों वाक्य कर्तृवाच्य के उदाहरण है। यदि इन का रूपांतरण अकर्तृवाच्य में किया जाए तो ये करण कारक के उदाहरण बन सकते हैं।

[५८ । ऊमात्रान्तानामपि क्वचित्प्रत्ययादिलोपश्चेष्यते ॥ कर्तृतृतीयाया एकत्वे अन् प्रत्ययस्तदाद्यक्षरस्याकारस्य च लोप इत्यर्थः ॥ दांनून् गन्ज़ून् होन्ज़ून् इत्यादि ॥]

ईश्वरनि दॅस्य आव दपनु 'ईश्वर द्वारा कहा गया'
ड्यकुनि दॅस्य आव करनु 'भाग्य द्वारा किया गया'
खरुनि दॅस्य आव नचनु 'गधे से नाचा गया'

पाद टिप्पणी में **अन** प्रत्यय युक्त **दॉनन, गॅन्ज़न** और **हॉँजन** उदाहरण अंकित हैं। **दॉनन** का **अन** निश्चित रूप से बहुवचन द्योतक है, जो प्रस्तुत सूत्र से संगत नही है। शेष दो शब्दों का **अन** एकवचन कर्तृकारक प्रत्यय तथा बहुवचन में कर्मकारक प्रत्यय हो सकता है। यहाँ पर भी संकल्पनात्मक ऊ मात्रा का उल्लेख है। **ड्यकु** का मूल अर्थ 'माथा' है। लक्षणा में इस का **अर्थ** 'भाग्य' अथवा 'भरतार' हो सकता है।

॥ हेतौ सूंतिन्नन्तौ सूंत्यन्तौ वा ॥ ५९ ॥

इ औ प्रत्ययौ सूंतिन् अन्तौ सूंत्य् अन्तौ वा हेतुतृतीयायामेकत्वबहुत्वयोः प्रत्ययौ भवतः। अत्र इकारस्य पूर्णता बोध्या ॥ अथ सूंतिन् ख्योन्। हस्तेन भुक्तम् ॥ अथौ सूंतिन् ख्योन्। हस्तैर्भुक्तम् ॥ श्राकि सूंतिन् मोरुन्। छुरिकया हतः ॥ श्राकौ सूंतिन् मोरुन्। छुरिकाभिर्हतः ॥ ख्वर सूंत्य् आव्। पादेनागतः ॥ ख्वरौ सूंत्य् गौव्। पादैर्गतः ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.59

हेतु तृतीया में एकवचन और बहुवचन के **इ, व (औ)** प्रत्यय हैं। प्रत्यय के बाद **सुतिन** अथवा **सुत्य** में से एक का विकल्प है। यहाँ इकार की पूर्णता समझनी चाहिए। **अथु सुतिन ख्योन** 'हाथ से खाया', **अथव सुतिन ख्योन** 'हाथों से खाया', **श्राकि सुतिन मोरुन** 'तलवार से मारा', **श्राकव सुतिन मोरुन** 'तलवारों से मारा'। **ख्वरु सुत्य आव** 'पैर से आया' **ख्वरव सुत्य गव** 'पैरों से गया'।

व्याख्या–

हेतु तृतीया स्पष्ट रूप में करण कारक अभिव्यक्ति है। इस अभिव्यक्ति में विकल्प से **सुत्य** अथवा **सुतिन** परसर्ग का प्रयोग होता है। कुछ अतिरिक्त उदाहरण निम्नांकित हैं।

एकवचन–

काशवु सुत्य ख्यव 'चम्मच से खाया'। **रज़ि सुतिन गॉंड** 'रस्सी से बाँधा'।

बहुवचन–

कलमव सत्यु/सुतिन ल्यूख 'क़लमों से लिखा'।

॥ सहार्थायां स्नौ ॥ ६० ॥

स् न् प्रत्ययौ सूतिन् अन्तौ सूत्य् अन्तौ वा सहार्थतृतीयायामेकत्वबहुत्वयोः प्रत्ययौ भवतः ॥ मॉलिस् सूतिन आव्। पित्रा सहागतः ॥ बॉयिस् सूतिन् म्यूल्। भ्रात्रा साकं संगतः ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.60

सहार्थ तृतीया में **स**, **न** क्रम से एकवचन और बहुवचन के प्रत्यय हैं। **सुतिन** अथवा **सुत्य** प्रत्यय इस के बाद निर्दिष्ट हैं। **मॉलिस सुतिन आव** 'पिता के साथ आया', **बॉयिस सुतिन म्यूल** 'भाई से मिला'।

व्याख्या—

पूर्ववर्ती सूत्रों में यह स्पष्ट किया गया है, कि **स** और **न** क्रम से एकवचन और बहुवचन के प्रत्यय हैं। प्रस्तुत सूत्र **सुत्य** अथवा **सुतिन** परसर्ग का प्रयोजन और अधिक स्पष्ट करता है। सहार्थ करण कारक के एकवचन में **स** तथा बहुवचन में **न** प्रत्यय के बाद **सुत्य** अथवा **सुतिन** परसर्ग प्रयुक्त होता है। अतिरिक्त उदाहरण निम्नांकित है—

एकवचन— **मोहनिविस सुतिन द्राव** 'नौकर के साथ निकला'।

बहुवचन— **शुर्यन सुत्य ब्यूठ** 'बच्चों के साथ बैठा'।

॥ हेतोः संबन्धषष्ठीकर्तृतृतीययोः प्रयोगलिङ्गात्प्रत्ययौ वा ॥ ६१ ॥

हेतुभूतस्याश्वादेर्यः संबन्धषष्ठीप्रयोगः कर्तृतृतीयाप्रयोगो वा स एव लिङ्गं तस्मात्प्रोक्तौ इ सूतिन् औ सूतिन् प्रत्ययौ वा इ सूत्य् औ सूत्य् प्रत्ययौ हेतुतृतीयाया एकत्वबहुत्वयोर्भवतः। लिङ्गग्रहणं तु तेषां प्रयोगानामागमादेशाद्यर्थम् ॥ गुरि सन्दि सूतिन् आव्। अश्वेनागतः ॥ नावि हन्दि सूत्य् वोतु। नौकया प्राप्तः ॥ महनिव्यन् हन्दि सूत्य् गौव्। पुरुषैर्गतः ॥ गुरि सूत्य् आव्। अश्वेनागतः ॥ नावि सूत्य् वोतु। नौकया प्राप्तः ॥ महनिव्यौ सूत्य् गौव्। पुरुषैर्गतः ॥ गुरि सन्दु शब्दात् इ सूतिन् प्रत्ययः। उवर्णान्तानामिकार (सू० १०) इत्यनेन सन्दु इत्यस्य उकारस्य इकारः। एवं सर्वेषाम् ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.61

हेतुतृतीया में अश्व आदि के हेतु होने पर सम्बन्धषष्ठी अथवा कर्तृतृतीया के प्रयोग के बाद **इ सुतिन** अथवा **व (औ) सुतिन** या **इ सुत्य** अथवा

व **सुत्य** प्रत्यय एकवचन और बहुवचन में क्रम से प्रयुक्त होते हैं। शब्दों में इन का प्रयोग आगम, आदेश आदि का द्योतक है। **गुरि सुन्दि सुतिन् आव** 'घोड़े से/के द्वारा आया', **नावि हुन्दि सुत्य वोत** 'नौका से/के द्वारा पहुँचा', **मोहनिव्यन् हुन्दि सुत्य गव** 'नौकरों के द्वारा गया', **गुरि सुत्य आव** 'घोड़े से/के द्वारा आया', **नावि सुत्य वोत** 'नौका से/के द्वारा पहुँचा', **मोनिव्यव सुत्य गव** 'नौकरों के द्वारा गया'।

गुरि सुन्दि शब्द के कारण **इ सुतिन्** प्रत्यय है। 2.1.30 सूत्र से **सुन्द** के उकार का इकार। यह सर्वत्र होता है।

व्याख्या–

हेतु करण कारक में सम्बन्धषष्ठी परसर्ग **हुन्द** अथवा **सुन्द** का प्रयोग सम्भव है। यह परसर्ग भी रूप सिद्ध की प्रक्रिया से गुज़रते हैं। प्रस्तुत सूत्र यह भी निर्देश करता है, कि सम्बन्धषष्ठी परसर्ग के बिना भी हेतु करण कारक सम्भव है। इस स्थिति में कर्तृकारक रूप प्रयुक्त होता है। वर्तमान भाषा में कर्तृकरण कारक के प्रस्तुत रूप प्रचलित नहीं है।

गुरि सुत्य आव के स्थान पर **गुरि सुन्दि सुत्य आव** 'घोड़े से/के द्वारा आया' वाक्य अधिक प्रचलित है। **हुन्द** और **सुन्द** के व्याकरणिक रूप 2.1.46 सूत्र की व्याख्या में तालिकाबद्ध है।

॥ ख्वत निश वा ऽपायपञ्चम्याम् ॥ ६२ ॥

तस्मादेव संबन्धषष्ठीप्रयोगलिङ्गात्तृतीयाप्रयोगलिङ्गाद्वा ख्वत प्रत्ययो निश प्रत्ययो वा अपायपञ्चम्याः स्वरूपं भवति। निशस्थाने निशिन् इति ख्वतस्थाने ख्वतन् इति च व्यवह्रियते इति बोध्यम्॥ ग्वर् सन्दि ख्वत छुह् गाट्ठुल्। गुरोः सकाशाद्दक्षोऽस्ति॥ यथा। कश हन्दि ख्वत छुह् त्रकुर्। शिलायाः कठिनोऽस्ति॥ रुप निश छुह् स्वन् जान्। रौप्यात्स्वर्णं साध्वस्ति॥ यथा। रुपौ ख्वत छिह् द्यार् जान्। रौप्याद्धनं शुभमस्ति॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.62

संबन्धषष्ठी अथवा तृतीया के रूपों के साथ **ख्वतु** अथवा **निश** प्रत्यय लगने से अपाय पंचमी का स्वरूप बनता है। **निश** के स्थान पर **निशिन**, **ख्वतु** के स्थान पर **ख्वतन** का व्यवहार भी संभव है। **ग्वरु सुन्दि ख्वतु छु गाटुल** 'गुरु से बुद्धिमान है', **कनि हुन्दि ख्वतु छु त्रकुर** 'शिला से कठोर है', **र्‍वपु निश छु स्वन जान** 'चाँदी से सोना अच्छा है'। **र्‍वपव ख्वतु छि द्यार जान** 'चाँदी से पैसे अच्छे है'।

व्याख्या–

अपादान कारक में **ख्वतु** अथवा **निश** परसर्ग का प्रयोग किया जाता है। संबन्धषष्ठी के बाद **ख्वतु** और करण कारक रूप के बाद **निश** परसर्ग प्रयुक्त होता है। 2.1.46, 48 और 51 सूत्रों में संबन्धषष्ठी के सभी परसर्ग और प्रत्यय वर्णित हैं। अपादान कारक के लिए संबन्धकारक के निर्दिष्ट परसर्गों अथवा प्रत्ययों के बाद **ख्वतु** परसर्ग प्रयुक्त होता है। यथा– **ग्वलाबुक्य ख्वतु छु पंपोशजान** 'गुलाब से कमल अच्छा है' वर्तमान भाषा में संबन्धकारक के इस प्रत्यय **अुक्य** के बिना भी अपादान कारक की सिद्धि है। **ग्वलाबु ख्वतु छु पंपोश जान** 'गुलाब से कमल अच्छा है'।

॥ सामान्यचतुर्थ्यां पुछ्य् ॥ ६३ ॥

संबन्धषष्ठीप्रयोगलिङ्गात्तृतीयाप्रयोगलिङ्गाद्वा चतुर्थ्यां पुछ्य् प्रत्ययः स्यात्। एकबहुत्वे लिङ्गादेव बोध्यंते ॥ पुत्र पुछ्य् आव्। पुत्रायागतः ॥ यद्वा। पुत्र सन्दि पुछ्य्। पुत्राय ॥ पुत्रौ पुछ्य् आव्। पुत्रेभ्य आगतः ॥ यद्वा। पुत्रन् हन्दि पुछ्य्। पुत्रेभ्यः ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.1.63**

सम्बन्धषष्ठी अथवा तृतीया के रूपों के साथ **पुछ्य** प्रत्यय लगने से चतुर्थी अभिव्यक्त होती है। यह एकवचन व बहुवचन दोनों के लिए समझना चाहिए। **पौत्र पुछ्य आव** 'पुत्र के लिए आया' अथवा **पौत्र सुन्दि पुछ्य** 'पुत्र के लिए' **पौत्रव पुछ्य आव** 'पुत्रों के लिए आया' अथवा **पौत्रन हुन्दि पुछ्य** 'पुत्रों के लिए'

व्याख्या–

सम्प्रदान कारक की अभिव्यक्ति के लिए **पुछ्य** परसर्ग लगता है। यह परसर्ग सम्बन्धषष्ठी अथवा करण कारक रूपों के बाद प्रयुक्त होता है। इस विकल्पन में अर्थ भेद की कोई सम्भावना नहीं है, और यह तथ्य दोनों वचनों के लिए सत्य है। अतिरिक्त उदाहरण निम्नांकित हैं–

एकवचन- **गॉव हुन्दि पुछ्य आव** 'गाय के लिए आया', **गॉव पुछ्य आव** 'गाय के लिए आया'

बहुवचन- **गॉवन हुन्दि पुछ्य आव** 'गायों के लिए आया', **गॉवन पुछ्य आव** 'गायों के लिए आया'

वर्तमान भाषा में **पुछ्य** परसर्ग का प्रयोग नहीं के बराबर है। **पुछ्य** के स्थान पर **खॉतरु** परसर्ग का व्यापक प्रयोग है।

एकवचन- **गॉव हुन्दि खॉतरु आव** 'गाय के लिए आया', **गॉव खॉतरु आव**

'गाय के लिए आया'

बहुवचन- **गॉवन हुन्दि खॉतरु आव** 'गायों के लिए आया', **गॉवन खॉतरु आव** 'गायों के लिए आया'

॥ उकुप्रत्ययस्योकारस्याऽकारः ॥ ६४ ॥

षष्ठीप्रयोगसंबन्धिन उकु प्रत्ययोकारस्य अकारः स्यात् ॥ पट्याकि पुछ्य् । और्णवस्त्राय ॥ पट्युकु प्रयोगलिङ्गात्पुछ्य् प्रत्ययः । अनेन उकारस्य अकारः । इवर्णान्तानाम् (सू०३०) इति इकारागमः ॥

अनुवाद- सूत्र **2.1.64**

संबन्धषष्ठी प्रत्यय **उक** के उकार का अकार होता है। **पटिकि पुछ्य** 'पट्टू (गर्म कपड़ा) के लिए' **पट्युक** शब्द के साथ **पुछ्य** प्रत्यय का प्रयोग। प्रस्तुत सूत्र से उकार का अकार। 2.1.30 सूत्र से इकारागम।

व्याख्या–

पुंलिंग अप्राणियों का संबन्धषष्ठी कारक प्रत्यय **उक** है। इस की व्याख्या 2.1.48 सूत्र में की गई है। प्रत्यय के चारों रूप तालिका में अंकित हैं। 2.1.30 सूत्र की व्याख्या में उल्लेख है, कि इकार बहुवचन का तथा एकवचन विकारी रूप का प्रत्यय है। **पुछ्य** परसर्ग प्रयुक्त होने के कारण **उक** प्रत्यय युक्त पद विकारी हो जाता है, और व्युत्पन्न रूप **पटिक्य पुछ्य** हो जाता है। पूर्व सूत्र में स्पष्ट किया गया है, कि **पुछ्य** परसर्ग के स्थान पर **खॉतरु** परसर्ग का व्यवहार वर्तमान में अधिक व्यापक है।

॥ पञ्चम्यामिदौतौ प्यठान्तौ निशान्तावन्द्रान्तौ वा ॥६५॥

लिङ्गात् इ औ प्रत्ययौ प्यठ अन्तौ वा निश अन्तौ वा अन्द्र अन्तौ पञ्चम्या एकत्वबहुत्वयोः प्रत्ययौ भवतः । ते च स्वस्वस्थानेषु प्रयुज्यन्ते ॥ गाम प्यठ । ग्रामात् ॥ सर्प निश । सर्पात् ॥ गामौ प्यठ । ग्रामेभ्यः ॥ सर्पौ निश । सर्पेभ्यः ॥ गर अन्द्र द्राव् । गृहान्निर्गतः ॥ नावि अन्द्र द्राव् । नावो निर्गतः ॥

अनुवाद–

पंचमी में एकवचन और वहुवचन रूपों के साथ **इ, अव** प्रत्ययों के बाद **प्यठ, निश** अथवा **अन्दर** प्रत्यय लगते हैं। इनका प्रयोग यथा स्थान किया जाता है।

गामु प्यठु 'ग्राम से', **सर्प निश** 'साँप से', **गामव प्यठु** 'ग्रामों से', **सर्पव निश** 'साँपों से', **गरु अॅन्दरु द्राव** 'घर से निकला', **नावि अॅन्दरु द्राव** 'नाव से निकला'।

व्याख्या–

2.1.62 सूत्र में अपादान कारक की व्याख्या है। प्रस्तुत सूत्र में इस कारक के अतिरिक्त परसर्गों का उल्लेख है। ये परसर्ग हैं— **प्यठ निश** और **अन्दर**। परसर्ग के प्रयोग से पूर्व एकवचन में **इ** और बहुवचन में **व** प्रत्यय संयुक्त होता है। निम्नलिखित उदाहरण दृष्टव्य हैं–

एकवचन- **गरि प्यठ आव पोछ़** 'घर से मेहमान आया', **वानु अन्दरु द्राव गगुर** 'दुकान में से चूहा निकला'

बहुवचन- **गरव प्यठ आयि पॅछ़्य** 'घरों से मेहमान आए', **वानव अन्दरु द्राय गगर** 'दुकानों से चूहे निकले'

पाद टिप्पणी में वर्णन है, कि 2.1.57 सूत्र की पाद टिप्पणी यहाँ पर भी सार्थक है।

॥ वर्गप्रथमान्तानां प्रथमायां द्वितीयः ॥६६॥

वर्गप्रथमान्तानां लिङ्गानां प्रथमाविभक्तौ स्वस्ववर्गसंबन्धी द्वितीयाक्षरो भवति॥ त्रख्। द्रोणः ॥ काछ़्। काचः॥ कठ्। मेषः ॥ त्रख्। द्रोणाः ॥ काछ़्। काचाः ॥ कठ्। मेषाः ॥ हथ्। शतम् ॥ हथ्। शतानि ॥ ताफ् । आतपः ॥ ताफ्। आतपाः ॥ प्रथमायां किम्। त्रक सूतिन्। द्रोणेन ॥ काच़ सूतिन्। यक्ष्मणा ॥ कट पुछ़्य्। मेषाय ॥ हतुक्। शतस्य ॥ तापस् प्यठ्। आतपोपरि ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.1.66**

वर्ग के प्रथम अक्षर से अन्त होने वाले शब्द प्रथमा विभक्ति में अपने अपने वर्ग के द्वितीय अक्षर हो जाते हैं।

एकवचन- **त्रख्** 'परिमाप की स्थानीय इकाई, लगभग पांच किलो', **काछ़** 'यक्ष्मा' **कठ्** 'भेड़' **हथ** 'सैकड़ा' **ताफ** 'धूप'

बहुवचन- **त्रख्** 'परिमाप की स्थानीय इकाई', **काछ़** 'यक्ष्माऐं' **कठ्** 'भेड़ें' **हथ** 'सैकड़े' **ताफ** 'धूप'

प्रथमा क्यों?

त्रकु सुतिन 'त्रख (परिमाप मात्रा) से', **काचु सुतिन्** 'यक्ष्मा से' **कटु पुछ़्य** 'भेड़ के लिए', **हतुक्** 'सेंकड़े का' **तापस प्यठ** 'धूप पर'

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र महाप्राणत्व के लोप की स्थिति का वर्णन करता है। अविकारी शब्द के अन्त में महाप्राण अक्षर होने की स्थिति में उस के विकारी रूप में महाप्राणत्व का लोप हो जाता है। ग्रंथकार का मत है कि प्रथमा अथवा कर्त्ता

[६१। गर अन्द्र। अत्रापि (सू० ५७) लिखितसंकेतो (नोट्) द्रष्टव्यः ॥

कारक के रूप में प्रयुक्त होने के पूर्व पुंलिंग प्रातिपदिक का अंतिम व्यंजन अल्पप्राण होता है। प्रथमा में प्रयुक्त होने पर यह व्यंजन महाप्राणत्व ग्रहण करता है, तथा फिर अन्य विकारों में पुनः महाप्राणत्व का लोप हो जाता है। दिए गए उदाहरण इसी तथ्य को स्पष्ट करते हैं। यह एक वास्तविकता है, कि विकारी रूपों में महाप्राणत्व का लोप निश्चित है।

॥ स्त्रियामेकवचन एव ॥ ६७ ॥

स्त्रीलिङ्गे वर्तमानस्य वर्गप्रथमान्तस्य प्रथमाया एकवचने एव स्वस्ववर्ग-द्वितीयाक्षरो भवति ॥ क्रख्। कोलाहलः ॥ रछ्। गुञ्जा ॥ नठ्। कम्पः॥ वथ्। मार्गः॥ चाफ्। भुक्तिः॥ एकवचने किम्। क्रक। कोलाहलाः ॥ रच। गुञ्जाः॥ नट। कम्पाः ॥ वत। मार्गाः ॥ चाप। भुक्तयः ॥ एव। द्वितीयादिविभक्तिषु बोध्यम् ॥

अनुवाद— सूत्र 2.1.67

स्त्रीलिंग में वर्ग के प्रथम अक्षर से अन्त होने वाले शब्द प्रथमा के एकवचन में अपने अपने वर्ग के द्वितीयाक्षर हो जाते हैं।

क्रख 'कोलाहल' **रछ़** 'रत्ती' **नठ** 'कम्पन' **वथ** 'रास्ता' **च़ाफ** 'चबाना, (संज्ञा रूप में)'

एकवचन क्यों?

क्रक़ु 'कोलाहलें' **रच़ु** 'रतियाँ' **नटु** 'कम्पनें' **वतु** 'रास्ते' **च़ापु** 'चबाना, (संज्ञा बहुवचन रूप)'

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र पूर्ववर्ती सूत्र का विस्तार है। स्त्रीलिंग एकवचन में भी इसी प्रक्रिया का निर्देश किया गया है। यहाँ भी यह माना जाना चाहिए कि कर्ता कारक के रूप में प्रयुक्त होने के पूर्व स्त्रीलिंग एकवचन प्रातिपदिक का अन्तिम व्यंजन अल्प प्राण होता है। कर्ता कारक में प्रयुक्त होने पर अन्तिम व्यंजन महाप्राण बन जाता है। बहुवचन में महाप्राणत्व का लोप है। अतिरिक्त उदाहरण निम्नांकित है—

एकवचन	बहुवचन
राथ 'रात'	**रातु, रॅच़** 'रातें'
थ्वख 'थूक'	**थॅकु** 'थूकें'

पूर्व सूत्र में वर्णित तथ्य कि विकारी रूपों में महाप्राणत्व का लोप होता है, यहाँ भी प्रभावी है। इस के अरिरिक्त स्त्रीलिंग के बहुवचन रूप में भी यह लोप सिद्ध है।

॥ न संयोगे तचोः ॥ ६८ ॥

लिङ्गान्ते पूर्ववर्णसंयुक्तयोस्तकारचकारयोर्द्वितीयाक्षरादेशो न भवति ॥ सुच़्। सौचिकः ॥ बतुच । वर्तिका ॥ ब्यकुच़्। बाला शुनी ॥ मकुच़् । परशुः ॥ मस्त् । शिरोरुहः ॥ नस्त् । नासिका ॥ तचोः किम् । रेम्फ् । अल्पार्थः ॥ चाम्फ् । सान्त्रम् ॥ संयोगे किम् । रथ् । रक्तम् ॥ स्वछ़् । उपजातिः ॥

अनुवाद— सूत्र **2.1.68**

प्रातिपदिक का अन्तिम व्यञ्जन संयुक्त होने की स्थिति में तकार और च़कार का द्वितीयाक्षर में आदेश नही है।

सुच़ 'दर्ज़ी' **बतुच** 'बतख (स्त्रीलिंग)' **ब्यकुच़** 'पिल्ली' **मकुच़** 'कुल्हाड़ी' **मस्त** 'केश' **नस्त** 'नाक'।

तकार और च़कार का ही क्यों? **रेम्फ** 'अल्प', **च़ाम्फ** 'लत'। संयोग में क्यों? **रथ** 'रक्त' **स्वछ़** 'छेड़'

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र 2.1.66 का अपवाद है। ग्रन्थकार ने पहले छः उदाहरणों के अन्तिम व्यंजन से पूर्व के व्यंजन को स्वर रहित माना है। **मस्त** 'केश' और **नस्त** 'नासिका' में **स्** हलन्त है, और **त** के साथ संयुक्त हो जाता है। इन के पूर्व जो चार शब्द हैं। उनमें अन्तिम व्यंजन से पूर्व का व्यंजन हलन्त माना गया है। भाषा का वर्तमान उच्चारण इस की पुष्टि नहीं करता। यहाँ पर पूर्व व्यंजन अकार युक्त है, हल चिन्ह युक्त नहीं। भूमिका में इस बात को स्पष्ट किया गया है, कि सूत्र के स्पष्टीकरण में ईश्वर कौल ने जो उदाहरण प्रस्तुत किए हैं, उन को वर्तमान लिपि में ही लिपिबद्ध किया गया है। उपर्युक्त चारों शब्दों को उच्चारण के अनुसार ही लिखा गया है। स्पष्टीकरण के अतिरिक्त दो शब्द **रथ** 'रक्त' और **स्वछ़** 'छेड़' का अंतिम वर्ण भी आधुनिक भाषा में संयुक्त नहीं है।

॥ उदन्तानामोदुपधाया आत्वमप्रथमैकत्वे ॥६९॥

प्रथमैकवचनं वर्जयित्वा उदन्तानामुकारान्तानां लिङ्गानामुपधाभूतो य ओकारस्तस्य आत्वं भवति शेषासु विभक्तिषु । तत्रादेशागमादिना इकारान्तीभूतस्थाने उपधाया वक्ष्यमाणसूत्रेण (सू० ७०) असिद्धता विज्ञेया ॥ मोलि । पितरः ॥

मॉलिस्। पितरम्॥ मॉ्लि सन्द्। पितुः॥ वॉ्लि। कुण्डलानि॥ वॉलिस्। कुण्डलम्॥ वॉ्लि दॆप्। कुण्डलेनोक्तम्॥ बॉ्यि। भ्रातरः॥ बॉयिस। भ्रातरम्॥ बॉ्यि सन्द्। भ्रातुः॥ मॊलु। वॊलु। बॊयु शब्देभ्यः। उवर्णान्तानामिकार (सू०३०) इति सूत्रेण उमात्राया इकारमात्रादेशः। अनेनोपधाया ओकारस्य आत्वम्। उदन्तानां किम्। पोप्। पुष्पाणि॥ पोप सूतिन्। पुष्पेण॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.69

उकारान्त शब्दों के प्रथमा एकवचन को छोड़ कर शेष सभी विभक्तियों में उपधाभूत ओकार का ऑकार हो जाता है। 2.1.70 सूत्र के अनुसार आदेश अथवा आगम से प्राप्त इकारान्त वाले शब्दों के उपधा की अप्रसिद्धता हो जाती है। **मॉल्य** 'पिता (एक से अधिक)', **मॉलिस** 'पिता को', **मॉल्य सुन्द** 'पिता का', **वॉल्य** 'फंदे (बुनाई के)', **वॉलिस** 'फंदे को' **वॉल्य दोप** 'फंदे ने कहा' **बॉय** 'भाई (एक से अधिक)' **बॉयिस** 'भाई को' **बॉय सुन्द** 'भाई का'।

मूल शब्द है – **मोल, वोल, बोय**। 2.1.30 सूत्र से अन्तिम उकार का इकार आदेश। प्रस्तुत सूत्र से उपधा के ओकार का ऑकार। उकारान्त क्यों? **पोष** 'फूल, एक से अधिक' **पोषु सुतिन** 'फूल से'।

व्याख्या–

मोल 'पिता' **वोल** 'फंदा' और **बोय** 'भाई' शब्दों के अन्त में उकार की संकल्पना है। ग्रन्थ में इस उकार के आधार पर अनेक व्याकरणिक प्रक्रियाओं की व्याख्या की गई है। वर्तमान में इस उकार की सत्ता किसी भी रूप में विद्यमान नहीं है। जिस प्रकार **पोष** 'फूल' के अन्त में उकार का उच्चारण नहीं है, उसी प्रकार इन तीनों शब्दों के अन्त में भी उकार नहीं है। हालाँकि व्युत्पत्ति प्रक्रिया के अन्तर्गत शब्दान्त के इस स्वर की सत्ता है।

पोश में उपधाभूत ओकार यथावत रहता है, जबकि शेष तीनों शब्दों का उपधाभूत ओकार ॲकार में परिणत होता है। कह सकते हैं कि शकारांत पुंलिंग शब्दों का उपधाभूत ओकार यथावत रहता है। इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं– **होश** 'होश' **होशुक** 'होश का' **होशि सुत्य** 'होश से'।

॥ इदुदूदन्तानामवर्णाप्रसिद्धता ॥ ७० ॥

इमात्रान्तानामुमात्रान्तानामूमात्रान्तानां च लिङ्गानां शब्दानां चोपधाया अवर्णस्याप्रसिद्धता निर्णेया। उदाहरणानि पूर्वसूत्रोक्तानि (सू० ६९)। अन्यान्यपि यथा॥ पंद्[। और्णवस्त्रम्]॥ हंद्[। कण्ठः]॥ तंन्[। तनुः]॥ इत्यादीनां शब्दानां स्वयमुकारमात्रान्तत्वादुपधाया अकारस्याऽप्रसिद्धता। एषामेव शब्दानाम्। उवर्णान्ता-

नाम् (सू० ३०) इत्यादिसूत्रेण बहुत्वविषये उकारस्य इकारे कृते इकारान्तीभूतत्वात्तत्राप्यप्रसिद्धता ॥ पॆट्टि । हॆट्टि । तॆन्नि ॥ ऊमात्रान्तानां यथा ॥ मॊजू [। माता] ॥ कॊठू [। काष्ठम्] ॥ अत्र स्वयमूमात्रान्तत्वादप्रसिद्धता । बहुत्वे तु । बहुत्वेऽकारागमं (सू० ११) इति सूत्रेणाकारागमे कृते । ऊदन्तटवर्गस्य (सू० २२) इत्यादिना ठकारस्य छकारे च कृते । उवर्णान्तानामिकारः (सू० ३०) इत्युकारस्य इकारः यत्वं च कृते उपधाया अकारस्य प्रसिद्धता सिद्धा इति [। माज्य । काछ्य] ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.1.70**

इ मात्रा उ मात्रा और ऊ मात्रा से अन्त होने वाले पदों तथा शब्दों के उपधा का अ वर्ण अप्रसिद्ध होता है। पूर्व सूत्र 2.1.69 में उदाहरण दिए गए हैं। अतिरिक्त उदाहरण ये हैं— **पॊट** 'पट्टू (गर्म कपड़ा)', **हॊट** 'कंठ' **तॊन** 'पतला'। ये सभी शब्द उकार मात्रांत हैं। इसलिए उपधा के अकार की अप्रसिद्धता है। 2.1.30 इत्यादि सूत्रों से इन शब्दों के बहुवचन रूप में उकार का इकार होने पर इकार के कारण अप्रसिद्धता हो जाती है – **पॆट्य, हॆट्य, तॆन्य**। ऊमात्रान्त शब्दों के उदाहरण इस प्रकार है—

मॊज 'माता' **कॊठ** 'काष्ठ' ये शब्द ऊमात्रान्त के कारण स्वतः ही अप्रसिद्धता प्राप्त हैं। 2.1.11 सूत्र से बहुवचन में अकारागम का आदेश है। 2.1.22 सूत्र से ठकार का छकार। 2.1.30 सूत्र से उकार का इकार और इकार का यत्व तथा उपधा के अकार की प्रसिद्धता सिद्ध है। **माजि, काछि**।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र भी प्रक्रियात्मक मात्राओं पर आधारित है। जिन शब्दों या पदों के अन्त में इस प्रकार का इकार उकार अथवा ऊकार का अनुभव किया गया है। उन के व्युत्पन रूपों में उपधा का स्वर रूपान्तरित अर्थात अप्रसिद्ध हो जाता है।

कश्मीरी भाषा के वे स्वर जो संस्कृत अथवा हिन्दी में विद्यमान नहीं है। उन को ग्रंथकार 'अप्रसिद्ध' संज्ञा से अभिहित करते हैं। जो स्वर संस्कृत और हिन्दी में विद्यमान हैं उन को प्रसिद्ध कहा गया है।

[७० । येषां शब्दानां पूर्वसूत्रेण (६९) उपधाभूतस्योकारस्याकारः कृतस्तेषामेव तस्योपधाकारस्य द्वितीयैकत्वे ऽप्रसिद्धता विज्ञेया । यथा । मॊकिस् बॊयिस् इत्यादि । नत्वन्येषामिदुदूदन्तानाम् । यथा । पटिस् कटिस् इत्यादि ॥]

उदाहरण–

अप्रसिद्ध स्वर में रूपांतरण		प्रसिद्ध स्वर में रूपांतरण	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
पॊट 'पट्टू'	पॅट्य	मॉज 'माता'	माजि
हॊट 'कंठ'	हॅट्य	कॉठ 'काष्ठ'	काछि
तॊन 'पतला'	तॅन्य		

सूत्र के उदाहरण में सभी मूल शब्द संकल्पनात्मक मात्रा स्वर सहित लिपिबद्ध हैं।

सूत्र के स्पष्टीकरण में ग्रंथकार ने उल्लेख किया है, कि उपधा का स्वर अप्रसिद्ध हो जाता है। ये सभी उदाहरण पुंलिंग रूपों के हैं। 2.1.21 और 30 सूत्रों की व्याख्या में इकार का कथन है। यही इकार पश्चगामी स्वरसमतालता के कारण पूर्व वर्तुलाकार स्वर को अवर्तुलाकार बना देता है। पश्च स्वर होते हुए भी अवर्तुलाकार होने के कारण इस को अप्रसिद्ध स्वर कहा गया है। संस्कृत और हिन्दी आदि भाषाओं के सभी पश्च स्वर वर्तुलाकार ही होते हैं। दिए गए उदाहरण यह तथ्य भी स्पष्ट करते हैं, कि पुलिंग शब्दों के प्रसिद्ध स्वर ही व्युत्पन्न रूप में अप्रसिद्ध हो जाते हैं, जबकि स्त्रीलिंग शब्द **मॉज** तथा **कॉठ** में अप्रसिद्ध स्वर प्रसिद्ध हो जाता है।

सूत्र की पाद टिप्पणी में द्वितीया एकवचन रूपों के लिए भी इसी तरह के रूपांतरण का वर्णन है। यथा – **मॉलिस** 'पिता को' **बॉयिस** 'भाई को'

॥ ज़ाम ओत्वं परस्वरलोपश्च ॥ ७१ ॥

ज़ाम् शब्दस्योपधाया ओत्वं भवति तस्मात्परस्य प्रत्ययागमादिगतस्य स्वरस्य च लोपः स्यात् अप्रथमैकत्वे ॥ ज़ोम् । ननन्दरः ॥ ज़ोम् वन् । ननन्दरं वद ॥ ज़ोमन् । ननन्दॄः ॥ ज़ोम् दोप् । ननन्द्राक्तम् ॥ ज़ोमव् । ननन्दृभिः ॥ ज़ोम् हुन्द् । ननन्दुः ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.71

ज़ाम शब्द में भी उपधा के स्वर का ओकार होता है। प्रथमा एकवचन को छोड़ कर शब्द में लगने वाले प्रत्यय, आगम इत्यादि के स्वर का लोप हो जाता है। **ज़ोम** 'नन्दें' **ज़ोम वन** 'ननद को कहो' **ज़ोमन** 'ननदों को' **ज़ोम दोप** 'ननदने कहा' **ज़ोमव** 'ननदों ने/से **ज़ोम हुन्द** 'ननद का' आदि।

व्याख्या–

कर्ता कारक एकवचन के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर **ज़ाम**

'ननद' शब्द के उपधा का आकार ओकार में परिवर्तित होता है। **ज़ोम वन, ज़ोम हुन्द**, आदि शब्द इसी परिवर्तन के उदाहरण हैं।

वर्तमान भाषा में इन अवस्थाओं में उपधा के आकार का ऑकार परिवर्तन अधिक व्यापक है।

यथा– **ज़ॉम वन** 'ननद से कहो'। **ज़ॉम हुन्द** 'ननद का', **ज़ॉमन क्युत** 'ननदों के लिए'।

॥ गाव् शब्दस्यौकारः ॥ ७२ ॥

गाव् शब्दसंबन्धिन उपधाया आकारस्य ओकारो भवति प्रथमैकवचनं वर्जयित्वा ॥ गोव् । गावः । गोवन् । गावः ॥ गोव् हंन्दु । गोः ॥ गाव् शब्दात्सर्वत्रानेनोपधाया ओकारे कृते । यङ्गावृकङ्थवंडां च कृतादेशाविधि (सू० १७) रिति सूत्रेण अकारागमनिषेधः ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.1.72**

प्रथमा एकवचन को छोड़कर, गाव शब्द के उपधाभूत आकार का ओकार होता है। **गोव** 'गायें' **गोवन्** 'गायों को' **गोव हुन्द** 'गाय का'। प्रस्तुत सूत्र से **गाव** शब्द के उपधा का सर्वत्र ओकार। 2.1.17 सूत्र से अकारागम का निषेध है।

व्याख्या–

वर्तमान भाषा में **गाव** 'गाय' का बहुवचनीय रूप **गाव** 'गाऐं' है। **गोव** शब्द की आंचलिक सत्ता है। प्रथमा एकवचन को छोड़ कर अन्य रूपों में आकार ऑकार में परिवर्तित होता है। स्पष्टीकरण में जो उदाहरण दिए गए हैं उन का वर्तमान उच्चारण निम्नांकित है।

गॉवन 'गायों को' **गॉवन हुन्द** 'गायों का' **गॉव हुन्द** 'गाय का'। यह सूत्र पूर्व सूत्र के लिए एक अतिरिक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

॥ उदन्तत्र्यक्षराणामुकारस्याकारः ॥ ७३ ॥

उदन्तानां त्र्यक्षरादीनां लिङ्गानामुपधाभूतस्य उकारस्य अकारो भवति प्रथमैकवचनं वर्जयित्वा ॥ गाटलिस् । दक्षम् ॥ गाटलपन् । दक्षान् ॥ गाटल्यौं । दक्षैः ॥ गाटलिस् प्यठ । दक्षात् ॥ गाटुलु शब्दात् । द्वितीयायां स्नौ (सू० १८) स् न् प्रत्ययौ । उवर्णान्तानामिकारः (सू० १०) । न्प्रत्यये सर्वत्र (सू० १२) अकारागमः । अनेनोपधाया अकारः । त्र्यक्षराणां किम् । कुलिस् । वृक्षम् ॥ कुल्यन् । वृक्षान् ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.73

प्रथमा एकवचन को छोड़ कर तीन अथवा तीन से अधिक अक्षरों वाले उकारान्त शब्दों के उपधा का 'उकार' अकार हो जाता है। **गाटलिस्** 'बुद्धिमान को' **गाटल्यन्** 'बुद्धिमानों को' **गाटल्यव** 'बुद्धिमानों ने' **गाटलिस प्यठ** 'बुद्धिमान पर'। ये **गाटुल** 'बुद्धिमान' शब्द के रूप हैं। 2.1.38 सूत्र से **'स न'** प्रत्यय 2.1.30 सूत्र से उवर्णान्त का इकार होता है। 2.1.12 सूत्र से अकारागम। प्रस्तुत सूत्र से उपधा के स्वर का अकार।

तीन अक्षरों वाले शब्द क्यों? **कुलिस** 'वृक्ष को' **कुल्यन** 'वृक्षों को'।।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र शब्दों की आक्षरिक संरचना पर विचार करता है। उपधा के उकार का अकार तीन अक्षरों से कम वाले शब्दों में सम्भव नहीं है। इसी कारण **कुल** 'वृक्ष' शब्द का कर्म कारक रूप **कुलिस** 'वृक्ष को' और **कुन** 'अकेला' का **कुनिस** 'अकेले को' है।

गाटुल शब्द तीन अक्षरों वाला है। इस शब्द में उपधा के उकार का अकार आदेश है, और व्युत्पन्न रूप **गाटलिस** सिद्ध है। इसी प्रकार **कॉशुर** 'कश्मीरी' **कॉशरिस** 'कश्मीरी को' और **वाँगुन** 'बैंगन' **वाँगनस** 'बैंगन को' शब्दों में उपधा के उकार का अकार आदेश है।

सूत्र संख्या 2.1.36 से 2.1.51 तक ग्रन्थकार ने सम्बन्धकारक की विभक्तियों और परसर्गों की विशद विवेचना की है। इस के अतिरिक्त सूत्र संख्या 2.1.62 से 2.1.65 तक **सुंद** और **हुंद** परसर्गों का अन्य कारक विभक्तियों में प्रयुक्त होने की चर्चा की गई है। इन्ही सूत्रों के अन्तर्गत इन की व्याख्या भी दी गई है। सम्बंधकारक प्रत्यय रूप **उन** और **उक** बताए गए हैं। इन के अतिरिक्त संबंध कारक में प्रयुक्त होने वाले परसर्गों का भी उल्लेख है। ये परसर्ग **सुन्द** और **हुन्द** है। लिंग तथा वचन के आधार पर इन के व्युत्पन्न रूप भी दिए गए हैं। इस के लिए सूत्र संख्या 2.1.46. 48, 51 द्रष्टव्य हैं।

॥ न कूछ़लादीनां शेषं कर्म ॥ ७४ ॥

कछुलु । छ्वतुलु । चक़ुलु । ग्वगुलु । वातुलु । बतुकु । गगुरु । क्वंगुरु । इत्यादयः ॥ एषां शब्दानामुकारान्तलिङ्गशेषप्रक्रिया न भवति किंतु उपधाया अकारादेशो भवति ॥ कछ़ल् । मारिकाः ॥ छ्वतल् । स्वव्यभिचारकारयितारः ॥ चक़ल् । चक्राकाराः ॥ ग्वगल् । वर्तुलाकाराः ॥ वातल् । चण्डालाः ॥ बतक् वर्तकाः ॥ गगर् । मूषकाः ॥ क्वंगर् । छागपोताः ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.1.74**

क्वछुल, च़्वतुल, च़कुल, ग्वगुल, वातुल, बतुक, गगुर, म्वंगुर आदि शब्दों में उपधा के उकार का अकार आदेश तो है, परन्तु उकारान्त शब्दों में होने वाली अन्य प्रक्रियाओं का आदेश नहीं है। **क्वछ़ल** 'बोरियाँ' **च़्वतल** 'समलिंगी (बहुवचन रूप)' **च़कल** ठोस, चकोर आकृतियाँ, **ग्वगल** 'गेंद रूपी आकृतियाँ, **वातल** 'चर्मकार (बहुवचन रूप)', **बतख** 'बतकें', **गगर** 'चूहे' **म्वंगर** 'भेड़ों के शावक'।

व्याख्या—

2.1.73 सूत्र में यह निर्देश है, कि उपधा के उकार का अकार होने के साथ ही उकार मात्रान्त शब्दों से सम्बद्ध अन्य सूत्र भी व्युत्पत्ति प्रक्रिया में सहायक होते हैं। प्रस्तुत सूत्र दिए गए शब्दों में मात्र उपधा के उकार को अकार में रूपांतरित करता है। शब्द में अन्य कोई रूपांतरण नहीं होता। शब्दों के एकवचन तथा बहुवचन रूप निम्नांकित है।

एकवचन	**बहुवचन**
क्वछुल 'बोरी'	क्वछ़ल 'बोरियाँ'
च़्वतुल 'समलिंगी'	च़्वतल 'समलिंगी, एक से अधिक'
च़कुल 'चकोर आकृति वाला पदार्थ'	च़कल 'चकोर आकृति वाले पदार्थ'
ग्वगुल 'गेंद रूपी आकृति वाला पदार्थ'	ग्वगल 'गेंद रूपी आकृति वाले पदार्थ'
वातुल 'चर्मकार'	वातल 'चर्मकार, एक से अधिक'
बतुख 'बतख'	बतख 'बतख, एक से अधिक'
गगुर 'चूहा'	गगर 'चूहे'
म्वंगुर 'भेड़ का शावक'	म्वंगर 'भेड़ के शावक'

सूत्र में वर्णित 'उ' मात्रा प्रक्रियात्मक है। वर्तमान भाषा प्रयोग में इस का उच्चारण नहीं किया जाता।

॥ इकारे लोपः ॥७५॥

त्र्यक्षराधिकानामुकारान्तानामिकारे परे उपधाया उकारस्य लोपो भवति॥ गाट्लि । दक्षाः ॥ गाट्लि् वंनु। दक्षेणोक्तम् ॥ गाट्लि सन्दि पुछ्य्। दक्षाय॥ गाट्लि संन्दु । दक्षस्य ॥ साधनं पूर्ववत् ॥ इकारे किम् । गाटलिस् । दक्षम् ॥ साधितचरमेव ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.1.75**

तीन अक्षरों से अधिक उकारान्त शब्द के पश्चात इकार होने पर उपधा के उकार का लोप हो जाता है। **गाट्ल्य** 'बुद्धिमान लोग', **गाट्ल्य वोन**

'बुद्धिमान ने कहा', **गाटुल्य** **संद्य** **पुछ्य** 'बुद्धिमान के लिए', **गाटुल्य** **सुन्द** 'बुद्धिमान का' सिद्धि पूर्ववत। इकार में क्यों? **गाटुलिस** 'बुद्धिमान को। पूर्व सिद्ध।

व्याख्या–

वर्णित ऊमात्रा संकल्पनात्मक है। गाटुल शब्द के ये सभी रूप 2.1.73 सूत्र में वर्णित हैं। प्रस्तुत इकार प्रत्यय का विवेचन 2.1.21 तथा 30 सूत्रों में है।

॥ युकारोपधाया इत् ॥ ७६ ॥

उकारान्तानां लिङ्गानामुपधाभूतस्य युकारस्य इत् भवति। प्रथमैकवचनं वर्जयित्वा ॥ ज़िठि। वृद्धाः ॥ ज़िठिस्। वृद्धम् ॥ ज़्युठु शब्दात्। उवर्णान्तानाम् (सू० ३०) इत्यनेन इकारे कृते। अनेन यु उपधाया इत्वम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.76

प्रथमा एकवचन को छोड़ कर उकारान्त शब्दों के उपधा के युकार का इत् होता है। **ज़िठ्य** 'बड़े' **ज़िठिस्** 'बड़े को' ज़्युठ् शब्द के रूप। 2.1.30 सूत्र से उवर्णान्त का इकार। प्रस्तुत सूत्र से उपधा के '**यु**' का 'इत्' होता है।

व्याख्या–

उपधा में यत्व के साथ उकार होने पर 'इत्' आदेश है। इसीलिए ज़्युठ् शब्द का बहुवचन रूप **ज़िठ्य** 'बड़े' और कर्मकारक एक वचन रूप **ज़िठिस** 'बड़े को' हो जाता है।

वाद टिप्पणी में वर्णित कुछ शब्दों की शुद्ध वर्तनी का उल्लेख है। वर्तमान भाषा व्यवहार में उक्त शब्दों का उच्चारण निम्नलिखित हैः–

मोहन्युव 'आदमी' **नेचुव** 'बेटा' **क्युत** 'के लिए' **ज़्युठ** 'बड़ा'।

॥ यूकारस्येसोरीत् ॥ ७७ ॥

उकारान्तानां लिङ्गानाम् इ स् इत्येतयोः परयोरुपधाया यूकारस्य ईकारो भवति ॥ च़ीनि। भित्तयः ॥ च़ीनिस्। भित्तिम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.1.77

उकारान्त शब्दों के साथ **इ स** संयुक्त होने पर उपधा के यूकार का

[७१।७९ ॥ महन्युवु। महनिवु ॥ न्यच्युवु। निचिवु ॥. क्युतु। कितु ॥ ज़्युठु। ज़िठु ॥ इत्यादयः शब्दा उभयरूपेणात्र लिखिता नापि प्रथमरूपेणैव महन्युवु इत्याद्याकारेण शुद्धोच्चारणाः संगताश्चावगन्तव्याः ॥]

ईकार होता है। **च़ीन्य** 'स्तम्भ, बहुवचन' **च़ीनिस्** 'स्तम्भ को'

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र 2.1.76 सूत्र का विस्तार है। उस में ह्रस्व 'उ' के इकार का और यहाँ दीर्घ 'ऊ' के ईकार का आदेश है। उदाहरण में दिए गए शब्द का एक वचन अविकारी रूप **च़्यून** 'स्तम्भ' है। इसी **ऊ** का ईकार निर्देश है। पूर्व सूत्रों की तरह यह सूत्र भी प्रथमा एक वचन के लिए नहीं है। पाद टिप्पणी में **न्यूल** 'नीला' शब्द के रूप प्रस्तुत किए गए हैं। और बताया गया है कि प्रत्यय लगने पर सर्वत्र ईकार का आदेश है। यथा – **नील्यन** 'नीलों को' **नील्यव सॉतिन** 'नीलों से' इत्यादि।

॥ शेषेष्वेकारः ॥ ७८ ॥

उकारान्तानां यूकारोपधायाः शेषप्रत्ययेषु एकारो भवति ॥ च़ेन्यन् । भित्तीः ॥ च़ेन्यौ सूतिन् । भित्तिभिः ॥ च़ेन्युक् । भित्तेः ॥ च़ेन्यन् प्यठ् । भित्तिषु ॥ साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.1.78**

उकारान्त शब्दों के उपधा का यूकार, शेष प्रत्यय लगने पर एकार हो जाता है। **च़ेन्यन** 'स्तम्भों को' **च़ेन्यव सुतिन्** 'स्तम्भों से' **च़ेन्युक** 'स्तम्भ का' **च़ेन्यन प्यठ** 'स्तम्भों पर'। सिद्धि पूर्ववत।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र 2.1.77 का विस्तार है। उक्त सूत्र में दिए गए प्रत्ययों के अतिरिक्त शेष प्रत्यय और उपसर्ग पर यूकार का एकार हो जाता है। मूल शब्द **च़्यून** 'स्तम्भ' व्याकरणिक व्युत्पत्तियों में **च़ेन्यन्, च़ेन्यव, च़ेन्युक** बन जाता है। 2.1.77 की पाद टिप्पणी में स्पष्ट किया गया है कि **न्यूल** 'नीला' शब्द पर प्रस्तुत सूत्र प्रभावी नहीं है। सभी प्रकार के प्रत्यय लगने पर उपधा का 'यूकार' ईकार ही रहता है, एकार नहीं बनता।

वर्तमान भाषा व्यवहार में **च़्यून** शब्द पर भी यह विकल्प लागू है। यथा – **च़ीन्यव सुत्य, च़ीन्युक, च़ीन्यन प्यठ।**

[७७ । न्यूल् शब्दस्य सर्वत्र ॥ सर्वेषु प्रत्ययेषु परेषूपधाया ईकारो विधेय इत्यर्थः । नील्यन् । नील्यौ सूतिन् । इत्यादि ॥]

॥ न गुरुत्वं ह्रस्वस्य संयोगे ॥ ७९ ॥

संयोगे परे पूर्ववर्णसंबन्धिनो ह्रस्वस्य गुरुत्वं नोच्चार्यते इति परिभाष्यते॥ महन्युड्ड । पुमान् ॥ अत्र हकारसंबन्धिनः अकारस्य न गुरुत्वम् । एवं सर्वत्र विज्ञेयम् ॥

अनुवाद– सूत्र 2.1.79

संयुक्त व्यंजन के पूर्व वर्ण का ह्रस्व स्वर दीर्घ रूप में उच्चरित नहीं होता। ऐसा नियम है। **मोहन्युव** 'आदमी' यहाँ हकार के अकार का दीर्घत्व नहीं होता। यह सर्वत्र मान्य है।

व्याख्या–

अष्टाध्यायी का सूत्र 'संयोगे गुरुरिति' (1.4.11)' यह निर्दिष्ट करता है, कि संयुक्त व्यंजन से पूर्व ह्रस्व का दीर्घीकरण हो जाता है। कश्मीरी पर यह नियम लागू नहीं होता। ईश्वर कौल ने प्रस्तुत सूत्र से इसी तथ्य का उल्लेख किया है। छन्द शास्त्र के नियम से 'प्र' 'ह' के पूर्व का ह्रस्व स्वर विकल्प से ही दीर्घ हो जाता है। कश्मीरी में संयुक्त व्यंजनों की व्यवस्था सीमित है। संयुक्ताक्षर में द्वितीय वर्ण के रूप में केवल **ग, ड, द, ज़, ब** और **र** संयुक्त हो सकते हैं। **र** को छोड़ कर शेष सभी वर्ण केवल नासिक्य व्यंजन के साथ संयुक्त हो सकते हैं। उदाहरण – **ह्यंग** 'सींग', **गंड** 'गाँठ', **तिहुंद** 'उन का' **पोंज़** 'लंगूर' **अम्ब** 'आम'। 'र' युक्त संयुक्त व्यंजनों के उदाहरण – **क्रुहुन** 'काला' **त्रकुर** 'कठोर' **प्रार** 'प्रतीक्षा कर' **ब्रोर** 'बिल्ला' **ग्रूस** 'किसान' **द्रोग** 'महँगा' **श्रोग** 'सस्ता'।

इति

शारदाक्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीरशब्दामृतम् में

लिंग प्रकरण का लिंगपाद। **प्रथम 2.1**

लिंगप्रकरण 2

सम्बुद्धि पाद 2

भाषा व्यवहार में सम्बोधनात्मक शब्दों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन शब्दों का प्रयोग समाज में व्यक्ति के स्थान और स्तर को परिभाषित करता है। वार्तालाप करते समय प्रयोग में आने वाले सम्बोधन के शब्द संवाद करने वाले सदस्यों के एक दूसरे के प्रति समाज सन्दर्भित आयाम की भी व्याख्या करते हैं।

ईश्वर कौल ने संबोधन प्रकरण को उचित महत्व प्रदान किया है। सम्बुद्धि पाद के अन्तर्गत कौल ने 31 सूत्र कहे हैं। इन में आदर सूचक, सामान्य, अनादर सूचक तथा अन्य सम्बोधन शब्दों की व्याख्या की गई है। भाषा विकास क्रम में इन सम्बोधनों में कुछ परिवर्तन भी हो गया है।

॥ आमन्त्रणे ॥१॥

इत उत्तरं ये प्रत्ययास्त आह्वाने विज्ञातव्याः ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.2.1**

इस के आगे सभी प्रत्यय आवाहन के जानने चाहिए।

व्याख्या—

आवहन रूपी सम्बोधन के शब्दों की व्याख्या करने से पूर्व ईश्वर कौल ने भूमिका के रूप में प्रस्तुत सूत्र कहा है।

॥ पुमादराह्वाने विशिष्टान्नाम्नो वा पूर्वं हे ॥२॥

पुंसा पुरुषस्यादरेण संबोधने कर्तव्ये जात्यादिना जुव् शब्दादिना विशिष्टान्नाम्नो वा शब्देन केवलान्नाम्नो वा पूर्वं हे शब्दः प्रयोज्यः ॥ हे नारान् जुव् ॥ हे गण कौल् ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.2.2**

पुरुष द्वारा पुरुष को सम्बोधित करने पर व्यक्ति नाम के बाद **जुव** शब्द प्रयुक्त होता है। विशेष नाम अथवा केवल नाम के पूर्व **हे** शब्द का प्रयोग

होता है। हे **नारान जुव**, हे **गणकौल**।

व्याख्या–

हे का प्रयोग आदर सूचक अवस्थाओं में किया जाता है। नाम ज्ञात न होने की अवस्था में भी हे का प्रयोग सम्भव है। **हे यपोंस्य बूज़िव** 'इधर सुनिए जी'। नाम के अन्त में **जुव** शब्द वर्तमान भाषा में मात्र वृद्धों के लिए सम्भव है। जाति नाम के बाद भी **जुव** का प्रयोग नहीं होता।

रॅहमान डार जुव संभव नही है। **रॅहमान जुव** कहना स्वीकार्य है।

॥ अन्ते सॉ प्रत्ययश्च ॥३॥

तस्मादेव हे-शब्दपूर्वाद्विशिष्टात्केवलान्नाम्नो वा आदरसंबोधनविषये सॉ प्रत्ययो भवति ॥ हे नारान् जुव् सॉ ॥ हे राम कौल् सॉ ॥ हे नारान् सॉ ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.2.3

इसी प्रकार विशिष्ट नाम अथवा केवल नाम के पूर्व हे शब्द के साथ आदर सम्बन्धी अभिप्राय हेतु विकल्प से प्रत्यय रूप में **सॉ** का प्रयोग होता है। **हे नारान जुव सॉ, हे राम कौल सॉ, हे नारान सॉ**

व्याख्या–

वर्तमान भाषा में जाति नाम अथवा केवल नाम के साथ प्रत्यय रूप में **सॉ** की सम्भावना नहीं है। स्वीकारने अथवा अस्वीकार करने की अभिव्यक्ति में **सॉ** का प्रयोग प्रत्यय रूप में सम्भव है। **अहन सॉ** 'हाँ जी' **न सॉ** 'नहीं जी'। आदेशात्मक क्रियाओं के अन्त में भी विनय अथवा आदर व्यक्त करने के लिए **सॉ** का प्रयोग सम्भव है। **करिव सॉ** 'कीजिए जी' **वनिव सॉ** 'कहिए जी'। बच्चों के लिए भी दुलार की स्थिति में **सॉ** इसी प्रकार प्रयुक्त होता है।

॥ हतसॉहे पूर्वं वा ॥४॥

तस्मादेव विशिष्टात्केवलाद्वा नाम्नः हतसॉहे शब्दः वा पूर्वं प्रयोज्यः। तकारः सर्वत्र विकल्पेन बोध्यः ॥ हतसॉहे नारान् जुव् ॥ हतसॉहे राम कौल् ॥ वा। हतसॉहे नारान् जुव् सॉ ॥ हतसॉहे राम कौल् सॉ ॥ विकल्पे तु ॥ हसॉहे नारान् जुव्। इत्यादि ॥ केवलान्नाम्नस्तु सॉ प्रत्ययो ऽवश्यं प्रयोज्यः ॥ हतसॉहे गण सॉ ॥ हतसॉहे गण इति न भवति ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.2.4

इसी प्रकार विशिष्ट नाम अथवा केवल नाम के पूर्व **हतसॉहे** प्रयुक्त होता है। तकार सर्वत्र विकल्प से समझना चाहिए। **हतसॉहे नारान जुव, हतसॉ**

हे राम कौल अथवा **हतसॉहे नारान जुवसॉ, हतसॉहे राम कौल सॉ** विकल्प से – **हसॉहे नारान जुव़** इत्यादि। **हतसॉहे गणसॉ, हतसॉ हे गण** सम्भव नहीं है।

व्याख्या–

हतसॉ हे का वर्तमान में प्रायः लोप हो गया है। कथन में अधिक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कभी कभी **हतसॉ** का प्रयोग किया जाता है। जैसे **हत सॉ म्यॉन्य कथ बूज़िव** 'जी! मेरी बात सुनिए'।

॥ वा प्रत्ययः पुरोहितसामान्यदासेषु ॥५॥

पुरोहितस्य श्राद्धादिकारयितुः सामान्यजनस्य दासस्य च संबोधने कर्तव्ये केवलान्नाम्नो वा प्रत्ययो भवति हे शब्दश्च पूर्वं प्रयोज्यः ॥ हे नारान् वा ॥ केवलान्नाम्नः किम् ॥ हे गण ब्रेद् वा। इति तु न भवति। ब्रेद् अत्र जातिर्विज्ञेया ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.2.5**

श्रद्धादि भाव व्यक्त करने के लिए पुरोहित, सामान्य जन एवं दास को सम्बोधन करने के लिए केवल नाम के साथ **बा** प्रत्यय और पूर्व में **हे** शब्द प्रयुक्त होता है। **हे नारान बा**। केवल नाम के साथ क्यों? **हे गण ब्रेठ बा** ऐसा नहीं होता। **ब्रेठ** यहाँ पर जाति नाम सूचक है।

व्याख्या–

बा का प्रयोग पुत्री अपने पिता के लिए भी करती थी। बड़ों को नाम से सम्बोधित करना आदर सूचक नहीं है इसलिए पुत्र अथवा पुत्री अपने माता, पिता अथवा अग्रजों का नाम नहीं लेते हैं। पुत्रियाँ पिता के लिए नाम लिए बिना निपात के साथ **बा** का प्रयोग करती थीं।

अहन बा 'हां, (आदर सूचक अभिव्यक्ति)', **न बा** 'नहीं, (आदर सूचक अभिव्यक्ति)'। पंडित वर्ग में **बा** का प्रयोग अधिक प्रचलित रहा है।

॥ हतसांहे पूर्वं वा वृद्धेषु ॥६॥

तेषु पुरोहितादिषु वृद्धेषु सत्सु हतसांहे पूर्वं प्रयोज्यः। वा शब्दात् हतबाहे च ॥ हतसांहे सहज् बा ॥ हतबाहे ज़न बा ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.2.6**

वृद्ध पुरोहितों आदि के लिए **हतसॉहे** पूर्व में प्रयुक्त होता है। विकल्प से **हतबा** भी सम्भव है। **हतसॉ हे सहज़ बा, हतबा हे ज़न बा**।

व्याख्या–

2.2.4 सूत्र में बताया गया है कि **हतसॉ हे** का प्रायः लोप हो गया है। **बा** प्रत्यय पूर्णतया लुप्त है। वर्तमान में वृद्धों के लिए भी इन अभिव्यक्तियों का प्रयोग नहीं किया जाता।

॥ आ प्रत्ययः कनिष्ठनीचयोः ॥७॥

कनिष्ठस्य नीचस्य च संबोधने कर्तव्ये विशिष्टात्केवलान्नाम्नो वा आ प्रत्ययः स्यात् ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.2.7**

कनिष्ठ अथवा नीच को सम्बोधन करने पर विशिष्ट नाम अथवा केवल नाम के साथ **आ** प्रत्यय संयुक्त होता है।

व्याख्या–

कथन स्पष्ट होने के कारण ग्रन्थकार ने इस सूत्र के स्पष्टीकरण में कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया है। **आ** प्रत्यय जाति अथवा नाम के साथ संयुक्त हो जाता है। **सॉ** और **बा** की तरह पृथक शब्द के रूप में नहीं लगता। **कृष्ण, राम** अथवा **नाथ** के साथ **आ** संयुक्त होने पर सम्बोधन का शब्द, **कृष्णा, रामा** अथवा **नाथा** हो जाता है। स्त्री वाचक नामों के साथ **आ** प्रत्यय की सम्भावना नहीं है। वहाँ **ई** अथवा **य** प्रत्यय संयुक्त होता है। **ज़ून, सन्तोष** आदि नामों का सम्बोधन रूप **ज़ूनी/ज़ूनय सन्तोषी/सन्तोषय**।

॥ हताशब्दः पूर्वे च ॥८॥

स्पष्टम् ॥ हता माना ॥ हता मान कौला ॥ हता गुल्या ॥ तृतीयस्यात्र गुलु शब्दस्योकारान्तत्वादुवर्णान्तानामिकार (सू० २।१।३०) इत्यनेन सूत्रेण इकारः। यत्वम् ॥ व्यञ्जनं परेण संधेयम् (सू० १।३)। इत्थं पुंलिङ्गानां स्त्रीलिङ्गानां च यत्किंचिद्द्वितीयादिष्वागमादिकमभिहितं तत्सर्वं संबोधने चावधार्यम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.2.8**

यह स्पष्ट है। **हता माना, हता मान कौला, हता गुल्या**। तृतीय शब्द **गुलु** उकारान्त होने के कारण 2.1.30 सूत्र से इकार हो जाता है, और फिर यत्व 1.1.3 सूत्र से। पुंलिंग और स्त्रीलिंग की द्वितीयादि विभक्तियों के सभी आगम सम्बोधन में भी सम्भव है।

व्याख्या–

हता शब्द नाम से पहले आने पर निरादर सूचक माना जाता है।

नाम के बिना भी डाँट-डपट के रूप में वाक्य से पहले **हता** का प्रयोग सम्भव है। **हता क्याह छुख करान?** '(हताशा की अभिव्यक्ति) क्या कर रहे हो?'

॥ हा दूरविषादयोराप्रत्ययस्य चोकारः ॥९॥

स्पष्टम् ॥ हा नारानो ॥ हा काको ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.2.9**

यह स्पष्ट है। **हा नारानो, हा काको।**

व्याख्या—

सूत्र स्पष्ट करता है, कि आहूत व्यक्ति यदि बहुत दूर है, अथवा विषाद में पुकारा जाना है तो **आ** प्रत्यय का ओकार आदेश है। यह स्थिति भी पुंलिंग नामों के लिए निर्दिष्ट है, जैसा कि 2.2.7 सूत्र में स्पष्ट किया गया है। नाम के अन्त में **जुव** जुड़ने पर उक्त प्रत्यय **जुव** के बाद संयुक्त होता है। रिश्ते नातों के शब्दों के बाद भी उक्त प्रत्यय की सम्भावना है। **हा अमीनो, हा लस जुवो, हा मामो,।**

विकल्प से **हा** के बदले **हतो** शब्द का प्रयोग भी सम्भव है। यह बात अगले सूत्र में स्पष्ट की गई है।

॥ हतो वा ॥१०॥

नाम्नः पूर्वं दूरतो विपादतो वा संबोधने विधेये सति हतो शब्दः पूर्वं वा प्रयोज्यः ॥ हतो पर्यो ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.2.10**

आहूत दूर होने पर अथवा उस को विषाद की स्थिति में सम्बोधित करने पर पूर्व में **हतो** शब्द विकल्प से प्रयुक्त होता है। **हतो पस्चो।**

व्याख्या—

यह सूत्र 2.2.9 का विस्तार है। वहाँ स्पष्ट किया गया है कि, **हा** के स्थान पर **हतो** का प्रयोग भी सम्भव है। **हतो अमीनो, हतो लस जुवो, हतो मामो।**

2.2.9 में निर्देश है, कि संयुक्त होने वाला **आ** प्रत्यय **ओ** बनता है। यह रूपांतरण यहाँ पुनर्पुष्ट हो जाता है। **हतो हता** का ही रूपान्तरण है। पूर्व सूत्र के सभी उदाहरणों में **हतो** के स्थान पर **हता** का प्रयोग सम्भव है।

॥ मांज् प्रत्ययो वृद्धास्त्रियो नाम्नः ॥११॥

पुरुषेण वृद्धाया ज्येष्ठायाः स्त्रियाः संबोधने कर्तव्ये केवलान्नाम्नो मांज् प्रत्ययो भवति ॥

अनुवाद— सूत्र 2.2.11

पुरुष के द्वारा वृद्धा अथवा ज्येष्ठ महिला को सम्बोधन करने पर केवल नाम के साथ **मॉज** प्रत्यय का प्रयोग होता है।

व्याख्या—

मॉज 'माता' रिश्ते नाते का शब्द है। सम्बोधन विनयपूर्ण बनाने के लिए व्यक्ति नाम के बाद **मॉज** शब्द का प्रयोग सम्भव है। **यँबुर ज़ल मॉज, ज़ून द्यद मॉज।**

॥ विञ् सामान्यायाः ॥१२॥

सामान्यायास्तुल्यायाश्च स्त्रिया आह्वाने विञ् प्रत्ययः अग्रे प्रयोज्यः ॥

अनुवाद— सूत्र 2.2.12

सम वयस्क स्त्रियों के आवाहन में, सामान्यतया, नाम के आगे **बेन्य** प्रत्यय प्रयुक्त होता है।

व्याख्या—

पुरुषों द्वारा सम्बोधन किए जाने पर, आयु में लगभग समान होने की स्थिति में नाम के आगे **बेन्य** का प्रयोग सम्भव है। **बेन्य बेनि** 'बहन' का व्युत्पन्न रूप है। **धनवती बेन्य, हाजि बेन्य, जान बेन्य** आधुनिक भाषा व्यवहार में यह प्रयोग प्रचलित नहीं है,

॥ हतपूर्वौ पूर्वे च ॥१३॥

तौ मांज् विञ् प्रत्ययौ हतशब्दः पूर्वो ययोस्तथाविधौ पूर्वे च प्रयोज्यौ ॥ हतमांज् पार्वत् मांज् ॥ हतविञ् सरस्वत् विञ् ॥ वा। हतविञ् पार्वत् मांज् ॥

अनुवाद— सूत्र 2.2.13

हत शब्द के साथ **मॉज** अथवा **बेन्य** प्रत्यय जुड़ने की अवस्था में, ये नाम के पूर्व भी प्रयुक्त होते हैं। **हत मॉज पार्वत मॉज, हत बेन्य सरस्वत बेन्य।** विकल्प से – **हत बेन्य पार्वत मॉज।**

व्याख्या–

सम्बोधन में रिश्ते नाते के शब्दों के साथ उपसर्ग के रूप में **हत** का प्रयोग सम्भव है। यह समस्त पद नाम के पहले प्रयुक्त होता है। नाम के बाद विकल्प से **बेन्य** या **मॉज** का प्रयोग किया जा सकता है। इस तरह के सम्बोधन भी कालातीत हैं। वर्तमान में इन की सम्भावना नहीं के बराबर है।

॥ य् प्रत्ययः कनिष्ठनीचयोः ॥१४॥

पुरुषेण कनिष्ठाया नीचाया वा संबोधने कर्तव्ये नाम्नः य् प्रत्ययो भवति। तत्र नीचायां वृद्धायां सत्यां पूर्वप्रयुक्तप्रत्ययादग्रे वा प्रयोज्यः ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.2.14**

पुरुष के द्वारा कनिष्ठ अथवा नीच को सम्बोधन करने पर नाम के साथ **य** प्रत्यय संयुक्त होता है। नीच वृद्धा की स्थिति में यह प्रत्यय पूर्व अथवा पश्च में प्रयुक्त होता है।

व्याख्या–

सूत्र में कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं हैं, इसलिए यह स्पष्ट नहीं है, कि **य** प्रत्यय का प्रयोग तात्कालीन स्थिति में निरादर सूचक था अथवा नहीं। वर्तमान में नाम के साथ **य** प्रत्यय नीचता बोधक नहीं है। यह सामान्य सम्बोधन है। 2.2.7 में सूत्र की व्याख्या के अन्तर्गत स्पष्ट हैं, कि **य** प्रत्यय स्त्रीलिंग नामों के साथ संयुक्त होता है। **य** के विकल्प में **ई** की भी सम्भावना होती है। **ई** की अपेक्षा **य** प्रत्यय स्नेहवर्द्धक है। यथा – **ज़ूनी / ज़ूनय** (स्नेहवर्द्धक)।

॥ हा हत हतां पूर्वः पूर्वे च ॥१५॥

स एव य् प्रत्ययः हापूर्वो हतपूर्वो हतांपूर्वो वा नाम्नः पूर्वं प्रयोज्यः ॥ हाय् वछ़रिय् ॥ हतय् वछ़रिय् ॥ हतांय् वछ़रिय् ॥

हा, हत अथवा **हतॊ** नाम के पूर्व प्रयुक्त होने पर इन के साथ **य** प्रत्यय जुड़ता है। **हाय वछ़री, हतय वछ़री, हतॊय वछ़री।**

व्याख्या–

यह पूर्व सूत्र का विस्तार है। **य** प्रत्यय की संयुक्ति **हा हत** और **हतॊ** के साथ भी सम्भव है। ऐसी स्थिति में यह समस्त पद नाम से पहले प्रयुक्त होता

है। वर्तमान में इस तरह का सम्बोधन महिलाओं के लिए सामान्य माना जा सकता है। इसमें सम्बोधन कर्ता की निराशा अभिव्यक्त होती है। यथा– **हतय राजय**

॥ स्त्रियादराहूते पुंनाम्नो वा प्रत्ययः ॥१६॥

स्त्रिया पुरुषस्यादरेणाह्वाने कर्तव्ये पुंनाम्नो वा प्रत्ययो भवति॥ तत्र प्रायः पुरोहितादिष्वेवात्र प्रयुज्यते ॥

अनुवाद– सूत्र 2.2.16

स्त्री द्वारा पुरुष को आवाहन करने पर पुरुष नाम के साथ **बा** प्रत्यय लगता है। यह प्रायः पुरोहितों आदि के साथ प्रयुक्त होता है।

व्याख्या–

2.2.5 सूत्र में **बा** प्रत्यय की व्याख्या अंकित है। यह आदर सूचक अभिव्यक्ति है। इस की सार्थकता अपनी आयु से बड़े व्यक्तियों के लिए ही है। 2.2.18 में इस की विशद व्याख्या है। वर्तमान में **बा** का प्रयोग व्यापक नहीं है।

॥ औ प्रत्ययः प्रियकनिष्ठयोः ॥१७॥

स्पष्टम् ॥

अनुवाद– सूत्र 2.2.17

सूत्र स्पष्ट है।

व्याख्या–

प्रिय कनिष्ठों के नाम के साथ **अव** प्रत्यय सम्भव है। इस के उदाहरण 2.2.18 अर्थात अगले सूत्र में उपलब्ध है।

॥ हतपूर्वौ पूर्वे च ॥१८॥

तौ वा औ प्रत्ययौ हतपूर्वौ हत शब्दः पूर्वं ययोस्तथाविधौ पूर्वे च प्रयोज्यौ॥ हतवा हिमत् वा ॥ हतौ हिमत् कोलौ ॥ हतवा काकौ ॥ हतौ काकौ ॥

अनुवाद– सूत्र 2.2.18

पूर्व में **हतु** शब्द के साथ **बा** अथवा **अव** प्रत्यय प्रयुक्त होता हैं। साथ ही साथ पश्च में भी **बा** अथवा **अव** का प्रयोग सम्भव है। **हतुबा हिमत बा, हतव हिमत कोलव, हतबा काकव, हतव काकव।**

व्याख्या–

2.2.16 और 2.2.17 सूत्रों को 2.2.18 और 2.2.19 सूत्रों के साथ संयुक्त रूप में समझ सकते हैं। **बा** और **अव** प्रत्यय **हत** शब्द के साथ संपृक्त होते है। अतः ग्रन्थकार ने 2.2.16 और 2.2.17 में कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं किए। वर्तमान में इन प्रत्ययों की सत्ता कुछ ग्रामीण अंचलों में संभव है, परन्तु नागरीय जीवन में इन का प्रयोग नहीं है।

॥ अ वा ॥१९॥

नाम्नः अग्रे अप्रत्ययो वा प्रयोज्यः ॥ हतवा काक ॥ हतौ गण ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.2.19**

विकल्प से नाम के आगे **अ** प्रत्यय प्रयुक्त होता है। **हतबा काक, हतबा गण।**

व्याख्या–

पूर्व सूत्र में स्पष्ट है कि प्रस्तुत सूत्र को भी उसी के सन्दर्भ में समझ सकते हैं। **बा** का प्रयोग सम वयस्क अथवा अपने से वरिष्ठ व्यक्तियों के लिए सम्भव है। **अव** प्रत्यय कनिष्ठों के प्रति स्नेह प्रदर्शित करता है।

॥ बाय बायौ सामान्यसंज्ञायाश्च ॥२०॥

सामान्यसंज्ञाया लोकेषु ख्यातायाः परौ बाय बायौ वा प्रयोज्यौ ॥ हत बा महादेव बाय ॥ हतौ महादेव बायौ ॥ सामान्य संज्ञायाः किम् । हत बा काक बाय । इति न भवति ॥ काक् शब्दस्य पित्रादिष्वेव विशिष्टत्वात् ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.2.20**

लोक व्यवहार में ख्याति प्राप्त सामान्य जनों के नाम के बाद **बाय** अथवा **बायव** प्रयुक्त होता है। **हतबा मादेव बाय, हतबा महादेव बायव।** सामान्य जन नाम के साथ ही क्यों?

हतबा काक बाय, यह सम्भव नहीं है। क्योंकि **काक** शब्द पिता आदि विशेष रिश्तों का द्योतक है।

व्याख्या–

यह स्पष्ट किया गया है, कि सम्बोधन का शब्द पिता अथवा पिता तुल्य व्यक्तियों और सामान्य प्रख्यात व्यक्तियों के बीच अन्तर स्पष्ट करने की क्षमता रखता है। **बाय** अथवा **बायव** का प्रयोग समाज के अन्य आदरणीय व्यक्तियों के लिए सम्भव है, पिता या पिता तुल्य व्यक्तियों के लिए नहीं। नागरीय जीवन में यह प्रत्यय पंडितों द्वारा पुरोहितों के लिए सीमित हो गया है।

॥ दूरे पूर्वं हतोव् च ॥२१॥

स्त्रिया पुरुषस्याह्वाने दूरतः कर्तव्ये हतोव् शब्दः पूर्वं प्रयोज्यः ॥ हतोव मनसा रामौ ॥

अनुवाद– सूत्र 2.2.21

पुरुष दूर होने की स्थिति में, स्त्री आवाहन के लिए नाम से पूर्व **हतोव** शब्द का प्रयोग करती है। **हतोव मनसा रामव।**

व्याख्या–

वर्तमान में **हतो** शब्द अभद्र माना जाता है। तू तू मैं मैं की स्थिति में इस शब्द का प्रयोग सम्भव है, लेकिन सामान्य स्थिति में बिल्कुल नहीं।

॥ पत्याह्वाने म्लेच्छयापि ॥२२॥

म्लेच्छस्त्रिया भर्तुराह्वाने कर्तव्ये नाम्नो हतोव् शब्दः प्रयुज्यते ॥

अनुवाद– सूत्र 2.2.22

दलित स्त्रियाँ पति को बुलाने के लिए नाम से पूर्व **हतोव** शब्द का प्रयोग करती हैं।

व्याख्या–

दलित समाज में **हतो** शब्द की सम्भावना थी। वर्तमान में यह भेदभाव लगभग समाप्त हो गया है।

॥ ब्राह्मण्यां पतिसंबोधनाभावः ॥२३॥
॥ केवलो हतशब्दः क्वचिन्नैकट्ये ॥२४॥

क्वचिद्विविक्ते निकटस्थस्य भर्तुराह्वाने कर्तव्ये नामजात्यादिरहितः केवलो हतशब्दः प्रयुज्यते ॥

अनुवाद– सूत्र 2.2.23-24

निकट होने की अवस्था में पति को सम्बोधित करने के लिए नाम जाति के बिना केवल **हत्** शब्द का प्रयोग होता है।

व्याख्या–

सूत्र द्वारा स्पष्ट किया गया है कि, पंडित समाज में पति को नाम से सम्बोधित करना सम्भव नहीं है। यह भारतीय संस्कृति का एक परम्परागत

तथ्य है। यहाँ पर उस साधन की व्याख्या है, जिस के माध्यम से पति का ध्यान आकृष्ट करने के लिए, व्यक्ति नाम अथवा जाति नाम लिए बिना ही, केवल **हत्** शब्द का प्रयोग संभव है। वर्तमान भाषा इस बन्धन का पालन नहीं करती। कुछ अधुनातन स्थितियों में व्यक्ति नाम से पुकारने की सम्भावना है। सामान्यतया पति का ध्यान आकृष्ट करने के लिए, **यपॉस्य बूज़िव/वुछिव** 'इधर सुनिए/देखिए' वाक्यांश का प्रयोग किया जाता है।

॥ स्त्रीसंबोधने पुंवत् ॥२५॥

स्त्रिया स्त्रियः संबोधने कर्तव्ये पुंवत् प्रत्यया भवन्ति ॥ यथा पुरुषेण स्त्री-संबोधनं क्रियते तथैव स्त्रियापीत्यर्थः ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.2.25**

स्त्री द्वारा स्त्री को सम्बोधित करने की स्थिति में पुरुषवत् प्रत्यय ही प्रयुक्त होते हैं। जिस प्रकार पुरुष द्वारा स्त्री को सम्बोधित किया जाता है, उसी प्रकार स्त्रियों में भी सम्भव है।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र में स्त्रियों को सम्बोधित करने की अवस्था में किसी पृथक शब्द अथवा प्रत्यय की व्यवस्था न होने की बात कही गई है। 2.2.7 सूत्र में स्पष्ट किया गया है, कि **आ** प्रत्यय के स्थान पर स्त्री नामों के साथ **ई** अथवा **य** प्रत्यय संयुक्त होता है। प्रस्तुत सूत्र यह स्पष्ट करता है, कि इन प्रत्ययों का प्रयोग स्त्रियाँ भी कर सकती हैं।

॥ अङ्गीकारे संबोधनमुख्यप्रत्यया आहन्शब्दात्परा उक्त्युपक्रमे ॥२६॥

अङ्गीकारे कर्तव्ये प्रोक्ताः संबोधनस्य मुख्याः प्रत्यया उक्तेरारम्भे आहन् शब्दात्परे प्रयोज्याः ॥ आहन्सॉ ॥ आहन्बा ॥ आहनो ॥ आहन् मॉजू ॥ आहन् बिन्य् ॥ आहनिय् ॥ आहनू ॥ आहनुव् ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.2.26**

स्वीकारोक्ति की स्थिति में सम्बोधन के मुख्य प्रत्ययों के पहले **आहन** शब्द का प्रयोग होता है। **आहन सॉ, आहन बा, आहनो, आहन मॉज, आहन बेन्य, आहनी, आहनू।**

व्याख्या–

आहन का वर्तमान प्रयोग **अहन** है, जिस का हिन्दी पर्याय 'हाँ' है। स्पष्टीकरण में दिए गए प्रत्ययों के अतिरिक्त **महरा** और **हज़** शब्दों के पूर्व भी **अहन** प्रयुक्त हो सकता है। **अहन महरा** 'हाँ, आदर की अभिव्यक्ति' **अहन् हज़** 'हाँ, आदर की अभिव्यक्ति'। पंडितों के लिए **माहरा** तथा मुसलमानों के लिए **हज़** उपयुक्त माना जाता है। **माहरा** 'महाराज' तथा **हज़** 'हज़रत' का संक्षिप्तीकरण है।

॥ हपूर्वाश्च केवलक्रियाया अन्ते ॥२७॥

केवलक्रियाया अङ्गीकारे कर्तव्ये ते सां आदिप्रत्यया हपूर्वाः केवलक्रियायाश्चान्ते प्रयोज्याः ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.2.27**

कार्य स्वीकार करने की स्थिति में केवल क्रिया के अन्त में **सॉ** आदि प्रत्ययों के पूर्व ह का प्रयोग होता है।

व्याख्या–

क्रिया में निहित कार्य को स्वीकार करने पर क्रिया के अन्त में **सॉ, बा, य** आदि प्रत्ययों के पूर्व ह का प्रयोग होता है। **अहन सॉ गछ़व हसॉ** 'हाँ जी! जाएँगे', **अहन बॉ गछ़व हबा** 'हाँ जी! जाएँगे', **अहनी गछ़व हय** 'हाँ! जाएँगे' (स्त्रीलिंग)

उदाहरणों से स्पष्ट है, कि सम्बोधन के शब्द **सॉ** आदि क्रिया के पूर्व और पश्च दोनों स्थानों पर प्रयुक्त होते हैं, परन्तु ह का प्रयोग केवल क्रिया के अन्त में सम्बोधन के शब्द के साथ उपसर्ग के रूप में संयुक्त होता है। यथा– **करव हसाँ** 'हाँ जी करेंगे।'

॥ वर्तमानायां प्रत्ययादावेव ॥२८॥

वर्तमानायां विभक्तौ ते हपूर्वाः सां आदि प्रत्ययाः प्रत्ययात्पूर्वं प्रयोज्याः ॥ आहन्सां करान् हसां छुह् ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.2.28**

वर्तमान काल की विभक्तियों में **सॉ** आदि प्रत्यय प्रयुक्त होने पर प्रत्यय के पूर्व **ह** लगता है। **अहनसॉ करान हसॉ छुह्** 'हाँ जी कर रहा है'

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र 2.2.27 का विस्तार है। वर्तमान काल अभिव्यक्त करने

में सहायक क्रिया की भी आवश्यकता होती है। शब्दक्रम की दृष्टि से ह युक्त संबोधन का शब्द सहायक क्रिया छु 'है' के पूर्व आता है, अन्त में नहीं।

॥ तद्भावे नपूर्वाः ॥२९॥

तस्याङ्गीकारस्याभावे सति नपूर्वा वाक्यारम्भे क्रियान्ते च प्रयोज्याः ॥ नबा करान् नबा छुह् ॥ एवमन्यत् ॥

अनुवाद– सूत्र 2.2.29

स्वीकारोक्ति का अभाव होने पर वाक्य के पूर्व में तथा क्रिया के अन्त में **न** का प्रयोग होता है।

नबा करान् न बा छु 'नहीं, कर नही रहा है' अन्य उदाहरण भी ऐसे ही हैं।

व्याख्या–

नकारात्मक उक्ति की स्थिति में **सॉ** आदि सम्बोधन के शब्दों के साथ **ह** की सम्भावना नहीं होती। ऐसी स्थिति में केवल **न** का प्रयोग होता है, हिन्दी के वाक्य की तरह ही, नहीं बोधक **न** दो बार आ सकता है। **न सॉ वुछुम न सॉ** 'नहीं जी, देखा नहीं (जी)।'

॥ कर्मयुक्तायाः कर्मान्ते ॥३०॥

कर्मयुक्तायाः क्रियाया अङ्गीकारे अभिधेये सति वाक्यारम्भे आहन्सा आदयो भवन्ति कर्मान्ते तु हसा आदयो भवन्ति ॥ आहन्सा बत हसा छुह् रनान् ॥

अनुवाद– सूत्र 2.2.30

कर्म युक्त क्रिया की स्वीकारोक्ति में वाक्य के आरम्भ में **अहनसॉ** आदि और कर्म के अन्त में **हसॉ** आदि होता है।

अहन सॉ बतु हसॉ छु रनान् 'हाँ जी, भात पका रहा है'

व्याख्या–

सकर्मक क्रिया की स्थिति में क्रिया में निहित कार्य का अंगीकार करने पर **ह** युक्त सम्बोधन का शब्द कर्म के बाद आता है। वाक्य के आरम्भ में यथापूर्व **अहनसॉ** का प्रयोग किया जाता है।

अहनसॉ, पॉथुर हसॉ वुछुम 'हाँ जी, नाटक (आदर की अभिव्यक्ति) देखा, मैंने'

॥ कर्तृयुक्तायाः कर्तुरन्ते च ॥३१॥

कर्तृकर्मयुक्तायाः क्रियायाः अङ्गीकारे गम्यमाने वाक्यारम्भे आहन्सां आदयः प्रयोज्याः कर्तुरन्ते हसां आदयो भवन्ति ॥ आहन्सां नारान् हसां छुह् पूथि परान् ॥ आहन्वा राम हवा छुस् न्यन्दूर् करान् ॥ इत्यादयो बुद्धिमता स्वयमूह्याः ॥

अनुवाद– सूत्र **2.2.31**

कर्त्ता और कर्म दोनों विद्यमान होने पर क्रिया की स्वीकारोक्ति में, वाक्य के आरम्भ में **अहनसॉं** आदि और कर्ता के अन्त में **ह सॉं** आदि प्रयुक्त होते हैं। **अहनसॉं, नारान हसॉं छु पूथ्य परान।** 'हाँ जी, नारान पोथी पढ़ रहा है' **अहनबा राम हबा छु न्यनदुर करान।** 'हाँ जी, राम नींद कर रहा है'

व्याख्या–

ह युक्त सम्बोध शब्दों के संदर्भ में ग्रन्थकार ने पाँच सूत्र कहे हैं। ये सूत्र वाक्य में उक्त शब्द के स्थान को भी परिभाषित करते हैं। कर्ता अथवा कर्म उपस्थित न होने की स्थिति में ह युक्त सम्बोधन का शब्द क्रिया के अन्त में प्रयुक्त होता है। केवल कर्म उपस्थित होने पर कर्म के अन्त में, तथा कर्ता और कर्म दोनों उपस्थित होने पर ह युक्त सम्बोधन का शब्द कर्ता के अन्त में प्रयुक्त होता है।

इति

शारदा क्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीर शब्दामृतम् के
लिंग प्रकरण का सम्बुद्धिपाद। द्वितीय 2.2

लिंगप्रकरण 2
सर्वनाम पाद 3

भाषाओं में सर्वनामों की रूप प्रक्रिया संज्ञावत् होना आवश्यक नहीं है। व्यतिरेक की दृष्टि से कश्मीरी सर्वनामों की संरचना हिन्दी से जटिल है। अन्य पुरुष में प्रत्यक्ष और परोक्ष दो पृथक् सर्वनाम हैं। लिंग पुरुष और वचन के अतिरिक्त कारक भी सर्वनामों को प्रभावित करते हैं।

सर्वनाम पाद के अन्तर्गत कौल ने 46 सूत्र कहे हैं, जिनमें सर्वनामों की विशद व्याख्या की गई है। ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वनामों की प्रस्तुत व्याख्या महत्वपूर्ण है। तत्कालीन भाषा में **यिम्** और **इम्** दो भिन्न भिन्न सर्वनाम थे। हिन्दी में 'जो' सम्बन्धवाची सर्वनाम है। इस के संलग्न उपवाक्य में 'वह' का प्रयोग आवश्यक है। इसी प्रकार कश्मीरी में भी **यिम** मात्र सम्बन्धवाची सर्वनाम था जिस के संलग्न उपवाक्य में **तिम** का प्रयोग आवश्यक है। प्रत्यक्ष के लिए **इम** सर्वनाम का प्रयोग होता था जिस का अर्थ 'यह' है। यह सम्बन्धवाची नही है। वर्तमान में **यिम** और **इम** का भेद विद्यमान नही है। सम्बन्धवाची और प्रत्यक्ष दोनों स्थितियों में **यिम** का ही प्रयोग होता है। **इम** नगरीय भाषा में लुप्त है।

सर्वनाम पाद में 27 सूत्र सर्वनामों की व्याख्या करते हैं 16 सूत्र संख्यावाची शब्दों को स्पष्ट करते हैं। शेष तीन सूत्रों में 2.3.22 और 23 निश्चयता बोधक हैं, और 2.3.28 **मूष** शब्द के लिए है।

॥ तिह् यिह् क्याह् इह् हुह् शब्दाः पुंस्यप्राणिनि ॥१॥

प्राणिव्यतिरिक्तानां तदादीनां पुंसि तिह् आदयः शब्दा भवन्ति ॥ तद् शब्दस्य तिह्। यद् शब्दस्य यिह्। किम् शब्दस्य क्याह्। इदम् शब्दस्य इह्। अदस् शब्दस्य हुह् शब्दो बोध्यः ॥ प्रथमैकवचनं सर्वत्र लिङ्गवदेव ज्ञेयम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 2.3.1**

प्राणियों के अतिरिक्त अप्राणियों में पुंलिंग के लिए **तिह** आदि शब्द होते हैं। 'वह' शब्द के लिए **ति** 'यह' शब्द के लिए **यि** 'क्या' शब्द के लिए **क्याह,**

'यह' शब्द के लिए **इह** और 'वह' शब्द के लिए **हु** समझना चाहिए। प्रथमा एकवचन सर्वत्र लिंगवत होता है।

व्याख्या–

तिं, **यि, क्याह, हु** इन चार सर्वनामों का प्रयोग अप्राणियों के लिए भी सम्भव है। वर्तमान भाषा में **इह** का रूप भी **यि** हो गया है। ये सभी रूप पुंलिंग एकवचन कर्ता कारक (प्रथमा) के हैं।

उदाहरण– **ति ओस पोज़** 'वह सत्य था', **यि छु पोज़** 'यह सत्य है', **क्याह छु पोज़** 'क्या सत्य है', **हु छु पोज़** 'वह सत्य है'

॥ सुह् युस् कुस् इह् हुह् शब्दाश्च प्राणिनि॥२॥

प्राणिनां मनुष्यादीनां तदादिशब्देषु सुह् आदिशब्दा अवधार्याः ॥ सुह्। सः ॥ युस् यः ॥ कुस् । कः ॥ इह् । अयम् ॥ हुह् । असौ ॥ अत्राप्येकवचनं लिङ्गवत् ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.2

मनुष्य आदि प्राणियों के लिए **सु** आदि शब्द अवधारित हैं। **सु** 'वह' **युस** 'जो' **कुस** 'कौन' **यि** 'यह' **हु** 'वह' इन का पुंलिंग एकवचन भी लिंगवत ही होता है।

व्याख्या–

प्राणियों के लिए **सु, युस, कुस, यि, हु** सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है। ये पुंलिंग एकवचन कर्ता कारक के रूप हैं। अन्य कारकों में रूप बदल सकता है।

उदाहरण– **सु आव** 'वह आया', **युस राथ आव** 'जो कल आया', **कुस आव** 'कौन आया', **यि आव** 'यह आया', **हु आव** 'वह आया'

॥ उकारोपधायाः स्त्रियां वत्वमप्राणिनि च ॥३॥

प्राणिनां स्त्रीलिङ्गानां तदादिशब्देष्वभिधेयेषु सुह् आदिशब्दानामुपधाभूतो य उकारस्तस्य वत्वं भवति अप्राणिनि स्त्रीलिङ्गे च ॥ स्वह् । सा । या स । सा ॥ ह्वह् । असौ ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.3

स्त्रीलिंग प्राणियों में **सु** आदि शब्द की उपधा के उकार का वत्व होता है। अप्राणि स्त्रीलिंगों में भी ऐसा ही है। **स्व** 'वह, स्त्रीलिंग, परोक्ष'। **ह्व** 'वह, स्त्रीलिंग, प्रत्यक्ष'।

व्याख्या–

यहाँ यह स्पष्ट किया गया है, कि पुंलिंग एक वचन के उकार का स्त्रीलिंग में वत्व हो जाता है। **सु** का स्त्रीलिंग रूप **स्व** तथा **हु** का **ह्व** है। यह भी स्पष्ट किया गया है, कि अन्य पुरुष के लिए, प्रत्यक्ष और परोक्ष हेतु दो भिन्न सर्वनाम हैं। प्रत्यक्ष के लिए **हु** और **ह्व** तथा परोक्ष के लिए **सु** और **स्व**।

॥ युस्कुसोरन्त्यस्य द्वित्वमकारागमश्च ॥४॥

युस् कुस् इत्येतयोः शब्दयोः स्त्रियामन्त्यस्य द्वित्वं भवति अकारागमश्च ॥ य्वस्स । या ॥ क्वस्स । का ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.3.4**

स्त्रीलिंग में **युस** और **कुस्** शब्दों का अन्तिम वर्ण द्वित्व होने के साथ ही अकारागम भी होता है। **य्वस्स** 'जो, स्त्रीलिंग' **क्वस्स** 'कौन, स्त्रीलिंग'।

व्याख्या–

यह सूत्र 2.3.3 का विस्तार है। **युस** और **कुस** में उकार का वत्व तो होता ही है, साथ में ग्रन्थकार के अनुसार अन्तिम व्यंजन का द्वित्व होता है और अकारागम भी। वर्तमान भाषा में द्वित्व का उच्चारण नहीं है, और अकारागम के स्थान पर ॖअकारागम का उच्चारण है। यथा – **य्वस्‌ॖ** 'जो, स्त्रीलिंग', **क्वस्‌ॖ** 'कौन, स्त्रीलिंग'।

॥ उभयेषां तम् यम् कम् इम् हुमो द्वितीयाद्येकवचनेषु ॥५॥

उभयेषां प्राणिवाचिनामप्राणिवाचिनां च तिहादिशब्दानां द्वितीयादीनामेकवचनेषु क्रमेण तम् आदय आदेशाः स्युः ॥ तमिस् । तम् ॥ यमिस् । यम् ॥ कमिस् । कम् ॥ इमिस् । इमम् ॥ हुमिस् । अमुम् ॥ सुह् शब्दादिभ्यो द्वितीयायां स्लाव् (सू० २।१।३८) इत्यादिना स्मत्ययः । स्मत्यय इकारागमं (सू० १७) इति इकारागमः । अनेन तम् आदय आदेशाः ॥ केषांचिन्मते इह् शब्दस्य न्यम् आदेशो भवति । तन्मते । न्यमिस् । एनम् । इति स्वरूपं भवति ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.3.5**

प्राणि और अप्राणि दोनों के द्वितीया आदि कारक रूपों के एकवचन में **तिह्** आदि शब्दों के साथ क्रम से **तम्** आदि का आदेश है। **तमिस** 'उस को' **यमिस** 'जिस को' **कमिस** 'किस को' **इमिस्** 'इस को' **हुमिस्** 'उस को।

2.1.38 सूत्र से स्नाव् अर्थात् **स** प्रत्यय। सूत्र 2.3.17 से इकारागम। प्रस्तुत सूत्र से **तम** आदि का आदेश कुछ के मतानुसार इह् शब्द का **न्वम्** का आदेश होता है। उन के अनुसार **न्वमिस** 'इस को' इस प्रकार का स्वरूप हैं।

व्याख्या–

2.3.1 सूत्र में दिए गए **तिह** आदि शब्दों के कर्म कारकीय रूप की व्याख्या यहाँ प्रस्तुत की गई है। इन शब्दों के एकवचन रूप में **तम** आदि उपसर्ग क्रम से संयुक्त होते हैं। सभी उपसर्ग सूत्र में प्रस्तुत हैं। इन के संयोग से व्युत्पन्न सर्वनाम रूप निम्नांकित हैं। **तमिस** 'उस को' **यमिस** 'जिस को' **कमिस** 'किस को' **इमिस/यमिस** 'इस को' **हुमिस** 'उस को' **यमिस** 'इस को' के स्थान पर आंचलिक प्रयोगों में **न्वमिस** भी प्रचलित है।

वर्तमान में **इमिस** 'इस को' का उच्चारण **यमिस** ही है। सन्दर्भ से ही स्पष्ट होता है. कि **यमिस** का अभिप्राय 'जिस को' है या 'इस को'।

॥ अन्त्यस्य वा ङमिसोः ॥६॥

अन्त्यस्य हुह् शब्दस्य इकारसकारयोः परयोर्विकल्पेन अम् आदेशः स्यात् ॥ अमिस्। अमुम् ॥ अमि। अमुना ॥ इसोः किम्। हुमौ। अमीभिः ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.6

अन्त के हुह शब्द के पूर्व इकार और सकार होने पर विकल्प से अम् आदेश है। **ॲमिस** 'उस को' **ॲम्य** 'उस ने', इकार और सकार क्यों? **हुमव** 'उन्होंने'।

व्याख्या–

सूत्र 2.3.1 में दिए गए सर्वनामों के अन्त में **ह** है। इन उदाहरणों में **ह** के पूर्व जहाँ **इ** है वहीं पर **अम** आदेश की सम्भावना है। अन्तिम उदाहरण **हुह** है, उसमें **अम** आदेश नहीं है।

॥ अप्राणिनि स्प्रत्ययलोपस्तकारादेशश्च ॥७॥

अप्राणिनि अभिधेये सति तम् आदीनां स् प्रत्ययलोपो भवति। अन्त्यस्य च तकारादेशः स्यात् ॥ तथ् तुह् प्रदान्। ताच्छनांच ॥ यथ्। यत् ॥ कथ्। किम् ॥ इथ्। इदम् ॥ हुथ्। अदः ॥ तिह् आदिशब्देभ्यो। द्वितीयायां स्नाव् (सू० २।१।३८) इति स्प्रत्ययः। उभयेषाम् (सू० ५) इत्यादिसूत्रेण तम् आदय आदेशाः। अनेन स्प्रत्ययलोपः अन्त्याक्षराणां तकारः। वर्गप्रथमान्तानाम् (सू० २।१।६६) इति सूत्रेण तस्य थः ॥

अनुवाद– सूत्र **2.3.7**

तम् आदि शब्दों से अप्राणियों को अभिहित करने पर **स्** प्रत्यय का लोप और अन्त में तकार का आदेश होता है। **तथ छु चटान** 'उसको (अप्राणी) काटता है'। **तिह्** आदि शब्दों से **तथ** 'उसको (अप्राणी)'। **यथ** 'जिस को (अप्राणि)' **कथ** 'किस को (अप्राणी)'। **इथ** 'इस को (अप्राणि)' **हुथ** 'उस को (अप्राणि)'। 2.1.38 सूत्र से द्वितीया में स्नाव् होता है इसलिए **स** प्रत्यय। 2.3.5 इत्यादि सूत्र से **तम** आदि का आदेश। प्रस्तुत सूत्र से **स्** प्रत्यय का लोप और अन्तिम अक्षर का तकार। 2.1.66 सूत्र से तकार का थकार।

व्याख्या–

दिए गए व्युत्पन्न सर्वनामों से मात्र अप्राणी अभिहित होते हैं। स्पष्टीकरण में उन सभी सूत्रों का उल्लेख है जो व्युत्पत्ति में सहायक हैं, तथा **तथ, यथ, कथ/यथ** और हथ सर्वनाम सिद्ध होते हैं। उदाहरण– **यथ कुठिस छु वुछान** 'जिस कमरे को देखता है' **इथ/यथ कुठिस् छु वुछान** 'इस कमरे को देखता है' **हुथ कुठिस छु वुछान** 'उस कमरे को देखता है'

॥ चूह्व्वह्योश्च्यम्यौ च ॥ ८ ॥

त्वम् अहम् इति शब्दवाचकयोः चूह् ब्वह् शब्दयोर्द्वितीयादीनामेकवचनेषु क्रमेण च्य म्य आदेशौ भवतः स्प्रत्ययलोपश्च॥ च्य छुह् वनान्। त्वां वदति॥ चूह् शब्दाद्द्वितीयायां स्नाव् (सू० २।१।३८) इति स्प्रत्ययः। अनेन च्य आदेशः स्प्रत्ययलोपश्च। एवमन्यत्॥

अनुवाद– सूत्र **2.3.8**

चु 'तुम **बु** 'मैं' शब्दों के एक वचन द्वितीया आदि कारकों में क्रम से **च्य म्य** का आदेश है। **स्** प्रत्यय का लोप होता है। **च्य छु वनान** 'तुम को कहता है'। **चु** शब्द का द्वितीया में स्नाव 2.1.38 सूत्र से, अतः **स** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से **च्य** आदेश और **स** प्रत्यय का लोप। इसी प्रकार अन्य भी।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष सर्वनामों के एकवचन कारकीय विकारों की व्याख्या करता है। **बु** का एकवचन विकारी रूप **म्य** और **चु** का एकवचन रूप विकारी **च्य** निर्दिष्ट है।

॥ प्रत्ययस्य लोपो द्वितीयाकर्तृतृतीययोः ॥९॥

चूह् ब्वह् इत्येताभ्यां शब्दाभ्यां द्वितीयायां कर्तृतृतीयायां च प्रत्ययस्य लोपः स्यात्॥ च्य छुह् वनान्। त्वां वदति॥ त्वह्य छुह् वनान्। युष्मान् वदति॥ च्य वनुथ्। त्वया प्रोक्तम्॥ त्वह्य वनुव। युष्माभिः प्रोक्तम्॥

अनुवाद– सूत्र 2.3.9

द्वितीया और कर्तृतृतीया में चु और बु के प्रत्ययों का लोप होता है। च़्य छु वनान 'तुम को कहता है' त्वृहि छु वनान 'आप को कहता है' च़्य वौनुथ 'तुम ने कहा' त्वहि वौनवु 'आप ने कहा'।

व्याख्या–

पूर्व सूत्र में इन दोनों सर्वनामों की व्युत्पन्न प्रक्रिया में लोप आदेश की व्याख्या है। प्रस्तुत सूत्र में च़्य के बहुवचन रूप त्वहि का उल्लेख है। इस से यह स्पष्ट किया गया है, कि इ का लोप एकवचन में ही संभव है। मध्यम पुरुष बहुवचन सर्वनाम तोह्य के विकारी रूप त्वहि में इ का लोप नहीं है। 2.3.15 सूत्र में त्वहि की अलग से व्याख्या है।

॥ सश्च ॥ १० ॥

चुह् ब्वह् शब्दाभ्यां स् इत्यस्य लोपो भवति चशब्दात्कर्तृतृतीयासंबन्धिनोः इ औ प्रत्यययोश्च लोपः स्यात् ॥ च़्य सूतिन् । त्वया सह ॥ म्य सूत्य् । मया सह ॥ चुह् ब्वह् शब्दाभ्याम् इ सूतिन् प्रत्ययः । चुह्ब्वहो‍ श्च्यम्यौ च (सू० ८) इति सूत्रेण च़्य म्य आदेशौ । प्रत्ययस्य लोप (सू० ९) इत्यनेन इकारस्य लोपः । अनेन स् लोपः ॥

अनुवाद– सूत्र 2.3.10

चु और बु शब्दों में स का लोप होता है। कर्तृतृतीया में सम्भावित प्रत्यय इ, औ भी लुप्त हैं। च़्य सुतिन् 'तुम्हारे साथ' म्य सुत्य 'मेरे साथ'। चु और बु शब्दों में इ सुतिन् प्रत्यय है। 2.3.8 सूत्र से च़्य, म्य का आदेश। पूर्व सूत्र से इकार का लोप। प्रस्तुत सूत्र से स का लोप।

व्याख्या–

चु और बु के विकारी रूप स्पष्ट करने के लिए पूर्व के तीन सूत्र उल्लिखित हैं। लिंगपाद में वर्णित तत्सम्बन्धी सूत्रों के आधार पर लोप का भी आदेश है। इस प्रक्रिया के पश्चात च़्य और म्य सिद्ध होते हैं।

॥ षष्ठ्यामन्त्यस्वरस्य च़्यस्यातत्वं च ॥११॥

चुह् ब्वह् शब्दाभ्यां षष्ठ्यामन्त्यस्वरस्य लोपो भवति च़्यसंबन्धिनश्चकारस्य त्स्यातत्वं च स्यात् ॥ च़्योनु । तव ॥ म्योनु । मम ॥ चुह् ब्वह् लिङ्गाभ्यां मनुष्यसंज्ञयोनु (सू० २।१।६०) इति वनु प्रत्ययः । चुह्ब्वहोश्च्यम्यौ च (सू० ८) इति च़्य म्य आदेशौ । अनेन अकारलोपः । प्रत्ययादेरोत्पुंसि (सू० १३) इत्युकारस्यौकारः । चकारस्य च त्स्यातता बोध्या ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.3.11**

षष्ठी में चु और बु के अन्तिम स्वर का लोप और चु शब्द के चकार का चकार में रूपांतरण होता है। **च्योन** 'तुम्हारा' **म्योन** मेरा'। 2.1.50 सूत्र से **उन्** प्रत्यय। 2.3.8 सूत्र से च्य और म्य का आदेश। प्रस्तुत सूत्र से **अकार** का लोप। 2.3.13 से **उन्** के उकार का ओकार। चकार का ख्यात चकार।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में चु और बु के सम्बन्ध षष्ठी रूपों का वर्णन है। च्य के चकार का चकार परिवर्तन सम्बन्धषष्ठी में ही सम्भव है। आगे आने वाले 2.3.13 सूत्र से उकार का ओकार निर्देश है। अतः **च्योन** व **म्योन** शब्दों की सिद्धि है।

॥ स्त्रियामाकारः पुंबहुत्वे च ॥ १२ ॥

स्त्रियां वर्तमानाभ्यां चुङ् बुङ् शब्दाभ्यां षष्ठ्यामेकत्वबहुत्वयोरन्त्यस्वरस्याकारो भवति पुंलिङ्गस्य बहुवचनेऽपि ॥ च्यांञ्। तव। स्त्रीलिङ्गवाची शब्दः ॥ म्यांञ। तव स्त्रीलिङ्गवाचिनः शब्दाः ॥ च्यांनि न्यचिवि। तव पुत्राः ॥ म्यांनि न्यचिवि। मम पुत्राः ॥ साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद– **सूत्र 2.3.12**

चु, बु शब्द का अंतिम स्वर षष्ठी के स्त्रीलिंग एकवचन, और पुंलिंग बहुवचन में ऑकार बनता है। **च्यॉन्य** 'तुम्हारी' **च्यानि** 'तुम्हारी (स्त्री० बहुव०)' **च्यॉन्य न्यचिव्य** 'तुम्हारे पुत्र' **म्यॉन्य न्यचिव्य** 'मेरे पुत्र'। सिद्धि पूर्ववत् है।

व्याख्या–

यहाँ पर चु और बु सम्बन्ध कारक बहुवचन रूप की व्याख्या है। यह स्पष्ट किया गया है, कि यदि संबद्ध होने वाला शब्द स्त्रीलिंग हो, तो रूप भिन्न होंगे। ये सभी रूप निम्नांकित तालिका में दिए गए हैं।

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग	च्योन, म्योन	च्यॉन्य, म्यॉन्य
स्त्रीलिंग	च्यॉन्य, म्यॉन्य	च्यानि, म्यानि

॥ प्रत्ययादेरोत्पुंसि ॥१३॥

तयोः पुंलिङ्गस्य एकवचने प्रत्ययादेरुकारस्य ओकारो भवति ॥ च्योन् । तव ॥ म्योन् । मम ॥ साधितचरावेत ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.13

दोनों शब्दों के पुंलिंग एकवचन प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय आदि का उकार ओकार हो जाता है। **च्योन** 'तुम्हारा' **म्योन** 'मेरा' पहले सिद्ध किया गया है।

व्याख्या–

सूत्र 2.3.11 में स्पष्ट है, कि 2.1.50 सूत्र से ओकार में परिवर्तन हो जाता है। ये सम्बन्ध षष्ठी के पुंलिंग एकवचन के रूप हैं।

॥ प्रयोगलिङ्गस्यौकारोपधाया आत्वं सर्वत्र ॥१४॥

सर्वनामशब्दानां यत्र प्रयोगलिङ्गस्य उपधाभूत ओकारः स्यात्तत्र आत्वं भवति ॥ च्यानि सूंतिन् । त्वद्धेतुना ॥ म्यानि सूंतिन् । मद्धेतुना ॥ सानि सूंतिन् । अस्मद्धेतुना ॥ तुहन्दि सूंतिन् । युष्मद्धेतुना ॥ च्योनु । म्योनु । सोनु । इति प्रयोगलिङ्गेभ्यः इ सूंतिन् प्रत्ययः । उवर्णान्तानामिकार (सू०२।१।३०) इति उमात्राया इकारः । इतो लोप (सू०२।१।६) इति इ प्रत्ययस्य लोपः । अनेनोपधाया आत्वम् ॥ च्यानि सन्दि सूंतिन् । त्वदीयेन ॥ म्यानि सन्दि सूंतिन् । मदीयेन ॥ अत्र च्योनु म्योनु शब्दाभ्यां पूर्वं संन्दु प्रत्ययः । उवर्णान्तानाम् (सू०२।१।३०) इति इकारः । अनेनोपधाया आकारः । षष्ठीप्रयोगात् इ सूंतिन् प्रत्ययः । शेषं पूर्ववत् ॥ बहुत्वे तु । च्यान्यौ सूंतिन् । त्वदीयैः ॥ म्यान्यौ सूंतिन् । मदीयैः ॥ तुहन्यौ सूंतिन् । युष्मदीयैः ॥ सान्यौ सूंतिन् । अस्मदीयैः ॥ तृतीयाया औ सूंतिन् प्रत्यय एव भवति । तुहन्दि सन्यौ सूंतिन् । इति प्राप्याः । एवं सर्वनामशब्देषु सर्वत्र बोध्यम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.14

व्युत्पन्न प्रक्रिया में सर्वनाम शब्दों का उपधा भूत ओकार, आकार हो जाता है। **चानि सुतिन** 'तुम्हारे से' **म्यानि सुतिन** 'मेरे से' **सानि सुतिन** 'हमारे से/हम से' **तुहंदि सुतिन** 'आप से' **च्योन, म्योन, सोन** का व्युत्पति मूलक प्रत्यय **इ सुतिन** है। 2.1.30 से उमात्रा का इकार 2.1.6 सूत्र से इ प्रत्यय का लोप। प्रस्तुत सूत्र से उपधा के ओकार का आकार। **चानि सुन्दि सुतिन्** 'तुम्हीं से'। **म्यानि सुन्दि सुतिन्** 'मुझ ही से' यहाँ **सुन्द** प्रत्यय के पूर्व **च्योन म्योन** शब्द है। 2.1.30 सूत्र से उकार का इकार। प्रस्तुत सूत्र से उपधा के स्वर का आकार। षष्ठी के प्रयोग से **इ सुतिन्** प्रत्यय। शेष पूर्ववत्। बहुवचन में– **चान्यव सुतिन्** 'तुम्ही (लोगों) से' **म्यान्यव सुतिन्** 'मेरे (लोगों) से' **तुहुन्यव सुतिन्** 'आपके

(लोगों) से' **सान्यव सुतिन्** 'हमारे (लोगों) से' तृतीया का प्रत्यय **अव सुतिन्** है। **तुहन्दि सुन्द्यौ सुतिन्** 'यह ग्रामीण प्रयोग है। यह प्रक्रिया सर्वनाम शब्दों में सर्वत्र है।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में इन दो सर्वनामों के कारकीय रूपों का उल्लेख है। करण कारक परसर्ग **सुतिन्** लगने से उपधा के **ओ** का **आकार** हो जाता है। सूत्र के स्पष्टीकरण में पर्याप्त उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं, और व्युत्पत्ति की प्रक्रिया भी स्पष्ट की गई है। इस तथ्य का भी निर्देश है, कि यह प्रक्रिया सभी सर्वनामों में सिद्ध है।

॥ त्वेंह्यंस्यौ बहुत्वे ॥१५॥

चुह् ब्वह् शब्दयोः सर्वत्र बहुत्वे त्वेंहि अंसि आदेशौ भवतः॥ त्वेंहि। यूयम्॥ अंसि। वयम्॥ त्वह्य। युष्मान्॥ अस्य। अस्मान्॥ द्वितीयायां नप्रत्यये सर्वत्र (सू० २।१।११) इत्यकारागमे कृते प्रत्ययस्य लोप (सू० ९) इत्यादिसूत्रेण नकारलोपः। यत्वम्॥

अनुवाद– **सूत्र 2.3.15**

बहुवचन रूप में **चु बु** शब्दों का सर्वत्र **तोह्य, अंस्य** आदेश है। **तोह्य** 'आप'। **अंस्य** 'हम'। द्वितीया में **त्वहि** 'आप को' **असि** 'हम को'। द्वितिया **में न** प्रत्यय सर्वत्र। 2.1.11 सूत्र से अकारागम। 2.3.9 आदि सूत्रों से नकार का लोप तथा यत्व।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में **चु** और **बु** सर्वनाम शब्दों के बहुवचन रूप **तोह्य** और **अंस्य** का वर्णन है, तथा इन के कर्म कारकीय रूप **त्वहि** और **असि** भी दिए गए हैं। स्पष्टीकरण में **न** प्रत्यय का निर्देश है, परन्तु तत्संबद्ध 2.1.38 सूत्र का उल्लेख नहीं है। अगले सूत्र के स्पष्टीकरण में उक्त सूत्र का उल्लेख है।

॥ तिमू यिमू कमू इमू हुमश्चोभयेषाम् ॥१६॥

उभयेषां प्राणिवाचिनामप्राणिवाचिनां च शब्दानां सर्वत्र बहुत्वे तिमू आद्य आदेशा भवन्ति॥ तिमन्। तान्। तानि॥ यिमन्। यान्। यानि॥ कमन्। कान्। कानि॥ इमन्। इमान्। इमानि॥ हुमन्। अमून्। अमूनि॥ तिमू आदिशब्देभ्यो। द्वितीयायां नाव् (सू० २।१।३८) इति न् प्रत्ययः। अनेन

तिम् आदय आदेशाः। न्प्रत्यये सर्वत्र (सू० २।१।१२) इत्यकारागमः ॥ एवं तिमौ सुतिन् ॥ तिहन्दि पुछ्य्। तिमौ प्यठ। तिहुन्द । तिमन् प्यठ् । इत्यादि विज्ञेयम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.16

प्राणिवाची और अप्राणिवाची दोनों शब्दों के बहुवचन में सर्वत्र **तिम्** आदि शब्दों का आदेश है। **तिमन्** 'उनको'। **यिमन्** 'जिनको', **कमन्** 'किनको', **इमन्** 'इनको', **हुमन्** 'उनको', 2.1.38 सूत्र से द्वितीया में स्नाव् इसलिए 'न' प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से **तिम्** आदि शब्दों का आदेश। 2.1.12 सूत्र से इकारागम। इसी प्रकार **तिमव सुतिन्, तिहन्दि पुछ्य, तिमव प्यठ, तिहुन्द, तिमन प्यठ** इत्यादि।

व्याख्या–

सर्वनाम पाद के प्रारंभ से ही ग्रंथकार ने प्राणी और अप्राणी में सर्वनामों का वितरण स्पष्ट किया है। प्रस्तुत सूत्र में वर्णित सर्वनामों के बहुवचन रूप प्राणी और अप्राणी दोनों के लिए प्रयुक्त होते हैं। यथा–

प्राणी– **तिमन शुर्यन प्यठ छु ताफ**/ 'उन बच्चों पर धूप है'।

अप्राणी– **तिमन कन्यन प्यठ छु ताफ**। 'उन पत्थरों पर धूप है'।

इसी प्रकर सूत्र में वर्णित अन्य सर्वनामों का प्रयोग भी सम्भव है। स्पष्टीकरण में प्रत्येक बहुवचन रूप के दो दो संस्कृत पर्याय दिए गए हैं। जिस में पहला प्राणी तथा दूसरा अप्राणी के लिए प्रयुक्त होता है। हिन्दी और कश्मीरी में ऐसी व्यवस्था नहीं है। यहाँ दोनों स्थियों में एक ही सर्वनाम प्रयुक्त होता है।

॥ स्प्रत्यय इकारागमः ॥१७॥

तिह् आदिशब्दानां सकारे परे इकारागमो भवति ॥ तमिस्। तम् ॥ एवं सर्वेषाम्। अत्र लोपविधेर्बलीयस्त्वात् अप्राणिविषये सकारस्य लोपे कृते कोऽपि आगमो न भवतीति ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.17

तिह आदि शब्दों के पश्च में सकार होने पर इकारागम होता है। **तमिस्** 'उस का'। यह सभी सर्वनामों में होता है। लोप विधि बलवती होने के कारण अप्राणियों के विषय में सकार का लोप होता है, तथा कोई आगम भी नहीं होता।

व्याख्या–

2.3.5 सूत्र में भी स्पष्ट है कि व्युत्पत्ति की दृष्टि से सकार के पूर्व इकारागम होगा। प्रस्तुत सूत्र में अप्राणियों के लिए सर्वनाम की व्याख्या करते हुए

सकार के लोप का निर्देश है, इसलिए इकारागम असंभव है। **तमिस** का प्रयोग अप्राणि के लिए नहीं हो सकता। **तमिस कनि** जैसा पदबन्ध सम्भव नहीं है। उपयुक्त पदबन्ध होगा **तथ कनि** 'उस पत्थर को'।

॥ त्वंहेर्हन्दौ हिलोपः पुंस्त्रियोर्वस्योत्वं च ॥१८॥

च्हू शब्दबहुत्वनियतस्य त्वंहः पुंलिङ्गे स्त्रीलिङ्गे च हन्दौ परे हिलोपो भवति वकारस्य च उत्वं भवति। पुंलिङ्गकथनात् हकारस्य सकारनिषेधः॥ तुहन्दु। युष्माकं पुं॥ तुहन्जू। युष्माकं स्त्री॥ हन्दु हन्जू प्रत्ययौ। एकत्र सश्च (सू०१०) इति। अपरत्र हलोपः स्त्रियां सर्वत्र (सू०२।१।४०) इति स्लोपः। अनेन हिलोपः वकारस्य उत्वं च॥

अनुवाद— सूत्र 2.3.18

बहुवचन में **चु** शब्द सदा **तौह्य** होता है। पश्च में हुन्दव होने पर पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों में **हि** लोप और वकार का उत्व हो जाता है। पुंलिंग में हकार के सकार का निषेध है। **तुहुन्द** 'आप का' **तुहुन्ज़** 'आप की' यहाँ पर प्रत्यय है **स्हुन्द, स्हुन्ज़** सूत्र से **स** का लोप। 2.1.40 सूत्र से स्त्रीलिंग में **स** लोप सर्वत्र। प्रस्तुत सूत्र से **हि** लोप तथा वकार का उत्व।

व्याख्या—

2.3.9 और 15 सूत्रों में **चु** के बहुवचन रूप **तौह्य** की व्याख्या है। वर्तमान में **तौह्य** सर्वनाम वकार युक्त नहीं है। **तौहय** के कारकीय रूप **त्वहि** में वत्व है। प्रस्तुत सूत्र इसी वकार को उकार में बदलता है। सूत्र में **चु** सर्वनाम के **हुन्द** और **हुन्ज़** युक्त बहुवचन रूपों का निर्देश है। सम्बद्ध होने वाले शब्द का लिंग एवं वचन **हुन्द** को प्रभावित करता है। 2.1.41 से 2.1.45 सूत्रों तक सम्बन्ध कारक सूचक परसर्ग **हुन्द** की व्याख्या है। **तौहय** सर्वनाम के साथ **हुन्द** के रूप तालिका में अंकित हैं। पुंलिंग बहुवचन होने के कारण हकार का सकार संभव नहीं है।

	एकवचन	**बहुवचन**
पुंलिंग	तुहुन्द	तुहुन्द्य
स्त्रीलिंग	तुहुंज़	तुहुंजु

॥ असेराद्यन्तस्वरयोर्लोपाकारावुनुञोः ॥१९॥

ब्वह् शब्दस्य बहुत्वे नियतस्य अस्मिपदस्य उनु ञ् इत्येतयोः परयोः आदिस्वरस्य लोपः अन्त्यस्वरस्य चाकारो भवति॥ सानु। अस्माकम्। एकवचनम्॥ सांनि। अस्माकम्। बहुवचनम्॥ ब्वह् शब्दात् उनु

नि प्रत्ययौ। स्वंर्थस्यौं बहुत्वे (सू० १९) इति अंसि आदेशः। अनेनाकारस्य लोपः। इकारस्य च अकारः। एकत्र प्रत्ययादेर्गोत्पुंसि (सू० १३) उकारस्य आकारः। षष्ठ्यामन्त्यस्वरस्य (सू० ११) इत्यादिना अकारलोपः। अपरत्र स्त्रियामाकारः पुंबहुत्वे च (सू०१२) इति आकारः। स च इदन्तत्वादप्रसिद्धः (सू०२।१।७०)॥ एवं। सांन्। अस्माकम्। एकवचनं स्त्रीलिङ्गवाचकम्॥ सानि। अस्माकम्। बहुवचनं स्त्रीलिङ्गवाचकम्॥ साधनं पूर्ववत्॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.19

बु शब्द के नित्य बहुवचन पद रूप अँस्य के साथ उन, न्य युक्त होने पर आदि के स्वर का लोप और अंत्य स्वर का अकार होता है। सोन 'हमारा' सॉन्य 'हमारे'। बु शब्द से उन, न्य प्रत्यय। 2.3.15 सूत्र से बहुवचन में अँस्य आदेश। प्रस्तुत सूत्र से आदि स्वर अँकार का लोप एवं अन्त के इकार का अकार। 2.3.13 सूत्र से उकार का ओकार। 2.3.11 सूत्र से अकार का लोप। 2.3.12 सूत्र से आकार। 2.3.70 सूत्र से अप्रसिद्ध स्वर, इस प्रकार सॉन्य 'हमारी' सानि 'हमारीं' (बहुवचन)। सिद्धि पूर्ववत।

व्याख्या–

बु का बहुवचन रूप अँस्य है। सम्बन्ध कारक को छोड़ कर अन्य कारकीय विकारों में अँस्य का रूप असि हो जाता है। सम्बन्ध कारक में इस का रूप सोन है। प्रस्तुत सूत्र अँस्य से सोन की व्युत्पति सिद्ध करता है। इस प्रक्रिया के प्रत्यय उन न्य माने गए हैं। सूत्र के स्पष्टीकरण में उन सभी सूत्रों का उल्लेख है, जो इस व्युत्पति में सहायक हैं। सम्बद्ध होने वाले शब्द का लिंग वचन सोन को प्रभावित करता है। चारों रूप तालिका में स्पष्ट हैं।

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग	सोन	सॉन्य
स्त्रीलिंग	सॉन्य	सानि

॥ प्राणिनि मिलोपो वा सकारे ॥ २० ॥

प्राणिवाचिनां तदादिशब्दानां सकारे परे मिकारस्य विकल्पेन लोपो भवति॥ तस्। तम् वा तस्य॥ तमिस्। तम् वा तस्य॥ तसन्दु। तस्य॥ तमि सन्दु। तस्य॥ सुद् शब्दात्स्प्रत्ययः। उभयेषाम् (सू०५) इति तम् आदेशः। स्प्रत्यये इकारागमः (सू०१७)। अनेन एकत्र मिलोपः॥ एवं। यस्।

यम् वा यस्य ॥ यमिस् । यम् वा यस्य ॥ यसुन्द । यस्य ॥ यॅमि सुन्द । यस्य ॥ कस् । कम् वा कस्य ॥ कमिस् । कम् वा कस्य ॥ कसुन्द । कस्य ॥ कॅमि सुन्द । कस्य ॥

इम् हुम् शब्दयोः संबन्धषष्ठ्यामेव । इसुन्द । अस्य ॥ इमिसुन्द अस्य ॥ हुसुन्द । अमुष्य ॥ हुमि सुन्द । अमुष्य ॥ असुन्द । अस्य ॥ अॅमि सुन्द । अस्य ॥

बहुत्वे तु सर्वेषां मन् इत्यस्य विकल्पेन लोप इष्यते ॥ तिहुन्द वा तिमन् हुन्द । तेषाम् ॥ यिहुन्द वा यिमन् हुन्द । येषाम् ॥ कहुन्द वा कमन् हुन्द केषाम् ॥ इहुन्द वा इमन् हुन्द । एषाम् ॥ हुहुन्द वा हुमन् हुन्द । अमीषाम् ॥

संबन्धषष्ठ्यां किम् । इमिस् । इमं वा अस्य ॥ हुमिस् । अमुं वा अमुष्य ॥ अत्र विकल्पाभावः ॥ प्राणिनि किम् । तम्युक् । तस्य वस्तुनः ॥

अनुवाद— सूत्र 2.3.20

प्राणिवाची शब्द तिह आदि के पश्च में सकार होने पर विकल्प से मिकार का लोप होता है। **तस तमिस** 'उस को', **तसुन्द/तॅमि सुन्द** 'उस का'। **सु** शब्द से **स** प्रत्यय। दोनों शब्दों पर 2.3.5 सूत्र से **तम** आदेश। 2.3.17 सूत्र से इकारागम। प्रस्तुत सूत्र से **मि** का लोप। इस प्रकार, **यस/यमिस** 'जिस को', **यसुन्द/यॅमि सुन्द** 'जिस का', **कस/कमिस** 'किस को', **कसुन्द/कॅमि सुन्द** 'किस का'।

सम्बन्ध षष्ठी में— **इम हुम** शब्दों का **इसुन्द/इमि सुन्द** 'इस का', **हसुन्द /हुमि सुन्द** 'उस का' **असुन्द/अॅमि सुन्द** 'इस का'।

बहुवचन में विकल्प से **मन** का सर्वत्र लोप इच्छित है। **तिहुन्द** अथवा **तिमन हुन्द** 'उन का' **यिहुन्द** अथवा **यिमन हुन्द** 'जिन का', **कहुन्द** अथवा **कमन हुन्द** 'किन का', **इहुन्द** अथवा **इमन हुन्द** 'इन का', **हुहुन्द** अथवा **हुमन हुन्द** 'उन का'। सम्बन्ध षष्ठी क्यों? **इमिस** 'इस को' **हुमिस** 'उस को' यहाँ विकल्प का अभाव है। प्राणियों में क्यों? **तम्युक** 'उस वस्तु का'।

व्याख्या—

ग्रन्थकार ने भाषा के परसर्गों अथवा प्रत्ययों में विकल्प का निर्देश किया है। 2.1.59 सूत्र में हेतु तृतीया के परसर्ग के रूप में **सुत्य** और **सुतिन** के विकल्प का उल्लेख है। प्रस्तुत सूत्र में बताया गया है, पश्च में सकार होने की स्थिति में **मि** के लोप का विकल्प है। यथा— **तॅमि सुन्द** के विकल्प में **तसुन्द** का प्रयोग भी हो सकता है। **यि छु तॅमि सुन्द/तसुन्द बोय** 'यह उस का भाई है'। सम्बन्ध षष्ठी के बहुवचन में **मन** प्रत्यय के लोप का विकल्प प्राणियों में सर्वत्र

सम्भव है। **तिमन हुन्द** के स्थान पर **तिहुन्द** के प्रयोग का विकल्प है। **यि छु तिमन हुन्द/तिहुन्द गरु** 'यह उन (लोगों) का घर है'।

तस/तमिस आदि शब्दों का अर्थ संबन्धकारक में संभव नही है, जैसा कि स्पष्टीकरण में इंगित है। संबन्धकारकीय अर्थ के लिए **सुन्द** अथवा **हुन्द** परसर्ग आवश्यक है।

॥ निश्चयार्थे धातुलिङ्गस्वरूपान्ते यः प्रत्यययोर्मध्ये वा ॥ २१ ॥

धातुस्वरूपस्य वर्तमानादिषु लिङ्गस्वरूपस्य च प्रथमादिषु तद्धितादिषु च निश्चयार्थे गम्यमाने अन्ते यः प्रत्ययो भवति। द्वयोः प्रत्यययोर्मध्ये वा भवति ॥ तसुन्दुय्। तस्यैव ॥ तमि सुन्दुय्। तस्यैव ॥ ग्वरसुय् अन्दर्। गुरावेव ॥ ग्वरनुय् अन्दर्। गुरुष्वेव ॥ एवं सर्वेषां लिङ्गानां सर्वासु विभक्तिषु बोध्यम् ॥ प्रत्यययोर्मध्ये यथा ॥ ग्वरनुय् हन्दि पुछ्य्। गुरुभ्य एव ॥ ग्वर सन्दिय् पुछ्य्। गुरवे एव ॥ अत्र एकवचने स् प्रत्ययस्य लोपे कृते सन्दु पुछ्य् इत्येतयोर्मध्ये य् प्रत्ययः ॥ ग्वरन् हन्दिय् पुछ्य्। वा ग्वरन् हन्दि पुछिय्। इत्यपि साधु ॥ तद्धितप्रत्ययेभ्यो यथा। गाटुलुय्। दक्ष एव ॥ धातुस्वरूपेभ्यो यथा। करानुय् छुह्। करोत्येव ॥ कर्योनुय्। अकृतैव तेन ॥ करिय् करिष्यत्येव ॥ उपमायामपि क्वचिद्व्यवह्रियते। यथा च़ाट् ति गोव् न्यचिवुय्। शिष्यो ऽपि पुत्र एवास्ति ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.21

धातु के वर्तमान काल आदि रूप, प्रातिपदिकों के प्रथमा आदि कारकीय रूप और तद्धित आदि में निश्चयार्थ के लिए अन्त में अथवा दो प्रत्ययों के बीच में **य** प्रत्यय प्रयुक्त होता है। **तसुन्दुय** 'उसी का', **तमि सुन्दुय** 'उसी का' **ग्वरसुय अन्दर** 'गुरु में ही', **ग्वरनुय अन्दर** 'गुरुओं में ही'। इसी प्रकार सभी प्रातिपदिकों की सभी विभक्तियों में समझिए। **य** प्रत्यय मध्य में– **ग्वरनुय हुन्दि पुछ्य** 'गुरुओं के लिए ही, **ग्वरु सुन्दीय पुछ्य** 'गुरु के लिए ही'। यहाँ एक वचन में **स** प्रत्यय का लोप करने पर **सुन्द्य, पुछ्य** के मध्य में **य** प्रत्यय है। **ग्वरन हुन्दीय पुछ्य** अथवा **ग्वरन हुन्दि पुछ्यि**। दोनों ठीक हैं। तद्धित पर **य** प्रत्यय। **गाटुलुय** 'बुद्धिमान ही'। धातुओं पर **य** प्रत्यय। **करानय छु** 'कर ही रहा है'। **कर्योनुय** 'किया ही था' **करिय** 'करेगा ही'। **य** प्रत्यय उपमा में भी कभी-कभी व्यवहृत है। **च़ाट ति गव न्यचुवुय** 'शिष्य भी पुत्र ही होता है'।

व्याख्या–

निश्चयता की अभिव्यक्ति के लिए भाषा में **य** प्रत्यय का प्रयोग होता है। **य** प्रत्यय लगभग सभी व्याकरणिक कोटियों में प्रयुक्त हो सकता है। सूत्र के स्पष्टीकरण में निर्देश है, कि **य** प्रत्यय पद के अन्त में अथवा पद बंध के भीतर प्रयुक्त होता है। सभी प्रकार के उदाहरण ग्रंथकार द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं।

॥ सोरुशब्दस्वरूपेभ्यो नित्यमेव ॥ २२ ॥

सोरु शब्दस्य यानि स्वरूपाणि तेभ्यः प्रायशो नित्यमेव य् प्रत्ययो भवति ॥ सोरु । सर्वः ॥ सोरुय् । सर्व एव ॥ सांरि । सर्वे ॥ सांरिय् । सर्वे एव ॥

अनुवाद– सूत्र 2.3.22

सोर शब्द के जो भी स्वरूप हैं उन में प्रायः नित्य **य** प्रत्यय होता है। **सोर** 'सारा', **सोरुय** 'सारा ही' **सॉर्य** 'सब', **सॉरीय** 'सभी'। सभी रूप ऐसे ही हैं।

व्याख्या–

यह पूर्व सूत्र का विस्तार है, जिस में **सोर** 'सारा' शब्द और उस के रूपों के साथ **य** के प्रयोग का निर्देश है। वर्तमान में **य** विहीन **सोर** का प्रयोग नहीं के बराबर है। अगले सूत्र में भी **य** के संयोजन की प्रक्रिया का वर्णन है।

॥ यप्रत्यये औकारस्याव् ॥ २३ ॥

प्रत्ययसंबन्धिन औकारस्य य् प्रत्यये परे अव् भवति ॥ गुर्यवुय् सूतिन् । घोटकैरेव ॥ नमवुय् सूतिन् । नखैरेव ॥ गुर्यौ सूतिन् । नमौ सूतिन् इत्यनयोर्मध्ये य् प्रत्यये कृते अनेन औकारस्य अव् । व्यञ्जनं परेण संधेयम् (सू० १।३) ॥

अनुवाद– सूत्र 2.3.24

प्रत्यय सम्बन्ध ऑकार के बाद **य** होने पर ऑकार का **अव** होता है। **गुर्यवुय सुतिन** 'घोड़ों से ही', **नमवुय सुतिन** 'नाखूनों से ही', **गुर्यव सुतिन, नमव सुतिन**। इन दोनों के मध्य में **य** प्रत्यय आने पर प्रस्तुत सूत्र से ऑकार का **अव** हो जाता है। 1.1.3 सूत्र से संधि।

व्याख्या–

2.3.21 से सूत्र संख्या 23 तक **य** के संयोजन का निर्देशन है। इन तीनों सूत्रों में सर्वनाम का उल्लेख मात्र 21 सूत्र में है। इस सूत्र के उदाहरणों

में भी केवल **तमिस** सर्वनाम है। शेष दो उदाहरण **ग्वर** और गाटुल क्रम से संज्ञा और विशेषण हैं। 22 सूत्र **सोरुय** शब्द पर आधारित है। 23वें सूत्र में भी सर्वनाम का कोई उदाहरण नहीं है।

॥ ब्याख् शब्दस्य बियि् प्रथमाबहुत्वादिषु ॥ २४॥

स्पष्टम्॥ बियि्। अपरे ॥ बियन्। अपरान् ॥ बियौ। अपरैः ॥ अनेन बियि् आदेशे कृते व्यञ्जनान्तलिङ्गवत्साधनम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.24

सूत्र स्पष्ट है। **बैयि** 'और (मात्रा के सन्दर्भ में)' **बैयन्** 'औरों को' **बैयव** 'औरों ने'। इस सूत्र से **बियि्** आदेश होने पर व्यंजनान्तों की सिद्धि प्रातिपदिकवत् है।

व्याख्या–

ब्याख एकवचन अविकारी रूप है। एकवचन के कारकीय रूप **बैयि** और **बैयिस** है। बहुवचन रूप **बैयि** तथा कारकीय रूप **बैयन** और **बैयव** हैं। उदाहरण यथा– एकवचन– **म्य गछ़ि ब्याख बादाम** 'मुझे दूसरा बादाम चाहिए'। **बैयिस बादामस छु जान रंग** 'दूसरे बादाम का रंग अच्छा है'। बहुवचन– **म्य गछ़न बैयि बादाम** 'मुझे और बादाम चाहिए'। **बैयन बादामन छु जान रंग** 'दूसरे बादामों का रंग अच्छा है'।

बैयि शब्द का 'अतिरिक्त' आर्थी प्रयोग भी संभव है। **म्य गछ़न बैयि बादाम**। 'मुझे अतिरिक्त बादाम चाहिए'।

॥ कूतुशब्दस्योपधायाः प्रथमाबहुत्वे द्वितीयाद्येकवचनादिषु चाप्रसिद्धता ॥ २५ ॥

स्पष्टम् ॥ कुृति। कियन्तः ॥ कुृतिस्। कियन्तम् ॥ कुृति। कियता ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.25

सूत्र स्पष्ट है। **कुत्य** 'कितने' **कुतिस** 'कितने का' **कुत्य** 'कितने'।

व्याख्या–

कूत एकवचन अविकारी रूप है। उपधा का ऊकार कारकीय रूपों में और बहुवचन में **अुकार** हो जाता है। संस्कृत या हिन्दी में जो ध्वनियाँ विद्यमान नहीं है, उन को ग्रन्थकार अप्रसिद्ध अभिहित करते हैं। स्पष्टीकरण का **कुत्य** अथवा **कुतिस** शब्द इसी रूपांतरण का उदाहरण है। स्त्रीलिंग में **कुत्य कुच़** में

परिणत होता है। च़्ये कुच़ चायि चेयथ 'तूने कितनी चायें पी'

॥ बहुत्वे वैत्वम् ॥२६॥

कूत् शब्दस्य द्वितीयादिबहुत्वे वा ऐत्वं भवति विकल्पेनाप्रसिद्धता च ॥ कुत्यन् । कियतः ॥ कैत्यन् । कियतः ॥ कुत्यौ सुतिन् । कियद्भिर्हेतुभिः ॥ कैत्यौ सुतिन् । कियद्भिर्हेतुभिः ॥ एवं सर्वत्र विज्ञेयम् ॥

अनुवाद– सूत्र 2.3.26

द्वितीया आदि के बहुवचन में **ऊत्** शब्द का, ऐत्व होता है। तथा विकल्प से स्वर अप्रसिद्ध भी। **कुत्यन** 'कितनों को', **कैत्यन** 'कितनों को', **कुत्यव सुतिन** 'कितनों से', **कैत्यव सुतिन** 'कितनों से'। इसी प्रकार सर्वत्र समझिए।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में **कूत** शब्द के बहुवचन कारकीय रूपों का वर्णन है। पूर्व सूत्र को विस्तार देते हुए निर्देश है, कि उपधा के ऊकार का अुकार न होकर ऐकार होने का विकल्प है। परसर्ग **सुतिन** पर यह विकल्प लागू नहीं है। वहाँ स्वर की अप्रसिद्धता यथावत है। वर्तमान में **कूत** शब्द का ऐत्व किसी भी कारकीय रूप में सम्भव नहीं है। सभी रूपों में अुकार ही सिद्ध है।

॥ य्यूतुत्यूतुयूतुशब्दानामीत्वमप्रथमैक-वचने ॥२७॥

प्रथमैकवचनं वर्जयित्वा एषां शब्दानां यूकारस्य ईत्वं भवति ॥ यीत्ि । यावन्तः ॥ तीत्ि । तावन्तः । ईत्ि । इयन्तः ॥ एवं सर्वत्र ज्ञेयम् ॥

अनुवाद– सूत्र 2.3.27

प्रथमा एकवचन को छोड़कर इन शब्दों के यूकार का ईत्व होता है। **यीत्य** 'जितने', **तीत्य** 'उतने', **ईत्य** 'इतने'। ऐसा ही सर्वत्र समझिए।

व्याख्या–

यूत 'जितना' **त्यूत** 'उतना' **यूत** (इयूत) 'इतना'। शब्दों के यूकार का ईत्व होने का निर्देश है। कर्ता के एकवचन अविकारी रूप में यह परिवर्तन नहीं होता। 'जितना' के अर्थ में **यूत** शब्द का **यीत्य** होता है। इसीलिए कौल ने इस शब्द के लिए सूत्र में संयुक्त यकार का प्रयोग किया है। 'इतना' के अर्थ में **यूत** शब्द **ईत्य** बनता है। यहाँ पर अतिरिक्त **य** विद्यमान नहीं है। यूकार ईकार बनकर **ईत्य** सिद्ध है। पूर्व में कहा गया है कि इन दोनों शब्दों का वर्तमान रूप यकार युक्त ही है।

॥ मूँष ऐत्वम् ॥२८॥

मूँष् शब्दोपधायाः प्रथमाबहुत्वादिषु ऐत्वं भवति ॥ मैंष। महिष्यः ॥ मैंषन्। महिषीः ॥ मैंषौ सूतिन्। महिषीभिः ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.28

प्रथमा बहुवचन आदि रूपों में **मूँश** शब्द के उपधा का ऐत्व होता है। **मैंश** 'भैंसें' **मैंशन** 'भैंसों को' **मैंशव सुतिन**।

व्याख्या–

वर्तमान में भैंस के लिए **मॉँश** शब्द प्रचलित है। बहुवचन अविकारी रूप **मॉँशि** है। विकारी अर्थात कारकीय में **मॉँशि** और बहुवचन में **मॉँशन** तथा **मॉँशव** है। सर्वनाम पाद में जातिवाचक शब्द का वर्णन अतिरिक्त वर्णन है।

॥ कूँहो ऽन्त्यस्य सश्च ॥२९॥

कूँह् शब्दस्य उपधाया ऐत्वं भवति अन्त्याक्षरस्य च सकारो भवति ॥ कैंसि दप्। कंचिद्वद ॥ कैंसि दूप् । केनचिदुक्तम् ॥ कैंसि हुन्दु। कस्यचित् ॥ इत्यादि। साधनं पूर्ववत् ॥ कूँह्शब्दापरपर्यायस्य काँह् शब्दस्य चेत्थं बोध्यम्। किंचानयोः शब्दयोरुभयलिङ्गत्वात् द्वितीयायां स् प्रत्ययः। स्त्रियामिकार (सू०२।१।३७) इति इकारागमः। स्लोपः स्त्रियां सर्वत्र (सू०२।१।४०) इति स् लोपः ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.29

कूँह शब्द के उपधा का ऐत्व और अन्तिम अक्षर का सकार होता है। **कैंसि दप** 'किसी को कहो'। **कैंसि दोप** 'किसी ने कहा', **कैंसि हुन्द** 'किसी का' इत्यादि। सिद्धि पूर्ववत्। **कूँह** शब्द का दूसरा पर्याय **काँह** भी है। कहीं कहीं पर द्वितीया में इन शब्दों के साथ दोनों लिंगों में **स** प्रत्यय संयुक्त होता है। 2.1.37 सूत्र से इकारागम। 2.1.40 सूत्र से **स** का लोप।

व्याख्या–

वर्तमान में **कूँह** के स्थान पर **कुस** का प्रयोग मान्य है। भाषा में ऐकार का स्थान नहीं के बराबर है। कुछ आगत शब्दों को छोड़ कर, यथा– **टैर** '(वाहनों के) टायर', भाषा में 'ऐ' स्वर की सत्ता नहीं है। कारकीय रूपों में **कॉँसि** का प्रयोग किया जाता है। स्पष्टीकरण में उन सूत्रों का उल्लेख है, जिन के द्वारा अन्य रूप व्युत्पन्न होते हैं।

॥ केन्च् शब्दो नित्यं वहुत्वे ॥३०॥

स्पष्टम् ॥ केन्च् । कांचन् ॥ केन्चन् । कांश्चित् ॥ केन्चौ । कैश्चित् ॥

अनुवाद— सूत्र 2.3.30

सूत्र स्पष्ट है। **केंच़** 'कुछ' **केंच़न** 'कुछ को' **केंच़व** 'कुछ ने'।

व्याख्या—

केंच़ के स्थान पर **केंह** का अधिक प्रयोग होता है। यथा— **केंह छि आमुत्य** 'कुछ आए हैं'। कारकीय रूपों में **केंच़न्** और **केंच़व** रूप सिद्ध है। सूत्र में निर्देश है, कि ये शब्द नित्य बहुवचन में ही व्यवहृत हैं।

॥ काँछ़ाह् कैंछ़ाह् शब्दावेकत्वे ॥३१ ॥

स्पष्टम् ॥ काँछ़ाह् । कश्चित् ॥ कैंछ़ाह् । किंचित् ॥

अनुवाद— सूत्र 2.3.31

सूत्र स्पष्ट है। **काँछ़ाह** 'कोई' **केंछ़ाह** 'कुछ (एक वचन)'।

व्याख्या—

वर्तमान भाषा प्रयोग में **काँछ़ाह** के विकल्प में **काँह** और **केंछ़ाह** के विकल्प में **केंह** का प्रयोग भी संभव है। यथा— **तति छा काँह?** 'क्या वहाँ कोई है'? **तति छा केंह?** 'क्या वहाँ कुछ है'?

॥ ज़ुह् शब्दस्य दु द्वितीयादिषु ॥३२॥

द्विवाचकस्य ज़ुह् शब्दस्य द्वितीयादिविभक्तिषु दु आदेशः स्यात् ॥ द्वन् । द्वौ ॥ द्वयौ सुतिन् । द्वाभ्याम् ॥

अनुवाद— सूत्र 2.3.32

'दो' शब्द के भाषा पर्याय ज़ु शब्द का द्वितीया आदि विभक्तियों में दु आदेश है। **द्वन** 'दो को' **द्वयव सुतिन** 'दो से'

व्याख्या—

सर्वनाम पाद के अर्न्तगत संख्या वाचक शब्दों के क्रमवाची रूपों का उल्लेख किया गया है। आगे आने वाले सूत्रों में कुछ और संख्यावाची शब्दों का विवेचन है।

॥ अयागमः स्वरे ॥३३॥

तस्मादादेशकृतात् दुशब्दात्स्वरे परे अयागमो भवति ॥ द्वयि सुतिन् । द्वयेन ॥ द्वयौ सुतिन् । द्वाभ्याम् ॥ ज़ुह् शब्दात् औ सुतिन् प्रत्ययः। पूर्वसूत्रेण दु आदेशः। अनेन अय् आगमः। व्यञ्जनं परेण संधेयम् (सू० १।१) ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.33

उक्त आदेश से दु शब्द के पश्चात स्वर होने पर अय का आगम होता है। **द्वयि सुतिन** 'दो से' **द्वयव सुतिन** 'दो से'। **ज़ु** शब्द का प्रत्यय है **अव सुतिन**। पूर्व सूत्र से दु का आदेश। प्रस्तुत सूत्र से **अय** का आगम। 1.1.3 सूत्र से व्यंजन पश्च होने पर सन्धि।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। दु आदेश होने पर **अय** का आगम स्पष्ट किया गया है। **द्वयि सुतिन** रूप का प्रयोग सीमित है। **द्वयव सुतिन** ही अधिक प्रचलित है।

॥ त्रिह्षहोरन्त्यलोपश्च ॥३४॥

त्रिह् षह् शब्दाभ्यां स्वरे परे अयागमो भवति। अन्त्याक्षरस्य च लोपो भवति ॥ त्र्ययौ सुतिन् । त्रिभिः ॥ षयौ सुतिन् । षड्भिः ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.34

पश्च में स्वर होने के कारण **त्रे** और **शे** में अयागम होता है। अन्तिम अक्षर का लोप होता है। **त्रेयव (त्र्ययौ) सुतिन्** 'तीन से' **शेयव (षयव) सुतिन** 'छः से'।

व्याख्या–

तत्कालीन उच्चारण में इन दोनों संख्या वाची शब्दों के अन्त में ह् अक्षर माना गया है। सूत्र में उसी ह् के लोप का कथन है। **त्रे** और **शे** का कर्म कारक रूप **त्रन** और **शन** है।

॥ वा चोर्शब्दस्य न्प्रत्यये ह्रस्वश्च ॥३५॥

च़ोर् शब्दस्य न्प्रत्यये परे विकल्पेनान्त्याक्षरस्य लोपः ओकारस्य च उकारो भवति॥ च़ुन् । चतुरः । वा । च़ोरन्। चतुरः ॥ च़ोर् शब्दात् द्वितीयायां न् प्रत्ययः

अनेन रकारलोपः ओकारस्य च उकारः। उकारो वः (सू० १।१।११) इति वत्वम्। व्यञ्जनं परेण संधेयम् (सू० १।१।३)। अन्यत्र न्प्रत्यये (सू० २।१।१२) अकारागमः॥

अनुवाद— सूत्र 2.3.35

न प्रत्यय पश्च में होने पर विकल्प से, **चोर** शब्द के अन्तिम अक्षर का लोप और ओकार का उकार होता है। **च्वन** 'चार को' अथवा **चोरन** 'चार को'। द्वितीया में **चोर** शब्द के साथ **न** प्रत्यय है। प्रस्तुत सूत्र से रकार का लोप और ओकार का उकार। 1.1.11 से वत्व। 1.1.3 से संधि। 2.1.12 से अकारागम।

व्याख्या—

वर्तमान भाषा प्रयोग में भी यह विकल्प सार्थक है। **च्वन** और **चोरन** दोनों शब्द व्यवहार में हैं। संख्यावाची शब्दों में 'चारों' आदि रूपों का भी प्रयोग सम्भव है। भाषा में **वय** प्रत्यय लगा कर इस तरह के रूप की व्युत्पत्ति है। **च्वनवय** 'चारों' **द्वनवय** 'दोनों' **त्रनवय** 'तीनों' **शनवय** 'छः के छः'।

॥ पानशब्दादिप्रत्ययलोपः ॥३६॥

अयं शब्दो नित्यमेकवचन एव। देहार्थवाचकस्य पान् शब्दस्य तु एकानेकत्वं भवति ॥ पान। स्वयम् ॥ पानस्। स्वम् ॥ पान। स्वेन ॥

अनुवाद— सूत्र 2.3.36

यह शब्द नित्य एकवचन ही है। देह के अर्थ में **पान** शब्द का अनेकत्व भी हैं। **पानु** 'स्वयं' **पानस** 'अपने को' **पानय** 'अपने से'।

व्याख्या—

यहाँ निजवाची सर्वनाम **पानु** का उल्लेख है। यथा— **बु करु पानय** 'मैं स्वयं करूँगा'। **चु करख पानय** 'तुम स्वयं करोगे'। **हु करि पानय** 'वह स्वयं करेगा'।

उदाहरणों से स्पष्ट है कि **पान** के साथ **य** का आगम अनिवार्य है। **पान** का अर्थ ऐसी स्थितियों में कर्ता बोधक ही होता है। पहले वाक्य में **पान** से अभिप्राय है 'मैं' दूसरे वाक्य में 'तुम' और तीसरे वाक्य में 'वह'।

देह के अर्थ में **पान** सर्वनाम नहीं है। स्पष्टीकरण में उक्त **पान** 'देह' का भी उल्लेख है। यह भी बताया गया है कि इस **पान** का प्रयोग दोनों वचनों में समरूपी है यथा—

तॅम्य सुन्द पान छु स्वंदर 'उस की देह सुन्दर है', **चीनियन हुंद्य पान छि प्रेन्य** 'चीनियों की देहें उजली हैं'

॥ अकारलोपोपधाह्रस्वौ चोनुञ्ञोः ॥३७॥

तस्यैव पानशब्दस्य उनु ञ् इत्येतयोः प्रत्यययोः परयोरकारस्य लोप उपधायाश्च ह्रस्वो भवति ॥ पनुनु । स्वस्य पुंलिङ्गे ॥ पनंञ् । स्वस्य स्त्रीलिङ्गे ॥ साधनं पूर्ववत् ॥ देहार्थवाचकस्य पान् शब्दस्य । पानुक् । देहस्य पुंलिङ्गे ॥ पानंचू । देहस्य स्त्रीलिङ्गे ॥ इत्यादिस्वरूपाणि भवन्ति ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.37

अन, न्य प्रत्यय लगने पर **पान** शब्द की उपधा का स्वर ह्रस्व और अन्त के अकार का लोप होता है। **पनुन** 'अपना' **पनुन्य** 'अपनी'। सिद्धि पूर्ववत। देह अर्थ वाले पान के रूप हैं। **पानुक** 'देह का', **पानुच** 'देह की' इत्यादि स्वरूप होते हैं।

व्याख्या–

'अपना' के अर्थ में **पान, पनुन** बनता है। स्पष्टीकरण में रूपसिद्धि की व्याख्या है। इस का स्त्रीलिंग रूप **पनुन्य** 'अपनी' हैं। यथा– **यि छु म्य पनुन तकियि** 'यह मेरा अपना तकिया है'। **यि छि म्य पनुन्य चा़दर** 'यह मेरी अपनी चादर है'।

मध्य पुरुष और अन्य पुरुष के उदाहरण भी इसी प्रकार होंगे।

पनुन निजवाची सर्वनाम होने के कारण कर्त्ता से ही परिभाषित होता है। देह अर्थ वाले **पान** शब्द के रूप हैं **पानुक, पानुच**। **उक** प्रत्यय की व्याख्या 2.1.64 सूत्र में प्रस्तुत है।

॥ अख्जोरयोराहागमो निश्चयसामान्ये ॥३८॥

अख्शब्दात् द्विवाचकाज्जोरशब्दाच्च निश्चयसामान्ये गम्यमाने आह् आगमो भवति ॥ अखाह् । एककः ॥ जोराह् । द्विकम् ॥ अख्शब्दस्य प्रथमायामेव विज्ञेयम् । अपरस्य सर्वासु विभक्तिषु । अख्शब्दग्रहणात्प्रथमैकवचनान्तेभ्यः सर्वेभ्यः शब्देभ्यो भवति ॥ कथाह् । एक आलापः ॥ जोराहो मूर्तिन् । द्विकेन ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.38

अख शब्द और द्वि अर्थ वाचक शब्द **जोर** की निश्चयता को सामान्य बनाने के लिए **आह** का आगम होता है। **अखाह्** 'कोई एक' **जोराह** 'कोई दो' **अख** शब्द का केवल प्रथमा में। अन्य का सभी विभक्तियों में। **अख** शब्द की

तरह ही सभी शब्दों के प्रथमा एकवचन में **आह** ग्रहीत है। **कथाह** 'कोई बात' **जोराहौ सुतिन्** 'किन्हीं दो से'।

व्याख्या–

निश्चय बोधकता को सामान्य बनाने के लिए **आह** प्रत्यय का निर्देश है। संख्यावाची शब्दों के अतिरिक्त अन्य शब्दों में भी यह प्रत्यय सम्भव है। संख्यावाचक शब्द **अख** तथा अन्य प्रातिपदिकों में **आह** का आगम मात्र प्रथमा एकवचन में है। शेष विभक्तियों में **आह** का आगम सम्भव नहीं है।

॥ त्रिह्स्तारादेशः ॥ ३९ ॥

निश्चयसामान्ये त्रिह्शब्दस्य तार आदेशो भवति॥ तार। त्रिकम्॥ निश्चयसामान्ये किम्। त्रिय्। त्रय एव॥

अनुवाद– सूत्र 2.3.39

निश्चयता को सामान्य बनाने के लिए **त्रे** शब्द का **तारु** आदेश होता है। **तारु** 'कोई तीन'। निश्चय को सामान्य बनाने की बात क्यों कही। **त्रेय** 'तीन ही'।

व्याख्या–

त्रे 'तीन' की निश्चयता को सामान्य बनाने के लिए **आह** प्रत्यय सार्थक नहीं है। इस का पूर्ण रूप परिवर्तन हो कर **तारु** 'कोई तीन' का निर्देश है। **त्रे** के अन्य रूपों में यह रूप-परिवर्तन नहीं होता। यथा– **त्रेयि लटि** 'तीन बार', **त्रन हुन्द** 'तीन का' **त्रेयव** 'तीनों ने' आदि।

॥ च़ोरश्च्व़मरः ॥ ४० ॥

च़ोर् शब्दस्य च्वमर आदेशो भवति निश्चयसामान्ये ॥च़्वमर। चतुष्कम्॥ निश्चयसामान्ये किम्। च़ोरय्। चत्वार एव ॥

अनुवाद– सूत्र 2.3.40

निश्चयता को सामान्य बनाने के लिए **च़ोर च़्वमरु** 'चार' शब्द का **च़्वमरु** आदेश होता है। **च़्वमरु** 'कोई चार'। निश्चयता को सामान्य बनाने की बात क्यों कही? **च़ोरय** 'चार ही'।

व्याख्या–

ग्रन्थकार ने इस पाद के अगले सभी सूत्रों में संख्यावाची शब्दों की निश्चयता को सामान्य बनाने की प्रक्रिया का वर्णन किया है। **च़ोर** 'चार' शब्द का **च़्वमरु** हो जाता है। इस प्रक्रिया के अतिरिक्त **च़ोर** के अन्य रूपों की व्याख्या

2.3.35 सूत्र में स्पष्ट है।

॥ पान्चुः पैंशः ॥ ४१ ॥

पान्चुशब्दस्य पैंश आदेशो भवति निश्चयसामान्ये ॥ पैंश । पञ्चकम् ॥ निश्चयसामान्ये किम्। पान्चय्। पञ्चैव ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.41

निश्चयता को सामान्य बनाने के लिए **पाँछ़** शब्द का **पाँशि** आदेश है। **पाँशि** 'कोई पाँच'। निश्चयता को सामान्य बनाने की बात क्यों कही? **पांचय** 'पाँच ही'।

व्याख्या–

पाँछ़ 'पाँच' की निश्चयता को सामान्य बनाने के लिए **पाँशि** 'कोई पाँच' शब्द सिद्ध है। इस के शेष व्युत्पन्न रूप हैं– **पाँचन** 'पाँच को' **पाँचव** 'पाँचों ने' **पांचय** 'केवल पाँच' आदि। हिन्दी के पद 'पाँच-छः' के अर्थ में **पांछ़-शे** का प्रयोग भी सम्भव है, और इस का समस्त पद **पाँशि** है।

॥ षह्रो ऽन्त्यस्य खाह् ॥ ४२ ॥

षह्शब्दस्यान्त्याक्षरस्य खाह् आदेशो भवति निश्चयसामान्ये ॥ षखाह्। षट्कम् ॥ निश्चयसामान्ये किम्। षय्। षडेव ॥

अनुवाद–

सूत्र 2.3.42

निश्चयता को सामान्य बनाने के लिए **शे** शब्द के अन्तिम अक्षर का **खाह** आदेश है। **शखाह** 'कोई छः'। निश्चयता को सामान्य बनाने की बात क्यों कही? **शेय** 'छः ही'।

व्याख्या–

ग्रन्थकार **शे** 'छः' शब्द के अन्त में **ह्** अक्षर लिखते हैं, यथा– **षह्**। इसी अन्तिम **ह्** का **खाह्** आदेश है। वर्तमान में **शखाह्** का प्रयोग नहीं है। 2.3.40 सूत्र में **मरु** प्रत्यय का उल्लेख है। **शे** के साथ **मरु** प्रत्यय संयुक्त होकर निश्चयता को सामान्य बनाता है। यथा– **शेमरु** 'कोई छः'। **शे** के शेष व्युत्पन्न रूप हैं– **शन** 'छः को', **शेयव** 'छः ने' आदि।

॥ सतष्ट एठागमश्च ॥ ४३ ॥

सत्शब्दस्यान्त्याक्षरस्य टकारो भवति एठ आगमश्च निश्चयसामान्ये ॥ सटेठ। सप्तकम् ॥ निश्चयसामान्ये किम्। सतय् सप्तव ॥

अनुवाद— सूत्र **2.3.43**

निश्चयता को सामान्य बनाने के लिए **सत्** शब्द के अन्तिम अक्षर का टकार और एठ का आगम होता है। **सटेठ** 'कोई सात'। निश्चयता को सामान्य बनाने की बात क्यों कही? **सतय** 'सात ही'।

व्याख्या—

वर्तमान में **सटेठ** शब्द का प्रयोग नही है। हिन्दी के पद 'सात—आठ' के अर्थ में **सथ-ऑठ** का प्रयोग किया जाता है, जो अनिश्चयता का बोधक है। **मरु** प्रत्यय का प्रयोग भी इस अभिप्राय में सम्भव है। यथा— **सतुमरु** 'कोई सात'।

॥ ऐठादिभ्यो ऽमरागमश्च ॥ ४४ ॥

ऐठ्आदिभ्यः संख्याभ्यो निश्चयसामान्ये अमर आगमो भवति ॥ ऐठमर। अष्टकम् ॥ नवमर। नवकम् ॥ दह्मर। दशकम् ॥ निश्चयसामान्ये किम् ॥ ऐठय्। अष्टावेव ॥ नवय्। नवैव ॥

अनुवाद— सूत्र **2.3.44**

निश्चयता को सामान्य बनाने के लिए **ऑठ** आदि संख्या शब्दों में **अमर** का आगम होता है। **ऑठुमरु** 'कोई आठ', **नवुमरु** 'कोई नौ' **दहुमरु** 'कोई दस। निश्चयता को सामान्य बनाने की बात क्यों कही? **ऑठय** 'आठ ही', **नवय** 'नौ ही'।

व्याख्या—

उक्त सूत्र में **मरु** प्रत्यय के विस्तृत प्रयोग का उल्लेख है। संख्या सम्बन्धी अनिश्चयता व्यक्त करने के लिए **शे** 'छः' के आगे सभी संख्या वाची शब्दों में इस अभिप्राय के लिए **मरु** का प्रयोग सम्भव है। **मरु** संयुक्त होने पर शब्द का अंतिम अकार उकार बनता है।

ग्रन्थकार संख्यावाची शब्द के अन्तिम व्यंजन को हलन्त करते हैं। इसलिए **अमर** प्रत्यय सूत्र में निर्दिष्ट है। इन सभी शब्दों के अंतिम व्यंजन का अकार ही उकार हो जाता है। अकार के अतिरिक्त अन्य स्वरों में यह रूपांतरण नहीं होता। यथा— **शेमरु**।

॥ एकत्वनिर्दिष्टपरिमाणादिशब्दात्खण्डा च ॥४५॥

एकवचनेन निर्दिष्टो यः संख्यापरिमाणादिशब्दस्तस्मान्निश्चयसामान्ये खण्डा प्रत्ययो भवति। चशब्दात् आह् आगमो ऽपि भवति ॥ अखाह् खण्डा। एकमात्रम् ॥ च्चाखाह् खण्डा। चतुष्टयमात्रम् ॥ दहाह् खण्डा। दशकमात्रम् ॥

हथाह् खण्डा । शतमात्रम् ॥ क्रुहाह् खण्डा । क्रोशमात्रम् ॥ द्वहाह् खण्डा । दिनमात्रम् ॥ र्स्थाह् खण्डा । ऋतुमात्रम् ॥ रुपयाह् खण्डा । मुद्रिकामात्रम् ॥ एकत्वनिर्दिष्टास्किम् ॥ तार । त्रयः ॥ च्वमर । चत्वारः ॥ चोराह् खण्डा । इति तु न भवति ॥ चाख्शब्दस्य त्वेकत्वनिर्देशाद्भवत्येव । परं तु यत्रैव आह् आगमो भवति तत्रैव खण्डा प्रत्ययः सस्वरः स्यात् । यत्र तु केवलः स्यात्तत्र खण्ड् प्रत्ययो भवति । यथा । क्रुह् खण्ड् । क्रोशमात्रम् ॥

अनुवाद— सूत्र 2.3.45

संख्या तथा परिमाण आदि शब्दों के एकवचन रूप में निश्चयता को सामान्य बनाने के लिए **खण्डा** प्रत्यय होता है। शब्द के साथ **आह** आगम भी होता है। **अखाह् खण्डा** 'लगभग एक' **चाखाह खण्डा** 'लगभग चौका' **दहाह् खण्डा** 'लगभग दस' **हथाह् खण्डा** 'लगभग सौ' **क्रुहाह् खण्डा** 'लगभग (एक) कोस' **द्वहाह् खण्डा** 'लगभग (एक) दिन' **र्स्थाह् खण्डा** 'लगभग (एक) महीना' **रूवपया खण्डा** 'लगभग (एक) रुपया'। एकत्व का निर्देश क्यों किया? **तार्** 'कोई तीन **च्वमर्** 'कोई चार। **चोराह खण्डा** नहीं होता, परन्तु **चाख** शब्द एकवचन होने के कारण होता है। जहाँ **आह्** आगम होता है, वहाँ पर **खण्डा** प्रत्यय में अन्त का दीर्घ स्वर रहता है, परन्तु जहाँ **आह** प्रत्यय न हो वहाँ **खण्ड** होता है। **क्रुह खण्ड** 'लगभग (एक) कोस'।

व्याख्या—

सूत्र में निश्चयता को सामान्य करने के लिए **खण्डा** शब्द जोड़ने के विकल्प का निर्देश किया गया है। यह विकल्प संख्यावाची शब्दों के एकवचन रूप के लिए है। परिमाण वाची शब्दों के लिए भी **खण्डा** का प्रयोग इसी अर्थ को सम्प्रेषित करता है। शब्द के साथ **आह्** प्रत्यय न लगने पर **खण्डा** का रूप **खण्ड** होता है। सूत्र के स्पष्टीकरण में उदाहरण प्रस्तुत हैं।

॥ सर्वेभ्यो बहुवचनान्तेभ्यो ज़् ॥ ४६ ॥

बहुवचनान्तेभ्यः सर्वेभ्यः शब्देभ्यो निश्चयसामान्ये ज़् प्रत्ययो भवति । कटज़् । मेषाः ॥ गुरिज़् । अश्वाः ॥ रुपयंज़् । रूपिकाः ॥ कन्ज़् । शिलाः इत्यादि ।

अनुवाद— सूत्र 2.3.46

निश्चयता को सामान्य करने के लिए सभी बहुवचन रूपों के अन्त में **ज़्** प्रत्यय होता है। **कटज़्** 'कुछ भेड़', **गुरिज़्** 'कुछ घोडे', **रूवपयिज़्** 'कुछ रुपये', **कनिज़्** 'कुछ पत्थर' इत्यादि।

व्याख्या–

बहुवचन रूपों के लिए निर्दिष्ट प्रत्यय **ज़ु** का प्रयोग वर्तमान में नहीं है। इस प्रकार की अनिश्चयता प्रकट करने के लिए बहुवचन शब्द रूप के पहले **केंह** 'कुछ' शब्द का प्रयोग होता है। यथा **केंह शुर्च** 'कुछ बच्चे' **केंह गाव़** 'कुछ गाएँ। **केंह कुल्य** 'कुछ पेड़' इत्यादि।

इति
शारदा क्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीरशब्दामृतम् में
लिंग प्रकरण का सर्वनाम पाद।
तृतीय 2.3
लिंग प्रकरण समाप्त

समास प्रक्रिया 3

इस पाद के अन्तर्गत ग्रन्थकार ने समास सम्बन्ध 14 सूत्र कहे हैं। यहाँ पर समासों के परंपरागत वर्गीकरण का अनुपालन तो किया है, परन्तु विभिन्न भेदों की परिभाषा पद की प्रधानता के आधार पर नहीं की है। 3.1.1 सूत्र में विभेदीकरण का आधार प्रस्तुत किया है। 3.1.10 और 11 सूत्र संख्या वाची शब्दों पर आधारित है। समास प्रक्रिया की विशेषता यह है, कि सूत्रों का उल्लेख करने से पूर्व ग्रन्थकार ने इस प्रक्रिया को परिभाषित भी किया है।

शब्दाः संज्ञाविभक्त्यव्ययधातुभेदाच्चतुर्धा भवन्ति ॥ तत्र विभक्तिः केवलं स्वयमर्थदानाभावात्संज्ञया संगत्य कारकार्थं जनयति । धातुना च संगत्यातीतादिकालबोधिनी क्रिया भवतीति ॥ अव्यया हि स्वार्थदाने विभक्तिनिरपेक्षा इति ॥ विभक्तियोगात्संपन्नयोः क्रिययोर्वक्ष्यमाणसमासरीतिश्वरसंयोगो ऽसंभाव्यो ऽस्ति किंत्वव्ययभूतैः कृत्प्रत्ययैरेवेति ॥ संज्ञा तु विशेष्यपदविशेषणपदभेदाद्द्विविधा । तत्र द्वयोर्विशेष्यपदविशेषणपदयोः परस्परसंयोगो युक्तः विशेष्याद्विशेषणस्य बहिरनवस्थानादिति । विशेष्ययोस्तु पदयोः संयोगः कदाचित्संभाव्यः स्यात् । संयोगसंभवे तु पदे विशेष्ये वा भवतां । विशेष्यविशेषणे वा भवतामिति तुल्यमस्ति । कदाचित्त्वसंभाव्यः । इति द्वे स्वरूपे । तयोस्तु तुल्यातुल्यविभक्तिसंयोजनया चत्वारि स्वरूपाणि भवन्तीत्यतः समासाश्चत्वार एव भवितुमर्हन्त्येतदर्थं युक्तायुक्तेति समासलक्षणं सूत्रयति ॥

अनुवाद–

शब्द के चार भेद हैं। ये हैं संज्ञा, विभक्ति, अव्यय और धातु। विभक्ति का स्वयं में कोई अर्थ नहीं होता। संज्ञा के साथ संयुक्त होने के बाद ही विभक्ति कारकीय अर्थ सम्प्रेषित करती है, और धातु के साथ संयुक्त हो कर क्रिया के अतीतादि काल की प्रतीति कराती है। अव्यय विभक्ति निरपेक्ष रह कर अपना अर्थ व्यक्त करता हैं। विभक्ति योग से सम्पन्न क्रिया के साथ समास रीति का संयोग असम्भव है, किन्तु अव्यय भूत कृत प्रत्ययों के साथ सम्भव है। संज्ञा पद में विशेष्य और विशेषण दो प्रकार के पद हो सकते हैं। विशेष्य पद और विशेषण पद का परस्पर संयोग युक्त है, क्योंकि विशेष्य और विशेषण भी स्थिति

प्रसंग से बाहर नही होते। दो विशेष्य पदों का संयोग भी कभी-कभी सम्भव होता है। संयोग होने के बाद भी संयुक्त पद विकल्प से विशेष्य ही रहता है। विशेष्य विशेषण का संयोग तुल्य होते हुए भी कभी-कभी असम्भव है। इन दो स्वरूपों में प्रत्येक के अन्तर्गत तुल्य अथवा अतुल्य विभक्ति संयुक्त होने के कारण चार रूप हो जाते हैं। अतः समास चार प्रकार के संभव हैं। "युक्तायुक्त" सूत्र समास के इन्हीं लक्षणों को स्पष्ट करता है।

व्याख्या–

उपरोक्त कथन समास विषयक परिभाषात्मक व्याख्या है। साथ में यह तथ्य भी सिद्ध किया गया है, कि समास चार प्रकार के हो सकते हैं।

।। युक्तायुक्तपदविभक्तीनां संगतिकृत्समासः ।।१।।

युक्तानां योग्यानामयुक्तानामयोग्यानां पदानां विभक्तीनां च संगतिकृत्संयोगकारकः समासोऽवगन्तव्यः ।। तत्रायुक्तपदसमविभक्तीनां संधायको द्वन्द्वः ।। युक्तपदसमविभक्तीनां योगकारी कर्मधारयः ।। युक्तपदभिन्नविभक्तीनां संधायकस्तत्पुरुषः ।। अयुक्तपदायुक्तविभक्तीनां संयोगकारको बहुव्रीहिरिति ।। संबन्धसंज्ञायां समासे विशेषः । तत्र संबन्धसंज्ञा द्विविधा ।। एका सामान्यसंबन्धसंज्ञा । द्वितीया विशेषसंबन्धसंज्ञा ।। तत्र तदादिशब्दाः सामान्यसंबन्धसंज्ञकाः ।। यथैकस्मिन्नेव मनुष्ये स्वयं वक्तरि सति अहमिति संज्ञा कथ्यते ।। तस्मिन्नेव श्रोतृतया संनिधिस्थेन येन केनचित्प्रोक्ते त्वामिति संज्ञा ।। अश्रोतृतया संनिधिस्थेन प्रोक्ते अयमिति संज्ञा ।। असंनिधिस्थेन येन केनचित्प्रोक्ते स इति संज्ञा ।। द्वापरतया क इति संज्ञा ।। सामान्यतया य इति संज्ञा । इति सामान्यसंबन्धसंज्ञा । अत्र संबन्धषष्ठीतत्पुरुषं विना समासाधातिर्नावधार्येति ।। विशेषसंबन्धसंज्ञापि सामान्यविशेषाभ्यां द्विविधा ।। तत्राद्या शिल्पवशात्सूपादिसंज्ञा तस्मिन्सूपत्वशिल्पस्य समवायिसंबन्धाद्धि तदादिशब्दवदेकेन सूप इत्युच्यते अपरेण स्वर्णकार इत्युच्यत इति विशेषत्वम् । परं तु सर्वैः सूप इत्युच्यत इति सामान्यत्वमिति ।। अपरा पितृपुत्रादिवत्संबन्धसंज्ञा ।। यथा हे पितरिति पुत्रेणैव कथ्यते बैजिकसंबन्धात् नान्येन ।। स एव सहोदरेण भ्रातेति कथ्यते समानोदर्यत्वात् ।। इत्याद्यो विशेषसंबन्धसंज्ञकाः ।। अत्र समासावाप्तिर्धीमद्भिरवधार्या इति ।।

द्वन्द्वोदाहरणं यथा ।। ताफ् गट । आतपान्धकारौ ।। अत्रातपेन साकं न कोऽपि ध्वान्तस्य संबन्धः किंतु समविभक्तित्वात् द्वन्द्वेन संबन्धः संपन्नः ।।

कर्मधारयोदाहरणं यथा ॥ म्वटि गुरि सुतिन् गौव्। स्थूलघोटकेन गतः ॥ अत्र य एव स्थूलः स एव घोटक इति युक्तपदत्वम्। स्थूलेन घोटकेन गत इति समविभक्तित्वमित्यतः कर्मधारयेण संगतिः ॥

तत्पुरुषोदाहरणं यथा ॥ राज़ न्यच्युव्। राजपुत्रः॥ अत्र राज्ञा सह पुत्रस्य योग्यत्वे ऽपि राज्ञः पुत्र इत्यनयोर्भिन्नविभक्तित्वमित्यतस्तत्पुरुषेण संगतिः ॥

बहुव्रीह्युदाहरणं यथा ॥ हूनि बुथ्। श्वमुखः ॥ अत्र श्वन्शब्दमुखशब्दयोर्न च योग्यत्वसंबन्धः नापि श्वन्मुखं यस्य स श्वमुख इति निरुक्त्या विभक्तिसंबन्ध इत्यतो बहुव्रीहिना संगतिः ॥

अनुवाद–

सूत्र 3.1.1

युक्त योग्य पद तथा अयुक्त अयोग्य पद और विभक्ति का संयोग ही समास है। अयुक्त पद और समविभक्ति का संधायक **द्वन्द्व** है। युक्तपद और समविभक्ति संयोजक **कर्मधारय** है। युक्तपद और भिन्न विभक्ति का संधायक **तत्पुरुष** है। अयुक्तपद और अयुक्त विभक्ति का संयोग **बहुब्रीहि** है। सम्बन्ध संज्ञा का समास विशेष होता है। सम्बन्ध संज्ञा दो प्रकार की है। एक सामान्य सम्बन्ध संज्ञा, दूसरी विशेष सम्बन्ध संज्ञा। 'वह' आदि शब्दों को सामान्य संज्ञा कह सकते हैं। वार्तालाप में मनुष्य अपने आप को 'मैं' से अभिहित करता है, तो वह संज्ञा है। समीप बैठे श्रोता को 'तुम' से अभिहित करना भी संज्ञा है। समीप बैठे अश्रोता को 'यह' से अभिहित करना भी संज्ञा है। समीप न बैठे व्यक्ति को 'वह' से अभिहित करना भी संज्ञा है। 'कौन' भी संज्ञा है। सामान्यतया 'जो' भी संज्ञा है। सामान्य संबन्ध संज्ञाएँ यहीं है। ऐसी अवस्था में संबन्ध षष्ठी तत्पुरुष के बिना समास सम्भव नहीं है। विशेष सम्बन्ध संज्ञा में भी सामान्य और विशेष दो प्रकार के हैं। सामान्य स्थिति में पहला सामूहिक सम्बन्ध के शिल्पवश, यथा राँधने की कला आदि। दूसरी स्थिति में 'स्वर्णकार' शब्द का प्रयोग विशेष है। सामान्य स्थिति में सर्वत्र 'वह' आदि शब्द का प्रयोग ही होगा। पिता पुत्रवत सम्बन्ध संज्ञा दूसरी है। समान उदर से उत्पन्न होने के कारण 'सहोदर' अर्थात भाई, इत्यादि।

द्वन्द का उदाहरण – तापु गट्ट 'धूपिया अंधेरा'। धूप के साथ अंधेरे का कोई सम्बन्ध नहीं है, किन्तु दोनों शब्दों में समान विभक्ति होने के कारण द्वन्द सम्बन्ध है।

कर्मधारय का उदाहरण – **म्वटि गुरि सुतिन गव** 'मोटे घोड़े के द्वारा गया'। जो मोटा है, वही घोड़ा है। इसलिए युक्त पद है, और विभक्ति भी सम्भव है। यह कर्मधारय संगति है।

तत्पुरुष का उदाहरण – **राज़ु न्यचुव** 'राजपुत्र' राजा और पुत्र में

योग्यत्व है, परन्तु दोनों में भिन्न विभक्ति के कारण तत्पुरुष संगति है।

बहुब्रीहि का उदाहरण – **हून्य-बुथ** 'कुत्ता जैसा चेहरा'। इस में योग्यत्व सम्बन्ध नहीं है। विभक्ति भी असमान है। इसलिए बहुब्रीहि संगति है।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में समास प्रक्रिया का विश्लेषण वस्तुपरक दृष्टि से किया गया है। सामान्यतया पद की प्रधानता के आधार पर समासों का वर्गीकरण किया जाता है। द्वन्द में दोनों पद समान होते हैं। किसी भी पद का अर्थ प्रधान नही माना जाता। कर्मधारय में उत्तर पद का अर्थ प्रधान होता है, और यही स्थिति तत्पुरुष की भी है। बहुब्रीहि में अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है। यह व्याख्या वस्तुपरक नहीं है। कौल ने युक्त, अयुक्त और योग्य, अयोग्य को समास का अभिलक्षण माना है। इन्हीं के आधार पर समास का वर्गीकरण किया है। इस व्याख्या के अन्तर्गत संज्ञा शब्द का अर्थ विस्तार करते हुए, अभिहित सर्वनामों को, समास प्रक्रिया की दृष्टि से, संज्ञा के अन्तर्गत ही स्थान दिया गया है। भौतिक जगत में भी सर्वनाम सदा ही किसी न किसी संज्ञा की ओर इंगित करता है।

॥ समासमध्ये विभक्तिलोपो व्यञ्जनाद्यवयवस्य ॥ २ ॥

समासे कर्तव्ये पदयोर्मध्ये या विभक्तिस्तस्या व्यञ्जनाद्यवयवस्य लोपो भवति। "एको ह्यवयवो यस्य को ऽसाववयवी भवेत्" इति कथनान्न केवल-व्यञ्जनरूपप्रत्ययस्य लोपः स्यात्॥ छत्यौ गुर्यौ सूतिन् आव्। श्वेतघोटकैरागतः॥ नीलिस् गुरिस्। अत्र स् प्रत्ययस्य केवलत्वान्न लोपः। छौतु शब्दाद् गुरु शब्दाच्च औ सूतिन्प्रत्ययः अनेन मध्यविभक्तेः सूतिन् इति विभक्त्यवयवस्य लोपः। प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् (पा० सू० १।१।६२) इति उवर्णान्तानामिकारः (२।१।३०) इति यत्वम्॥

अनुवाद–

सूत्र 3.1.2

समास प्रक्रिया के अन्तर्गत दो पदों के मध्य जो विभक्ति होती है उस के व्यंजन आदि अवयवों का लोप होता है। **"एको ह्यवयवो यस्य कोऽसाववयवी भवेत्।"** इस कथन के अनुसार केवल व्यंजन रूप प्रत्यय का लोप होता है। **छेत्यव गुर्यव सुतिन आव** 'सफेद घोड़ों से आया'। **नीलिस गुरिस** यहाँ केवल **स** प्रत्यय है, इसलिए उस का लोप नहीं है। **छौत** शब्द और **गुर** शब्द दोनों के साथ **अव सुतिन** प्रत्यय है। प्रस्तुत सूत्र से मध्य विभक्ति **सुतिन**

विभक्ति/अवयव का लोप है। (पाणिनीय सूत्र "प्रत्यय लोपे प्रत्यय लक्षणम्" 1.1.62)। 2.1.30 सूत्र से उवर्णान्त का इकार और फिर यत्व।

व्याख्या–

समास के बीच में विभक्ति के लोप का निर्देश है। लोप में व्यंजन आदि अवयव निर्दिष्ट हैं। उदाहरण से स्पष्ट किया गया है कि **छेत्यव गुर्यव** के मध्य **सुतिन** परसर्ग का लोप सम्भव है परन्तु **नीलिस गुरिस** के मध्य **नीलिस** के **स** का लोप सम्भव नहीं है।

॥ सजातीयविभक्तिकानां विजातीयपदानामन्त्यपदविभक्त्या कथनं द्वन्द्वः ॥३॥

येषां वस्तूनां लोकेषु संयोगो ऽसंभाव्यो ऽपि स्यात्तेष्वपि शब्देषु तुल्यविभक्तिकेषु सत्सु स्वकल्पितरूपान्त्यपदस्य विभक्त्या तेषां कथनं द्वन्द्वसमासो विज्ञेयः ॥ नब़् नम़् फल़् । नभोनखफलम् ॥ एषां पदानां यद्यपि संयोगो ऽसंभाव्यो ऽस्ति तथाप्यनेन संगतिः ॥ वारि कुलि फल ज़ल पुछ़्य़् आव् । वाटिकावृक्षफलजलायागतः ॥ वारूशब्दात् कुलुशब्दात् फल्शब्दात् ज़ल्शब्दाच्च ई पुछ़्य् प्रत्ययः । समासमध्ये (सू० २) इति सूत्रेण मध्यमानां पुछ़्य् इति प्रत्ययावयवानां लोपः। प्रथमयोरुवर्णान्तानामिकार (सू० २।१।३०) इति ऊकारोकारयोरिकारः। इतो लोप (सू० २।१।६) इति इप्रत्ययस्य लोपः। अपरयोर्व्यञ्जनान्तत्वादिकारस्याकारः (२।१।४)॥ माज्य कोर्य। मातापुत्रिके॥ मोल्य पोथुर्। पितापुत्रौ ॥ हश न्वश। श्वश्रूस्नुषे ॥ ज़ाम् काकन्य। ननन्दाभ्रात्रावल्यौ ॥ पच्य कूच्य। पट्टिकाद्दारुणी ॥

अनुवाद–

सूत्र 3.1.3

जिन वस्तुओं का लोक में संयोग असंभव होने पर भी स्व कल्पना से पदों को समान विभक्ति से जोड़ा जाए उन को द्वन्द्व समास की संज्ञा दे सकते हैं। **नब़, नम, फल** 'नभ, नाखून, फल' इन पदों का संयोग असम्भव होते हुए भी प्रस्तुत सूत्र से संगति मानी गई है।

वारि, कुलि, फल, ज़ल पुछ़्य आव 'वाटिका वृक्ष, फल, जल के लिए आया'। वाटिका शब्द, वृक्ष शब्द, फल शब्द और जल शब्द, चारों का प्रत्यय **ई पुछ़्य** है। पूर्व सूत्र से मध्य का **पुछ़्य** प्रत्यय, अवयव सहित लुप्त है। 2.1.30 सूत्र से ऊकार का ईकार। 2.1.6 से **ई** प्रत्यय का लोप। 2.1.4 सूत्र से इकार का अकार। **माजि कोरि** 'माताएँ पुत्रियाँ'। **मॉल्य पोथुर** 'बाप बेटा'। **हश न्वश** 'सास बहु' **ज़ौम काकन्य** 'ननद भाभी'। **पचि कूचि** 'टूट फूट (लकड़ी का)'।

व्याख्या–

द्वन्द समास की परिभाषा में **नब, नम, फल** का उदाहरण देकर असम्भव संगति वाले शब्दों के आधार पर प्रक्रिया को समझाया गया है। मध्य के परसर्ग का लोप **वारि, कुल्य, फल, ज़ल** शब्दों के आधार पर स्पष्ट किया है। द्वन्द्व के उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। सिद्धि के सूत्रों का भी उल्लेख है।

॥ विशेषणविशेष्ययोः पूर्वोत्तरपदस्थयोरेकपदे-नाभिधानं कर्मधारयः ॥४॥

विशेष्यविशेषणयोर्योग्यसंबन्धत्वाद्युक्तपदत्वं विशेष्याद्बहिर्विशेषणस्यानवस्थानात् तयोः समविभक्तित्वमपि नित्यमेव स्यात्तयोर्विशेषणे पूर्वपदस्थे विशेष्ये उत्तरपदस्थे सति एकविभक्त्या यत् कथनं स कर्मधारयसमासो विज्ञेयः ॥ बड्यन् द्यारन छुह् ज़ेनान् । महद्द्रव्याण्यर्जयति ॥ म्वचि च़्वचि सूतिन् । स्थूलपूपेन ॥ त्रिछि कोरि पुछ्य् । दक्षकन्यायै ॥ बजि लरि प्यठ । महद्गृहात् ॥ बज्य ग्रंन्ज़ हुन्द । महत्संख्यायाः ॥ बडिस् गुरिस् प्यठ् । महदश्वोपरि । अत्र प्रथमान्त्ययोः न् स् प्रत्ययोः केवलत्वान्मध्ये ऽपि न लोपः । किंतु न् प्रत्यये सर्वत्र (सू० २।१।१२) इति अकारागमः । उवर्णान्तानामिकार (सू० २।१।३०) इति सर्वत्र इकारः । ऋदन्तटवर्ग (सू०२।१।२२) इत्यादिसूत्रेण क्रमेण टवर्गान्तस्य चवर्गः । शेषं पूर्ववत् ॥

अनुवाद– सूत्र 3.1.4

विशेष्य विशेषण के योग्य सम्बन्ध का युक्त पद जहाँ समान विभक्ति वाले विशेष्य से पृथक विशेषण समस्त पद में एक ही विभक्ति प्राप्त करता है, तथा पूर्व पद में नित्य विशेषण और उत्तर पद में विशेष्य रहता है, उस को कर्मधारय समास समझना चाहिए। **बड्यन् द्यारन छु ज़ेनान** 'बड़ी धन राशि जीतता है' **म्वचि च़्वचि सुतिन** 'मोटी रोटी से'। **त्रुचि कोरि पुछ्य** 'चतुर कन्या के लिए'। **बजि लरि प्यठ** 'बड़े मकान पर'। **बाजि ग्रँज़ हुन्द** 'बड़ी संख्या का'। **बडिस् गुरिस् प्यठ** 'बड़े घोड़े पर'।

प्रथमा होने के कारण दोनों पद **न् स्** प्रत्यय युक्त हैं। मध्य प्रत्यय का लोप नहीं है। 2.1.12 सूत्र से **न** प्रत्यय होने के कारण सर्वत्र अकारागम। 2.1.30 से उवर्णान्त का सर्वत्र इकार। 2.1.22 इत्यादि सूत्रों से **ऊत** अन्त वाले का टवर्ग। टवर्ग का क्रमशः चवर्ग। शेष पूर्ववत्।

व्याख्या–

कर्मधारय समास को स्पष्ट करने के लिए योग्य पदों का सम्बन्ध तथा विभक्ति के समान होने का उल्लेख है। परसर्ग सुतिन, पुछ्य आदि समस्त पद के बाद एक बार ही प्रयुक्त होता है। विभक्ति समस्त पद के दोनों घटकों में संयुक्त होती है। सूत्र के स्पष्टीकरण में पर्याप्त उदाहरण रूप सिद्धि के साथ प्रस्तुत है।

॥ अप्रथमान्ते पूर्वपदे विभिन्नविभक्तिकयोः पदयोर्युगपत्कथनं तत्पुरुषः ॥५॥

संभाव्यसंयोगसत्ताकयोः पदयोर्मध्यात्प्रथमाविभक्तिव्यतिरिक्ते पूर्वपदस्थे सति तुल्यातुल्यप्रथमादिविभक्तिके उत्तरपदस्थे तयोर्यद्युगपत्कथनं स तत्पुरुषसमासो बोध्यः ॥ श्राकि खश्। छुरिकाच्छेदः ॥ टोपि फ्लु। शिरस्त्रप्रान्तम् ॥ सर्प बय सुतिन्। सर्पभयेन ॥ राज न्यचिवि पुछ्य्। राजपुत्राय ॥ बट कोर्य हुन्द। ब्राह्मणकन्यायाः ॥ स्वन ड्ब अन्। स्वर्णपुटकमानय ॥ म्यछि फ्लु थव्। मृत्कटोलं निधेहि ॥

अनुवाद–

सूत्र 3.1.5

पूर्व पद में प्रथमा विभक्ति का व्यतिरेक और उत्तर पद में समान अथवा असमान प्रथमा आदि विभक्ति वाले युग्म का संभाव्य संयोग तत्पुरुष समास है। **श्राकि खश** 'तलवार की काट'। **टोपि फोल** 'टोपी की फुनगी'। **सर्पु बयि सुतिन** 'सर्प भय से'। **राजु न्यचिवि पुछ्य** 'राज पुत्र के लिए'। **बटु कोरि हुन्द** 'पंडित कन्या का'। **स्वनु ड्बु अन** 'स्वर्ण ड़िब्बा लाओ'। **म्यचि फोत थव** 'चिकनी मिट्टी का टोकरा रखो'

व्याख्या–

निर्धारित अभिलक्षणों के आधार पर तत्पुरुष समास को उपयुक्त उदाहरण देकर स्पष्ट किया गया है। सभी उदाहरणों में पूर्व पद सम्बन्ध षष्ठी युक्त हैं, यद्यपि सम्बन्ध षष्ठी के परसर्ग हुन्द आदि का लोप है। परसर्ग लोप होते हुए भी पूर्व पद में कारकीय विकार स्पष्ट है यथा – **श्राख** 'तलवार' से व्युत्पन्न **श्राकि**, **टूप्य** 'टोपी' से व्युत्पन्न **टोपि**, **सरूफ** 'साँप' से व्युत्पन्न **सरपु**, आदि।

॥ उत्तरपदस्थस्य पोशुशब्दस्य पो वः ॥६॥

समासविषये पोशुशब्द उत्तरपदस्थे सति पोशु शब्दसंबन्धिनः पकारस्य

वकारः स्यात्॥ गंग वोन्य । गङ्गाजलम् ॥ व्यथ वोन्य । वितस्ताजलम् ॥ शीन वोन्य । हिमजलम्॥ वुग वोन्य । ओघजलम् ॥ मॉर् वोन्य । मारीजलम् ॥ क्रीर् वोन्य । कूपपानीयम् ॥ रूद वोन्य । वर्षापानीयम् ॥ नाग वोन्य । अखातजलम् ॥ समासे किम् । व्यथि हन्दि पानि सुतिन् । वितस्तायाः पानीयेन ॥

अनुवाद— सूत्र 3.1.6

समास की स्थिति में उत्तर पद के **पोन्य** शब्द के पकार का वकार होता है। **गंग वोन्य** 'गंगा जल', **व्यथ वोन्य** 'वितस्ता का जल–, **शीन वोन्य** 'बर्फ का जल' **वुग वोन्य** 'अकस्मात जल' **मॉर वोन्य** '(बड़े) नाले का जल', **क्रुर्य वोन्य** 'कूप जल', **रूद वोन्य** 'वर्षा का पानी', **नाग वोन्य** 'चश्मे का पानी'। समास में क्यों? **व्यथि हंदि पानि सुतिन** 'वितस्ता के पानी से'।

व्याख्या—

समास के उत्तर पद में **पोन्य** शब्द के **प** का सर्वत्र वकार सिद्ध है। उदाहरणों में स्पष्ट है कि पूर्व पद में भी विकार उत्पन्न होता है। आगामी सूत्र में **पोन्य** शब्द के पूर्व पद की स्थिति का वर्णन है।

॥ पूर्वपदस्थे ञस्यानुस्वारः ॥७॥

समासविषये पोन्यशब्दे पूर्वपदस्थे सति ञकारस्यानुस्वारो भवति ॥ पाँ त्रख् । पानीयद्रोणः ॥ पाँ नोटु । पानीयकुम्भः ॥ समासे किम् । पान्युक त्रख् । पानीयस्य द्रोणः ॥

अनुवाद— सूत्र 3.1.7

समास के अन्तर्गत पूर्व पद में **पोन्य** शब्द होने की स्थिति में **पोन्य** के ञकार का अनुस्वार हो जाता है। **पाँ त्रख** 'पानी की पंसेरी (लगभग पांच किलो)' **पाँ नोट** 'पानी का मटका'। समास में क्यों? **पान्युक त्रख** 'पानी की पंसेरी'।

व्याख्या—

यह पूर्व सूत्र का विस्तार है। समास प्रक्रिया में पूर्व पद में **पोन्य** शब्द **पाँ** में रूपांतरित होता है।

॥ दाञशब्दस्यापि ॥८॥

समासविषये दाञशब्दे पूर्वपदस्थे सति ञकारस्यानुस्वारो भवति ॥ दाँ खार् । धान्यखारी ॥ दाँ फोटु । धान्यकटोलः ॥ अपिशब्दादन्येभ्यो ऽपि ॥ वाँ वोलु । वणिक्कुणं ॥ वाँ कूरु । वणिक्कन्या ॥ समासे किम् । दान्यूक खार् ॥

अनुवाद–

सूत्र 3.1.8

समास के अर्न्तगत पूर्व पद में **दानि** शब्द के निकार का भी अनुस्वार हो जाता है। **दाँ खार** 'धान की खरवार (लगभग 80 किलो)' **दाँ फौत** 'धान का टोकरा'। यह प्रक्रिया और शब्दों में भी सम्भव है। **वाँ द्यौल** 'पंसारी का पोटली बाँधने का तृण' **वाँ कूर** 'पंसारी की कन्या'। समास में क्यों?
दानिच खार 'धान की खरवार'।

व्याख्या–

यह भी पूर्व सूत्र का विस्तार है। समास प्रक्रिया में **दानि** 'धान' शब्द **दाँ** में और **वोन्य** 'पंसारी' शब्द **वाँ** में रूपांतरित होता है।

॥ पंथ्‌र्‌शब्दस्य पुंलिङ्गे च ॥९॥

पंथ्‌र्‌शब्दः स्वयं पुंलिङ्गः समासे ऽपि पुंलिङ्गेन निर्देशे कर्तव्ये पकारस्य वकारो भवति ॥ बोनि वंथ्‌र्‌ [। छायावृक्षपत्रम्] ॥ पोप वंथ्‌र्‌ [। पुष्पपत्रम्) ॥ ख्यलु वंथ्‌र्‌। पद्मगात्रम् ॥ हाक वंथ्‌र्‌। शाकपत्रम् ॥ पुंलिङ्गेन किम्। मुजि पंतुर्‌। मूलिकापत्रम् ॥ ग्वगजि पंतुर्‌। इत्यादि ॥

अनुवाद–

सूत्र 3.1.9

पथुर शब्द स्वयं पुंलिंग है। समास में भी पुंलिंग होने पर पकार के वकार होने का निर्देश है। **बोनि वथुर** 'चिनार का पत्ता', **पोशि वथुर** 'फूल का पत्ता', **ख्यलु वथुर** 'पद्म (पौधे का) पत्र', **हाकु वथुर** 'साग का पत्ता'। पुंलिंग ही क्यों? **मुजि पतुर** 'मूली का पत्ता', **ग्वगजि पतुर** 'शलगम का पत्ता'।

व्याख्या–

पथुर के साथ यदि पूर्व पद भी पुंलिंग होता है, तो **पथुर** के **प** का वकार हो जाता है। स्पष्टीकरण में उदाहरण प्रस्तुत है। पूर्व पद स्त्रीलिंग हो, तो वकार नहीं होता, परन्तु **पथुर** के **थ** का तकार निर्देश है। इस के उदाहरण भी दिए गए हैं।

॥ पंचाहः समासे ॥१०॥

समासविषये पंचाहशब्दस्य पकारस्य वकारो भवति ॥ अकवन्जाह ॥ द्ववन्जाह्। कुनवन्जाह्। इत्यादि ॥

अनुवाद–   सूत्र 3.1.10

समास के अन्तर्गत पंचाह शब्द के पकार का वकार होता है। **अकवंज़ाह** 'इक्यावन', **दुवंज़ाह** 'बावन', **कुनवंज़ाह** 'उनचास'।

व्याख्या–

यहाँ संख्या वाचक शब्द के पकार का वकार निर्दिष्ट है। उदाहरणों के आधार पर यह भी स्पष्ट है, कि **पंचाह** शब्द के **च** का ज़कार होता है। अतिरिक्त उदाहरण – **त्रुवंज़ाह** 'त्रेपन', **पाँच़वंज़ाह** 'पचपन' **सतवंज़ाह** 'सत्तावन'।

॥ शैठः शस्य हः ॥११॥

कुनहैठ्। अकहैठ्। दुहैठ्। इत्यादि ॥

अनुवाद–   सूत्र 3.1.11

कुनहॉठ 'उनसठ', **अकहॉठ** 'इकसठ', **दुहॉठ** 'बासठ' इत्यादि।

व्याख्या–

शेठ शब्द के **श** का हकार होता है। यहाँ पर अन्य अक्षर अर्थात् **ठ** यथावत् रहता है। अतिरिक्त उदाहरण – **त्रुहॉठ** 'त्रेसठ', **पाँच़हॉठ** 'पैंसठ', **सतहॉठ** 'सड़सठ'।

॥ च़्वंट्शब्दस्य म्वंड् आदेशः सस्यव्यतिरिक्ते ॥१२॥

सस्यव्यतिरिक्तस्य वस्तुनः अपूपार्थके च़्वंट्शब्दे उत्तरपदस्थे म्वंड् आदेशो भवति ॥ ठूल-म्वंड्। अण्डापूपः ॥ नदुरि-म्वंड्। बिसापूपः ॥ चामंस्-म्वंड्। आमिक्षापूपः ॥ अद्रक्-म्वंड्। आर्द्रकापूपः ॥ सस्यव्यतिरिक्ते किम् ॥ त्वमुल-च़्वंट्। तण्डुलापूपः ॥ कनक-च़्वंट्। गोधूमापूपः ॥ बुष्कि-च़्वंट्। यवापूपः ॥ सस्ये ऽपि पुंलिङ्गनिर्देशेन म्वंड् आदेश इष्यते ॥ त्वमुल-म्वंड्। अब-म्वंड्। इत्यादि ॥

अनुवाद–   सूत्र 3.1.12

अनाज के सम्बन्धी शब्दों को छोड़ कर उत्तर पद के रोटी अर्थ में प्रयुक्त **च़ोट** शब्द का **मोंड़** आदेश है। **ठूल मोंड** 'अंडे की टिक्की (आमलेट)' **नदुस्य मोंड** 'कमल ककड़ी की टिक्की' **चा़मनि मोंड़** 'पनीर की टिक्की', **अदरख मोंड़** 'अदरक की टिक्की'।

अनाज सम्बन्धी शब्द छोड़ कर क्यों? **तोमलु च़ोट** 'चावल के आटे

की रोटी' **कनुक् चॊट** 'गेहूँ के आटे की रोटी' **वशक् चॊट** 'जौ के आटे की रोटी'। अनाज सम्बन्धी समस्त पद यदि पुंलिंग है, तो **मॊंड़** आदेश हो सकता है। **तॊमल् मॊंड़, अब् मॊंड़।**

व्याख्या–

अनाज को छोड़ कर शेष खाद्य पदार्थों के उत्तर पद में **चॊट** के बदले **मॊंड़** प्रयुक्त होता है। निर्मित पदार्थ पूर्णतया रोटी के रूप का नहीं होता। आलू से भी इस तरह का व्यंजन सम्भव है, और उस को **ओलव-मॊंड** 'आलू की टिक्की' कहेंगे। स्पष्टीकरण में प्रस्तुत दो उदाहरण **तॊमल्-मॊंड़** और **अब्-मॊंड़** इस प्रकार के अर्थ की अपेक्षा नहीं करते।

॥ पूर्वोत्तरपदस्थभेद्यभेदकोभयविशिष्टान्य-पदबोधको बहुव्रीहिः ॥१३॥

विशेष्ये पूर्वपदस्थे विशेषणे चोत्तरपदस्थे सति तदुभयेन विशिष्टस्यान्यपदस्य ज्ञानविधायको बहुव्रीहिर्ज्ञेयः ॥ यड-बॊड् । वृहदुदरः ॥ दारि-ज्यूठ् । दीर्घश्मश्रुः ॥ कन-च्वॊट् । छिन्नकर्णः ॥ दु-वहुर् । द्विवार्षिकः ॥ दु-वॊरिश् । द्विवार्षिकी ॥ सत-बॊचु । सप्तकुटुम्बः ॥ पॉंच़-प्वतुर् । पञ्चपुत्रः ॥ हूनि-बुथ् । श्वमुखः ॥ अत्र मध्यपदलोपो बुद्धिमतावधार्यः ॥

अनुवाद–

सूत्र 3.1.13

पूर्व पद के विशेष्य और उत्तर पद के विशेषण से अन्य पद की विशेषता बोधक समास बहुब्रीहि है। **यड्-बॊड** 'ज़्यादा खाने वाला', **दारि-ज़्यूठ** 'लम्बी दाड़ी वाला, **कनु-चॊट** 'कान कटा', **दुवुहुर** 'दो वर्ष का', **दुवॅरिश** 'दो वर्ष की'। **सतु-बॊच़** 'सात जनों का (कुटुम्ब)' **पॉंच़-पॊतुर** 'पांच पुत्र वाला' **हून्य-बुथ** 'कुत्ते जैसा मुंह वाला'। बुद्धिमान यहाँ मध्य पद का लोप स्वयं समझेंगे।

व्याख्या–

3.1.1 सूत्र में बहुब्रीहि समास की व्याख्या की गई है। प्रस्तुत सूत्र में अतिरिक्त उदाहरण दिए गए हैं। उदाहरणों से स्पष्ट है, कि कौल ने बहुब्रीहि का क्षेत्र व्यापक माना है। पूर्व पद संख्यावाची होने की अवस्था में द्विगु समास की सम्भावना होती है। कौल ने इस को भी बहुब्रीहि के अन्तर्गत ही रखा है।

॥ द्विरुक्तेन च ॥१४॥

एकेनैव पदेन द्विरुक्तेन विशिष्टस्यान्यपदस्यावबोधकश्च बहुव्रीहिर्विज्ञेयः ॥

स च स्त्रीलिङ्गः ॥ ठ्वल ठ्वल् । शृङ्गाशृङ्गि ॥ टप टफ् । खुराखुरि ॥ ठूँक ठूँख् । शृङ्गाशृङ्गि ॥ चप चफ् । दन्तादन्ति ॥

अनुवाद– सूत्र **3.1.14**

एक पद दो बार बोलने की स्थिति में अन्य पद की विशेषता बोध समास भी बहुब्रीहि है। ऐसा स्त्रीलिंग में होता है। **ठ्वलु-ठ्वल** 'सिरों की टकरें', **टपु-टफ** 'घोड़ों की टाप' **ठूँकु-ठँख** 'सींग भिड़ाना' **चपु-चफ** 'दाँतों से काटना'।

व्याख्या–

कौल ने पदों की पुनरुक्ति से सम्प्रेषित अर्थ बहुब्रीहि के क्षेत्र में ही रखा है।

इति

शारदा क्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीर शब्दामृतं

में समास प्रक्रिया समाप्त 3

तद्धित प्रक्रिया-4

तद्धित प्रक्रिया के अन्तर्गत ईश्वर कौल ने भाषा की विपुल शब्द सम्पदा का विस्तृत विवेचन किया है। प्रत्ययों तथा उत्तर अथवा पूर्ववर्ती शब्दों की सहायता से नई संकल्पनाओं का उद्भव हुआ है। प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए ग्रन्थकार ने 193 सूत्रों का उल्लेख किया है। पहला सूत्र **पूत** प्रत्यय पर आधारित है। पाणिनी ने भी तद्धित की व्याख्या करते हुए प्रथम सूत्र में अपत्य (संतति) शब्द का प्रयोग किया है (देखें अष्टाध्यायी सूत्र 4.1.92)। ईश्वर कौल ने प्रकृति की दृष्टि से चार प्रकार के तद्धितों का वर्णन किया है। 1. संज्ञा प्रकृति वाले यथा – **कोलपूत** 2. सर्वनाम प्रकृत्ति वाले यथा – **तीत्युन, यीत्युन**। 3. विशेषण प्रकृति वाले यथा – **तुरि हौत**। 4. अव्यय प्रकृति वाले यथा – **ह्युह**। ये सभी भेद तद्धित प्रक्रिया के विस्तार में यत्र-तत्र देखे जा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त ईश्वर कौल ने रिश्ते–नाते की शब्दावली का भी व्युत्पतिमूलक अध्ययन प्रस्तुत किया है, तथा प्रत्ययों के आधार पर ही जन्म एवं विवाह द्वारा स्थापित सम्बन्धों की शब्दावली का निरूपण किया है। संख्यावाची शब्दों की विवेचना तो की ही है, साथ ही संख्या समूह सम्बन्धी प्रत्यय अथवा पद भी प्रस्तुत किए हैं। यह विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है, कि ग्रन्थकार ने इस प्रक्रिया के अन्तर्गत मात्र प्रत्यय ही निरूपित नहीं किए। प्रत्ययों के अतिरिक्त उन शब्दों का भी वर्णन किया है, जो तद्धित का कार्य करते हैं। आधुनिक भाषा शास्त्र की दृष्टि से जिन प्रत्ययों को डईटिक्स''(daitix) कहा जाता है, उनका उल्लेख भी ग्रन्थकार ने इसी प्रक्रिया के अन्तर्गत किया है। इस सन्दर्भ में 4.1.170 सूत्र में **हना** प्रत्यय का उल्लेख किया गया है। यह प्रत्यय वस्तु को प्रियतर बनाता है।

॥ जातेरपत्यार्थे पूतु ॥१॥

अपत्ये ऽभिधेये सति जातेर्जातिवाचकाच्छब्दात् पूतु प्रत्ययो भवति ॥ दर-पूतु। कौल-पूतु। तिक्कि-पूतु। इत्यादि ॥ दर् कौल् त्युकु इति जातिवाचकाः शब्दाः। अनेन सूत्रेण पूतु प्रत्ययः। व्यञ्जनान्तानामकारागमः (सू०२।१।३६)।

तृतीये युकारोपधाया इत्वम् (सू० २।१।७६) । उवर्णान्तानामिकारः (सू० २।१।३०) एवमुत्तरत्र ज्ञेयम् ॥ जातिशब्दग्रहणात्पशुपक्ष्यादीनां जातिर्गृह्यते ॥ काव्-पूतु । काकपोतः ॥ पछिन्-पूतु । पक्षिपोतः ॥ क्कर्-पूतु । कुक्कुटपोतः ॥ कट्-पूतु । मेषपोतः ॥ म्यॉं-पूतु । मेषपोतः ॥ कोतर्-पूतु । कपोतपोतः ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.1**

पुत्र अभिधेय होने पर जाति के जातिवाचक शब्द के साथ **पूत** प्रत्यय संलग्न होता है। **दर-पूत, कौल-पूत, तिक्य-पूत** इत्यादि। **दर, कौल, त्युक** ये जातिवाचक शब्द हैं। प्रस्तुत सूत्र से **पूत** प्रत्यय। 2.1.36 सूत्र से व्यंजनान्त शब्दों में अकारागम। 2.1.76 सूत्र से तीसरे उदाहरण में उपधा के युकार का इत्व। 2.1.30 सूत्र से उकारान्त शब्दों का इकार। ऐसा अन्यत्र भी होता है। जाति शब्द के अन्तर्गत पशु-पक्षी आदि की जातियाँ भी आती हैं। **काव-पूत** 'शिशु कौआ', **पछिन-पूत** 'शिशु पक्षी', **क्वकर-पूत** 'चूज़ा', **कट्ट-पूत** 'भेड़ शावक', **म्यॉं-पूत** 'भेड़ शावक' **कोतर-पूत** 'शिशु कबूतर आदि'।

व्याख्या–

जातिविशेष के शिशु अथवा शावक को अभिहित करने के लिए जाति नाम के साथ **पूत** प्रत्यय संयुक्त होता है। वर्तमान में इस प्रत्यय की सम्भावना मानवेतर जातियों में ही है। मानव जातियों में इस का प्रयोग बहुत कम है। इस के स्थान पर **बचि** 'बच्चा' प्रत्यय अधिक स्वीकार्य है। यथा – **पंडित-बचि** 'पंडित पुत्र', **मीर-बचि** 'मीर-पुत्र', **हून** 'कुत्ता' **ब्रोर** 'बिल्ला' आदि मानवेत्तर जातियों में भी **पूत** के स्थान पर **बचि** का प्रयोग अधिक है। यथा– **हून्य-बचि** 'पिल्ला', **ब्रॉस्य-बचि** 'बिल्ला शावक' शब्दान्त के प्रकार्यात्मक मात्रिक स्वर की छटा इस सूत्र में भी स्पष्ट है। **त्युक** शब्द के अन्त में मात्रिक स्वर की संकल्पना है, इसीलिए **तिक्य** पद सिद्ध है। यही बात **हून** 'कुत्ता' और **ब्रोर** 'बिल्ला' के व्युत्पति रूप **हून्य** और **ब्रॉस्य** पदों में भी सिद्ध है। पाद टिप्पणी में भी इस तथ्य का उल्लेख है।

॥ न संज्ञायाः ॥२॥

पित्रादिनाम्नः परः पूतु प्रत्ययो न भवतीति परिभाष्यते ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.2**

पिता आदि संज्ञाओं के साथ **पूत** प्रत्यय संयुक्त नहीं होता। यह स्पष्ट है।

[१ क्कर् कोतर् इत्यादीनि पदानि उकारान्तशब्दव्युत्पन्नान्यपि कछलादि (सू० २।१।७४) गणपाठगतत्वात्साधूनि विज्ञेयानि ॥]

व्याख्या–

जातिवाचक संज्ञा के अतिरिक्त अन्य संज्ञाओं में **पूत** प्रत्यय संयुक्त नहीं हो सकता। **मोल** 'पिता' **बब** 'दादा' **माम** 'मामा' जैसे रिश्ते-नाते के शब्द **पूत** प्रत्यय स्वीकार नहीं करते।

॥ चूरशब्दाद्बालक्रीडायां च ॥३॥

पित्रादौ स्तनन्धयं क्रीडयति सति चूरशब्दात् पूतु प्रत्ययो भवति । च-शब्दाच्चौरपुत्रे ऽभिधेये ऽपि ॥ चूर-पूतु । चौरपोतः ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.3**

स्तन पान करते समय स्तन के साथ खेलते हुए शिशु के लिए **चूर** शब्द प्रयुक्त होने पर **पूत** प्रत्यय होता है। सामान्य अवस्था में **चूरपूत** का अर्थ 'चोर का पुत्र' है।

व्याख्या–

लाड़-प्यार के कारण यदि शिशु के लिए **चूर** 'चोर' शब्द का प्रयोग किया जाए तो उस के साथ **पूत** प्रत्यय की सम्भावना रहती है। सामान्यतया **चूरपूत** समस्तपद का अर्थ चोर का पुत्र है। परन्तु बच्चे के साथ खेलते हुए दुलार में उस के लिए भी **चूरपूत** पद का प्रयोग किया जा सकता है। बाल लीलाओं में कृष्ण को 'माखन चोर' कहना भी इसी प्रकार का लाड़ प्यार है।

॥ मिज़्शब्दात्स्वार्थे ॥४॥

चुम्बनवाचकात् मिज़्शब्दात्स्वार्थ एव पूतु प्रत्ययो भवति ॥ मिज़-पूतु । चुम्बनम् ॥ मिज़् इत्यस्य म्वज़् च कथ्यते ॥ तेन । म्वज़-पूतु । चुम्बनम् ॥ इत्यपि भवति ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.4**

चुम्बन वाचक **मिज़पूत** 'चुम्बन'। **मिज़** को **म्वज़** भी कहते हैं। इस प्रकार **म्वज़पूत** 'चुम्बन' भी सम्भव है।

व्याख्या–

वर्तमान व्यवहार में चुम्बन के लिए **मिज़** शब्द व्याप्त नहीं है। **म्वन्य** शब्द का प्रयोग व्याप्त है, और उस के साथ **पूत** प्रत्यय संयुक्त हो सकता है। इस प्रकार **म्वन्यपूत** का अर्थ, शिशु के सन्दर्भ में, 'एक स्निग्ध चुम्बन हो सकता है।

॥ अनादरापत्यार्थे ऽधमशब्देभ्यः कठ् ॥५॥

अनादरेण क्रोधेन च अपत्ये अभिधेये सति अधमशब्देभ्यः परः कठ् प्रत्ययो भवति ॥ चूर-कठ्। चौरपुत्रः॥ गान-कठ्। विटपुत्रः ॥ पोग-कठ्। नाशपुत्रः ॥ वाज-कठ्। सूदपुत्रः ॥ रास-कठ्। जारजः ॥ क्ठ-कठ्। कुपुत्रः ॥ सुशब्दादपि दृश्यते ॥ स्व-कठ्। सुपुत्रः ॥ स्वख-कठ्। सुखपुत्रः ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.5

अनादर और क्रोध में पुत्र के लिए अधम शब्द के पीछे **कठ** प्रत्यय सम्भव है। **चूर-कठ** 'चोर का पुत्र', **गान-कठ** 'लम्पट का पुत्र' **पोग-कठ** 'दुर्भाग्य द्योतक पुत्र', **वाज़-कठ** 'बावर्ची-पुत्र, **रास-कठ** 'नचैया का पुत्र', **क्वकठ** 'कुपुत्र'। सुशब्द भी देखिए – **स्व-कठ** 'सुपुत्र', **स्वख-कठ** 'सुखदायक पुत्र'।

व्याख्या–

कठ का मूल अर्थ 'भेड़' है, परन्तु प्रत्यय की स्थिति में इसका अर्थ पुत्र हो जाता है। यह स्पष्ट है, कि **कठ** प्रत्यय युक्त पद अधमता का द्योतक है। इसलिए **कठ** को निरादर का प्रत्यय मान सकते हैं। **स्वकठ** 'सुपुत्र' जैसे सम्मान जनक प्रयोग वर्तमान में व्याप्त नहीं है।

॥ स्वस्वकार्योद्यमेनाभिधेये कंटु ॥६॥

जातिवाचकानां शिल्पवाचकानां च शब्दानां निजनिजकार्यस्योद्यमेनापत्ये ऽभिधेये सतिं कंटु प्रत्ययो भवति ॥ बट-कंटु। ब्राह्मणपुत्रः॥ दर-कंटु। कौल-कंटु। स्वनर-कंटु। स्वर्णकारपुत्रः ॥ मनर-कंटु। शाङ्खिकपुत्रः ॥ छान-कंटु। तक्षकपुत्रः ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.6

जाति और शिल्प सम्बन्धी शब्द के निजी अर्थ में पुत्र के लिए **कौट** प्रत्यय सम्भव है। **बटकौट** 'ब्रह्मण पुत्र', **दरकौट, कोलकौट, स्वनरकौट** 'सुनार का पुत्र', **मनरकौट** 'मनियार का पुत्र' **छानकौट** 'बढ़ई का पुत्र'।

व्याख्या–

पुत्र के अर्थ में **कौट** प्रत्यय सामान्य अर्थ व्यंजक है। यह प्रत्यय आदर अथवा अनादर अभिव्यक्त नहीं करता। पूर्व पद निम्नता बोधक अर्थ व्यक्त करने की अवस्था में समस्त पद भी उसी श्रेणी का हो जाता है। यथा – **बेछिकौट** 'भिखारी का बच्चा'। दुतकारने के अर्थ में भी इस शब्द का प्रयोग सम्भव है।

॥ मूँष्शब्दाच्च ॥७॥

महिषीवाचकस्य मूँष्शब्दस्यापत्ये अभिधेये कंट् प्रत्ययो भवति॥ मँष कंट्। महिषः॥ मूँष्शब्दात् कंट् प्रत्ययः। व्यञ्जनान्तानामकारागमः (सू० २।१।३६)। मूँष ऐत्वम् (सू० २।३।२८) इति सूत्रेण ऊकारस्य ऐत्वम्॥

भैंस वाचक शब्द **मूँश** का बच्चा अभिधेय होने पर **कौट** प्रत्यय सम्भव है। **मॉशिकौट** 'कटड़ा' **मूँश** शब्द के साथ **कौट** प्रत्यय। 2.1.36 सूत्र के अनुसार व्यञ्जनान्त में अकारागम। 2.3.28 सूत्र के अनुसार उकार का ऐत्व।

व्याख्या–

वर्तमान भाषा में भैंस के लिए **मूँष्** शब्द का व्यवहार नहीं है। इस के स्थान पर **मॉश** प्रचलित है, **कौट** प्रत्यय संलग्न होने पर अन्त के अकार का ुकार हो जाता है। यथा– **मॉशु कौट** समास प्रक्रिया में अंतिम अकार का ुकार प्रायः सर्वत्र है। ऐकार वाले आगत शब्दों को छोड़ कर, वर्तमान भाषा में ऐकार की कोई सत्ता नहीं है।

॥ पित्रोः सहजापत्यीयसंबन्धे पुंसि तुरु ॥८॥

पित्रोर्जनयितुर्जनन्याश्च सहजौ पितृभ्राता पितृभगिनी मातृभ्राता मातृभगिनी च तयोः पुमपत्यसंबन्धिनि संबन्धे अभिधेये सति तत्तच्छब्दात् तुरु प्रत्ययो भवति॥ प्वफतुरु बायु। पैतृष्वस्रीयः॥ मासतुरु बोयु। मातृष्वस्रीयः॥ मामतुरु बोयु। मातुलपुत्रः॥

पिता एवं माता के भाई तथा बहन के पुत्र अर्थात पिता के भाई का, पिता की बहन का तथा माता के भाई का, माता की बहन का पुत्र अभिधेय होनेपर सम्बन्ध शब्द के साथ **तुर** प्रत्यय संयुक्त होता है। **प्वफतुर बोय** 'फुफेरा भाई', **मासतुर बोय** 'मौसेरा भाई', **मामतुर बोय** 'ममेरा भाई'।

व्याख्या–

प्वफ 'बुआ', **मास** 'मौसी', **माम** 'मामा', रिश्ते के इन शब्दों के साथ **तुर** प्रत्यय लगने के उपरान्त सम्बन्ध शब्द **बोय** 'भाई' प्रयुक्त होता है। ताऊ अथवा चाचा के लिए भाषा का शब्द है **प्यतुर**। **तुर** संयुक्त होने पर **प्यतुर** का रूप **पितुर** सिद्ध है। यथा – **पितुर-बोय** 'चचेरा भाई'।

॥ स्त्रियां तुर् ॥९॥

तेषामेव शब्दानां स्त्र्यपत्यसंबन्धिनि संबन्धे अभिधेये सति तुर् प्रत्ययः स्यात् ॥ प्वफतुर् ब्यन। पैतृष्वस्रीया ॥ मासतुर् ब्यन । मातृष्वस्रीया ॥ मामतुर् ब्यन । मातुलपुत्रिका ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.9

इन्हीं शब्दों के पुत्री सम्बन्धी सम्बन्ध अभिधेय होने पर तुर प्रत्यय संयुक्त होता है। **प्वफतुर ब्यनि** 'फुफेरी बहन', **मासतुर ब्यनि** 'मौसेरी बहन', **मामतुर ब्यनि** 'ममेरी बहन'।

व्याख्या–

भाषा का सर्वसामान्य नियम है, कि स्त्रीलिंगीकरण में वर्तुलाकार स्वर अवर्तुलाकार हो जाते हैं। इसी नियम के अधीन **तुर** प्रत्यय **तुर** बन जाता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। अगला सूत्र भी इसी प्रकार का विस्तार है।

॥ पितृशब्दात्तुर्लोपः ॥१०॥

स्पष्टम् ॥ पितुर् बोयु। पैतृव्यः ॥ पितुर् ब्यन । पितृव्यपुत्री ॥ एवं प्वफतुर् बॉयि काकन्य् । पैतृष्वस्रीयभार्या ॥ मासतुर् बॉयि काकन्य् । मातृष्वस्रीयभार्या ॥ मामतुर् बॉयि काकन्य् । मातुलपुत्रभार्या ॥ पितुर् बॉयि काकन्य् । पैतृव्यभार्या ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.10

सूत्र स्पष्ट है। **पितुर बोय** 'चचेरा भाई', **पितुर ब्यनि** 'चचेरी बहन'। एवं **प्वफतुर बॉय काकन्य** 'फुफेरी भाभी', **मासतुर बॉय काकन्य** 'मौसेरी भाभी' **मामतुर बॉय काकन्य** 'ममेरी भाभी **पितुर बॉय काकन्य** 'चचेरी भाभी।

व्याख्या–

4.1.8 सूत्र की व्याख्या में उल्लेख किया गया है, कि **तुर** संयुक्त होने पर **प्यतुर** 'ताऊ/चाचा' का रूप **पितुर** सिद्ध है, प्रस्तुत सूत्र में **प्यतुर** के **र** का लोप निर्दिष्ट है, तथा पूर्व अंश **प्य** का रूप **पि** हो जाता है। व्युत्पन्न पद **पितुर** है। यथा – **पितुर बोय** 'चचेरा भाई', अथवा **पितुर ब्यनि** 'चचेरी बहन'।

वर्तमान में **बॉय काकन्य** 'भाभी' का उच्चारण **बैयकाकन्य** है।

॥ ब्यञ्बोयुशब्दाभ्यां पुमपत्ये थुर्न्त्ययोर्नवौ च ॥११॥

ब्यञ्बोयुशब्दयोः पुमपत्ये ऽभिधेये सति थुर् प्रत्ययो भवति अन्त्याक्षरयोश्च क्रमेण नकारवकारादेशौ भवतः ॥ ब्यन थुर् । भागिनेयः ॥ बाब थुर् । भ्रातृव्यः ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.11

ब्यन्य और **बोय** शब्द का पुत्र अभिधेय होने पर **थुर** प्रत्यय संयुक्त होता है तथा अन्तिम अक्षर का क्रम से नकार अथवा बकार हो जाता है। **ब्यनथुर** 'भाँजा', **बाबथुर** 'भतीजा'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में 'भाँजा' और 'भतीजा' के कश्मीरी शब्दों की निरुक्ति स्पष्ट की गई है। **ब्यनि** 'बहन' तथा **बोय** 'भाई' के साथ **थुर** प्रत्यय संयुक्त हो जाता है। प्रत्यय संयुक्त होने पर, वर्तमान भाषा में, **ब्यनि** का **ब्यन** तथा **बोय** का **बाब** हो जाता है। इस रुपांतरण के बाद **ब्यनथुर** ''भाँजा' और **बाबथुर** 'भतीजा' सिद्ध है।

॥ स्त्र्यपत्ये ज़ो नवौ च ॥१२॥

तयोर्व्यञ्बोयुशब्दयोः स्त्र्यपत्ये ऽभिधेये सति ज़ प्रत्ययो भवति अन्त्याक्षरयोश्च नकारवकारौ भवतः ॥ ब्यनज़ । भागिनेयी ॥ बावज़ । भ्रातृपुत्री ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.12

ब्यन्य और **बोय** इन दो शब्दों की पुत्री अभिधेय होने पर **ज़** प्रत्यय संयुक्त होता है, तथा अन्तिम अक्षर का नकार अथवा वकार हो जाता है। **ब्यनज़** 'भाँजी' **बावज़** 'भतीजी'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। यहाँ पर भाँजी और 'भतीजी' के कश्मीरी शब्दों की निरुक्ति स्पष्ट की गई है। **ज़** प्रत्यय का वर्तमान स्वरूप **ज़ु** है। यह प्रत्यय संयुक्त होने पर **ब्यनि** शब्द का **ब्यन** तथा **बोय** शब्द का **बाव** हो जाता है। व्युत्पन्न शब्द **ब्यनज़ु** 'भाँजी' और **बावज़ु** 'भतीजी' है। वास्तव में व्युत्पन्न रूप बहुवचनीय है। परन्तु एकवचन में भी इसी का प्रयोग किया जाता है।

॥ द्रियुशब्दस्य द्यारादेशश्च ॥१३॥

देवरवाचकस्य द्रियुशब्दस्य पुंस्त्यपत्ये ऽभिधेये पूर्वोक्तौ प्रत्ययौ भवतः। द्रियुशब्दस्य च द्यार आदेशः स्यात् ॥ द्यारथुर् । देवरपुत्रः ॥ द्यारज । देवर-पुत्री ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.13

देवर वाचक **द्रुय** शब्द के पुत्र अथवा पुत्री अभिधेय होने पर पूर्वोक्त प्रत्यय ही संलग्न होते हैं। **द्रुय** शब्द का **द्यार** आदेश है। **द्यारथुर** 'देवरपुत्र' **द्यारज़** 'देवरपुत्री'।

व्याख्या–

देवर अथवा जेठ दोनों के लिए **द्रुय** शब्द ही प्रयुक्त होता है। इन के पुत्र अथवा पुत्री अभिधेय होने पर पूर्वोक्त प्रत्यय **थुर** अथवा **ज़** संयुक्त होते हैं। **द्रुय** का रूपांतरण **द्यार** हो जाता है। व्युत्पन्न रूप **द्यारथुर** और **द्यारज़** है।

॥ तदस्यास्तीत्यलादयः ॥१४॥

तत् अस्ति अस्य इत्यस्मिन्नर्थे वक्ष्यमाणा अलादयः प्रत्ययाः स्युः ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.14

इस के उपरांत इसी अर्थ में वर्णित **अल** आदि प्रत्यय हैं।

व्याख्या–

आगे आने वाले सूत्र **अल** आदि प्रत्ययों पर आधारित हैं। अधिकांश शब्दों में यह प्रत्यय संज्ञा को विशेषण में परिणत करते हैं। विश्लेषण आगामी सूत्रों में प्रस्तुत है।

स्वमूर्तिवर्तमानद्रव्यगुणवत्त्वाभिधेये ऽल् ॥१५॥

प्राणिनो ऽप्राणिनो वा निजमूर्तौ वर्तमानं यद्द्रव्यं गुणो वा तद्वत्त्वेन तस्मिन्नभिधेये सति द्रव्यशब्दाद्गुणशब्दाच्च अल् प्रत्ययो भवति । न चात्र गुणशब्देन शुक्लादिगुणा गृह्यन्ते इति ॥ दार्यल् । श्मश्रुलः ॥ गोंछ्ल् । गुम्फवान् ॥ ढखल् । काकपक्षवान् ॥ बबल् । स्तनवती ॥ कोछल् । कोष्ठवान् ॥ ह्रङ्गल् । शृङ्गी ॥ हूँरल् । शृङ्गघाती ॥ ढुलल् । शृङ्गघाती ॥ ग्रवल् । दन्तघाती ॥ फशल् । वेशवान् ॥ ग्यङ्गल् । वलिनः ॥ स्यसल् । सीमा-वान् ॥ प्वंदल् । क्षुतवान् ॥ मछ्यच्चल् । तिलकालकः ॥ च्चासल् । कासवान् ॥ च्चूँटल् । पर्दी ॥ साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.15

प्राणी अथवा अप्राणी के निज अर्थ में उसी का द्रव्य अथवा गुण अभिधेय होने पर द्रव्य और गुण व्यक्त करने के लिए **अल** प्रत्यय संयुक्त होता है। यहाँ पर गुण शब्द से शुक्ल आदि गुण अभिप्रेत नहीं है।

दार्यल 'दाढ़ी वाला', **गोंछ़ल** 'मूँछ वाला', **ड्खल** 'काकपक्षकेश वाला' **बबल** 'स्तनवती' **कोछल** 'कोठी वाला' **ह्यंगल** 'सींग वाला', **ठूँकल** 'टक्कर मारने वाला' **ठ्वलल** 'सिर से टक्कर मारने वाला' **च़पल** 'काट खाने वाला' **फशल** 'चकले वाला' **ग्यनल** 'झुर्रीदार' **स्यसल** 'मस्सेदार' **प्यंदल** 'छींके मारने वाला' **मछिट्यचल** 'चितकबरा' **च़ासल** 'खाँसने वाला' **चुँटल** 'पादने वाला' सिद्धि पूर्ववत है।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में सभी **अल** प्रत्यय संज्ञा को विशेषण में परिणत करते हैं। **दॉर** 'दाढ़ी' के साथ **अल** प्रत्यय संयुक्त होने पर उपधा के ऑकार का आकार हो जाता है, तथा **च़ॊप** 'दाँत से काटना' के साथ **अल** प्रत्यय संयुक्त होने पर ऑकार का अकार हो जाता है। यहाँ पर विकल्प में ऑकार का वत्व भी सम्भव है। यथा– **च़्वपल** शेष उदाहणों में परिवर्तन नहीं होता है। अर्थात **च़ास** 'खाँसी', **गोंछ** 'मूँछ' आदि संज्ञाओं में **अल** प्रत्यय कोई रूपांतरण नहीं करता, हाँ इन को विशेषण तो बनाता ही है।

॥ हाचो ऽभियोक्तरि ॥१६॥

अभियोक्तृदर्थे हाच् शब्दादल् भवति न त्वभियोज्यार्थे॥ हाचल्। अभियोक्ता॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.16

हाच़ शब्द के साथ **अल** प्रत्यय संयुक्त होने पर अर्थ होता है 'आरोप लगाने वाला' 'आरोपी' नहीं। **हाच़ल** 'आरोप लगाने वाला'।

व्याख्या–

पूर्व सूत्र में **अल** प्रत्यय विशेष्य को विशेषण बनाता है। अर्थात् गुण विशेष संज्ञा का ही बन जाता है, किसी दूसरे का नहीं। **हाँछ़** (हाच़) 'आरोप' के साथ **अल** प्रत्यय जुड़ने से गुणविशेष दूसरे का बना जाता है। **हाँच़ल** का अर्थ होगा 'किसी दूसरे पर आरोप मढ़नेवाला'।

ग्रन्थकार के इस विश्लेषण से यह बात स्पष्ट हो जाती है, कि वे अर्थ की बारीकियों के प्रति पूर्णतया संवेदनशील थे। आगामी सूत्रों में भी अर्थ की ऐसी ही छटाओं का वर्णन है।

॥ ज़्यवः सूचके ॥१७॥

ज़्यव् शब्दात्सूचकार्थे अल् प्रत्ययो भवति ॥ ज़्यवल् । सूचकः ॥ न तु जिह्वावान् । किंतु तत्र । ज़्यविसंस्त् । वा ज़्यविवोल् (सू० २४) इति भवति ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.17

ज़्यव शब्द के साथ अल प्रत्यय सूचक (बड़बोला) अर्थ सम्प्रेषित करता है। **ज़्यवल** 'बड़बोला'। इस का अर्थ 'जीभवाला' नहीं होता। उस अर्थ में **ज़्यवि सोंस्त** अथवा **ज़्यवि वोल** (सूत्र 24) होता है।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में भी **अल** प्रत्यय एक अन्य अर्थ छटा को प्रदर्शित करता है। **ज़्यव** 'जीभ' के साथ **अल** संयुक्त होने पर समस्त पद **ज़्यवल** का अर्थ 'बड़बोला' अथवा 'बात को बढ़ा-चढ़ा कर बोलने वाला' होता है।

॥ ब्यञ्कूरूशब्दाभ्यामश्लीले ॥१८॥

स्पष्टम् ॥ ब्यञल् । कोर्यल् ॥ अश्लीले किम् । ब्यञवोल् (सू० २४)। भगिनीवान् ॥ कोरिवोल् । कन्यावान् ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.18

सूत्र स्पष्ट है। **ब्यन्यल, कोरयल**। अश्लील क्यों? **ब्यनिवोल** (सूत्र 24) 'बहन वाला'। **कोरिवोल** 'लड़की वाला'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में **अल** प्रत्यय द्वारा नितांत भिन्न अर्थ व्यंजित होता है। **ब्यनि** 'बहन' तथा **कूर** 'लड़की' के साथ **अल** प्रत्यय व्यभिचार की ओर इंगित करता है। वर्तमान व्यवहार में **ब्यन्यल** अथवा **कोर्यल** का इस अर्थ में व्यवहार अव्याप्त है। यह तथ्य ध्यान देने योग्य है, कि **कूर** शब्द का ऊकार **अल** प्रत्यय के कारण ओकार में परिणत होता है।

॥ दांरूशब्दाद्यागमो वा ॥१९॥

स्पष्टम् ॥ दांरियाल् । श्मश्रुलः ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.19

सूत्र स्पष्ट है **दाँर्याल** 'दाढ़ी वाला'।

व्याख्या–

4.1.15 सूत्र में **दॉर** 'दाढ़ी' शब्द का उल्लेख है। प्रस्तुत सूत्र यह स्पष्ट करता है, कि **दार्यल** 'दाढ़ी वाला' के विकल्प में **दॉरयाल** भी सम्भव है। वर्तमान भाषा में **दॉरयाल** का प्रयोग नहीं किया जाता है, अर्थात 'या' का आगम सम्भव नहीं है।

॥ क्वचिल्लदपि ॥२०॥

द्रव्यगुणवत्त्वे ऽभिधेये सति क्वचित् लद् प्रत्ययो ऽपि भवति। स च प्रायो दोष एव ॥ फकलद् । दुर्गन्धः ॥ छ्वकलद् । विदग्धः ॥ छ्वकलद् । व्रणी ॥ बक-लद् । भषणवान् ॥ द्वखलद् । दुःखी ॥ द्रागलद् । दुर्भिक्षहतः ॥ क्वचिद्ग्रहणात् । गोछ्लद् । डखलद् । बबलद् । इति न भवति । किंतु ग्यञ्जलद् । स्यसलद् । चासिलद् । इत्यादीनां द्वयमेव भवति ॥

अनुवाद–   सूत्र 4.1.20

द्रव्य गुण समेत अभिधेय होने पर कहीं कहीं **लद** प्रत्यय भी होता है और वह प्रायः दोष के लिए ही होता है। **फकलद** 'दुर्गन्ध वाला' **छ्वकलद** 'घायल' **छ्वकलद** 'विदग्ध' **बकलद** 'बकवासी' **द्वखलद** 'दुखी' **द्रागलद** 'अकाल पीड़ित'।

कहीं कहीं उक्त द्रव्य गुण ग्रहण करने के अर्थ में–
गोछ़लद, डखलद, बबलद, ये सम्भव नहीं हैं किन्तु **ग्यनिलद, स्यसलद, चा़सिलद** इत्यादि में दोनों रूप सम्भव हैं।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र **लद** प्रत्यय का वर्णन करता है। उक्त प्रत्यय मूल शब्द का अवगुण प्रदर्शक है। दिए गए उदाहरणों के मूल शब्द हैं– **फख** 'दुर्गन्ध', **छ्वख** 'घाव', **छ्वख** 'ताव', **बख** 'बकवास' **द्वख** 'दु:ख' **द्राग** 'अकाल'। इन सभी शब्दों के साथ **लद** प्रत्यय अवगुण द्योतक माना जाएगा। 4.1.15 सूत्र में वर्णित कुछ उदाहरणों के साथ भी इसी प्रकार का अर्थ व्यंजित होता है। यथा – **ग्यनिलद** 'झुर्रियों से त्रस्त' **स्यसिलद** 'मसों से त्रस्त' **चा़सिलद** 'खाँसी से त्रस्त', परन्तु **गोंछ़लद, डखलद** आदि सम्भव नहीं है।

फख 'दुर्गन्ध' और **बख** 'बकवास' शब्दों के साथ **लद** प्रत्यय अन्त के महाप्राण व्यंजन को अल्पप्राण बनाता है, जो भाषा का प्रायः एक सामान्य नियम है।

॥ फश उन्मादिनि ॥२१॥

फशशब्दादुन्मत्तस्यार्थे लद् भवति ॥ फशलद् । उन्मत्तकरः ॥ अन्यत्र । फशल् । चेशकारी ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.21

फश शब्द के साथ **लद** प्रत्यय 'उन्मत्तता' का अर्थ सम्प्रेषित करता है। **फशलद** 'उन्मादी'। अन्यत्र **फशल** 'चकले वाला'।

व्याख्या—

वर्तमान भाषा में **फश** शब्द का प्रयोग अस्वीकृत कार्य के लिए किया जाता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा काम करता है, जो उपयुक्त न हो तो उसे कह सकते हैं, **यि कुस फश ओय** 'तुम्हारी मति क्यों मारी गई।' बार-बार ऐसा अस्वीकृत कार्य करने वाले को **फशलद** कह सकते हैं। उन्माद के अर्थ में फशलद का प्रयोग नहीं के बराबर है। **फशल** का उल्लेख 4.1.15 सूत्र में किया गया है।

॥ पज़ुअपज़ुशब्दाभ्यां योरु ॥२२॥

आभ्यां शब्दाभ्यां सहितत्वे वाच्ये योरु प्रत्ययो भवति ॥ पंज़ियोरु । सत्यवक्ता ॥ अपंज़ियोरु । असत्यवक्ता ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.22

इन दोनों शब्दों का अर्थ सहितत्त्व में व्यक्त करने के लिए **योर** प्रत्यय संयुक्त होता है। **पंज़्योर** 'सत्यवक्ता' **अपंज़योर** 'असत्यवक्ता'।

व्याख्या—

पोज़ 'सत्य' और **अपुज़** 'असत्य के साथ **योर** प्रत्यय संयुक्त होने पर ये दोनों शब्द विशेषण बन जाते हैं। **योर** मूल शब्द को रूपांतरित करता है तथा **पोज़** का व्युत्पन्न रूप **पंज़्य** और **अपुज़** का **अपंज़्य** हो जाता है। **योर** की संयुक्ति में समस्त पद व्यक्ति का गुण अथवा अवगुण प्रदर्शित करता है। **रोसुल छु पंज़्योर** 'रसूल सत्यवादी है'। **बुलबुल छु अपंज़्योर** 'बुलबुल असत्यवादी है।

॥ मंन्ज़्युमुशब्दाद्दूतार्थे ॥२३॥

दूतस्यार्थे मंन्ज़्युमुशब्दात् योरु प्रत्ययो भवति ॥ मंन्ज़्युमुयोरु । दूतः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.23

दूत के अर्थ में **मंज़्युमयोर** 'दूत'।

व्याख्या–

वर्तमान भाषा में मॅज़्युमयोर का अर्थ है 'बिचौलिया'। यह शब्द शादियाँ तय करने वाले व्यक्ति के लिए ही प्रयुक्त होता है। अन्य किसी कार्य को सम्पन्न कराने वाले के लिए नहीं।

॥ मूर्तिग्राह्यवस्तुवत्त्वे वोलुग्राकौ ॥२४॥

निजमूर्तेर्भिन्नैर्वस्तुभिः सहितत्वे अभिधेये ग्राक्वोलु प्रत्ययौ भवतः॥ धारवोलु। धनवान्॥ लरिवोलु। गृहवान्॥ शायिवोलु। स्थानवान्॥ कोरिवोलु। कन्यावान्॥ न्यचिव्विवोलु। पुत्रवान्॥ गुपनवोलु। गोपशुवान्। इत्यादि॥ एवं। लरिग्राख्। इत्यादिस्वरूपाणि भवन्ति॥ गरशब्दस्य गृहाध्यक्षार्थे ऽकारलोप इष्यते॥ गर्वोलु। गृहाधिपः॥ अन्यत्र। गरवोलु। गृहवान्॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.24

अपने से भिन्न किसी वस्तु के सहित अभिधेय होने पर ग्राक अथवा वोल प्रत्यय संलग्न होता है। द्यारवोल 'धनवान', लरिवोल 'मकान वाला' शायिवोल 'स्थान वाला' कोरिवोल 'लड़की वाला' न्यचिव्यवोल 'लड़के वाला' गुपनवोल 'ग्वाला' इत्यादि। इस के अतिरिक्त लरिग्राख इत्यादि स्वरूप होते हैं। 'ग्रहस्वामी' होने के अर्थ में गर शब्द के अकार का लोप इच्छित है। गर्वोल 'गृहस्वामी' अन्यत्र गरवोल 'घर वाला'।

व्याख्या–

6.1.29 सूत्र में भी वोल प्रत्यय की व्याख्या है। इस के अतिरिक्त 9.1.28 सूत्र में वोल और ग्राख दोनों प्रत्ययों का उल्लेख है। ग्राख प्रत्यय का प्रयोग अब कम होता है। आधुनिक भाषा इस सन्दर्भ में केवल वोल का प्रयोग करती हैं।

॥ जीवादिभ्यथाकारिभ्यो हंतु ॥२५॥

यैर्यैरान्तरीयैर्बाह्यैर्वा वस्तुभिर्जीवादिनैव पीडा भुज्यते न तु देहेन तत्साक्षित्वे अभिधेये सति हंतु प्रत्ययः स्यात्॥ न्यंदुरिहंतु। निद्राहतः॥ त्रेपहंतु। तृषाहतः॥ बुछहंतु। बुभुक्षाहतः॥ क्रूदहंतु। कोपाहतः॥ गुमहंतु। स्वेदाहतः॥ तापहंतु। आतपाहतः॥ तुरिहंतु। शीताहतः॥ आरहंतु। दयाहतः॥ छवहंतु। [जलकणाहतः॥] तावहंतु। [दाहहतः॥] इति द्रव्यमन्यस्मिन्नपि विशेषणीक्रियते। तावहंचू बुतराथ्। [दाहहता पृथ्वी इति॥]

अनुवाद— सूत्र 4.1.25

जीव आदि द्वारा आन्तरिक अथवा बाह्य वस्तुओं से पीड़ित होने की अवस्था को **हॊत** प्रत्यय से व्यक्त कर सकते हैं। यह पीड़ा शारीरिक नहीं होती। **न्यंदरिहॊत** 'नींद से आहत', **त्रेशिहॊत** 'प्यासा', **ब्वछिहोत** 'भूख से आहत', **क्रूदहॊत** 'क्रोध से आहत', **गुमहॊत** 'पसीने से आहत', **तापहॊत** 'धूप से आहत', **तुरिहॊत** 'ठंड़ से आहत', **आरहॊत** 'दयनीय' **लवहॊत** 'जलकणों से आहत', **तावहॊत** 'ताप से आहत'। दूसरे शब्द के साथ आने पर यह समस्त पद विशेषण का काम करता है। यथा – **तावहॅच़ बुतराथ** 'ताप से आहत पृथ्वी'।

व्याख्या—

हॊत प्रत्यय में किसी भी जीव की मानसिक अवस्था व्यक्त करने की क्षमता है। अतिरिक्त उदाहरण **मायिहॊत** 'प्रेम से लबालब'। **हॊत** युक्त समस्त पद को विशेषण के रूप में प्रयुक्त करने पर स्त्रीलिंग विशेष्य के कारण तकार च़कार में परिवर्तित होता है यथा – **मायिहॅच़ मॊज** 'प्रेम से लबालब माँ'। स्त्रीलिंग रूप में तकार का च़कार रूपांतरण उसी प्रकार भाषा का सर्वसामान्य नियम है, जैसे ओकार का ऑकार रूपांतरण है।

॥ मंद्छमोद्मानेभ्यो ब्यंतु ॥२६॥

एभिस्त्रिभिः शब्दैः सहितत्वे अभिधेये ब्यंतु प्रत्ययो भवति॥ मंद्छब्यंतु। मन्दाक्षयुतः॥ मोद्ब्यंतु। आदरयुतः॥ मानब्यंतु। मानयुतः॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.26

इन तीन शब्दों के साथ सहित भाव व्यक्त करने के लिए **ब्यॊत** प्रत्यय संयुक्त होता है। **मंदछि ब्यॊत** 'लज्जा से आवृत' **मोद ब्यॊत** 'आदर से आवृत' **मान ब्यॊत** 'मान से आवृत'।

व्याख्या—

वर्तमान भाषा में **मंदछ** 'लज्जा' का प्रयोग व्यापक है। **मान** 'मान' व्यापक नहीं है। **मोद** 'आदर' का प्रयोग अव्याप्त है। प्रत्यय **ब्यॊत** बोलचाल में और गद्य साहित्य में नहीं के बराबर प्रयुक्त किया जाता है, परन्तु पद्य साहित्य में यदा-कदा दिखाई देता है।

॥ बर्साशब्दादाढ्यार्थे ॥२७॥

स्पष्टम्॥ बर्साब्यंतु। आढ्यः॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.27

सूत्र स्पष्ट है। **बर्साब्यॊत** 'धनाढ्य'।

व्याख्या–

'धन' के अर्थ में **बर्सा** का प्रयोग वर्तमान नही है। इसलिए **बर्साब्योत** जैसा समस्त पद भी सम्भव नहीं है। ग्रंथ इस प्रकार के अनेक उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो वर्तमान भाषा में लुप्त हो गए हैं। शब्द सम्पदा की दृष्टि से ऐसे लुप्त प्राय शब्दों का अनुरक्षण महत्त्वपूर्ण हैं।

॥ दन्दनस्तोरनिष्टार्थे आन् ॥२८॥

दंदूनस्त्शब्दाभ्यामनिष्टार्थाभ्यां सहितत्वे ऽभिधेये सति आन् प्रत्ययो भवति ॥ दंदान् । दन्तुरः ॥ नस्तान् । दुर्नासिकः ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.28**

दन्द और **नस्त** शब्दों के अनिष्ट सहित अर्थ अभिधेय होने पर **आन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **दन्दान** 'लम्बे अथवा बाहर की तरफ आए हुए दाँतों वाला'। **नस्तान** 'भद्दी नाक वाला'।

व्याख्या–

दन्द 'दाँत' शब्द के साथ **आन** प्रत्यय संयुक्त होने पर **दन्दान** समस्त पद 'अशोभनीय दाँतों वाले' व्यक्ति को इंगित करता है। यह स्पष्ट है, कि ग्रन्थकार के समय की भाषा में **नस** 'नाक' के साथ भी **आन** प्रत्यय इसी तरह का अर्थ सम्प्रेषित करता रहा होगा। वर्तमान में इस का प्रयोग नहीं है। **नस** 'नाक' शब्द के अन्त के तकार की उपस्थिति प्रत्यय के साथ होती है, अन्यथा नहीं।

॥ उ् वा ॥२९॥

आभ्यां शब्दाभ्यां विकल्पेन उ् प्रत्ययो भवति ॥ नेस्तु । दंदु ॥ पक्षे । नस्तूर । दंदूर ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.29**

इन दो शब्दों के साथ विकल्प में **उ** प्रत्यय भी सम्भव है। **नौस्त दौन्द** वैकल्पिक शब्द हैं, **नस्तूर**, **दन्दूर**।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। इस में यह दर्शाया गया है, कि **नस** 'नाक' और **दन्द** 'दाँत' के साथ ऐसा ही अर्थ स्पष्ट करने के लिए अन्त में मात्रिक स्वर संयुक्त हो सकता है। उपधा के अकार का औकार में परिवर्तन मात्रिक स्वर की सत्ता सिद्ध करती है। अर्थात **नस** का **नौस्त** और **दंद** का **दौन्द** मात्रिक स्वर का प्रभाव है। **नस्तूर** और **दन्दूर** दो वैकल्पिक शब्द भी दिए गए

हैं, जिन का वर्तमान प्रयोग नहीं है।

॥ यड्शब्दाद्वूढावल् ॥३०॥

स्पष्टम् ॥ यडल् । तुन्दिलः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.30

सूत्र स्पष्ट है। **यडल** 'तोंद वाला'।

व्याख्या—

'पेट' के लिए भाषा का शब्द है **यड**। तोंद वाले व्यक्ति को **यडल** कहते हैं। इसी अर्थ को सम्प्रेषित करने के लिए सूत्र में उक्त प्रत्यय का उल्लेख किया गया है। आगामी सूत्र में **यड** शब्द की अतिरिक्त व्याख्या प्रस्तुत है।

॥ जिघत्सावलोपश्च ॥३१॥

स्पष्टम् ॥ यद्ल् । कुक्षिंभरिः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.31

सूत्र स्पष्ट है। **यडल** 'पेटू'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। **यडल** का दूसरा अर्थ 'पेटू' है। सूत्र इसी तथ्य का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करता है। इस अर्थ में उपधा का अकार ॲकार में परिणत हो जाता है। इसी कारण वर्तमान उच्चारण में **यॅडल** ही 'पेटू' का अर्थ सम्प्रेषित करता है। इस का उच्चारण कभी कभी **यॅडुल** भी किया जाता है।

॥ हरशब्दात्ताच्छील्ये ॥३२॥

अस्माच्छब्दात्ताच्छील्ये अर्थे अल् प्रत्ययो ऽकारलोपश्च स्यात् ॥ हॅर्ल् । कलहशीलः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.32

इस शब्द के स्वभावगत अर्थ में भी **अल** प्रत्यय संयुक्त होता है। यहाँ पर अकार का लोप भी है। **हरल** 'झगड़ालू'।

व्याख्या—

हर 'झगड़ा' के साथ उक्त **अल** प्रत्यय संयुक्त होने पर समस्तपद **हरल** व्यक्ति के झगडालु स्वभाव को व्यक्त करता है। विकल्प में **हॅरल** का प्रयोग भी सम्भव है। सूत्र के स्पष्टीकरण में अकार के लोप का कथन है। वास्तव में यह

अकार अँकार में अभिव्यक्त है।

॥ जतुशब्दात्तद्वति ॥३३॥

स्पष्टम् ॥ जछ्ल् । रोमवान् ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.33

सूत्र स्पष्ट है। जचल 'रोमवान'।

व्याख्या–

शरीर के बालों के लिए भाषा में दो से अधिक शब्द हैं। 'केश के लिए **मस** और शरीर के प्रकट अंगों के बालों के लिए **वाल** शब्द हैं। **जथ** शब्द पशुओं के शरीर पर होने वाले बालों के लिए प्रयुक्त होता है। प्रशंसा हीनता के अर्थ में मानव शरीर पर होने वाले बालों को भी **जथ** कह सकते हैं। **अल** प्रत्यय संयुक्त होने पर थकार का चकार हो जाता है और **जचल** शब्द सिद्ध है।

॥ वँसो जैवातृके ऽट् ॥३४॥

वँसशब्दादायुष्मत्त्वे अभिधेये अट् प्रत्ययो भवति ॥ वँसट् । आयुष्मान् ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.34

वाँस शब्द के साथ दीर्घायु अभीष्ट होने की स्थिति में **अट** प्रत्यय संयुक्त होता है। **वाँसट** 'दीर्घायु वाला'।

व्याख्या–

प्रस्तुत उत्तरवर्ती सूत्र में भी **अट्** प्रत्यय वर्णित है। **वाँस** के साथ **अट** प्रत्यय दीर्घायु बोधक है। वर्तमान प्रयोग **वाँसट** का उच्चारण **वाँसठ** है।

॥ रुषस्ताच्छील्ये ॥३५॥

रुषशब्दात्ताच्छील्यार्थे अट् प्रत्ययो भवति ॥ रुषट् । ईर्ष्यालुः ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.35

स्वभाव के अर्थ में **रुष** शब्द के साथ **अट** प्रत्यय संयुक्त होता है। **रुषट** 'ईर्षालु'।

व्याख्या–

पूर्ववर्ती सूत्र की व्याख्या में उल्लेख है, कि वर्तमान में **अट** के स्थान पर **अठ** का प्रयोग है, और व्याख्यायित शब्द **रुशठ** सिद्ध है।

॥ अंछिशब्दाद्दुर्दृष्टाविट् ॥३६॥

दुर्दृष्टौ पुरुषे ऽभिधेये सति अंछिशब्दात् इट् भवति ॥ अछीट् । दुर्दृष्टिः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.36

कुदृष्टि वाला पुरुष अभिधेय होने पर **अंछ** शब्द के साथ **इट** संयुक्त होता है। **अछीट** 'कुदृष्टि वाला'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र तथा उत्तरवर्ती दो सूत्रों में **ईट** प्रत्यय का वर्णन है। सूत्रों में इसी को **इट** कहा गया है। **अंछ** के साथ **ईट** प्रत्यय व्यक्ति का अवगुण स्पष्ट करता है। सूत्र के स्पष्टीकरण में 'पुरुष' शब्द स्त्रियों को इस अवगुण से मुक्त करता है। यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि स्त्रियाँ ही अधिक ईर्ष्यालु होती हैं।

वर्तमान में **अंछ** 'आँख' उच्चरित है। इसलिए प्रत्यय **ईट** है, जैसा कि उदाहरण से स्पष्ट है।

॥ रूपलूबाभ्यामतिशये ॥३७॥

रूपलूबशब्दयोर्भूरित्वे ऽभिधेये सति इट् प्रत्ययो भवति ॥ रूपिट् । अतिसुन्दरः ॥ लूबिट् । लोलुभः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.37

रूप और **लूब** शब्दों में अतिशयता व्यक्त करने के लिए **इट** प्रत्यय संयुक्त होता है। **रूपीट** 'अति सुन्दर' **लूबीट** 'अति लोभी'।

व्याख्या—

इन शब्दों के साथ **ईट** प्रत्यय गुण अथवा अवगुण की अधिकता व्यक्त करता है। **रूप** 'सुन्दरता' और **लूब** 'लोभ' के साथ **ईट** प्रत्यय **रूपीठ** 'अति सुन्दर' और **लूबीठ** 'अति लोभी' बनाता है। आज की भाषा में **लूबीठ** का व्यवहार सीमित है।

॥ ज़्यवश्च ॥३८॥

ज़्यविट् । मुखरः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.38

सूत्र स्पष्ट है। **ज़्यवीठ** 'बड़ बोला'

व्याख्या–

4.1.17 सूत्र की व्याख्या में उल्लेख है, कि लक्षणा में ज़्यव शब्द का प्रयोग अधिक वाक-व्ययता में किया जाता है। **ज़्यव** का मूल अर्थ 'जीभ' गौण होकर लक्षणार्थ महत्त्वपूर्ण हो जाता है। प्रस्तुत सूत्र इसी अर्थ की पुष्टि करता है। **ज़्यव** 'जीभ' के साथ **ईट** प्रत्यय **ज़्यवीठ** का अर्थ हो जाता है 'बड़बोला'। वर्तमान में **ज़्यवीठ** के स्थान पर **ज़्यवज़्यूठ** का प्रयोग व्यापक है। **ज़्यूठ** प्रत्यय का मूल अर्थ है – 'लम्बा'। समस्त पद का अर्थ हो जाता है – 'लम्बी जीभ वाला'। अर्थात बहुत बोलने वाला।

॥ ल्यकल्शब्दादूठ् ॥३९॥

स्पष्टम् ॥ ल्यकलूठ्। अश्लीलदः ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.39

सूत्र स्पष्ट है। **ल्यकलूठ** 'अपशब्द बोलने की आदत वाला'।

व्याख्या–

अपशब्द (गाली) के अर्थ में भाषा का शब्द है **ल्यख**। इस शब्द से मात्र यौन सम्बन्धी अपशब्द अभिप्रेत हैं। गाली के लिए दूसरा शब्द भाषा में **वोहवोह** है। इस से यौन रहित अपशब्द अभिप्रेत हैं। **ल्यकल** 'गालियाँ देने वाला' ल्यख शब्द का विशेषण है। **ल्यकलूठ** शब्द का वर्तमान में प्रयोग नहीं है।

॥ भावे ॥४०॥

इत उत्तरं ये प्रत्ययास्ते भावे विज्ञेयाः ॥ भावस्तु संज्ञाभावधातुभावभेदाद्द्विविधः। संज्ञाभावे अधिकारोऽयम्। धातुभावस्तु कृत्प्रक्रियायां निरूपयिष्यते ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.40

उत्तरवर्ती प्रत्यय भावे प्रत्यय हैं। संज्ञाभाव और धातुभाव, भाव के दो भेद हैं। प्रस्तुत सूत्र संज्ञाभाव का अधिकार सूत्र है। धातुभाव को कृत्प्रक्रिया के अन्तर्गत निरूपित किया जाएगा।

व्याख्या–

प्रस्तुत अधिकार सूत्र में व्याकरणिक भाव को स्पष्ट किया गया है। उत्तरवर्ती सूत्रों में भाववाचक संज्ञा के प्रत्ययों का उल्लेख है। धातु सम्बन्धी ये प्रत्यय कृदन्त प्रक्रिया के अन्तर्गत वर्णित है।

॥ विशेष्यायत्तानामर् ॥४१॥

विशेष्यस्य भेद्यस्य अधीना ये विशेषणशब्दास्तेषां भावे अर् प्रत्ययो भवति। उदाहरणान्यग्रे सर्वत्र ॥ रुतुशब्दस्य तु देहशुभतायामेव भावप्रत्ययः स्यादिति वेद्यम् ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.41

विशेषण शब्दों के साथ भावे रूप में **अर्** प्रत्यय संयुक्त होता है। आगामी सूत्रों में उदाहरण सर्वत्र प्रस्तुत हैं। **रुत** शब्द के साथ यह प्रत्यय शरीर कुशलता द्योतित करता है।

व्याख्या—

अर प्रत्यय की विस्तृत विवेचना उत्तरवर्ती सूत्रों में स्पष्ट की गई है।

॥ त्र्यक्षराधिकानामार् ॥४२॥

ते नित्यविशेष्यनिघ्नाः शब्दाश्चेत् त्र्यक्षरास्तदधिका वा स्युस्तदा आर् प्रत्ययो भवति ॥ व्वज़ज्यार् । रक्तता ॥ म्वकुज्यार् । मुक्तता ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.42

तीन अथवा इस से अधिक अक्षरों वाले विशेषण शब्दों के साथ **आर** प्रत्यय संयुक्त होता है। **व्वज़जार** 'अरुणाई'। **म्वकुजार** 'मुक्तता'।

व्याख्या—

व्वजुल 'अरुण (लाल)' **म्वकुल** 'मुक्त' शब्दों के साथ **आर** प्रत्यय संयुक्त होने पर शब्दान्त के 'ल' का जकार होता है। व्युत्पन्न प्रक्रिया में यह रूपांतरण सर्वत्र है। उपधा के उकार का अकार भी निर्दिष्ट है। अतः व्युत्पन्न शब्द **व्वज़जार** और **म्वकजार** सिद्ध हैं। सूत्र में इस बात का निर्देश भी है, कि तीन अथवा इस से अधिक अक्षरों वाले शब्द के साथ **अर्** के स्थान पर **आर** प्रत्यय संयुक्त होता है।

॥ टोठोर्वा ऽनागमो ऽन्त्यस्वरलोपश्च ॥४३॥

टोठुशब्दाद्विकल्पेन आर् प्रत्ययः अन् आगमश्च भवति अन्त्यस्योकारस्य च लोपः स्यात् ॥ टाठनार् । प्रियता ॥ अत्र लिङ्गस्य अनागमव्यवहितत्वात् टवर्गान्तानां च (सू० ४९) इत्यनेन ठकारस्य छकारो न भवति किंतु तवर्गान्तानामप्रसिद्ध (सू० ५०) इत्यनेन नकारस्य ञकारः। पक्षे । टाछ्यर् । प्रियता ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.43

टोठ शब्द के साथ विकल्प से **आर** प्रत्यय तथा **अन** का आगम और अन्त के ओकार का लोप होता है। **टाठन्यार** 'प्यार'। इस शब्द में **अन** आगम अव्यय के कारण, 4.1.49 सूत्र के अनुसार अन्त के टवर्ग वर्ण अर्थात ठकार का छकार नहीं होता किन्तु 4.1.50 सूत्र के अनुसार नकार का **न्यकार** होता है। **टाछ्र** 'प्यार' शब्द का प्रयोग भी सम्भव है।

व्याख्या–

टोठ 'प्यारा' शब्द त्रिअक्षरी नहीं है, परन्तु इस के साथ **आर** प्रत्यय ही संयुक्त होता है, और उपधा के ओकार का आकार हो जाता है। विकल्प में **टाछर** 'प्यार' भी संभव है।

॥ क्वचित्पूर्व एव ॥४४॥

त्र्यक्षराधिकानां क्वचित्स्थाने पूर्वः अर् प्रत्यय एव भवति ॥ अपज़र् । असत्यता ॥ क्र्हन्यर् । कार्ष्ण्यम् ॥ काच्वर्यर् । कपिलता ॥ कावर्यर् । नीलता ॥ कृपन्यर् । कार्पण्यम् ॥ कायर्यर् । असारता ॥ खोवर्यर् । वामता ॥ ग्यश्याम्यर् । श्यामता ॥ च़तर्यर् । चतुरता ॥ बिसम्यर् । विषमता । इत्यादि ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.44

कुछ स्थानों पर तीन अथवा उस से अधिक अक्षरों वाले शब्द के साथ पूर्व वर्णित **अर्** प्रत्यय ही संयुक्त होता है। **अपज़र** 'असत्यता'। **क्रेहन्यर** 'कालापन'। **काच़र्यर** 'भूरापन'। **कावर्यर** 'नीलापन'। **कृपन्यर** 'कृपणता'। **कायर्यर** 'आलस्यपन'। **खोवर्यर** 'वामता' **ग्यश्याम्यर** 'श्यामता'। **च़तर्यर** 'चतुरता' **बिसम्यर** 'विषमता' इत्यादि।

व्याख्या–

स्पष्टीकरण में वर्णित उदाहरण **अर** प्रत्यय युक्त हैं। यहाँ मूल शब्द त्रिअक्षरी हैं – **अपुज़** 'असत्य' **क्रुहुन** 'काला'। **काचुर** 'भूरा', **कावुर** 'नीली', **कृपुन** 'कृपण', **कायुर** 'आलसी', **खोहवुर** 'वाम (बायां), **ग्यशोम** 'श्याम', **च़ौतुर** 'चतुर', **ब्यसोम** 'विषम'। **अर** प्रत्यय संयुक्त होने से उपधा के स्वर का अकार में परिवर्तन भी स्पष्ट है। 4.1.42 सूत्र के अनुसार यहाँ **आर** प्रत्यय होना चाहिए। प्रस्तुत सूत्र में निर्देश है, कि वर्णित शब्दों तथा ऐसे ही शब्दों के साथ **अर** प्रत्यय ही संयुक्त होगा। इस दृष्टि से यह अपवाद का सूत्र है।

॥ हशो ऽश्लीले ॥४५॥

हशशब्दादश्लीलेऽर्थे अर् भवति ॥ हशर् । गालिदानेन श्वश्रूत्वम् ॥ अश्लीले किम् । हशतोनु । श्वश्रूत्वम् ॥ (सू० ६३) तोनु प्रत्ययः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.45

अश्लील अर्थ में **हश** शब्द के साथ अर प्रत्यय संयुक्त होता है। **हशर** 'सासूपन (गाली के अर्थ में)' अश्लील क्यों? **हशितोन** 'सासूपन' **तोन** प्रत्यय का वर्णन 4.1.63 सूत्र में है।

व्याख्या—

हश 'सास' शब्द के साथ **अर** प्रत्यय **हशर** शब्द का प्रयोग गाली के रूप में हो सकता है। **तोन** प्रत्यय इस शब्द के साथ सन्तुलित अर्थ प्रेषित करता है। **हशतोन** 'सासूपना' सभ्य शब्द माना जाएगा।

॥ क्वुगशुभ्यां वा लोपः ॥४६॥

आभ्याम् शब्दाभ्यां विकल्पेन भावप्रत्ययलोपः स्यात् ॥ क्व्यर् । कुब्जता ॥ गश्यर् । जाल्मता ॥ पक्षे । क्वु । कुब्जता ॥ गशु । जाल्मता ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.46

इन दो शब्दों में विकल्प से भावे प्रत्यय का लोप होता है। **क्व्ब्यर** 'कुबड़ापन', **गश्यर** 'अनसुनापन' विकल्प में — **कौब** 'कुबड़ापन', **गौश** 'अनसुनापन'।

व्याख्या—

यह विकल्प निम्नलिखित वाक्य से स्पष्ट हो सकता है।
तमिस छु क्वब्यर/कौब द्रामुत 'उस को कुबड़ापन निकला है।' इस अर्थ में हिन्दी का सामान्य वाक्य होगा, 'वह कुबड़ा है', अथवा 'वह कुबड़ा हो गया है।'

॥ कवर्गान्तानां चवर्गादेशः क्रमात् ॥४७॥

तेषां विशेष्यनिघ्नानां द्व्यक्षराणां त्र्यक्षराणां च अन्त्यस्य उकारविशिष्टस्य कवर्गीयाक्षरस्य क्रमेण चवर्गीयाक्षरादेशो भवति ॥ निकु । निच्यर् । क्षुद्रत्वम् ॥ टेकु । टच्यर् । तैक्ष्ण्यम् ॥ हंखु । हछ्यर् । शुष्कता ॥ त्र्युखु । त्रिछ्यर् । दक्षता ॥ द्वंगु । द्वज्यर् । दुर्लभता ॥ स्वंगु । स्वज्यर् । सुलभता ॥ निकुशब्दाद्विशेष्यायत्तानामर् (सू० ४१) अनेन ककारस्य चकारः । उवर्णान्तानामिकारः (सू० २।१।१०) यत्वम् । त्र्युखुशब्दोपधायुकारस्य इकारः (सू० २।१।७८) । सर्वत्र यत्वम् ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.47

द्विअक्षर और त्रिअक्षर वाले विशेष्य शब्दों के अन्तिम अक्षर, उकार युक्त कवर्ग का क्रम से चवर्ग आदेश होता है। **निकु, निच्यर** 'दुबलापन' **टोक, टचर** 'तीक्षणता' **होख, हवछर** 'सूखापन', **त्रुख, त्रिछर** 'दक्षता', **द्रोग, द्रव्जर** 'महँगाई', **स्रोग, स्रव्जर** 'सस्तापन'। 2.1.30 सूत्र से उवर्णान्त का इकार तथा यत्व। 2.1.76 सूत्र से त्रिअक्षरी के उपधा के उकार का इकार। सर्वत्र यत्व।

व्याख्या—

भाषा का सर्वव्यापी नियम है, कि व्युत्पन्न प्रक्रियाओं में कवर्ग का क्रम से चवर्ग हो जाता है। इसी नियम को प्रस्तुत सूत्र में उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है। इस सर्वव्यापी नियम का अपवाद भी है। अगले सूत्र में इसी अपवाद के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं।

॥ न च्वकुखूँखुशब्दयोः ॥४८॥

च्वकुशब्दखूँखुशब्दसंबन्धिनोः ककारखकारयोश्चवर्गादेशो न भवति ॥ च्वकु । च्वक्यर् । अम्लत्वम् ॥ खूँखु । खूँख्यर् [। अवनाटवद्वचनम्] ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.46

चोक और **खूँख** शब्दों में अन्त के ककार और खकार का चवर्ग आदेश नहीं है। **चोक, च्व्क्यर** ''खट्टापन' **खूँख, खूँख्यर** 'नकियापन

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र अपवाद सूत्र के रूप में है। **चोक** 'खट्टा' और **खूँख** 'नकिया' के साथ **अर** प्रत्यय संयुक्त होने पर अन्तिम कवर्ग का क्रम से चवर्ग नही होता।

॥ टवर्गान्तानां च ॥४९॥

टवर्गान्तानां विशेष्यनिघ्नानां शब्दानां च क्रमेण चवर्गादेशो भवति ॥ म्वटु । म्वच्यर् । स्थौल्यम् ॥ गंटु । गच्यर् । अल्पोज्ज्वलता ॥ द्रोंठु । द्राँछ्यर् । कठोरता ॥ मूँठु । मैंछ्यर् । मन्दता ॥ म्वंडु । म्वंज्यर् । कुण्ठता ॥ वडु । व- ज्यर् । महत्ता ॥ प्रोणु । प्राञ्यर् । पुराणता ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.49

टवर्ग अन्त वाले विशेष्य शब्दों का भी क्रम से चवर्ग आदेश है। **मोट, म्वचर** 'मोटापन' **गोट, ग्वचर** 'धुन्धलाई' **द्रांछर** 'बाँझपन **म्यूठ, म्येछर** 'मधुरता' **मोंड, म्यंजर** 'जड़ता' **बोड, बज्यर** 'बडप्पन' **प्रोन, प्रान्यर** 'पुरानापन'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र 4.1.47 का विस्तार है। टवर्गान्त शब्दों के टवर्ग का, व्युत्पन्न प्रक्रिया में, क्रम से चवर्गादेश है। उदाहरण में दिए गए मूल शब्दों का अर्थ इस प्रकार है। **मौट** 'मोटा', **गौट** 'धुंधला', **द्रौठ** 'अनुपजाऊ', **म्यूठ** 'मधुर', **मौंड** 'जड़' **बोड** 'बड़ा तथा **प्रोन** 'पुराना'।

॥ तवर्गान्तानामप्रसिद्धः ॥५०॥

तवर्गान्तानां विशेष्यनिघ्नानां शब्दानामन्त्याक्षरस्य क्रमेणाप्रसिद्धश्चवर्गादेशो भवति अप्रसिद्धो दन्त्यः॥ तंतु। तचर्। तप्तता॥ मंतु। मचर्। मत्तता॥ वंथु। वछर्। विस्तृतता॥ थंदु। थजर्। औन्नत्यम्॥ मंदु। मन्जर्। मान्द्यम्॥ तंनु। तञर्। तनुता॥ गुमंनु। गुमञार्। ईषन्मालिन्यम्॥ तमंनु। तमञार्। काष्ण्यम्॥ तुरंनु। तुरञार्। शीतता॥ कटमलिनु। कटमलिञार्। धूसरता॥ पनुनुशब्दस्यादिस्वरस्य दीर्घ इष्यते॥ पानञार्। आत्मीयता॥

अनुवाद– सूत्र **4.1.50**

तवर्ग अन्त वाले विशेष्य शब्दों के अन्तिम अक्षर का अप्रसिद्ध चवर्ग आदेश है। ये अप्रसिद्ध दन्त्य हैं। **तौत, तचर** 'गर्मी' **मौत, मचर** 'पागलपन' **वौथ, वछर** 'खुलापन' **थौद, थज़र** 'ऊँचाई' **म्यौन्द, म्यंज़र** 'घाती त्वचापन (एक प्रकार का त्वचा रोग)' **तौन, तन्यर** 'पतलापन' **गुमुन, गुमन्यार** 'पसीनापन', **तमुन तमन्यार** 'कालिख' **तुरुन तुरन्यार** 'शीतलता'। **कटमल्युन, कटमलिन्यार** 'धूल-धूसरता'। **पनुन** शब्द में स्वर की दीर्घता इच्छित है। **पानुन्यार** 'अपनापन'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र भी 4.1.47 का विस्तार ही है। भाषा का सर्वव्यापी नियम है कि स्पर्श व्यंजन ध्वनियाँ कुछ व्युत्पन्न प्रक्रियाओं में स्पर्श-संघर्षी बन जाती हैं। इसी सम्बन्ध में तवर्ग का चवर्ग आदेश है। स्पष्टीकरण में पर्यापत उदाहरण प्रस्तुत हैं। **पनुन** 'अपना' में उपधा का स्वर दीर्घ होकर **पानुन्यार** 'अपनापन'बन जाता है।

॥ अप्रसिद्धादिलोपः ॥५१॥

अप्रसिद्धाच्चवर्गात् इकारस्य लोपो भवति उदाहरणानि पूर्वसूत्रोक्तानि अप्रसिद्धचवर्गात्परस्य इकारस्य लोपः स्वयं बुद्धिमता निर्णेयः॥ छूंछु। छुछर्। रिक्तता॥ अंछु। अछर्। नैर्मल्यम्॥ पंजु। पजर्। सत्यता॥ अंनु। अञर्। अन्धता॥

अप्रसिद्ध च़वर्ग के इकार का लोप होता है। पूर्व सूत्र के वर्णित उदाहरणों में अप्रसिद्ध च़वर्ग के इकार के लोप का निर्णय बुद्धिमान स्वयं करें। **छॊच़, छ्वच़र** 'रिक्तता'। **ऒछ़, अछ़र** 'निर्बलता' **पॊज़, पज़र** 'सत्यता' **ऒन, अन्यर** 'अन्धता'

व्याख्या–

वर्तमान में प्रस्तुत सूत्र तथा पूर्व सूत्र के उदाहरणों में इकार का उच्चारण नही है। लिपि में भी इकार अंकित नहीं है। उदाहरणों के मूल शब्द हैं – **छॊच़** 'रिक्त' **ऒछ़** 'निर्बल', **पॊज़** 'सत्य' तथा **ऒन** 'अंधा'

॥ लान्तानां जः ॥५२॥

लकारान्तानां विशेष्यनिघ्नानामन्त्यस्य जकारो भवति ॥ खॊल् । खज्यर् । विस्तृतत्वम् ॥ [वूल् ।] वोज्यर् । चाञ्चल्यम् ॥ कुमुल् । कुमज्यार् । कोमलता ॥ एवं । व्वजज्यार् । उज्ज्वलता ॥ म्वकज्यार् । मुक्तता ॥ ज़ॊयज्यार् । सूक्ष्मता ॥ पिशज्यार् । पेशलता ॥ लान्तानां किम् ॥ बियर् । पर्युषितत्वम् ॥ च़र्यर् । आधिक्यम् ॥-फहर्यर् । पारुष्यम् ॥ नव्यर् । नवीनता ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.52

लकार अन्त वाले विशेष्य शब्दों के अन्तिम अक्षर का जकार होता है। **खॊल, खज्यर** 'चौड़ापन', **वूल, वोज्यर** 'अति चंचलता', **कुमुल, कुमज्यार** 'तरलता' एवं **व्वजुजार** 'लालिमा' **म्वकजार** 'विमुक्तता' **ज़ॊयजार** 'बारीकी' **पिशजार** 'चिकनाई'। **ल** अन्त वाले क्यों? **बॆयर** 'भिन्नता' **च़र्यर** 'अधिकता' **फहर्यर** 'खुरदुरापन' **नव्यर** 'नयापन'।

व्याख्या–

व्युत्पन्न प्रक्रिया में लकार का जकार भाषा में सर्वत्र सिद्ध है। प्रस्तुत सूत्र लकार का जकार में रूपातंरण उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करता है। साथ ही यह भी बताया गया है, कि रकार अन्त वाले शब्दों पर यह नियम लागू नही होता। आगामी सूत्र में रकार का एक ऐसा उदाहरण है, जिस का अपवाद स्वरूप विकल्प से जकार हो जाता है। वूल का तद्धित रूप **वूलुजार** अधिक व्यापक है।

॥ त्रकुरशब्दस्य च ॥५३॥

अन्त्यव्यञ्जनस्य रकारस्य जकारो भवति ॥ त्रकज्यार् । कठोरता ॥ पक्षे । त्रकर्यर् ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.53

त्रकुर शब्द के अन्त्य व्यंजन रकार का जकार होता है। **त्रकज्यार** 'कठोरता' विकल्प में **त्रकर्यर**।

व्याख्या–

यह भी अपवाद सूत्र है। **त्रकुर** 'कठोर' **र** अन्त में होने के कारण जकार की अपेक्षा नही है, परन्तु **त्रकुज्यार** 'कठोरता' भाषा में प्रयुक्त होता है। इसी अर्थ में **त्रकर्यार** शब्द का भी प्रयोग संभव है। वर्तमान भाषा में भी इन दोनों रूपों का

॥ हान्तानां शः ॥५४॥

स्पष्टम् ॥ ह्हिु। हिश्यर्। सादृश्यम्॥ चोह्नु। चाश्यर्। कटुता ॥ हान्तानां किम्। गश्यर्। जाल्मता ॥ चाष्यर्। कटुत्वम् ॥ फंरिश्यर्। पारुष्यम् ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.54

सूत्र स्पष्ट है। **ह्यह, हिशर** 'समानता'। **चोह, चाश्यर** 'खट्टापन', ह अन्तवाले क्यों? **गश्यर** 'अनसुनापन', **चाश्यर** 'खट्टापन' **फॅरयश्यर** 'खुरदुरापन'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में भी **अर** प्रत्यय संयुक्त होने पर, मूल शब्द में होने वाले रूपांतरण का वर्णन है। यह निर्देश है, कि इकारान्त शब्दों का **ह श** में परिवर्तित होता है। **ह्युह** 'समान' का अंतिम **ह अर** की संयुक्ति में **श** बन जाता है, तथा व्युत्पन्न रूप **हिश्यर** 'समानता' सिद्ध है। 'खट्टा' के लिए **चोह** शब्द वर्तमान में अव्याप्त है। इस के स्थान पर **चोक** का प्रयोग व्याप्त है। ग्रन्थकार ने हकारान्त रहित शब्दों में भी **चाश्यर** 'खट्टापन' का उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस का अर्थ यह है, कि वे भी 'खट्टा' के लिए **चोक** शब्द स्वीकार करते हैं। **गोश** 'अनसुनी' मूलतः शकारान्त ही है। **फुहुर** 'खुरदुरा' स्पष्ट रूप से हकारान्त नहीं है, परन्तु **अर** संयुक्त होने पर अन्य परिवर्तनों के साथ शकारागम भी सिद्ध है, और व्युत्पन्न रूप **फॅरयशर** 'खुरदुरापन' है।

आगामी सूत्र में इसी प्रकार के अन्य उदाहरण उल्लिखित हैं।

॥ सान्तानां वा छः ॥५५॥

स्पष्टम् ॥ कूँसु। कैंछर्। कनिष्ठता ॥ पक्षे ॥ कैंसर्। कनिष्ठता ॥ पव-र्गान्तान्युदाहरणानि यथा॥ पंपु। पप्यर्। पक्वता॥ फंफु। फफ्यर्। छोहलत्वम् ॥ ग्वंबु। ग्वब्यर्। गुरुत्वम् ॥ ओमु। आम्यर्। आमता। इति ॥

सूत्र स्पष्ट है। **कूँस, कॉँछ़र** विकल्प में **कॉँसर** 'कनिष्टता'। पवर्गान्त शब्दों के उदाहरण इस प्रकार हैं **पोप, पप्यर** 'पक्कापन', **फोफ, फफ्यर** 'हकलाहट', **गोब, ग्वब्यर** 'भारीपन', **ओम, आम्यर** 'कच्चापन'।

व्याख्या–

सूत्र में सकारान्त **कूँस** 'कनिष्ठ' के साथ **अर** संयुक्त होने पर सकार के छ़कार का निर्देश है। **कॉँछ़र** 'कनिष्ठता' के विकल्प में **कॉँसर** भी सम्भव है अर्थात छ़कार रूपांतरण की बाध्यता नहीं है। सूत्र के अन्य उदाहरण पवर्गान्त हैं। यथा – **पोप** 'पक्का', **फोफ** 'हकला', **गोब** 'भारी' और **ओम** 'कच्चा', **गोब** के अतिरिक्त शेष सभी शब्दों के उपधा का ओकार अकार में और ओकार आकार में परिणत होता है। **गोब** के ओकार का वत्व सिद्ध है।

॥ बंडुशब्दादीमी वा ॥५६॥

बंडुशब्दात्परो विकल्पेन ईमी प्रत्ययो भवति। आदेशाभावश्च ॥ बंडु। बडीमी। महत्वा ॥ पक्षे। बज्यर्। इति ॥

बोड शब्द के साथ विकल्प से **ईमी** प्रत्यय संयुक्त होता है। यहां आदेश का अभाव है। **बोड, बडीमी** 'बड़प्पन' विकल्प से **बज्यर**।

व्याख्या–

बोड 'बड़ा' शब्द का 4.1.49 सूत्र में उल्लेख है, और व्युत्पन्न रूप **बज्यर** 'बड़प्पन' बताया गया है। प्रस्तुत सूत्र में इस बात का निर्देश है, कि विकल्प से **बोड** के साथ **ईमी** प्रत्यय भी संयुक्त हो सकता है। व्युत्पन्न रूप **बॅडीमी** 'बड़प्पन' में उपधा के **ओकार** का **अंकार** हो जाता है। यह रूपांतरण **बज्यर** में भी अंशतः होता है।

॥ श्रूचुछ्र्यटुशब्दाभ्यां यांरू च ॥५७॥

आभ्यां शब्दाभ्यां पक्षे भावे यांरू च भवति ॥ श्रूचु। श्रूचियांरू। शुद्धता ॥ छ्र्यटु। छ्र्यटियांरू। अशुद्धता ॥ पक्षे। श्रोच़र्। छ्यच्यर् ॥ इति भवतः ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.57

विकल्प से इन दो शब्दों के भाववाचक रूप में **यॉर** प्रत्यय संयुक्त होता है। **श्रूच, श्रूच्ययॉर** 'शुद्धता' **छ़योट, छ़्यट्ययॉर** 'अशुद्धता' विकल्प से **श्रोच़र** **छ़्यचर** ऐसा होता है।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में **यॉर** प्रत्यय का उल्लेख है। इस की संयुक्ति **श्रूच़** 'शुद्ध' और **छ्य़ोट** 'अशुद्ध' शब्दों के साथ प्रदर्शित है। वर्तमान में **श्रोच़र** 'शुद्धता' और **छ्य़चर** 'अशुद्धता' शब्दों का ही भाववाचक रूप में प्रयोग होता है। **श्रूच्ययॉर** और **छ्य़टय़यॉर** अव्याप्त हैं।

॥ योर्शब्दान्ताज़् ॥५८॥

योर्शब्दाद्भावविषये ज़् प्रत्ययो भवति ॥ मंज़िमयारज़् । दूतता ॥ पंज़्ययारज़् । सत्यता ॥ अपुज़्यारज़् । असत्यता ॥ यारज़् । मित्रता ॥ श्रूच्यारज़् । शुद्धता ॥ छ्य़टयारज़् । अशुद्धता ॥

अनुवाद– सूत्र **4.1.58**

योर शब्द के साथ भाववाचक में **ज़** प्रत्यय संयुक्त होता है। **मंज़िमयारज़** 'बिचौलियापन' **पॅज़्ययारज़** 'सत्यता' **अपुज़्यारज़** 'असत्यता' **यारज़** 'मित्रता' **श्रूच्यारज़** 'शुद्धता' **छ्य़टय़ारज़** 'अशुद्धता'।

व्याख्या–

जिन शब्दों के साथ **योर** संयुक्त होता है, उन का भाववाचक रूप **ज़** प्रत्यय भी प्राप्त कर सकता है। **यारज़** के **यार** को छोड़ कर उदाहरण के शेष सभी मूल शब्दों के अन्त में **योर** है। यथा – **मॅज़िमयोर** 'बिचौलिया', **पॅज़्ययोर** 'सत्यवादी', **अपुज़्योर** 'असत्यवादी', **श्रूच्ययोर** 'शुद्ध आचरण वाला', **छ्य़टय़योर** 'अशुद्ध आचरण वाला'। ईश्वर कौल ने 4.1.22 सूत्र में **योर** प्रत्यय को स्पष्ट किया है। प्रस्तुत सूत्र में इस **योर** प्रत्यय से युक्त पद मूल शब्द मान कर **ज़** प्रत्यय से भाववाचक रूप सिद्ध किया है। वर्तमान उच्चारण तालव्यकृत व्यंजन के पश्चात **योर** के **य** का लोप करता है। सिद्ध रूप है– **पॅज़्यारज़, अपुज़्यारज़, श्रूच्यारज़** और **छ्य़टय़ारज़**।

॥ विशेष्यानायत्तानामिल्आंज़्प्रत्ययौ ॥५९॥

भावे इत्यनुवर्तते स्वयं विशेष्यशब्दानां भावे अभिधेये इल् प्रत्ययः आंज़् प्रत्ययश्च भवति ॥ पंण्डितांज़् । पण्डितता ॥ पक्षे । पंण्डितिल् ॥ छांनिल् । वा । छानांज़् । तक्षकता ॥ गूरिल् । वा । गोरांज़् । पुरोहितता । इत्यादि ॥

अनुवाद– सूत्र **4.1.59**

विशेष्य शब्द के स्वकार्य को भावे अभिप्राय में **इल्** अथवा **ऑज़** प्रत्यय संयुक्त होता है। **पंडितॉज़** 'पंडिताई' विकल्प में **पंडितिल, छानॉज़** 'बढ़ईगिरी'

विकल्प में **छॉनिल, गोरॉज़** 'पुरोहिती' विकल्प में **गोरिल** इत्यादि।

व्याख्या–

व्यावसायात्मक भाववाचक रूप के लिए **इल** अथवा **ऑज़** प्रत्यय संयुक्त होता है। स्पष्टीकरण में जो उदहारण मौजूद हैं, उन के मूल शब्द इस प्रकार हैं – **पँडित** 'पंडित' **छान** 'बढ़ई' **गोर** 'पुरोहित'। **इल** प्रत्यय संयुक्त होने पर अर्थ का अपकर्ष हो जाता है। ऐसा एक और उदाहरण अगले सूत्र में प्रस्तुत है।

॥ क्वचिदेकतरः ॥६०॥

क्वचिच्छब्दे एकतर एव प्रयुज्यते ॥ दॅसिलॉज्। छेपकता ॥ दॅसिलिल्। इति न साधुशब्दः ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.60

कुछ शब्दों में केवल **ऑज़** प्रत्यय संयुक्त होता है। **दसिलॉज़** 'राजगिरी', **दसिलिल** साधु शब्द नहीं है।

व्याख्या–

यहाँ ग्रन्थकार ने प्रत्यय के आधार पर शिष्ट और अशिष्ट शब्दों में अन्तर स्पष्ट किया है। यह सूत्र पूर्ववर्ती सूत्र का विस्तार है, और इस बात का निर्देश है, कि **दॅसिल** 'राज' शब्द के साथ इल प्रत्यय अशिष्टता बोधक है।

॥ क्वचिद्युगपच्च ॥६१॥

क्वचित्स्थाने प्रोक्तौ प्रत्ययौ युगपत्प्रयुज्येते ॥ मतिल्। वा। मॅत्लॉज्। उन्मत्तता ॥ अत्र मॅतुशब्दस्य विशेष्यनिघ्नत्वात्पूर्वं मचर्स्वरूपे सिद्धे ऽपि प्रोक्तकार्यार्थमेव पुनरुदाहृतम्॥ गुर्लॉज्। छानिलॉज्। ब्रीठिलॉज्। इत्यादि॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.61

कहीं पर ये दोनों प्रत्यय युगपत रूप में प्रयुक्त होते हैं। (युगपत शब्द का अर्थ यहाँ पर उभय अर्थ के रूप में समझना चाहिए। दोनों प्रत्यय एक साथ लगाना असम्भव है) **मॅतिल** अथवा **मॅत्यलाज़** 'पागलपन'। विशेष्य शब्द **मौत** का **मचर** रूप पूर्व सिद्ध है। परन्तु स्वकार्य अभिव्यक्त करने के लिए पुनः उदाहरण प्रस्तुत किया है। **गुर्यलॉज़, छानुलॉज़, ब्रीठिलॉज़** इत्यादि।

[६१। युगपच्छब्दो ऽत्रोभयार्थको ज्ञेयः न तु समवायार्थकः समवेतयोः प्रत्यययोरेकशब्दात्प्रयोगासंभवात् ॥]

व्याख्या–

यह सूत्र पूर्व सूत्रों का विस्तार है। **मॅतिल, मॅतिलॉज़,** और **मच़र**। ये तीनों शब्द **मॊत** 'पागल' से व्युत्पन्न है। कौल ने इस बात का संकेत किया है कि ये तीनों व्युत्पन्न शब्द व्यवहार में भिन्नार्थी हैं। वास्तविक पागलपन के लिए **मच़र** शब्द का ही प्रयोग होगा। **मॅत्यलॉज़** अथवा **मतिल** का नहीं। दिखावे का पागलपन **मॅत्यलॉज़** हो सकता है। शरारती व्यवहार को **मॅतिल** कह सकते हैं।

॥ लॉँछ्शब्दस्योपधाया ऊत्वं वा ॥६२॥

लूँछ़िल् । पक्षे । लॉँछ़िल् । नपुंसकता ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.62**

लूँछ़िल विकल्प से **लॉँछ़िल** 'नपुंसकता'।

व्याख्या–

मूल शब्द **लॉँछ़** 'नपुंसक' के उपधा का स्वर ऑकार है। इस का विकल्प से ऊकार आदेश है। ऐसा ग्रन्थकार का मत है। वर्तमान में **लूँछ़िल** का प्रयोग नहीं है। लॉँछ़िल शब्द का ही व्यवहार है।

॥ संबन्धिनां तोनु ॥६३॥

नाटीसंबन्धिनां भावे अभिधेये सति तोनु प्रत्ययो भवति ॥ मॉल्यितोनु । पितृत्वम् ॥ माजितोनु । मातृत्वम् ॥ बॉयितोनु । भ्रातृत्वम् ॥ पुतरतोनु । पुत्रत्वम् ॥ हशतोनु । श्वश्रूत्वम् । इत्यादि ॥ कृत्रिमसंबन्धिनां भावे तु तकारस्य पकार इष्यते ॥ व्यसपोनु । वयस्यात्वम् ॥ दायपोनु । धात्रीत्वम् ॥ पाज़ि-पोनु । नीचत्वम् । इत्यादि ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.63**

निकट सम्बन्ध वाले शब्दों के भावे अभिप्राय में **तोन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **मॉल्यतोन** 'पितृत्व', **माजितोन** 'मातृत्व' **बॉयतोन** 'भ्रातृत्व' **पॊत्रतोन** 'पुत्रत्व' **हशितोन** 'सासूपन' इत्यादि कृत्रिम सम्बन्धों के भावे अभिप्राय में तकार का पकार इच्छित है। **व्यसुपोन** 'सहेलीपन', **दायपोन** 'दाईपन' इत्यादि।

व्याख्या–

रिश्ते-नाते के शब्दों के साथ **तोन** प्रत्यय संयुक्त होने से भाववाचक शब्द व्युत्पन्न होता है। रक्त सम्बन्ध अथवा वैवाहिक सम्बन्ध के अतिरिक्त सम्बन्धों में भी वर्तमान में **तोन** प्रत्यय ही संयुक्त होता है। तकार का पकार करने से व्युत्पन्न शब्द **पोन** का अर्थ 'गुदा' है। इसीलिए इस का प्रयोग प्रत्यय के रूप में किसी

भी संबंध के लिए अब अव्याप्त हो गया है।

॥ शत्रुमित्रपितुर्ऋषिबन्धुभ्य उत् ॥६४॥

एषां शब्दानां भावे गम्यमाने सति उत् प्रत्ययो भवति ॥ शत्रुत्। शत्रुत्वम् ॥ म्यत्रुत्। मित्रत्वम्॥ पितुरुत्। सजातीयत्वम् ॥ ऋष्युत् । ऋषित्वम् ॥ बन्दुत्। बन्धुत्वम् ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.64

इन शब्दों के भाववाची रूप में उत् प्रत्यय संयुक्त होता है। **शॅतरुत**, 'शत्रुता', **म्यॅतरुत** 'मित्रता' **पितरुत** 'चचेरापन' **स्यशुत** 'ऋषित्व' **बन्दुत** 'बन्धुत्व'।

व्याख्या—

उदाहरण में दिए गए प्रत्यय युक्त शब्दों के मूल शब्द इस प्रकार हैं। **शथुर** 'शत्रु' **म्यथुर** 'मित्र' **पितुर** 'चचेरा' **स्योश** 'ऋषि' **बन्द** 'बंधु' **पितुर** और **बन्द** के अतिरिक्त शेष शब्दों के मूल रूप में भी परिवर्तन है। **शथुर** और **म्यथ़ुर** के **थ** अक्षर का अल्पप्राणत्व होता है। **स्योश** शब्द के औकार का अकार होता है।

॥ मैत उन् ॥६५॥

शववाचकात् मैतशब्दाद्भावे उन् प्रत्ययो भवति ॥ मैत्। मैतुन्। शवता ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.65

शव के अर्थ में प्रयुक्त शब्द **मैत** के भाववाची रूप में उन प्रत्यय संयुक्त होता है। **मैत, मैतुन** 'शवता'।

व्याख्या—

वर्तमान में **मैत** शब्द का प्रयोग नहीं है। मुस्लिम संस्कृति में मय्यत शब्द का प्रयोग होता है। इस का भाववाची रूप सम्भव नहीं है। **मोतुन** 'मुर्दापन' भाववाची रूप है। यह **मोथ** 'मृत्यु' शब्द से व्युत्पन्न है।

॥ म्वंड्शब्दादुस् ॥६६॥

विधवावाचकात् म्वंड्शब्दाद्भावे उस् प्रत्ययो भवति ॥ म्वंडुस्। वैधव्यम्॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.66

विधवा अर्थ वाले **म्वंड** शब्द के भाववाची रूप में **उस** प्रत्यय संयुक्त होता है। **म्वंडुस** 'वैधव्य'।

व्याख्या–

भाषा में ऐसे भी कुछ भाववाची रूप हैं जिन के प्रत्यय अधिक उत्पादक नहीं है। **उस** इसी प्रकार का एक प्रत्यय है, जो मात्र **म्वंड** 'विधवा' शब्द के साथ संयुक्त होता है। **म्वंडुस** शब्द अब अव्याप्त है।

॥ द्बुशब्दात्सृगार्थे ॥६७॥

स्पष्टम् ॥ द्बुस् । सृगः ॥ अन्यत्र । द्बिल् । रजकता ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.67**

सूत्र स्पष्ट है। **दोबुस, दोबिल** 'धोबीगिरी'।

व्याख्या–

वर्तमान में **दोब** 'धोबी' शब्द के साथ भाववाचकता के लिए मात्र **इल** प्रत्यय सम्भव है और व्यत्पन्न रूप **दोबिल** 'धोबीगिरी' सिद्ध है।

॥ स्वन्शब्दाद्बदु ॥६८॥

स्पष्टम् ॥ स्वनबंदु । सापत्न्यम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.68**

सूत्र स्पष्ट है। **स्वनुबोद** 'सौत वाला'।

व्याख्या–

बोद एक स्वतन्त्र शब्द है, जिसका अर्थ 'छोटी गड्डी' हो सकता है। जैसे **हाकुबोद** 'साग की छोटी गड्डी'। सूत्र में वर्णित **बोद** प्रत्यय इस अर्थ का साक्षी नहीं है। इस **बोद** का स्वतन्त्र प्रयोग संभव नहीं है। **स्वनुबोद** 'सौत वाला व्यक्ति' का प्रयोग अब व्यापक नहीं है।

॥ बोजुशब्दाद्बठ् च ॥६९॥

अस्माच्छब्दात् बठ् प्रत्ययो भवति पक्षे बंदु प्रत्ययश्च स्यात् ॥ बोजिबंदु । साधारणता ॥ पक्षे । बोजिबठ् । साधारणता ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.69**

इस शब्द के साथ **बठ** प्रत्यय संयुक्त होता है। विकल्प में **बोद** प्रत्यय भी हो सकता है। **बॉजबोद** 'सहभागिता' **बॉजबठ** 'सहभागिता'

व्याख्या–

बॉजबोद शब्द का ऐतिहासिक महत्त्व है। वर्तमान में इस का प्रयोग नहीं

के बराबर है। **बॉजबठु** का प्रयोग 'सहभागिता' के अर्थ में सम्भव है।

॥ हतादिभ्यः संख्यायाम् ॥७०॥

हतादीनां संख्यावाचकानां बंदु प्रत्ययो भवति ॥ हतबंदु । शतशः ॥ सासबंदु । सहस्रशः ॥ लछ्यबंदु । लक्षशः । इत्यादि ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.70

हत आदि संख्यावाचक शब्दों के साथ **बौद** प्रत्यय संयुक्त होता है। **हतबौद** 'सैंकड़ों', **सासबौद** हजारों' **लछिबौद** 'लाखों' इत्यादि।

व्याख्या–

संख्यावाची शब्दों के तद्धित रूपों की भाववाचकता सामान्य भाववाचक संज्ञा की जैसी नहीं है। यहाँ पर यह प्रत्यय संख्या गुण की बहुलता का बोधक है। 4.1.68 सूत्र में **बौद** शब्द के अर्थ की व्याख्या की गई है। आगामी सूत्र में भी इस का कथन है।

॥ शाकादिभ्यो मुष्ट्यर्थे ॥७१॥

शाकानां मुष्टावभिधेयायां सत्यां बंदु प्रत्ययो भवति ॥ हाकबंदु । शाकमुष्टिः ॥ मुजिबंदु । मूलिकामुष्टिः ॥ ग्वग्जिबंदु [। सर्षपशाकमुष्टिः] ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.71

सब्ज़ी की छोटी गड्डी अभिधेय होने पर **बौद** प्रत्यय संयुक्त होता है। **हाकुबौद** 'साग की छोटी गड्डी', **मुजिबोद** 'मूली की छोटी गड्डी' **ग्वगजिबौद** 'शलगम की छोटी गड्डी'।

व्याख्या–

4.1.68 सूत्र की व्याख्या में वर्णन है, कि **बौद** प्रत्यय का 'गड्डी' के अर्थ में प्रयोग सम्भव है। इस **बौद** प्रत्यय से वस्तु की मात्रा अभिप्रेत है। शाक विशेष की बंधी हुई इकाई **बौद** होती है। केवल पत्ते वाला शाक ही यह प्रत्यय प्राप्त कर सकता है। ओलव 'आलू' के साथ यह प्रत्यय संभव नहीं है।

॥ उलु ॥७२॥

अधिकारोऽयम् ॥ इत उत्तरं वक्ष्यमाणार्थेषु उलु प्रत्ययो भवति ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.72

यह अधिकार सूत्र है। उत्तरवर्ती सूत्रों में **उल** प्रत्यय का उल्लेख है।

॥ गाटशब्दान्निपुणे ॥७३॥

स्पष्टम् ॥ गाटुलु । निपुणः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.73

सूत्र स्पष्ट है। गाटुल 'बुद्धिमान'।

व्याख्या—

गाट् 'बुद्धि' के साथ **उल** प्रत्यय संयुक्त होने पर व्यत्पन्न रूप **गाटुल** 'बुद्धिमान', व्याकरण कोटि की दृष्टि से **गाटुल** विशेषण है, भाववाचक संज्ञा नहीं। 4.1.87 सूत्र तक **उल** प्रत्यय संयुक्त होने का ही वर्णन है।

॥ क्वंडो ऽल्पार्थे ॥७४॥

क्वंड् इति । बृहत्कुण्डं । तस्याल्पार्थे उलु प्रत्ययो भवति । क्वंडुलु । कुंडलाकृतिः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.74

क्वंड का अर्थ है एक बृहत्कुंड़। बृहत्कुंड का आकार छोटा करने के अर्थ में **उल** प्रत्यय संयुक्त होता है। **क्वंडुल** 'छोटा कुंड'।

व्याख्या—

यहाँ **उल** प्रत्यय अल्पत्व का द्योतक है। हिन्दी में 'इया' प्रत्यय इसी प्रकार प्रयुक्त होता है यथा 'डिब्बा' से 'डिब्बिया'।

॥ गंडो वस्तुसाकल्ये ॥७५॥

वस्तुनः साकल्ये अभिधेये ग्रन्थिवाचकाद्गंड्शब्दात् उलु प्रत्ययो भवति ॥ गंडुलु । वस्तुसामस्त्यम् ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.75

वस्तु की अधिकता के अर्थ में ग्रंथि वाचक शब्द **गंड** के साथ **उल** प्रत्यय संयुक्त होता है। **गंडुल** 'अधिक ग्रंथियों वाला'।

व्याख्या—

यदि धागे में बहुत सी गाँठें लगी हों तो उस को **गंडुल पन** 'ग्रंथियों वाला धागा' कह सकते हैं। लक्षणार्थ में यदि कोई व्यक्ति बातें छुपाता है, और स्पष्टवादी होने का बहाना करता है, तो उस को भी **गंडुल** कह सकते हैं।

॥ गत्शब्दादतिशये ॥७६॥

नदीप्रवाहवाचकात् गत्शब्दादतिशयेऽर्थे उलु भवति ॥ गतुलु। बहुलम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.76**

नदी प्रवाह के अर्थ में **गुथ** (गुत) शब्द भी अतिशयता के अर्थ में **उल** प्रत्यय संयुक्त होता है। गॅतुल 'बड़ी बड़ी लहरों वाला'।

व्याख्या–

नदी के प्रवाह को तीव्रता प्रदान करने वाली लहरों को **गुथ** कहते हैं। इस के साथ **उल** प्रत्यय **गुतुल** इन लहरों की अतिशयता को प्रदर्शित करता है। **गुथ** शब्द के **थ** अक्षर का अल्पप्राणत्व हो जाता है। इस प्रकार का अल्पप्राणीकरण भाषा में यत्र-तत्र उपलब्ध है।

॥ गदश्च ॥७७॥

स्पष्टम् ॥ गदुलु। बहुलम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.77**

सूत्र स्पष्ट है। गदुल 'थुलथुला'

व्याख्या–

गद शब्द का प्रयोग स्वतन्त्र रूप में सीमित है। **उल** युक्त शब्द **गदुल** का प्रयोग मांसलता के अर्थ में किया जाता है। **गदुल बदन** 'थुलथुला बदन'।

॥ टंठुशब्दान्मानावपने ॥७८॥

द्रोणद्वयवाचकात् टंठुशब्दात्परिमाणभाण्डार्थे उलु प्रत्ययो भवति ॥ टठुलु। काष्ठावपनम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.78**

टठ शब्द का प्रयोग दो द्रोण के अर्थ में किया जाता है। **उल** प्रत्यय संयुक्त होने पर परिमाण वाचक बड़े पात्र का बोध होता है। **टठुल** 'लकड़ी निर्मित परिमाण पात्र'।

व्याख्या–

एक द्रोण वर्तमान पांच किलो के करीब होता है। अनाज तोलने का प्रामाणिक परिमाप **टठ** होता था। **उल** प्रत्यय जुड़ने से काष्ठनिर्मित पात्र की

संकल्पना सामने आती है, जिस में एक से अधिक **टठ** मात्रा का अनाज रखा जा सकता था। वर्तमान में इस प्रकार का पात्र प्रायः अव्याप्त है।

॥ द्रंगुप्वंतुशब्दाभ्यां सादृश्ये ॥७९॥

द्रंगु । मुष्टिः ॥ प्वंतु । अर्भकः ॥ आभ्यां सादृश्यार्थे उलु प्रत्ययो भवति ॥ द्रगुलु । पिण्डम् ॥ प्वतुलु । शिलामयी मूर्तिः ॥

अनुवाद— **सूत्र 4.1.79**

दौग 'मुक्का' **पौत** 'शिला' उल् प्रत्यय संयुक्त होने पर दोनों शब्दों में अर्थ साम्य है। **द्वगुल** 'पिण्ड', **प्वतुल** 'शिला मूर्ति'

व्याख्या—

उल प्रत्यय संयुक्त होने पर उपधा के औकार का वत्व होता है। **पौत** शब्द का प्रस्तुत अभिप्राय में, स्वतन्त्र प्रयोग नहीं है। **उल** प्रत्यय संयुक्त होने पर **प्वतुल** शब्द शिवलिंग के अतिरिक्त अन्य शिला मूर्तियों के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है।

॥ म्वल्सादोस्तद्वति ॥८०॥

स्पष्टम् ॥ म्वलुलु । बहुमूल्यम् ॥ सादुलु । स्वादवान् ॥

अनुवाद— **सूत्र 4.1.80**

सूत्र स्पष्ट है। **म्वलुल** 'बहुमूल्य' **सादुल** 'स्वादिष्ट'।

व्याख्या—

म्वल 'मूल्य' और **साद** 'स्वाद' के साथ **उल** प्रत्यय संयुक्त होने पर शब्दरूप **म्वलुल** का वर्तमान में व्यापक प्रयोग है, परन्तु **सादुल** शब्दरूप का नहीं। हाँ, 'स्वाद' के अर्थ में **साद** का प्रयोग व्यापक है।

॥ क़छ्शब्दाद्भारिके ॥८१॥

स्पष्टम् ॥ क़छुलु । भारवाहः ॥

अनुवाद— **सूत्र 4.1.81**

सूत्र स्पष्ट है। **क्वछुल** 'भारवाहक'।

व्याख्या—

क्वछ़ 'पदार्थ की पर्याप्त मात्रा', शब्द का प्रयोग वर्तमान में सीमित है। **उल** प्रत्यय संयुक्त होने पर भी प्रयोग व्यापक नहीं है।

॥ छ्वक्शब्दात्स्पष्टतायाम् ॥८२॥

छ्वक्। शोधना। तस्मात्स्पष्टार्थे उलु प्रत्ययो भवति॥ छ्वकुलु। गद्गदम्॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.82

छ्वक 'पानी में खंगालना' **उल** प्रत्यय संयुक्त होने पर स्वच्छता का कार्य अभिहित होता है। **छ्वकुल** 'स्वच्छता'।

व्याख्या–

कपड़ों को पानी में खंगालने के लिए **छ्वक** शब्द का प्रयोग किया जाता है। **छ्वक** अथवा **छ्वख** संज्ञारूप है, क्रिया नहीं। इस के साथ **कडुन** 'निकालना' क्रिया जुड़ने से **छ्वख कडुन** 'खंगालना' क्रियापद बनता है। **छ्वकुल** का प्रयोग वर्तमान में अव्याप्त है।

॥ च़ट्शब्दाच्चौरे ॥८३॥

च़ट्। छेदने। तस्माच्चौरार्थे उलु भवति॥ च़टुलु। चौरः॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.83

च़ठ 'काटना' इस के साथ **उल** प्रत्यय जुड़ने से 'चोर' का अर्थ संप्रेषित होता है। **च़टुल** 'चोर'।

व्याख्या–

वर्तमान में **च़ठ** शब्द संज्ञारूप नहीं है। **च़टुन** 'काटना' क्रिया है। **च़ठ** इस का एकवचन मध्यम पुरुष आदेशात्मक रूप है। **च़टुल** का प्रयोग 'चोर' के अर्थ में बहुत कम प्रयुक्त होता है।

॥ पतूशब्दादुडुपे ॥८४॥

स्पष्टम्॥ पतुलु। उडुपः॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.84

सूत्र स्पष्ट है। **पतुल** 'पतला'।

व्याख्या–

वर्तमान में इस शब्द का प्रयोग नहीं है। 'पतले' के लिए **न्युक** शब्द प्रचलन में है।

॥ च़्वच्छब्दात्स्वव्यभिचारे ॥८५॥

गुदवाचिनः च़्वत्शब्दात्स्वव्यभिचारकारयितरि उल् स्यात् ॥ च़्वतुल् । स्वव्यभिचारकारयिता । गांडू ॥

अनुवाद— सूत्र **4.1.85**

गुदावाची शब्द च़्वथ के साथ **उल** प्रत्यय संयुक्त होने पर व्यभिचारात्मक कार्य का अर्थ सम्प्रेषित होता है। च़्वतुल 'समलिंगी'।

व्याख्या—

अपशब्द भी भाषा की ही सामग्री हैं। ईश्वर कौल ने यदा-कदा इन शब्दों की भी व्याख्या प्रस्तुत की है।

॥ रात्दुहोस्तत्काले ॥८६॥

रात्दुह्शब्दाभ्यां तत्तत्काले ऽभिधेये उल् प्रत्ययः स्यात्॥ रातुल् । निशाकालः ॥ दुहुल् । दिनकालः ॥

अनुवाद— सूत्र **4.1.86**

राथ और **दोह** शब्दों के साथ तात्कालिक अर्थ में **उल** प्रत्यय संयुक्त होता है। **रातुल** 'निशाकाल', **दुहुल** 'दिन का समय'।

व्याख्या—

राथ 'रात्रि' और **दोह** 'दिन' के साथ **उल** प्रत्यय अवधि को अभिव्यक्त करता है। दोनों का प्रयोग वर्तमान में भी होता है, हालाँकि **दुहुल** 'दिन का समय' अधिक व्यापक है।

॥ मून्शब्दाद्वस्त्रे ॥८७॥

उपधाह्रस्वश्च निपात्यते ॥ मुनुल् । और्णं वासः ॥

अनुवाद— सूत्र **4.1.87**

निपात बनने पर उपधा का स्वर ह्रस्व हो जाता है। **मुनुल** 'ऊनी फ्यरन'।

व्याख्या—

उल प्रत्यय रहित शब्द **मून** का वर्तमान में प्रयोग नहीं है। **मुनुल** का प्रयोग ऊनी फ्यरन के लिए कभी-कभी संभव है। **फ्यरन** एक ढीला-ढाला कुर्त्ता होता है।

॥ युलु ॥८८॥

इत उत्तरं वक्ष्यमाणार्थेषु युलु भवति ॥ अधिकारोऽयम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 4.1.88**

यह अधिकार सूत्र है। उत्तरवर्ती सूत्रों में **युल** प्रत्यय की संयुक्ति पर विचार होगा।

॥ टंपुजटोर्जटाधारिणि ॥८९॥

टंपुशब्दात् जटशब्दाच्च तद्धारिणोऽर्थे युलु स्यात् ॥ टप्युलु । जटाधारी ॥ जट्युलु । जटाधारी ॥

अनुवाद— **सूत्र 4.1.89**

टोप अथवा **जटा** धारण करने वाला व्यक्ति अभिधेय होने पर **युल** प्रत्यय संयुक्त होता है। **टॅप्युल** 'जटाधारी', **जट्युल** 'जटाधारी'।

व्याख्या—

टोप 'केश' शब्द से सुव्यवस्थिति केश का बोध नहीं होता, परन्तु यह शब्द **जट्** 'जटा' का अर्थ सम्प्रेषित कर सकता है। **जट्** ऐसी 'जटा' का बोध कराता है जहाँ बाल परस्पर जुड़े हुए हों। अधिक अव्यवस्थित जटा वाले को **टॅप्युल** कह सकते है।

॥ दाहः करुणायामुपधाह्रस्वश्च ॥९०॥

स्पष्टम् ॥ दह्युलु छुह् वदान । सकरुणं रोदिति ॥

अनुवाद— **सूत्र 4.1.90**

सूत्र स्पष्ट है। **दॅह्युल छु वदान** 'करुण रोदन कर रहा हैं।'

व्याख्या—

वर्तमान में **दाह** अथवा **दह** का प्रयोग करुणा के अर्थ में नहीं किया जाता इस का प्रयोग हिन्दी शब्द 'दाह' के अर्थ में ही होता है। इसलिए **दॅह्युल वदुन** 'ज़ार ज़ार रोना' का प्रयोग व्याप्त नहीं है।

॥ रसात्तद्वति ॥९१॥

स्पष्टम् ॥ रस्युलु छुह् ग्यवान् । सरसं गायति ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.91

सूत्र स्पष्ट है। **रस्युल छु ग्यवान** 'मधुर गाता है'।

व्याख्या–

रस शब्द हिन्दी शब्द 'रस' का ही द्योतक है। इसलिए **रॅस्युल** का प्रथम अर्थ 'रसयुक्त' ही है। लक्षणी में कंठ की मधुरता के लिए भी इस शब्द का प्रयोग संभव है।

॥ मछ़्स्निहोः स्नेहवति ॥९२॥

मछ़् इति। सान्त्वनं। स्निह् इति स्नेहस्तयोः शब्दयोः युल् प्रत्ययो भवति ॥
मछ़्युल् । सस्नेहः ॥ स्निह्युल् । सस्नेहः ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.92

मछ़् का अर्थ है 'स्नेह'। **स्नेह** का अर्थ भी 'स्नेह' ही है। इन शब्दों के साथ भी **युल** प्रत्यय संयुक्त होता है। **मछ़्युल** 'स्नेह युक्त', **स्नेह्युल** 'स्नेही'

व्याख्या–

मछ़ शब्द का स्नेह के अर्थ में स्वतंत्र प्रयोग संभव नहीं है। **मछ़** का अर्थ 'कीमा' है, जो यहाँ पर अप्रासंगिक है। **युल** प्रत्यय के साथ **मॅछ़्युल** का प्रयोग 'अति स्नेही' के अर्थ में व्यापक है। **स्नेह** शब्द के विकल्प में **श्नेह** का भी प्रयोग किया जाता है। परन्तु **स्नेह्युल** अथवा **श्नेह्युल** का प्रयोग व्यापक नहीं है।

॥ मिषान्नखमांसलेशे ॥९३॥

स्पष्टम् ॥ मिष्युल् । नखमांसलेशः ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.93

सूत्र स्पष्ट है। **मिश्युल** 'नाखून के किनारे का टूटा हुआ अंश'।

व्याख्या–

युल प्रत्यय रहित **मिश** का प्रयोग इस अर्थ में वर्तमान नहीं है। शरीर के किसी अंग में घुसी हुई लकड़ी की बारीक फांस को **मिश** कहते हैं। **मिशुल** का प्रयोग व्याप्त है। इस का अर्थ है नाखून के किनारे का वह टूटा हुआ अंश जो ज़रा सा छूने पर दर्द करता है।

॥ स्यकः स्वादादिसादृश्ये ॥९४॥

स्यख्। सिकता। तत्सादृश्येन स्वादाद्यभिधेये युल् प्रत्ययः स्यात्॥ स्यख्युल् चूँठ्। सिकतास्वादसदृशः पालीवतः॥ स्यकिज् बुतराथ्। सैकतिला भूमिः॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.94

स्यख 'रेत' इसी के सदृश स्वाद के अभिप्राय में **युल** प्रत्यय संयुक्त होता है। **स्यक्युल चूँठ** 'रसहीन सेब'। **स्यकिज बुतराथ** 'रेतीली भूमि'।

व्याख्या–

युल प्रत्यय संयुक्त पद **स्यक्युल** का प्रयोग विशेषण के रूप में ही होता है। विशेष्य का लिंग वचन प्रत्यय को प्रभावित करता है। **बुतराथ** स्त्रीलिंग होने के कारण व्युत्पन्न रूप **स्यकिज** हो जाता है। यदि **चूँठ** का प्रयोग बहुवचन में **चूँठ्य** किया जाए, तो व्युत्पन्न रूप **स्यकिल्य** होगा यथा **स्यकिल्य चूँठ्य**।

॥ मांजूशब्दादपत्रपिष्णौ ॥९५॥

मातृवाचकात् मांजूशब्दात् लज्जावदर्थे युल् प्रत्ययः स्यात्॥ माज्युल्। 'लज्जावान्॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.95

माता वाचक शब्द **मॉज** के साथ **युल** प्रत्यय लज्जावत् अर्थ में प्रयुक्त होता है। **माज्युल** 'लज्जावान'।

व्याख्या–

माज्युल का प्रयोग भाषा में वर्तमान नही है।

॥ मलाद्युन् तद्वति ॥९६॥

मलशब्दात्तद्वदर्थे युन् प्रत्ययो भवति॥ मल्युन्। मलिनः॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.96

मल शब्द के स्व अर्थ में ही **युन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **मल्युन** 'मलिन'।

व्याख्या–

इस सूत्र में **युन** तथा आगामी दो सूत्रों में **उन** प्रत्यय की संयुक्ति का वर्णन है। **मल्युन** शब्द का व्यवहार भाषा में सीमित है।

॥ कूटुशब्दादल्पार्थे उनु ॥९७॥

कूटु । बृहत्काष्ठं । तस्याल्पार्थे उनु प्रत्ययो भवति ॥ कूटुनु । क्षुद्रकाष्ठम् ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.97

कूट 'लकड़ी का स्तम्भ' **उन** प्रत्यय जुड़ने से 'स्तम्भ' का रूप अल्प हो जाता है। **कुटुन** 'छोटा स्तम्भ'।

व्याख्या—

उन प्रत्यय संयुक्त होने पर उपधा का स्वर ह्रस्व हो जाता है, अर्थात् ऊकार उकार में परिणत हो जाता है। व्युत्पन्न रूप **कुटुन** 'छोटा स्तंभ' सिद्ध है।

॥ दगादायुधे ॥९८॥

दग् । घातः । तस्मादायुधार्थे उनु प्रत्ययो भवति ॥ दगुनु । मुद्गरः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.98

दग 'पीड़ा', **उन** प्रत्यय संयुक्त होने पर यह शब्द आयुध बोधक है। **दगुन** 'सोटा'।

व्याख्या—

दगुन व्याकरण कोटि की दृष्टि से क्रिया है। भाषा में इस का प्रयोग व्यापक है। हिन्दी में इस का पर्याय 'पीटना' भी क्रिया रूप ही है। 'आयुध' के अर्थ में **दगुन** का प्रयोग अव्याप्त है। कपड़े धोने में जिस सोटे का प्रयोग किया जाता है, उस को **दोबिन्य** कहते हैं।

॥ रंग्स्वन्मन्च़म्दाँद्काँद्भ्यः शिल्पिनि र्॥९९॥

एभ्यः शब्देभ्यः शिल्पिनि अर्थे र् प्रत्ययो भवति ॥ रंगुर् । रजकः ॥ स्वनुर् । स्वर्णकारः ॥ मनुर् । शाङ्खिकः ॥ च़मुर् । चर्मकारः ॥ दाँदुर् । शाकवि-क्रयी ॥ काँदुर् । कान्दविकः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.99

इन शब्दों के साथ शिल्प बोधक अर्थ के लिए **र** प्रत्यय संयुक्त होता है। **रंगुर** 'रंगरेज़' **स्वनुर** 'स्वर्णकार' **मनुर** 'मनिहार' **च़मुर** 'चर्मकार' **दाँदुर** 'कुँजड़ा, शाक विक्रेता' **काँदुर** 'नानवाई'।

व्याख्या—

रंग 'रंग' **स्वन** 'स्वर्ण' **मन** 'मणि' **च़म** 'त्वचा' **दाँद** 'बैल/शाक' **काँद**

'रोटी' इन शब्दों से अभिव्यक्त अर्थ का कार्य करने वाला व्यक्ति अभिप्रेत हो तो सूत्र के अनुसार शब्द के साथ **र** प्रत्यय संयुक्त होता है। स्पष्टीकरण में लिखे गए उदाहरणों के अनुसार प्रत्यय **उर** नहीं है। परन्तु वर्तमान में **उर** प्रत्यय ही सिद्ध है। **दाँदुर** 'कुंजड़ा, शाकविक्रेता' और **काँदुर** 'नानवाई' इन दो शब्दों की सत्ता प्रत्यय हटाने से अपेक्षित अर्थ में सिद्ध नहीं है। वर्तमान में रोटी के लिए **काँद** शब्द का प्रयोग नहीं होता। 'मणि' के अर्थ में **मन** का प्रयोग भी भाषा में वर्तमान नहीं है, इस के स्थान पर **मीनु** का प्रयोग व्यापक है।

॥ डारफासोर्विनाशकभेदकयोः ॥१००॥

स्पष्टम् ॥ डासुर् । विनाशकः ॥ फासुर् । भेदकः ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.100

सूत्र स्पष्ट है। **डासुर** 'विनाश करने वाला' **फासुर** 'दो भागों में तोड़ने वाला।

व्याख्या–

डास 'विनाश' **फास** 'दो भागों में तोड़ना' इन दोनों शब्दों के साथ भी अपेक्षित अर्थ में **उर** प्रत्यय ही संयुक्त होता है। तभी स्पष्टीकरण में दिया गया अर्थ सिद्ध हो जाता है।

॥ बंगात्तत्पायिनि ॥१०१॥

बंगशब्दात्तत्पायिनि अर्थे र् प्रत्ययो भवति ॥ बंगुर् । भङ्गापः ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.101

पीने के लिए भाँग प्राप्त करने वाला व्यक्ति अभिप्रेत होने की अवस्था में, **बंगु** शब्द के साथ **र** प्रत्यय संयुक्त होता है। **बंगुर** 'भांग पीने वाला व्यक्ति'।

व्याख्या–

बंगु 'भाँग' शब्द के साथ **उर** प्रत्यय संयुक्त होने पर **बंगुर** शब्द का तात्पर्य भाँग पीने वाले व्यक्ति से होता है।

॥ बमो ऽन्तरायिणि ॥१०२॥

बम्शब्दाद्विघ्नकारके ऽर्थे र् प्रत्ययः स्यात् ॥ बमुर् । विघ्नकृत् ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.102

विघ्नकारक अर्थ में **बम** शब्द के साथ **र** प्रत्यय संयुक्त होता है।

बमर 'विघ्न डालने वाला'।

व्याख्या–

बमर का व्यवहार वर्तमान में नही है। अप्रसन्न चेहरे के लिए **बम** का प्रयोग किया जाता है यथा – **तमिस ज़न छु बम प्योमुत** 'उस पर, जैसे अप्रसन्नता टूट पड़ी हो'।

॥ लमो विलम्बके ॥१०३॥

लमशब्दाद्विलम्बकार्थे र् प्रत्ययो भवति ॥ लमर् । विलम्बकः ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.103**

विलम्ब करना अभिप्रेत होने पर **लम** शब्द के साथ **र** प्रत्यय संयुक्त होता है। **लमर** 'विलम्भ करने वाला'।

व्याख्या–

लमर शब्द का प्रयोग वर्तमान नहीं है। प्रत्यय रहित शब्द **लमु** का प्रयोग विलम्ब के लिए प्रचलित है यथा – **तमिस छि हमेशि लमु आसान** 'वह सदा देर लगाता है'। इस दृष्टि से **लमुर** का प्रयोग देर लगाने वाले व्यक्ति के लिए किया जाता रहा होगा।

॥ लावो वार्धुषिके ॥१०४॥

लावशब्दात् उक्तार्थे र् प्रत्ययः स्यात् ॥ लावर् । वृद्धाजीवः ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.104**

उक्त अर्थ में **लाब** शब्द के साथ **र** प्रत्यय संयुक्त होता है। **लाबर** 'वृद्धजीव'।

व्याख्या–

वर्तमान में **लाब** अथवा **लाबर** शब्द भाषा में, इस अर्थ में व्याप्त नहीं है। जाति नाम के रूप में **लाबुर** प्रयुक्त होता है। **अकवाम कश्मीर** में ज़ातों का वर्णन करते हुए मुहम्मद उल्दीन 'फ़ौक़' ने **लाबुर** का अर्थ 'सूद खोर' बताया है, वृद्ध नहीं।

॥ सालो जन्ये ॥१०५॥

सालशब्दान्निमन्त्रितजन्यार्थे र् प्रत्ययो भवति ॥ सालर् । जन्याः ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.105**

निमन्त्रित व्यक्ति के अर्थ में **साल** शब्द के साथ **र** प्रत्यय संयुक्त होता

है। **सालुर** 'निमन्त्रित व्यक्ति'।

व्याख्या–

साल 'निमन्त्रण' के साथ भी **उर** प्रत्यय ही सिद्ध है। व्युत्पन्न शब्द **सालुर** 'निमन्त्रित व्यक्ति' बनता है। **सालर, सालुर** का बहुवचन रूप है। यह तथ्य यहाँ प्रासंगिक नहीं है, क्योंकि यहाँ बहुवचन रूपों की चर्चा नहीं है।

॥ लूटो लुण्ठके ॥१०६॥

लूट्शब्दात् लुण्ठकार्थे र् प्रत्ययः स्यात् ॥ लूट्ट्र् । लुण्ठकः ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.106

लुटेरे के अर्थ में **लूट** शब्द के साथ **र** प्रत्यय संयुक्त होता है। **लूदुर** 'लुटेरा'।

व्याख्या–

वर्तमान में प्रस्तुत सूत्र में भी **उर** प्रत्यय ही सिद्ध है, र नहीं। **लूटर** शब्द, एकवचन रूप में, अव्याप्त है। यह शब्द बहुवचन 'लुटेरे' के लिए सिद्ध है। एकवचन रूप लूदुर है।

॥ ब्रमो भ्रमप्रदे ॥१०७॥

स्पष्टम् ॥ ब्रम्र् । भ्रमदः ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.107

सूत्र स्पष्ट है। **ब्रमर** 'भ्रम देने वाला'।

व्याख्या–

ब्रमर शब्द का प्रयोग वर्तमान में अत्यन्त सीमित है। प्रत्यय रहित शब्द **ब्रम** 'धोखा, भ्रम' का प्रयोग व्यापक है। दैनिक वार्तालाप के अतिरिक्त गद्य और पद्य साहित्य में भी **ब्रम** शब्द प्रयुक्त होता है।

॥ लूबो ऽन्त्यस्य दश्च ॥१०८॥

लूब्शब्दाचद्वत्वार्थे र् प्रत्ययो भवति अन्त्यस्य बकारस्य च दकारो भवति॥ लूद्र् । लोलुभः ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.108

उसी अर्थ में **लूब** शब्द के साथ **र** प्रत्यय संयुक्त होता है, तथा अन्त में बकार का भी दकार हो जाता है। **लूदुर** 'लोभी'।

व्याख्या–

शब्द से स्पष्ट है, कि प्रस्तुत प्रत्यय **उर** संयुक्त हुआ है। जैसा कि पूर्ववर्ती सूत्रों में भी स्पष्ट किया गया है। तद्धित प्रक्रिया में मात्र यही शब्द ऐसा है जहाँ बकार का दकार निर्देश है। **लूदुर** शब्द का प्रयोग व्यापक है।

॥ तौल्यपरिमिते युनु ॥१०९॥

तुलया परिमिते वस्तुनि युनु प्रत्ययो भवति । तच्च द्विधा । एकं स्वयं वस्तु कियदस्तीति द्वितीयं कियन्मितस्य वस्तुन आधारभूतमस्तीत्यनयोर्द्वयोरेव योगारम्भः ॥ त्रांक्युनु कठ् । द्रौणिको मेषः ॥ सीर्युनु थाल् । प्रास्थिकः स्थालः ॥ खार्युनु बोरु । खारिको भारः ॥ त्रांक्युनु नोटु । द्रौणिकः कुम्भः ॥ सीर्युनु बान । प्रास्थिकं भाण्डम् ॥ अत्र त्रख्शब्दस्योपधाया दीर्घः सेर्शब्दस्य एकारस्य ईकारो दृश्यते । प्रस्थवाची सीर्युनु शब्दः पलवाची पल्शब्दापरपर्यायः पल्युनुशब्दश्चेतराववधार्यौ ॥ अन्यत्र । च्वत्रोकु । चतुर्द्रौणिकः ॥ च्वत्रांक्युनु । चतुर्द्रौणिकः ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.109

तोल की मात्रा स्पष्ट करने के लिए वस्तु के साथ **युन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यह दो प्रकार से प्रयुक्त होता है। एक तो वस्तु का भार दूसरा आधार अथवा पात्र का आयाम। इन दोनों अर्थों में यही प्रत्यय कार्य करता है। **त्रॉक्युन कठ** 'एक द्रोण, (लगभग पांच किलो) की भेड़', **सीर्युन थाल** 'थाली, जिसमें सेर भर (लगभग एक किलो) वस्तु आ सके। **खॉरयुन** 'एक खरवार (लगभग अस्सी किलो) वाला भार', **त्रॉक्युन नोट** 'मटका, जिसमें एक द्रोण वस्तु आ सके'। **सीर्युन बानु** 'बरतन जिस में एक सेर आ सके'। **सीरयुन थाल** जैसे पदों में दोनों प्रकार के अर्थ सम्भावित है। यहाँ **त्रख** शब्द के उपधा का स्वर दीर्घ तथा **सेर** शब्द के एकार का ईकार हो जाता है। बाट वाची **सीर्युन** शब्द के लिए **पल** अर्थात 'पत्थर' वाची **पॅल्युन** शब्द का प्रयोग भी पर्याय के रूप में अवधार्य है। अन्यत्र– **चुत्रोक** 'चार द्रोण वाला' **च़्वत्रॉक्युन** 'चार द्रोण वाला'।

व्याख्या–

इस सूत्र से 4.1.113 सूत्र तक **युन** प्रत्यय का निर्देश है। सूत्र के स्पष्टीकरण में दोनों प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत हैं। यथा– वस्तु का भार **त्र्यॉक्युन कठ** 'द्रोण भर की भेड़' **खॉर्युन बोर** 'खार भर का भार' तथा पात्र का आयाम – **सीर्युन थाल** 'थाली, जिस में सेर भर वस्तु आ सके, **त्रॉक्युन नोट** 'मटका, जिस में एक द्रोण वस्तु आ सके'।

॥ पाँज़ुवुशब्दस्य वस्य शश्च ॥११०॥

द्रोणार्धवाची पाँज़ुवुशब्दस्तत्चौल्येनाभिहिते वस्तुनि युन्नु प्रत्ययो भवति वकारस्य च शकारो भवति ॥ पाँज़शुन्नु । अर्धद्रौणिकः ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.110

पाँज़ुव शब्द जो भार में आधा द्रोण के बराबर होता है। उसके साथ भी युन प्रत्यय संयुक्त होता है, और वकार के शकार का निर्देश है। **पाँज़शुन** 'आधा द्रोण'।

व्याख्या–

परिमाण के अर्थ में **पांजुव** शब्द का प्रयोग यदा-कदा वरिष्ठ व्यक्ति करते हैं, परन्तु **पाँज़शुन** शब्द का प्रयोग व्यवहार में नहीं है।

॥ षष्ट्यादेर्मौल्यसंख्यायां च ॥१११॥

मौल्यसंख्यया वस्तुनि अभिधेये सति षष्टेः परतः युन्नु प्रत्ययो भवति ॥ शीठ्युन्नु। षाष्टिकः॥ सतत्युन्नु । साप्ततिकः॥ षष्ट्यादेः किम् ॥ दहन् हुन्द्व दाँद्व। दशानां वृषः ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.111

साठ आदि मूल संख्या शब्दों के बाद की वस्तु अभिधेय होने पर **युन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **शीठ्युन** 'साठवाँ', **सतत्युन** 'सत्तरवाँ', साठ आदि क्यों? **दहन हुन्द दाँद** 'दस का बैल'।

व्याख्या–

वर्तमान में **युन** प्रत्यय की संयुक्ति प्रस्तुत अर्थ में साठ आदि के पूर्व की संख्यावाची शब्दों में भी सम्भव है। **दँह्युन** 'दसवाँ' शब्द भी भाषा में प्रचलित है। कौल ने – 4.1.120 सूत्र में **युम** प्रत्यय का उल्लेख किया है। विकल्प में संख्यावाची शब्दों के साथ भी इसी अर्थ में **युम** प्रत्यय की संयुक्ति सम्भव है। **शीठ्युम** 'साठवां' **सतथ्युम** 'सत्तरवाँ' **दँह्युम** 'दसवाँ'।

स्पष्टीकरण में **दँहन हुन्द दाँद** उदाहरण अन्य उदाहरणों से भिन्न है। इसमें सम्बंध कारक परसर्ग **हुन्द** का प्रयोग है। **शीठ्युम** और **सतथ्युन** में ऐसा नहीं है।

॥ सर्वनामशब्देभ्यश्च ॥११२॥

तीत्युन्नु । तावतिकः ॥ यीत्युन्नु । यावतिकः ॥ कूत्युन्नु । कियतिकः ॥ ईत्युन्नु । एतावतिकः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.112

तीत्युन 'उतने का' **यीत्युन** 'जितने का' **कुत्युन** 'कितने का' **ईत्युन** 'इतने का'

व्याख्या—

सूत्र के अनुसार उपर्युक्त शब्दों में भी **युन** प्रत्यय संयुक्त होता है। उक्त तद्धित प्रत्यय रहित इन सर्वनामों का रूप है – **त्यूत** 'उतना' **यूत** 'जितना' **कूत** 'कितना' और **इयूत** 'इतना'। **युन** प्रत्यय संयुक्त होने से **त्यूत, यूत** और **इयूत** के ऊकार का ईकार परन्तु **कूत** के ऊकार का ुकार हो जाता है। सार्वनामिक रूप प्रक्रिया में यह स्थिति असामान्य नही है।

वर्तमान में **इयूत** 'इतना' का प्रयोग कुछ आँचलिक स्थितियों में ही सम्भव है। विस्तृत भाषा व्यवहार में 'इतना' और 'जितना' दोनों सर्वनामों के लिए **यूत** का ही प्रयोग किया जाता है। वाक्य का संदर्भ अर्थ को स्पष्ट करता है। यथा— **बु चमु नु यूत द्वद** 'मैं इतना दूध नही पियूँगा' **म्य यूत द्वद चव, त्यूत चोथ नु च़्य** 'मैंने जितना दूध पिया, उतना तुम ने नहीं पिया'।

॥ वर्षार्थे च ॥११३॥

वोर्य्युन् । वार्षिकः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.113

वॉर्श्युन 'एक वर्ष का'।

व्याख्या—

यहाँ पर मूल शब्द **वुरियि** 'वर्ष' न हो कर **वर्श** ही माना जाएगा। पंडित समाज में 'जन्म दिन' के अर्थ में **वर्श** का प्रयोग करने की प्रथा है। **वोहरवोद** 'जन्म दिन' के लिए सामान्य शब्द है। परन्तु विक्रमी संवत की संक्रांति को ध्यान में रखते हुए, जिस तारीख को वर्षगाँठ मनाई जाती है; उस को पंडित समाज में 'वर्श' कहा जाता है।

॥ संख्यायाश्च पूरणे युमु ॥११४॥

संख्यायाः पूरणे ऽर्थे युमु प्रत्ययो भवति कशब्दात्सर्वनामशब्देभ्यश्च ॥ अक्युमु। प्रथमः ॥ दशुमु। दशमः ॥ वुहुमु। विंशः ॥ हत्युमु। शततमः ॥ सास्युमु। सहस्रतमः ॥ पुंस्त्रियोः कतिशब्दवाचकाभ्याम् कंच्रूकच्रशब्दाभ्यामपि विज्ञेयः ॥ कच्युमु। कतमः ॥ यीत्युमु। यतमः ॥ तीत्युमु। ततमः ॥ ईत्युमु। इतमः ॥ स्त्रीलिङ्गे तु युकारस्य इकारो भवति ॥ कत्रिमू। कतमा ॥ यीतिमू। यतमा ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.114**

संख्या की समापिका के अर्थ में **युम** प्रत्यय संयुक्त होता है। सूत्र में **'च'** शब्द निर्देश करता है, कि सर्वनाम शब्दों में भी ऐसा ही होता है। **अॅक्युम** 'पहला', **दॅह्युम** 'दसवाँ', **वुह्युम** 'बीसवाँ' **हॅत्युम** 'सौवाँ', **सॉस्युम** 'हज़ारवाँ'। **कुत्य** शब्द के पुंलिंग स्त्रीलिंग रूप **कॅच़** और **कचु** शब्दों में भी यह संयुक्ति है। **कॅच़्युम** 'कितना', **यीत्युम** 'जितना', **तीत्युम** 'उतना', **ईत्युम** 'इतना' स्त्रीलिंग में युकार का इकार होता है। **कॅचि़म** 'कितनी', **यीतिम** 'जितनी' इत्यादि।

व्याख्या–

4.1.111 सूत्र की व्याख्या में उल्लेख है, कि **युम** प्रत्यय की संयुक्ति इसी सन्दर्भ में सम्भव है। 4.1.112 में जिन सर्वनामों का उल्लेख है, उन के साथ **युम** प्रत्यय की संयुक्ति प्रस्तुत सूत्र में निर्दिष्ट है।

॥ अष्टसंख्यावधि शतार्थे हत् ॥११५॥

स्पष्टम् ॥ अखुहथ् । एकशतम् ॥ जुहथ् । शतद्वयम् ॥ त्रेहथ् । त्रिशती ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.115**

सूत्र स्पष्ट है। **अखहथ** 'एक सौ' **ज़ुहथ** 'दो सौ' **त्रेहथ** 'तीन सौ' इत्यादि।

व्याख्या–

सौ के अर्थ में सात संख्यावाचक शब्द तक **हथ** प्रत्यय संयुक्त होता है। अतिरिक्त उदाहरण है – **च़ोरहथ** 'चार सौ' **पाँछ़हथ** 'पांच सौ' **शेहथ** 'छः सौ' **सथहथ** 'सात सौ'। वर्तमान में **ऑठ** 'आठ' के साथ **हथ** संयुक्त नही होता अपितु अगले सूत्र में वर्णित **शथ** प्रत्यय संयुक्त होता है। **ऑठशथ** 'आठ सौ'।

॥ तत्परतो हस्य शः ॥११६॥

नवसंख्यामारभ्य शतार्थे हकारस्य शकारो भवति ॥ नव्शथ् । नव शतानि ॥ काह्शथ् । एकादश शतानि ॥ बाह्शथ् । द्वादश शतानि ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.116**

नौ संख्या से आरम्भ करके सौ के अर्थ वाले प्रत्यय के हकार का शकार होता है। **नवशथ** 'नौ सौ' **काहशथ** 'ग्यारह सौ' **बाहशथ** 'बारहसौ' इत्यादि।

व्याख्या–

पूर्ववर्ती सूत्र में इस बात का उल्लेख है, कि **ऑठ** 'आठ' संख्यावाची शब्द से ही प्रारम्भ करके **शथ** प्रत्यय की संयुक्ति सिद्ध है।

॥ देशभवे इ॒ प्रत्ययश्च ॥११७॥

स्पष्टम् ॥ सोपूरि नाव्। सुय्यपुरजा नौः ॥ ईरॉनि गुर्। ईरानदेशजोऽश्वः ॥ चीनि खोस् [। चीनदेशभवः कंसः] ॥ हिन्दुस्तानि कपुर्। इत्यादि ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.117

सूत्र स्पष्ट है। **सोपूर्य नाव** 'सोपोर की नौका', **ईरॉन्य गुर** 'ईरानी घोड़ा' **चीन्य खोस** 'चीनी खोस (प्याला)' **ह्यॅन्दुस्तॉन्य कपुर** 'हिन्दुस्तानी कपड़ा' इत्यादि।

व्याख्या—

ईश्वर कौल की लिपि में 'इ' स्वर अथवा इस की मात्रा के नीचे हलन्त तालव्यकरण का द्योतक है। इस चिन्ह से ग्रन्थकार परवर्ती व्यंजन को तालव्यकृत करता है। प्रस्तुत सूत्र के उदाहरण इसी संयुक्ति को स्पष्ट करते हैं।

॥ कशीर्देशभवे उरु अन्त्यस्वरादिलोपोपधादीर्घौ च ॥११८॥

काश्मीरभाषायां कश्मीरः कशीर् इति स्त्रीलिङ्गवाची शब्दः कथ्यते। तस्या उद्भूते वस्तुनि अभिधेये सति उरु प्रत्ययो भवति अन्त्यस्वराद्यवयवस्य लोप उपधायाश्च दीर्घो भवति ॥ कांशुरु कंग्। काश्मीरं कुङ्कुमम् ॥ कांशुरु पश्मीन। काश्मीरं बहुमूल्यम् [राङ्कवम्] ॥ कांशिरू कठ्। काश्मीरं कुष्ठम्। इत्यादि ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.118

कश्मीरी भाषा में कश्मीर को 'कशीर' कहते है।। यह स्त्रीलिंग शब्द है। यहाँ उत्पन्न होने वाले वस्तु के अभिधेय में **उर** प्रत्यय संयुक्त होता है। अन्त्य स्वर आदि अवयव का लोप और उपधा का दीर्घीकरण होता है। **कॉशुर क्वंग** 'कश्मीरी केसर' **कॉशुर पश्मीनु** 'कश्मीरी पश्मीना' **कॉशिर क्वठ** 'कश्मीरी कुष्ठी (एक प्रकार की जड़ी बूटी)' इत्यादि।

व्याख्या—

उर प्रत्यय के लिंग और वचन को आगे आने वाली वस्तु प्रभावित करती है। निम्नांकित तालिका में **उर** प्रत्यय के चारों रूप अंकित हैं

	एकवचन	**बहुवचन**
पुंलिंग	उर (कॉशुर)	इर्य (कॉशिर्य)
स्त्रीलिंग	इर (कॉशिर)	इरि (कॉशिरि)

॥ देशकालभवे चोकु अस्त्रियाम् ॥११९॥

देशभवे कालभवे च वस्तुनि अभिधेये उकु प्रत्ययो भवति स्त्रीलिङ्गं वर्जयित्वा ॥ कत्युकु । कुत्रत्यः ॥ तत्युकु । तत्रत्यः ॥ इत्युकु । इहत्यः ॥ यत्युकु । यत्रत्यः ॥ हुत्युकु । अत्रत्यः ॥ गरुकु । गृह्यः ॥ करुकु । किंकालिकः ॥ रातुकु । श्वोभवः ॥ परसुकु । परारि भवः । इत्यादि ॥ अजशब्दादिकारागमश्चेष्यते ॥ अज्युकु । अद्यतनः ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.119

स्त्रीलिंग को छोड़ कर देश में उत्पन्न और काल में उत्पन्न वस्तु अभिधेय होने पर **उक** प्रत्यय संयुक्त होता है। **कत्युक** 'कहाँ का', **तत्युक** 'वहाँ का' **इत्युक** 'यहाँ का' **येत्युक** 'जहाँ का' **हुत्युक** 'वहाँ का' **गरूक** 'घर का' **करुक** 'कब का', **रातुक** 'कल का' **परसुक** 'पिछले साल का' इत्यादि। **अज़** शब्द में इकारागम होता है। **अँज़्युक** 'आज का'।

व्याख्या–

2.1.48 सूत्र में ग्रंथकार ने **उक** प्रत्यय का उल्लेख किया है। सम्बन्ध षष्ठी कारक रूप में यह प्रत्यय पुंलिंग अप्राणिवाची शब्दों के साथ संयुक्त होता है। आगे आने वाले सम्बद्ध प्रातिपदिक का लिंग और वचन **उक** विभक्ति को प्रभावित करता है। प्रस्तुत सूत्र में यही **उक** तद्धित प्रत्यय के रूप में निर्दिष्ट है जिस की संयुक्ति देश अथवा काल बोधक शब्दों के साथ की गई है। इन शब्द रूपों के आगे लगने वाले प्रातिपदिक का लिंग और वचन **उक** प्रत्यय को ऐसे ही प्रभावित करता है, जैसे कि सम्बन्ध षष्ठी की कारकविभक्ति में सिद्ध है।

॥ मिलोपयुक्तात्पारिप्रत्ययान्तात्सर्वनाम्नो युमु ॥१२०॥

उक्तप्रत्ययो भवतीति स्पष्टम् ॥ पार्युमु । पारदेशजः ॥ कपार्युमु । किंपार्श्वः ॥ तपार्युमु । तत्पार्श्वः ॥ यपार्युमु । यत्पार्श्वः ॥ हुपार्युमु । अपारजः ॥ इपार्युमु । एतत्पार्श्वः ॥ अपार्युमु । पारजः ॥ अस्त्रियां किम् ॥ कतिचू । कुत्रत्या ॥ एवं । पारिमू । पारजा ॥ इत्यादि ॥ दिग्भवे च दछिनुखोवुरुशब्दौ वर्जयित्वा युमु भवति ॥ ब्रूँठ्युमु । अग्रिमः ॥ पत्युमु । पश्चिमः ॥ हीर्युमु । वा । ब्वठ्युमु । ऊर्ध्वः ॥ तल्युमु । वा । ब्वन्युमु । अधरः ॥ अन्दर्युमु । आन्तरः ॥ न्यबर्युम् । बाह्यः ॥ अद्वौ प्रोक्तौ किम् ॥ दछिन्युकु । दक्षिणः ॥ खोवुर्युकु । वामः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.120

उक्त प्रत्यय की संयुक्ति स्पष्ट है **पॉर्स्युम** 'विदेशी', **कपॉर्स्युम** 'कहाँ का', **तपॉर्स्युम** 'वहाँ का' **यपॉर्स्युम** 'जहाँ का', **हुपॉर्स्युम** 'उधर का', **इपॉर्स्युम** 'यहाँ का', **अपॉर्स्युम** 'पार का'। अस्त्रियाँ क्यों? **कतिच** 'कहाँ की' एवं **पॉरिम** 'दूसरे देश की' इत्यादि दिशा बोधक शब्द **दॅछुन, खोहवुर** को छोड़ कर शेष में **युम्** प्रत्यय संयुक्त होता है। **ब्रूंठ्युम** 'आगे का' **पत्युम** 'पीछे का' **हैस्युम** अथवा **पेठ्युम** 'ऊपर का' **तल्युम** अथवा **बोन्युम** 'नीचे का' **अन्द्रयुम** 'अन्दर का' **न्यब्रयुम** 'बाहर का'। उक्त दो शब्द वर्जित क्यों? **दॅछिन्युक** 'दाएं का' **खोहवुर्युक** 'बाएं का'।

व्याख्या—

युम प्रत्यय की संयुक्ति में, दिशा सम्बन्धी, मूल शब्द के साथ **पॉर्** शब्दांश संयुक्त होना चाहिए। इस के अतिरिक्त यह भी निर्दिष्ट है, कि स्त्रीलिंग शब्दों में **युम** प्रत्यय की सम्भावना नहीं है। दिशा बोधक शब्दों के साथ **युम** प्रत्यय के पूर्व **पॉर्स्य** शब्दांश की अनिवार्यता नहीं है। **दछुन** 'दायाँ' और **खोहवुर** 'बायाँ' शब्दों के साथ **युम** प्रत्यय संयुक्त नहीं होता। सूत्र के स्पष्टीकरण में **युम** प्रत्यय के पर्याप्त उदाहरण प्रस्तुत हैं।

॥ समूहे ख्यंलु ॥१२१॥

स्पष्टम् । गोवून्ख्यंलु । गोसमूहः ॥ गुरिख्यंलु । अश्वसमूहः ॥ गुपन्ख्यंलु । गोपशुसमूहः ॥ तीरिख्यंलु । मेषादिसमूहः ॥ जनानख्यंलु । स्त्रैणम् ॥ महनिवि-ख्यंलु । मानुष्यकम् ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.121

सूत्र स्पष्ट है। **गॉव ख्योल** 'गायों का समूह', **गुर्य ख्योल** 'घोड़ों का समूह', **गुपन ख्योल** 'गोधन का समूह' **तीर्य ख्योल** 'भेड़-बकरियों का समूह', **ज़नान् ख्योल** 'महिलाओं का समूह', **महनिव्य ख्योल** 'मनुष्यों का समूह' इत्यादि।

व्याख्या—

ख्योल प्रयुक्त होने के पूर्व शब्दों का रूप है – **गाव** 'गाय' **गुर** 'घोड़ा' **गुपुन** 'गोधन' **तीर** 'भेड़-बकरी' **ज़नान्** 'महिला' **महन्युव** 'मनुष्य/नौकर'। ये सभी एकवचन रूप हैं। 'समूह' अर्थ वाला अंश प्रयुक्त होने पर इन का रूप बहुवचन हो जाता है। **ख्योल** अंश भी व्युत्पन्न शब्द में रूपात्मक परिवर्तन उत्पन्न करता है। सभी उदाहरण स्पष्टीकरण में प्रस्तुत हैं।

॥ लूक्शब्दादय् ॥१२२॥

लूक्शब्दात्समूहे अय् भवति ॥ लूकय् । जनता ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.122**

समूह के अर्थ में **लूक्** शब्द के साथ **अय** प्रत्यय होता है। **लूकय** 'जनता'।

व्याख्या–

लूकय का स्वतन्त्र प्रयोग वर्तमान नहीं है। **लूकु-लूकय** शब्द समूह 'भीड़' अथवा जनसमूह के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

॥ पानशब्दादुनु उपधाह्रस्वश्च ॥१२३॥

स्पष्टम् ॥ पनुनु । आत्मीयः ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.123**

सूत्र स्पष्ट है। **पनुन** 'अपना'।

व्याख्या–

पान् शब्द के साथ **उन** प्रत्यय का निर्देश है। मूल शब्द के उपधा स्वर के ह्रस्वीकरण का भी आदेश है, तथा **पनुन** शब्द सिद्ध है। **पान** का प्रथम अर्थ 'शरीर' है। तद्धित प्रत्यय **उन** के लिए **पान** का अर्थ 'स्व' समझ सकते हैं। इस के साथ **अय** संयुक्त करने से व्युत्पन्न शब्द **पानय** का अर्थ 'स्वयं' होता है। सूत्र सं 2.3.36 में **पानय** शब्द की विषद व्याख्या प्रस्तुत है।

॥ पर्शब्दादुदु ॥१२४॥

स्पष्टम् ॥ परुदु । परकीयः ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.124**

सूत्र स्पष्ट है। **परुद** 'पराया'।

व्याख्या–

पर 'अन्य' शब्द का प्रयोग सीमित है। **उद** प्रत्यय संयुक्त होने पर व्युत्पन्न शब्द **परुद** व्यवहार में है। अनजान अन्य के अर्थ में **व्यपर** शब्द का प्रयोग भी वर्तमान में है।

॥ तिह्यादिभ्यः प्रकारोक्तौ थः ॥१२५॥

तिह्यिह्आदिभ्यः पञ्चभ्यः प्रकारवचने गम्यमाने थ प्रत्ययो भवति ॥ तिथ । तथा ॥ यिथ । यथा ॥ क्यथ । कथम् ॥ इथ । इत्थम् ॥ हुथ । इत्थम् ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.125

ति, यि आदि पाँचों शब्दों के लिए थ प्रत्यय संयुक्त होता है। तिथ 'वैसे (परोक्ष)', यिथ 'जैसे' क्यथ 'कैसे' इथ 'ऐसे' हुथ 'वैसा (प्रत्यक्ष)'।

व्याख्या—

सर्वनाम पाद के अर्न्तगत सूत्र स० 2.3.1 और 2.3.5 में उल्लेख है कि

॥ उपमाने थु ॥१२६॥

तिह्आदिशब्दैरुपमाने वाच्ये सति थु प्रत्ययो भवति ॥ तिथु । तादृशः ॥ यिथु । यादृशः ॥ किथु । कीदृशः ॥ इथु । एतादृशः ॥ हुथु । ईदृशः ॥ लिङ्गप्रकरणोक्तनिश्चयप्रत्ययान्ताश्च [सू० २।३।२१] यथा ॥ तिथय् । तथैव ॥ यिथय् । यथैव ॥ क्यथय् । कथमेव ॥ इथय् । इत्थमेव ॥ हुथय् । इत्थमेव ॥ एवं बुद्धिमता निश्चयार्थयप्रत्ययस्य सर्वत्र प्राप्तिरवधार्या ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.126

उपमान रूपी अर्थ में ति आदि शब्दों के साथ थु प्रत्यय संयुक्त होता है। त्युथ 'वैसा ही (परोक्ष)', युथ 'जैसा ही', क्युथ 'कैसा', इ्युथ 'ऐसा ही', ह्युथ 'वैसा ही (प्रत्यक्ष)'। लिंगप्रकरण में 2.3.21 सूत्र के अर्न्तगत निश्चयार्थ में य प्रत्यय की संयुक्ति का उल्लेख है यथा— तिथय 'वैसे ही (परोक्ष) यिथय 'जैसे ही' किथय 'कैसे' इथय 'ऐसे ही' हुथय 'वैसे ही (प्रत्यक्ष)' निश्चयार्थ य की प्राप्ति, बुद्धिमान सर्वत्र अवधारित कर सकते हैं।

व्याख्या—

॥ तस्मात्परो पांठि पांठिन् वा ॥१२७॥

तस्मात्प्रकारप्रत्ययान्तात् परः पांठि प्रत्ययः पांठिन् प्रत्ययो वा यथोक्तः॥

तिथपॉठ्य । तथा ॥ यिथपॉठ्य । यथा ॥ क्यथपॉठ्य । कथम् ॥ इथपॉठ्य । इत्थम् ॥ हुथपॉठ्य । इत्थम् ॥ एवं । तिथपॉठिन् । यिथपॉठिन् । इत्यादि ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.127

इन प्रत्ययों के आगे **पॉठ्य** अथवा **पॉठिन्** प्रत्यय प्रयुक्त होता है। **तिथुपॉठ्य** 'वैसे ही (परोक्ष)' **यिथुपॉठ्य** 'जैसे ही' **किथुपॉठ्य** 'कैसे' **इथपॉठ्य** 'ऐसे ही' **हुथपॉठ्य** 'वैसे ही (प्रत्यक्ष)' इसी प्रकार **तिथुपॉठिन्, यिथपॉठिन** इत्यादि।

व्याख्या–

पूर्व सूत्र में वर्णित प्रत्यय के बाद **पॉठ्य** अथवा **पॉठिन** का प्रयोग किया जाता है। वर्तमान में **पॉठ्य** अथवा **पॉठिन** युक्त शब्द इस सन्दर्भ में अधिक प्रयुक्त होते हैं।

॥ अन्यतो ऽपि च ॥१२८॥

तौ पॉठ्यपॉठिन्प्रत्ययौ अन्येभ्यो ऽपि दृश्येते ॥ बियपॉठिन् । इतरथा ॥ सारिय्पॉठ्य । सर्वथा ॥ हॅल्यपॉठ्य । वक्रप्रकारम् ॥ इत्यादि ज्ञेयम् ॥ एवं संबन्धषष्ठ्यन्तेभ्यः सर्वेभ्यः शब्देभ्यो बोध्यम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.128

पॉठ्य और **पॉठिन** प्रत्यय अन्य पर भी देख सकते हैं। **बेयि पॉठिन** 'दूसरी तरह से' **सारिपॉठ्य** 'सब तरह से' **हॅल्यपॉठ्य** 'टेढ़ी तरह से' इत्यादि। सम्बन्ध षष्ठी के सभी शब्दों में भी ऐसे ही समझ सकते हैं।

व्याख्या–

भाषा में **पॉठ्य, पॉठिन** का प्रयोग व्यापक है। सम्बन्ध षष्ठी की विभक्ति अथवा परसर्ग के बाद भी **पॉठ्य** अथवा **पॉठिन** का प्रयोग सम्भव है। यथा– **रामुन्य पॉठ्य** 'राम की तरह' **रामु सुन्द्य पॉठ्य**-'राम की तरह'। **ज़ूनि हुन्द्य पॉठ्य** 'ज़ून की तरह' **कुलिक्य पॉठ्य** 'पेड़ की तरह'। अगले सूत्र में भी इसी प्रत्यय का उल्लेख हैं।

॥ क्याहो ह्रस्वः ॥१२९॥

क्याहशब्दस्य ह्रस्वो भवति ॥ क्यथपॉठ्य । कथम् ॥ क्यथतान्न्पॉठ्य । केनापि प्रकारेण ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.129

क्योह शब्द का ह्रस्व होता है। **क्यथुपॉठ्य** 'कैसे', **क्यथतान्य पॉठ्य** 'कैसे न कैसे'।

व्याख्या–

4.1.125 सूत्र में वर्णित तद्धित प्रत्यय **थ** के उपरान्त भी **पॉठ्य** अथवा **पॉठिन** सम्भव है। **क्याह** के साथ **थ** संयुक्त होने से **आ** स्वर ह्रस्व हो जाता है। व्युत्पन्न शब्द **क्यथ पॉठ्य** शब्द प्राप्त करता है। वर्तमान में **क्यथ** के स्थान पर **किथ** का अधिक प्रयोग है।

॥ प्राणिकृतादेशेभ्यो रंग च ॥१३०॥

प्राणिनो द्वितीयादीनामेकवचनेषु [सू० २।३।५] ये तमादय आदेशाः कृतास्तेभ्यः प्रकारवचने गम्यमाने रंग प्रत्ययो भवति चशब्दादन्येभ्योऽपि ॥ तमिरंग । तथा ॥ यमिरंग । यथा ॥ कमिरंग । कथम् ॥ इमिरंग । इत्थम् ॥ हुमिरंग । इत्थम् ॥ अमिरंग । इत्थम् ॥ अकिरंग । एकधा ॥ द्वयिरंग । द्विधा ॥ त्र्ययरंग । त्रिधा ॥ सारिरंग । सर्वथा ॥ यच्रिरंग । वा । सिठाहिरंग । बहुधा ॥ इत्यादि ज्ञेयम् । साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.130

2.3.5 सूत्र में प्राणिवाची शब्दों के द्वितीया आदि एकवचन रूपों में **तम** आदि शब्दों का आदेश किया गया है। इस प्रकार कहने पर इन शब्दों के साथ **रंग** प्रत्यय संयुक्त होता है। यह प्रत्यय अन्य शब्दों के साथ भी सम्भव है। **तमिरंग़** 'उस दृष्टि से (परोक्ष)' **येमिरंग़** 'जिस दृष्टि से' **कमिरंग़** 'किस दृष्टि से' **इमिरंग़** 'इस दृष्टि से' **हुमिरंग़** 'उस दृष्टि से (प्रत्यक्ष)', **अमिरंग़** 'इस दृष्टि से' **अकिरंग़** 'एक प्रकार से', **द्वयिरंग़** 'दो रूपों में', **त्रेयिरंग़** 'तीन रूपों में', **सारिरंग़** 'सब रूपों में, **यचिरंग़** अथवा **स्यठाहिरंग़** 'बहुत रूपों में' इत्यादि। सिद्धि पूर्ववत।

व्याख्या–

रंग का पहला अर्थ 'रंग' अथवा 'वर्ण' ही है। इन तद्धित रूपों में 'रंग' के अर्थ की कुछ छटाएँ अभिव्यक्त हुई है। व्युत्पन्न रूपों का प्रयोग मात्र प्राणियों के लिए हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। निम्नांकित वाक्य में इस तद्धित रूप का प्रयोग अप्राणिवाची के लिए भी देख सकते हैं। यथा– **अमिरंग़ ओस नु यि खांदर ठीक** 'इस दृष्टि से यह विवाह ठीक नहीं था'।

॥ प्रत्ययेषु हलोपः सर्वत्र ॥१३१॥

सर्वत्र लिङ्गप्रकरणे धातुप्रकरणे च प्रत्ययेषु परेषु हकारस्य लोपो भवति ॥ क्यथपाठिन् । कथम् ॥ क्याह्शब्दात् थ प्रत्ययान्तात् पाठिन् प्रत्ययश्च अनेन हकारस्य लोपः । क्याहो ह्रस्व (सू० १२९) इत्यनेनाकारस्याकारः ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.131

लिंगप्रकरण और धातुप्रकरण में प्रत्यय संयुक्त होने पर अन्त के 'हकार' का सर्वत्र लोप हो जाता है। **क्यथुपॉठिन** 'कैसे'। **क्याह** शब्द में **थ** प्रत्यय के बाद **पॉठिन** प्रत्यय संयुक्त होने से, प्रस्तुत सूत्र, हकार का लोप करता है। 4.1.129 सूत्र से आकार का अकार हो जाता है।

व्याख्या–

वर्तमान में ऐसे शब्दों के अन्तिम ह का उच्चारण नहीं के बराबर है।

॥ अप्राणिभ्यः स्थाने इ प्रत्ययश्च ॥१३२॥

तेभ्यः अप्राणिकृतादेशेभ्यः सामान्यस्थाने गम्यमाने इ प्रत्ययो भवति ॥ तत्र पञ्चम्यां प्रसिद्धता सप्तम्यां तु पूर्वस्वरस्याप्रसिद्धता ॥ तति । तॖति । ततः । तत्र ॥ यति । यॖति । यतः । यत्र ॥ कति । कुतः । कुत्र ॥ इति । इॖति । अतः । अत्र ॥ हुति । हुॖति । अमुतः । अमुत्र ॥ अति । अॖति । अतः । अत्र ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.132

अप्राणिकृत आदेश में सामान्य स्थान के संकेत हेतु इ प्रत्यय संयुक्त होता है। पंचमी कारक विभक्ति में स्वर प्रसिद्ध और सप्तमी में स्वर की अप्रसिद्धता होती है। **तति** 'वहाँ से (परोक्ष)' **तॅत्य** 'वहीं पर (परोक्ष)' **यॆति** 'जहाँ से' **यॆत्य** 'जहाँ पर' **कति** 'कहाँ से, कहाँ पर' **इति** 'यहाँ से' **इत्य** 'यहाँ पर' **हुति** 'वहाँ से (प्रत्यक्ष)' **हुत्य** 'वहीं पर' (प्रत्यक्ष), **अति** 'यहाँ से' **ॲत्य** 'यहीं पर'।

व्याख्या–

अधिकरण कारक विभक्ति में अन्तिम व्यंजन का तालव्यकरण हो जाता है। सूत्र के स्पष्टीकरण में इस प्रक्रिया को अप्रसिद्ध स्वर की संज्ञा दी गई है। उदाहरण स्पष्टीकरण में प्रस्तुत हैं। वर्तमान में **अति** और **ॲत्य** निकट की ओर संकेत नहीं करते।

॥ तस्मादनऽनसौ वा ॥१३३॥

तस्मात् इ प्रत्ययान्ताच्छब्दात् अन् प्रत्ययः अनस् प्रत्ययो वा भवति ॥ कत्यन् वा कत्यनस्। कुत्र ॥ तत्यन् वा तत्यनस् । तत्र ॥ यत्यन् वा यत्यनस् । यत्र ॥ अत्यन् वा अत्यनस् । अत्र ॥ एवमन्यत् ॥ अनसः सकारस्य नकारोऽपि दृश्यते ॥ यत्यनन् । यत्र ॥ अत्यनन् । अत्र ॥ एवमन्यत् ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.133

इस इ प्रत्ययान्त शब्द के साथ **अन** अथवा **अनस** प्रत्यय संयुक्त होता

है। **कत्यन** अथवा **कतिनस** 'कहाँ पर' **तत्यन** अथवा **ततिनस** 'वहाँ पर' **यत्यन** अथवा **यतिनस** 'जहाँ पर' **अत्यन** अथवा **अतिनस** 'यहाँ पर'। अन्य भी ऐसे ही। **अनस** के सकार का नकार भी देख सकते हैं। **येतिनन** 'जहाँ पर' **अतिनन** 'यहाँ पर' इसी प्रकार अन्य भी।

व्याख्या–

निश्चित स्थान को स्पष्ट रूप से इंगित करने के लिए **अन** अथवा **अनस** प्रत्यय की संयुक्ति होती है। प्रयोगगत भिन्नता में **अनन** प्रत्यय भी संभव है।

॥ पञ्चम्यां प्यठान्तो ऽपि ॥१३४॥

स एव इ प्रत्ययान्तः शब्दः प्यठान्तो विशेषतः पञ्चमीप्रयोगो भवति ॥ ततिप्यठ । ततः ॥ यतिप्यठ । यतः ॥ कतिप्यठ । कुतः ॥ इतिप्यठ । इतः ॥ हुतिप्यठ । अमुतः ॥ गरप्यठ । गृहतः ॥ गामप्यठ । ग्रामतः ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.134

विशेषरूप से पंचमी के प्रयोग में इसी **इ** प्रत्ययान्त शब्द के अन्त में **प्यठ** संयुक्त होता है। **ततिप्यठ** 'वहाँ से (परोक्ष)', **येतिप्यठ** 'जहाँ से' **कतिप्यठ** 'कहाँ से', **इतिप्यठ** 'यहाँ से' **हुतिप्यठ** 'वहाँ से (प्रत्यक्ष)' **गरिप्यठ** 'घर से' **गामुप्यठ** 'गाँव से'।

व्याख्या–

अधिकरण कारक विभक्ति में **प्यठ** का प्रयोग व्यापक है। ग्रंथकार **प्यठ** के अन्त में **अ** स्वर का उल्लेख नहीं करते। वर्तमान में **प्यठ** का **ठ** कारक विभक्ति के रूप में अकार युक्त हैं और **प्यठ** रूप सिद्ध है।

॥ सप्तम्यामनन्तादी च ॥१३५॥

अनप्रत्ययान्ताच्छब्दात्सप्तम्यां विशेषत ई प्रत्ययो ऽपि भवति ॥ तत्यनी । तत्र ॥ यत्यनी । यत्र ॥ कत्यनी । कुत्र ॥ इत्यनी । अत्र ॥ हुत्यनी । अमुत्र ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.135

सप्तमी के **अन** प्रत्यायन्त शब्दों में विशेषता के लिए **ई** प्रत्यय भी संयुक्त होता है। **तत्यनी** 'ठीक वहीं पर (परोक्ष)' **यत्यनी** 'ठीक जहाँ पर' **कत्यनी** 'ठीक कहाँ पर' **इत्यनी** 'ठीक यहीं पर' **हुत्यनी** 'ठीक वहीं पर (प्रत्यक्ष)'।

व्याख्या–

यह सूत्र पूर्व सूत्र 4.1.133 का विस्तार है। निश्चित रूप से स्थान की

ठीक-ठीक स्थिति व्यक्त करने के लिए **अन** प्रत्यय युक्त शब्दों के साथ **ई** संयुक्त होता है। उदाहरण स्पष्टीकरण में प्रस्तुत हैं, **अनस** प्रत्ययान्त शब्दों के साथ **ई** संयुक्त नहीं होता। उस के स्थान पर **अय** संयुक्त होता है। यथा – **यतिनसय** 'ठीक यहाँ पर'। सर्वनाम पाद में इस बात का उल्लेख है, कि वर्तमान में यहाँ के लिए भी **यति** का ही प्रयोग किया जाता है, इति का नहीं।

॥ ओर्तुप्रत्ययौ वान्त्यलोपश्च ॥१३६॥

तेभ्यः अप्राणिकृतादेशेभ्यः शब्देभ्यः सप्तम्याम् ओर् प्रत्ययः तु प्रत्ययो वा भवति। अन्त्याक्षरस्य च लोपो भवति। तु प्रत्ययस्योकारान्तत्वात्पूर्वस्वरस्याप्रसिद्धता ज्ञेया ॥ तोर्। तत्र॥ योर्। यत्र॥ कोर्। कुत्र॥ योर्॥ अत्र॥ होर् वा ओर्। अमुत्र॥ एवम्॥ तंतु। यंतु। कंतु। इतु। हुतु। अंतु। विज्ञेयाः॥ तु प्रत्ययान्तात् त् प्रत्ययश्चेष्यते॥ ततुत्। यतुत्। कतुत्। इतुत्। हुतुत्। अतुत्। इत्यादि॥ यप्रत्यये ओकारस्य ऊकार इष्यते॥ तूर्य्। तत्रैव॥ यूर्य्। यत्रैव॥ कूर्य्। कुत्रैव॥ यूर्य्। अत्रैव॥ ऊर्य्। अमुत्रैव॥ एवं॥ ततुयँ्। यतुय्। कतुय्। इतुय्। हुतुय्। अतुय्। बोध्याः॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.136

अप्राणिकृत आदेश वाले शब्दों की सप्तमी में **ओर** अथवा **तु** प्रत्यय संयुक्त होता है और अन्ताक्षर का लोप होता है। **तु** प्रत्यय के उकार के कारण पूर्व स्वर की अप्रसिद्धता होती है। **तोर** 'वहाँ (परोक्ष)' **योर** 'जहाँ' **कोर** 'कहाँ' **योर** 'यहाँ' **होर/ओर** 'वहाँ (प्रत्यक्ष)'। एवं – **तॅत्य, यॅत्य, कॅत्य, इत्य, हुत्य, अॅत्य।** **तु** प्रत्यय के अन्त में **त** प्रत्यय इच्छित है। **ततुत, यतुत, कतुत, इतुत, हुतुत, अतुत** इत्यादि। **य** प्रत्यय से ओकार का अकार इच्छित है। **तूर्य** 'वहीं पर (परोक्ष)' **यूर्य** 'जहाँ पर' **कूर्य** 'कहाँ पर' **यूर्य** 'यहीं पर' **ऊर्य** 'वहीं पर (प्रत्यक्ष)' एवं – **तौतुय, यौतुय, कौतुय, इतुय, हुतुय, औतुय।**

व्याख्या–

स्पष्टीकरण में पहले **योर** का संस्कृत अनुवाद 'यत्र' तथा दूसरे **योर** का 'अत्र' दिया गया है, अर्थात 'जहाँ' और 'यहाँ' दोनों शब्दों के लिए **योर** का प्रयोग है। इसी प्रकार 'जहाँ पर' और 'यहीं पर' दोनों सर्वनामों के लिए **यूर्य** शब्द का प्रयोग है। यह उस तथ्य का प्रमाण है, जिस का उल्लेख सर्वनाम पाद के 2.3.1 और 2.3.5 सूत्रों में किया गया है। स्पष्टीकरण में प्रस्तुत **ततुत** आदि सर्वनामों का प्रयोग वर्तमान नहीं है।

॥ पञ्चम्यामपर ओर् ॥१३७॥

अकारः परो यस्मात्तथाविधः ओर् प्रत्ययः पञ्चम्यां भवति ॥ तोर। ततः ॥ योर। यतः ॥ कोर। कुतः ॥ होर वा ओर। अमुतः। इति ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.137

पंचमी में अकार यदि पश्च में है, तो **ओर** प्रत्यय सम्भव है। **तोर** 'वहाँ (परोक्ष)' **योर** 'जहाँ' **कोर** 'कहाँ' **ओर** 'वहाँ (प्रत्यक्ष)'।

व्याख्या—

अपादान कारक विभक्ति के सर्वनाम रूप भी **ओर** प्रत्यय युक्त सम्भव है।

॥ तिहादिभ्यः काले ऽलिः ॥१३८॥

तिहादिभ्यः कालविषये अलिप्रत्ययो भवति ॥ त्यलि। तदा ॥ य्यलि। यदा ॥ क्यलि। कदा ॥ प्रत्ययस्य इदन्तत्वात्पक्षे पूर्वस्वरस्याप्रसिद्धता बोध्या ॥ त्यॅलि। य्यॅलि। क्यॅलि। इति ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.138

ति आदि में काल स्पष्ट करने के लिए **अलि** प्रत्यय संयुक्त होता है। **त्यलि** 'तब' **यॆलि** 'जब' **क्यलि** 'कब'। विकल्प में इ अन्त वाले शब्दों के पूर्व स्वर की अप्रसिद्धता होती है। **त्यॅल्य, यॅल्य, कॅल्य**।

व्याख्या—

विकल्प में दिए गए उदाहरण **त्यॅल्य** आदि का प्रयोग वर्तमान नहीं है। **अलि** प्रत्यय ही काल का संकेत करता है, जैसा कि स्पष्टीकरण में उल्लेख है। **क्यलि** के स्थान पर **कर** अधिक व्यापक है।

॥ इहहुहोर्वुंञ्व्वञादेशौ ॥१३९॥

अनयोः शब्दयोः सविभक्तिकयोः वुञ् व्वञ् आदेशौ क्रमेण भवतः ॥ वुञ्। एतर्हि ॥ व्वञ्। अधुना ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.139

विभक्तिसहित इन दो शब्दों का क्रम से **वुन्य** और **व्वन्य** आदेश होता है। **वुन्य** 'अभी' **व्वन्य** 'अब'।

व्याख्या–

इ 'यह' हु 'वह' शब्दों के कारकीय रूपों का **वुन्य** और **व्वन्य** के साथ व्युत्पत्ति मूलक अथवा आर्थी सम्बन्ध भाषा में परिलक्षित नहीं है। सर्वनाम प्रक्रिया में इस प्रकार का विधान असामान्य नहीं है।

॥ क्याहः कर् ॥१४०॥

क्याह्शब्दस्य कालविषये कर् आदेशो भवति ॥ कर् । कदा ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.140

काल के विषय में **क्याह** शब्द का **कर** आदेश होता है। **कर** 'कब'।

व्याख्या–

प्रश्न वाचक शब्द **क्याह** 'क्या' वस्तु, स्थिति अथवा कार्य का बोध करा सकता है और **कर** 'कब' इस सम्बन्ध में समय का। 4.1.138 सूत्र में **कर** 'कब' की व्यापकता का उल्लेख है।

॥ उलन्ताभ्यां रातूद्रहूभ्यामिः ॥१४१॥

स्पष्टम् ॥ रातुलि । नक्तम् ॥ द्रहुलि । दिवा ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.141

सूत्र स्पष्ट है। **रातलि** 'रात में' **द्रहलि** 'दिन में'।

व्याख्या–

राथ 'रात्रि/रात' **द्रह** 'दिन' शब्दों के साथ **उल** प्रत्यय संयुक्त हो सकता है। यथा– **रातुल, दुहुल**। **इन** प्रत्यय युक्त शब्दों के साथ समय की निश्चितता के साथ **इ** की संयुक्ति का निर्देश है। 4.1.143 सूत्र में इसी **इ** का वर्णन है। प्रस्तुत सूत्र में **इ** संयुक्त होने पर उकार का लोप हो जाता है, और **रातलि** तथा **द्रहलि** शब्द सिद्ध है।

॥ रातः क्तु च ॥१४२॥

स्पष्टम् ॥ रात्क्तु । नक्तम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.142

सूत्र स्पष्ट है। **रातक्युत** 'रात में'।

व्याख्या–

राथ 'रात' के साथ **क्युत** प्रत्यय संयुक्त होता है। इस बात का पहले उल्लेख किया जा चुका है कि प्रत्यय संयुक्त होने पर अंतिम महाप्राण व्यंजन अल्पप्राण में रूपांतरित हो जाता है और **रातक्युत** रूप सिद्ध होता है। यहाँ पर विकल्प में **राथक्युत** भी सम्भव है।

॥ अन्यतो ऽपि च ॥१४३॥

न्यहफलि । प्रभातम् ॥ सुलि । अचिरेण ॥ यंचूकालि । चिरेण ॥ कालि । कालेन ॥ कालिक्यथ् । परतरेद्युः ॥ ततिकालिक्यथ् । परतरतरेद्युः ॥ कमिविज़ि । कदा ॥ तमिविज़ि । तस्मिन्काले ॥ यमिविज़ि । यस्मिन्काले ॥ इत्यादयो विज्ञेयाः ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.143

नेहफ्चलि 'पौ फटने का समय', **सुलि** 'जल्दी' **यॅचकॉल्य** 'विलम्ब से' **कॉल्य** 'समय में', **कॉल्यक्यथ** 'परसों (आने वाला)', **ततिकॉल्यक्यथ** 'नरसों (आने वाला)', **कमिविज़ि** 'किस समय' **तमिविज़ि** 'उस समय' **यमिविज़ि** 'जिस समय' इत्यादि।

व्याख्या–

4.1.141 सूत्र में वर्णित **इ** प्रत्यय का यहाँ विस्तृत प्रयोग है। **नेहफ्चलि/नेहफलि, सुलि, कमिविज़ि, तमिविज़ि** और **यमिविज़ि** शब्दों में **इ** की संयुक्ति स्पष्ट है। **यचकॉल्य** और **कॉल्य** में अन्तिम **इ** का यत्व हो गया है। **कॉल्यक्यथ** और **ततिकॉल्यक्यथ** में यत्व के बाद **क्यथ** प्रत्यय संयुक्त है।

॥ कोजुमिम्युजुशब्दाभ्यां स् ॥१४४॥

आभ्यां शब्दाभ्यां काले गम्यमाने स् प्रत्ययो भवति॥ कांजिस्। माह्नम्॥ मिमिज़िस्। अपराह्नम् ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.144

इन दो शब्दों में समय की निश्चितता के लिए **स** प्रत्यय संयुक्त होता है। **कॉजिस** 'शाम का' **मिमिज़िस** ''मध्याह्न का'।

व्याख्या–

कोज 'शाम' **मिम्युज़** 'मध्याह्न' इन दो शब्दों की काल स्थिति स्पष्ट करने के लिए **स** प्रत्यय संयुक्त होता है। **कोज़** का ओकार ऑकार में और **मिम्युज़** का उकार इकार में परिणित होता है। **कॉजिस** और **मिमिज़िस** शब्द सिद्ध है।

॥ शेषेभ्यो ऽप्यन् ॥१४५॥

शेषेभ्यो रात्रिदिनविभागेभ्यः अन्येभ्यो ऽपि अन् प्रत्ययो भवति ॥ मन्दिन्यन् । मध्याह्नम् ॥ दुपहरन् । मध्याह्नम् ॥ कालचनन् । सायम् ॥ बतन्यंगन् वा बतदबन् । नक्तम् ॥ अड्रातन् । अर्धरात्रे ॥ पतिम्पहरन् । रात्रिपश्चायामे ॥ एवमितरभाषाशब्देभ्यो ऽपि व्यवह्रियते ॥ सुब्हन् । प्रभातम् ॥ शामन् । सायम् । इति ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.145

रात, दिन के शेष अर्थात अतिरिक्त विभागों के साथ **अन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **मन्दिन्यन** 'मध्याह्न में' **दुपहरन** 'दोहहर में' **कालचनन** 'शाम को' **बतन्यंगन** अथवा **बतदबन** 'रात को' **अडरातन** 'आधी रात को' **पॅतिम पॅहरन** 'निशान्त काल में' इन के अतिरिक्त भाषा शब्दों में भी **अन** प्रत्यय व्यवहृत है। **सुबहन** 'सुबह को' **शामन** 'शाम को'।

व्याख्या–

बतन्यंगन अथवा **बतदबन** शब्दों का प्रयोग अत्यन्त सीमित है। पूर्व सूत्र में वर्णित **स** प्रत्यय भी विकल्प से **मन्द्यन** 'मध्याह्न' **दुपहर** 'दोहपर' **कालचन** 'शाम' शब्दों में संयुक्त हो सकता है। यथा– **मंद्यन्यस दुपहरस, कालचनस।**

॥ अः प्रत्यर्थे लिङ्गात्पूर्वः प्रथ् च ॥१४६॥

प्रतिशब्दस्यार्थे गम्यमाने अप्रत्ययो भवति लिङ्गात्पूर्वः प्रथ्शब्दश्च प्रयोज्यः ॥ प्रथ्द्दह । प्रतिदिनम् ॥ प्रथ्पहर । प्रतिप्रहरम् ॥ प्रथ्वरिश्च । प्रतिवर्षम् । इत्यादि ॥

द्वितीयान्तेभ्यः शब्देभ्यो ऽपि दृश्यते ॥ प्रथ्अकिस् । प्रत्येकम् ॥ प्रथ्विज़ि । प्रतिकालम् ॥ प्रथ्महनिविस । प्रतिपुरुषम ॥ प्रथ्ज़नानि । प्रतिस्त्रियम् । इत्यादि बोध्यम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.146

मूल अर्थात् अविकारी शब्द से पूर्व 'प्रति' अर्थ वाला शब्द **प्रथ** होने की स्थिति में अविकारी शब्द के साथ **अ** प्रत्यय संयुक्त होता है। **प्रथदोह** 'प्रतिदिन' **प्रथपॅहर** 'प्रति प्रहर' **प्रथवरिय** 'प्रतिवर्ष' इत्यादि। द्वितीय अन्त वाले अर्थात विकारी शब्दों को भी देख सकते हैं। **प्रथअकिस्** 'प्रत्येक को' **प्रथविज़ि** 'हर समय में' **प्रथमहनिविस** 'हर पुरुष को' **प्रथज़नानि** 'हर स्त्री को' इत्यादि।

व्याख्या–

उपसर्ग के रूप में **प्रथ** का प्रयोग अविकारी शब्दों में **अ** प्रत्यय की अपेक्षा करता है। वर्तमान स्थिति यह है, कि पुंलिंग रूपों में कर्म कारक विभक्ति **इस** अथवा **अस** का अन्तिम व्यंजन अकार युक्त है। स्त्रीलिंग रूपों में यह विभक्ति **इ** होती है। सूत्र के स्पष्टीकरण में उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत हैं।

॥ द्वहः प्रथ्लोपो वा ॥१४७॥

द्वह्शब्दात्पूर्वस्य प्रथ्शब्दस्य लोपो भवति ॥ द्वह । प्रतिदिनम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.147**

दोह शब्द से पूर्व **प्रथ** शब्द का लोप होता है। **दोह** 'प्रतिदिन'।

व्याख्या–

विकल्प में **दोह** 'दिन' शब्द के उपसर्ग **प्रथ** का लोप सम्भव है। इस स्थिति में शब्द के अन्त का 'ह' उकार युक्त हो जाता है। यथा– **दोहु** 'प्रतिदिन'।

॥ यप्रत्यये नित्यम् ॥१४८॥

तस्मादेव द्वह्शब्दात् यप्रत्यये परे नित्यं प्रथ्शब्दस्य लोपो भवति ॥ द्वहय् । प्रतिदिनमेव ॥ प्रथ्द्वहय् । इति तु न भवति ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.148**

दोह शब्द के अन्त में **य** प्रत्यय होने पर **प्रथ** शब्द का लोप नित्य है। **दोहय** 'प्रतिदिन' **प्रथदोहय** शब्द नहीं होता।

व्याख्या–

'प्रति' के अर्थ में **दोह** शब्द के साथ **य** प्रत्यय संयुक्त होने पर **प्रथ** उपसर्ग की अपेक्षा नहीं रहती।

॥ वीप्सायामाद्यात्पथन्वर्थे ॥१४९॥

अनुशब्दस्यार्थे गम्यमाने वीप्सायां द्विरुक्तशब्दस्य आद्यात् पथ् प्रत्ययो भवति ॥ द्वह्पथ् द्वह । अनुदिनम् ॥ वरिह्यपथ् वरिह्य । अनुवर्षम् ॥ ज़निपथ् ज़नि । अनुजनम् ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.149**

अनु शब्द के अर्थ में अनुगामी द्विरुक्त शब्द के पूर्व **पथ** प्रत्यय संयुक्त होता है। **दोहपथ दोह** 'दिन-ब-दिन' **वरियिपथ वरियि** 'साल-ब-साल' **ज़निपथ**

ज़नि 'व्यक्ति-ब-व्यक्ति' इत्यादि

व्याख्या–

पथ प्रत्यय के बाद मूल शब्द की पुनरुक्ति एक अनिवार्यता है। **पथ** के अन्तिम व्यंजन के महाप्राणत्व का लोप हो जाता है। यथा– **रंग छु दोहपतु दोह प्रज़लान** 'रंग दिन-ब-दिन निखरता है।

॥ इह्ब्रोँठ्शब्दाभ्यां वर्षार्थे उस् ॥१५०॥

स्पष्टम् ॥ इहुस् । ऐषमः ॥ ब्रोँठुस् [। आगामिवर्षे] ॥

अनुवाद–

सूत्र **4.1.150**

सूत्र स्पष्ट है। **इहुस्** 'इस वर्ष में' **ब्रोंठुस** 'अगले वर्ष में'।

व्याख्या–

वर्तमान में **इहुस** के स्थान पर **युहुस** का ही प्रयोग प्रचलित है। प्रत्यय रहित शब्द **इह्** अथवा **युह** का प्रयोग सम्भव नही है। जबकि प्रत्यय रहित शब्द **ब्रोंठ** का प्रयोग किया जाता है।

॥ पथो रकारश्च ॥१५१॥

पथ्शब्दात् वर्षार्थे उस् प्रत्ययो भवति अन्त्यस्य रकारादेशश्च ॥ परुस् । परारि ॥

अनुवाद–

सूत्र **4.1.151**

वर्ष अर्थ वाले **पथ** शब्द के साथ **उस** प्रत्यय संयुक्त होने से **पथ के थ** का रकार आदेश होता है। **परुस** 'पिछले वर्ष'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में **परुस** की व्युत्पत्ति **पथ** शब्द से निर्दिष्ट है। **परुस** 'पिछले वर्ष' स्वतंत्र शब्द मान सकते हैं।

॥ पूर्वतरार्थे प्रार्यादेशः ॥१५२॥

पथ्शब्दात् पूर्वतरवर्षार्थे उस् प्रत्ययो भवति। पथ्शब्दस्य प्रारि आदेशश्च॥ प्रार्युस् । पूर्वतरे वर्षे ॥

अनुवाद–

सूत्र **4.1.152**

पूर्वतर वर्ष के अर्थ में **पथ** शब्द के साथ **उस** प्रत्यय संयुक्त होता है।

पथ शब्द का प्रॉस्य आदेश है। प्रॉस्युस 'पूर्वतर वर्ष'।
व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में प्रॉरयुस शब्द की व्युत्पत्ति भी पथ शब्द से सिद्ध की गई है। इस को स्वतंत्र शब्द के रूप में स्वीकार कर सकते हैं।

॥ पञ्चम्यन्तादि्गर्थे कि्नि ॥१५३॥

पञ्चमीप्रत्ययान्तेभ्यस्तदादिशब्देभ्यो दिगर्थे अभिधेये कि्नि प्रत्ययो भवति [सू० १३२] ॥ ततिकि्नि । ततः ॥ यतिकि्नि । यतः ॥ कतिकि्नि । कुतः ॥ इतिकि्नि । इतः ॥ हुतिकि्नि । अमुतः ॥ इत्यादि ॥ ब्रूँठिकि्नि । अग्रतः ॥ पॅतिकि्नि । पृष्ठतः ॥ दछि्निकि्नि । दक्षिणतः ॥ खोव्रिकि्नि । वामतः ॥ तॅ्लिकि्नि । अधरस्तात् ॥ प्यॅठिकि्नि । ऊर्ध्वतः ॥ इत्यादि ॥

एवमितरपञ्चम्यन्तेभ्यो यथा [सू० १३७] । तत्र प्रत्ययाद्येकारस्याकारः अन्त्यस्य तु पूर्णता दृश्यते ॥ तोरकनि । ततः ॥ योरकनि । यतः ॥ कोरकनि । कुतः ॥ ओरकनि वा होरकनि । अमुतः । इतः ॥

प्राणिकृतादेशेभ्यश्च यथा ॥ तमिकनि । तवकनि । ततः ॥ यमिकनि । यवकनि । यतः ॥ कमिकनि । कवकनि । कुतः ॥ इमिकनि । इवकनि । इतः ॥ हुमिकनि । अमिकनि । अवकनि । अतः ॥ एभ्य एव शब्देभ्यो ऽनन्तरवाचकः पतशब्दश्च प्रयोज्यः ॥ तमिपत । ततो ऽनन्तरम् ॥ तवपत । ततो ऽनन्तरम् ॥ इत्यादि बुद्धिमता स्वयं ज्ञेयम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.153**

पंचमी प्रत्ययान्त **तत** आदि शब्दों के दिशा बोधक अर्थ में **किन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है (4.1.132 सूत्र) **ततिकिन्य** 'वहाँ (परोक्ष) से' **यॅतिकिन्य** 'जहाँ से' **कतिकिन्य** 'कहाँ से' **इतिकिन्य** 'यहाँ से' **हुतिकिन्य** 'वहाँ (प्रत्यक्ष) से' इत्यादि। **ब्रूँठयकिन्य** 'आगे से' **पॅत्यकिन्य** 'पीछे से' **दॅछिन्यकिन्य** 'दाऐं से' **खोहवुरयकिन्य** 'बाऐं से' **तॅल्यकिन्य** 'नीचे से' **प्यॅठ्यकिन्य** 'ऊपर से' इत्यादि। अन्य पंचम्यांत शब्दों में (4.1.137 सूत्र), प्रत्यय के इकार का अकार तथा अन्त की पूर्णता होती है। **तोरकनि** 'वहाँ (परोक्ष) से' **योरकनि** 'जहाँ से' **कोरकनि** 'कहाँ से' **ओरकनि** अथवा **होरकनि** 'वहाँ (प्रत्यक्ष से)'।

प्राणिकृत आदेश वाले, यथा– **तामिकनि/तवकानि** 'वहाँ (परोक्ष) से' **यॅमिकान/यवकनि** 'जहाँ से **कमिकनि/कवकनि** 'कहाँ से' **इमिकनि/इवकनि** 'यहाँ से' **हुमिकनि/अमिकनि/अवकानि** 'वहाँ (प्रत्यक्ष) से'। निरन्तर वाचकता के लिए इन शब्दों के साथ **पत** शब्द संयुक्त होता है। **तमिपत्** 'उस के बाद' **तवुपत्** 'उस के बाद' इत्यादि। बुद्धिमान स्वयं समझेंगे।

व्याख्या–

दिशा बोधकता के लिए **किन्य** प्रत्यय का निर्देश है। इस प्रत्यय का रूप **कनि** भी सिद्ध किया गया है। सर्वनाम समान होने के कारण **किन्य** और **कनि** संयुक्त सर्वनाम रूप ग्रन्थकार के अनुसार समान अर्थ सम्प्रेषित करते हैं। वर्तमान में **किन्य** प्रत्यय युक्त सर्वनाम 'से होकर' का बोध कराते हैं। यथा– **सु गव ततिकिन्य गरु** 'वह वहाँ से होकर घर गया।' **तोर** आदि सर्वनामों के साथ **कनि** प्रत्यय 'की तरफ' का बोध कराता है। यथा– **सु छु तोर कनि बिहिथ** 'वह वहाँ की तरफ बैठा है।' **तमि** आदि सर्वनामों के साथ **कनि** प्रत्यय 'के बदले' का बोध कराता हैं। यथा– **तमिकनि द्युतनस नकुदुय** 'उस के बदले नकदी ही दी'।

पतु प्रत्यय कार्य में निरन्तरता का बोध कराता है, जैसा कि स्पष्टीकरण में उल्लेख है।

॥ कालार्थे कालवाचिभ्यः ॥१५४॥

अज़्कनि [। अद्य प्रायः] ॥ पगाह्कनि [। श्वः प्रायः] ॥ कॉ॒लिक्यथ्कनि [। परश्वः प्रायः] ॥ ऊत्रकनि [। परह्यः प्रायः]॥ दॆहुम्कनि [। दशम्यां प्रायः]। हारकनि [। आषाढ़मासे प्रायः] ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.154

अज़कनि 'शायद आज' **पगाहकनि** 'शायद कल (आने वाला)' **कॉल्यक्यथकनि** 'शायद परसों (आने वाला)' **ऊतरुकनि** 'शायद परसों (बीता हुआ)' **दॆहमकनि** 'शायद दशमी को' **हारुकनि** 'शायद आषाढ़ (मास) में' इत्यादि।

व्याख्या–

काल वाचक शब्दों में समय द्योतित करने के लिए **कनि** प्रत्यय की संयुक्ति सम्भव है। इस संयुक्ति से समय की निश्चितता का बोध नहीं होता। यह प्रत्यय लगने से कालवाचक शब्द के आस-पास के समय का बोध होता है।

॥ अन्येभ्य इ् केवलश्च ॥१५५॥

तदादिशब्दव्यतिरिक्तेभ्यः अन्येभ्यः शब्देभ्यः केवल इ प्रत्ययश्च भवति दिगर्थे गम्यमाने ॥ ब्रूँठि । अग्रतः ॥ पॆ॒ति । पृष्ठतः ॥ खोवु॒रि । वामतः ॥ दछि॒नि । दक्षिणतः ॥ तॆ॒लि । अधस्तात् ॥ प्यॆ॒ठि । ऊर्ध्वतः ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.155

तत आदि शब्दों के अतिरिक्त अन्य शब्दों में दिशा बोध के लिए केवल

य (इ) प्रत्यय संयुजित होता है। **ब्रूँठ्य** 'आगे से' **पॅत्य** 'पीछे से' **खोवुर्स्य** 'बाऐं से' **दॅछिन्य** 'दाएँ से' **तॅल्य** 'नीचे से' **पेठ्य** 'ऊपर से' इत्यादि।

व्याख्या–

य प्रत्यय युक्त इन शब्दां के आगे **किन्य** प्रत्यय की सम्भावना है। यथा– **ब्रूँठ्यकिन्य यियिव** 'आगे से आइए'। ऐसी स्थितियों में **किन्य** का लोप सम्भव है, तथा **ब्रूँठ्य यियिव** 'आगे से आइए' वाक्य सिद्ध होगा। प्रस्तुत सूत्र इसी लोप का निर्देश करता है। तत की व्याख्या अगले सूत्र में स्पष्ट है।

॥ सर्वेभ्यः पांरि च ॥१५६॥

सर्वेभ्यः प्राणिकृतादेशतदादिभ्यः अन्येभ्यो ऽपि शब्देभ्यो दिगर्थे अभिधेये पांरि प्रत्ययो भवति ॥ कमिपांरि वा कपांरि। कस्मात्पार्श्वतः ॥ तमिपांरि वा तपांरि [। तस्मात्पार्श्वतः] ॥ यमिपांरि वा यपांरि [। यस्मात्पार्श्वतः] ॥ इत्यादि ॥ हुमिपांरि वा हुपांरि [। अमुष्मात्पार्श्वतः] ॥ इमिपांरि वा इपांरि [। अस्मात्पार्श्वतः]॥ अमिपांरि वा अपांरि [। अमुष्मात्पार्श्वतः]॥ दछिनिपांरि [। दक्षिणपार्श्वतः]॥ खोवुरिपांरि। वामपार्श्वतः ॥ ब्रूँठिपांरि [। अग्रपार्श्वतः]॥ पतिमिपांरि [। पश्चात्पार्श्वतः] ॥ इत्यादि ज्ञेयम् ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.156

प्राणिकृत आदेश वाले **तत** आदि तथा अन्य, सभी शब्दों के साथ दिशा बोध के लिए **पॉर्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। **कमिपॉर्स्य/कपॉर्स्य** 'कहाँ से' **तमिपॉर्स्य/तपॉर्स्य** 'वहाँ (परोक्ष) से' **येमिपॉर्स्य/यपॉर्स्य** 'जहाँ से'। **हुमिपॉर्स्य/हुपॉर्स्य** 'वहाँ (प्रत्यक्ष) से' **इमिपॉर्स्य/इपॉर्स्य** 'यहाँ से' **अमिपॉर्स्य/अपॉर्स्य** 'वहाँ (प्रत्यक्ष) से' **दछिन्यपॉर्स्य** 'दाऐं से' **खोवुर्स्यपॉर्स्य** 'बाऐं से' **ब्रूँठ्यपॉर्स्य** 'आगे से' **पतिमपॉर्स्य** 'पीछे से' इत्यादि।

व्याख्या–

दॅछिन्य 'दायाँ' **खोवुर** 'बायाँ' **ब्रूँठ्य** 'आगे' **पॅतिम** 'पीछे' आदि शब्दों के साथ **पॉर्स्य** प्रत्यय, वर्तमान में, प्रयुक्त नहीं होता। **कमिपॉर्स्य, तमिपॉर्स्य, येमिपॉर्स्य, हुमिपॉर्स्य, अमिपॉर्स्य** शब्दों का प्रयोग भी अत्यन्त सीमित है।

॥ चोरो विश्वगर्थे च्वच्ववादेशौ च ॥१५७॥

चोरशब्दात्पांरि प्रत्ययो भवति चोरश्च च्व च्ववा आदेशौ भवतः ॥ च्वपांरि वा च्ववापांरि। विश्वतः ॥ विश्वगर्थे किम्॥ चोरिपांरि। चतुष्पार्श्वतः ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.157

चो़र शब्द के साथ **पॉस्त्र** प्रत्यय संयुक्त होता है। **चो़र** का **च़्व**, **च़्ववा** आदेश होता है। **च़्वपॉस्त्र** अथवा **च़्ववापॉस्त्र** 'सर्वत्र'। 'सर्वत्र' अर्थ में क्यों? **चो़रिपॉस्त्र** 'चारों तरफ'।

व्याख्या–

सर्वव्यापी अर्थ में अगर **चो़र** शब्द के साथ **पॉस्त्र** प्रत्यय संयुक्त होता है तो **चो़र** का रूप बदल कर **च़्व** अथवा **च़्ववा** हो जाता है। रूप परिवर्तन न होने की स्थिति में **चो़रिपॉस्त्र** शब्द में सर्वव्यापकता नहीं रहती। इस रूप का वर्तमान प्रयोग व्याप्त नहीं है।

॥ सप्तम्यन्तात्कुन् ॥१५८॥

सप्तमीप्रत्ययान्तेभ्यः शब्देभ्यो दिगर्थे गम्यमाने कुन् प्रत्ययो भवति ॥ तोर्कुन्। तस्यां दिशि ॥ योर्कुन्। यस्यां दिशि ॥ कोर्कुन्। कस्यां दिशि ॥ योर्कुन्। अस्यां दिशि ॥ होर्कुन् वा ओर्कुन्। अमुष्यां दिशि [सू० १३६] ॥ एवं। तंतुकुन्। तस्यां दिशि ॥ यंतुकुन्। यस्यां दिशि ॥ कंतुकुन्। [क़स्यां दिशि ॥] इतुकुन्। [अस्यां दिशि ॥] हुतुकुन वा अंतुकुन्। [अमुष्यां दिशि] [सू० १३८]। इति॥ तूर्यकुन्। [तस्यामेव दिशि॥] इत्यादयश्चोह्याः ॥ उकार-रहितात्प्रत्ययादपि व्यवह्रियते ॥ तथ्कुन्। यथ्कुन्। कथ्कुन्। इथ्कुन्। हुथ्-कुन्। अथ्कुन्। इति ॥ यप्रत्ययविशिष्टाच्च यथा ॥ तूर्यकुन्। यूर्यकुन्। तथ्य्-कुन्। यथ्य्कुन्। इत्यादयः स्वयं विचार्याः॥ एवं। गामकुन्। गरकुन्। कलि-कुन्। वारिकुन्। [ह्वंकुन्।] ग्युरुकुन्। ह्यूरुकुन्। व्वनकुन्। इत्यादि ॥ षष्ठ्य-न्तलिङ्गादपि प्रयुज्यते ॥ मालिस् कुन्। पितुः पार्श्वे ॥ माज्य कुन्। मातुः पार्श्वे ॥ तमिस् कुन्। तस्य पार्श्वे ॥ यमिस् कुन्। [यस्य पार्श्वे ॥] इत्यादि ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.158

दिशा बोध के अर्थ में सप्तमी प्रत्ययांत शब्दों के साथ **कुन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **तोर्कुन** 'वहाँ (परोक्ष) की तरफ' **योर्कुन** 'जहाँ की तरफ' **कोरकुन** 'कहाँ की तरफ' **योर्कुन** 'यहाँ की तरफ' **होर्कुन/ओर्कुन** 'वहाँ (प्रत्यक्ष) की तरफ'। (4.1.136 सूत्र) एवं **तॅत्यकुन** 'वहीं (परोक्ष) की तरफ' **यॅत्यकुन** 'जहाँ की तरफ' **कॅत्यकुन** 'कहाँ की तरफ' **इत्यकुन** 'यहाँ की तरफ' **हुत्यकुन/ॲत्यकुन** 'वहीं (प्रत्यक्ष) की तरफ' (4.1.136 सूत्र) **तूर्त्यकुन** 'वहीं (परोक्ष) की तरफ' इसी प्रकार शेष भी।

उकार रहित शब्द के साथ भी यह व्यवहार में हैं। **तथकुन**, **यथकुन**, **कथकुन**, **इथकुन**, **हुथकुन**, **अथकुन** इति। **य** प्रत्यय विशिष्टता के लिए। यथा–

तूर्यकुन, यूर्यकुन, तॅथ्यकुन, येथ्यकुन इत्यादि। इन के अतिरिक्त – **गामकुन, गरकुन, क्वल्यकुन, वारिकुन, ह्योरकुन, ब्वनकुन** इत्यादि।

षष्ठी प्रत्यय युक्त शब्दों के साथ भी प्रयुक्त होता है। **मॉलिस कुन** 'पिता की तरफ' **माजिकुन** 'माँ की तरफ' **तमिस कुन** 'उस की तरफ' **येमिस कुन** 'जिस की तरफ' इत्यादि।

व्याख्या–

अधिकरण कारक विभक्ति वाले सर्वनामों के साथ **कुन** प्रत्यय की संयुक्ति का निर्देश है। इस प्रत्यय का सन्दर्भ भी दिशा बोधक है। प्रत्येक सर्वनाम के लगभग सभी रूपों का निर्देश है। यथा– **तोर, तथ, तूर्य, तॅथ्य** द्वारा यह बात स्पष्ट की गई है, कि **य** युक्त, सर्वनाम दिशा की निश्चितता सम्प्रेषित करता है। सर्वनामों के अतिरिक्त अन्य संज्ञा शब्दों के उदाहरण भी प्रस्तुत है। **गाम** 'गाँव' **गरु** 'घर' **क्वल** 'नदी' **वॉर** 'वाटिका' इसी सन्दर्भ के शब्द है। सम्बंध कारक विभक्ति का उल्लेख संस्कृत में अनूदित शब्द के आधार पर किया गया है। **मॉलिस कुन** का संस्कृत में अनुवाद 'पितुः पार्श्वे' किया गया है। भाषा में **मॉलिस** का अनुवाद 'पिता को' अर्थात कर्मकारक के रूप में ही है। इस के साथ के सभी उदाहरण कर्मकारक रूप में ही सिद्ध है।

॥ मयार्थे उवु ॥१५९॥

तन्मयः अस्तीत्यस्मिन्नर्थे उवु प्रत्ययो भवति ॥ स्वनुवु । स्वर्णमयः ॥ म्यच्युवु । मृण्मयः ॥ काठुवु । काष्ठमयः ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.159**

उसी के गुण-मय होने के अर्थ में **उव** प्रत्यय संयुक्त होता है। **स्वनुव** 'सोने का' **म्यच़्युव** 'मिट्टी का' **काठुव** 'लकड़ी का' इत्यादि।

व्याख्या–

इन स्थितियों में **उव** प्रत्यय सम्बन्ध कारक प्रत्यय के विकल्प में प्रयुक्त हुआ है। इस प्रत्यय का भाषा में व्यापक प्रयोग है। यथा– **कन्युव ब्रॉंद** 'पत्थर की दहलीज़' **हच्युव गुर** 'लकड़ी का घोड़ा'।

॥ अधीनार्थे बुज़्य् ॥१६०॥

तस्याधीनमित्यस्मिन्नर्थे बुज़्य् प्रत्ययो भवति ॥ लूकबुज़्य् । लोकाधीनम् ॥ खांदबुज़्य् । गर्ताधीनम् ॥ कलत्रबुज़्य् । भार्याधीनम् ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.160

उस के अधीन होने के अर्थ में **बुज़्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। **लूकबुज़्य** 'लोगों के अधीन' **ख्वड्बुज़्य** 'गढ़े के अधीन' **क्वलयिबुज़्य** 'पत्नी के अधीन' इत्यादि।

व्याख्या–

बुज़्य प्रत्यय का प्रयोग प्रायः तिरस्कार स्वरूप ही होता है। **ख्वड्बुज़्य, पाँबुज़्य** 'जल के अधीन' **अगनुबुज़्य** 'अग्नि के अधीन' आदि शब्दों का, लक्षणा में अपशब्दों के रूप में भी प्रयोग सम्भव है।

॥ अडल्यंकुशब्दो विकलार्थे ॥१६१॥

विकले वस्तुनि अभिधेये सति अडल्यंकु शब्दो निपात्यते ॥ अडल्यंकु। विकलः ॥ अडल्यंचू कोम् । विकला क्रिया ॥ अडल्यंचू लंरू। विकला शाला ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.161

वस्तु की आधी अधूरी स्थिति व्यक्त करने के लिए **अडुल्योक** शब्द प्रयुक्त होता है। **अडुल्योक** 'विक्लांग' **अडुल्यच कॉम** 'आधा अधूरा कार्य' **अडुल्यच लॅर** 'आधा अधूरा मकान' इत्यादि।

व्याख्या–

अडुल्योक शब्द का प्रयोग उपसर्ग के रूप में तो किया गया है, लेकिन इस शब्द की स्वतन्त्र सत्ता भी महत्वपूर्ण है। गर्भपात के लिए भाषा में **अडुल्योक** शब्द का प्रयोग होता है। विशेष्य शब्द स्त्रीलिंग होने की अवस्था में **अडुल्योक** के ककार का चकार तथा वर्तुलाकार स्वर का अवर्तुलाकार होने का निर्देश भी है, जैसा कि स्पष्टीकरण में अंकित है।

॥ अभ्रधूमवातमात्रायां रिंग् ॥१६२॥

एषां त्रयाणां विकलत्वे मात्रायामभिहितायां सत्यां रिंग् प्रत्ययः स्यात् ॥ अंबुररिंग् । अभ्रमात्रा ॥ दुहरिंग् । धूममात्रा ॥ वावरिंग् । वातमात्रा ॥ इति ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.162

इन तीनों का अंशमात्र अभिहित होने की स्थिति में **रिंग** प्रत्यय संयुक्त होता है। **ऒबुररिंग** 'अंश मात्र बादल' **दुहुरिंग** 'अंशमात्र धुआँ' **वावुरिंग** 'अंशमात्र वायु'। इति।

व्याख्या–

रिंग प्रत्यय का प्रयोग मात्र इन तीन शब्दों के लिए ही किया जाता है। वर्तमान में भाषा के साहित्य में पर्याप्त अभिवृद्धि हो रही है। इसलिए **रिंग** प्रत्यय के अधिक प्रयेग की अपेक्षा कर सकते हैं।

॥ प्राणप्रकाशयोर्लुथ् ॥१६३॥

प्राणप्रकाशयोर्मात्रायामभिहितायां लुथ् प्रत्ययो भवति। अत्र थकार आदेशकृतो ऽस्तीति ज्ञेयम् ॥ प्राणलुथ्। प्राणमात्रा ॥ शाहलुथ्। श्वासमात्रा ॥ गाशलुथ्। प्रकाशमात्रा ॥ चाँगिलुथ्। दीपमात्रा ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.163**

प्राण और प्रकाश का अंश मात्र होने की स्थिति में **लुथ** प्रत्यय संयुक्त होता है। यहाँ थकार आदेश स्वरूप है। **प्राणलुथ** 'प्राण का अंशमात्र' **शाहलुथ** 'श्वास का अंश मात्र' **गाशुलुथ** 'प्रकाश का आंशमात्र' **चॉंग्यलुथ** 'दीप का अंशमात्र'।

व्याख्या–

वर्तमान में **लुथ** का प्रयोग व्यापक नहीं है। **गाश** 'प्रकाश' और **चॉंग** 'दीपक' के साथ **लुय** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **गाशुलुय** 'प्रकाश का अंशमात्र' **चॉंग्यलुय** 'दीप का अंशमात्र'।

॥ पटस्य तुर् ॥१६४॥

पटस्य वस्त्रादेर्मात्रायां तुर् प्रत्ययो भवति ॥ कपरतुर्। कार्पासखण्डः ॥ पंट्टितुर्। और्णखण्डः ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.164**

कपड़ा आदि का अंश मात्र व्यक्त करने के लिए **तुर** प्रत्यय संयुक्त होता है। **कपरतुर** 'कपड़े की कतरन' **पॅंट्यतुर** 'गर्म कपड़े की कतरन'।

व्याख्या–

कपड़ा और कागज़ के अंश मात्र के लिए **तुर** प्रत्यय संयुक्त होता है। **काकज़ तुर** 'कागज़ की कतरन' **साडितुर** 'साड़ी की कतरन'। अगले सूत्र में अंशमात्र व्यक्त करने के लिए अतिरिक्त प्रत्ययों का उल्लेख है।

॥ छल्तिलिमावन्यतश्च ॥१६५॥

वस्त्रादेरन्यस्यापि मात्रायामभिहितायां छल् प्रत्ययः तिलिम् प्रत्ययश्च स्यात् ॥ कपर्तिलिम् । कार्पासखण्डः ॥ च्वच्यतिलिम् । अपूपखण्डः ॥ बुर्ज-तिलिम् । भूर्जखण्डः ॥ इत्यादि ॥ एवं । कपर्छल् । च्वच्यछल् । बुर्जछल् । पच्यछल् । पट्टीखण्डः ॥ क्रैह्वमाज़्छल् । यकृत्खण्डः ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.165

वस्त्र आदि का अंश मात्र अभिहित होने की स्थिति में **छल** अथवा **तिलिम** प्रत्यय संयुक्त होते हैं। **कपरतिलिम** 'कपड़े की कतरन' **च़्वचितिलिम** 'रोटी का टुकड़ा' **बुर्ज़ुतिलिम** 'भोजपत्र का टुकड़ा' इत्यादि। तथा— **कपरछल, च़्वचिछल, बुर्ज़ुछल, पचिछल** 'लकड़ी का टुकड़ा' **क्रैह्वमाज़छल** 'कलेजी का टुकड़ा' इत्यादि।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। कपड़े के अतिरिक्त जितने शब्द स्पष्टीकरण में प्रस्तुत हैं उन के साथ **तुर** प्रत्यय संयुक्त नहीं हो सकता। इस सन्दर्भ में कह सकते हैं, कि **छल** और **तिलिम** प्रत्यय भाषा में अधिक व्यापक हैं।

॥ रेम्फ् अल्पकरुणयोः ॥१६६॥

अल्पस्य करुणायाश्चार्थे रेम्फ् भवति ॥ करुणायां यथा । शुर्रिरेम्फ् । पोतकः ॥ गुर्रिरेम्फ् । अश्वकः ॥ महनिव्रिरेम्फ् । पुरुषकः ॥ अल्पार्थे यथा । चूँठिरेम्फ् । क्षुद्रपालीवतः ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.166

अल्पत्व अथवा करुणा भाव में **रेम्फ** प्रत्यय संयुक्त होता है। करुणा भाव में यथा— **शुर्यरेम्फ** 'छुटका' **गुर्यरेम्फ** 'बछेरा' **महनिव्यरेम्फ** 'छुटका नौकर'। अल्पत्व यथा— **चूँठ्यरेम्फ** 'सेब का टुकड़ा' इत्यादि।

व्याख्या—

वर्तमान में **रेम्फ** प्रत्यय का प्रयोग प्रायः सीमित ही है। करुणाभाव के अर्थ में **रेम्फ** का स्वतन्त्र प्रयोग सम्भव है। यथा— **रेम्फि सोम्ब शुर** 'रेम्फ के जितना बच्चा'।

॥ रैंछ़् संबन्धस्य ॥१६७॥

संबन्धस्याल्पत्वे अभिधेये रैंछ़् प्रयुज्यते। संबन्धस्तु वस्त्रादिकस्य वा भवतु जीवस्य वा भवत्विति ॥ कपर्‍रैंछ़्। कार्पासखण्डः ॥ मातामाल्‍रैंछ़् छ्यह्। मातामहगृहसंबन्धमात्रास्ति ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.167

संबन्धों की अल्पता व्यक्त करने के लिए **रैंछ़** प्रत्यय संयुक्त होता है। सम्बन्ध वस्तु के साथ हो अथवा जीव के साथ। **कपररैंछ़** 'कपड़े का अल्पमात्र' **मातामालरैंछ़ छि** 'ननिहाल के साथ अल्प सम्बन्ध हैं।

व्याख्या—

रैंछ़ प्रत्यय का वर्तमान में व्यवहार नहीं है। अल्पार्थ में **रछ़खंड** स्वतन्त्र शब्द के रूप में प्रयुक्त हो सकता है। यथा— **मातामालस सुत्य छुस रछ़खंड संबन्द** 'ननिहाल के साथ (उस का) थोड़ा बहुत सम्बन्ध है।'

॥ जंड्कांन्‌तुल्‌श्च शाककाष्ठयोः ॥१६८॥

शाकानां काष्ठानां च सामान्येन मात्रायामभिहितायां सत्यां जंड् प्रत्ययः कांन् प्रत्ययो वा तुलु प्रत्ययो वा भवति। चशब्दात् थोपु प्रत्ययश्च स्यात् ॥ हाकजंड्। किंचिच्छाकः ॥ काठजंड्। किंचित्काष्ठम् ॥ पोपजंड्। किंचित्पुष्पाणि ॥ हाककांन्। काठकांन्। पोपकांन् ॥ हाकतुलु। काठतुलु। पोपतुलु। ज़िन्नितुलु। सिन्नितुलु। मुञ्यतुलु ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.168

साग-सब्ज़ी और जलावन की सामान्य मात्रा व्यक्त करने के लिए **ज़ंड**, **कॉन्य** अथवा **तुल** प्रत्यय संयुक्त होता है। कुछ शब्दों के साथ **थोप** प्रत्यय भी सम्भव है। **हाकुज़ंड** 'साग की ढ़ेरी' **काठुज़ंड** 'जलावन की ढ़ेरी' **पोशिज़ंठ** 'फूलों की ढ़ेरी'। **हाकुकॉन्य, काठुकॉन्य, पोशिकॉन्य, हाकुतुल, पोशितुल, ज़िन्यतुल, सिन्यतुल, मुंजितुल।**

व्याख्या—

सूत्र में वर्णित तीन प्रत्यय हैं— **ज़ंड, कॉन्य** और **तुल**। स्पष्टीकरण में **थोप** प्रत्यय का भी उल्लेख है। वर्तमान में इन चारों प्रत्ययों का वितरण मात्रा के आधार पर किया जाता है। अधिकतम मात्रा के लिए **ज़ंड**, तथा न्यूनतम मात्रा के लिए **तुल** संयुक्त होता है। **कॉन्य** और **थोप** इसी क्रम में इनके मध्य आ सकते हैं। मात्रा के अतिरिक्त **ज़ंड़** प्रत्यय ढ़ेरी की अव्यवस्था भी व्यक्त करता है।

॥ सस्यादीनां फ़ोल ॥१६९॥

सस्यानां मात्रायां सामान्येन वाच्यायां सत्यां फ़ोल प्रत्ययो भवति ॥ दाँफ़ोल [सू० ३।८]। किंचिद्धान्यम् ॥ तमुलफ़ोल। किंचित्तण्डुलः ॥ करफ़ोल। किंचित्कलायः ॥ म्वंगफ़ोल। किंचिन्मुद्गः। इत्यादि ॥ आदिशब्दादन्येभ्यो ऽपि ॥ चुनिफ़ोल। किंचिदङ्गारः ॥ बंठिफ़ोल। किंचित्करीषः ॥ म्यछ्यफ़ोल। किंचिन्मृत्तिका ॥ फ़ोलशब्दस्य बहुत्वनिर्देशतस्तेषां कणा एव निर्णीयन्ते। न तु तेषां साकल्यम्। यथा ॥ दाँफ़ॉलि। धान्यकणाः ॥ तमुलफ़ॉलि। तण्डुलकणाः ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.169

अनाज की सामान्य मात्रा व्यक्त करने के लिए **फ़ोल** प्रत्यय संयुक्त होता है। **दाँफ़ोल** 'देखें (3.1.8 सूत्र) 'थोड़ा सा धान' **तौमुलफ़ोल** 'थोड़ा सा चावल' **करफ़ोल** 'थोड़ी सी मटर' **म्वंगफ़ोल** 'थोड़ा सा मूँग' इत्यादि। अन्य शब्दों के उदाहरण– **चुनिफ़ोल** 'थोड़े से कोयले' **बॅठ्यफ़ोल** 'थोड़े से ओपले' **म्यछ़िफ़ोल** 'थोड़ी सी मिट्टी'। **फ़ोल** शब्द का बहुवचन रूप निर्देश करने से कणों की गिनती अभिप्रेत होती है, उन का भण्ड़ार नहीं। यथा– **दाँफ़ॉल्य** 'धान के दाने', **तौमलफ़ॅल्य** 'चावल के दाने' इत्यादि।

व्याख्या–

अनाज और कुछ अन्य वस्तुओं की किंचित मात्रा व्यक्त करने के लिए **फ़ोल** प्रत्यय संयुक्त होता है। **दानि** 'धान' के साथ **फ़ोल** जुड़ने पर **नि** का लोप और अनुस्वार का आगम होता है। समास प्रक्रिया के अन्तर्गत 3.1.8 सूत्र में यह रूपान्तरण स्पष्ट किया गया है। **फ़ोल** का बहुवचन रूप है। **फ़ॅल्य**। यदि **फ़ॅल्य** प्रत्यय के रूप में संयुक्त होता है, तो अर्थ की दृष्टि से महत्वपूर्ण परिवर्तन हो जाता है। **फ़ोल** प्रत्यय अनाज की एक सीमित मात्रा व्यक्त करता है, परन्तु **फ़ॅल्य** प्रत्यय से अभिप्राय होता है अनाज के गिनती भर दाने।

॥ सर्वेभ्यो ऽसस्येभ्यो म्वया ह्‌ना वा लक्ष्यतः ॥१७०॥

अभ्रादिभ्यः सस्यवर्जितेभ्यः सर्वेभ्यः सामान्येन मात्रायां वाच्यायां म्वया ह्‌ना वा भवति। लक्ष्यतो व्यवहारानुसारतः। अनयोराशब्दः सामान्यप्रत्ययजो ज्ञेयः ॥ अब्रम्वया। अब्रह्‌ना ॥ दूदम्वया। दूदह्‌ना ॥ वावम्वया। वावह्‌ना ॥ एवं सर्वेषाम् ॥ हाकम्वया। हाकह्‌ना। इति पक्-

स्यैव ज्ञेयः ॥ हाकतुल्ला । इति पक्वापक्वयोरपि ॥ एवं । पोषम्वया । पोषहना ॥ काष्ठस्य तु न ॥ एवं । चुन्नम्वया । चुन्नहना ॥ म्यच्यम्वया । म्यच्यहना ॥ असस्येभ्यः किम् । दाँम्वया । इति न भवति । किंतु । बतफोलवा । बत-म्वया । बतहना । इत्यस्मिन्सर्वे साधवः । शेषा व्यवहारतो ज्ञेयाः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.170

अनाज को छोड़ कर बादल आदि सभी वस्तुओं की सामान्य मात्रा व्यक्त करने के लिए **म्वया** अथवा **हना** प्रत्यय संयुक्त होता है। लक्षणा में यह व्यवहार का माधुर्य व्यक्त करता है। ये दोनों अशब्द सामान्य प्रत्यय ही मानने चाहिए। **ऑबरुम्वया/ऑबरुहना, दुहम्वया/दहहना, वावम्वया/वावहना,** इसी प्रकार सभी शब्द। **हाकुम्वया/हाकुहना** 'पकाए साग के लिए'। **हाकुतुला** 'पकाया हुआ भी और कच्चा साग भी' एवं **पोशिम्वया, पोशिहना**। लकड़ी के लिए नहीं। अन्य उदाहरण— **चुनिम्वया/चुनिहना, म्यचि़म्वया/म्यचि़हना**। अनाज रहित क्यों? **दाँम्वया** ऐसा नहीं होता है, किन्तु **बतुफोला, बतुम्वया बतुहना** यह सब सम्भव है। शेष व्यवहार माधुर्य के अनुसार।

व्याख्या—

अल्प मात्रा व्यक्त करने के लिए **म्वया** और **हना** प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। इस के अतिरिक्त ये दोनों प्रत्यय वस्तु को प्रियतर बनाने में भी उपयोगी है। **चायम्वया** अथवा **चायहना** इसी तरह के उदाहरण है। **म्वया** अथवा **हना** प्रत्यय चाय को एक प्रियतर पेय पदार्थ बनाते हैं। इस सन्दर्भ में **हना** का प्रयोग भाषा में अधिक व्यापक है। यथा— **बॉतुहना गेवितव** 'गीत (प्रियतर) गाइए। **माहरेनि करितव ट्यक्यहना** 'दुलहन को तिलक (प्रियतर) लगाइए'। इन उदाहरणों में **म्वया** प्रत्यय प्रियतर अर्थ सम्प्रेषित नहीं करेगा। इन दोनों प्रत्ययों का एक साथ प्रयोग भी सम्भव है यथा— **पौलावु म्वयि हना** 'पुलाव ज़रा सा (प्रियतर)'

॥ जलस्थानार्थ एव बल् ॥१७१॥

बल् प्रत्ययः जलसंबन्धिस्थानस्यार्थे एव प्रयुज्यते ॥ व्यथबल् । वितस्ता-स्थानम् ॥ गंगबल् । गङ्गास्थानम् ॥ मा़रबल् । मारी [नदी] स्थानम् ॥ प्वख-रिबल् । वापीस्थानम् ॥ क्रूरिबल् । कूपस्थानम् ॥ आवरिज्ञबल् । चितास्था-नम् ॥ शिमुशानबल् । श्मशानस्थानम् ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.171

जल सम्बन्धी स्थान के अर्थ में **बल** प्रत्यय संयुक्त होता है। **व्यथुबल**

'वितस्ता का स्थान' **गंगुबल** 'गंगा का स्थान' **मॉरबल** 'मार (नाला) का स्थान' **पोखस्यबल** 'चश्मे का स्थान' **क्रुस्यबल** 'कुऐं का स्थान' **आवस्यनबल** 'चिता का स्थान' **शिमशानबल** 'श्मशान का स्थान'।

व्याख्या–

कश्मीर में कुछ स्थानों के नाम भी **बल** प्रत्यय युक्त हैं, कारण यह है, कि उन स्थानों में पर्याप्त जल उपलब्ध है। यथा– **छच़बल, सुम्बल, अछबल, गगुरिबल, नागबल** आदि। चितास्थान और श्मशान भी प्रर्याप्त जल के आस-पास ही होते हैं। इसीलिए इन के साथ भी **बल** प्रत्यय संयुक्त होता है।

॥ अन्यत्रापि च बलिदानस्थाने ॥१७२॥

यत्र जलदेवायान्यस्मै भूदेवाय भूतादिभ्यश्च बलिः प्रदीयते तत्रापि बल्शब्दः प्रयुज्यते ॥ सबबल्। सभास्थानम् ॥ वुरबल्। वरार्थं यत्र पाकः क्रियते ॥ कौंद्-बल्। इष्टिकापाकस्थानम् ॥ राज़बल्। श्मशानस्थानम् ॥ ग्रटबल्। जलघरट्टस्थानम् ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.172

जहाँ जल देव, भूदेव अथवा भूत-प्रेतों के लिए बलि दी जाती है, वहाँ भी **बल** शब्द प्रयुक्त होता है। **सबुबल** 'सभास्थान' **वुरुबल** 'उत्सवों के लिए खाना बनाने का स्थान' **कोंदुबल** 'भट्टी' **राज़ुबल** 'श्मशान' **ग्रटुबल** 'पनचक्की' इत्यादि।

व्याख्या–

जल स्थान के अतिरिक्त **बल** प्रत्यय का प्रयोग उन स्थानों के लिए भी सम्भव है, जहाँ कर्मकाण्ड़ सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होते हैं। स्पष्टीकरण में उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत हैं।

॥ वार्शब्दस्य स्नानस्थाने वस्य यः ॥१७३॥

यत्रैव नरैः स्नानं क्रियते तत्रैव देवर्षिपितृभ्यो वारिदानं वितीर्यते इति कश्मीरसंप्रदायः। अतो नद्यादेर्यत्र कुत्रचित्स्थाने स्नानादि क्रियते तत्र वार्-शब्दात् बल् प्रत्ययो भवति वकारस्य च यत्वम् ॥ यारबल्। स्नानस्थानम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 4.1.173

कश्मीरी पंडित सम्प्रदाय में जहाँ पुरुष स्नान करते हैं, वहीं पर देवों, ऋषियों और पित्रों को तर्पण भी दिया जाता है। नदी आदि के जिस भी स्थान पर स्नान आदि क्रिया सम्पन्न होती है, वहाँ **वार** शब्द के साथ **बल** प्रत्यय संयुक्त

होता है। वकार के यकार का आदेश है। **यारबल** 'स्नान आदि का स्थान'।

व्याख्या–

वार शब्द का प्रयोग वारि अथवा जल के अर्थ में किया गया है। उसी **वार** के वकार का यकार हो जाता है, और व्युत्पन्न शब्द **यार** के साथ **बल** प्रत्यय संयुक्त हो जाता है। **यारबल** पर ही पूजा-स्थान निर्माण की भी परंपरा रही है। वितस्ता के किनारे यत्र-तत्र यारबलों पर अनेक मन्दिर सुशोभित हैं।

॥ पैँसयुगले टूँकु ॥१७४॥

टूँकुशब्दो निपात्यते ॥ टूँकु । पणयुगम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.174**

टूँक शब्द निपातात्मक है। **टूँक** 'दो पैसे'।

व्याख्या–

पाँसु 'पैसे' शब्द के साथ **टूँक** 'टक्का' सामासिक सम्बन्ध स्थापित करता है, यथा– **पाँसु-टूँक** 'रूपये-पैसे'। **टूँक** का स्वतन्त्र प्रयोग भी सम्भव है। **मे छुनु टूँक ति चंदस** 'मेरी जेब में कौड़ी भी नही है।'

॥ तत्परतो हत् ॥१७५॥

त्र्यादिपणानां संख्यायामभिहितायां हत् प्रत्ययः स्यात् ॥ त्रिहथ् । पणत्रयम् ॥ च़ोर्हथ् । पणचतुष्कम् ॥ पाँच़्हथ् । पणपञ्चकम् ॥ परंतु यथा पूर्वोक्तसूत्रेषु शतसंख्यायां नवभ्यः शत् इति व्यवह्रियते [सू० ११५ इत्यादि] तथैवात्रापि विज्ञेयम् ॥ नव्शथ् । पणनवकम् । इत्यादि ॥ किंतु वणिग्जनैः पणदशकस्यापि सहस्रवाची सास्शब्दः परिभाष्यते ॥

अनुवाद– **सूत्र 4.1.175**

संख्या अभिहित होने पर तीन आदि पैसों के साथ **हत** प्रत्यय संयुक्त होता है। **त्रेहथ** 'तीन सौ पैसे' **चोरहथ** 'चार सौ पैसे' **पाँछ़हथ** 'पाँच सौ पैसे' 4.1.115 सूत्र में कहा गया है कि नौ के आगे **शत्** प्रत्यय का व्यवहार होता है। इसी तरह यहाँ भी है। **नवशथ** 'नौ सौ पैसे' इत्यादि। किन्तु वाणिक जन दस सौ पैसे को सहस्र वाची **सास** शब्द से परिभाषित करते हैं।

व्याख्या–

वर्तमान में **हथ** अथवा **शथ** प्रत्ययों के बाद **रोपुयि** 'रूपए' अथवा **पाँसु** 'पैसे' शब्द प्रयुक्त होने के बाद ही मुद्रात्मक अर्थ सम्प्रेषित हो सकता है। अन्यथा

हथ अथवा **शथ** संयुक्त शब्द मात्र संख्यावाची है। हथ और **शथ** में तकार का थकार सिद्ध है।

॥ शतावधि जनसंख्यायां जंनुशब्देनैव संख्यासमासः ॥१७६॥

जनसंख्यायां वाच्यायां सत्यां जंनुशब्दादेव पूर्वमुत्तरं वा संख्याशब्दाः संगन्तव्याः ॥ जंनि पंच़ाह्मर [सू॰ २।३।४४] । पञ्चाशज्जनाः ॥ शेठ् जंनि । षष्टिजनाः ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद— सूत्र **4.1.176**

जनसंख्या के अर्थ में संख्या शब्द के पूर्व अथवा उत्तर में **ज़ेंन्य** शब्द संयुक्त होता है। **ज़ेंन्यपंच़ाहमर** (सूत्र 2.3.44) 'लगभग पच्चास लोग' **शेठ ज़ेंन्य** 'साठ लोग'।

व्याख्या—

ज़ौन 'जन' का स्वतन्त्र प्रयोग भी कभी कभी सम्भव है। यथा— **अख ज़ौन** 'एक जना'। संख्या शब्द के साथ इस का प्रयोग व्यापक है। इस का बहुवचन रूप **ज़ेंन्य** 'जने' है। उदाहरणों में इसी रूप का प्रयोग है। **पंच़ाह** 'पचास' शब्द के साथ प्रत्यय रूप में **मर** अंकित है। यह प्रत्यय संख्या की निश्चितता को अनिश्चितता में परिवर्तित करता है, अर्थात कथित संख्या के आस-पास।

॥ लूकशब्देन शतादिषु ॥१७७॥

जनानां शतसहस्रादिसंख्यायां वाच्यायां लूकशब्देन संख्याशब्दाः पूर्वमुत्तरं वा संधेयाः ॥ हथ् लूक । शतं जनाः ॥ ज़ुहथ् लूक । जनानां द्विशती ॥ त्रिहथ् लूक [। जनानां त्रिशती] ॥ इत्यादि ॥ हथ् ज़नि । शतं जनाः ॥ सास् ज़नि । [सहस्रं जनाः ॥] इति च कदाचिद्व्यवह्रियते तदल्पत्वाद्गौणमेव बोध्यम् ॥

अनुवाद— सूत्र **4.1.177**

लोगों की सौ, हज़ार आदि संख्या व्यक्त करने के लिए संख्या शब्द के पूर्व अथवा उत्तर में **लूक** शब्द का प्रयोग होता है। **हथलूख** 'सौ लोग' **ज़हुथ लूख** 'दो सौ लोग' **त्रेहथ लूख** 'तीन सौ लोग' इत्यादि। **हथज़ेंन्य** 'सौ लोग' **सास-ज़ेंन्य** 'हज़ार लोग' का भी कभी-कभी व्यवहार होता है। कम प्रयोग होने के कारण इस को गौण ही मानना चाहिए।

व्याख्या–

सौ से आगे की संख्या के लिए सामान्यतया **लूख** का ही प्रयोग किया जाता है। सौ से कम की संख्या के लिए **लूख** का प्रयोग बहुत सीमित है। वहाँ **ज़ेन्य** का ही प्रयोग उपयुक्त है। **लूख** और **ज़ेन्य** का प्रत्यय के रूप में अन्तर स्पष्ट करने से भाषा के प्रति ग्रन्थकार की सूक्ष्म दृष्टि का परिचय प्राप्त होता है। यहाँ भी **लूक** के 'क' का महाप्राणत्व होना भाषा का सामान्य नियम है।

॥ त चार्थे ॥१७८॥

चशब्दस्यार्थे त भवति ॥ सुह् त च़ूह्। स च त्वम् ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.178

'और' के अर्थ में तु का प्रयोग होता है। **सु तु चु** 'वह और तुम'।

व्याख्या–

अगला सूत्र ति 'भी' के विषय में है। प्रस्तुत सूत्र में तु स्पष्ट करते हुए ग्रन्थकार ने तु और ति के अर्थ सम्बन्धी संबन्ध स्पष्ट किए हैं।

॥ अपिशब्दार्थे ति ॥१७९॥

स्पष्टम्। बहुवचनेषु तशब्दस्थाने तिशब्द एव प्रयुज्यते॥ सुह् ति च़ूह् ति। सो ऽपि त्वमपि ॥ मह्‌निवि ति गुपन् ति आय्। नराश्च पशवश्चागताः ॥ न तु मह्‌निवि त गुपन् त आय्। इति भवति ॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.179

सूत्र स्पष्ट है। बहुवचनों में तु शब्द के स्थान पर ति शब्द प्रयुक्त होता है। **सु ति चु ति** 'वह भी और तुम भी' **मौहनिव्य ति गुपन ति आय** 'लोग भी पशु भी आ गए'। **मौहनिव्य तु गुपन तु आय** ऐसा वाक्य सम्भव नहीं है।

व्याख्या–

तु के प्रयोग से एक से अधिक प्रातिपदिकों का कार्य एक साथ सम्पन्न होता है, यथा– **बुलबुल तु नना जी आव** 'बुलबुल और नना जी आ गए', **असि ख्यव ज़ामुत द्वद तु बतु** 'हमने दही और भात खाया'। **ति** के प्रयोग से प्रातिपदिकों का कार्य एक साथ सम्पन्न होना आवश्यक नहीं है, यथा– **बुलबुल ति आव नना जी ति आव** 'बुलबुल भी आया और नना जी भी आया'। **असि ख्यव ज़ामुत द्वद ति बतु ति** 'हमने दही भी खाया और भात भी। भाषा में **ति** और **तु** का एक साथ प्रयोग अधिक स्वीकार्य है, यथा– **बुलबुल ति आव तु नना जी ति आव** 'बुलबुल भी आया और नना जी भी आया'। **असि ख्यव ज़ामुत द्वद**

ति तु बतु ति 'हमने दही भी खाया और भात भी'।

॥ ब्रिय पुनरपरार्थे ॥१८०॥

पुनः शब्दस्यार्थे वियशब्दः स्यात् अपरार्थे च ॥ विय कॅरिज़ि। पुनः कुर्याः ॥ विय वति। अपरमार्गेण ॥

अनुवाद— **सूत्र 4.1.180**

बेयि शब्द का प्रयोग दुबारा और दूसरे के अर्थ में किया जाता है। **बेयि करिज़ि** 'दुबारा करो' **बेयि वति** 'दूसरे मार्ग से'।

व्याख्या—

'दुबारा' और 'दूसरे' के अतिरिक्त **बेयि** का प्रयोग 'और मात्रा' के अर्थ में भी सम्भव है, यथा— **बुलबुलस गछ़ि बेयि खिर** 'बुलबुल को और खीर चाहिए'।

॥ इवार्थे ज़न् ॥१८१॥

इवशब्दस्यार्थेऽत्र ज़न्शब्दो भवति॥ तोत ज़न् छुद् परान्। शुक इवाधीते॥ मॉलिस् जन छुद् रछान्। पितेव रक्ष्यते॥

अनुवाद— **सूत्र 4.1.181**

'जैसे' के अर्थ में **ज़न** शब्द का प्रयोग होता है। **तोतु ज़न छु परान** 'तोते के जैसे पढ़ता है', **मॉलिस ज़न छु रछान** 'पिता को जैसे पालता है'।

व्याख्या—

ज़न शब्द का प्रयोग भाषा में व्यापक है। **म्य ज़न छु बासान** 'मुझे लगता है', **म्यवु ज़न छु ओमुय** 'फल जैसे कच्चा ही है'।

॥ सादृश्यार्थे ह्युहु ॥१८२॥

स्पष्टम् ॥ मॉलिस् ह्युहु [वा ह्यिहु]। पितृसंनिभः ॥ समासे तु। मोलु ह्युहु छुस्। सः पितृसंनिभस्तस्यास्ति ॥ स्वन् ह्युहु छुद् नॅापान्। स्वर्ण इव दीप्यते। इत्यादि ॥

अनुवाद— **सूत्र 4.1.182**

सूत्र स्पष्ट है। **मॉलिस ह्युह/ह्युव** 'पिता जैसा'। वाक्य में— **मोल ह्युव छुस** 'वह (उस के लिए) पिता जैसा है' **स्वन ह्युह छु नॉँपान** 'सोना जैसा चमकता है।' इत्यादि।

व्याख्या–

सादृश्यता के अर्थ में **ह्युह/ह्युव** का प्रयोग व्यापक है। **चे़ ह्युह शेतान छुनु काँह** 'तुम जैसा शैतान कोई नहीं है'।

॥ निर्धारणे च ॥१८३॥

स्पष्टम्। बुडु ह्युह्व अॅनिज़्यन्। वृद्धमिव समानयेः॥ नात्र कोऽपि वृद्ध-सदृशो नरोऽत्रगम्यते। किंतु। य एव वृद्धो भवेत्तमेवानयेरित्यवधार्यम्॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.183

सूत्र स्पष्ट है। **बुड़ अॅन्यज़्यन** 'वृद्ध को ही लाइए' इस का यह अर्थ नहीं है, कि वृद्ध के सदृश्य व्यक्ति को लाइए। अर्थ है, जो वृद्ध है उसी को लाइए।

व्याख्या–

सादृश्य के अतिरिक्त **ह्युह/ह्युव** का प्रयोग वस्तु अथवा व्यक्ति को निर्दिष्ट करने के लिए भी किया जाता है। **ज़्यूठ ह्युह/ह्युव परदु ह्यस** 'लम्बा वाला परदा (उस से) ले लो।'

॥ अन्यप्राधान्ये सहार्थे सूत्य् ॥१८४॥

इतरस्य प्राधान्ये सति तेनैव साकं सहार्थे अभिधेये सूत्य् प्रत्ययो भवति। वा सूतिन् शब्दो भवति [सू० २।१।६०]। सहार्थतृतीयायां विकल्पकथनात्॥ मॉलिस् सूत्य् आव्। पित्रा सहागतः॥ अत्र पितैव प्रधानः पुत्रस्तु तत्साहित्ये-नैवागमनकारी॥

अनुवाद– सूत्र 4.1.184

अन्य प्रधान होने पर उस के सहार्थ की स्थिति में **सुत्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। विकल्प में **सुतिन** शब्द संभव है (देखें 2.1.60 सूत्र)। सहार्थ तृतीया में इस विकल्प का उल्लेख है। **मॉलिस सुत्य आव** 'पिता के साथ आया'। यहाँ पिता प्रधान है। उसी के सहार्थ में पुत्र का आगमन हुआ है।

व्याख्या–

करणकारक होने के साथ **सुत्य** परसर्ग की व्याख्या तद्धित प्रत्यय के रूप में की गई है। इसी प्रकार के अभिप्राय से, अगले सूत्र में **सान** प्रत्यय का उल्लेख किया गया है।

॥ स्वप्राधान्ये सान् ॥१८५॥

आत्मनः क्रियाप्राधान्ये सतीतरस्य सहार्थे अभिधेये सान् प्रत्ययः ॥ मॉलिस् सान् आव् । सतात आयातः ॥ अत्र पुत्र एव प्रधान्येनागमकृत् तातस्तु गौणतया तत्साहित्येनोद्दिष्ट इत्यादि स्वयमूह्यम् ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.185

स्व क्रिया प्रधान होने पर अन्य के सहार्थ की स्थिति में **सान** प्रत्यय संयुक्त होता है। **मॉलिस सान** आव 'पिता सहित आया'। यहाँ पुत्र का आगमन प्रधान और पिता का आगमन गौण है। उन के आगमन में सहित का आदेश, इत्यादि स्वयं समझ सकते हैं।

व्याख्या—

ग्रन्थकार ने यह स्पष्ट किया है कि **सुतिन** और **सान** प्रत्यय पारस्परिक व्यतिरेक में हैं। हिन्दी का पद 'लेकर' **सान** का पर्याय नहीं है। **सान** का पर्याय सहित ही है। 'पिता को लेकर आया' वह अर्थ सम्प्रेषित नहीं करता जो 'पिता सहित आया' वाक्य सम्प्रेषित करता है।

॥ द्व्यादिभ्यः पञ्चभ्यो युगपदर्थे शवय् ॥१८६॥

द्विवाचकात् जुह्शब्दादारभ्य पञ्चभ्यः संख्याशब्देभ्यो युगपदर्थे शवय् प्रत्ययो भवति । पाँचुशब्दाच्छकारलोपः ॥ द्वशवय् । द्वावेव ॥ त्र्यशवय् । त्रय एव ॥ च्वशवय् । चत्वार एव ॥ पाँचवय् । पञ्चैव ॥ पशवय् । पडेव ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.186

'दो' अर्थ वाले शब्द **जु** से प्रारंभ हो कर **पाँच** संख्यावाची शब्द में प्रत्यय के शकार का लोप हो जाता है। **द्वशवय** 'दोनों' **त्रशवय** 'तीनों' **च्वशवय** 'चारों' **पांचवय** 'पांचों'। **शेशवय** 'छः के छः'।

व्याख्या—

शवय एक संख्यावाची प्रत्यय है। आगामी सूत्रों में भी संख्यावाची तद्धित प्रत्ययों का ही उल्लेख है।

॥ नवय् वापाँचुभ्यः ॥१८७॥

एभ्यो ऽपाँचुभ्यः पाँचुशब्दवर्जितेभ्यो युगपदर्थे विकल्पेन नवय् वा प्रत्ययो भवति ॥ द्वनवय् । द्वावेव ॥ त्र्यनवय् । त्रय एव ॥ च्वनवय् । चत्वार एव ॥ पनवय् । पडेव ॥ अपाँचुभ्यः किम् । पाँचवय् । पञ्चैव ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.187

पाँछ़ शब्द को छोड़ कर, युगपद अर्थ में, विकल्प से **नवय** प्रत्यय संयुक्त हो सकता है। **द्वनवय** दोनों' **त्रनवय** 'तीनों' **च़्वनवय** 'चारों' **शनवय** 'छः के छः'। **पाँछ़** को छोड़ कर क्यों? **पाँच़वय** 'पाँचों'।

व्याख्या—

पूर्व सूत्र में निर्देश है, कि **पाँछ़** के साथ **शवय** संयुक्त होने पर **श** का लोप हो जाता है। इसी प्रकार यहाँ पर भी **नवय** के नकार का लोप इच्छित है।

॥ सप्तादिभ्यो वय् ॥१८८॥

सप्तादिसंख्यायाः साकल्येनार्थे गम्यमाने वय् प्रत्ययो भवति ॥ सतवय् । सप्तैव ॥ ऐठवय् । अष्टावेव ॥ नववय् । नवैव ॥ इत्यादि ॥ अत्रेदं ध्येयम् । वय्प्रत्ययान्तेभ्यो द्वितीयायां षष्ठ्यां च नी प्रत्ययो यलोपश्च स्यात् । कर्तृ तृतीयायां तु इ प्रत्ययः । वय्शब्दात्पूर्वं च विकल्पेन वकारागम इति च ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.188

सात आदि संख्यावाची शब्दों में सकल अर्थ के लिए **वय** प्रत्यय संयुक्त होता है। **सतवय** 'सातों' **ऑठवय** 'आठों' **नववय** 'नौ के नौ' इत्यादि। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है, कि अन्त में **वय** प्रत्यय होने की स्थिति में द्वितीया और षष्ठी के लिए **नी** प्रत्यय संयुक्त होता है, और **य** का लोप भी। कर्तृतृतीया का प्रत्यय **इ** है। **वय** शब्द के पूर्व विकल्प से वकारागम हो सकता है।

व्याख्या—

भाषा की विशेषता यह है कि संख्यावाचक शब्द भी कारक विभक्ति प्राप्त करते हैं। ग्रन्थकार ने स्पष्ट किया है, कि कर्म कारक अथवा संबन्ध कारक की स्थिति में **वय** के **य** का लोप तथा **नी** प्रत्यय की संयुक्ति होती है। यथा— **त्रनवनी दॉनन कोडुन रस** '(उस ने) तीनों अनारों का रस निकाला' (कर्म कारक)। **सतवनी हुन्द रंग छु कुनुय** 'सातों का रंग एक है' (सम्बन्धकारक) कर्तृतृतीया का **इ** प्रत्यय वर्तमान नही है। विकल्प से वकार के आगम की संभावना भी सीमित है।

॥ आद्यखण्डवीप्सापूर्वाः प्रथमे वा ॥१८९॥

प्रथमे द्वशवय् इत्याद्या आद्यखण्डस्य द्वश् त्र्यश् इत्यादिकस्य वीप्सापूर्वा युगपदर्थे वा कथ्यन्ते ॥ द्वशि द्वशवय् । द्वावेव ॥ त्र्यशि त्र्यशवय् । त्रय एव ॥ च़्वशि च़्वशवय् । चत्वार एव ॥ पूँच़ि पाँच़वय् । इत्यादि ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.189

द्वशवय इत्यादि के पूर्व खण्ड अर्थात् **द्वश**, **त्रश** इत्यादि का युगपद से पहले उच्चारण करने का विकल्प है। **द्वशि द्वशिवय** 'दोनों' **त्रेशि त्रेशिवय** 'तीनों' **च़्वशि च़्वशवय** 'चारों' **पाँछ़ पाँच़वय** 'पाँचों' इत्यादि।

व्याख्या—

पूर्व खण्ड की पुनरुक्ति भाषा में वर्तमान नहीं है। **द्वशिवय त्रेशिवय च़्वशिवय** शब्द ही प्रयुक्त होते हैं। विकल्प की कोई संभावना नहीं है।

॥ चोरश्च्वादेशो दशभ्यश्च ॥१९०॥

चोरशब्दस्यात्रापि दशसंख्यापरतश्च च्व आदेशो भवति ॥ च्वशवय् । चत्वारि एव ॥ च्वदाह् । चतुर्दश ॥ च्ववुह् । चतुर्विंशतिः ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.190

दस संख्या के बाद भी **च़ोर** शब्द का **च़्व** आदेश होता है। **च़्वशवय** 'चारों' **च़्वदाह** 'चौदह' **च़ोवुह** 'चौबीस' इत्यादि।

व्याख्या—

प्रत्यय की संयुक्ति से **च़ोर** का **च़्व** आदेश पूर्व सूत्रों में स्पष्ट किया गया है। प्रस्तुत सूत्र में इसी आदेश का विस्तार दस संख्या से आगे आने वाले **च़ोर** युक्त शब्द के लिए भी निर्दिष्ट है।

॥ कुनु एककार्थे ॥१९१॥

केवलस्यार्थे कुनुशब्दो निपात्यते । कुनु । एककः ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.191

केवल एक के अर्थ में **कुन** शब्द का प्रयोग होता है। **कुन** 'अकेला'।

व्याख्या—

भाषा में **कुन** का प्रयोग 'अकेला' शब्द की तरह ही व्यापक है।

॥ हरुजोरौ युगलार्थे ॥१९२ ॥

तत्र हरुशब्दः प्रायशो प्राणिव्यतिरिक्तवस्तुन्येव प्रयुज्यते ॥ यथा। च्यन्य-हरु । ताटङ्कयुगलम् ॥ दुरहरु । कर्णिकायुगम् ॥ वालिहरु । कुण्डलयुगम् ॥ पुलहरु । तृणपादुकायुगम् ॥ खावहरु । काष्ठपादुकायुगम् ॥ इत्यादि ॥ प्राम्य-

जनैस्तु । दाँदहूरि । वृषयुगम् ॥ इति शब्दो ऽपि भाष्यते । जोर्शब्दस्तु प्रायः प्राणिविषये प्रयुज्यते क्वचिदप्राणिविषये च । यथा हूरिशब्दस्तथा जूरिशब्द-श्चावधार्यः ॥ म्वक्तजूरि । मुक्तायुगम् ॥ दाँदजूरि । वृषयुगम् ॥ कोतर्जूरि । कपोतयुगम् ॥ गुरिजूरि । अश्वयुगम् ॥ अखजोर । एकं युगम् ॥ ज़ुह्जोर । युगद्वयम् ॥ त्र्यह्जोर । युगत्रयम् ॥ इत्यादि ॥ अख्हरु । एकं युगम् ॥ ज़ुह्-हूरि । युगद्वयम् ॥ त्र्यहूरि । युगत्रयम् ॥ इत्यादि सर्वं बुद्धिमता स्वयमूह्यम् ॥ त्र्यादिदशावधिसंख्यानामेकत्वेन त्रिच च्चाक् पंज़ु षक संतु ऐठि नमु दहु शब्दाः क्रमेण निपातनादेव विचारणीयाः ॥ त्रिच । त्रयम् ॥ च्चाख् । चतुष्कम् ॥ पंज़ु । पञ्चकम् ॥ षक । षट्कम् ॥ संतु । सप्तकम् ॥ ऐठि । अष्टकम् ॥ नमु । नवकम् ॥ दहु । दशकम् ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद—

सूत्र 4.1.192

हॉर शब्द प्रायः प्राणियों को छोड़ कर वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है। यथा— **ड़ेज्यहॉर** 'ड्यजिहोर (महिलाओं के कानों में लटकता हुआ आभूषण) **दूरहॉर** 'काँटों का जोड़ा (कानों का आभूषण)' **बालिहॉर** 'कुंड़लों का जोड़ा' **पुलहॉर** '(तृण से बना हुआ) पदत्राण का जोड़ा' **ख्राविहॉर** 'काष्ठपादुका का जोड़ा' इत्यादि। ग्रामीण प्रयोग, **दाँदुहॉर** 'बैलों की जोड़ी' भी सम्भव है। **जूर्य** शब्द प्रायः प्राणियों के लिए होता है। कभी–कभी अप्राणियों के लिए भी। **हॉर** की तरह **जूर्य** शब्द भी समझना चाहिए। **म्वखतुजूर्य** 'मोती का जोड़ा', **दाँदजूर्य** 'बैलों की जोड़ी', **कोतरजूर्य** 'कबूतरों की जोड़ी', **गुर्यजूर्य** 'घोड़ों की जोड़ी', **अख जूर्य** 'एक जोड़ा', **ज़ु जोरि** 'दो जोड़े', **त्रे जोरि** 'तीन जोड़े' इत्यादि। **अख हॉर** 'एक जोड़ा', **ज़ुहॅंस्य** 'दो जोड़े', **त्रे हॅंस्य** 'तीन जोड़े' इत्यादि। सभी बुद्धिमान स्वयं समझेंगे। तीन से लेकर दस तक की संख्या के समूह को— **त्रिच, चाख, पंज, शक, सॅत्य, ऑठ्य, नॅम्यु, दॅहृय** शब्द क्रम से व्यवहृत हैं। **त्रिच** 'तीन का समूह' **सॅत्य** 'सात का समूह', **ऑठ्य** 'आठ का समूह', **नॅम्य** 'नौ का समूह', **दॅहय** 'दस का समूह' इत्यादि।

व्याख्या—

युगल व्यक्त करने के लिए **हॉर** अथवा **जोरु** प्रत्यय संयुक्त होता है। **जोरु** का प्रयोग प्राणि तथा अप्राणि दोनों के लिए संभव है, परन्तु **हॉर** अधिकांशतः अप्राणियों तक ही सीमित है। पांच से आगे की संख्याओं का समूहबद्ध रूप व्यवहार में कम है।

॥ किंचिदर्थे पहान् ॥१९३॥

विशेष्यस्य वस्तुनः किंचिद्विशेषणार्थे वाच्ये पहान् शब्दः अग्रे प्रयोज्यः॥ बंडु पहान्। किंचिन्महान् ॥ व्यंठु पहान्। किंचित्स्थूलः ॥ वुशुन् पहान्। किंचिदुष्णः। इत्यादि ॥ दिग्देशकालवाचिभ्यश्च शब्देभ्यो ऽग्रे प्रयोज्यः ॥ दूर् पहान्। किंचिद्दूरम् ॥ न्यूर् पहान्। किंचित्समीपम् ॥ ब्रोंठ् पहान्। किंचित्पूर्वम् ॥ पथ् पहान्। किंचित्पश्चात् ॥ च़ीरि पहान्। किंचिच्चिरेण ॥ कॉशुर् पहान्। किंचित्कश्मीरदेशजः॥ बंगालुकु पहान्। किंचिद्वंगालदेशजः॥ उहुर्युंदु पहान्। यहुर्युंदु पहान्। इत्यादि विज्ञेयम् ॥

अनुवाद— सूत्र 4.1.193

विशेष्य वस्तु का किंचिन्मात्र व्यक्त करने के लिए **पहान** शब्द उत्तर में प्रयुक्त होता है। **बॊडपहान** 'कुछ बड़ा' **व्यॊठपहान** 'कुछ मोटा' **वुशुनपहान** 'कुछ गर्म' इत्यादि। दिशा और काल वाचक शब्दों के आगे भी प्रयुक्त हो सकता है। **दूरपहान** 'कुछ दूर' **न्यूरपहान** 'कुछ समीप' **ब्रोंठपहान** 'कुछ आगे' **पथपहान** 'कुछ पीछे' **च़ीरचपहान** 'कुछ देर से' **कॉशुरपहान** 'कुछ कश्मीरी' **बंगालुकपहान** 'कुछ बंगाली' **उहर्युन्दपहान** 'कुछ उधर को' **युहर्युन्दपहान** 'कुछ इधर को' इत्यादि।

व्याख्या—

विशेषण की विशेष्यता को थोड़ा बहुत कम करने के अर्थ में **पहान शब्द** का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी में यह कार्य विशेषण शब्द के आगे 'सा' लगाने से संभव है, यथा– 'वह काला सा दिखता है।' **सु छु बासान क्रुहुन पहान**। हिन्दी में दिशा और काल के लिए 'सा' का प्रयोग संभव नहीं है, परन्तु कश्मीरी भाषा में ऐसा संभव है। स्पष्टीकरण में उदाहरण प्रस्तुत हैं।

इति
श्रीशारदाक्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीरशब्दामृतं
की तद्धित प्रक्रिया समाप्त 4

अव्यय प्रक्रिया-5

वाक्य संरचना में व्याकरणिक दायित्व निभाते हुए प्रायः शब्द विकार युक्त हो जाते हैं। ये विकार काल, पुरुष, वचन, लिंग की सूचनाएँ सम्प्रेषित करते हैं। ऐसे शब्द जिन पर व्याकरणिक सूचनाएँ कोई प्रभाव उत्पन्न नहीं करतीं अव्यय कहलाते हैं। अव्यय सदा अविकारी ही रहते हैं।

ग्रन्थकार ने इस प्रक्रिया में मात्र पाँच सूत्रों का उल्लेख किया है। उन्हीं अव्ययों का उल्लेख किया है, जो प्रत्यय संयुक्त होने के कारण व्युत्पन्न होते हैं। जो शब्द स्वभाव से ही अव्यय हैं यथा– **कुनि कुनि** 'कभी कभी' **मॅंज़्य मॅंज़्य** 'कभी कभी'। **वुन्य** 'अभी' **बॅल्य** 'वैसे ही' का उल्लेख इस प्रसंग के अन्तर्गत नहीं किया गया है।

॥ क्रियासंबन्धिनो ऽव्यया नित्यम् ॥१॥

ये अव्ययशब्दास्ते नित्यं क्रियासंबन्धिनो भवन्ति ॥ यद्दनै करख्। यदि कुर्याः ॥

अनुवाद– सूत्र 5.1.1

अव्यय शब्द नित्य क्रिया से सम्बन्धित होते हैं। **ख्यदनय करख** 'यदि करोगे'।

व्याख्या–

यह अधिकार सूत्र के रूप में उल्लिखित है। **ख्यदनय** शब्द के **नय** अंश का अर्थ 'नहीं' नहीं है। **नय** आग्रह का प्रत्यय है, यथा– **च़ वुछखनय योर कुन** 'तुम इधर की ओर देखो ना'। स्पष्टीकरण में दिया गया वाक्य वर्तमान में व्यवहार में नहीं है।

॥ धातुभ्य आनव्यये ॥२॥

क्रियासंबन्धिनि अन्यधात्वर्थे अभिधेये सति तस्माद्धातोः आन् प्रत्ययो भवति स चाव्ययः ॥ व्यठान् आव्। स्थूलमागतः ॥ स्थूलं यथा स्यात्तथा आगत इत्यर्थः ॥

अनुवाद—

सूत्र 5.1.2

क्रिया के साथ अन्य धातु का अर्थ अभिधेय होने की स्थिति में उस धातु के साथ **आन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यही अव्यय है। **व्यठान आव** 'मोटा होता गया'।

व्याख्या—

व्यठुन 'मोटा होना' क्रिया के मूल रूप **व्यठ** के साथ अव्यय प्रत्यय **आन** संयुक्त हुआ है। **आव** '(वह) आया' का मूल अर्थ इस पद में सम्प्रेषित नहीं है। इस का लाक्षणिक अर्थ इंगित करता है, कि व्यक्ति मोटा होने की प्रक्रिया में आ गया है।

॥ वीप्सया वा ॥३॥

स्पष्टम् ॥ व्यठान् व्यठान् गौव् । स्थूलं स्थूलं गतः ॥

अनुवाद—

सूत्र 5.1.3

सूत्र स्पष्ट है। **व्यठान व्यठान** गव 'मोटा ही मोटा होता गया'।

व्याख्या—

यह पूर्व सूत्र का विस्तार है। मोटापे की अधिकता व्यक्त करने के लिए प्रत्यय युक्त धातु की पुनरुक्ति संभव है। व्यंग्य अथवा उपहास की दृष्टि से भी इस तरह की पुनरुक्ति सार्थक हो सकती है।

॥ स्वरान्ताद्वान् ॥४॥

स्वरान्ताद्धातोरव्यये वान् प्रत्यय इष्यते ॥ ख्यवान् ख्यवान् । खादन् खादन् ॥

अनुवाद—

सूत्र 5.1.4

स्वरान्त धातुओं में **वान** प्रत्यय अपेक्षित है। **खेवान खेवान** 'खाते खाते'।

व्याख्या—

खे '(तू) खा' के साथ **आन** प्रत्यय संभव नहीं है, क्योंकि धातु स्वरान्त

है। इसीलिए यहाँ **वान** प्रत्यय का आदेश है। **खे** के अतिरिक्त **हे** 'ले ले' **चे** 'पी' **पे** 'गिर' आदि धातुओं के साथ भी **वान** प्रत्यय ही संयुक्त होगा।

॥ लिङ्गाभीक्ष्ण्येन च ॥५॥

यस्यैव विशेषणरूपस्य लिङ्गस्य क्रियासंबन्धः स्यात्तस्य शब्दस्य आभीक्ष्ण्येन द्विरुक्तेन क्रियासंबन्धी अव्ययः स्यात् चशब्दात्केवलेनापि ॥ च़ंतुर् च़ंतुर्। शीघ्रं शीघ्रम् ॥ ल्वंतु ल्वंतु। मन्दं मन्दम् ॥ पक्षे। ल्वति ल्वति ॥ ग्वंबु ग्वंबु छुह् पकान्। गुरु गुरु चलति ॥ केवलेनापि यथा ॥ च़ंतुर् ख्यवान् छुह्। चतुरमत्ति ॥ ल्वंतु करान् छुह्। लघु करोति ॥ ग्वंबु पकान् छुह्। गुरु गच्छति ॥

अनुवाद— सूत्र 5.1.5

अव्यय प्रत्यय युक्त क्रिया के साथ सम्बन्ध होने पर विशेषण अथवा प्रातिपदिक की पुनरुक्ति अपेक्षित है। **चॊतुर-चॊतुर** 'जल्दी जल्दी', **लॊत-लॊत** 'धीरे धीरे'। विकल्प में- **ल्वति**। **ग्वबि ग्वबि छुह पकान** 'भारी गति से चल रहा है।' पुनरुक्ति रहित उदाहरण यथा— **चॊतुर ख्यवान छु** 'जल्दी खाता है'। **लॊत करान छु** 'धीरे से करता है' **गोब पकान छु** 'भारी गति से चलता है।

व्याख्या—

अव्यय प्रत्यय युक्त धातु के साथ, क्रिया के अतिरिक्त अन्य व्याकरण कोटियों के शब्द यथा विशेषण और संज्ञा आदि का प्रयोग भी सम्भव है। स्पष्टीकरण के कुछ उदाहरणों में क्रिया पद सम्मिलित नहीं है, इस का अर्थ यह है, कि क्रियापद की उपस्थिति स्वयं स्वीकार की जाए यथा— **चॊतुर चॊतुर छु पकान** 'जल्दी जल्दी चलता है'।

इति

श्री शारदा क्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीरशब्दामृतम
की अव्यय प्रक्रिया समाप्त। 5

स्त्रीप्रत्यय प्रकरण - 6

इस प्रकरण के अन्तर्गत उन प्रत्ययों का उल्लेख है, जो पुंलिंग शब्द को स्त्रीलिंग में रूपांतरित करते हैं। मुख्य रूप से पाँच प्रत्यय वर्णित हैं, यथा– **बाय, क्वलय, र, इन्य** और **अन्य**। **बाय** और **क्वलय** प्रत्ययों का अन्तर स्पष्ट करते हुए ईश्वर कौल कहते हैं, कि **क्वलय** प्रत्यय अनादर का द्योतक है। सूत्रों में **र** प्रत्यय अल्पार्थ कृत्रिमार्थ आदि के रूप में विश्लेषित है। यह स्पष्ट है, कि **र** प्रत्यय युक्त शब्द स्त्रीलिंग ही है। अल्पार्थ और कृत्रिमार्थ आदि अतिरिक्त सूचनाएँ हैं।

भाषा की विशेषता यह है, कि स्त्रीलिंग प्रत्यय लगने के बाद मूल शब्द में भी परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन स्वर को अवर्तुलाकार करता है, तथा स्पर्श ध्वनियों एवं लकार को स्पर्श संघर्षी रूप प्रदान करता है। प्रकरण में 31 सूत्र वर्णित हैं।

॥ स्त्रियाम् ॥१॥

अत्राधिकारे ये वक्ष्यमाणाः प्रत्ययास्ते स्त्रियामेवेत्यधिक्रियते ॥

अनुवाद–

सूत्र 6.1.1

जिन प्रत्ययों का यहाँ निर्देश है, वे स्त्रीलिंगीकरण के लिए अधिकृत हैं।

व्याख्या–

यह अधिकार सूत्र है। इस प्रकरण में उन प्रत्ययों का उल्लेख है, जो पुंलिंग रूपों को स्त्रीलिंग में रूपांतरित करते हैं।

॥ मनुष्यजातेः सर्वत्र बाय् ॥२॥

जातिर्द्विविधा एका साम्प्रदायिका अन्या शिल्पवशात्स्वर्णकाराद्या जाति-र्लोके प्रोच्यते। न चात्र पशुपक्ष्यादीनां जातिर्गृह्यते मनुष्यशब्दस्य सूत्रे निय-

भाव्। तयोर्द्वयोरेव जात्योः स्त्रीशब्दे अभिधेये सति बाय् प्रत्ययो भवति ॥ दर-बाय्। कौलबाय्। इत्यादि ॥ बटबाय्। आर्य स्त्री ॥ स्वन्र्‌बाय्। स्वर्णकार-स्त्री ॥ खारबाय्। लोहकारस्त्री। इत्यादि ॥ मनुष्यजातेः किम् ॥ कोतर्‌बाय्। कोतर्‌नाम्नी जातिस्तत्संबन्धिनी स्त्री। न तु कपोतस्त्री तत्र। कोतुरू इति भवति ॥

अनुवाद— सूत्र 6.1.2

जाति दो प्रकार की होती है। एक सम्प्रदाय के अनुसार और दूसरी शिल्प के अनुसार। शिल्प के अनुसार जैसे सुनार आदि लोक प्रचलित हैं। यहाँ पशु-पक्षियों आदि की जाति से अभिप्राय नहीं है क्योंकि सूत्र में मनुष्य शब्द कहा गया है। इन दोनों जातियों के स्त्री शब्द अभिधेय होने पर **बाय** प्रत्यय संयुक्त होता है। **दरुबाय, कोलुबाय** इत्यादि। **बटुबाय** 'पंड़ितानी' **स्वनरबाय** 'सुनारिन' **खारुबाय** 'लोहारिन' इत्यादि। मनुष्य जाति ही क्यों? **कोतरबाय** 'कोतर नाम्नी कश्मीरी जाति की महिला'। इस का अर्थ स्त्री कबूतर नहीं है। उस के लिए शब्द है **कोतुर** 'कबूतरी'।

व्याख्या—

जाति नाम अथवा व्यवसाय नाम के पुंलिंग रूप के साथ **बाय** प्रत्यय संयुक्त होने से उस का स्त्रीलिंगीकरण हो जाता है। यह प्रत्यय मनुष्य मात्र के लिए ही उपलब्ध है, पशु–पक्षियों के लिए नहीं। अतिरिक्त उदाहरण– **गोरुबाय** 'पुरोहित पत्नी', **डॉक्टरबाय** 'डाकटरनी'।

॥ अनादरार्थे क्लय् ॥३॥

मनुष्यजातिवाचकाच्छब्दादनादरेण स्त्रीशब्दे अभिधेये क्लय् प्रत्ययो भवति ॥ बटक्लय्। ब्राह्मणस्त्री ॥ छानक्लय्। तक्षकस्त्री ॥ अत्र यद्यपि क्लय्-शब्दो भार्यार्थवाची वर्तते परंतु समासेनानादरार्थोऽवगम्यते ॥

अनुवाद— सूत्र 6.1.3

मनुष्य जाति वाचक शब्दों में निरादर में स्त्रीलिंगीकरण अभिधेय होने पर **क्वलय** प्रत्यय संयुक्त होता है। **बटुक्वलय** 'पंड़ितानी (निरादर) **छानुक्वलय** 'बढ़ई स्त्री (निरादर)'। **क्वलय** शब्द वास्तव में 'भार्या' के अर्थ में प्रयुक्त होता है परन्तु समास में प्रयुक्त होने पर इस का अर्थ निरादर के रूप में ग्रहण होता है।

व्याख्या—

आदर की दृष्टि से **बाय** प्रत्यय युक्त शब्द समरूप में ग्रहण किया जाता

है, अर्थात इस प्रत्यय में न तो उच्च आदर भाव है, और न निरादर का। इस के विपरीत **क्वलय** प्रत्यय निरादर सूचक है। वर्तमान में इस प्रत्यय युक्त शब्द को अपशब्द की संज्ञा दे सकते हैं।

॥ सर्वेषामुकारान्तानामूकारादेशः ॥४॥

सर्वेषां विशेष्यशब्दानां विशेषणशब्दानां चोकारान्तानां स्त्रीलिङ्गविषये ऊ-मात्रादेशो भवति ॥ पंटु । पंटू । पट्टिका ॥ म्वंटु । म्वंटू । स्थूला॥ गंरु । गंरू । कठिना ॥ गुंरु । गुंरू । अश्वा ॥ द्वंबु । द्वंबू । रजकी ॥ वोवुरु । वोवूरू [सू० ८]। तन्तुवाया ॥ गगुरु । गगूरू [सू० ८] । मूषका ॥ पक्षे मनुष्यजातेः । द्वंविबाय् । वोव्रिबाय् ॥

अनुवाद–

सूत्र 6.1.4

उकारान्त विशेष्य और विशेषण सभी शब्दों का स्त्रीलिंग में उकार का ॖ मात्रादेश है। **पॊट/पॅट** 'फट्टा/फट्टी'। **मॊट/मॅट** 'मोटा/मोटी। **गॊर/गॅर** 'कठिन' **गगुर/गगुर** 'चूहा/चूहिया' (देखें सूत्र 6.1.8) विकल्प में– मनुष्य जाति के लिए **दौब्यबाय, वोवुरयबाय**।

व्याख्या–

यह सूत्र भी मात्रा स्वर पर आधारित है। मात्रा स्वर का उच्चारण भाषा में नहीं किया जाता। इस तथ्य का विस्तृत विवेचन भूमिका में निर्दिष्ट है। स्पष्टीकरण में दिए गए अधिकांश उदाहरणों में पुंलिंग रूप का उपधा का वर्तुलाकार स्वर स्त्रीलिंग रूप में अवर्तुलाकार हो जाता है। एकाक्षरी शब्दों के उकार का अवर्तुलाकार रूप सिद्ध नहीं है। इस लिए **गुर** का स्त्रीलिंगी रूप **गुर** ही है, परन्तु **गगुर** 'चूहा' का स्त्रीलिंग रूप **गगुर** 'चुहिया' होता है। **दौब** और **वोवुर** मनुष्य जाति वाचक शब्दों में स्त्रीलिंग के लिए **बाय** प्रत्यय ही स्वीकार्य है। स्थूल महिला के लिए **मॅट** के बदले पुंलिंग रूप **मॊट** का ही प्रयोग होता है। **मॅट** से अभिप्राय अनाज रखने वाली एक बड़ी मटकी अथवा पानी गर्म करने वाला ताँबे का बड़ा पात्र है।

॥ वा छ्वंटुशब्दात् ॥५॥

स्पष्टम् ॥ छ्वंटु । छ्वंटू । ह्रस्वा ॥ पक्षे । छ्वटिस् । इति मनुष्यजातेरेव ॥

अनुवाद– **सूत्र 6.1.5**

सूत्र स्पष्ट है। **छ्वट, छौट** 'ठिगना, ठिगनी। विकल्प में **छ़ोटिन्य।**

व्याख्या–

यह पूर्व सूत्र का विस्तार है। **छ्वट्ट** शब्द का स्त्रीलिंग रूप भी मात्रा स्वर के आधार पर संगत नहीं है। **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होने से उपधा के वत्व का ऒकार हो जाता है और अन्त के अ़कार का लोप तथा **छ़ोटिन्य** 'ठिगनी' शब्द सिद्ध होता है।

॥ खरश्च ॥६॥

खरशब्दात्स्त्रीलिङ्गविषये विकल्पेन ऊमात्रागमो भवति ॥ खॅरू । खरी ॥ पक्षे । खरिन्य् ॥

अनुवाद– **सूत्र 6.1.6**

विकल्प से स्त्रीलिंग विषय में **खर** शब्द पर ऊ मात्रा आगम होता है। **खॅरू, खरी**। विकल्प में **खरिन्य।**

व्याख्या–

मात्रा स्वर की संकल्पना, जिस प्रकार सूत्र और सूत्र के स्पष्टीकरण में असंगति उत्पन्न करती है, उस से ज्ञात होता है, कि ग्रन्थकार मात्रा स्वर की सत्ता के प्रति आश्वस्त नहीं है। सूत्र में **खर** 'गधा' शब्द के साथ किसी भी प्रकार की कोई मात्रा नहीं है। स्पष्टीकरण में दो रूप हैं। पहले रूप में **ख** के साथ अॅकार और **र** के साथ मात्रा स्वर अंकित है। दूसरे रूप में **र** के साथ **ई** मात्रा अंकित है। ये दोनों रूप **खॅरू** और **खॅरी** भाषा में प्रयुक्त नहीं है। विकल्प में दिया गया रूप **खॅरिन्य** 'गधी' का ही प्रयोग भाषा में व्यवहृत है। यहाँ पर भी **इन्य** प्रत्यय लगने के पूर्व उपधा का अकार अॅकार में रूपांतरित होता है।

॥ लान्तानां जः ॥७॥

उकारविशिष्टानां लकारान्तानां लकारस्य जकारादेशो भवति ॥ वोलु । वाजू । [ऊर्मिका] कुण्डलिका ॥ डुलो ऽन्त्यात् लि आगम इष्यते ॥ डुलु । डुलिजि । कुण्डलिका ॥

अनुवाद– **सूत्र 6.1.7**

उकार विशिष्ट लकारान्तों के लकार का जकार आदेश है। **वोल, वॉज**

'अंगूठी/कुंड़लिका'। **डुल** शब्द के अन्त में **लि** आगम की अपेक्षा है। **डुल** 'कुड' **डुलिज** 'छोटा कुंड'।

व्याख्या–

स्त्रीलिंग रूप में लकार का जकार भाषा में सर्वत्र सिद्ध है। क्रियापद की व्याख्या में भी इस के प्रमाण प्राप्त हैं। **डुल** शब्द के स्त्रीलिंग रूप में **लि** के स्थान पर **लि** का आगम है। तथा **डुलिल** के अंतिम **ल** का जकार होकर **डुलिज** शब्द सिद्ध है। **वोल** बुनाई का फंदा हो सकता है। रूपात्मक दृष्टि से **वॉज** इस का स्त्रीलिंग रूप तो है, पर अर्थ की दृष्टि से भिन्न है।

॥ त्र्यक्षरादीनामुलोप उलाश्च ॥८॥

त्र्यक्षरादिकानां शब्दानां उलु प्रत्ययसंबन्धिन उपधाया उकारस्य लोपो भवति ॥ गाटुलु। गाट्जू। दक्षा ॥ फुटुलु। फुट्जू। पोटलिका ॥ चकुलु। चक्जू। चक्रिका ॥ पतुलु। पत्जू। उदुपिका ॥ ग्वगुलु। ग्वग्जू [। रक्तालुः] ॥ च्वतुलु। च्वत्जू। व्यभिचारिणी ॥ वातुलु। वात्जू। चण्डाली ॥ टठुल। टठ्जू। काष्ठपात्रिका ॥ त्र्यक्षरादिकानां किम् ॥ गुंरू। अश्वा ॥ गुरु। गूरू। [गोपालिका ॥] खेरु। [खलतिः ॥] खेरू [। रोग विशेषः] ॥ उलोः किम्। म्रोलु। म्रांजू ॥ मोलु। मांजू ॥ गूलु। गूजू ॥

अनुवाद–

सूत्र 6.1.8

तीन अथवा तीन से अधिक अक्षरों वाले शब्द के साथ **उल** प्रत्यय संयुक्त होने पर उपधा के उकार का लोप होता है। **गाटुल, गाट्ज** बुद्धिमान, बुद्धिमती', **फुटुल, फुट्ज** 'पोटली', **चकुल, चकुज** 'चकोर फट्टा', चकोर फट्टी', **पतुल, पतुज** 'घास की चटाई' **ग्वगुल, ग्वगुज** 'गोल वस्तु, शलगम' **च्वतुल, च्वतुज** 'व्यभिचारी, व्यभिचारिणी', **वातुल, वातुज** 'चमार, चमारिन', **टठुल, टठुज** 'लकड़ी का कुंड, छोटा कुंड'। तीन आदि अक्षरों वाले ही क्यों? **गुर** 'घोड़ी', **गूर्य** 'ग्वालन' **खॅर** 'अप्रिय लड़की' **खॅर** 'एक प्रकार का चर्म रोग'। उल ही क्यों? **मोल/मॉज, गूल/गूज।**

व्याख्या–

तद्धित प्रकरण के 4.1.73 से 4.1.87 अर्थात पन्द्राह सूत्रों में **उल** प्रत्यय की विशद व्याख्या है। तीन अथवा उस से अधिक अक्षरों वाले स्त्रीलिंग रूपों में **ल** का जकार निर्दिष्ट है। साथ ही उपधा के उकार का अवर्तुलाकार रूप अुकार हो जाता है। स्पष्टीकरण में तीन अक्षरों से कम वाले शब्दों के जो उदाहरण

प्रस्तुत किए हैं, वह लकारान्त न होकर रकारान्त हैं। स्त्रीलिंग रूप में वर्तुलाकार **ओ** का अवर्तुलाकार रूप **ऑ** के उदाहरण भी स्पष्टीकरण में प्रस्तुत किए गए हैं। यथा– **मोल** 'पिता' **मॉज** 'माता' **च़्रोल** 'अशिष्ट' **च़्रॉज** 'अशिष्ट महिला'।

॥ कवर्गान्तानां चवर्गः ॥९॥

उकारविशिष्टानां केवलानां च कवर्गान्तानां पुंलिङ्गानां स्त्रीलिङ्गविषये चवर्गादेशो भवति ॥ वतुकु । वतु्चू । वर्तिका ॥ ह्वखु । ह्वछू । शुष्का ॥ ड्यूँगु । डींजू ॥ सूत्रादिगुटिका ॥

अनुवाद– सूत्र 6.1.9

उकार विशिष्ट कवर्गान्त पुंलिंग शब्दों का स्त्रीलिंग में चवर्ग आदेश होता है। **बतुक, बतुच** 'बतक' **हॊख, हॊछ** 'सूखा, सूखी' **ड्यूँग, डींज** '(सूत/ऊन का गोला), (सूत/ऊन की गोली')।

व्याख्या–

तद्धित प्रकरण के 4.1.47 सूत्र से 4.1.53 सूत्र तक चवर्ग अथवा च़वर्ग रूपांतरण का निर्देश है। पूर्व में भी इस बात का उल्लेख है, कि स्त्रीलिंग रूपों में स्पर्श ध्वनियों का चवर्ग अथवा च़वर्ग में, क्रम से रूपांतरण हो जाता है। इस के अतिरिक्त उपधा का वर्तुलाकार स्वर अवर्तुलाकर हो जाता है। तीन अक्षरों से कम वाले शब्दों में कभी कभी अपवाद स्वरूप स्वर अवर्तुलाकार नहीं होता। स्पष्टीकरण में **हॊछ** 'सूखी' एक इसीप्रकार का अपवाद है।

॥ न खूंखुच़्रकोः ॥१०॥

स्पष्टम् ॥ खूँखु । खूँखू [। अन्वटीटा] ॥ च़्रकु । च़्रकू । अम्ला ॥

अनुवाद– सूत्र 6.1.10

सूत्र स्पष्ट है। **खूँख/खॉँख** 'नाक से बोलने वाला/नाक से बोलने वाली'। **च़्रोक, च़्रोक** 'खट्टा, खट्टी'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का अपवाद है। **खूँख** के अंतिम **ख** का छकार में रूपांतरण नहीं होता, वर्तमान में भी **च़्रोक** का स्त्रीलिंग रूप **च़्रोक** 'खट्टी' ही व्यवहार में है।

॥ तवर्गान्तानामप्रसिद्धः ॥११॥

स्पष्टम्॥ मंतु। मंचू। उन्मत्ता॥ क्वथु। क्वछू। भारिका॥ व्वरुदु। व्वरुजू। पुनर्भूः॥ वन्। वंञ्। वन्या॥ गान्। गांञ्। वेश्या॥ छान्। छांञ्॥ तक्षकी॥ हूनु। हूञ्। शुनी॥ एवं सर्वत्र॥

अनुवाद— **सूत्र 6.1.11**

सूत्र स्पष्ट है। **मोत, मेंच़** 'पागल, पगली'। **क्वथ क्व्छ़** 'बोरा, बोरी' **व्वरुद, व्वरुज़** 'पुनर्विवाहित, पुनर्विवाहिता' **वन वॅन्य** 'जंगल, जंगल (स्त्रीलिंग)' **गान, गॉन्य** 'भडुआ, वैश्या' **छान, छॉन्य** 'बढ़ई, बढ़ई (स्त्रीलिंग)' **हून, हून्य** 'कुत्ता, कुत्तिया'। इसी तरह सर्वत्र।

व्याख्या—

तवर्ग का क्रम से च़वर्ग आदेश है। अर्थात त का च़, थ का छ़, द का ज़ में रूपांतरण है। **च़, छ़, ज़,** तीनों स्पर्श संघर्षी व्यंजन हैं। स्त्रीलिंग रूपों में **न** का यत्व अर्थात तालव्यकरण सिद्ध है।

॥ कंगो ऽल्पार्थे राकारश्च ॥१२॥

कंग् बृहदङ्गारधानिका। तस्मादल्पार्थे र् प्रत्ययो भवति आकारश्च भवति॥ काँगुर्। हसन्तिका॥

अनुवाद— **सूत्र 6.1.12**

कंग अर्थात बड़ी सिगड़ी का अल्प रूप व्यक्त करने लिए **र** प्रत्यय संयुक्त होता है, और अकार का आकार भी। **काँगुर** 'कांगड़ी'।

व्याख्या—

अल्प रूप सामान्यतः स्त्रीलिंग होता है। मट्टी का बड़ा पात्र जिस में कोयला सुलगता है, वह **कंग** है। **कंग** पुंलिंग रूप है। उसी के अल्प रूप को **काँगुर** 'कांगड़ी' कहते हैं। वास्तव में **काँगुर** कंग का मात्र अल्प रूप नहीं है। यह एक सुसज्जित उपकरण है, जो ठंड को दूर करने में उपयोगी है। अतीत की बात अलग है। वर्तमान में **काँगुर** को **कंग** का स्त्रीलिंग रूप मानना कठिन है।

॥ च़ासः कृत्रिमे सस्य च खः ॥१३॥

च़ास् सहजकासस्तस्मात्कृत्रिमे ऽर्थे र् प्रत्ययः सकारस्य च खकारो भवति॥ च़ाखुर्। कृत्रिमकासः॥

अनुवाद— सूत्र 6.1.13

चास 'खाँसी' सहज कर्म है। इस के कृत्रिम अर्थ में **र** प्रत्यय संयुक्त होता है, और सकार का खकार। **चाखुर** 'बनावटी खाँसी'।

व्याख्या—

चास पुंलिंग रूप है, और **चाखुर** 'बनावटी खाँसी' इस का स्त्रीलिंग रूप।

॥ त्रकस्तुलायाम् ॥१४॥

तुलाया अर्थे त्रक्शब्दात् र् प्रत्ययो भवति ॥ त्रख्। द्रोणः ॥ त्रकुर। तुला ॥

अनुवाद— सूत्र 6.1.14

'तुला' के अर्थ में **त्रख** शब्द के साथ **र** प्रत्यय संयुक्त होता है। **त्रख** 'लगभग पाँच किलो'। **त्रकुर** 'तुला'।

व्याख्या—

सूत्र में **त्रक** शब्द **क** से अंकित है। उदाहरण में **त्रख** अंकित है और **त्रकुर** में पुनः **क** अंकित है। वास्तव में भार की इकाई के रूप में **त्रख** का ही प्रयोग व्यवहार में है, और तुला के लिए **त्रकुर**। प्रत्यय संयुक्त होने पर महाप्राण का अल्पप्राण में रूपांतरण भाषा का सामान्य नियम है, इसलिए **त्रख** से **त्रकुर** की व्युत्पति संभव हो सकती है, जो वर्तमान में पर्याप्त रूप से ग्राह्य न भी हो।

॥ म्वंडुशब्दस्यान्त्यस्वरलोपः ॥१५॥

म्वंडु बृहत्काष्ठम्। तस्मादल्पस्यार्थे र् प्रत्ययो भवति। अन्त्यस्वरस्य च लोपो भवति ॥ म्वंडु। म्वंडुर्। अल्पकाष्ठम् ॥

अनुवाद— सूत्र 6.1.15

मौंड 'लकड़ी का बहुत बड़ा भाग', इस के अल्पार्थ में **र** प्रत्यय संयुक्त होता है, तथा अन्त के स्वर का लोप। **मौंड म्वंडुर** 'लकड़ी का अल्प भाग'।

व्याख्या—

ग्रन्थकार **मौंड** शब्द के अन्त में मात्रा स्वर की कल्पना करते हैं। उसी के लोप का निर्देश है। आगामी दो सूत्रों में भी इसी प्रकार का कथन है।

॥ फौतुशब्दस्य च ॥१६॥

रप्रत्ययान्त्यस्वरलोपौ भवतः ॥ फौतु । फ्वतुर् । कटोलिका ॥

अनुवाद– सूत्र 6.1.16

र प्रत्यय संयुक्त होने पर अंतिम स्वर का लोप होता है। **फौत** 'टोकरा' **फ्वतुर** 'छोटा टोकरा'।

व्याख्या–

मात्रा स्वर लोप होने के साथ साथ स्त्रीलिंग में उपधा के **औकार** का वत्व हो जाता है। यही रूपांतरण पूर्व सूत्र में भी देख सकते हैं। **फौत** 'टोकरा' का स्त्रीलिंग रूप **फ्वतुर** सिद्ध है।

॥ लटोश्च ॥१७॥

लौटु पुच्छस्तस्मादल्पार्थे रप्रत्ययान्त्यस्वरलोपौ भवतः ॥ लौटु । लटुर् । पुच्छिका ॥ तत्सादृश्ये ऽपि व्यवह्रियते । कूटि लटुर् । क्षुद्रकाष्ठम् ॥

अनुवाद– सूत्र 6.1.17

लौट 'पूँछ' शब्द के साथ र प्रत्यय संयुक्त होने पर अल्पार्थ होता है और अन्तिम स्वर का लोप। **लटुर** 'छोटी पूँछ'। उसी के समान **कूट्य लटुर** 'लकड़ी का क्षुद्र टुकड़ा' भी व्यवहार में है।

व्याख्या–

लौट पुंलिंग रूप है, तथा अल्पार्थ वाला रूप **लटुर** स्त्रीलिंग। यहाँ **औकार** का **अकार** हो जाता है। सामान्य रूप से भी **लौट** का स्त्रीलिंग रूप **लॅट** 'छोटी पूँछ' ही है।

॥ मकुशब्दाच्च्रप्रत्ययः ॥१८॥

मखु परशुस्तस्मादल्पार्थे च्र प्रत्ययो भवति ॥ मक्च्र् । परश्वधिका ॥

अल्पार्थे कृत्रिमार्थे च स्त्रीलिङ्गोद्देशके ऽपि च ।
सादृश्ये स्वविशेषे ऽर्थे स्त्रीलिङ्गप्रत्ययाः खलु ॥

अल्पार्थे यथा । कतुरु । कपालः ॥ कतूरू । कपालिका ॥ कृत्रिमार्थे यथा । च्रावुर् । कृत्रिमकासः ॥ वस्तुनः सजीवस्य निर्जीवस्य वा स्त्रीलिङ्गेनोद्देशे कर्तव्ये

सति स्त्रीप्रत्ययो भवति ॥ म्वंगुरु । छागपोतः ॥ म्वंगूरू । छागपोता ॥ वंछू । वत्सः ॥ वछूरू । वत्सा ॥ न चात्र वत्सस्य स्त्री वत्सा इत्यवगम्यते किंतु वंछु-शब्दस्य पुंलिङ्गस्य स्त्रीलिङ्गेन निर्देशः ॥ सादृश्ये यथा ॥ फंथु । फंछू ॥ ततुरु । पीडा ॥ ततूरू । कोपपीडा ॥ स्वविशेषे ऽर्थे यथा ॥ नंरु । वस्त्रभुजः ॥ नंरू । भुजः ॥ अत्र नंरूशब्दस्य स्वयं स्त्रीलिङ्गत्वान्नाल्पत्वाद्यर्थग्रहः किंतु वस्त्रभुजस्याधारार्थे ऽत्र स्त्रीलिङ्गोद्देशः । यद्वा परस्परं विनिमयोपशमाद्यत्राद्यः शब्दः पुंलिङ्गो भवति तत्र तत्संबन्धिनो ऽन्यशब्दस्य स्त्रीलिङ्गेनोद्देशः क्रियते । यत्र तु स्त्रीलिङ्गस्तत्र पुंलिङ्गोद्देशः ॥ नंरु । नंरू ॥ खंरु । खंरू । खलतिः ॥

अनुवाद— सूत्र 6.1.18

मख 'फरसा' इस के अल्पार्थ में च़ प्रत्यय संयुक्त होता है। मकुच़ 'कुल्हाड़ी'।

अल्पार्थे कृत्रिमार्थे च स्त्रीलिंगोद्देशकेऽपि च।
सादृश्ये स्वविशेषेऽर्थे स्त्रीलिंगप्रत्ययाः खलु।।

स्त्रीलिंग उद्देश्य होने पर अल्पार्थ में, कृत्रिमार्थ में तथा सादृश्य और स्वविशेष अर्थ में भी निश्चित रूप से स्त्रीलिंग प्रत्यय संयुक्त होता है।

अल्पार्थ में यथा— **कतुर** 'मिट्टी के बर्तन का बड़ा टुकड़ा' **कतुर** 'मिट्टी के बर्तन का छोटा टुकड़ा'। कृत्रिमार्थ में यथा— **च़ाखुर** 'बनावटी खाँसी'। सजीव अथवा निर्जीव वस्तु के स्त्रीलिंग रूपांतरण के लिए स्त्रीप्रत्यय संयुक्त होता है। **म्वंगुर** 'भेड़ का बच्चा' **म्वंगुर** 'भेड़ की बच्ची' **वोछ़** 'बछड़ा' **वछुर** 'बछड़ी'। यहाँ पर बछड़ी बछड़े की स्त्री नहीं जाननी चाहिए। **वछुर** पुंलिंग **वोछ़** का स्त्रीलिंग रूप है। सादृश्य में यथा— **ततुर** 'पीड़ा' **ततुर** 'क्रोध की पीड़ा'। स्वविशेष अर्थ में यथा— **नोर** 'वस्त्र भुजा' **नॅर** 'भुजा'। **नॅर** शब्द स्वयं ही स्त्रीलिंग है, इसलिए अल्पार्थ आदि ग्रहण नहीं किए जाएंगे, किंतु वस्त्रभुजा को आधार मान कर उस का स्त्रीलिंग रूप है। समतुल्य शब्दों में पहला शब्द पुंलिंग तथा तत्सबंधी अन्य शब्द उस का स्त्रीलिंग रूपांतरण है। **नोर नॅर, खोर, खॅर** '"लड़की'।

व्याख्या—

स्पष्टीकरण के अधिकांश शब्द **र** प्रत्यय के स्थान पर उपधा के स्वर को अवर्तुलाकार रूप देने पर अधिक बल देते हैं। अधिकांश पुंलिंग रूपों के साथ **र** प्रत्यय तो पहले ही संयुक्त है। स्त्रीलिंग रूप उपधा के स्वर को अवर्तुलाकर करता है। उदाहरण भी पर्याप्त दिए गए हैं।

॥ हस्तुशब्दान्नित्यमिञ् ॥१९॥

उकारान्तत्वात् ऊमात्रादेशनिवृत्त्यर्थं नित्यमिञ् प्रत्ययो भवति ॥ हस्तिञ् । हस्तिनी ॥

अनुवाद— **सूत्र 6.1.19**

उकारान्त शब्दों के ऊमात्रा आदेश निवारण की स्थिति में नित्य **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। **हॅस्तिन्य** 'हथिनी'।

व्याख्या—

आगामी सभी सूत्रों में अर्थात 6.1.31 तक **इन्य** अथवा इस के समरूप स्त्री प्रत्यय की व्याख्या है।

॥ काव्नाग्वूँट्भ्यश्च ॥२०॥

एभ्यः शब्देभ्यो नित्यमिञ् भवति ॥ कांविञ् । काकी ॥ नांगिञ् । नागा ॥ वूँटिञ् । उष्ट्रा ॥

अनुवाद— **सूत्र 6.1.20**

इन शब्दों के साथ भी नित्य **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। **कॉविन्य** 'स्त्री कौआ', **नॉगिन्य** 'नागिन' **वूँटिन्य** 'ऊँटनी'।

व्याख्या—

पुंलिंग शब्द **काव** 'कौआ' **नाग** 'नाग' और **वूँठ** 'ऊँट' के स्त्रीलिंग रूप **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होने से प्राप्त होते हैं। **काव** और **नाग** के उपधा का आकार स्त्रीलिंग में ऑकार हो जाता है। स्त्रीलिंग रूप स्पष्टीकरण में अंकित हैं।

॥ अन्यतो ऽपि पशुजातेः ॥२१॥

स्पष्टम् ॥ खरिञ् । खरी ॥

अनुवाद— **सूत्र 6.1.21**

सूत्र स्पष्ट है। **खरिन्य** 'गधी'।

व्याख्या–

खर 'गधा' पुंलिंग रूप है। **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होने से उपधा के अकार का अॅकार हो जाता है। जैसे कि पूर्व सूत्रों में आकार के ऑकार का निर्देश है। इसी प्रकार यहाँ अकार अॅकार में परिणत हो कर **खॅरिन्य** 'गधी' शब्द सिद्ध है।

॥ व्यंठुगूठुभ्यां निन्दार्थे ॥२२॥

स्पष्टम् ॥ व्यठिञ् । स्थूला ॥ गूठिञ् । स्थूला ॥ निन्दायां किम् । व्यंठू । स्थूला ॥

अनुवाद– सूत्र 6.1.22

सूत्र स्पष्ट है। **व्यठिन्य** 'मोटी' **गूठिन्य** 'मोटी'। निन्दा में क्यों? **व्यॅठ** 'मोटी'।

व्याख्या–

व्योठ 'मोटा' और **गूठ** 'मोटा' के साथ जब **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है तो व्युत्पन्न रूप निरादर का अर्थ सम्प्रेषित करता है। सामान्य अवस्था में **व्योठ** का स्त्रीलिंग रूप **व्यॅठ** ही होता है। यहाँ भी स्त्रीलिंगीकरण का सर्वव्यापी नियम अर्थात स्वर का अवर्तुलाकार होना देखा जा सकता है। **व्योठ** का **ओ** स्त्रीलिंग रूप में **अॅ** सिद्ध है।

॥ ब्वटशब्दात्स्त्रियाम् ॥२३॥

स्त्रीलिङ्गविषये इञ् भवति न निन्दार्थे ॥ ब्वटिञ् । [बुटिञ् ।] ब्वटजातिः स्त्री ॥ पक्षे । ब्वटवाय् ॥

अनुवाद– सूत्र 6.1.23

यहाँ स्त्रीलिंग रूप में **इन्य** प्रत्यय निन्दा के अर्थ में नहीं है। **बौटिन्य/बुटिन्य** 'लद्दाखी महिला'। पक्ष में – **ब्वट्बाय।**

व्याख्या–

ब्वट् 'लद्दाखी' पुंलिंग रूप है, **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होने से वकार का औकार हो जाता है। विकल्प में यदि **बाय** प्रत्यय संयुक्त हो तो स्वर में यह रूपांतरण नही होता। **ब्वट्बाय** रूप ही सिद्ध है।

॥ बुगियुशब्दाद्यलोपश्च ॥२४॥

बुगियु स्वामी तस्मादिञ् प्रत्ययो भवति। यकारस्य च लोपो भवति॥ बुगिञ्। स्वामिनी॥

अनुवाद— सूत्र 6.1.24

बुगियु 'स्वामी' इस के साथ भी इन्य प्रत्यय संयुक्त होता है, यकार का लोप भी। बुगिन्य 'स्वामिनी'।

व्याख्या—

वर्तमान में स्वामी के अर्थ में **बुगिय** अथवा स्वामिनी के अर्थ में **बुगिन्य** शब्द व्यवहार में नहीं है।

॥ ज़लात्पादनिदाघे ॥२५॥

जलशब्दात्पादस्वेदार्थे इञ् भवति॥ जलिञ्। पादस्वेदः॥

अनुवाद— सूत्र 6.1.25

पैरों के पसीने के अर्थ में **ज़ल** शब्द के साथ इन्य प्रत्यय संयुक्त होता है। **ज़ॅलिन्य** 'पैरों का पसीना'।

व्याख्या—

ज़ल 'जल' पुलिंग रूप है। पैरों में जो पसीना निकलता है, और वहाँ मैल बन कर इकट्ठा होता है, उस को **ज़ॅलिन्य** कहते हैं। **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होने से उपधा के अकार का ॲकार सिद्ध है। भाषा में **ज़ल** का दूसरा अर्थ 'मूत्र' है, लेकिन सूत्र में यह अर्थ अभिप्रेत नहीं है।

॥ गराद्गृहसंस्कारे ॥२६॥

गृहसंस्कारे अभिधेये गरशब्दात्स्त्रियामिञ् भवति॥ गरिञ्। गृहसंस्कारिणी॥ अन्यत्र। गर्वाज्यञ्। गृहिणी॥

अनुवाद— सूत्र 6.1.26

गृह संस्कार अभिधेय होने पर **गरु** शब्द के साथ स्त्रीलिंग में **इन्य**

प्रत्यय संयुक्त होता है। गॅरिन्य 'गृहसंस्कारिणी'। अन्यत्र– **गरुवाज्यन्य** 'गृहिणी'।

व्याख्या–

गरु 'घर' पुंलिंग रूप है। इस के साथ **इन्य** प्रत्यय सम्मानजनक अर्थ द्योतित करता है, और व्युत्पन्न रूप **गॅरिन्य** घर की महिला के लिए सुरक्षित है। सामान्य रूप में घरवाली के लिए **गरुवाज्यन** शब्द ही प्रयुक्त होता है।

॥ द्वबुशब्दादायुधे ॥२७॥

स्पष्टम् ॥ द्वबिन्य् । मृगरूपो रजकायुधः ॥ अन्यत्र । द्वबू वा द्वबिबाय् । रजकस्त्री ॥

अनुवाद– सूत्र 6.1.27

सूत्र स्पष्ट है। **दॊबिन्य** 'कपड़े कूटने का सोटा'। अन्यत्र– **दॊब, द्वब्यबाय** 'धोबन'।

व्याख्या–

दॊब 'धोबी' पुंलिंग रूप है। **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होने से 'कपड़े धोने का सोटा' रूपी आयुध का अर्थ अभिप्रेत है। सिद्धरूप **दॊबिन्य** स्त्रीलिंग है। धोबी की स्त्री के रूप में **द्वब्यबाय** प्रयुक्त होता है। एकाक्षरी शब्द होने के कारण यहाँ स्वर अवर्तुलाकार नहीं हुआ है।

॥ मनुष्यजातेरन्य् ॥२८॥

मनुष्यजातिवाचकाच्छब्दादन्य् प्रत्ययो भवति ॥ बटन्य् । ब्राह्मणी ॥ मुस-ल्मानन्य् । म्लेच्छानी ॥ हाकग्राकन्य् । शाकविक्रेत्री ॥ वान्यन्य् । वणिक्स्त्री ॥

अनुवाद– सूत्र 6.1.28

मनुष्य जाति वाचक शब्दों के साथ **अन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। **बटन्य** 'पंडितानी' **मुसलमानन्य** 'मुसलमान महिला'। **हाकग्राकन्य** 'साग बेचने वाली' **वान्यन्य** 'दुकानदारिणी'।

व्याख्या–

इन सभी शब्दों के साथ **इन्य** के स्थान पर **अन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है।

॥ वोलुप्रत्ययान्तान्नित्यम् ॥२९॥

स्पष्टम् ॥ गर्वाज्यन् । गेहिनी ॥ न तु गर्वोलुशब्दस्य उकारान्तत्वात् ऊमात्रादेशः स्यान्नित्यग्रहणात् ॥ प्रत्ययान्तात्किम् । वोलु । वाजु ॥

अनुवाद— सूत्र 6.1.29

सूत्र स्पष्ट है। **गरुवाज्यन** 'घरवाली'। गरुवोल शब्द के उकारान्त का ऊमात्रादेश नित्य ग्राह्य है। प्रत्ययान्त क्यों? **वोल, वॉज।**

व्याख्या—

वोल पुंलिंग रूप है। स्त्रीलिंग में इस का रूप **वॉज** है। इसी **वॉज** के साथ **अन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। **वोल** प्रत्यय युक्त सभी पुंलिंग शब्दों का स्त्रीलिंग में उपर्युक्त रूपांतरण सिद्ध है। यथा— **वानुवोल** 'दुकानदार' **वानुवाज्यन** 'दुकानदारनी' **चायिवोल** 'चाय वाला' **चायिवाज्यन्य** 'चाय वाली' इत्यादि।

॥ प्रत्ययादेर्यो रान्तेभ्यः ॥३०॥

रकारान्तेभ्यः शब्देभ्यः प्रत्ययादिवर्णस्य यकारो भवति ॥ साल्र्यन्। अतिथिस्त्री ॥ प्वह्र्यन् । गृहागता ॥ रंगुर्यन् । रजकस्त्री ॥ स्वनुर्यन् । स्वर्णकारस्त्री ॥ दाँदुर्यन् । शाकविक्रेत्री ॥ काँदुर्यन् । आपूपिकी ॥ स्वन्र्यन् । पुत्रश्वश्रूः ॥ महार्यन् । महाराजस्त्री । वधूः ॥ राज्यर्यन् । देवी । राजस्त्री ॥

अनुवाद— सूत्र 6.1.30

रकार अन्त वाले शब्द में प्रत्यय के आदि वर्ण का यकार हो जाता है। **सालुस्यन्य** 'महिला अतिथि' **पोहस्यन्य** 'घर में आई महिला' **रंगुस्यन्य** 'रंगरेज़नी' **स्वनुस्यन्य** 'सुनारिन' **दाँदुस्यन्य** 'शाक-सब्जी बेचने वाली' **काँदुस्यन्य** 'महिला नानवाई' **स्वन्यन्य** 'समधिन' **महास्यन्य** 'महारानी, दुल्हन' **राजस्यन्य** 'देवी, रानी'।

व्याख्या—

स्पष्टीकरण में दिए गए रूपों के पुंलिंग रूप क्रमशः हैं **सालुर** 'अतिथि', **पोहुर** 'आगत' **रंगुर** 'रंगरेज़' **स्वनुर** 'सुनार' **दाँदुर** 'शाक-सब्जी बेचने वाला' **काँदुर** 'नानवाई' **सोन्य** 'समधी' **महाराज़** 'दुलहा' **राज़** 'राजा'। **काँदुर** तक रकारान्त शब्द हैं। तत्पश्चात तीन शब्द रकारान्त नहीं है। उदाहरणों से यह भी

स्पष्ट है, कि स्त्रीलिंग रूप में उकार का अुकार हो जाता है। यह भाषा का सर्वव्यापी नियम है।

॥ पण्डितगुजरयोरा ॥३१॥

आभ्यां शब्दाभ्यां प्रत्ययादिवर्णस्य अप्रसिद्ध आकारो भवति ॥ पंडितां-न्य् । पण्डितस्त्री ॥ गुजरान्य् । जावालस्त्री ॥

अनुवाद– **सूत्र 6.1.31**

इन दो शब्दों में प्रत्यय के आदिवर्ण का अप्रसिद्ध ऑकार होता है। **पॅण्डितॉन्य** 'पंड़ितानी' **गुजरॉन्य** 'महिला गुर्जर'।

व्याख्या–

इन शब्दों के पुंलिंग रूप हैं **पंडिथ** 'पंडित' और **गुजुर** 'गुर्जर'।

इति

शारदा क्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीरशब्दामृतं
की स्त्री-प्रत्यय-प्रक्रिया समाप्त 6

आख्यात प्रक्रिया -7

धातुपाठ 1

धातवो ऽन्योन्यसांकर्यात्कथ्यन्ते दोषसंज्ञया ।
ते दोषज्ञेन शोध्यन्ते सांकर्याच्च विकीर्णनात् ॥ १ ॥
तथा गिरं प्रणम्यादौ शारदाक्षेत्रधातवः ।
संकीर्णाश्च विकीर्णाश्च ग्रथ्यन्ते यत्नतो मया ॥ २ ॥

तत्र येषां धातूनामतीतकाले केवलं कर्मप्रयोगाः केवलं भावप्रयोगा एव संपद्यन्ते तेषां संकेतो यथा (अक) (अभा) । शेषा धातवो ऽतीतकाले ऽपि कर्तृप्रयोगिनो भवन्ति ॥

अनुवाद–

धातुओं के पारस्परिक संक्रमण को दोष संज्ञा से अभिहित किया जाता है। दोष ज्ञाता संक्रमण और विकीर्णता से इन का शोधन करते हैं। इसलिए प्रारंभ में ही मैं सरस्वती को प्रणाम करके शारदा क्षेत्र के धातुओं को संकीर्णता और विकीर्णता के आधार पर यत्न से सूची बद्ध करता हूँ।

भूतकाल में जिन धातुओं का केवल कर्म प्रयोग है, उन के लिए **अक** तथा जिन का केवल भाव प्रयोग है, उनके लिए **अभा** संकेत सम्पादित है। शेष धातुओं का भूतकाल में कर्तृप्रयोग ही है।

व्याख्या–

धातुओं की अकर्मकता ओर सकर्मकता को स्पष्ट करते हुए कर्तृप्रयोग के लिए कोई चिन्ह अंकित नहीं है, परन्तु कर्म प्रयोग को **अक** तथा भाव प्रयोग को **अभा** से चिन्हित किया है। पाठ में कुल मिला कर 953 धातु तथा परिशिष्ट में 24 योगिक धातुओं का उल्लेख है।

हिन्दी की तरह कश्मीरी में भी मध्यम पुरुष एक वचन के लिए, आदेशात्मक विधि में मूल धातु का प्रयोग किया जाता है। यथा– हिन्दी में 'तू देख' कश्मीरी में **चु वुछ**। देख और **वुछ** को धातु का मूल रूप कह सकते हैं। हिन्दी शब्द कोश में क्रिया की प्रविष्टि मूल रूप के साथ **ना** जोड़ कर की जाती

है यथा– देखना। इसी प्रकार कश्मीरी में भी अधिकांश मूल रूपों के साथ **उन** संयुक्त किया जाता है। यथा– **वुछुन**। हिन्दी और कश्मीरी में ये रूप नामधातु कहे जा सकते हैं। संस्कृत में ऐसी व्यवस्था नहीं है। इसलिए ईश्वर कौल को कश्मीरी मूल धातु का संस्कृत अनुवाद व्याख्यात्मक करना पड़ा है।

यहाँ पर, धातु पाठ के अन्तर्गत इन रूपों का हिन्दी भाषान्तरण भी मध्यम पुरुष एक वचन आदेशात्मक विधि में ही प्रस्तुत किया गया है। जहाँ पर धातु का हिन्दी अनुवाद क्रिया में सम्भव नहीं हुआ है, वहाँ उस के साथ 'कर' अथवा 'हो' आदि क्रियाकर के रूप में प्रयुक्त हैं। यथा– **पश** 'विशाद कर' **रंज़** 'प्रसन्न हो' **शिगन** 'अप्रिय बन'। परिशिष्ट के अन्तर्गत सूचीबद्ध किए गए रूपों में कुछ संयुक्त क्रियाएँ भी हैं, जहाँ पर दोनों क्रियाएँ मिल कर एक ही कार्य द्योतित करती हैं। यथा– **दॉरिथ द्युन** 'फेंकना/फेंक देना'। **दॉरिथ, दारुन** का भूतकालिक कृदन्त रूप है। ऐसे भी रूप हैं, जहाँ पर पद का पूर्व भाग क्रिया नहीं है, लेकिन उत्तर भाग क्रिया है। यथा– **वॅन्ध द्युन** 'जगह जगह ढूँढ़ना'। **वॅन्य** संज्ञा रूप है और **द्युन** क्रिया।

यह ध्यान देने योग्य है, कि परिशिष्ट सूची नामधातु के रूप में ही दी गई है, अर्थात मूल रूप के साथ प्रत्यय के रूप में **उन** संयुक्त है। यही क्रिया का शब्दकोशीय रूप है। दोनों सूचियों में ऐसी क्रियाएँ भी हैं, जिन का प्रयोग वर्तमान नहीं है। परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से ये सभी रूप महत्वपूर्ण हैं। इस के अतिरिक्त यह भी देखा गया है कि अधुनातन साहित्य में इन रूपों का यत्र-तत्र उपयोग भी होने लगा है।

धातुपाठ

अकार

	अच'	घुस, प्रवेश कर'
	अछ़	दुर्बल हो
	अड	'अड़'
अक	अबस	अबसा/उमेट
अक	अर्ज़	'अर्जित कर' 'कमा'
अक	अर्पाव	'गिरा'
	अल	'हिल'
अक	अलर	'हिला'
अक	अलराव	'हिला'
अक	अस	'हँस'
अक	अहल	'मान कर'
अक	अन/आन	'ला'
	अन्द	'सम्पन्न हो'

ॲकार

	ॲदर	'भीग'
अक	ॲदराव	'भिगा'
अक	ॲँज़र	'निभा'
अक	ॲँज़राव	'निभा'
अक	ॲबर	'धुँधला कर'
अक	ॲबराव	'धुँधला कर'

	आकार	
अक	आछ़न	'इस्तेमाल कर'
अक	आपर	'खिला (भोजन आदि)'
अक	आपराव	'खिला (भोजन आदि)'
	आमन	'निष्प्रभ हो'।
अक	आयव	'सीधा कर'
अक	आरद	'आराधन कर'
अक	आरव	'कठोर कर'
अक	आलव	'आरती उतार'
अक	आवर	'व्यस्त कर'
अक	आवराव	'व्यस्त कर, काम में ला'
	आवस	'अलसा'
	आस	'हो'
	ऑकार	
अक	ऑज़र	'ईर्ष्या कर'
अक	ऑटंर	'गुस्सा कर'
अक	ऑडर	'गूँध'
अक	ऑडराव	'गूँध'
	इकार	
अक	इछ़	'इच्छा कर'
	ईकार	
	ईर	'आरोह हो'
	ककार	
अक	कड	'निकाल'
अक	कत	'कात'
अक	कतर	'काट'
अक	कंज़	'भून'
अभा	कंज़र	'शुष्क कर'
अभा	कंज़राव	'शुष्क कर'
अक	कपट	'काट (दर्ज़ी द्वारा)'
अक	कपटाव	'काट (दर्ज़ी द्वारा)'
अक	कमव	'कमा'

अक	कमनाव	'कमवा'
अक	कर	'कर'
	कल	'गूँगा हो'
अभा	कश	'खुजा'
अक	कस	'कस (तेल आदि में)'
	कहर	'कड़ा हो'
	काछ़र	'भूरा हो'
अक	काँछ	'माँग (प्रभु से)',
अक	काँट	'संकोच कर'
	काठ	'अकड़'
	कान	'काना हो/हार'
	कॉँप	'काँप'
अक	काय	'आलस्य कर'
	कायर	'आलसी हो'
अक	कार	'उबाल'
	कावर	'काला हो'
अक	कास	'काट (बाल)'
	क्यन	'गीला हो'
	कुठ	'संकुचित हो'
	कुप	'गुस्सा हो'
	क्वब	'कुबड़ा हो'
	कुमल	'पिघल'
अक	कुह	'सार निकाल'
अक	कूर	'उखाड़'
	कुर	'क्रूर हो'
	क्रट/क्रूट	'दुबला हो'
अक	क्रुप	'काट (कपड़ा)'
	क्रहन	'काला हो'
अक	कोंकव	'गुणवर्णन कर'
	कोल	'सहमत हो'
	कुच़	'भीग'
अक	कुच़व	'भिगा'

अक कुन 'बेच'
अक क्राव 'कर'
क्रेठ 'ऐंठ'
अभा क्रेश 'ललच'

खकार

अक खट 'छुपा'
अक खॅँडर 'बाँट', बिखेर
अक खॅँडराव 'बाँट', बिखेर
अक खन 'खोद'
अभा खप 'भोग'
अभा खम 'साँस ले'
खर 'अप्रिय हो'
खल 'ढ़ीला हो'
अक खरुच 'खरच'
खस 'चढ़'
अक खाह 'उकेर'
अक खार 'चढ़ा'
अक खि 'खा'
अभा खिसुक 'घमंडी हो'
ख्वखर 'खोखला हो'
अक ख्वखलाव 'खँगाल (कपड़े)'
अक खुत 'नीचे खोद'
खुँज़ 'रुँऐं हटा'
खोच़ 'डर'
खोर 'डर'
खोल 'खोल'
अक खुस 'खींच (शरीर के बाल)'

गकार

गछ़ 'जा'
अक गंड 'बांध'
गन 'घना हो'
अक गंज़र 'गिन'
अक गंजराव 'गिन'
अक गर 'गढ़'
गरम 'गर्म हो'
गल 'घुल' 'नष्ट हो'
गांगल 'तिलमिला'
ग्राँगल 'तिलमिला'
अक गार 'ढूँढ'
अक गाल 'घोल'
अक गिंद 'खेल'
ग्यमट 'दुबला हो'
अक गिलव 'घुमा'
अक ग्यव 'गा'
गीर 'चकरा'
अभा गुज़राव 'उपेक्षा कर'
अभा गुंद 'उपालंभ कर'
अक गुप 'छुपा'
ग्वब 'भारी हो'
गुमन 'लथपथ हो'
गुरट 'गोरा हो'
अक गुलव 'घुमा (मुँह में)'
ग्वह 'चमक'
अक गेर 'घेर'
गेल 'चिढ़ा'
अक गोर 'विलाप कर'
गोवर 'नींद में विकल हो'
ग्रख 'उबल'
अभा ग्रज़ 'गरज'
अक,भा ग्रोंशर 'धुंधला हो'
अक,भा ग्रोंशराव 'धुंधला कर'
ग्रवच़ 'धो (पात्र के जल से)'
अक गुह 'घिस'

चकार

अक चताव 'स्तुति कर'
चमक 'चमक'
अक चार 'कस'
अक चाव 'पिला'
अक चि 'पी'

अक	चीर	'निचोड़'
अक	चुकाव	'मोल-भाव कर'
अभा	चुम	'विनीत हो'
	चोंखर	'सिकुड़'

छकार

अक	छख	'बिखेर'
अक	छॅकर	'बिखेर'
अक	छ़करराव 'बिखराव'	
अक	छॅच़राव	'हल्का कर (रंग)'
	छत	'सफेद हो'
	छन	'पतला हो'
अक	छप	'छिप (वर्षा से)'
अभा	छर	'हग'
अक	छल	'धो'
अक	छान	'छान'
अक	छाँट	'गुस्सा कर'
अक	छाव	'उपभोग कर, 'मार' (किसी ठोस वस्तु के साथ)
अभा	छिक	'छिड़क'
अक	छिन्दुर	'आकर्षित कर'
	छिव	'गर्वित हो'
अक	छिवराव	'गर्व कर'
	छ्वकल	'मिला'
अक	छ्वकव	'खंगाल'
	छ्वन्यर	'घट'
अक	छ्वन्यराव	'घटा'
	छ्वन	'कम हो'
अक	छ्वपुर	'बेच'
अक	छ्वपऱाव	'बेच'
अक	छ्वंब	'धान अलग कर (धान की घास से)'
अक	छेर	'बिखेर (दूर तक)'
अक	छोर	'छोड़'

जकार

अभा	जख	'जूझ'
अक	जर	'जड़ (मोती आदि)'
अभा	जूर	'जूझ'

अप्रसिद्ध च़कार

अक	च़ठ	'काट'
	च़म	'सिकुड़'
	च़मठ	'सिकुड़'
	च़र	'जोड़'
	च़र	'क्रुद्ध हो'
अक	च़रच़	'सोच (ईर्ष्या से)'
	च़ल	'भाग'
अभा	च़स	'मुदित हो'
अक	च़ान	'घुसा'
अक	च़ाप	'चबा'
अक	च़ार	'चुन, बीन, छाँट'
अक	च़ाल	'सह'
अभा	च़्यखल	'स्वाद ले'
अभा	च़्यंग	'प्रफुल्ल हो'
अभा	च़्यॅतुर	'देख (उपेक्षा में)'
अक	च़्यल	'दबा'
अक	च़ीन्यर	'चेत'
अक	च़ीन्यराव	'चेत'
	च़्वक	'गुस्सा हो' 'खट्टा हो'
अक,भा	च़्वकर	'गुस्सा कर' 'खट्टा कर'
अक,भा	च़्वकराव	'गुस्सा कर' 'खट्टा कर'
अक	च़्वगनाव	'चार गुणा कर'
	च़्वच़	'वृत्त से संकुचित हो'
अक	च़्वम्ब	'बेध'
	च़ोमराव	'सिकोड़'
अक,भा	च़ुव	'लड़' 'झगड़'
अ भा	च़ुँठ	'पाद'
अक	च़ुर	'चोद'

अक	चे़ठ	'कूट'
अक,भा	चे़न	'चेत'
अक	चुह	'चूस'

अप्रसिद्ध छ़कार

अक	छ़ठ	'फटक, ओसा'
	छ़र	'रिक्त हो'
अक	छ़ल	'छल कर'
अक	छ़ाड	'ढूँढ'
अक	छ़ाँड	'ढूँढ' 'खोज'
अक	छ़ंड	'ढूँढ'
	छ़ॉ॑छन	'लघु हो'
	छ़्यठ	'अशुद्ध हो'
अक	छ़्यॅटर	'अशुद्ध कर'
अक	छ़्यटराव	'अशुद्ध कर'
	छ़्यन	'कट'
	छ़्यव	'शमित हो'
अक	छ़्यॅवर	'शमन कर'
अक	छ़्यॅवराव	'शमन कर'
	छ़्वच़	'खोखला हो'
	छ़्वट	'ठिगना हो'
अक	छ़्वटर	'ठिगना कर'
अक	छ़्वटराव	'छोटा कर'
अक	छ़ुन	'गिर'

अप्रसिद्ध ज़कार

अक	ज़ुज़र	'खुरच'
अक	ज़प	'जप'
अक	ज़र	'सह'
	ज़ल	'जलवत हो (स्वाद में)'
अभा	ज़ाग	'ताक' 'देख (चोर की तरह)'
अक	ज़ान	'जान'
अक	ज़ाल	'जला'
	ज़ि	'उत्पन्न हो'
	ज़िंगर	'व्याकुल हो'
अक	ज़ीठर	'लंबा कर'
अक	ज़ीठराव	'लंबा कर'
	ज़्वंगर	'दुर्बल हो'
	ज़्वज़र	'जर्जरित हो'
	ज़ुव	'जीवित हो' 'जी
अक	ज़ुवर	'जीवित कर'
अक	ज़ुवराव	'जीवित कर'
अभा	ज़्वस	'खाँस'
	ज़ेठ	'लंबा हो'
अक	ज़ेन	'जीत'
	ज़ोत	'चमक'
अक	ज़ोवर	'उत्पन्न कर'
अक	ज़ोवराव	'उत्पन्न कर'
अक	ज़ुरव	'सुरक्षित रख'
अक	ज़ुल	'खुरच'

टकार

अक	टक	'चबा'
अभा	टप	'बता (पीठ पीछे)'
	टल	'टल'
अभा	टाँग	'हिन हिना'
अभा	टाल	'टाल'
	ट्यठ	'कड़वा हो'
अक	ट्यप	'जुड़'
	ट्यम्ब	'छुप'
अक	टुक	'भेद (कपड़े में कीड़े की तरह)'
अक	ट्वकव	'कूट'
	ट्वट	'वृत से संकुचित हो'
अक	टुव	'बंद कर'
	टोठ	'प्रिय हो'
अभा	टुरव	'दौड़'
अक	टुस	'अन्दर घुसा'
अक	टुसन	'अन्दर घुसा'

ठकार

	ठग	'ठग'
अक	ठगाव	'छल कर'

ठहर 'रुक'
अक ठाक 'रोक'
अक ठास 'दे मार'
ठीक 'स्थिर हो'
अक ठुक 'ठोक'

डकार

अक डक 'निघल'
अक डखव 'टेक ले'
डॅखुर 'टेक (लाठी से)'
अक डॅखुराव 'टेक (लाठी से)'
डर 'डर'
डल 'हट'
अक(भा)डॉँट 'डाँट'
अक डाल 'हटा'
ड्यल 'ढ़ीला हो'
ड्वक 'झुक'
डुब 'डूब'
अक डुलनाव 'घुमाव'
अक डुलव 'घुमाव'
अक डुव 'बुहार'
ड्वस 'अवसा'
अक डेश 'देख'
डोल 'डोल'

तकार

तग 'आ' (जानने के अर्थ में)
तंग 'तंग हो'
अक तॅचर 'गर्म कर'
अक तॅचराव 'गर्म कर'
अभा,क तछ 'खुजा'
अक तॅन्यर 'दुबला कर, 'पतला कर'
अक तॅन्यराव 'दुबला कर', 'पतला कर'
तत 'तप्त हो'
तन 'दुबला हो'
अक तप 'सेंक'
तम्बल 'ललच'
तर 'पार हो'
अक तल 'तल'
अक तव 'सेंक (रोटी)'
अक ताड 'ताड़'
अक तार 'पार कर', 'पार करा'
अक ताल 'ताल दे'
अक ताव 'तप्त कर'
त्यंब 'लालायित हो'
तीज़र 'जल्दी कर', 'उत्तेजित कर'
अक तीज़राव 'जल्दी कर' 'उत्तेजित कर'
तीलन 'तेल युक्त हो'
तुन्द 'तेज़ हो'
अक त्वंब 'गुच्छावत बन (रुई का)'
अक तुल 'उठा'
तुर 'ठंडा हो'
तुरन 'ठंडा हो'
तेज़ 'तीक्ष्ण हो'
तेल 'पीड़ित हो (दंश से)'
अक तोल 'तोल'
अक तोवर 'देख (बुरी नज़र से)'
अक तोवराव 'देख (बुरी नज़र से)'
तोष 'खुश हो'
त्रकर 'कर्कश हो'
अक त्रकराव 'करारा कर'
अक त्रगनाव 'तीन गुणा कर'
त्रच़ 'डर'
अक त्रच़राव 'डराव'
अक त्रप 'ढक'
त्रस 'डर'

अक	त्रसराव	'डराव'
अक	त्राव	'छोड़'
अक	त्रुक	'कुतर, चबा'
अक	त्वपुर	'आच्छादित कर'
अक	त्रंब	'गोद'
अक	त्रंबव	'गोद'
	त्रश	'कठोर हो'
अक	त्रशराव	'कठोर कर'
	त्रोर	'कर्कश हो (विस्फोट आदि से)'

थकार

	थक	'थक'
अक	थॅंज़र	'ऊँचा कर'
अक	थॅंज़राव	'ऊँचा कर'
	थद	'उन्नत हो'
	थम	'थम'
	थर	'काँप'
अक	थल	'छँट (पेड़)'
अक	थव	'रख'
अक	थाव	'रख'
	थॉन्थर	'कम्पित हो'
	थार	'कम्पित हो' 'थरथरा'
अक,भा	थ्यक	'बघार (बातें)'
अभा	थिप	'डाँट'
अभा	थ्वक	'थूक'
अक	थुर	'गढ़'

दकार

अक	दग	'कूट'
	दज़	'जल'
अक	दॅंदराव	'खोखला कर'
अक	दप	'कह, बोल, बता'
अक	दबव	'दबा'
अभा	दम	'धौंक'
	दर	'स्थिर हो'
अक	दॅंरर	'स्थिर कर'
अक	दल	'दल'
अभा	दव	'दौड़'
अक	दस	'घुस (धरती में)'
अक	दॉन्यर	'ध्यान लगा'
अक	दॉन्यराव	'ध्यान लगा'
अक	दार	'पकड़ (पात्र में)'
अक	दाव	'दिला'
अक	दि	'दे'
अक	द्वगव	'कूट'
अक	द्वगनाव	'कुटवा'
	द्वदर	'जर्जरित हो'
अक	द्वदुराव	'जर्जरित कर'
अक	द्वबर	'दबा (भूमि में)'
अक	द्वबराव	'दबा (भूमि में)'
अक	द्वय	'दोह (दूध)'
	द्वष	'चू'
अक	दूँछ़र	'पृथक कर'
अक	दूँछ़राव	'पृथक कर'
	दूर	'दूर हो'
अक	दोन	'पींज'
	दोर	'दौड़'
अक	दुन	'झाड़'
अक	दुनव	'झाड़'
अभा	दुय	'उदास हो'
अभा	द्रवक	'खेल'
	द्रवग	'महँगा हो'
अक	द्रवगराव	'महँगा कर'
	द्रेंठ	'कठोर हो'
अक	दॅंशराव	'घृणा करा (अपने लिए)'

नकार

अभा	नच़	'नाच'
अक	नॅन्युर	'स्पष्ट कर'
अक	नॅन्यराव	'स्पष्ट कर'
	नट	'काँप'

अक	नॅटुराव	'कंपा'
	नन	'प्रकट हो'
अभा	नप	'घूस दे (ले)'
	नम	'झुक'
	नव	'नया हो, उन्नत हो'
	नश	'नष्ट हो'
अक	नहाव	'मिटा'
	नॉँट	'निष्फल हो'
	नॉँप	'चमक'
अक	नाव	'माँझ'
अक	नॉशर	'नष्ट हो' 'नष्ट कर'
अक	नॉशराव	'नष्ट कर'
अक	नि	'ले जा'
	निक	'दुबला हो'
अक	निकर	'कूट'
अक	निकराव	'कूट'
अक	न्यंगल	'निगल'
अक	न्यत	'बालकाट (पशुओं के)'
अक	न्यवाज़	'निवेदन कर'
	नील	'नीला हो'
अक	नौमर	'झुका'
अक	नौमराव	'झुका'
अक	नौवर	'उगा'
अक	नौवराव	'उगा'
अक	नेछव	'प्रसिद्ध कर'
	नेर	'निकल'
अक	नोमर	'संक्षिप्त कर'
अक	नोमराव	'संक्षिप्त कर'
अक	न्याव	'चुरवा'

पकार

	पख	'चल'
	पच़	'पतिया'
अक,भा	पछताव	'पछता'
अक	पछान	'पहचान'
	पज़	'उपयुक्त हो, सत्य हो'
अक	पॅजर	'मोड़ (वस्त्रों के खुले भाग)'
अक	पॅज़राव	'सत्य स्पष्ट कर'
	पट	'पा, प्राप्त कर'
अभा	पटाव	'जा'
	पठ	'फल फूल'
अक	पॅठर	'साफ कर (मछली)'
अक	पॅठराव	'साफ कर (मछली)'
अभा	पद	'अपशब्द बोल'
	पप	'पक्का हो'
अक	पय	'पक्का कर (बर्तन आदि)'
अक	पर	'पढ़'
अक	परखाव	'परखा'
अक	परज़न	'पहचान'
अक	परज़नाव	'पहचान'
	पल	'पल'
अक	पलज़	'सहायक हो'
	पलट	'पलट, पिघल'
अभा	पश	'विशाद कर'
	पशप	'चू'
	पाकन	'पक'
अक	पाकव	'पका'
अक	पाज़	'निष्कासन कर, बहा'
	पाथ	'पाथ'
अक	पार	'वेणी बाँध'
अक	पाल	'पाल'
अक	पाव	'गिरा'
अभा	पॉसर	'डाँट'
अक	पॉसवान	'डाँट'
	पि	'गिर'
अभा	पिट	'पिट'
अक	पिटराव	'प्रतीक्षा करवा'
अक	प्यतर	'भुगत'

	प्यद	'जानकारी ले (रहस्य की)'
	पिल	'पकड़'
अक	पिलन	'पकड़ा'
अक	पिलनाव	'पकड़ा'
अभा	प्यव	'सुलगा (चूल्हा)'
	पिशल	'चिकना हो'
	पिस	'पिस'
अक	पिह	'पीस'
	पीट	'क्षुब्ध हो'
अभा	पीठर	'विलम्ब कर (अनावश्यक)'
अभा	पीठराव	'विलम्ब कर (अनावश्यक)'
अक	पीनव	'जनवा'
	पीर	'स्निग्ध हो'
अक	पुच़न	'पर्ण अलग कर (पुष्पों के)'
	पुन	'शाप सफल हो'
अभा	प्वंद	'छींक'
	प्वल	'निर्बल हो'
अक	पुशर	'अर्पण कर'
अक	पुशराव	'अर्पण कर'
अक	पूज़	'पूजा कर'
अक	पूठर	'स्थूल कर'
अक	पूठराव	'स्थूल कर'
अक	पूर	'पूरा कर'
	पेड	'फैल (तेल आदि)'
अक	पॉर	'सँवार (शृंगार हेतु)'
	पोठ	'स्थूल हो' 'पुष्ट हो'
	पोर	'पछाड़'
अभा	पोरव	'रुका'
	पोश	'पूरा पड़'
	प्रखट	'प्रकट हो'
अक	प्रज़न	'पहचान'
अक	प्रज़नाव	'पहचान'
	प्रज़ल	'चमक'
	प्रन	'निर्मल हो'
	प्रय	'प्रिय हो'
	प्रस	'प्रसवित हो'
अक	प्राट	'खोद'
	प्रान	'पुराना हो'
	प्रार	'प्रतीक्षा कर, रुक'
अक	प्राव	'प्राप्त कर'
अक	प्रुछ़	'पूछ'
अक	प्रिन	'ताना दे'
अक	प्रिंज़	'प्रेरित कर'

फकार

अक	फक	'फाँक'
	फट	'फट, डूब'
	फब	'उन्नत हो'
	फर	'टटोल (चुराने के आशय से)'
अक	फरकाव	'फैला (बात)'
	फल	'जीर्ण हो, सफल हो'
	फस	'फँस'
अक	फॅसर	'फाँस'
	फॅहर	'खुरदुरा हो'
अभा	फाँग	'रो (शिशुवत)'
अक	फान	'नाश कर'
	फॉँफल	'विकसित हो'
अक	फालव	'फाड़ (लकड़ी)'
अक	फ़ासर	'फाँस'
अक	फॉसराव	'फाँस'
	फिच़	'भूल'
अक	फयच़व	'चुरा'
अक	फिर	'पलट (पन्ना), बता (कथा) 'उंडेल (पात्र में)'
अक	फिरव	'घुमा'

अक	फ्यश	'चाट (होंठ आदि)'
अक	फुक	'फूक'
अक	फुकार	'गुस्सा कर'
	फुट	'टूट'
अक	फुटर	'तोड़'
अक	फुटराव	'तोड़'
	फ्वल	'विकसित हो'
	फ्वश	'कुपित हो'
	फुह	'कुपित हो'
अक	फूँक	'सूँघ'
	फेर	'घूम, पश्चातापित हो'
अक	फेश	'चाट (होंठ आदि)'
	फोर	'फड़क'
अक	फ्यार	'निथार'
अभा	फ्रक	'सांस ले (तीव्र गति से)'

बकार

अक,भा	बक	'बक'
अक	बगार	'बगार'
	बच	'बच'
अक	बॅचराव	'बचाव'
अक	बज़	'तड़का लगा'
	बड	'बड़'
अक	बडाव	'बड़ाव, बंद कर'
अक	बॅडर	'बड़ा कर'
अक	बॅडराव	'बड़ा कर'
अक	बॅदराव	'सेंक (अग्नि पर)'
	बन	'बन'
अक	बॅ ंज़र	'विभक्त कर'
अक	बॅ ंज़राव	'विभक्त कर'
अक,भा	बर	'भर, व्यथित हो वियोग में'
अक	बॅरकाव	'गिरा'
	बल	'निरोग हो'
अक	बॅलर	'निरोग कर'
अक	बॅलराव	'निरोग कर'
	बस	'बस'
	बसन	'पीला हो'
	बहर	'वीर हो' 'साहस दिखा'
	बाखन	'बुद्धिभ्रष्ट हो'
अक	बॉगर	'बाँट'
अक	बॉगराव	'बाँट'
अक	बॉजर	'बाँट'
अक	बॉजराव	'बाँट'
	बाद/ब्राद	'लोलुप हो'
	बाँबर	'सकपका' 'अस्त–व्यस्त हो'
अक	बाव	'व्यक्त कर (आशय), 'अर्पित कर (प्रभु को)'
	बावज़	'रुचिकर हो'
अक	बाश	'बोल'
	बास	'भास'
	बिगर	'बिघड़'
अक	ब्यॆन्यर	'अलग कर'
अक	ब्यॆन्यराव	'अलग कर'
	ब्यन	'अलग हो'
	बिय	'सड़'
	बेह	'बैठ'
अक	बुद	'कुतर (क्रोध में)'
अक	बुज़	'भून'
	ब्वड	'डूब'
	बुड	'बूढ़ा हो'
	ब्वव	'अंकुरित हो'
अक	बूग	'भोग'
अभा	बेछ	'भीख माँग'
अक	बोज़	'सुन'
अक	बोल	'चहचहा, बोल'
अक	ब्रक	'दाँत चबा (क्रोध में)'
	ब्रज़	'चमक'

	ब्रम	'भ्रमित हो'
अक	ब्रॅमर	'भ्रमित कर'
अक	ब्रॅमराव	'भ्रमित कर'
अक	ब्रश	'दाँत चबा (क्रोध में)'
अक	ब्रिछ़	'इच्छा कर'
	ब्रेठ	'मूर्ख हो'

मकार

अक	मंग	'माँग'
अक	मॅच़राव	'पागल बना'
अक	मठार	'अनुकूलित कर'
अक	मंड	'माँड (वस्त्र आदि)'
	मत	'पगला', 'पागल बन'
अक	मथ	'मथ, मल'
अक	मनव	'मना'
अक	मॅ॑ज़र	'विकल कर'
अक	मॅ॑ज़राव	'विकल कर'
अक	मंद	'मथ'
	मंदछ	'शर्मा'
	ममल	'सो (शरीर का अंग)'
	मर	'मर, चिपक'
	मरुच़	'तिलमिला', 'कुढ़'
अक	मर्दाव	'मसल'
अक	मल	'मल, मसल'
	मश	'भूल जा'
अक	मॅशर	'भुला'
अक	मॅशराव	'भुला'
अक	महार	'मसल'
अक	माज़	'शुद्ध कर'
अक	माँज	'माँझ'
अक	मॉन्यराव	'मनवा'
अक	माँड	'गूँध'
अक	मान	'मान'
अक	मार	'मार'
अक	मिलव	'मिला'
अक	मिलनाव	'मिला'

	म्वकल	'मुक्त हो', 'निपट'
	म्वच़	'अवशिष्ट हो'
अक	मुच़र	'खोल'
अक	मुच़राव	'खोल'
अक	मुछ	'मुक्त हो' (व्रत आदि से)'
	म्वट	'मोटा हो'
अक	म्वटर	'गाढ़ा कर'
अक	मॊटराव	'गाढ़ा कर'
	म्वँड	'बुद्धिहीन हो', 'कुंठित हो'
अक	म्वंडर	'कुंठित कर'
अक	मॊंडराव	'कुंठित कर'
	मॊदर	'मधुर हो'
अक	मॊदराव	'मधुर कर'
अक	मुन	'कूट (धान)'
अक	म्वलव	'मूल्य लगा'
अक	मुश	'मुक्का मार'
अक	मुस	'जबड़ों से चबा'
अक	मुसर	'खोल'
अक	मुसराव	'खोल'
अक	मुह	'मोहित कर'
अभा	मुछ़र	'देर लगा'
अभा	मुछ़राव	'देर लगा'
अक	मुँतर	'मंत्र फूँक'
अक	मुँतराव	'मंत्र फूँक'
अक	मूर	'मरोड़'
	मेठ	'मीठा हो'
अक	मेन	'माप'
	मेल	'मिल'
	मोर	'शमित हो'
अक	मोरव	'पीड़ा सह'

यकार

अक	यॅतुर	'सामर्थ्य कर'
अक	यॅतराव	'सामर्थ्य कर'

	याप	'शक्त हो'
अक	यार	'इकट्ठा कर'
	यि	'आ'
अक	येर	'अट्टी बना'

रकार

अक	रंग	'रंग'
अक	रछ	'पाल'
अक	रॅछ़र	'सम्भाल'
अक	रछ़राव	'सम्भाल'
अक	रठ	'पकड़'
अक	रन	'पका'
	रंज़	'प्रसन्न हो'
अक	रंज़नाव	'प्रसन्न कर'
	रंब	'शोभित हो'
	रस	'सरस हो'
	राव	'गुम हो'
अक	रावर	'गुमा'
अक	रावराव	'गुमा'
अभा	रिंज़व	'ललचा'
अभा	रिव	'शोक कर'
अक	रूव	'रोप'
	रोच़	'रुच'
	रोज़	'रह'
	रोट	'स्थिर हो'
	रोश	'रुष्ट हो'
अक	रुकव	'फिसला'
	रुड	'मचल'
	रुत	'भला बन'
	रुन	'जीर्ण हो'
अभा	रुस	'खिसक'

लकार

अक	लख	'भोग'
	लग	'लग'
अभा	लंग	'लंगड़ा'
	लज़	'योग्य हो'
अभा	लटाव	'जा'
अभा	लड	'लड़'
अक	लडाव	'लड़ा'
अक	लतव	'लतिया'
अक	लता	'लताड़'
अक	लद	'निर्माण कर' (मकान आदि) 'ठूँस' 'परोस'
अक	लब	'पा'
अक	लम	'खींच'
	लय	'स्नेही हो'
अक	ललव	'दुलार'
	लस	'दीर्घायु हो'
	लॅहन	'बेसुध हो'
अक	लाग	'लगा', 'रोप'
अक	लाय	'पीट'
अक	लार	'चिपक', 'दौड़'
	ल्यच़	'निर्बल हो'
	ल्यड	'डरपोक हो'
अक	लिथव	'घसीट'
	ल्यॅदर	'पीला हो'
अक	ल्यॅदराव	'पीला कर'
अक	लिव	'लीप'
अक	ल्यव	'चाट'
	लिस	'खुश हो'
	ल्वत	'हल्का हो'
अभा	ल्वल	'अप्रियता दिखा'
अक	लूकराव	'मूल्यहीन कर'
अक	लूट	'लूट'
	लूब	'लोभी बन'
अक	लूर	'ढ़ह'
अक	लेख	'लिख'
	लोक	'मूल्यहीन हो'
अक	लोन	'लुन' 'काट' (फसल)
	लोर	'विकल हो'
	लोस	'थक'
	लुय	'प्राप्त हो'

	लुह	'प्राप्त हो'
	लुहन	'भुन'
	वकार	
अक	वखन	'व्याख्या कर'
अभा	वज़	'बज'
अक	वज़व	'भिगो'
अक	वट	'लपेट' बटोर'
अक	वॅंडर	'गाड़', 'दबा' (भूमि में)
अक	वॅंडराव	'गाड' 'दबा' (भूमि में)
अक	वथर	'फैला'
अक	वथराव	'फैला'
अभा	वद	'रो'
अक	वन	'बोल'
अक	वनव	'गा' (स्त्रियों द्वारा लोक गीत)
अक	वन्द	'अर्पित कर' (स्वयं को)
	वय	ग्राह्य हो'
अक	वर	'बट'
अक	वल	'लपेट'
अक	वव	'रोप'
अक	वष	'बरस्त'
	वस	'उतर'
अक	वहार	'बिछा'
अक	वाहराव	'बिछा'
अभा	वॉ॔च	'वंचित हो'
अक	वाठ	'जोड'
	वात	'पहुँच'
अक	वाम	'हटा' (मक्खियां आदि)
अभा	वाय	'बजा', 'खे' (नौका आदि)
अक	वार	'हटा' (मक्खियां आदि)
अक	वाल	'उतार'
	विगल	'विगलित हो'

अक,भा	व्यचार	'विचार कर'
	व्यच़	'समा'
अक	व्यछ़न	'व्याख्या कर'
अक	व्यॅज़र	'पहचान'
अक	व्यॅज़राव	'पहचान'
अक	वॅन्यर	'पृथक कर'
अक	वॅन्यराव	'पृथक कर'
	व्यठ	'मोटा हो'
अक	व्यॅठर	'मोटा कर'
	व्यदर	'शिथिल हो'
अक	व्यॅदराव	'शिथिल कर'
अक	व्यंद	'अर्चणा कर'
	व्यप	'अनुकूलित हो'
अक	व्यपर	'अनुकूलित कर'
अक	व्यॅपराव	'अनुकूलित कर'
	व्यलर	'अस्वस्थ हो'
अक	व्यव	'फैला'
अक	व्यवर	'फैला'
अक	व्यवराव	'फैला'
	व्यसर	'शिथिल हो'
	विस	'प्रसन्न हो'
	व्वक	'फड़क'
	वुकुर	'वक्री हो'
अक	वुकराव	'वक्रीकर'
अक	व्वखर	'हिला' (काँगड़ी में आँच)
अक	व्वखराव	'हिला' (काँगड़ी में आँच)
	व्यगन	'उन्नत हो'
अक	वुगराव	'उगाह'
अक(भा)	वुँग	'रो' (श्वान-वत)
	वुच़	'जल' (पात्रतल में पदार्थ)
अक	वुछ	'देख'
	वुज़	'उत्सित हो', जाग
	व्वज़ल	'लाल हो'

	व्वट	'उछल'
अक	वुठ	'बट'
	वुड	'उड़'
अक	वुडाव	'उड़ा'
	व्वतल	'उतावला हो'
	व्वथ	'उठ'
अक	व्वथर	'पोंछ'
अक	व्वथराव	'पोंछ'
	वुद	'जाग'
	वुदर	'दुःखी हो' (वियोग में)
	वुन	'संतप्त हो' (दैव इच्छा से)
	व्वनत	'उन्नत हो'
	वुप	'संतप्त हो'
	व्वपज़	'उत्पन्न हो'
	वुफ	'उड़'
अक	व्वफर	'बुरबुरा कर, गुड़ाई कर
	व्वबर	'समाप्त कर'
	व्वबस	'अधिक हो'
	व्वम	'रह' (अनंत प्रतीक्षा में)
	वुय	'पर्याप्त हो'
अक	वुर	'ठूँस' (पेट में)
अक	व्वलंग	'उल्लंघन कर'
अक	व्वलल	'सजा'
	व्वलस	'उल्लसित हो'
	व्वशल	'लाल हो'
	वुशन	'ऊष्ण हो'
	व्वस	'बहुत हो'
अक	वुसर	'खोल'
अक	वुसराव	'खोल'
	वुह	'आतप्त हो'
अभा	वोहव	'गालियां दे'
अक	वोन	'बुन'
अभा	वोर	'बौखला', 'बोल नींद में'
	वोल	'बौखला'
अक	वोवर	'बुन'
अक	वोवराव	'बुन'

शकार

अक	शगनाव	'छः गुणा कर'
	शम	'शमित हो'
अक,भा	शश	'सह'
	शहल	'ठंड़ा हो'
अभा	शाश	'सांस ले'
	शिगन	'अप्रिय बन'
	शिठ	'जम'
	श्रिठ	'जम'
	श्वंग	'सो'
	श्वद	'शुद्ध हो'
	शूब	'शोभित हो'
अक	शूबर	'शोभित कर'
अक	शूबराव	'शोभित कर'
अक(भा)	शेंक	'शंका कर'
	श्रप	'सोख'
अभा	'श्रवक	'सिकुड'
अक	श्रुत	'पी' (ध्वनि करते हुए)
	श्रोच़	'शुद्ध हो'

सकार

	सखर	'तैयार हो' (प्रस्थान के लिए)
अक	सगव	'सींच'
अक	सगनाव	'सींच'
अक	सॅन्यर	'चिंतन कर'
अक	सॅन्यराव	'चिंतन कर'
अभा	सताव	'सता'
	सन	'सोच' (गहनता से)
अक	सॅ॑ज़र	'सजा'
अक	सॅ॑दर	'सुलगा'
अक	सॅ॑दराव	'सुलगा'
अक	सन्दार	'स्वस्थ कर'

		(शरीर को)	अक	सुलव	'दुलार' (गोदी में)
	सपज़	'हो'	अक	सुव	'सी
	सपद	'हो'		स्वसर	'जर्जरित हो'
	सपन	'हो'	अक	सोज़	'भेज'
	सम	'युक्त हो'		सोर	'अस्त हो', 'समाप्त हो'
	समख	'मिल'			
अक	संबाल	'संभाल'	अक,भा	सुड	'क्षमा कर'
अक	सर	'याद कर'	अक	सुत	'ठूस'
अक,भा	सह	'सह'		स्रव	'चू'
	सांगर	'रिक्त हो'		स्वंग	'सस्ता हो'
अक	साद	'साध'	अक	स्वंगराव	'सस्ता कर'
अक	सार	'ढ़ो'	अभा	सुस	'वायु निकाल' (गुदा से)
अक	साव	'सुला'			
अक	स्यॅंज़र	'सीधा कर'		**हकार**	
अक	स्यॅंज़राव	'सीधा कर'		हकर	'शुष्क हो'
अक	स्यॅंनिराव	'गला'	अभा	हग	'हग'
	स्यद	'सीधा हो'		हॅट	'क्षीण हो'
	स्यॅँदर	'सिंदूरी हो'	अक	हॅटर	'क्षीण कर'
	स्यन	'नर्म हो'	अक	हॅटराव	'क्षीण कर'
अक	सिव	'उबाल'		हॅन्दर	'ठंड़ा हो'
	सीर	'घूम'	अक	हॅन्दराव	'ठंडा कर'
अक	सुक	'सम्भोग कर'		हप	'प्रतीक्षा में रह' (देर तक)
अक	स्वखव	'सुखी कर'			
अक	स्वनाव	'सुखी कर'		हम	'शमित हो'
	स्वग	'सस्ता हो'		हर	'झर'
अक	स्वगराव	'सस्ता कर'		हल	'वक्र हो'
अक	स्वचराव	'शमित कर'	अक	हहर	'साला बन'
	स्वत	'शमित हो'		हाँकल	'शीत से संकुचित हो'
अक	सोम्बर	'जोड़', 'इकट्ठा कर'		हाँठ	'बाँझ हो'
अक	स्वर	'स्मरण कर'	अक	हाँठराव	'बाँझ कर'
अक	सुरव	'माँझ' (राख से)		हान	'ठंडा हो' (शीत से)
अक	स्वरश	'धो' (हाथ आदि)			

इति
श्री शारदाक्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीरशब्दामृतं
की धातुपाठ प्रक्रिया समाप्त 7.1

नाम धातुओं का परिशिष्ट

अग्य लगुन	'शत्रु आदि का सामना करना'
अगादि गछ्‌न	'अकारण क्रोधित होना'
खखुर दिन्य	'घसीटना'
छितु करुन	'लज्जित करना'
ज़ीर दिन्य	'क्रोध के लिए प्रेरित करना'
डाल मारुन्य	'उपेक्षा करना'
डयंबु डयंबु करुन	'भीतर के द्रव्य का शब्द करना'
तोथु करुन्य	'डांट–डपट करना'
दाम च्युन	चूसना, पी डालना'
दॉरिथ द्युन	'फेंकना', 'फेंक देना'
निनु युन	'तंग होना', 'तंग आना'
न्यूर युन	'समीप आना'
पाय करुन	'उपाय करना'
फूह करुन	'कोपपूर्वक प्रेरित करना'
फश द्युन	'मलना, सहलाना'
वर गछुन	'कुपित होना'
मान मान करुन्य	'स्पर्धा करना'
रथि खारुन	'सदुपयोग करना'
वॅन्य द्युन	'जगह–जगह ढूँढना'
वॅस्य प्योन	'गिर पड़ना'
वोडाल करुन	'उपेक्षा करना'
सरु करुन	'निर्णनय करना', 'परखना'
स्वर करुन	'स्मरण करना'
हुकु युन	'वेग वत आना'

(इसी प्रकार अन्य भी)

इति

श्री शारदा क्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीर शब्दामृतं
की धातु–प्रक्रिया (परिशिष्ट) समाप्त 7.2

आख्यात प्रक्रिया 8
वर्तमान पाद 8.1

आख्यात प्रक्रिया के अन्तर्गत ईश्वर कौल ने वर्तमानपाद, भविष्यतपाद, भूतपाद एवं हेतुपाद की व्याख्या की है। वर्तमानपाद के पहले दो सूत्र तीनों कालो की व्याख्या करते हैं। अगले चार सूत्रों में क्रिया पद पर लिंग, वचन और पुरुष के प्रभाव की व्याख्या है। तदनन्तर वर्तमान काल की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गई है। कश्मीरी में नित्य और सातत्य का अन्तर नहीं है। संस्कृत में भी यही व्यवस्था है। हिन्दी तथा अधिकांश भारतीय भाषाओं में नित्य सातत्य से भिन्न है। यथा– नित्य– वह दस बजे घर जाता है। सातव्य– वह अब घर जा रहा है।

कश्मीरी के इन दोनों वाक्यों का क्रिया पद समान है यथा– **सु छु दहि बजि गरु गछ़ान। सु छु वन्य गरु गछ़ान।**

ग्रंथ के उदाहरणों का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करते हुए नित्य और सातत्य के संदर्भ में यह ध्यान में रखा गया है, कि वाक्य का मूल अर्थ संप्रेषित हो। 8.1.52 सूत्र में **बोज़ान छु** का अर्थ 'सुन रहा है' किया गया है। 'सुनता है' अनुवाद करने से वाक्य का मूल अर्थ संप्रेषित नहीं होता। 'सुनता है' से पता चलता है, कि वह बहरा नहीं है।

वर्तमान पाद में 59 सूत्र हैं। अन्तिम सूत्रों में भूत और भविष्यत द्वारा वर्तमान काल की प्रतीति स्पष्ट की गई है।

अथ शब्द मंगलार्थ है।

॥ कालत्रयतद्विशेषक्रियाकर्मकर्त्रवबोधकृदा-ख्यातः ॥ १ ॥

कालत्रयस्य भूतभविष्यद्वर्तमानरूपस्य तद्विशेषाणां विध्यादीनां क्रिया-कर्मणोः कर्मकर्तरि तथा विभक्तिस्वरूपेष्वप्रयुक्तत्छन्दादिकर्तृषु क्रिया-कर्त्रोश्चावबोधकृत्सम्यग्बोधकारक आख्यातो विज्ञेयः ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.1

भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों में क्रिया, कर्म और कर्त्ता की विशेषताएँ एवं विधियाँ आदि तथा विभक्ति के रूप में अप्रयुक्त सार्वनामिक शब्द

आदि में कर्त्ता द्वारा सम्पन्न क्रिया का सम्यक बोधक आख्यात कहलाता है।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र आख्यात प्रक्रिया का अधिकार सूत्र है। आख्यात की संकल्पना स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि कर्त्ता द्वारा सम्पादित कार्य का बोध करने वाला पद आख्यात कहलाता है। आख्यात को काल के अतिरिक्त लिंग, वचन और पुरुष भी प्रभावित करते हैं। इस के अतिरिक्त विभिन्न विधियाँ तथा वृत्तियाँ भी आख्यात द्वारा ही परिभाषित होती हैं। ग्रंथकार ने यह भी स्पष्ट किया है, कि सार्वनामिक प्रत्यय अप्रयुक्त शब्द का बोध कराता है।

॥ आरब्धानारब्धसमापितक्रियाकाला वर्तमान-भविष्यद्भूतसंज्ञाः ॥ २ ॥

आरब्धक्रियाकालो वर्तमानसंज्ञः । अनारब्धक्रियाकालो भविष्यत्संज्ञः । समापितक्रियाकालोऽतीतसंज्ञो भवति ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.2

आरम्भ की गई क्रिया का काल वर्तमान है। जिस क्रिया का अभी प्रारंभ नहीं हुआ है, उस का काल भविष्यत है। जो क्रिया हो चुकी है, उस को भूतकाल कहते हैं।

व्याख्या–

यहाँ पर तीनों काल समय के आयाम द्वारा परिभाषित हैं। जो चल रहा है, वह वर्तमान, जो आने वाला है वह भविष्यत, और जो बीत चुका है, वह भूत कहलाता है।

॥ अश्रोतृश्रोतृवक्तृभेदात्प्रथममध्यमोत्तमाः ॥३॥

तेषु कालत्रयेषु तद्विशेषेषु च प्रत्येकस्मिन् अश्रोता प्रथमपुरुषः । श्रोता मध्यमपुरुषः । वक्ता उत्तमपुरुषो बोध्यः । अश्रोतेति लक्षणात्संनिधानेऽपि पुरुषे अयं करोतीति श्रोतारं वदेत्त्वमपि कुर्विति किमुतासंनिधाने इति निर्णयम् ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.3

तीनों कालों की विशेषता यह है कि, प्रत्येक में अश्रोता प्रथम पुरुष, श्रोता मध्यम पुरुष और वक्ता उत्तम पुरुष होता है। अश्रोता के लक्षण में पुरुष सन्निधान की स्थिति में भी हो सकता है, और असंनिधान की स्थिति में भी। संनिधान की

स्थिति में श्रोता होते हुए भी वह अश्रोता ही माना जाएगा, क्योंकि वक्ता उस को सम्बोधित नहीं करता।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र में प्रथम, मध्य और उत्तम पुरुषों की व्याख्या की गई है। यह भी स्पष्ट किया गया है, कि प्रथम पुरुष के दो भेद हैं। जिस को सामान्यतया प्रत्यक्ष और परोक्ष पुरुष कहा जाता है। यह ध्यान देने की बात है, कि ईश्वर कौल ने 'अन्य पुरुष' के स्थान पर 'प्रथम पुरुष' शब्द का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्रथम पुरुष का प्रयोग न करके अन्य पुरुष का ही प्रयोग है।

॥ एकानेकाभ्यां द्वे द्वे वचने ॥ ४ ॥

तेषु त्रिषु पुरुषेषु प्रत्येकस्मिन्नेकवचनबहुवचनभेदाद्द्वे द्वे वचने भवतः ॥ सुह् छुह् परान् । सः पठति ॥ तिम् छिह् परान् । तौ पठतः वा ते पठन्ति ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.1.4**

तीनों पुरुषों के एकवचन और बहुवचन इस प्रकार दो दो भेद हैं। **सु छु परान** 'वह पढ़ता है' **तिम छि परान** 'वे पढ़ते हैं'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र क्रिया को प्रभावित करने वाले वचन की व्याख्या करता है। भाषा में हिन्दी की भांति एक वचन और बहुवचन, दो ही वचन हैं। संस्कृत में यह स्थिति नहीं है। वहाँ पर एकवचन, द्विवचन और बहुवचन हैं, जो क्रिया को प्रभावित करते हैं। इसलिए ईश्वर कौल ने **तिम छि परान** वाक्य का संस्कृत अनुवाद द्विवचन और बहुवचन दोनों में प्रस्तुत किया है।

॥ युगपदुक्तौ वाचकासन्नो मुख्यः ॥ ५ ॥

द्वयोस्त्रयाणां वा पुरुषाणां युगपत्क्रियाया उक्तौ सत्यां वाचकासन्नः पुरुष एव मुख्यो विज्ञेयः । तद्यथा । तच्छब्दयुष्मच्छब्दयोर्युगपद्वचने वाच्ये वाचकासन्नो युष्मच्छब्द एव मुख्यः संमुखत्वात् । एवं युष्मच्छब्दास्मच्छब्दयोर्युगपद्वचने वाच्ये वाचकस्यात्मैवासन्नतरः । अतस्तत्रास्मच्छब्दस्य मुख्यत्वम् । एवं तच्छब्दास्मच्छब्दयोस्त्रयाणामप्ययमर्थः ॥ सुह् त च़ुह् परिव् । स च—त्वं पठतम् ॥ च़ह् त बुह् परव् । त्वं चाहं पठाव ॥ सुह् त बुह् परव् । स चाहं पठाव ॥ सुह् त च़ह् त बुह् परव् । स च त्वं चाहं पठाम ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.5

दो या तीन पुरुषों (उत्तम, मध्यम और अन्य) द्वारा एक ही क्रिया साधित होने पर वाचक के समीप जो पुरुष है, वही मुख्य होता है। अर्थात् अन्य पुरुष और मध्यम पुरुष द्वारा एक ही क्रिया साधित होने की अवस्था में मध्यम पुरुष वाचक के निकट होने के कारण मुख्य है। इसी प्रकार मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष की स्थिति में वाचक के समीप का पुरुष ही मुख्य है। तीनों पुरुषों के एक साथ होने की स्थिति में भी यही अवधार्य है। यथा– **सु तु चु परिव** 'वह और तुम पढ़ो'। **चु तु बु परव** 'तुम और मैं पढ़ें'। **सु तु बु परव** 'वह और मैं पढें'। **सु तु चु तु बु परव** 'वह और तुम और मैं पढ़ें'।

व्याख्या–

वाक्य में दो या दो से अधिक पुरुषों द्वारा एक ही कार्य करने की अवस्था में क्रिया की अन्विति, इस सूत्र के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयत्न है। हिन्दी में इस स्थिति के लिए क्रिया का बहुवचन रूप ही सामान्यतः ग्राह्य होता है, यथा– 'तुम और मैं खाना खा रहे हैं' इस वाक्य में कश्मीरी भी इसी नियम पर कार्य करती है। वाक्य होगा– **चु तु बु छि खानु ख्यवान**। भविष्यतकाल में वाचक के समीप वाली स्थिति कश्मीरी में भिन्न है। **चु तु बु ख्यमव खानु** 'तुम और मैं खाना खाएँगे'। **चु तु हु ख्ययिव खानु** 'तुम और वह खाना खाएँगे'। हिन्दी के दोनों वाक्यों में 'खाएँगे' का प्रयोग संभव है, परन्तु कश्मीरी में पहले वाक्य में **ख्यमव** और दूसरे वाक्य में **ख्ययिव** है। **ख्यमव** पद का **म** उत्तम पुरुष अर्थात **बु** के कारण है। **ख्ययिव** पद बहुवचनीय आदेशात्मक रूप है। अन्य पुरुष का बहुवचनीय भविष्यत रूप है **ख्यन**। उक्त वाक्य में **ख्ययिव** के स्थान पर **ख्यन** अनुपयुक्त है। वर्तमान पाद के अन्तर्गत भविष्यत के उल्लेख की बाध्यता इसी तथ्य को स्पष्ट करती है।

॥ धातोः परे प्रत्ययाः ॥ ६ ॥

कालत्रयसंबन्धिविभक्तिप्रत्यया धातोः परे भवन्तीति परिभाष्यते ॥ परान् छुह् । पठति ॥ पोरुन् । अपठत् ॥ परि । पठिष्यति ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.6

तीनों कालों से सम्बद्ध विभक्ति प्रत्यय धातु के अंत में संयुक्त होते हैं। **परान छु** 'पढ़ता है' **पोरुन** 'पढ़ा' **परि** 'पढ़ेगा'।

व्याख्या–

यहाँ तक के सूत्र भाषा के काल की विवेचना समग्र रूप से करते हैं। आगामी सूत्रों में वर्तमान काल की विवेचना प्रस्तुत की गई है।

॥ तदात्वारब्धे वर्तमाना ॥ ७ ॥

तत्काले आरब्धे कर्मणि धातोर्वर्तमाना विभक्तिर्भवति ॥ पकान् छुह् । गच्छति ॥ परान् छुह् । पठति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.1.7

तत्काल आरंभ किए गए कार्य के धातु पर वर्तमान काल की विभक्ति होती है। **पकान छुह** 'चल रहा है, चलता है' **परान छुह** 'पढ़ रहा है, पढ़ता है'।

व्याख्या—

हिन्दी का वर्तमान काल नित्य और सातत्य दोनों व्यक्त कर सकता है परन्तु कश्मीरी में संस्कृत की तरह नित्य ही सातत्य का भी बोध कराता है।

वर्तमान काल को कश्मीरी में सहायक क्रिया की सहायता से ही व्यक्त किया जाता है। सहायक क्रिया **आसुन** का वर्तमान कालिक रूप, पुंलिंग एकवचन में **छु** और अन्य स्थितियों में **छि** है। भाषा में सहायक क्रिया का प्रयोग विभक्ति के रूप में नहीं है।

॥ नैरन्तरारब्धे च ॥ ८ ॥

यस्याः क्रियायाः कदाचिदपि व्युच्छित्तिर्न स्यात्तत्कर्म निरन्तरारब्धम् तस्मिन्नपि वर्तमाना विभक्तिर्भवति ॥ ईश्वर् जगतस् रछान् छुह् । ईश्वरो जगद्रक्षति ॥ पान पानस् रछान् छुह् । आत्म [न]ा त्मानं पालयति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.1.8

जो क्रिया पूर्व में कभी आरंभ होकर अविछिन्न रूप से निरन्तर चल रही है। उस के साथ भी वर्तमान विभक्ति प्रयुक्त होती है। **ईशर ज़गतस रछान छु** 'ईश्वर जगत की रक्षा करता है'। **पान पानस रछान छु** 'अपना आप स्वयं की रक्षा करता है'।

व्याख्या—

जिन क्रियाओं का कोई निश्चित आरंभ काल नहीं होता और यथावत् चलती आ रही है, वे वर्तमान कालिक क्रियाएँ ही होती हैं। ऐसे कार्य कलापों को सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक कह सकते हैं। यथा— **रूद छु** वसान 'वर्षा होती है'। शब्द क्रम की दृष्टि से सहायक क्रिया **छु** वाक्य में, प्रायः दूसरे स्थान पर स्थित है। स्पष्टीकरण में दिए गए वाक्यों का उपयुक्त शब्द क्रम है— **ईशर छु ज़गतस रछान** तथा **पान छु पानस रछान**। हिन्दी में यह स्थिति नहीं है वहाँ सहायक क्रिया 'है' क्रिया के साथ ही रहती है। इन के बीच में निपात और अव्यय के अतिरिक्त कुछ भी नहीं आ सकता।

॥ नियमारब्धे च ॥ ९ ॥

प्रतिकुम्भं गङ्गायाः स्नानं करिष्यामीत्यादिनियमेन या या क्रिया आरब्धा स्यात्तस्यां वाच्यायां सत्यां तत्र वर्तमाना विभक्तिर्भवति ॥ व्याकरण् परान् छुह् ल्वकुट्ठ । व्याकरणमधीते बालः ॥ गंगाय गछान् छुह् प्रथ् कुंबस् । गङ्गां गच्छति प्रतिकुम्भम् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.1.9

जो क्रिया नियम से प्रारंभ होती है यथा— 'प्रत्येक कुंभ मेले पर गंगा में स्नान करुँगा' इत्यादि। वहाँ वर्तमान विभक्ति प्रयुक्त होती है। **व्याकरण परान छु ल्वकुट** 'छोटा व्याकरण पढ़ता है'। **गंगायि गछ़ान छु प्रथ क्वंबस** 'प्रत्येक कुंभ पर गंगा जाता है'।

व्याख्या—

स्वाभाविक नियम, जो निरन्तरता में हैं, वहाँ भी वर्तमान कालिक विभक्ति प्रयुक्त होती है। स्पष्टीकरण में दिए गए वाक्यों का उपयुक्त शब्द क्रम है— **ल्वकुट छु व्याकरण परान** तथा **प्रथ क्वम्बस छु गंगायि गछ़ान**।

॥ अनेककार्यवित्कर्तृसत्तायां तत्तत्क्रिया धातुभ्यश्च ॥ १० ॥

एकाधिककार्यज्ञस्य कर्तुः सत्तायां देहपाताभावे सति तत्संबन्धिषु कर्मस्वभिधेयेषु सत्सु धातुभ्यो वर्तमाना विभक्तिर्भवति । एककार्यज्ञस्य तु नियमारम्भतो वर्तमानाप्राप्तिरासीदिति ॥ क्याह् छुह् मुर्च् करान् । किं मूर्तीः कुर्वन्नस्ति ॥ क्याह् छुह् जान् लेखान् । किं साधु लिखन्नस्ति ॥ क्याह् छुह् रतु ग्यवान् । किं साधु गायन्नस्ति ॥ कथनसमकालमेव यदि भोक्तक्रियाविदो देहपातः स्यात् तदातीताप्राप्तिर्भवेन्न तु वर्तमानाप्राप्तिरित्यादिविशेषा बुद्धिमद्भिः स्वयमूह्याः । किं च वर्तमानस्य केवलं न संप्रतिकालीनक्रियायो वर्तमानसंज्ञास्ति किंतु वर्तमानकर्तृसत्वे एव प्रायशो वर्तमानसंज्ञास्तीति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.1.10

एक से अधिक कार्य का ज्ञाता, देह रूप में उपस्थित न होने पर भी, उस से संबद्ध कार्य के वर्णन में, धातु के साथ वर्तमान कालिक विभक्ति ही प्रयुक्त होती है। एक कार्य ज्ञाता के नियमित कौशल में वर्तमान की प्राप्ति रहती ही है।

क्याह छु मुर्च करान 'क्या (बढ़िया) मूर्तियाँ बनाता है'। **क्याह छु जान लेखान** 'क्या बढ़िया लिखता है'। **क्याह छु रुत ग्यवान** 'क्या बढ़िया गाता है'।

उक्त कथन के समय पर यदि ज्ञाता की उपस्थिति भूतकालिक हो तो भी बुद्धिमान वर्तमान काल की विशेषता समझेंगे। क्योंकि वर्तमान केवल सम्प्रति काल के विषय में नहीं होता किन्तु कर्ता का कार्य वर्तमानक होने की अवस्था में भी प्रायः वर्तमान काल होता है।

व्याख्या–

भौतिक जगत के समय की प्रतीति व्याकरणिक जगत में काल द्वारा प्रतिपादित होती है। व्याकरणिक काल समय की धुरी पर आगे पीछे इंगित कर सकता है। प्रस्तुत सूत्र में इसी तथ्य की विवेचना की गई है। कौशल ज्ञाता का उसी समय कौशल रत होना आवश्यक नहीं है, जब उस की चर्चा चल रही हो। मूर्ति पहले बनाई जा चुकी है, काव्य रचना पहले हो चुकी है, परन्तु इन की चर्चा वर्तमान कालिक है। कलाकार का उपस्थित होना भी आवश्यक नहीं है। अतीत की काव्य रचना का वर्णन वर्तमान कालिक संभव है।

'रघुवंश' छि कालिदासुन्य रचना 'रघुवंश कालिदस की रचना है' वाक्य स्पष्टतया वर्तमान कालिक है। ईश्वर कौल कहते हैं, कि कलाकार की दैहिक उपस्थिति काल प्रक्रिया में हस्तक्षेप नहीं कर सकती।

॥ वर्तमानायां छुह् छिह् छुख् छिव छुस् छिह् पुंसि ॥ ११ ॥

॥ छ्यह् छ्यह् छ्यख् छ्यव छ्यस् छ्यह् स्त्रियाम् ॥ १२ ॥

पुंकर्तरि यथा ॥ करान् छुह् । सः करोति ॥ करान् छिह् । ते कुर्वन्ति ॥ करान् छुख् । त्वं करोषि ॥ करान् छिव । यूयं कुरुथ ॥ करान् छुस् । अहं करोमि ॥ करान् छिह् । वयं कुर्मः ॥ स्त्रीलिङ्गे यथा । करान् छ्यह् । सा करोति ॥ करान् छ्यह् । ताः कुर्वन्ति ॥ करान् छ्यख् । त्वं करोषि स्त्री० ॥ करान् छ्यव । यूयं कुरुथ स्त्री० ॥ करान् छ्यस् । अहं करोमि स्त्री० ॥ करान् छ्यह् । वयं कुर्मः स्त्री० ॥ कर करणे । छुह् आदयः प्रत्ययाः । धातोरानागम (सू० १९) इति आन् । व्यञ्जनं परेण संधेयम् (सू० १।१) ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.11-12

पुंलिंगकर्ता– यथा– **करान छु** '(वह) करता है'। **करान छि** '(वे) करते

हैं'। **करान छुख** '(तुम) करते हो/(तू) करता है'। **करान छिवु** '(आप) करते है' **करान छुस** 'करता हूँ' **करान छि** '(हम) करते हैं'।

स्त्रीलिंग– यथा– **करान छि** '(वह) करती है' **करान छि** '(वे) करती हैं। **करान छख** '(तुम) करती हो/(तू) करती है'। **करान छवु** '(आप सब) करती हैं' **करान् छस** 'करती हूँ' **करान छि** '(हम) करती हैं'।

कर का हिन्दी पर्याय 'कर' ही है। **छु** आदि प्रत्यय माने गए हैं। **कर** के साथ आन का संयोग देखिए' सूत्र 8.1.19 व्यंजन पश्च सन्धि के लिए देखिए सूत्र– 1.1.3.

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्रों में **छु** के रूपों का वर्णन है। **छु** को पुरुष, वचन तथा लिंग प्रभावित करते हैं। 8.1.7 सूत्र की व्याख्या में उल्लेख है, कि सहायक क्रिया पुंलिंग एकवचन में **छु** और अन्य स्थितियों में **छि** है। इन के साथ संयुक्त होने वाले अन्य सभी प्रत्यय सार्वनामिक प्रत्यय हैं।
ये प्रत्यय निम्नलिखित तालिका में अंकित हैं।

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्य पुरुष	ϕ	ϕ
मध्यम पुरुष	ख	इवु
उत्तम पुरुष	स	ϕ

यही सार्वनामिक प्रत्यय, छु अथवा **छि** रूपों के साथ दोनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं। अन्य पुरुष एकवचन तथा बहुवचन एवं उत्तम पुरुष बहुवचन के सार्वनामिक प्रत्यय शून्य हैं। यह सभी अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय हैं।

॥ क्रिया ऽभावे नपराः ॥ १३ ॥

क्रियाया अभावे अभिधेये सति ते प्रत्यया नपरा नकारः परो येभ्यस्तथा स्युः ॥ करान् छुन । न करोति ॥ करान् छिन । न कुर्वन्ति ॥ करान् छ्यन । सा न करोति ॥ करान् छ्यख्न । त्वं न करोषि ॥ कर करणे । छुह् प्रत्ययस्तस्मात्प्रत्ययः। धातोरानागमः(सू०१९)। प्रत्ययेषु हलोपः सर्वत्र(सू०४।११) इति हकारलोपः । एवं सर्वेषाम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.13

क्रिया का अभाव अभिधेय होने की स्थिति में नु प्रत्यय नकारात्मकता का द्योतक होता है। **करान छुनु** '(वह) नहीं करता है' **करान छिनु** '(वे) नहीं करते हैं। **करान छनु** '(वह) नहीं करती है'। **करान छखनु** '(तुम) नहीं करती हो/(तू) नहीं करती है'। **छु** के साधित रूप के बाद नु प्रत्यय संयुक्त होता है। **आन**

आगम के लिए सूत्र 8.1.19 देखें। छु के साथ अंकित ह का लोप सूत्र सं 4.1.131।

व्याख्या–

भाषा की विशेषता यह है, कि नकारात्मकता के लिए क्रिया अथवा सहायक क्रिया के साथ नु प्रत्यय संयुक्त होता है। हिन्दी में इस स्थिति में अलग से 'नहीं' शब्द का प्रयोग किया जाता है। **बु लेखुनु लेख** 'मैं लेख नहीं लिखूँगा'।

छु आदि के साथ ह का प्रयोग भाषा में वर्तमान नहीं है।

॥ कामप्रवेदने आपराः ॥ १४ ॥

क्रियायाः कामप्रवेदने सति विभक्तिप्रत्यया आपरा आकारः परो येभ्यस्तथा स्युः। क्रियाभावस्य कामप्रवेदने सति न प्रत्यय आपरो भवति॥ करान् छ्वा। स किं नु करोति॥ करान् छ्या। सा किं नु करोति॥ कर करणे। छुह् छ्यह् प्रत्ययौ आपरौ। प्रत्ययेषु हलोपः सर्वत्र (सू० ४।१३१) इति ह लोपः। धातोरानागमः (सू० १९)। छु इत्यस्य चकारो वः (सू० १।११) इत्यनेन वत्वे कृते। अपरत्र स्वरः सवर्णे दीर्घपरलोपौ (सू० १।५)। व्यञ्जनं परेण संधेयम् (सू० १।३)। एवं करान् छुना। किं न करोति॥ करान् छ्यना। सा किं न करोति॥ अत एव निर्देशाद्यथा नकारान्तस्याऽऽप्रत्ययः स्यात्तथा तिप्रत्ययान्तस्यापि बोध्यः (सू० ४।१७९)। करान् छुत्या। अपि किं करोति॥ कर्योनृत्या। अपि किं चकार॥ करित्या। अपि किं करिष्यति॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.14

क्रिया का निहित कार्य सम्पन्न हो रहा है अथवा नहीं, जानने के लिए आ विभक्ति प्रत्यय संयुक्त होता है। कार्य के अभाव को जानने के लिए **आ** प्रत्यय **न** के पश्चात् संयुक्त होता है। **करान छा** 'क्या (वह) करता है?' **छु** के प्रत्यय के बाद **आ** प्रत्यय। **ह** का लोप सर्वत्र सूत्र 4.1.131 देखिए। आन का आगम सूत्र 8.1.19। सवर्ण में स्वर का दीर्घीकरण तथा अन्य स्थियों में लोप सूत्र 1.1.5। व्यंजन पश्च संधि सूत्र 1.1.3। इसी प्रकार– **करान छुना** 'क्या (वह) नहीं करता है'? **करान छ्यना** 'क्या (वह) नहीं करती है'? इस बात का भी निर्देश है, कि प्रश्नवाचक प्रत्यय **आ** के साथ **ति** प्रत्यय भी हो सकता है। सूत्र 4.1.179। **करान छुत्या?** 'कर भी रहा है क्या'? **करयोनत्या?** 'किया भी था क्या'? **करित्या?** 'करेगा भी क्या'?

व्याख्या–

भाषा में यह प्रावधान है, कि प्रश्नवाचक वाक्य के लिए क्रिया अथवा सहायक क्रिया के साथ **आ** प्रत्यय संयुक्त किया जाता है। प्रश्नवाचकता के लिए

विशेष अनुतान की आवश्ययकता नहीं है। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में प्रश्नवाचकता के लिए अनुतान पर निर्भर रहना पड़ता है, अथवा वाक्य में 'क्या' शब्द का प्रयोग किया जाता है। **बुलबुल वुछा फिलिम** 'क्या बुलबुल फिल्म देखगा?/बुलबुल फिल्म देखेगा?'

हिन्दी में दूसरे वाक्य में 'देखेगा' पद कहते हुए अनुत्तान ऊँचा करना पड़ता है। प्रश्नवाचक **आ** प्रत्यय के पूर्व प्रश्न में अतिरिक्त बल सम्प्रेषित करने के लिए **ति** प्रत्यय संयुक्त किया जाता है। **ति** का रूप **आ** के कारण **त्य** सिद्ध है। स्पष्टीकरण में तीनों कालों के उदाहरण प्रस्तुत हैं। नकारात्मक वाक्यों में **आ** के पश्चात **न** संयुक्त होता है।

॥ मध्यमैकत्वादित्रये ऽपरा वा ॥ १५ ॥

कामप्रवेदने सति मध्यमैकत्वानेकत्वयोरुत्तमैकत्वे च अपरा अकारः परो येभ्यस्तथा वा विकल्पेन स्युः। न क्रियाभावकामप्रवेदने नकारस्य स्वयमकारान्तत्वात्। किं चादरवत्सु संबोधनप्रत्ययेषु चायमेव मुख्यः। अयमस्तु। आ प्रत्ययः कनिष्ठनीचयो (सू० २। २। ७) रिति लिङ्गप्रकरणोक्तसूत्रेण तयोरेवावगन्तव्यः॥ करान् छुख। वा। करान् छुखा। किं त्वं करोषि॥ करान् छिव। वा। करान् छिवा। किं यूयं कुरुथ॥ करान् छुस। वा। करान् छुसा। किमहं करोमि॥ साधनं पूर्ववत्॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.15

मध्यम पुरुष एकवचन तथा बहुवचन एवं उत्तम पुरुष एकवचन में क्रिया का निहित कार्य सम्पन्न हो रहा है, अथवा नहीं, जानने के लिए विकल्प से **अ** प्रत्यय संयुक्त होता है। क्रिया के नकारात्मक भाव में **न** प्रत्यय स्वयं ही आकार युक्त है। आदर सूचक संबोधन प्रत्ययों में यह **अ॒** मुख्य है। **आ** प्रत्यय कनिष्ठ अथवा नीच के लिए संयुक्त होता है। देखें सूत्र संख्या 2.2.7। **करान छुख?** अथवा **करान छुखा?** 'कर रहा है क्या'? **करान छिव?** अथवा **करान छिवा?** 'कर रहे हो क्या'? 'कर रहे हैं क्या'? **करान छुस** अथवा **करान छुसा?** 'कर रहा हूँ क्या'? सिद्धि पूर्ववत।

व्याख्या–

सूत्र का **अ** प्रत्यय व्यवहार में **अ॒** उच्चरित होता है, अतः स्पष्टीकरण में दिए गए उदाहरणों में **अ** के स्थान पर **अ॒** संयुक्त होगा। यथा– **करान छुख॒** 'कर रहा है क्या?' **करान छिव॒** 'कर रहे हो क्या?' अथवा कर रहे हैं क्या?' **करान छुस॒** 'कर रहा हूँ क्या?' स्पष्टीकरण में यह बात भी स्पष्ट की गई है, कि **अ॒** प्रत्यय आदर बोधक है। **आ** प्रत्यय का प्रयोग कनिष्ट, घनिष्ट अथवा सामाजिक

स्तर पर निम्न वर्ग के लिए प्रयुक्त होता है।

॥ अपरा अयूपरा वा स्त्रियां मध्यमे ॥ १६ ॥

स्त्रियाः सकाशात्कामप्रवेदने कर्तव्ये मध्यमपुरुषे प्रत्यया अकारपरा अयूपरा वा भवन्ति । अत्रापि अय् प्रत्ययः । कनिष्ठनीचयो (सू० २।२।७) रित्य[यं] लिङ्गप्रकरणोक्तसूत्रानुसारतो बोध्यः ॥ करान् छ्यख । वा । करान् छ्यखय् । किं त्वं करोषि स्त्री० ॥ करान् छ्यव । वा । करान् छ्यवय् । किं यूयं कुरुथ स्त्रियः ॥ करान् छ्यख्ना । वा । करान् छ्यख्नय् । किं त्वं न करोषि ॥ करान् छ्यवना । वा । करान् छ्यवनय् । किं यूयं न कुरुथ ॥

अनुवाद— सूत्र 8.1.16

स्त्रीलिंग के मध्यम पुरुष में क्रिया के निहित कार्य को जानने के लिए **अ** अथवा **अय** प्रत्यय संयुक्त होता है। यहाँ पर भी **अय** प्रत्यय कनिष्ठ अथवा नीच के लिए है। लिंग प्रकरण के अन्तर्गत 2.2.7 सूत्र में इस का कथन है। **करान छ्यख?** अथवा **करान छ्यखय?** 'कर रही है क्या'? **करान छव?** अथवा **करान छवय?** 'कर रहीं हो क्या?/कर रहे हैं क्या'? **करान छखना** अथवा **करान छखनय?** 'नहीं कर रहीं हैं क्या?' **करान छवना** अथवा **करान छवनय?** 'नहीं कर रहे हो क्या/नहीं कर रहे हैं क्या'?

व्याख्या—

यहां भी **अ** की प्रतीति भाषा में **अु** ही है। यथा— **करान छ्यखु?** 'कर रही है क्या? **करान छवु?** 'कर रही हो क्या/ कर रहे हैं क्या'? आदर के आयाम पर यहाँ पर भी पूर्व सूत्र की व्याख्या प्रभावी है।

॥ उत्तमैकत्वे पुंस्त्रियोः क्रमात् ॥ १७ ॥

पुरुषाय स्त्रिया कामप्रवेदने वाच्ये सति अकारपरो भवति । स्त्रिये स्त्रिया वाच्ये सति अयूपरो भवति ॥ करान् छ्यस । किमहं करोमि ॥ करान् छ्यसय् । किमहं करोमि ॥

अनुवाद— सूत्र 8.1.2

कार्य प्रवेदन के लिए स्त्री पुरुष से पूछे, तो अकार संयुक्त होता है। स्त्री स्त्री से पूछे, तो **अय** प्रत्यय संयुक्त होता है। **करान छसु?** कर रही हूँ क्या? **करान छसय?** 'कर रही हूँ क्या'?

व्याख्या—

पुरुष अथवा स्त्री, पुरुष को सम्बोधित करे तो **अय** प्रत्यय संयुक्त नहीं

होता **अ़** ही संयुक्त होता है। इसी प्रकार पुरुष अथवा स्त्री, स्त्री से प्रश्न करे तो **अ़** नहीं **अय** प्रत्यय ही संयुक्त होता है। यथा– **वुछान छुख़?** देख रहे हो क्या? (पुरुष अथवा स्त्री पुरुष से) **वुछान छखय?** देख रही हो क्या? (पुरुष अथवा स्त्री, स्त्री से)।

॥ बहुत्वे आ अय्पराः ॥ १८ ॥

पुरुषाय वाच्ये आपराः स्त्रियै वाच्ये अय् परा भवन्ति । प्रथमपुरुष-प्रत्यययोरुत्तमानेकत्वछ्यह् प्रत्ययेन सादृश्यात्तयोरपीत्थं विज्ञेयम् ॥ करान् छ्या स्वेह्। सा किं नु करोति ॥ करान् छ्या तिम । ताः किं नु कुर्वन्ति ॥ करान् छ्या अंसि । वयं किं नु कुर्मः ॥ करान् छ्यय् । किं नु वयं कुर्मः ॥ एवमन्ययोरपि ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.18

पुरुष को संबोधन करने पर **आ** और स्त्री के लिए **अय** संयुक्त होता है। प्रथम पुरुष तथा उत्तम पुरुष बहुवचन का प्रत्यय सादृश्य **छ्य** है। **करान छा स्व?** 'वह कर रही है क्या?' **करान छा तिम?** 'वे कर रहे हैं क्या?' **करान छा अ़ॅस्य?** हम कर रहे हैं क्या?' **करान छय?** 'हम कर रहीं हैं क्या?' इसी प्रकार अन्य भी।

व्याख्या–

बहुवचन में भी पुंलिंग के लिए **आ** और स्त्रीलिंग में **अय** प्रत्यय का निर्देश है। 8.1.12 सूत्र में दी गई तालिका में इस बात का उल्लेख है, कि अन्य पुरुष एकवचन एवं बहुवचन तथा उत्तम पुरुष बहुवचन के लिए सार्वनामिक प्रत्यय शून्य है। इसलिए इन सभी स्थितियों में सहायक क्रिया का रूप **छि** ही रहता है। **छ्य** इसी का विगत रूप मान सकते हैं।

॥ धातोरानागमः ॥ १९ ॥

वर्तमानाया विषये धातोः पर आन् आगमो भवति ॥ करान् छुह् । करोति । साधितमेव ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.19

वर्तमान काल में धातु के साथ **आन** संयुक्त होता है। **करान छु** '(वह) कर रहा है'। यह पूर्व सिद्ध है।

व्याख्या–

मध्यम पुरुष एकवचन **चु** 'तू' के साथ आदेशात्मक वृत्ति में जो क्रिया रूप प्रयुक्त होता है, वही मूल धातु है। इसी मूल धातु के साथ **आन** प्रत्यय संयुक्त

होने का निर्देश है। **आन** संयुक्त होने के उपरान्त क्रिया रूप अन्य सभी व्याकरणिक सूचनाओं से अप्रभावित रहता है। ये सभी सूचनाएँ सहायक क्रिया को ही प्रभावित करती हैं, जो ऐसी संरचना की अनिवार्य घटक है।

॥ इकारान्ताद्वपूर्वः ॥ २० ॥

इकारान्ताद्धातोरान् आगमो वकारपूर्वो भवति अर्थात् वान् आगमः स्यात् ॥ निवान् छुह् । हरति ॥ दिवान् छुह् । ददाति ॥ यिवान् छुह् । आयाति ॥ नि हरणे । दि दाने । यि आगमने । वर्तमानायां पुंसि छुह् प्रत्ययः । अनेन वान् आगमः ॥ ख्यवान् छुह् । खादति ॥ च्यवान् छुह् । पिबति ॥ खि खादने । चि पाने । छुह् प्रत्ययः । अनेन वान् आगमः । सर्वत्राकारागमो ऽनिदियिवर्जिताद्व (सू० ८ । २ ।११) इति सूत्रेण धातुस्वरादकारागमः । इकारो ऽसवर्णे यो ऽपरलोप (सू० १।१०) इति सूत्रेण इकारस्य यत्वम् । व्यञ्जनं परेण संधेयम् (१ ।३) ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.20

इकारान्त धातुओं में **आन** आगम के पूर्व वकार लगता है, अर्थात **वान** का आगम होता है। **निवान छु** '(वह) ले जाता है' **दिवान छु** '(वह) दे जाता है' **यिवान छु** '(वह) आ रहा है'। **नि** 'ले जा', **दि** 'दे', **यि** 'आ'। इन क्रियाओं के वर्तमान पुंलिंग का प्रत्यय **छु** है। प्रस्तुत सूत्र से **वान** का आगम है। **ख्यवान छु** '(वह) खा रहा है।' **च्यवान छु** '(वह) पी रहा है' **खि** 'खा' **चि** 'पी' में भी **छु** प्रत्यय है। प्रस्तुत सूत्र से **वान** आगम। 8.2.11 सूत्र में अकारागम का आदेश है। **नि, दि, पि** धातुओं में अकारागम वर्जित है। 1.1.10 सूत्र से असर्वण में इकार लोप तथा यत्व।

व्याख्या–

खि 'खा' **चि** 'पी' धातुओं का वर्तमान उच्चारण **खॅ, चॅ** है। अर्थात इकारान्त के अतिरिक्त ऐकारान्त धातुओं के साथ भी **वान** प्रत्यय संयुक्त होता है।

॥ आसो लोपो धातोश्च ॥ २१ ॥

आस सत्तायामित्यस्माद्धातोरान् प्रत्ययस्य लोपो भवति । आस धातोश्च लोपः स्यात् ॥ छुह् । अस्ति ॥ छिह् । सन्ति । इत्यादि ॥ आस सत्तायां । वर्तमानायां छुह् प्रत्ययः । धातोरानागमः (सू० १९) । अनेन लोपः आस धातोश्च ॥

अनुवाद—

सूत्र 8.1.21

आस 'होना' धातु के साथ **आन** प्रत्यय संयुक्त होने पर **आस** धातु का लोप हो कर **छु** 'है' **छि** 'हैं' इत्यादि रूप सिद्ध हैं। **आस** 'होना' वर्तमान में **छु** है। (देखें सूत्र 8.1.19) प्रस्तुत सूत्र से **आस** के लोप का निर्देश है।

व्याख्या—

8.1.7 सूत्र में स्पष्ट किया गया है कि सहायक क्रिया **आसुन** 'होना' का वर्तमान कालिक रूप, पुंलिंग एकवचन में **छु** और अन्य स्थितियों में **छि** है। **आस** का आस्तित्व नामधातु रूप में तथा स्थित होने के अर्थ में सिद्ध है। **बु आसु गरी** 'मैं घर में ही हूँगा'।

॥ वाक्येष्व ऽयं प्रयोगो मुख्यः ॥ २२ ॥

सर्वेषां वाक्यानां लालित्ये अयम् अस्त्यर्थकः छुह् प्रयोगो मुख्यो ऽक्ष्यार्थः ॥ बत छुह् सुह् ख्यवान्। भक्तमस्ति सः खादन् ॥ बत सुह् ख्यवान् छुह्। भक्तं स खादति। इति गौणः ॥

अनुवाद—

सूत्र 8.1.22

सभी वाक्यों में लालित्य की दृष्टि से **छु** का स्थान मुख्य है। **बतु छु सु ख्यवान** 'खाना वह खाता है' **बतु सु ख्यवान छु** 'वह खाना खाता है' (दूसरे वाक्य में) खाना गौण है।

व्याख्या—

सामान्यतया सहायक क्रिया, शब्दक्रम की दृष्टि से दूसरे स्थान पर प्रयुक्त होती है। पहले प्रयुक्त होने वाला शब्द वाक्यार्थ में प्रसंग बन जाता है, और अर्थ की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो जाता है, यथा— **ख्यवान छु सु बतु** 'खा रहा है वह खाना' इस वाक्य में खाने की क्रिया महत्वपूर्ण है। **सु छु बतु ख्यवान** 'वह खाना खा रहा है' इस वाक्य में व्यक्ति महत्वपूर्ण है। आगामी सूत्र में इस तथ्य को और स्पष्ट किया गया है।

॥ वाक्यारम्भपदात्परो मुख्यः ॥ २३ ॥

वाक्यारम्भस्य यदारम्भपदं स्यात्तस्मान्मुख्यः प्रयोगः प्रयोज्यः ॥ तव पत छुह् आसनस् प्यद् बिहिथ् पूज़ा करान्। ततः अस्ति आसनोपरि निविश्य पूजां कुर्वन् ॥

अनुवाद—

सूत्र 8.1.23

वाक्यारंभ में जिस पद का प्रयोग होता है, वह मुख्य है। **तवु पतु छु आसनस प्यठ बिहिथ पूज़ा करान** 'उस के बाद, आसन पर बैठ कर पूजा करता है।'

व्याख्या–

तवु पतु 'उस के बाद' को संयुक्त पद मान कर वाक्य में छु का स्थान दूसरा ही है। तवु पत् वाक्य के प्रारंभ में है, इसलिए प्रसंग है, तथा अर्थ की दृष्टि से महत्वपूर्ण भी।

॥ वाक्यान्ते गौणः ॥ २४ ॥

गौणो वर्तमानायाः क्रियास्वरूपं वाक्यान्ते प्रयोज्यम् ॥ तव पत आसनस् प्यद् बिहिथ् पूज़ा करान् छुह्। तत आसनोपरि निविश्य पूजां करोति ॥ यद्यपि प्रथमोत्तरे वाक्ये एकार्थके स्तः परं तु वाग्लालित्ये प्रथममेव ज्यायः। किं चात्र वाक्ये स्पष्टं प्रतीयते ॥ ईश्वर् छुह् आसान् काशिय अन्दर्। ईश्वरः अस्तिः भवन् काश्याम् ॥ एवमतीतादिषु च निश्चीयत इति ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.24

वर्तमानकालिक क्रिया रूप वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होने पर गौण होता है। **तव पतु आसनस प्यठ बिहिथ पूज़ा करान छु** 'उस के बाद, आसन पर बैठ कर पूजा करता है।' यद्यपि पूर्व सूत्र का वाक्य तथा इस सूत्र का वाक्य समानार्थक हैं, फिर भी पूर्व सूत्र के वाक्य में ही वाक्-लालित्य है। अगले वाक्य से यह तथ्य स्पष्ट होता है। **ईशर छु आसान कॉशियि अन्दर** 'ईश्वर काशी में होते हैं। यह भूतकालिक क्रिया में भी संभव है।

व्याख्या–

सूत्र में वर्णित पहले वाक्य में सहायक क्रिया छु अन्त में रखी गई है। ईश्वर कौल के मतानुसार गौण होने के कारण उक्त वाक्य में छु का लोप संभव है। **तवु पतु आसनस प्यठ बिहिथ पूज़ा करान** 'उस के बाद आसन पर बैठ कर पूजा करता है'। ईश्वर कौल स्वीकार करते हैं, कि शब्द क्रम की दृष्टि से यदि सहायक क्रिया छु दूसरे स्थान पर हो, तो वाक्य में वाक्-लालित्य उत्पन्न होता है। स्पष्टीकरण के दूसरे वाक्य में छु 'ईश्वर' के बाद है, इसलिए यह अधिक स्वीकार्य वाक्य है।

॥ क्रियायाः किमादिशब्दस्वरूपेभ्यो वा सन-प्रत्ययः शङ्कायाम् ॥ २५ ॥

कामप्रवेदनस्य शङ्कायामभीप्सितायां क्रियायाः परः किमादिशब्दस्वरूपेभ्यो वा परः सन प्रत्ययो भवति। यत्र वाक्ये सार्वनामिकं ककारादि शब्दस्वरूपं स्यात्तत्रावश्यं तस्मात्पर एव भवति। यत्र तु न भवेत्तत्र क्रियायाः पर

एव भवति। ख्यवान् छ्वासन। किं नु खादति ॥ क्यासन ख्यवान् छ्वा। किं नु खादति ॥ बट कैत्यासन आसान् छिह्। किंनु ब्राह्मणाः कतिचन भवन्ति॥ कर्‌सना बॉंगि यिवान् छुह्। कस्मिन्दिनरात्रिभागे आयाति ॥ अत एव ज्ञाप-कायया सन प्रत्ययो भवति तथा संप्रश्ने ऽपि किमादिस्वरूपेभ्यः संबोधनमु-ख्यप्रत्ययाश्च भवन्तीति ॥ कैत्यासा लूख् ऑसि। कियन्तो लोका आसन्॥

अनुवाद– **सूत्र 8.1.25**

कार्य प्रवेदन में संदेह की आकांक्षा होने पर क्रिया के साथ **'किम'** आदि शब्द रूप रहते है। अथवा **सन** प्रत्यय संयुक्त होता है। जिस वाक्य में ककारादि सार्वनामिक शब्द स्वरूप होते हैं, वहाँ अवश्य उस के साथ **सन** संयुक्त होता है। **ख्यवान छासन?** 'खा रहा है क्या?' **क्यासन ख्यवान छा?** 'खा रहा है क्या?' **बट्‌ कुत्यासन आसान छि?** 'पंडित कितने होते है?' **करसना बॉग्य यिवान छु?** 'कितने बजे आता है?' जिस प्रकार **सन** प्रत्यय संयुक्त होता है, उसी प्रकार सम्प्रेषण में भी 'किम' आदि शब्द रूपों के साथ सम्बोधन का मुख्य प्रत्यय संयुक्त हो सकता है। **कुत्यासों लूख ऑस्य?** 'कितने लोग थे जी?'

व्याख्या–

संदेह की स्थिति में प्रश्नवाचक शब्द, वाक्य में सार्थक होता है। भाषा में **सन** प्रत्यय भी इसी प्रकार का कार्य करता है। **सन** प्रत्यय प्रश्नवाचक शब्द के साथ अथवा सहायक क्रिया के साथ संयुक्त होता है। ऐसे वाक्यों में भी सहायक क्रिया **छु** द्वितीय स्थान पर अधिक स्वीकार्य है। **सन** के साथ प्रश्नवाचक आकार स्वाभाविक है। यथा– **लूख कुत्याहसना छि?** 'लोग कितने हैं?' **कुत्यासना** पद **लूख** का विस्तार है। इसलिए **छि** का स्थान दूसरा ही माना जाएगा। **करसना बॉग्य छु बतु ख्यवान?** 'कितने बजे खाना खाता है?

॥ तेभ्यस्ताज़्ताज़तौ स्वाज्ञातायाम् ॥ २६ ॥

तेभ्यः सार्वनामिककक्कारादिस्वरूपेभ्यः परस्ताज़ प्रत्ययस्ताज़त् प्रत्ययो वा भवति आत्मनो ऽज्ञातायामाशङ्कायां विवक्षितायां सत्याम् ॥ क्याह् ताम् वंनुन्। वा क्याह् ताज़त् वंनुन्। किंचिदुक्तम् ॥ एवं। कर् ताज़् आव्। कस्मिंश्चित्काले आगतः ॥ कुतु ताज़् दितुन्। कियन्मितं दत्तम्। इत्यादि ॥ अत्र प्रत्ययसकारस्य विकल्पेन मकारो भवति। तत्र क्याह् ताम् वंनुन् [। किंचिदुक्तम्] ॥ इत्यादि स्यात्॥

अनुवाद– **सूत्र 8.1.26**

संदेह की विवक्षा में ककार आदि सार्वनामिक रूपों के साथ **ताज़्य** अथवा

तान्यत प्रत्यय प्रयुक्त होता है। **क्याह तान्य वौनुन/क्याह तान्यत वौनुन** '(उस ने) कुछ कहा'। इसी प्रकार– **करतान्य आव** 'कब का आया'। **कूततान्य द्युतुन** '(उस ने) कुछ दिया' इत्यादि।

प्रत्यय के न्यकार का विकल्प से **मकार** हो सकता है। यथा– **क्याह ताम वौनुन** '(उस ने) कुछ कहा'। इसी तरह अन्य वाक्य भी संभव है।

व्याख्या–

तान्य और **तान्यत** प्रत्यय अनिश्चितता बोधक है। ये प्रश्नवाचक शब्दों के साथ संयुक्त हो सकते हैं। **तान्यत** के स्थान पर भाषा में **तान्यथ** का ही प्रयोग वर्तमान है। विकल्प में ताम अथवा **तामथ** का भी प्रयोग होता है।

॥ ड्यठातिशये पूर्वं च ॥ २७ ॥

तेभ्यः सार्वनामिककारादिस्वरूपेभ्यः पूर्वं ड्यठशब्दः प्रयोज्यः तत्तत्स्वरूपस्यातिशयार्थे गम्यमाने ॥ ड्यठ कर् आव्। वा ड्यठ कन आव् । चिरागतः ॥ ड्यठ क्याह् [। अतिशयः] ॥ ड्यठ कूति [। अनल्पाः] ॥ ड्यठ कनि [। चिरेण] ॥ इत्यादि ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.27

अतिशयता के अर्थ में ककारादि सार्वनामिक स्वरूपों के पूर्व **ड्यठ** शब्द का प्रयोग होता है। **ड्यठ कर आव/ड्यठ कनि आव** 'काफी समय पहले आया। **ड्यठ क्याह** 'बहुत कुछ' **ड्यठ कुत्य** 'बहुत सारे'। **ड्यठ कनि** '(बदले में) काफी कुछ' इत्यादि।

व्याख्या–

ड्यठ शब्द का वर्तमान प्रयोग सीमित है। केवल **डयठ क्याह** पद का अधिक आग्रह के अर्थ में व्यापक प्रयोग है। साहित्य का वर्तमान विस्तार रचनाकारों को **डयठ** जैसे शब्दों की ओर आकर्षित कर सकता है। क्योंकि इन शब्दों में कश्मीरियत व्यक्त करने की क्षमता है।

॥ आपरो वा ॥ २८ ॥

स सन प्रत्यय आकारः परो यस्मात्तथा वा भवति ॥ क्यासना रव्यवान् छुह् । किं वस्तु नु खादति ॥ कर्सना यियि । कदा नु आगच्छेत् ॥ कूतिसना आसह्यान्। कतिचन स्युः ॥ कतिसना ओसु । कुत्र नु आसीत् ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.28

सन प्रत्यय के साथ आकार विकल्प से संयुक्त होता है। **क्यासना**

ख्यवान छु? '(वह) क्या (कुछ) खा रहा है। **करसना यियि?** '(वह) कब आएगा?' **कुत्यसना आसुहॉन** 'कितने रहे होंगे?' **कतिसना ओस?** '(वह) कहाँ था'?
व्याख्या–

8.1.25 सूत्र में उल्लेख किया गया है, कि **सन** के साथ प्रश्नवाचक आकार स्वाभाविक ही है। आकार रहित **सन** का प्रयोग अब व्यवहार में नहीं है। स्पष्टीकरण के पहले उदाहरण का सामान्य शब्द क्रम होगा– **क्या सना छु ख्यवान।**

॥ माशब्द आदावन्ते वा ॥ २९ ॥

आशङ्कायां सत्यां क्रियायाः पूर्वं पश्चाद्वा माशब्दः प्रयोज्यः ॥ करान् मा छुह् [। करोति मा स्वित्] ॥ मा छुह् करान् [। मा स्वित्करोति] ॥ मा करान् छुह् [। मा करोति स्वित्] ॥ कर्योन्मा [। मा कार्षीत्स्वित्] ॥ सुह् मा करि [। करिष्यति मा स्वित्] ॥ ब्वह् मा कर [। अहं मा स्वित् करिष्यामि] ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.29

संदेह की स्थिति में क्रिया के पूर्व अथवा उत्तर में **मा** शब्द का प्रयोग होता है। **करान मा छु** 'कर तो नहीं रहा है?' **मा छु करान?** 'कर नहीं रहा है?' **मा करान छु?** 'कर नहीं रहा है?' **कर्योन मा?** 'कर तो नहीं लिया था?' **सु मा करि?** 'वह करेगा तो नहीं?' **बु मा करु?** 'मैं तो नहीं करूँगा?'
व्याख्या–

मा शब्द का अर्थ प्रश्नवाचक वाक्यों में 'नहीं' और आदेशात्मक वृत्ति में 'मत' है। प्रश्नवाचक शब्दों के उदाहरण स्पष्टीकरण में प्रस्तुत हैं। 'मत' अर्थ का वाक्य है **पोश मा च़टिव** 'फूल मत तोड़ो' **पोश मसो च़टिव** 'फूल मत तोड़िए'। स्पष्टीकरण में इस तथ्य के उदाहरण भी है, कि वाक्य में, शब्द क्रम की दृष्टि से, **मा** का प्रयोग अर्थ में परिवर्तन उत्पन्न कर सकता है। वर्तमान काल के अतिरिक्त भूत और भविष्यत में भी **मा** शब्द का प्रयोग प्रस्तुत किया गया है।

॥ वाद्यः पाद्यो वाऽऽनुप्रासिकशब्दः ॥ ३० ॥

यस्य कस्यचिच्छब्दस्यानुकरणशब्दे कर्तव्ये तस्यैव शब्दस्याद्याक्षरं वकारेण पकारेण वा विपर्यस्य आनुप्रासिकशब्द उच्चारणीयः ॥ करान वरान् छुह् । करोतीत्यादि ॥ द्यार् व्यार् अनिन् । धनादिकमानयतु । बत वत ख्यायिन् । भक्तादि भक्षयतु ॥ अन्वार् वन्वार् [। क्रमप्राप्तिः] ॥ अन्वार् पन्वार् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.1.30

किसी शब्द के अनुकरणात्मक शब्द व्यक्त करने के लिए उस शब्द के आदि अक्षर को वकार अथवा पकार में बदल कर आनुप्रासिकता से उच्चरित किया जाता है। **करान वरान छु** 'करता वरता है।' **द्यार व्यार अनिन** '(वह) पैसे वैसे लाया' **बतु वतु ख्ययिन** '(वह) खाना वाना खा ले।' **अनुवार वनुवार** 'बारी वारी।' **अनुवार पनुवार** 'बारी वारी'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र में प्रतिध्वन्यात्मक शब्द (echo words) व्याख्यायित हैं। पहले उदाहरण में वर्तमान कालिक क्रिया **करान** का उल्लेख है। शेष उदाहरण अन्य व्याकरणिक कोटियों के हैं। प्रतिध्वन्यात्मक शब्द सभी भारतीय भाषाओं की विशेषता है। ये शब्द मूल शब्द के अर्थ का विस्तार करते हैं। यथा— **मकॉय वकॉय** अर्थात मक्कई और उस के साथ वाली वस्तुएँ। क्रिया पद में भी ये शब्द ऐसा ही अर्थ व्यक्त करते हैं। वकार के स्थान पर पकार का प्रयोग मात्र वकार युक्त मूल शब्दों तक ही सीमित है। शकार के भी कुछ उदाहरण भाषा में प्राप्त हैं, यथा— **चाय शाय चेयन** '(उस ने) चाय वाय पी ली।'

।। तयोरेकतराद्ये तदितरः ॥ ३१ ॥

तयोर्वकारपकारयोर्मध्यात् एकतरे शब्दस्य आद्याक्षरे सति तस्मादितरः प्रयोज्यः वकाराद्ये पकारः पकाराद्ये वकार इति ॥ पद् वद् । पठेत्यादि ॥ पैंस वैंस दितिन् । पणाद्यदात् ॥ वाँगन् पाँगन् अन । वृन्ताकाद्यानय ॥ वाज पाज छिह् । सूदादयः सन्ति ॥ व्युच्च शब्दस्य पोच्च शब्द आनुप्रासिको बोध्यः । व्युच्च पोच्च । संग्रह इत्यादि ॥

अनुवाद— सूत्र 8.1.31

वकार और पकार में से मूल शब्द के आदि में प्रयुक्त होने वाले अक्षर से इतर अक्षर (प्रतिध्वन्यात्मक शब्द) प्रयुक्त होता है, अर्थात यदि मूल शब्द में वकार है, तो पकार तथा पकार है, तो वकार प्रयुक्त होगा। **पर्‌ वर्‌** '(मैं) पढूँ वढूँगा। **पॉंसु वॉंसु दितिन** '(उस ने) पैंसे वैसे दिए'। **वाँगन पाँगन अन** 'बैंगन वैंगन लाओ'। **वाजु पाजु छि** 'बावर्ची वावर्ची हैं।' **व्युच़** शब्द के लिए (प्रतिध्वन्यात्मक शब्द) **पोच़** ही आनुप्रासिक के रूप में स्वीकार्य है। **व्युच़ पोच** 'संग्रह आदि'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र पूर्ववर्ती सूत्र का विस्तार है। यहाँ पर प्रतिध्वन्यात्मक शब्द के लिए पकार की स्थितियों को स्पष्ट किया गया हे। केवल पहला उदाहरण क्रिया

से संबन्धित है, जो भविष्यत काल में है।

॥ अन्येनापि क्वचित् ॥ ३२ ॥

स आनुप्रासिकशब्दो ऽन्येन वर्णेन विपर्यस्य क्वचिद्व्यवह्रियते सार्थकशब्देन वा ॥ निकु सुकु । संभारादि ॥ म्यंडु ट्यंडु । ग्रासादि ॥ हलु कलु । वक्रादि ॥ हलु वलु । परिकरादि ॥ हांज़ु गांज़ु । नाविकादि ॥ फलु फ्यंतु । भूषणादि ॥ ओन्तु वोन्तु । उत्तानादि ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.32

आनुप्रासिक शब्द के लिए अन्य वर्ण भी विपर्यय के रूप में व्यवहार में हैं, जो कभी कभी सार्थक शब्द भी होता है। **निक्** **सुक्** 'दुबला पतला' **म्यॉंड** **टयॉंड** 'निवाला विवाला' **हॊल** **कॊल** 'टेड़ा मेड़ा' **हॊल** **वॊल** 'कपड़ा लता' **हाँज़** **गाँज़** 'नाविक वाविक' **फॊल** **फ्यॊत** 'ज़ेवर वेवर' **ऒंत** **वॊंत** 'गहराई वहराई'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र भी प्रतिध्वन्यात्मक शब्दों से संबद्ध है, जहाँ वकार और पकार के अतिरिक्त आदि अक्षर के रूप में अन्य वर्णों का उल्लेख है। ये सभी उदाहरण क्रिया पद से इतर हैं।

॥ तच्छब्दस्यैकत्वेन क्रियासंबन्धे ऽस् ॥ ३३ ॥

कर्ता यां क्रियां तस्यार्थं विदधाति तस्याः क्रियायाः परः अस् प्रत्ययः सर्वत्र स्यात् ॥ करान् छुस् । तस्यार्थं करोति ॥ करान् छिस् । तस्यार्थं कुर्वन्ति ॥ करान् छुसस् । तस्यार्थं करोमि ॥ करान् छिस् । तस्यार्थं कुर्मः ॥ कर करणे । वर्तमानायां प्रथमैकबहुत्वे पुंसि छुह् छिह् प्रत्ययौ धातोरानागम (सू० १९) इति आन् । अनेनान्ते अस् प्रत्ययः । प्रत्ययेषु हलोपः सर्वत्र (सू०४।१११) इति हकारलोपः । अस् प्रत्ययस्य स्वरादल्लोपः (सू०१९) इत्यकारलोपः । एवमन्यत् ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.33

कर्ता द्वारा अन्य के हितार्थ कार्य करने की स्थिति में क्रिया के साथ **अस** प्रत्यय सर्वत्र संयुक्त होता है। **करान** **छुस** 'उस के निमित्त (वह) करता है।' **करान** **छिस** 'उस के लिए वे करते हैं'। **करान** **छुसस** 'मैं उस के निमित्त करता हूँ'। **करान** **छिस** 'उस के निमित्त (हम) करते हैं'। **कर** का अर्थ है **कर**। वर्तमान काल के पुंलिंग एकवचन बहुवचन प्रथमा में **छु**, **छि** के पूर्व धातु के साथ **आन**

प्रत्यय संयुक्त होता है। (देखिए सूत्र 8.1.19) सर्वत्र **ह** का लोप (देखें सूत्र 8.1.39) तथा अकार का लोप। इसी प्रकार अन्य भी।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में सार्वनामिक प्रत्यय **स** की व्याख्या है। यह सार्वनामिक प्रत्यय भाषा में दो उत्तरदायित्व निभाता है। पहले दो उदाहरणों में इस प्रत्यय के निमित्तार्थ उत्तरदायित्व का उल्लेख है। जहाँ प्रत्यक्ष अन्य पुरुष परोक्ष अन्य पुरुष के निमित्त कार्य करता है। **करान छुस** वाक्य का दूसरा अर्थ है 'मैं करता हूँ' इस स्थिति में **स** उत्तम पुरुष का अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय है। वास्तविक वाक्य है **बु छुस करान** 'मैं करता हूँ' ऐसे वाक्य में **बु** का लोप संभव है और **छुस** सहायक क्रिया शब्द क्रम की दृष्टि से अपने सामान्य स्थान, अर्थात दूसरे पर स्थापित होती है, तथा वाक्य है **करान छुस। करान छुसस** उदाहरण में दो **स** प्रत्यय हैं। पहला **स** उत्तम पुरुष अनिवार्य तथा दूसरा **स** अन्य पुरुष हितार्थ का बोध कराता है। इसी प्रकार का उदाहरण है– **करान छुसय** 'मैं तुम्हारे निमित्त करता हूँ'। यहाँ पर **स** उत्तम पुरुष का तथा **य** मध्यम पुरुष हितार्थ का बोध कराते हैं।

॥ कर्मण्यन् ॥ ३४ ॥

सच्छन्दस्यैकत्वे कर्मणि सति क्रियायाः परः अन् प्रत्ययो भवति सर्वत्र ॥

करान् छुहन् । तं करोषि ॥ ख्यवान् छुहन् । तं खादसि ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.1.34**

कर्म के एकवचन होने की स्थिति में क्रिया के साथ **अन** प्रत्यय सर्वत्र होता है। **करान छुहन** '(तू) उस को करता है। **ख्यवान छुहन** '(तू) उस को खाता है।'

व्याख्या–

अन्य पुरुष एकवचन का सार्वनामिक प्रत्यय (अन) **न** है। यह प्रत्यय सकर्मक क्रिया के साथ संयुक्त होता है। अकर्मक के साथ नहीं। **वुछान छुहन** '(तू) उस को देखता है' वास्तविक वाक्य है, **चु छुहन सु वुछान** 'तू उस को देखता है'। इस वाक्य में ह मध्यम पुरुष का और **स** अन्य पुरुष का सार्वनामिक प्रत्यय है। **बु छुसन सु वुछान** 'मैं उस को देखता हूँ।' इस वाक्य में भी सर्वनाम **बु** 'मैं' और **सु** 'वह' का लोप संभव है। सहायक क्रिया दूसरे स्थान पर स्थापित होकर वाक्य सिद्ध होता है। **वुछान छुसन** '(मैं) उस को देखता हूँ। **न** प्रत्यय कर्म के एकवचन अन्य पुरुष का बोध कराता है।

॥ बहुत्वेनाख् ॥ ३५ ॥

तेषामर्थे यां क्रियां निर्वर्तयेचच्छब्दस्य बहुत्वे वा कर्मणि सति क्रियायाः परः अख् प्रत्ययः स्यात् सर्वासु विभक्तिषु ॥ करान् छुख्। तेषामर्थे करोति॥ करान् छिख् । तेषामर्थे कुर्वन्ति ॥ करान् छुसख् । तेषामर्थे करोमि ॥ करान् छिख्। तेषां [अर्थे] कुर्मः । साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.35

अन्य के हितार्थ कार्य निष्पादन के लिए बहुवचन कर्म की स्थिति में क्रिया के साथ सर्वत्र **अख** प्रत्यय संयुक्त होता है। **करान छुख** '(वह) उन के निमित्त करता है' **करान छिख** '(वे) उन के निमित्त करते हैं'। **करान छुसख** '(मैं) उन के निमित्त करता हूँ'। **करान छिख** '(हम) उनके निमित्त करते हैं।

व्याख्या–

भाषा में सार्वनामिक प्रत्यय स्पष्ट रूप से दो प्रकार के हैं। प्रत्ययों का पहला समुच्चय रूपात्मक दृष्टि से अनिवार्य है। यथा– **बु छुस पकान** 'मैं चल रहा हूँ।' **चु छुख पकान** 'तू चल रहा है' पहले वाक्य में सहायक क्रिया **छु** के साथ **स** तथा दूसरे वाक्य में **छु** के साथ **ख** अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय हैं। इन प्रत्ययों के बिना वाक्य संभव नहीं है। **बु छु पकान** अथवा **चु छु पकान** वाक्य संभव नहीं है।

दूसरे समुच्चय के सार्वनामिक प्रत्यय रूपात्मक दृष्टि से अनिवार्य नहीं है। ये प्रत्यय वाक्य को अतिरिक्त अर्थ प्रदान करते हैं। क्रिया में निहित कार्य किस के निमित्त हो रहा है, इस की प्रतीति इन प्रत्ययों के द्वारा संप्रेषित होती है। इन को निमित्तार्थ प्रत्यय कह सकते हैं। प्रस्तुत सूत्र में **ख** तथा 8.1.33 में **स** और 8.1.34 में **न** इसी समुच्चय के प्रत्यय हैं। दोनों प्रकार के प्रत्यय साथ साथ संयुक्त हो सकते हैं। क्रम की दृष्टि से पहले अनिवार्य प्रत्यय संयुक्त होता है, और उस के बाद निमित्तार्थ।

॥ त्वच्छब्दे कर्मणि भूते च ॥ ३६ ॥

अतीतकालिकक्रियायास्त्वच्छब्दे कर्मणि सति क्रियायाः परः अख् प्रत्ययः स्यात् ॥ कर्योनख् । तेन चक्रपे ॥ कोरमख्। मया चक्रपे ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.36

भूतकालिक सकर्मक क्रिया के साथ भी **अख** प्रत्यय संयुक्त होता है। **कर्योनख** 'उसने उन को किया था' **कोरमख** 'मैंने उन को किया था।

व्याख्या–

कर्योनख वाक्य में अनिवार्य तथा वैकल्पिक अर्थात निमित्तार्थ दोनों प्रकार के सार्वनामिक प्रत्यय हैं। **न** अन्य पुरुष एकवचन अनिवार्य प्रत्यय तथा **ख** वैकल्पिक। **न** प्रत्यय की विशेषता यह है, कि कर्ता के रूप में इस के संयुक्त होने की स्थिति में अन्य पुरुष सर्वनाम शब्द का प्रयोग संभव नहीं है। यथा– **बतु ख्योन** '(उस ने) खाना खाया'। इस वाक्य में 'उस ने' सर्वनाम शब्द का प्रयोग संभव नहीं है। **तॅम्य ख्योन बतु** संभव नहीं है। सर्वनाम शब्द **तॅम्य** 'उसने' यदि इस वाक्य में प्रयुक्त करना है, तो सार्वनामिक प्रत्यय **न** संयुक्त करना संभव नहीं है। उस स्थिति में वाक्य होगा **तॅम्य ख्यव बतु** 'उस ने खाना खाया'।

स्पष्टीकरण में **कर्योनख** के स्थान पर **कौरनख** 'उस ने उन के निमित्त किया' अधिक उपयुक्त वाक्य है। **कर्योनख** वाक्य में हेतु की संभावना निहित है। इस दृष्टि से स्पष्टीकरण का दूसरा उदाहरण **कौरमख** उपयुक्त है। यहाँ पर **म** उत्तम पुरुष एकवचन का अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय और **ख** निमितार्थ है।

॥ भविष्यद्वर्तमानोत्तमेप्यथ् ॥ ३७ ॥

स्वच्छन्दे कर्मणि सति भविष्यन्त्या वर्तमानाया उत्तमपुरुषे ऽपि क्रियायाः परः अथ् प्रत्ययः स्यात् ॥ करथ् । त्वां करिष्यामि ॥ करोथ् । त्वां करिष्यामः ॥ करान् छुसथ् । त्वां करोमि ॥ करान् छिथ् । त्वां कुर्मः ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.1.37**

सकर्मक क्रिया की अवस्था में भविष्य और वर्तमान काल रूपों के साथ उत्तम पुरुष में भी **अथ** प्रत्यय संयुक्त होता है। **करथ** 'तुझे करुँगा' **करोथ** '(हम) तुझे करेंगे' **करान छुसथ** 'तुझे कर रहा हूँ' **करान छिथ** '(हम) तुझे कर रहे हैं'।

व्याख्या–

थ मध्यम पुरुष एकवचन का अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय है। यह प्रत्यय कर्म के वचन और पुरुष का बोध कराता है। उदाहरण के वाक्यों में कर्म एकवचन मध्यम पुरुष है। इसलिए सभी उदाहरणों में क्रिया के साथ **थ** प्रत्यय है। यदि कर्म अन्य पुरुष एकवचन हो तो **थ** के स्थान पर **न** प्रत्यय संयुक्त होगा। दोनों प्रकार के उदाहरण निम्नांकित हैं– **बु वुछथ चु** 'मैं तुझे देखूँगा' **बु छुसथ चु वुछान** 'मैं तुझे देख रहा हूँ।' **बु वुछन हु** 'मैं उसे देखूँगा' **बु छुसन हु वुछान** 'मैं उसे देख रहा हूँ'।

॥ प्रत्यये प्रत्ययखकारस्य हः ॥ ३८ ॥

तत्संबन्धादिप्रत्ययेषु परेषु प्रत्ययसंबन्धिनः खकारस्य हकारो भवति ॥ करान् छुहस्। तस्यार्थे करोषि ॥ करान् छुहख्। तेषामर्थे करोषि ॥ कर करणे। वर्तमानायां मध्यमैकत्वे छुख्। आन् आगमः (१९ सूत्रेण) तच्छब्द (सू० ३३-३५) इत्यादिना अस् अख् प्रत्ययौ। अनेन खकारस्य हकारः। व्यञ्जनं परेण संधेयम् (सू०१।३) ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.38

अन्य पुरुष संबन्धित हितार्थ प्रत्यय संयुक्त होने पर खकार का हकार हो जाता है। **करान छुहस** 'तुम उस के निमित्त करते हो'। **करान छुहख** 'तुम उन के निमित्त करते हो।' **कर** का अर्थ 'कर' ही है। वर्तमान काल में मध्यम पुरुष एकवचन के कारण **छुख** 8.1.19 सूत्र से **आन** आगम। 8.1.33 से 35 तक के द्वारा **अस, अक** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से खकार का हकार। 1.1.3 सूत्र द्वारा सन्धि।

व्याख्या–

8.1.34 सूत्र द्वारा स्पष्ट किया गया है, कि **ह** मध्यम पुरुष एकवचन का सार्वनामिक प्रत्यय है। यह अनिवार्य प्रत्यय है। इस के साथ संयुक्त होने वाला **स** अथवा **ख** निमित्तार्थ प्रत्यय हैं। क्रिया में निहित कार्य किस के निमित्त है, इस का बोध इन्हीं प्रत्ययों के द्वारा संभव है। अन्य पुरुष निमित्तार्थ प्रत्यय संयुक्त होने पर अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय **ख**, **ह** में रूपांतरित होता है।

॥ स्वरादल्लोपः ॥ ३९ ॥

प्रत्ययस्वरात्परस्य अकारस्य लोपो भवति ॥ करान् छुस्। तस्मै करोति ॥ करान् छिस्। तस्मै कुर्वन्ति ॥ करान् छिवस्। तस्मै कुरुथ ॥ करान् छिवख्। तेभ्यः कुरुथ ॥ प्रथमयोर्हकारस्य लोपे कृते अनेन अकारलोपः। शेषं स्पष्टम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.39

स्वर के पश्चात संयुक्त होने वाले प्रत्यय के अकार का लोप होता है। **करान छुस** '(वह) उस के निमित्त करता है'। **करान छिस** '(वे) उस के निमित्त करते हैं'। **करान छिवोस** 'आप उस के निमित्त करते हैं'। **करान छिवोख** 'आप उनके निमित्त करते हैं'। प्रथम के (छुह) हकार का लोप तथा प्रस्तुत सूत्र से अकार का लोप। शेष स्पष्ट है।

व्याख्या–

8.1.33 सूत्र की व्याख्या में इस तथ्य का उल्लेख है, कि **स** सार्वनामिक प्रत्यय दो उत्तरदायित्व निभाता है। प्रस्तुत उदाहरणों में **स** प्रत्यय निमित्तार्थ का बोध कराता है। यह उत्तम पुरुष का अनिवार्य प्रत्यय नहीं है, जिस का उल्लेख 8.1.33 और 34 सूत्रों में है। ग्रन्थकार इन सभी प्रत्ययों के पूर्व में **अ** की संकल्पना करते हैं। प्रस्तुत सूत्रों में उसी **अ** के लोप का कथन है।

॥ त्वच्छब्देनाय् ॥ ४० ॥

युष्मच्छब्दैकवचननियतेन त्वच्छब्देन सह क्रियासंबन्धे सति क्रियायाः परः अय् प्रत्ययो भवति सर्वासु विभक्तिषु ॥ करान् छुय्। तुभ्यं करोति ॥ करान् छिय्. । तुभ्यं कुर्वन्ति ॥ करान् छुसथ्.। तुभ्यं करोमि ॥ करान् छिय् । तुभ्यं कुर्मः ॥ साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.40

मध्यम पुरुष एकवचन हितार्थ क्रिया के साथ सभी विभक्तियों में **अय** प्रत्यय संयुक्त होता है। **करान छुय** '(वह) तेरे निमित्त करता है'। **करान छिय** '(वे) तेरे निमित्त करते हैं'। **करान छुसथ** 'मैं तुझे करता हूँ' **करान छिय** '(हम) तुझे करते हैं'। सिद्धि पूर्ववत।

व्याख्या–

8.1.33 सूत्र की व्याख्या में उल्लेख है, कि **य** मध्यम पुरुष एकवचन का निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्यय है। प्रस्तुत सूत्र में इसी प्रत्यय को स्पष्ट किया गया है। **करान छिय** वाक्य के लिए स्पष्टीकरण में दो अर्थ दिए गए हैं। पहला 'वे तेरे निमित्त करते हैं' और दूसरा '(हम) तुझे करते हैं'। कारण यह है, कि अन्य पुरुष बहुवचन और उत्तम पुरुष बहुवचन का अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय शून्य है। इसलिए दोनों स्थितियों में सहायक क्रिया का रूप **छिय** ही रहता है, और वाक्य में द्वयार्थकता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

॥ युष्मदा ऽवः ॥ ४१ ॥

युष्मच्छब्देन क्रियासंबन्धे सति क्रियायाः परः सर्वत्र अव प्रत्ययो भवति ॥ करान् छुव । वः करोति ॥ करान् छिव । वः कुर्वन्ति ॥ करान् छुसव । वः करोमि ॥ करान् छिव । वः कुर्मः ॥ क्वचित्संबोधनवत्प्रोक्तौ प्रत्ययौ भवत इति ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.41

मध्यम पुरुष हितार्थ क्रिया के साथ **अव** प्रत्यय संयुक्त होता है। **करान**

छुवु 'वह आप के निमित्त करता है'। **करान छिव** 'वे आप के निमित्त करते हैं।' **करान छुसवु** 'मैं आप के निमित्त करता हूँ।' **करान छिवु** 'हम आप के निमित्त करते हैं।' कभी कभी यह प्रत्यय सम्बोधनवत भी प्रयुक्त होते हैं।
व्याख्या–

मध्यम पुरुष बहुवचन के निमित्त, क्रिया में निहित कार्य करने की स्थिति में सहायक क्रिया के साथ वु प्रत्यय संयुक्त होता है। **बु छुसवु फिलिम वुछान** 'मैं आप के निमित्त फिल्म देख रहा हूँ'। यदि अन्य पुरुष बहुवचन के निमित्त कार्य हो रहा हो, तो वाक्य होगा **बु छुसख फिलिम वुछान'** 'मैं उन के निमित्त फिल्म देख रहा हूँ।'

॥ मच्छन्देनाऽम् ॥ ४२ ॥

अस्मच्छब्दैकत्वनियतमयोगेण मच्छन्देन सह संबन्धे सति क्रियापरः अम् प्रत्ययः स्यात् ॥ करान् छुम् । मां [वा] मे करोति ॥ करान् छिम् । मां [वा] मे कुर्वन्ति ॥ करान् छुहम् । मे करोषि ॥ करान् छिवम् । मां [वा] मे कुरुथ । साधनमुक्तवत् ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.1.42**

उत्तम पुरुष एकवचन हितार्थ की स्थिति में क्रिया के साथ **अम** प्रत्यय होता है। **करान छुम** 'वह मेरे निमित्त करता है'। **करान छिम** 'वे मेरे निमित्त करते हैं'। सिद्धि पूर्ववत।
व्याख्या–

उत्तम पुरुष एकवचन का निमित्तार्थ प्रत्यय **म** है। अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय के बाद **म** प्रत्यय संयुक्त होने से क्रिया में निहित कार्य उत्तम पुरुष एकवचन के लिए सिद्ध होता है। अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय शून्य होने की स्थिति में **म** भी अन्य निमित्तार्थ प्रत्ययों की तरह सीधे ही सहायक क्रिया के साथ संयुक्त हो जाता है।

॥ कर्मण्यस् भूते ॥ ४३ ॥

मच्छन्दे कर्मणि सति अतीतकाले क्रियायाः परः अस् प्रत्ययः स्यात् ॥ कर्योनस् । तेनाहं चक्रे ॥ कर्योथस् । त्वयाहं चक्रे ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.1.43**

भूतकाल में उत्तम पुरुष कर्म की स्थिति में क्रिया के साथ **अस**

प्रत्यय संयुक्त होता है। **कर्योनस** 'उसने मुझे किया (तो) था'। **कर्योथस** 'तूने मुझे किया (तो) था'।

व्याख्या–

स्पष्टीकरण के उदाहरणों के संदर्भ में विस्तृत वाक्य इस प्रकार होंगे। **तँम्य कौरनस बु परेशान** 'उस ने मुझे परेशान किया'। **च़े कौरथस बु परेशान** 'तूने मुझे परेशान किया'। अतिरिक्त उदाहरण– **तँम्य बुछनस बु** 'उस ने मुझे देखा'। **च़े वुछथस बु** 'तुम ने मुझे देखा'। उदाहरणों में क्रिया के साथ संयुक्त होने वाले सार्वनामिक प्रत्यय न, थ और स अनिवार्य प्रत्यय हैं। **न** और **थ** कर्ता संदर्भित और **स** कर्म संदर्भित हैं। ये प्रत्यय निमित्तार्थ नहीं हैं। पूर्व सूत्र का **म** प्रत्यय निमित्तार्थ प्रत्यय है। **वुछनस** पद सम्पूर्ण अर्थ सम्प्रेषित करता है, 'उस ने मुझे देखा'। इसी प्रकार **वुछथस** का अर्थ है 'तूने मुझे देखा।'

8.1.36 सूत्र की व्याख्या में उल्लेख है कि **कर्योनख** वाक्य में हेतु की सम्भावना निहित है। **कौरनख** रूप अधिक उपयुक्त है। इसी प्रकार यहाँ भी **कर्योनस** और **कर्योथस** के स्थान पर **कौरनस** व **कौरथस** अधिक उपयुक्त है।

॥ बहुत्वे ऽस्मत्प्रयोगसंबन्ध एव च ॥ ४४ ॥

अस्मच्छब्देन क्रियासंबन्धे सति क्रियायाः परः पूर्वं वा अस्मच्छब्दानेकत्वप्रयोग एव प्रयोज्यः ॥ करान् छुह् अस्य । नः करोति ॥ करान् छिह् अस्य । नः कुर्वन्ति ॥ अस्य करान् छुख् । नः करोषि ॥ अस्य करान् छिव । नः कुरुथ ॥ एवं स्त्रीलिङ्गनियतप्रत्ययेषु च स्वच्छन्दादिसंबन्धप्रत्यया अवगन्तव्याः । तेभ्यश्च कामप्रवेदनतदभावादिप्रत्ययाश्च स्वयमेवावधार्याः । विस्तृतिभयान्नोदाहृताः ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.1.44**

उत्तम पुरुष बहुवचन शब्द क्रिया के पूर्व अथवा पश्च में प्रयुक्त हो सकता है। **करान छु असि** '(वह) हम को करता है'। **करान छि असि** '(वे) हम को करते हैं।' **असि करान छुख** '(तू) हम को करता है'। **असि करान छिव** 'आप हम को करते हैं'। स्त्रीलिंग नियमित प्रत्ययों की संयुक्ति भी अन्य पुरुष के सम्बन्ध में इसी प्रकार समझनी चाहिए। काम प्रवेदन भाव आदि के प्रत्यय भी स्वयं अवधार्य हैं। अधिक विस्तार न हो इसलिए उदाहरण नहीं दिए जा रहे हैं।

व्याख्या–

सूत्र में उत्तम पुरुष बहुवचन सर्वनाम रूप **असि** का प्रयोग वर्णित है। ये

व्याख्या–

तंग होने के अर्थ में **यिवान** का प्रयोग अकर्तृवाची नहीं है, परन्तु 'ले जाने

विकारी रूप है। अविकारी रूप है **अस्य** 'हम'। **असि** कर्मकारक रूप है। उत्तम पुरुष बहुवचन का कर्म संदर्भित प्रत्यय शून्य है, इसलिए सहायक क्रिया **छु** के साथ केवल कर्ता संबन्धित प्रत्यय **ख** (मध्यम पुरुष एकवचन) और **इव** (मध्यम पुरुष बहुवचन) ही संयुक्त हैं।

॥ च़रफ़्वशफ़ुह्मर्च़्वुच़फिच़ां नित्यं संबन्धप्रत्ययाः ॥ ४५ ॥

च़र अन्तःकोपे। फ़्वश फ़ुह अमर्षे। मर्च़ अन्तःकोपे। वुच़ दग्धीभवने। फिच़ विस्मरणे। एषां प्रोक्तसंबन्धप्रत्यया नित्यं भवन्ति ॥ च़रान्' छ्यस्। [। अन्तःकोपोऽस्य भवति]॥ फ़्वशान् छ्यस्। फ़ुहान् छ्यस् [। असहनमस्यास्ति]॥ मर्च़ान् छ्यस् [। अन्तः कोपोऽस्य भवति]॥ वुच़ान् छ्यस् [। अन्तर्दाहो भवत्यस्य]॥ फिच़ान् छ्यस् [। विस्मृतिर्भवत्यस्य]॥ साधनं सुगमम्। एषां धातुपाठे नित्यस्त्रीलिङ्गकथनात्स्त्रीलिङ्गप्रत्यय एव ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.45

च़र 'गुस्से हो'। **फ्वशफुह** 'नाराज़गी'। **मर्च़** 'गुस्से हो'। **वुच़** 'विदग्ध हो'। **फिच़** 'भूल'। इन के साथ प्रोक्त संबन्ध प्रत्यय नित्य अवस्थित रहते हैं। **च़रान छस** 'उस को गुस्सा (आ रहा) है। **फ्वशान छस, फुहान छस** 'उस को नाराज़गी (हो रही है)'। **मर्च़ान छस** 'उस को गुस्सा (आ रहा) है'। **वुच़ान छस** 'उस को विदग्धता (हो रही) है'। **फिच़ान छस** 'उस को भूल हो रही है'। सिद्धि सुगम है। धातु पाठ की दृष्टि से नित्य स्त्रीलिंग कथन के कारण स्त्रीलिंग प्रत्यय संयुक्त हुआ है।

व्याख्या–

उक्त **च़र** आदि क्रिया रूपों के साथ सहायक क्रिया स्त्रीलिंग प्रत्यय युक्त, प्रयुक्त हुई है। स्पष्टीकरण में अन्य पुरुष एकवचन के उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। अन्य उदाहरण निम्नलिखित हैं। **च़रान छम** 'मुझे गुस्सा (आ रहा) है।' **च़रान छय** 'तुझे गुस्सा (आ रहा) है'। बहुवचन प्रत्यय भी इसी प्रकार संयुक्त हो सकते हैं।

यह ध्यान देने योग्य है, कि **च़र** आदि क्रिया रूपों का हिन्दी भाषान्तरण क्रियात्मक है। इन सभी वाक्यों में कर्ता विकारी रूप में प्रयुक्त होता है। अगला सूत्र इसी तथ्य को स्पष्ट करता है।

॥ षष्ठी कर्तरि सर्वत्र ॥ ४६ ॥

एषां धातूनां सर्वासु विभक्तिषु षष्ठी कर्तरि भवति॥ तमिस् च़रान् छ्यह्॥ एषां सर्वेषां यत्र कर्तरि प्रयुज्यमाने सति तत्र संबन्धिप्रत्ययानामनित्यता बोध्येति॥

अनुवाद— सूत्र 8.1.46

इन सभी धातु रूपों के साथ कर्ता षष्ठी विभक्ति युक्त होता है। **तमिस च़रान छे**। कर्ता प्रयुक्त होने की स्थिति में सर्वत्र संबन्ध प्रत्यय की अनित्यता समझनी चाहिए।

व्याख्या—

तमिस छि च़रान का संस्कृत अनुवाद कर्ता के साथ संबन्ध कारक विभक्ति युक्त ही संभव है। यथा— 'तस्य अन्तःकोपोऽस्ति'। संस्कृत प्रभाव के कारण ही ईश्वर कौल कर्ता के कर्म कारक रूप को संबन्धषष्ठी से अभिहित करते हैं। **तमिस च़रान छे** के स्थान पर **तमिस छे च़रान** 'उस को गुस्सा (आ रहा) है' उपयुक्त शब्दक्रम है। सूत्र में यह बात भी स्पष्ट है, कि सर्वनाम शब्द प्रयुक्त होने की स्थिति में सहायक क्रिया के साथ सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त नहीं हो सकता। अन्य उदाहरण— **मे छे च़रान** 'मुझे गुस्सा (आ रहा है)'। **च़े छे च़रान** 'तुझे गुस्सा (आ रहा) है'।

॥ गछो ऽपि योग्यार्थेत्र ॥ ४७ ॥

गछ् गतौ सामञ्जस्ये। इत्यस्य योग्यार्थविषये अत्र षष्ठी कर्तरि भवति॥ तमिस् गछान् छुइ् ज़ि परहा [। तस्याभीष्टमहं योग्यो ऽस्मि पठेयमिति]॥

अनुवाद— सूत्र 8.1.47

सामान्यतया **गछ़** का अर्थ है 'जाना'। योग्यार्थ अर्थ के विषय में कर्ता के साथ षष्ठी संयुक्त होती है। (पाद टिप्पणी — योग्यार्थ का आशय यहाँ पर चरितार्थ भी है।) **तमिस गछ़ान छु ज़ि परहों** 'उस का मन करता है कि पढ़ूँ'।

व्याख्या—

गछ़ धातु का प्रथम अर्थ है 'जा'। प्रस्तुत सूत्र में इस धातु के एक भिन्न पक्षार्थ की व्याख्या है। यहाँ **गछुन** 'इच्छा करना' के अर्थ में प्रयुक्त हो सकता है। स्पष्टीकरण के उदाहरण का विस्तृत रूप है— **तमिस छु मनस गछ़ान ज़ि परहों** 'उस का मन करता है, कि पढ़ूँ'। अन्य उदाहरण— **मे छु मनस गछ़ान ज़ि**

[४७। योग्यार्थे इत्यत्र अभीष्टार्थे ऽपि चरितार्थता।]

कम्प्यूटर हेछिहाँ 'मेरा मन करता है, कि कम्प्यूटर सीखूँ।'

॥ प्रथमैकानेकत्वे च ॥ ४८ ॥

तस्यैव धातोरत्र वर्तमानाविभक्तौ नित्यं प्रथमपुरुषस्य एकत्वबहुवचनप्रत्ययावेव भवतः न तु मध्यमपुरुषादयः । किं तु ते संबन्धिप्रत्ययैर्विविच्यन्ते ॥ गछान् छुस् । गछान् छुख् । गछान् छुंय् । गछान् छुव । गछान् छुम् । गछान् छुह् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.1.48

इस धातु के साथ वर्तमान काल की विभक्ति प्रथम पुरुष के एकवचन, बहुवचन दोनों वचनों में नित्य संयुक्त होती है। मध्यम पुरुष आदि में संबन्ध प्रत्यय विवेचित है। **गछ़ान छुस, गछ़ान छुख, गछ़ान छुय, गछ़ान छुवु, गछ़ान छुम, गछ़ान छु।**

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। **गछ़** के लक्ष्यार्थ अथवा पक्षार्थ की विवेचना प्रस्तुत की गई है। उदाहरणों के आधार पर प्रथम पुरुष एकवचन, बहुवचन और मध्यम आदि पुरुषों के सार्वनामिक प्रत्ययों में नित्यता और अनित्यता का भेद नहीं है। स्पष्टीकरण में दिए गए उदाहरणों का विस्तृत रूप निम्नांकित है— **मनस छुस गछ़ान** 'उस का मन करता है'। **मनस छुख गछ़ान** 'उन का मन करता है' **मनस छुय गछ़ान** 'तेरा मन करता है' **मनस छुव गछ़ान** 'आप का मन करता है' **मनस छुम गछ़ान** 'मेरा मन करता है' **मनस छु गछ़ान** '(हमारा) मन करता है।'

इन वाक्यों में यदि कर्ता का प्रयोग भी किया जाए तो देख सकते हैं, कि कर्ता विकारी रूप में ही होगा। इसीलिए स्पष्टीकरण में कहा गया है कि 'सम्बंध प्रत्यय विवेचित है।' 8.1.46 सूत्र में स्पष्ट किया गया है, कि संबंध कारक से अभिप्राय विकारी रूप ही है यथा— **तमिस छु मनस गछ़ान** 'उस का मन करता है' **तमिस** 'उस' का विकारी रूप है। अविकारी रूप **सु** 'वह' है। यह भी ध्यान देने योग्य है, कि सर्वनाम शब्द प्रयोग होने की स्थिति में **छु** के साथ सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त नहीं होता।

॥ सर्वत्रानः सकर्मकेभ्यः कर्मकर्तरि ॥ ४९ ॥

सर्वत्र सर्वेषु कालेषु सकर्मकेभ्यो धातुभ्यः परः कर्मकर्तरि अन प्रत्ययो भवति ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.1.49**

कर्म का कर्तरि प्रयोग होने की स्थिति में सकर्मक धातु के तीनों कालों में सर्वत्र **अन** प्रत्यय संयुक्त होता है।

व्याख्या—

कर्म का कर्तरि प्रयोग कर्तृवाच्य मे नहीं अपितु अकर्तृवाच्य में संभव है। अकर्तृवाच्य संरचनाओं में युन 'आना' धातु का प्रयोग अनिवार्य है। अधिकांश भारतीय भाषाओं में **गछुन** 'जाना' क्रिया के द्वारा अकतृवाच्यकता का बोध कराया जाता है। अकर्तृवाच्य बोधक **युन** प्रयुक्त होने पर मूल धातु के साथ (अन) **नु** संयुक्त होता है। यह सर्वत्र तीनों कालों में सिद्ध है। यथा— **कथ छि वननु यिवान** 'कहानी कही जाती है/जा रही है।' आगामी सूत्र में भी इस प्रक्रिया की व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

॥ पूर्वे परे वा यिधातुरूपतः ॥ ५० ॥

स अनप्रत्यययुक्तो धातुः पूर्वे वा परे यि आगमने इत्यस्य धातोः स्वस्वकालीनप्रयोगान्तर्वर्ति यद्रूपं स्यात्तस्मात्प्रयोज्यः ततः कर्मकर्तृप्रयोगा भवन्ति॥ रनन यिवान् छुह् बत। भक्तं पच्यते॥ बत छुह् रनन यिवान्। भक्तं पच्यते॥ पानय् छुह् यिवान् करन। स्वयं क्रियते। अर्थात् कृतं भवति॥ रन पाके पूर्वसूत्रेण (४९) अन प्रत्ययः। यि धातोः यिवान् छुह् इति रूपात्पूर्वं रनन इति प्रयुक्तः। अपरत्र वर्तमानापरस्वरूपे यिवान् इत्यस्मात्पूर्वं प्रयुक्तः। तृतीये तु परः॥

अनुवाद— **सूत्र 8.1.50**

कर्म के कर्तृ प्रयोग की स्थिति में **यि** का आगमन निर्दिष्ट काल रूप में होता है, तथा इस के पूर्व अथवा पश्च में (अन) **नु** प्रत्यय युक्त धातु अवस्थित होता है। **रननु यिवान छु बतु** 'पकाया जा रहा है भात'। **बतु छु रननु यिवान**, 'भात पकाया जा रहा है'। **पानय छु यिवान करनु** 'अपने आप किया जाता है, अर्थात हो गया' **रन** 'पका' के साथ (अन) **नु** (देखें पूर्व सूत्र)। **यि** धातु का रूप **यिवान छु रननु** के पूर्व प्रयुक्त है। दूसरा उदाहरण **यिवान** का वर्तमान काल रूप है, और धातु रूप इस से पूर्व प्रयुक्त है। तीसरे उदाहरण में धातुरूप पश्च में है।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र **यि** 'आ' के सन्दर्भ में **नु** युक्त धातु के स्थान का वर्णन करता है। काल की दृष्टि से **यिवान** के तीन रूप वर्तमान, भूत और भविष्य हैं— **यि, आव, यियि**। अंतिम दो रूप अन्य पुरुष एकवचन संबन्धी हैं।

॥ वा ऽकर्मकेभ्यः ॥ ५१ ॥

अकर्मकेभ्यो धातुभ्यः प्रोक्ता क्रिया वा विकल्पेन भवति । किंच विभक्तिप्रयोगा अपि स्वयं कर्मकर्तृप्रयोगा भवन्ति ॥ ज़ोतान् छुह् । वा । ज़ोतन यिवान् छुह् । दीप्यते ॥ दज़ान् छुह् । वा । दज़न यिवान् छुह् । दह्यते ॥ ज़ोत दीप्तौ । दज़ भस्मीभवने । शेषं पूर्ववत् ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.51

अकर्मक धातु रूपों में कही गई क्रिया **यि** के प्रयोग का विकल्प है, क्योंकि विभक्ति लगने से भी कर्म का कर्तृ प्रयोग सिद्ध है। **ज़ोतान छु** अथवा **ज़ोतनु यिवान छु** 'दीप्त हो रहा है'। **दज़ान छु** अथवा **दज़नु यिवान छु** 'प्रज्वलित हो रहा है'।

व्याख्या–

अकर्मक क्रिया की स्थिति में **यि** 'आना' अकर्तृवाचक क्रिया का प्रयोग वैकल्पिक बताया गया है। सामान्य स्थिति में कर्म की कर्तरि प्रयोग संरचना **यि** से मुक्त नहीं रहती यथा– **खाव छुनिथ छुनु पकनु यिवान** 'खड़ाऊँ पहन कर चला नहीं जाता'।

॥ बोज़ः कर्मकर्ता चाक्षुषज्ञान एव नित्यम् ॥५२॥

बोज़ निशामने इति धातोः कर्मकर्तृस्वरूपं नित्यं चाक्षुषज्ञान एव भवति न तु श्रवणज्ञाने ॥ बोज़न यिवान् छुह् । स्वयं दृष्टं भवति ॥ बोज़न आव् । दृष्टिमागतः ॥ बोज़न यियि । दृष्टिमागमिष्यति ॥ श्रवणज्ञाने तु । बोज़ान् छुह् । शृणोति । न तु दृश्यते ॥ बोज़नस् अन्दर् यिवान् छुह् । श्रवणमागच्छतीति कर्मकर्तृस्वरूपं सेत्स्यति ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.1.52

बोज़ धातु श्रवणज्ञान से संबद्ध है। इस का कर्मकर्तृ स्वरूप नित्य चक्षु ज्ञान सम्प्रेषित करता है, श्रवण ज्ञान नहीं। **बोज़नु यिवान छु** 'दिखाई देता है'। **बोज़नु आव** 'दिखाई दिया'। **बोज़नु यियि** 'दिखाई देगा'। श्रवण ज्ञान से संबद्ध वाक्य– **बोज़ान छु** '(वह) सुन रहा है'। यहाँ 'देखने' का अर्थ सम्प्रेषित नहीं है। **बोज़नस अन्दर यिवान छु** 'सुनने में आता है'। इस स्थिति में निश्चित रूप से कर्म कर्तृ स्वरूप है।

व्याख्या–

अकर्तृवाची **यि** के प्रयोग से **बोज़** धातु का अर्थ श्रवण शक्ति से हट कर

दृश्यशक्ति युक्त हो जाता है। **बोज़ुन** का अर्थ है 'सुनना', परन्तु **बोज़नु युन** का अर्थ है 'दिखाई देना'। **बोज़** धातु के साथ कर्ता अविकारी रूप में प्रयुक्त होता है। यथा– **बु छुस बोज़ान** 'मैं सुन रहा हूँ'। परन्तु **बोज़नु यिवान** के साथ कर्ता नित्य विकारी रूप में प्रयुक्त होता है। यथा– **मे छु चंदरम बोज़नु यिवान** 'मुझे चांद दिखाई दे रहा है'। श्रवण ज्ञान के रूप में भी **बोज़** धातु का कर्म कतृ प्रयोग संभव है। यथा– **बोज़नस मंज़ आव कि पगाह वातन डून्य** 'सुनने में आया (है) कि कल अखरोट (यहाँ) पहुँचेंगे।

॥ गरः काठिन्ये च ॥ ५३ ॥

गर घट्टने इत्यस्य कर्मकर्तृस्वरूपं काठिन्ये भवति चशब्दात्स्वार्थे च ॥ गरन यिवान् छुह् । कठिनीभवति । घटितं च भवति ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.53

गर 'गढ़'। कर्म कतृ स्वरूप में इस का अर्थ जिद्दी होना तो है, परन्तु इस का मूल अर्थ भी सम्प्रेषित हो सकता है। **गरनु यिवान छु** 'जिद्दी हो जाता है/गढ़ा जाता है।'

व्याख्या–

जिद्दी होने के अर्थ में **यिवान** का प्रयोग अकर्तृवाची नहीं है। परन्तु गढ़ने के अर्थ में यह प्रयोग अकर्तृवाची है। यथा– **प्यनसलु छु गरनु यिवान** 'पेंसिल गढ़ी जा रही है'। आगामी सूत्रों में भी इसी प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत हैं।

॥ डेषो ऽनो लोपो द्रैंठादेशश्च ॥ ५४ ॥

डेष प्रेक्षणे इत्यस्मात् अन प्रत्ययस्य लोपो भवति डेषश्च द्रैंठ् आदेशो भवति ॥ द्रैंठ् यिवान् छुह् । दृष्टिमायाति ॥ डेषन यिवान् छुह् । इति न साधुशब्दः ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.54

डेश 'देख' इस के **अन** प्रत्यय का लोप होता है, और **डेश** का **द्रैंठ** ओदश सिद्ध है। **द्रैंठ यिवान छु** 'देखा जाता है/दिखाई देता है'। **डेशनु यिवान छु** 'यह मान्य वाक्य नहीं है।'

व्याख्या–

द्रैंठ क्रिया रूप नहीं है। **यि** धातु के प्रयोग से यह क्रिया पद में परिणित होता है। व्युत्पन्न क्रिया पद के साथ कर्ता नित्य विकारी रूप में ही रहता है। यथा– **हुमिस छि ज़ॉविज कॉम द्रैंठ यिवान** 'उस को बारीक काम नज़र आता है।'

॥ नेश्चाश्लये ऽपि ॥ ५५ ॥

नि हरणे इत्यस्य कर्मकर्ता चाश्लये भवति अपिशब्दात्स्वार्थे ऽपि ॥ निन यिवान् छुह्। चश्लो भवति। वा। हृतो भवति ॥ अत्र स्वरादल्लोप (सू० ३९) इत्यकारलोपः ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.55

नि 'ले जा' धातु का कर्मकर्ता अर्थ 'तंग होना' सम्प्रेषित है। मूल अर्थ भी यथावत संभव है। **निनु यिवान छु** 'तंग हो रहा है/ले जाया जाता है। सूत्र 8.1.39 से अकार लोप।

व्याख्या–

तंग होने के अर्थ में **यिवान** का प्रयोग अकर्तृवाची नहीं है, परन्तु 'ले जाने के' अर्थ में **यिवान** अकर्तृवाची हैं। यथा– **माल छु निनु यिवान** 'माल ले जाया जा रहा है'।

॥ हेर्बन्धने ऽपि ॥ ५६ ॥

हि ग्रहणादिषु इत्यस्य कर्मकर्ता व्यवहारबन्धे भवति अपिशब्दात्स्वार्थे ऽपि ॥ ह्यन यिवान् छुह्। बद्धो भवति। क्रीतश्च भवति ॥ धातोरकारागमे (८।२।११ सूत्रेण) कृते। अकारादकारलोपः (सू० ३९) ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.56

हे 'खरीद' धातु का कर्म कर्ता अर्थ 'अस्त व्यस्त' होना सम्प्रेषित है। मूल अर्थ भी यथावत संभव है। **ह्यनु यिवान छु** 'अस्त व्यस्त होता है/खरीदा जाता है'। 8.1.39 सूत्र से अकार लोप।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में भी अस्त–व्यस्तता के अर्थ में **यिवान** का प्रयोग अकर्तृवाची नहीं है। खरीदने के अर्थ में निश्चित रूप से यह प्रयोग अकर्तृवाची है। यथा– **वुन्यक्यनस छु दानि ह्यनु यिवान** 'इस समय धान खरीदा जा रहा है।'

॥ भावशब्देभ्यो हेर्भूतप्रयोगा वर्तमानबोधकाः ॥ ५७ ॥

भावशब्देभ्यः पूर्वे परे वा हि ग्रहणे इत्यस्य धातोर्भूतप्रयोगा वर्तमानकालस्य बोधका भवन्ति ॥ करुन् ह्यतुन्। कर्तुं प्रवृत्तः ॥ ह्यतुख् परुन्। पठितुं प्रवृत्ताः ॥ संप्रतिकाले करोति पठन्ति चेत्यर्थतो ऽवगम्यते ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.57

भाव शब्दों के पूर्व अथवा पश्च **है** 'खरीद' का भूतकालिक धातुरूप प्रयुक्त होने पर भी वर्तमान काल का ही बोध होता है। **करुन हयोतुन** 'वह करने लगा है'। **हयोतुख परुन** 'वे पढ़ने लगे हैं'। सम्प्रति काल में करते अथवा पढ़ते हैं, यही अर्थ ग्रहण होता है।

व्याख्या–

है का मूल अर्थ है 'खरीद' स्पष्टीकरण के वाक्यों में इस का पक्षार्थ 'लग' सम्प्रेषित होता है। हिन्दी में **लग** धातु का प्रयोग एक से अधिक अर्थो में सम्भव है। यहाँ पर 'लग' का प्रयोग 'प्रारंभ करने' के अर्थ में है। **है** का भूतकालिक रूप **ह्योत** है। यथा– **तॅम्य ह्योत हाख** 'उस ने साग खरीदा'। मुख्य क्रिया के साथ **है** भूतकालिक होने पर भी पक्षार्थ में वर्तमान काल का बोध कराता है। यथा– **मैं ह्योत ड्रामा वुछुन/ड्राम ह्योतुम वुछुन** 'मैं ड्रामा देखने लगा हूँ।' वास्तव में हिन्दी में भी यही व्यवस्था है। 'लगा' भूतकाल का पूर्ण पक्षीय रूप है, परन्तु वाक्य वर्तमान कालिक है।

॥ ज़ानो भविष्यन्त्याश्च ॥ ५८ ॥

ज़ान अवबोधने इत्यस्य धातोर्भविष्यन्तीप्रयोगा भावशब्देभ्यः पूर्वे वा परे प्रयुक्ता वर्तमानकालबोधका भवन्ति। चशब्दात्केवलाः प्रयोगाश्चेति ॥ करुन् ज़ानि। करणं जानाति ॥ परुन् ज़ानि। पठनं जानाति ॥ लेखुन् ज़ानन्। लेखनं जानन्ति ॥ ज़ेनुन् ज़ानन्। अर्जनं जानन्ति ॥ चशब्दादन्यतो ऽपि च। स्यठाह् ज़ानि। बहु जानाति ॥ वियद्या ज़ानि। विद्यां जानाति॥ इत्थमेवातीव-प्रयोगा भविष्यदर्थे क्वचिद्व्यवह्रियन्ते। यथा। तमिस् ल्यूखुथ् सोन्नु नमस्कार्। तस्मै नो नमस्कारो लेख्यः ॥ अत्र ल्यूखुथ् इति भूतकालप्रयोगो भविष्यदर्थे ॥

अनुवाद– सूत्र 8.1.58

भाव शब्दों के पूर्व अथवा पश्च **ज़ान** 'जान' का भविष्यकालिक धातु रूप प्रयुक्त होने पर भी वर्तमान काल का ही बोध होता है। 'च' शब्द से अभिप्राय है (क्रिया के स्थान पर) अन्य शब्दों का प्रयोग। **करुन ज़ानि** '(वह) करना जानता है', **परुन ज़ानि** 'वह पढ़न जानता है'। **लेखुन ज़ानन** 'वे लिखना जानते हैं'। **ज़ेनुन ज़ानन** 'वे जीतना जानते हैं'। अन्य शब्दों के उदाहरण– **स्यठा ज़ानि** '(वह) बहुत जानता है'। **व्यद्या ज़ानि** '(वह) विद्या जानता है।' इसी प्रकार भूतकालिक प्रयोग कभी कभी भविष्यत काल का अर्थ संप्रेषित करता है। यथा– **तमिस ल्यूखुथ सोन नमस्कार** 'उस को हमारा नमस्कार लिखना'। यहाँ पर **ल्यूखुथ** भूतकालिक रूप है, परंतु भविष्यत्काल का अर्थ संप्रेषित करता है।

व्याख्या–

ज़ानि 'जानेगा' भविष्यत्कालिक प्रयोग है। यथा' **हु छुनु उपमा बनावुन ज़ानान, मगर पगाह ज़ानि** 'वह उपमा बनाना नहीं जानता है, मगर कल जानेगा' मुख्य क्रिया अथवा अन्य शब्द के साथ **ज़ानि** का यह भविष्यत्रूप वाक्य में वर्तमान कालिक अर्थ ही संप्रेषित करता है। स्पष्टीकरण में अनेक उदाहरण प्रस्तुत हैं।

हिन्दी में भी कभी कभी भूतकालिक प्रयोग भविष्यत का अर्थ संप्रेषित करता है। यथा– व्यक्ति को बुलाए जाने पर उस का प्रतिवाद हो सकता है 'अभी आया'। 'आया' भूतकालिक है, परन्तु वाक्य भविष्यत काल का अर्थ संप्रेषित करता है, क्योंकि आने का कार्य आगे आने वाले समय में किया जाएगा।

॥ पाथो नित्यम् ॥ ५९ ॥

पाथ सद्भावे इत्यस्य भविष्यन्तीप्रयोगा नित्यं वर्तमानार्थे भवन्ति तस्य वर्तमानप्रयोगदर्शनाभावात्॥ पाथि। सन्नस्ति॥ पाथन्। सन्तः सन्ति॥ पाथख् सन्नसि॥ 'पांथिव्। सन्तः स्थ॥ पाथ। सन्नस्मि॥ पाथव्। सन्तः स्मः॥ किं चास्य धातोरतीतप्रयोगादर्शनाच्चापूर्णभूतप्रयोगा अतीते भवन्ति॥ पाथिहे [। आसीत्]॥ पाथहान् [। आसन्]॥ पाथहाख् [। आसीः]॥ पांथिहीव् [। आस्त]॥ इत्यादि। तथा पाथिहेहय्। इत्यादयश्च साधवो भवन्ति। तथा चास्य धातोः कृदन्तस्वरूपाणि च न सेत्स्यन्तीति बोध्यम्॥

अनुवाद– **सूत्र 8.1.59**

पाथ 'सद्भाव' का भविष्यत्प्रयोग नित्य वर्तमान अर्थ में होता है, क्योंकि इस का वर्तमान प्रयोग विद्यमान नहीं है। **पाथि** 'सन्त है' **पाथन** 'सन्त हैं' **पाथख** '(तू) सन्त है'। **पॉथिव** 'सन्त हैं' **पाथ** 'सन्त हूँ' **पाथव** '(हम) सन्त हैं।' इस धातु का भूतकालिक रूप नहीं है, अतः अपूर्णभूत ही भूतकाल है। **पाथिहे** 'था' **पाथहॉन** 'थे' **पाथहॉख** '(तू) था। **पॉथिहीव** '(आप)' थे। इत्यादि। तथा– **पाथिहेहय** आदि सिद्ध है। इस धातु का कृदन्तीय रूप भी नहीं है।

व्याख्या–

पाथ शब्द का प्रयोग भाषा में वर्तमान नहीं है। इसलिए इस सन्दर्भ में व्याख्या संभव नहीं है।

इति

शारदा क्षेत्र के भाषाव्याकरण कश्मीरशब्दामृतं की

आख्यात प्रक्रिया का वर्तमान पाद - प्रथम 8.1

आख्यात प्रक्रिया-8
भविष्यत्पाद 8.2

पाद के प्रारंभ में ही ग्रन्थकार ने स्पष्ट किया है, कि क्रिया में निहित कार्य यदि प्रारंभ नहीं हुआ है, तो वह भविष्यत्काल का प्रसंग है, अर्थात यह कार्य भविष्य में प्रारंभ हो सकता है। ग्रन्थकार ने इस पाद में कार्य की संभावना, शंका तथा निश्चितता का उल्लेख किया है। सूत्रों में अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय तथा निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्यय दोनों वर्णित हैं। इन प्रत्ययों की प्रयोजनपरकता भी स्पष्ट की गई है। ग्रंथकार ने निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्यय को सम्बन्ध प्रत्यय की संज्ञा दी है। इस पाद में 35 सूत्र वर्णित हैं।

॥ अनारब्धा क्रिया भविष्यत्कालः ॥ १ ॥

वर्तमानासन्नोत्तरकालादुत्तरः सर्वः कालः भविष्यत्कालसंज्ञो भवति। तत्कालस्य सर्वाः क्रिया अनारब्धा एव भवन्ति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.2.1

वर्तमान के उत्तर में स्थित सभी काल भविष्यत्काल कहे जाते हैं। इस काल की क्रिया का कार्य अभी प्रारंभ नहीं हुआ है।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र भविष्यत काल की परिभाषा स्वरूप अधिकार सूत्र है।

॥ विध्याशीर्भविष्यन्त्यपूर्णभूतार्थभेदाच्चतुर्विधः ॥ २ ॥

स भविष्यत्कालो विधिः, आशीः, भविष्यन्ती, अपूर्णभूतार्था नाम क्रियातिपत्तिः, इति भेदतश्चतुष्प्रकारो भवति। क्रियातिपत्तेरन्नापूर्णभूतार्थकथनादतीत्-काले ऽपि भवति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.2.2

विधि, आशी, भविष्यन्ती तथा अपूर्णभूतार्थी क्रियातिपत्ति भविष्यत्काल के

चार भेद हैं। क्रियातिपत्ति अपूर्णभूतार्थक होने के कारण अतीत काल में भी संभव है।

व्याख्या–

विधि के विभिन्न रूप तथा अपूर्णभूतार्थक क्रियातिपत्ति भविष्यत की व्यवस्था में सम्मिलित कर, ईश्वर कौल ने भविष्यत्काल के चार भेदों का उल्लेख किया है।

॥ आसन्नदूराभ्यां विधिर्द्विविधः ॥ ३ ॥

वर्तमानकालान्निकटकाल आसन्नविधिः दूरकालो दूरविधिरिति द्विविधो भवति। तत्र वक्तुरुत्तमपुरुषस्य स्वस्मिन्विधिनिषेधाभावाच्चत्वार एव प्रथमपुरुषैकत्वानेकत्वमध्यमैकत्वानेकत्वप्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते ॥

अनुवाद– सूत्र 8.2.3

वर्तमान काल के निकटस्थ काल का कार्य आसन्न विधि, तथा दूरस्थ काल का कार्य दूरविधि होते हैं। स्वयं वक्ता होने के कारण उत्तम पुरुष विधि का निषेध है। अतः अन्य पुरुष एकवचन बहुवचन तथा मध्यम पुरुष एकवचन बहुवचन चार प्रकार के प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं।

व्याख्या–

संभाव्यार्थी विधि को छोड़ कर अन्य विधियों में– उक्त चार प्रकार के प्रत्यय संयुक्त हो सकते हैं। संभाव्यार्थ विधि में मात्र अन्य पुरुष प्रत्यय की ही संभावना है। 8.2.5 सूत्र में उदाहरण उपलब्ध हैं।

॥ मुख्यगौणाभ्यां निकटविधिर्द्विधा ॥ ४ ॥

अवश्यं करणीयाज्ञा मुख्यंनिकटविधिः तदितरो गौणनिकटविधिरिति द्विप्रकारो भवति ॥

अनुवाद– सूत्र 8.2.4

अनिवार्य आज्ञा मुख्य निकट विधि तथा शेष निकट विधि गौण है। इस प्रकार निकट विधि दो प्रकार की है।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में आसन्न विधि अर्थात निकट विधि के दो भेदों का उल्लेख है।

॥ निकटविधौ इन् इन् हि इव् प्रत्ययाः ॥ ५ ॥

स्पष्टम् ॥ करिन् । करोतु ॥ करिन् तिम् । कुर्वन्तु ॥ कर् । कुरु ॥ करिव् । कुरुत ॥ हि प्रत्ययस्य इकार उच्चारणार्थः । व्यञ्जनान्ताद्धलोप (सू० ६) इति इकारस्य लोपः ॥

अनुवाद— सूत्र **8.2.5**

सूत्र स्पष्ट है। **करिन** '(वह) करे' **करिन तिम** '(वे) करे'। **कर** '(तू) कर'। **करिव** '(आप) कीजिए'। **हि** प्रत्यय के इकार मात्र का ही उच्चारण है। अगले सूत्र में हकार के लोप का वर्णन है।

व्याख्या—

इन प्रत्यय अन्य पुरुष की स्थिति में ही क्रिया के साथ संयुक्त हो सकता है। इस प्रत्यय में वचन के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं होता। यही प्रत्यय संभाव्यार्थ संप्रेषित करता है। शेष प्रत्यय आदेशात्मक विधि के हैं। जहाँ पर वचन, प्रत्यय को प्रभावित करता है। मात्र **इ** उच्चरित होने पर भविष्यत रूप सिद्ध है। **करि** '(वह) करेगा'।

॥ व्यञ्जनान्ताद्धलोपः ॥ ६ ॥

व्यञ्जनान्ताद्धातोर्हिप्रत्ययइकारस्य लोपो भवति ॥ कर् । कुरु ॥ कर करणे मध्यमैकत्वे हि इकार उच्चारणार्थः अनेन हकारलोपः । व्यञ्जनान्तात्किम् । दिह् । देहि ॥ निह् । हर ॥ दि दाने । नि हरणे । हि प्रत्ययः । इकार उच्चारणार्थः ॥

अनुवाद— सूत्र **8.2.6**

व्यंजनान्त धातुओं में **हि** प्रत्यय के हकार का लोप होता है। **कर** 'कर'। 'कर' के मध्यम पुरुष एकवचन की स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से हकार का लोप, इकार का उच्चारण मात्र। व्यंजनान्त क्यों? **दिह** 'दे' **निह** 'ले जा'। **दि** 'दे' **नि** 'ले'। **हि** प्रत्यय के इकार का उच्चारण।

व्याख्या—

भाषा में ह के लोप का अन्यत्र भी वर्णन है। **कर** धातु के साथ **हि** की संयुक्ति सिद्ध नहीं है। **दि** 'दे' **नि** 'ले जा' उदाहरण स्पष्ट है। ग्रंथकार ने ह सहित **दि** और **नि** धातु स्वीकार किए है। वर्तमान भाषा में इन दोनो धातुओं में हकार की कोई भूमिका नहीं है।

॥ ओदेदुपधाया ऊदीतौ ॥ ७ ॥

धातोरुपधाभूतस्य ओकारस्य एकारस्य च क्रमेण ऊकारईकारौ भवतः ॥ रूज़िन् । तिष्ठतु ॥ तूळिन् । तोळयतु ॥ पूठिन् । पुष्यताम् ॥ रोज़ स्थितौ । तोळ तुळने । पोठ स्थूलीभवने । अनेन उपधाया ओकारस्य ऊकारः । नीरिन् । निर्गच्छतु ॥ शींकिव् । शङ्कन्ताम् ॥ पीडिन् । निष्पीड्यताम् ॥ नेर निर्गमने । शेंक शङ्कायाम् । पेड निर्यासे । अनेन उपधाया एकारस्य ईकारः ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.2.7**

यदि धातु की उपधा में ओकार अथवा एकार हो, तो उस का क्रम से ऊकार अथवा ईकार हो जाता है। **रुज़िन** '(वह) रहे'। **तूलिन** '(वह) तोले'। **पूठिन** '(वह) पुष्ट हो'। **रोज़** '(तू) रह'। **तोल** '(तू) तोल'। **पोठ** '(तू) पुष्ठ हो'। उपधा के ओकार का रूपांतरण ऊकार में। **नीरिन** '(वह) निकले'। **शींकिव** '(आप) शंका करे'। **पीडिन** '(वह) रिसे'। **नेर** '(तू) निकल'। **शेंक** '(तू) शंका कर'। **पेड** '(तू) रिस'। उपधा के ऐकार का रूपांतरण ईकार में।

व्याख्या—

मध्यम पुरुष एकवचन का आदेशात्मक विधिरूप क्रिया का मूल रूप स्वीकार किया गया है। इसी रूप के आधार पर संभाव्यार्थी विधि के रूप भी सिद्ध किए गए हैं। मूल रूप और व्युत्पन्न रूप निम्नांकित तालिका में उल्लिखित हैं।

ओकार का ऊकार		एकार का ईकार	
रोज़	रूज़िन	नेर	नीरिन
तोल	तूलिन	शेंक	शींकिव
पोठ	पूठिन	पेड	पीडिन

शींकिव को छोड़ कर शेष सभी व्युत्पन्न रूप संभाव्यार्थी विधि में हैं। **शींकिव** मध्यम पुरुष बहुवचन आदेशात्मक विधि का रूप है।

॥ न हौ ॥ ८ ॥

हि प्रत्यये परे उपधाया ओदेतोरूकारेकारौ न भवतः ॥ रोज़् । तिष्ठ ॥ तोळ् । तोळय ॥ नेर् । निर्गच्छ ॥ शेंक् । शङ्कस्व ॥ साधनं सुगमम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.2.8**

अंत में हि प्रत्यय होने की अवस्था में ओकार का ऊकार तथा एकार का ईकार नहीं होता। **रोज़** '(तू) रह'। **तोल** '(तू) तोल'। **नेर** '(तू) निकल'। **शेंक** '(तू) शंका कर'। सिद्धि सुगम है।

व्याख्या–

स्पष्टीकरण में पूर्व सूत्र के ही कुछ उदाहरण दोहराए गए है। **हि** प्रत्यय युक्त कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं है। भविष्यत्काल के रूपों में ओकार और एकार यथावत रहते हैं– **रोज़ि** '(वह) रहेगा', **तोलि** '(वह) तोलेगा', **नेरि** '(वह) निकलेगा', **शेंकि** '(वह) शंका करेगा'।

॥ च़रादीनामिन्प्रत्ययसंबन्धप्रत्ययैर्विधिः ॥ ९ ॥

च़र अन्तःकोपे इत्यादीनां धातूनां प्रथमपुरुषस्य इन् प्रत्ययेन तत्छब्दादि-संबन्धे विधीयमाने सति सर्वप्रत्ययानां योगो भवति स एवात्र विधिः ॥ च़ॅरि-नस् । च़ॅरिनख् । च़ॅरिनय् । च़ॅरिनव ॥ एवं शेषाणामपि ज्ञेयम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.2.9**

च़र 'क्रुध हो'। इत्यादि धातुओं के साथ प्रथम पुरुष इन प्रत्यय के पश्चात तत्शब्द संबन्धी सभी प्रत्यय संयुक्त हो सकते हैं। **च़ॅरिनस, च़ॅरिनख, च़ॅरिनय**। शेष रूप भी इसी प्रकार सिद्ध है।

व्याख्या–

च़र आदि धातु के साथ अन्य पुरुष **इन** प्रत्यय संयुक्त होने के उपरांत सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त हो सकते हैं। स्पष्टीकरण में **च़रिन** के साथ सर्वनामिक प्रत्ययों के उदाहरण प्रस्तुत हैं। **च़र** आदि धातुओं के अतिरिक्त ये प्रत्यय अन्य धातुओं के साथ भी संयुक्त हो सकते हैं। सकर्मक क्रिया **वुछ** 'देख' के साथ ये प्रत्यय देख सकते हैं **वुछिन** '(वह) देखे'। **वुछनय** '(वह) तुम्हारे निमित्त देखे'। **वुछनस** '(वह) उसके निमित्त देखे'। **वुछनम** '(वह) मेरे निमित्त देखे'।

॥ स्वरान्ताद्यागम इकारे ॥ १० ॥

स्वरान्ताद्धातोरिकारे परे यकारागमो भवति ॥ दियिव् । दद्य ॥ नियिव् । हरत ॥ दि दाने । नि हरणे । मध्यमानेकत्वे इव् प्रत्ययः अनेन यकारागमः ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.2.10**

इकार स्वरान्त धातुओं में यकारागम होता है। **दियिव** '(आप) दें'। **नियिव** '(आप) ले जाऐं'। **दि** 'दे' **नि** 'ले जा'। धातुओं के मध्यम पुरुष बहुवचन रूप के साथ **इव** प्रत्यय संयुक्त होता है। प्रस्तुत सूत्र से यकारागम होता है।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र श्रुति के रूप में **य** के आगम का वर्णन करता है। धातु के अन्तिम **इ** तथा **इव** प्रत्यय के आदि इकार के मध्य श्रुति रूप में **य** की अनिवार्यता सिद्ध है। ह्रस्व **ए** की स्थिति में भी यकारागम होता है। खे+य+इव→**खेयिव**, चे+य+इव→**चेयिव**।

॥ सर्वत्राकारागमो निंदियिवर्जितात् ॥ ११ ॥

स्वरान्तादातोः सर्वत्र सर्वासु विभक्तिषु अकारागमो भवति । नि हरणे। दि दाने । यि आगमने । एतान्वर्जयित्वा ॥ ह्यह् । क्रीणीहि ॥ ख्यह् । खाद॥ च्यह् । पिव ॥ हि क्रीणनग्रहणधारणेषु । खि खादने । चि पाने । मध्यमैकत्वे हि प्रत्ययः अनेनाकारागमः । इकारो ऽसवर्णे यो ऽपरलोप (सू० १।१०) इति यत्वम् । व्यञ्जनं परेण संधेयम् (सू० १।३)। निंदियिवर्जितात्किम्। निह्। हर ॥ दिह्। देहि ॥ यिह्। एहि ॥ साधितचरा एव ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.2.11**

स्वरान्त धातुओं की सभी विभक्तियों में अकारागम होता है, **नि** 'ले जा', **दि** 'दे' **यि** 'आ', इन धातुओं को छोड़ कर। **ह्यह** 'खरीद' **ख्यह** 'खा' **च्यह** 'पी'। **हि** 'खरीद, ग्रहण कर, धारण कर'। **खि** 'खा' **चि** 'पी'। मध्यम पुरुष एकवचन में **हि** प्रत्यय के मध्य प्रस्तुत सूत्र से अकारागम असवर्ण के परिवेष में इकार लोप नही, यत्व सिद्ध है 1.1.10 सूत्र। 1.1.3 से संधि।। **नि, दि, यि** को छोड़ कर। **निह्** 'ले जा' **दिह्** 'दे' **यिह्** 'आ'। पूर्व सिद्ध है।

व्याख्या–

मध्यम पुरुष एक वचन की स्थिति में **नि, दि** और **यि** यथावत व्यवहृत हैं, परन्तु स्पष्टीकरण के अन्य तीन धातु रूपों का वर्तमान उच्चारण हे 'खरीद' **खे** 'खा' **चे** 'पी' है।

॥ येर्व्लादेशो वा ॥ १२ ॥

यि आगमने इत्यस्य विधौ विषये व्ल आदेशो वा भवति ॥ व्लिन्। आयातु ॥ व्ल । एहि ॥ व्लिव् । एत ॥ साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.2.12**

यि 'आ' का विधि विषय में विकल्प से व्लादेश है। **वलिन्** '(वह) आए। **व्लु** 'आ'। **वलिव** 'आइए'। सिद्धि पूर्ववत्।

व्याख्या–

व्लु धातु का वर्तमान में विकल्प से **वलु** उच्चारण भी है। यह मध्यम पुरुष एकवचन की आदेशात्मक विधि का रूप है। सम्प्रेषण में **वलु** के साथ **यूर्य** 'यहाँ' शब्द का प्रयोग स्वाभाविक है। यथा– **वलु यूर्य** 'यहाँ आ'।

॥ बुव इनि यो वा ॥ १३ ॥

बुव उत्पत्तौ इत्यस्य इन्प्रत्यये परे वकारस्य यकारो वा भवति ॥ बुयिन्। भवतु ॥ पक्षे। बुविन् ॥ एवमाशीर्येन्प्रत्यये ऽपि ज्ञेयः ॥

अनुवाद– सूत्र 8.2.13

ब्वज 'उपज' इस के साथ इन प्रत्यय संयुक्त होने पर वकार अथवा यकार का मध्य में आगम होता है। **ब्वयिन** '(वह) उपजे'। विकल्प में **बविन** यह आशी विधि प्रत्यय है।

व्याख्या–

वर्तमान में **ब्वयिन** का सीमित प्रयोग है। **बौविन** उपज के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जिस का अधिकांश प्रयोग खेती के उत्पादन से संदर्भित है। मध्यम पुरुष एकवचन रूप आशीर्वाद स्वरूप प्रयुक्त हो सकता है। यथा– **चु बव** 'तू फले फूले'।

॥ गौणे प्रत्ययस्वरात्तः ॥ १४ ॥

गौणविधिरपि द्विविध एक उपेक्ष्याज्ञापनं द्वितीय आक्षेपतः कथनम्। तयोर्द्वयोरेव विध्योः प्रत्ययस्वरात्परस्तकारागमो भवति ॥ कॅरितन्। करोतु नाम ॥ कॅरितन्। कुर्वन्तु नाम ॥ कॅरितव्। कुरुत नाम ॥ कर करणे निकट विधौ इन इन् हि इव्प्रत्ययाः (सू० ५)। अनेन इकारात्परस्तकारः धातुस्वरस्य चाप्रसिद्धता विज्ञेया ॥ खॉरितन्। आरोहयतु नाम ॥ वॉल्तिन्। अवरोहयतु नाम। साधनं सुगमम् ॥

अनुवाद– सूत्र 8.2.14

गौण विधि दो प्रकार की है। एक उपेक्षा ज्ञापन की और दूसरी आक्षेप कथन की। इन दोनों विधियों में प्रत्यय स्वर के पश्चात तकारागम होता है। **कॅरितन** '(वह) करे तो'। **कॅरितन** '(वह) करे (उसे क्या होगा?)' **करितव** 'आप लोग कर लें तो'। **कर** 'कर'। निकट विधि में **इन, इन, हि, इव** प्रत्यय है। देखें 8.2.5। प्रस्तुत सूत्र से इकार के पश्चात तकार तथा धातु के स्वर की अप्रसिद्धता। **खॉरितन** '(वह) चढ़ाए तो'। **वॉल्यतन** '(वह) उतारे तो'। सिद्धि

सुगम है।

व्याख्या–

उपेक्षा ज्ञापन और आक्षेप कथन हिन्दी में प्रत्यय से नही, सम्पूर्ण वाक्य से ही व्यक्त हो सकता है। यथा– हाव 'दिखा' इस के साथ 'इतन' प्रत्यय संयुक्त होने पर उपेक्षा ज्ञापन अथवा आक्षेप कथन व्यक्त होता है। हॉव्यतन पद में ये दोनों संभावनाएँ विद्यमान हैं। हिन्दी में ऐसा अर्थ व्यक्त करने के लिए पूर्ण वाक्य की आवश्यकता है। यथा– "वह दिखा भी ले, उस से कुछ नहीं होगा।"।

॥ हौ धातोरेव ॥ १५ ॥

हि प्रत्यये परे धातोरेव तकारागमो भवति ॥ कर्त । कुरु नाम ॥ दित । देहि नाम ॥ कर करणे । दिदाने । हि प्रत्ययः व्यञ्जनान्ताद्धलोपः (सू० ९)। प्रत्ययलक्षणात् [पा० १।१।६२।] अनेन कर् दि इत्याभ्यां परस्तकारागमः ॥ कर्तन् । त्वं कुरु ॥ कर्यितोन् । त्वं कुरुत ॥

अनुवाद– सूत्र 8.2.15

हि प्रत्यय के पश्चात तकारागम होता है। करतु '(तू) कर (उपेक्षाभाव)' दितु (तू) दे (उपेक्षाभाव)'। कर 'कर', दि 'दे'। हि प्रत्यय के ह का लोप 8.2.5 सूत्र। प्रत्यय लक्षणात् (पाणिनी सूत्र 1.1.62)। कॅर्यतोन '(आप) कीजिए (उपेक्षाभाव)'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। पाणिनी के सूत्र 'प्रत्यय लोपे प्रत्ययलक्षणम् 1.1.62' के संदर्भ से ह के लोप की पुष्टि की गई है।

॥ व्यञ्जनान्तात्संबन्धप्रत्ययादेरुकारः ॥ १६ ॥

व्यञ्जनान्तं धातुस्वरूपं मध्यमैकत्व एव भवति तस्मात्तच्छन्दादिसंबन्धप्रत्यय-संबन्धिन आदिस्वरस्य उकारो भवति ॥ करुम् । तस्मै कुरु ॥ करुख् । तेभ्यः कुरु ॥ करुम् । मे कुरु ॥ व्यञ्जनान्तात्किम् । दिम् । तस्मै देहि ॥ निम् । तस्माद्धर ॥ दि दाने । नि हरणे । हि प्रत्ययः । इकार उच्चारणार्थः । ततः दिह् स्वरूपात् अम् प्रत्ययः । प्रत्ययेषु हलोपः सर्वत्र (सू० ४।१।३१) इति हलोपः । स्वरादल्लोप (सू० ८।१।१९) इति अकारलोपः । एवं । कर्तम् । तस्मै कुरु ॥ पर्तम् । तस्मै पठ ॥ अत्र तकारागमात्स्वरान्तत्वे सिद्धे मोक्षसूत्रावाप्तिर्न भवति ॥

अनुवाद—

सूत्र 8.2.16

व्यंजनांत धातु स्वरूप मध्यम पुरुष एकवचन ही होता है। उस शब्द के साथ संबन्ध प्रत्यय संयुक्त होने पर आदि स्वर का उकार होता है। **करुस** 'तू (उस के निमित्त) कर'। **करुख** 'तू (उन के निमित्त) कर'। **करुम** 'तू (मेरे निमित्त) कर'। व्यंजनांत क्यों? **दिस** 'उस को दे'। **निस** 'उस से ले'। **दि** 'दे' और **नि** 'ले जा' के **हि** प्रत्यय अर्थात केवल **इ** का उच्चारण है, इसलिए **अस** प्रत्यय। प्रत्ययों द्वारा **इ** का लोप सर्वत्र 4.1.131 सूत्र। स्वर का लोप 8.1.39 सूत्र। जैसे– **करतस** 'तू (उस के निमित्त) कर'। **परतस** 'तू (उस के निमित्त) पढ़'। यहाँ तकारागम के कारण स्वरान्त होने की अवस्था में भी प्रस्तुत सूत्र की अव्याप्ति है।

व्याख्या—

निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त होने पर प्रत्यय के आदि स्वर का उकार होता है। स्पष्टीकरण में उदाहरण प्रस्तुत हैं। **दि** और **नि** क्रियाओं में अर्थ की दृष्टि से कर्म ही निमित्त होता है। इसलिए निमित्तार्थ से भिन्न किसी भी अर्थ की संभावना नहीं है। क्रिया स्वयं ही निमित्तार्थक है।

॥ वकारात्सपूर्व ऊकारः ॥ १७ ॥

वकारात्परः संबन्धप्रत्ययादिस्वरः पूर्ववर्णेन सह ऊकारो भवति ॥ कर्यूस् । कुरुत तस्मै ॥ दिय्यूस् । तस्मै दत्त ॥ करिव् दियिव् इति स्वरूपाभ्यामस् प्रत्ययः अनेन वकारेण सह अकारस्य ऊकारः यत्वम् ॥

अनुवाद—

सूत्र 8.2.17

वकारान्त धातु से संयुक्त होने पर सम्बन्ध प्रत्यय के आदि स्वर का ऊकार होता है। **कर्यूस** 'आप (उस के निमित्त) कीजिए'। **दियूस** 'आप (उस को/उस के निमित्त) दीजिए'। **करिव**, और **दियिव** के साथ प्रत्यय संयुक्त होने पर प्रस्तुत सूत्र से अन्तिम वकार के कारण प्रत्यय के अकार का उकार तथा इकार का यत्व सिद्ध है।

व्याख्या—

करिव 'आप कीजिए' और **दियिव** 'आप दीजिए' पदों में अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त हैं, जो मध्यम पुरुष बहुवचन के द्योतक हैं। प्रस्तुत सूत्र इसी प्रत्यय के वकार का उल्लेख करता है। निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त होने पर वकार उकार में तथा इकर यत्व में रूपांतरित होता है। (ग्रन्थकार सार्वनामिक प्रत्ययों के आदि में अकार की संकल्पना करते हैं) अन्य उदाहरण— **वुछिव+स→वुछ्यूस** 'आप (उस के निमित्त) देखिए'। **थविव+स→थव्यूस** 'आप

उस के निमित्त रखिए'।

॥ तकाराद्वोकारः ॥ १८ ॥

तकारात्परयोस्तयोर्वकारअकारयोरोकारो भवति ॥ कॅरितोन्। तं कुरुत नाम ॥ कॅरितोस्। तस्य कुरुत नाम ॥ कॅरितोख् । तेषां कुरुत नाम ॥ कॅरितोम्। मे कुरुत नाम ॥ साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.2.18

तकार के परिवेश में वकार और अकार का ओकार होता है। **कॅरितोन** 'आप उस को कीजिए'। **कॅरितोस** 'आप (उस के निमित्त) कीजिए'। **कॅरितोख** 'आप (उन के निमित्त) कीजिए'। **कॅरितोम** 'आप (मेरे निमित्त) कीजिए'। सिद्धि पूर्ववत।

व्याख्या—

8.2.14 सूत्र में उपेक्षा ज्ञापन और कथन संबन्धी तकार की व्याख्या है। इस वर्ण के परिवेश में निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्यय के पूर्व ओकार का आगम होता है। स्पष्टीकरण में उदाहरण प्रस्तुत है। इन वाक्यों में भी उपेक्षा की अनुभूति है।

॥ मो निषेधार्थोऽत्रैव ॥ १९ ॥

निषेधार्थको मकारः अत्रैव विभक्तिविशेषे क्रियायाः पूर्वे वा परे प्रयोज्यो नान्यत्र ॥ शेषे विभक्तिसमुदाये माशब्द आशङ्कार्थो भवति विध्याशिषोरेव निषेधार्थको भवतीति ज्ञेयम् ॥ म करिन्। मा करातु ॥ म कर्। मा कुरु ॥ म करिव्। मा कुरुत। साधनं सुगमम् ॥ अत्रैव किम्। करान् छुन। न करोति ॥ कॊरुन् न। नाकरोत् ॥ कॅरिज़ि न। न कुर्यात् ॥ कॅरिज़्यन् न। त्वं न कुर्यात्॥ करि न। न करिष्यति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.2.19

निषेधार्थक मकार विभक्ति युक्त क्रिया के पूर्व अथवा पश्चात प्रयुक्त होता है, अन्यत्र नहीं। शेष विभक्ति समुदाय में **मा** शब्द आशंकार्थ में होता है। विधि, आशिष में ही यह निषेधार्थक होता है। **म करिन** 'वह न करे'। **म कर** 'तू मत कर'। **म करिव** 'आप मत कीजिए'। सिद्धि सुगम है। इन्हीं विभक्तियों में क्यों? **करान छुनु** 'नहीं करता है'। **कॊरुन नु** 'नहीं किया'। **कॅरिज़ि नु** 'करना मत'। **कॅरिज़्यन नु** 'तू मत कर'। **करि नु** 'नहीं करेगा (वह)'।

व्याख्या–

म का प्रयोग आदेशात्मक विधि में ही निषेध बोधक होता है। अन्यत्र नहीं। वहाँ पर **न** अथवा **नु** से ही निषेधात्मकता ज्ञापित होती है। **म** का प्रयोग अधिकांश स्थितियों में क्रिया के पूर्व ही किया जाता है और **न** क्रिया के पश्च में। आदेशात्मक विधि में भी कहीं कहीं पर **नु** का प्रयोग संभव है। स्पष्टीकरण के दो उदाहरण– **कॅरिज़ि नु** 'करना मत' और **कॅरिज़्यन नु** 'तू मत कर' इसी प्रकार के उदाहरण हैं। आशंका अथवा आशा बोधक **म** का उदाहरण निम्नांकित है– **डाकवोल मा यियि चोरि बजि** 'डाकिया शायद चार बजे आएगा'।

॥ संबुद्धिगौणप्रत्यया मात्परा अपि ॥२०॥

लिङ्गप्रकरणोक्तोत्तमादिसंबोधनप्रत्यया गौणविधिप्रत्ययाश्च मकारात्पराः प्रयोज्याः। अपिशब्दात् गौणप्रत्ययः पूर्ववदप्यत्रापि प्रयोज्यः। अत एव निर्देशात्मकारात्परा अपि प्रयोज्याः॥ मा कर्। मा कुरु॥ मबा कर्। मा कुरु॥ मसो कर्। मा कुरु॥ एवं स्त्रीसंबोधनप्रत्ययाश्च॥ मत कॅरितन्। मा करोतु नाम॥ मत करत्। मा कुरु नाम॥ मत कॅरितव्। मा कुरुत नाम॥ मत बा करत्। मा कुरु नाम॥ मतसो करत्। मा कुरु नाम॥ मता करत्। मा कुरु नाम। इत्यादयः॥

सूत्र 8.2.20

अनुवाद–

लिंग प्रकरण के अन्तर्गत कहे गए उत्तम आदि पुरुषों के प्रत्यय तथा गौण विधि के प्रत्यय निषेधात्मक मकार के पश्चात ही संयुक्त होते हैं। सूत्र का 'अपि' शब्द पूर्वोक्त गौणप्रत्ययों को इंगित करता है। इसी प्रकार निर्देशात्मक 'तकार' भी पश्च **म बा कर** '(तू) मत (संबोधन प्रत्यय) कर'। **म सॉ कर** '(तू) मत (सम्बोधन प्रत्यय) कर'। इसी तरह स्त्री संबोधन प्रत्यय भी संयुक्त होते हैं। **मतु कॅरितन** '(वह) न करे (उपेक्षा में)। **मतु करतु** '(तू) मत कर (उपेक्षा में)। **मतु करितव** 'आप मत कीजिए (उपेक्षा में)। **मतु बा करतु** '(तू) मत (सम्बोधन प्रत्यय) कर (उपेक्षा में)। **मतु सॉ करतु** '(तू) मत (सम्बोधन प्रत्यय) कर (उपेक्षा में)। **मता करतु** '(तू) मत (आग्रह) कर (उपेक्षा में)।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। यहाँ इस बात का निर्देश है, कि सम्बोधन प्रत्यय अथवा उपेक्षा का प्रत्यय निषेधात्मक मकार के पश्च में ही संयुक्त होता है। स्पष्टीकरण में पर्याप्त उदाहरण प्रस्तुत हैं।

॥ विधितदतिपत्तिभेदाद्दूरविधिर्द्विविधः ॥ २१ ॥

एक आगामिकाले कर्मप्रेरणम् अपरस्त्वस्य कर्मणः अनिष्पत्तिकथनमिति दूरविधिर्द्विधा भवति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.2.21

दूरविधि दो प्रकार की है। एक जो भविष्यत्काल में कार्य को प्रेरित करती है। दूसरे में कार्य की अनिष्पति का कथन होता है।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र अधिकार सूत्र है। उदाहरण 8.2.24 में प्रस्तुत हैं।

॥ दूरविधौ ज़िप्रत्ययः सर्वेषु ॥ २२ ॥

सर्वेषु वचनेषु ज़ि प्रत्यय एक एव ज्ञेयः स च तच्छब्दादिकर्तृप्रयोगेण भिद्यते ॥

अनुवाद— सूत्र 8.2.22

दोनों वचनों में ज़ि प्रत्यय समान है। ज़ि प्रत्यय का तत आदि शब्दों के कर्तृप्रयोग में भेद है।

व्याख्या—

तत आदि शब्द अर्थात सार्वनामिक प्रत्ययों के संसर्ग में ज़ि प्रत्यय का रूपांतरण होता है। उदाहरण 8.2.25 में प्रस्तुत हैं।

॥ तदतिपत्तौ हेपरः ॥ २३ ॥

हेशब्दः परो यस्मादेवंविधो ज़ि प्रत्ययस्तदतिपत्तौ प्रत्ययो भवेत्। चरादीनां तु युष्मदि हेपर इति। किंचाक्षेपादतीतकालो ऽपि भवतीति बोध्यम् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.2.23

ज़ि प्रत्यय के बाद हे शब्द की संयुक्ति कार्य की अनिष्पति ज्ञापित करती है। चर आदि के मध्यम पुरुष रूप में भी हे संयुक्त हो सकता है। आक्षेप से यहाँ अतीत का भी बोध संभव है।

व्याख्या—

हे प्रत्यय की संयुक्ति क्रिया में व्यक्त कार्य के फलीभूत न होने का बोध कराती है। निर्वचन से ऐसी संरचनाएँ अतीत काल का बोध भी करा सकती हैं। यथा— **द्वद चैज़िहे** 'दूध पी लेते'/'दूध पी लिया होता'।

॥ व्यञ्जनान्तादिचागमो ज़ौ ॥ २४ ॥

व्यञ्जनान्ताद्धातोर्जि प्रत्यये परे इच् आगमो भवति चकार उच्चारणार्थः ॥ कॅरिज़ि । कुर्यात् ॥ कर करणे दूरविधौ जि प्रत्ययः (सू० २२)। अनेन इच् चकारलोपः अयमेव प्रयोगः सर्वेषु वचनेषु विज्ञेयः ॥ सुह् कॅरिज़ि । सः कुर्यात् ॥ तिम् कॅरिज़ि । ते कुर्युः ॥ चह् कॅरिज़ि । त्वं कुर्याः ॥ त्वह्य कॅरिज़ि । यूयं कुर्यात ॥ व्यञ्जनान्तादिति किम् । दिज़ि । दद्यात् ॥ खेयज़ि । खादेत् ॥ तदतिपत्तिप्रयोगाश्च यथा । कॅरिज़िहे ॥ कुर्वीत नाम ॥

अनुवाद— सूत्र 8.2.24

व्यंजनान्त धातुओं के साथ **ज़ि** प्रत्यय संयुक्त होने की अवस्था में **इच** का आगम होता है। **इच** का चकार मात्र उच्चार्णार्थ है। **कॅरिज़ि** '(तू) कर (भावी समय में)'। **कर** 'कर' के साथ दूरविधि का प्रत्यय **ज़ि** संयुक्त है (8.2.22 सूत्र) प्रस्तुत सूत्र से **इच** का आगम। **इच** के चकार का लोप। यह युक्ति सभी वचनों में सिद्ध है। **सु कॅरिज़ि** 'वह करे (भावी समय में)'। **तिम कॅरिज़ि** 'वे करें (भावी समय में)'। **चु कॅरिज़ि** 'तू कर (भावी समय में)'। **तौह्य कॅरिज़ि** 'आप कीजिए (भावी समय में)'। व्यंजनान्त क्यों? **दिज़ि** '(तू) दे (भावी समय में)'। **खेज़ि** '(तू) खा (भावी समय में)'। यहाँ अतिपत्ति अर्थात कार्य की अनिष्पति का प्रयोग भी संभव है। यथा— **कॅरिज़िहे** 'कर लेते'।

व्याख्या—

आदेशात्मक विधि में क्रिया में निहित कार्य तुरन्त सम्पन्न करने की अपेक्षा रहती है। दूरविधि में यह अपेक्षा नहीं है। धातु के साथ **ज़ि** संयुक्त होने पर क्रिया में निहित कार्य भावी समय में सम्पन्न करने का निर्देश रहता है। प्रस्तुत सूत्र यह स्पष्ट करता है, कि व्यंजनान्त धातुओं के साथ **ज़ि** संयुक्त होने की अवस्था में इकार का आगम होता है। स्पष्टीकरण में पर्याप्त उदाहरण प्रस्तुत हैं। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है, कि भाषा के वर्तमान व्यवहार में अन्य पुरुष की स्थिति में धातु के साथ **ज़ि** संयुक्त करना संभव नहीं है। **सु कॅरिज़ि** तथा **तिम कॅरिज़ि** जैसी संरचनाओं का प्रयोग इस अर्थ में संभव नहीं हैं। मध्यम पुरुष बहुवचन की स्थिति में भी **कॅरिज़ि** के स्थान पर **कॅरिज़्यवु** का प्रयोग किया जाएगा। व्यंजनान्त मध्यम पुरुष एकवचन तथा बहुवचन के अतिरिक्त उदाहरण निम्नांकित हैं— एकवचन— **चु पॅरिज़ि वन्य हिस्ट्री** 'तू अब इतिहास पढ़ (भावी समय में)'। बहुवचन— **तौह्य पॅरिज़्यवु वन्य हिस्ट्री** 'आप अब इतिहास पढ़िए (भावी समय में)'। स्वरान्त धातुओं के साथ **ज़ि** संयुक्त होने पर **इ** का आगम नहीं होता। उदाहरण स्पष्टीकरण में प्रस्तुत हैं। क्रिया में निहित कार्य सम्पन्न न होने

का प्रत्यय हे भी इन संरचनाओं में संयुक्त हो सकता है। अतिरिक्त उदाहरण यथा– चु पॅरिज़िहे हिस्ट्री 'तू इतिहास पढ़ लेता'।

॥ नासमोर्लोपो ज़ेः ॥ २५ ॥

अस् अम् इत्येतयोः प्रत्ययोः स्वरादल्लोप (सू० ८।१।३९) इति प्राप्तो लोपो ज़िप्रत्ययात् न भवति॥ कॅरिज़्यम्। मे कुर्याः ॥ कॅरिज़्यस्। तस्य कुर्याः ॥ असमोः किम्। कॅरिज़िय्। ते कुर्यात् ॥ ज़ेः किम्। कॅरिज़िहेस्। तस्य कुर्वीत नाम ॥ अत्र अस् प्रत्ययस्य स्वरादल्लोप (सू० ८।१।३९) इत्यकारलोपः ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.2.25**

अस और **अम** प्रत्यय संयुक्त होने पर 8.1.39 सूत्र के अनुसार (प्रत्यय के) आदि स्वर का लोप होता है। परन्तु **ज़ि** प्रत्यय संयुक्त होने की स्थिति में यह लोप नहीं होता। **कॅरिज़्यम** '(तू) मेरे निमित्त कर (भावी समय में) **कॅरिज़्यस** '(तू) उस के निमित्त कर (भावी समय में)'। **अस** और **अम** क्यों? **कॅरिज़िय** 'वे करें (भावी समय में)'। ज़े के उपरान्त ही क्यों? **कॅरिज़िहेस** '(तू) उस के निमित्त कर लेता'। यहाँ **अस** प्रत्यय के अकार का लोप है।

व्याख्या–

8.2.22 सूत्र में निर्देश है, कि सार्वनामिक प्रत्ययों के संसर्ग में **ज़ि** का रूपांतरण होता है। प्रस्तुत सूत्र सार्वनामिक प्रत्यय **म** और **स** के उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहाँ पर **ज़ि** प्रत्यय के इकार का यत्व हो जाता है। स्पष्टीकरण में उदाहरण प्रस्तुत हैं। अन्य पुरुष का उदाहरण **कॅरिज़िय** भाषा में वर्तमान नहीं है।

ईश्वर कौल सार्वनामिक प्रत्ययों के आदि में **अ** की संकल्पना करते हैं। यहाँ इसी **अ** के लोप का कथन है।

॥ आशिषि यन् यन् यख् ह्व् प्रत्ययाः ॥२६॥

स्पष्टम्। तत्रास्या विभक्तेर्लोके ऽत्यल्पप्रसिद्धतया तत्स्वरूपसाधनसूत्राणि नाभिहितानि। परंतु पूर्णभूते ये ये आदेशा वक्ष्यन्ते ते ऽत्रापि धीमद्भिरवधार्याः। येषां च धातूनां क्रिया लोके प्रचारितास्ति ते उदाहृतिद्वारा व्यक्तीक्रियन्ते ॥ कर्यन्। क्रियात् ॥ छ्यन्। जीव्यात् ॥ रछ्यन्। पच्यात् ॥ ज़ेव्यन्। जीयात् ॥ आस्यन्। भूयात् ॥ अत्रैव सकारान्तस्य शकारो दृश्यते ॥ नान्तानां तु पूर्णभूतप्रक्रियया (८।३।७३। सूत्रेण) नकारस्य ञकारः ॥ छ्यनय्। ते जीव्यात् ॥ पोष्यनय्। ते पर्याप्यात् ॥ छस सम्यग्जीवने। पोष पर्याप्ततायाम् शेषं पूर्ववत् ॥ एवं। ब्व्यन्। भूयात् ॥ म ब्व्यन्। मा भूयात् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.2.26

सूत्र स्पष्ट है। इन विभक्तियों की लोक व्यवहार में बहुत कम व्यापकता है, इसलिए इन की रूपसिद्धि के सूत्र नहीं दिए गए हैं। परन्तु पूर्णभूत में जो भी आदेश हैं, वे सभी यहाँ भी प्रभावी हैं। लोक व्यवहार में प्रचलित धातु रूपों के उदाहरण प्रस्तुत हैं। **कर्यन** '(वह) करे'। **लश्यन** '(वह) जिए'। **रन्यन** '(वह) पकाए'। **ज़ेन्यन** '(वह) जीते'। **आश्यन** '(वह) रहे'। यहाँ पर अन्त के सकार का शकार होता है। 8.3.73 सूत्र के अनुसार पूर्णभूत क्रिया में नकार का न्यकार होता है। **लश्यनय** '(वह/वे) तुम्हारे निमित्त जिए'। **पोशनय** '(वह/वे) तुम्हारे निमित्त बना/बने रहे'। **लस** 'जियो', **पोश** 'बने रहो'। शेष पूर्ववत। अतिरिक्त उदाहरण— **ब्ययन** 'उत्पन्न हो'। **म ब्ययन** 'न उत्पन्न हो'।

व्याख्या—

आशिष विधि के अन्तर्गत दिए गए उदाहरण भाषा में यथावत रूप से व्यवहृत नहीं हैं। उदाहरणों का वर्तमान स्वरूप निम्नांकित है। **लस** '(तू) जिए'। **लसिव** '(आप) जिएँ। **लसिन** '(वह/वे) जिएँ'।

॥ छावो यखि यो वा ॥ २७ ॥

छाव उपभोगे। इत्यस्य यख् प्रत्यये परे वकारस्य यकारो भवति वा विकल्पेन ॥ छाय्यख्। निर्विश्याः ॥ पक्षे। छाव्यख्। निर्विश्याः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.2.27

छाव का अर्थ है उपभोग करना। **यख** प्रत्यय संयुक्त होने पर (छाव के) वकार का विकल्प से यकार होता है। **छायख** 'शुभ हो' (उपभोग)। विकल्प में **छाव्यख**।

व्याख्या—

छाव शब्द हर्ष सहित उपभोग का अर्थ संप्रेषित करता है। वर्तमान में **छायख** क्रिया रूप नहीं है। नया वस्त्र अथवा आभूषण धारण करने पर प्रशंसा करने वाला व्यक्ति **छायख** कह सकता है। यह शब्द बधाई अथवा मुबारक का पर्याय है। **छाव्यख** शब्द का व्यवहार इस अर्थ में संभव नहीं है।

॥ भविष्यन्ती इ अन् अख् इव् अ अव् प्रत्ययाः ॥ २८ ॥

सुगमम् ॥ करि। करिष्यति ॥ करन्। करिष्यन्ति ॥ करख्। करिष्यसि ॥ करिव्। करिष्यथ ॥ कर। करिष्यामि ॥ करव्। करिष्यावः ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.2.28

सूत्र सुगम है। **करि** '(वह) करेगा'। **करन** '(वे) करेंगे'। **करख** '(तू) करेगा'। **कॅरिव** '(आप) करेंगे' **करु** '(मैं) करूँगा'। **करव** '(हम) करेंगे'।

व्याख्या–

भविष्यत्काल में भी अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय आवश्यक हैं। सूत्र में तीनों पुरुषों के एकवचन और बहुवचन रूप वर्णित हैं। निम्नलिखित तालिका में ये सभी प्रत्यय अंकित है।

	अन्य पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एकवचन	इ	ख	अु
बहुवचन	अन	इव	अव

उदाहरण– **हु परि गीता** वह (प्रत्यक्ष) गीता पढ़ेगा'। **हुम परन गीता** 'वे (प्रत्यक्ष) गीता पढ़ेंगे'। **सु परि गीता** 'वह (परोक्ष) गीता पढ़ेगा'। **तिम परन गीता** 'वे (परोक्ष) गीता पढ़ेंगे'। **चु परख गीता** 'तू गीता पढ़ेगा'। **तोह्य परिव गीता** 'आप गीता पढ़ेंगे'। **बु परु गीता** 'मैं गीता पढूँगा'। **अॅस्य परव गीता** 'हम गीता पढ़ेंगे'।

॥ स्वरान्तानामुत्तमे मागमः ॥ २९ ॥

स्वरान्तानां धातूनामुत्तमपुरुषे मकारागमो भवति ॥ दिम । दास्यामि ॥ दिमव्। दास्यामः ॥ दि दाने उत्तमपुरुषैकत्वानेकत्वयोः अ अव् प्रत्ययौ अनेन मागमः ॥ उत्तमे किम्। दियि। दास्यति ॥ दिन्। दास्यन्ति ॥ दिख्। दास्यसि ॥ दियिव्। दास्यथ ॥ दि दाने। इ अन् अख् इव् प्रत्ययाः। स्वरान्ताद्यागम इकारे (सू० १०) इत्यनेन इकारागमः। अपरत्र स्वरादल्लोपः (सू० ८।१।३९) इत्यकारलोपः ॥ तच्छब्दादिसंबन्धप्रयोगाश्च यथा ॥ कर्यस्। तस्य करिष्यति [। अस्यां विभक्तौ प्रथमपुरुषकर्तृसंबन्धार्थे स्वरादल्लोप- (सू० ८।१।३९) कार्यमनित्यं ज्ञेयम्] ॥ करनस्। करिष्यन्ति तस्य ॥ करहन्। करिष्यसि तम् ॥ करहम्। करिष्यसि तस्य ॥ कर्यूस्। करिष्यथ तस्य ॥ करम्। करिष्यामि तस्य ॥ करन्। करिष्यामि तम् ॥ करोस्। करिष्यामस्तस्य ॥ करोन्। करिष्यामस्तम्। पूर्वं साधितानि ॥ ज्वरादीनां तु विधिवदत्रापि विधिर्ज्ञेयः ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.2.29

स्वरान्त धातुओं के उत्तम पुरुष में मकार का आगम होता है। **दिमु** '(मैं) दूँगा'। **दिमव** '(हम) देंगे। **दि** 'दे' के उत्तम पुरुष और बहुवचन के रूपों में **अु**

तथा **अव** प्रत्ययों के पूर्व, प्रस्तुत सूत्र के अनुसार **म** का आगम होता है। उत्तम पुरुष ही क्यों? **दियि** '(वह) देगा'। **दिन** '(वे) देंगे'। **दिख** '(तू) देगा'। **दियिव** '(आप) देंगे'। **दि** 'दे' के साथ केवल **इ, अन, अख, इव** प्रत्यय ही संयुक्त होते हैं। 8.2.10 सूत्र के अनुसार **इ** प्रत्यय के पूर्व स्वरान्त धातु में **य** का आगम। इस के अतिरिक्त 8.1.39 सूत्र के अनुसार अकार का लोप। संबन्ध प्रत्यय संयुक्त होने पर शब्द का रूप होगा, **कर्यस** '(वह) उस के निमित्त करेगा।' प्रथम पुरुष संबन्धार्थी विभक्ति संयुक्त होने पर 8.1.39 सूत्र के अनुसार अकार के लोप की अनित्यता है। **करनस** '(वे) उस के निमित्त करेंगे'। **करुहॉन** '(वे) उस के निमित्त कर लेते'। **करुहॉस** '(तू) उस के निमित्त कर लेता'। **कर्यूस** '(आप) उस के निमित्त करेंगे'। **करस** 'मैं उस के निमित्त करुँगा'। **करन** 'मैं उस को करुँगा।' **करोंस** '(हम) उस के निमित्त करेंगे।' **करोन** '(हम) उस को करेंगे।' पहले साधित हैं। **चर** आदि के विषय में यहाँ भी विधि अनुरूप ही है।

व्याख्या–

स्वरान्त धातुओं के उत्तम पुरुष रूप में मकार का आगम निर्दिष्ट है। **खे** 'खा' **चे** 'पी' धातुओं के उत्तम पुरुष में भी यह आगम स्पष्ट है यथा– **बु ख्यमु बतु** 'मैं खाना खाऊँगा'। **बु च्यमु त्रेश** 'मैं पानी पीयूँगा'। स्पष्टीकरण में सार्वनामिक प्रत्ययों की संयुक्ति के उदाहरण भी प्रस्तुत हैं।

॥ अपराः प्रत्ययाः संप्रश्ने ॥ ३० ॥

ते भविष्यन्तीप्रत्यया अपरा अकारः परो येभ्यस्तथा संप्रश्ने प्रत्ययाः स्युः ॥

अनुवाद– सूत्र 8.2.30

प्रश्न पूछने की स्थिति में भविष्यत प्रत्यय के पश्चात अकार संयुक्त होता है।

व्याख्या–

यह अधिकार सूत्र है। प्रश्न वाचकता के लिए क्रिया पद के साथ अकार की संयुक्ति भाषा में सर्वत्र सिद्ध है।

॥ प्रथमोत्तमैकत्वे दीर्घः ॥ ३१ ॥

तस्य अकारस्य प्रथमैकवचने उत्तमैकवचने च दीर्घो भवति ॥ ते प्रत्ययाश्च यथा। या अन अख इव आ अव भवन्ति। उदाहरणानि। कर्या। किं कुर्यात् ॥ करन। किं कुर्युः ॥ करख। किं कुर्याः ॥ करिव। किं कुर्यात ॥ करा। किं कुर्याम् ॥ करव। किं कुर्याम ॥ साधितचराण्येव ॥

अनुवाद— सूत्र 8.2.31

प्रथम पुरुष एकवचन तथा उत्तम पुरुष एक वचन में अकार दीर्घ हो जाता है। समस्त प्रत्यय इस प्रकार हैं— **या, अन, अख, इव, आ, अव**। उदाहरण— **कर्या** 'क्या (वह) करेगा'। **करनु** 'क्या (वे) करेंगे'। **करखु** 'क्या (तू) करेगा'। **करिवु** 'क्या (आप) करेंगे'। **करा** 'क्या (मैं) करूँगा'। **करवु** 'क्या (हम) करेंगे'। सिद्धि स्पष्ट।

व्याख्या—

प्रश्न वाचकता में अन्य पुरुष एकवचन और उत्तम पुरुष एकवचन का अकार दीर्घ हो जाता है। यथा— **सु वुछा ड्रामा?** 'क्या वह ड्रामा देखेगा?' **ब वुछा ड्रामा?** 'क्या मैं ड्रामा देखूँगा?' शेष सभी स्थितियों में अंतिम स्वर अकार है। भविष्यत्काल के प्रत्यय 8.2.27 सूत्र में तालिका बद्ध हैं।

॥ क्रियातिपत्तिः इहे अहान् अहाख् इहीव् अहा अहाव् प्रत्ययाः ॥ ३२ ॥

स्पष्टम् ॥ करिहे । अकरिष्यत् ॥ करहान् । अकरिष्यन् ॥ करहाख् । अकरिष्यः ॥ कॅरिहीव् । अकरिष्यत ॥ करहा । अकरिष्यम् ॥ करहाव् । अकरिष्याम ॥ स्वरान्तधातूनां यथा ॥ च्ययिहे । अपास्यत् ॥ च्यहान् । अपास्यन् ॥ च्यहाख् । अपास्यः ॥ च्यॅयिहीव् । अपास्यत ॥ च्यमहा । अपास्यम् ॥ च्यमहाव् । अपास्याम ॥ चि पाने स्वरान्तायागम इकारे (सू० १०) इति यकारागमः । सर्वत्राकारागमो निदीर्घवर्जितात् (सू० ११) इति धातोरकारागमः । स्वरादल्लोप (सू० ८।१।१९) इत्यकारस्य लोपः । स्वरान्तानामुत्तमे मागम (सू० २९) इति मकारागमः । सर्वत्र यत्वम् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.2.32

सूत्र स्पष्ट है। **करिहे** '(वह) कर लेता'। **करहॉन** '(वे) कर लेते'। **करहॉख** '(तू) कर लेता'। **कॅरिहीव** '(आप) कर लेते'। **करहॉ** '(मैं) कर लेता'। **करहॉव** '(हम) कर लेते'। स्वरान्त धातुओं के उदाहरण इस प्रकार हैं— **च्ययिहे** '(वह) पी लेता'। **च्यहॉन** '(वे) पी लेते'। **च्यहॉख** '(तू) पी लेता'। **च्ययिहीव** '(आप) पी लेते'। **च्यमहॉ** '(मैं) पी लेता'। **च्यमहॉव** '(हम) पी लेते'। **चि** 'पी'।

[३१ । अहान् अहाख् अहा अहाव् इत्येषु प्रत्ययेषु हा इत्याश्रित आकारो ऽप्रसिद्ध उच्चार्यते ।]

8.2.10 सूत्र से स्वरान्त होने के कारण यकारागम। 8.2.11 सूत्र से नि, दि, यि को छोड़ कर सर्वत्र अकारागम। 8.1.39 सूत्र से अकार का लोप। 8.2.29 सूत्र से स्वरान्त धातुओं के उत्तम पुरुष में म का आगम। सर्वत्र यत्व। ग्रन्थकार ने पाद टिप्पणी में उल्लेख किया है, कि **अहान, अहाख, अहा, अहाव** प्रत्ययों के ह का आकार अप्रसिद्ध उच्चरित होता है।

व्याख्या–

सूत्र में उन प्रत्ययों को रेखांकित किया गया है, जिन के द्वारा क्रिया में निहित कार्य की अनिष्पति सिद्ध होती है। क्रियातिपति क्रिया में निहित कार्य के सम्पन्न न होने का कथन है। इस दृष्टि से ग्रन्थकार अपूर्णभूत को क्रियातिपति का अपर पर्याय मानते हैं। (देखें सूत्र 8.3.97)।

॥ कौतुके सर्वे प्रत्यया हय्पराः ॥ ३३ ॥

कौतुकेन क्रियातिपत्तावभिहितायां सत्यां सर्वे प्रोक्तप्रत्ययास्तच्छब्दादिसंबन्धप्रत्ययाश्च हय्परा हय्शब्दः परो येभ्यस्तथा प्रयोज्याः ॥ करिहे हय्। चेदकरिष्यत्॥ करहान् हय्। चेदकरिष्यन्॥ करिहेस् हय्। चेत्तस्याकरिष्यत्॥ करहानस् हय्। चेत्तस्याकरिष्यन्॥

अनुवाद– **सूत्र 8.2.33**

क्रियातिपत्ति पद के साथ संयुक्त होने वाला संबन्ध प्रत्यय तथा अन्य सभी प्रत्ययों के पश्चात **हय** शब्द कौतूहल अभिव्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता है। **करिहे हय** 'काश (वह) कर लेता'। **करहॉन हय** 'काश (वे) कर लेते'। **करिहेस हय** 'काश (वह उस के निमित्त) कर लेता'। **करहॉनस हय** 'काश (वे उस के निमित्त) कर लेते'।

व्याख्या–

वर्तमान भाषा में अनपेक्षित कार्य होने की स्थिति में **हय** शब्द का प्रयोग किया जाता है। कौतूहल के अर्थ में **हय** का प्रयोग व्यापक नहीं है। **हया यि क्याह कौरुथ**। 'हाय! यह क्या कर दिया'।

॥ आक्षेपे ऽपि नयूपराः ॥ ३४ ॥

आक्षेपेण क्रियातिपत्तावभिहितायां सत्यां ते प्रत्यया नय्परा भवन्ति। अपिशब्दात्कौतुकभावे ऽपि॥ करिहे नय्। चेन्नाकरिष्यत्। वा। अस्तु नाकरिष्यत्॥ करहान् नय्। चेन्नाकरिष्यन्॥

अनुवाद– सूत्र 8.2.34

क्रियातिपत्ति पद के साथ संयुक्त प्रत्ययों के पश्चात आक्षेप व्यक्त करने के लिए **नय** शब्द का प्रयोग होता है। सूत्र में वर्णित 'अपि' शब्द इस बात का निर्देश करता है कि हेतुमद्भाव में भी यह संभव है। **करिहे नय** 'अगर (वह) न करता तो'। **करहॉन नय** 'अगर (वे) न करते तो'।

व्याख्या–

नय शब्द का प्रयोग व्यक्त करता है, कि क्रिया में निहित्त कार्य संपन्न करना अपेक्षित नहीं था।

॥ कर्तुः परौ वा ॥ ३५ ॥

स हय् प्रत्ययः नय् प्रत्ययश्च कर्तुः परौ वा भवतः ॥ सुहय् करिहे। स चेदकरिष्यत् ॥ तिम् हय् करहान्। ते चेदकरिष्यन् ॥ सुनय् करिहे। स चेन्न कुर्यात् ॥ तिम् नय् करहान्। ते चेन्न कुर्युः ॥ सुय् करिहे। इति निश्चयप्रत्ययेन स्वरूपं विवेच्यम् ॥ अत्र प्रत्ययेषु हलोपः सर्वत्र (सू० ४।१३१) इति सुह् शब्द-हकारस्य लोपः। शेषं साधनं पूर्ववत्। चरादीनां तु प्रोक्तवद्बोध्यम् ॥

अनुवाद– सूत्र 8.2.35

हय और **नय** प्रत्यय विकल्प से कर्ता के पश्चात भी प्रयुक्त हो सकते हैं। **सु हय करिहे** 'यदि (वह) कर लेता'। **तिम हय करहॉन** 'यदि (वे) कर लेते'। **सु नय करिहे** 'यदि (वह) न करता'। **तिम नय करहॉन** 'यदि (वे) न करते'। **सुय करिहे** यह निश्चयता व्यक्त करने का प्रत्यय है। 4.1.131 सूत्र से **ह** का लोप सर्वत्र है। इसी सूत्र से **सुह** शब्द के हकार का लोप भी। शेष सिद्धि पूर्ववत। **चऱ** आदि के लिए पूर्व कथन स्पष्ट हैं।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र पूर्व वर्णित दो सूत्रों का विस्तार है। **हय** और **नय** शब्दों का प्रयोग कर्ता के साथ भी संभव है। उदाहरण स्पष्टीकरण में प्रस्तुत हैं। अतिरिक्त प्रत्यय **य** का भी वर्णन है। यह प्रत्यय निश्चयता व्यक्त करता है, तथा कर्त्ता के साथ संयुक्त होता है। यथा– **चुय लेखख** 'तू ही लिखेगा'।

इति

शारदा क्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीरशब्दामृतम
की आख्यात प्रक्रिया का भविष्यत्पाद - द्वितीय 8.2

आख्यात प्रक्रिया - 8
भूत पाद 3

भूतपाद के अन्तर्गत 97 सूत्र उल्लिखित हैं। भूतकाल की व्याख्या करते हुए प्रथम सूत्र में स्पष्ट किया गया है, कि जिस क्रिया का निहित कार्य सम्पन्न हो चुका होता है, वह भूतकाल कहलाता है। ईश्वर कौल ने भूतकाल के चार भेद बताए हैं। यथा– भूत, सामान्यभूत, पूर्णभूत तथा अपूर्णभूत। 8.3.13 सूत्र तक भूत रूपों का वर्णन है। इसके आगे मुख्य रूप से सामान्यभूत और पूर्णभूत तथा यत्र तत्र भूत के उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। अपूर्णभूत की व्याख्या इस पाद में नहीं की गई है। भाषा का वर्तमान स्वरूप इस वर्गीकरण की पुष्टि नहीं करता।

कश्मीरी में प्रत्यय के माध्यम से दूरवर्ती भूतकालिक रूप व्यक्त करने की व्यवस्था है। संस्कृत में भी ऐसी व्यवस्था है, परन्तु हिन्दी में यह व्यवस्था नहीं है। ईश्वर कौल ने सामान्य और पूर्णभूत के अन्तर्गत ऐसे ही रूपों के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। **ओव** को सामान्यभूत का तथा **आव** को पूर्णभूत का प्रत्यय माना गया है। रूपों के संस्कृत अनुवाद को ध्यान में रखते हुए **आव** प्रत्यय युक्त पद निश्चित रूप से दूरवर्ती भूतकाल का अर्थ सम्प्रेषित करते हैं, परन्तु वर्तमान में दूरवर्ती भूतकाल व्यक्त करने के लिए, अन्य पुरुष और उत्तम पुरुष हेतु **एयव** प्रत्यय संयुक्त होता है, तथा मध्यम पुरुष एकवचन के लिए **एयोथ** और बहुवचन के लिए **एयोवु**। **ओव** और **आव** युक्त रूपों का प्रयोग, इस अभिप्राय के लिए अव्याप्त है।

अपूर्णभूत की व्याख्या भविष्यत्पाद के अन्तर्गत 8.2.32 सूत्र तथा उस के आगे के तीन सूत्रों में की गई है। इस प्रक्रिया को क्रियातिपत्ति की संज्ञा दी गई है। ऐसे प्रत्ययों की व्याख्या की गई है, जिन के संयुक्त होने पर क्रिया का निहित कार्य सम्पन्न न होने की सूचना संप्रेषित होती है। यही रूप अपूर्णभूत के उदाहरण माने गए हैं।

ईश्वर कौल ने अनुभव किया है, कि भूतकालिक रूप की व्युत्पत्ति के लिए **उ/इ** प्रत्यय की आवश्यकता है। इस के लिए सहायक क्रिया **छुह, छिह** आदि रूप वर्तमान पाद के 8.1.11, 12 सूत्रों से लिए गए हैं, और निर्देश है कि भूतकालिक रूप सिद्ध करने के लिए **छुह/छिह** संयुक्त होता है, जिस के **छ** और **ह** का लोप हो जाता है। वे इस **छुह, छिह** आदि को प्रत्यय स्वीकार करते हैं।

(देखें सूत्र सं० 8.3.80)। 8.1.7 सूत्र से स्पष्ट किया गया है, कि वर्तमान काल को छु, छि सहायक क्रिया के आधार पर ही व्यक्त किया जाता है। इस के साथ अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त होते हैं। 8.1.12 सूत्र के अन्तर्गत दी गई तालिका में ये प्रत्यय अंकित हैं। छु, छि को किसी भी स्थिति में प्रत्यय स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह क्रिया रूप से पृथक अवस्थित होता है। ऐसे भी वाक्य होते हैं, जहाँ शब्द क्रम की दृष्टि से छु, छि आदि पद वाक्य में दूसरे स्थान पर आता है, और क्रिया रूप अंत में। उदाहरण के लिए देखें 8.1.23 तथा 24 सूत्र।

॥ समापितक्रियाकालो भूतकालः ॥ १ ॥

स्पष्टम् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.1

सूत्र स्पष्ट है।

व्याख्या—

जिस क्रिया का काल समाप्त हो चुका होता है, वह भूतकाल कहलाता है। यह सूत्र अधिकार सूत्र के रूप में वर्णित है।

॥ भूतसामान्यपूर्णापूर्णभेदाच्चतुर्विधः ॥ २ ॥

सो ऽतीतकालः भूतसामान्यभूतपूर्णभूतअपूर्णभूतभेदैश्चतुष्प्रकारो विज्ञेयः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.2

अतीत काल अर्थात भूतकाल के चार भेद हैं। भूत, सामान्यभूत, पूर्णभूत तथा अपूर्णभूत।

व्याख्या—

यह भी अधिकार सूत्र के रूप में वर्णित हैं। काल भेद की दृष्टि से पक्ष की अवधारणा महत्वपूर्ण है।

॥ भावकर्मिणां भूते उन् उख् उथ् उव उम् उ प्रत्ययाः ॥ ३ ॥

भावधातूनां येषां धातुपाठे अतीतप्रयोगा भावे पठिताः। भावप्रयोगस्तु यत्र तृतीया कर्तृस्थाने स्यात्। कर्मिणां धातूनां च येषां धातुपाठे अतीतकाल-

प्रयोगाः कर्मणि अभिहिताः। कर्मप्रयोगस्तु यत्र तृतीया कर्तृस्थाने प्रथमा कर्मस्थाने स्यात्। तेषामुभयेषां धातूनां भूते उन् आदिप्रत्यया योध्याः। अत्र शब्दशास्त्रे भावकार्मिणां धातूनामतीतकाले कर्तृप्रयोगाभावः। अकर्मकाणां तु कर्मप्रत्ययाभावः। कर्तृप्रयोगस्तु यत्र प्रथमा कर्तृस्थाने स्यादिति॥ भावे यथा। औसुन्। अहस्यत॥ नौचुन्। अनृत्यत॥ चौसुन्। व्यहस्यत॥ अस हसने। नच्च नर्तने। चस अतिहासे। अनेन उन्॥ कर्मणि यथा। कौरुन्। तेन तया वा कृतम्॥ कौरुख्। तैस्ताभिर्वा कृतम्॥ कौरुथ्। त्वया कृतम्॥ कौरुव। युष्माभिः कृतम्॥ कौरुम्। मया कृतम्॥ कौरु। अस्माभिः कृतम्॥ कर करणे अनेन उन् आदिप्रत्ययाः॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.3

धातुपाठ में जिन का अतीत प्रयोग भावे पठित है, वे भाव धातु हैं। भाव प्रयोग में कर्ता तृतीया में होता है। धातु पाठ के अन्तर्गत जहाँ अतीत काल का प्रयोग कर्मणि अभिहित है, वे कर्मणि धातु हैं। कर्मप्रयोग में कर्त्ता तृतीया में तथा कर्म प्रथमा में होता है। इन दोनों प्रकार के धातुओं के साथ भूत में उन आदि प्रत्यय संयुक्त होते हैं। इस शब्द शास्त्र के अन्तर्गत कर्मणि भाव और धातुओं के भूतकाल में कर्तृ प्रयोग का अभाव होता है। अकर्मक में कर्म प्रत्यय का अभाव होता है। कर्तृ प्रयोग में कर्त्ता प्रथमा में होता है।

भावे यथा— औसुन ''वह हँसा'। नौचुन 'वह नाचा'। चौसुन 'वह हँसा (व्यंग्यात्मक)'। अस 'हँस', नच़ 'नाच', च़स 'हँस (व्यंग्य में)'। प्रस्तुत सूत्र से उन।

कर्मणि यथा— कौरुन 'उस ने किया'। कौरुख 'उन्होंने किया'। कौरुथ 'तूने किया'। कौरुव 'आप ने किया'। कौरुम 'मैंने किया'। कौर 'हमने किया'। कर 'कर'। प्रस्तुत सूत्र से उन आदि प्रत्यय।

व्याख्या—

धातुपाठ के अन्तर्गत भाव प्रयोग को 'अभा' तथा कर्म प्रयोग को 'अक' संकेतों से द्योतित किया गया है। जिन पर कोई संकेत नहीं है वे कर्तृ प्रयोग हैं। प्रस्तुत सूत्र में भाव और कर्म प्रयोग के प्रत्ययों का उल्लेख है। ये सभी प्रत्यय अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय हैं, जो वचन और पुरुष को द्योतित करते हैं। स्पष्टीकरण में कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं। प्रत्यय निम्नांकित तालिका में अंकित हैं।

	अन्य पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एकवचन	न	थ	म
बहुवचन	ख	व	ϕ

भाव और कर्म प्रयोग दोनों में कर्ता विकारी होता है। कर्म प्रयोग में कर्म अविकारी होता है। उदाहरण— 1. मे औस/औसुम 'मैं हँसा'। 2. च़े औसुथ 'तू

हँसा'। 3. **हुम्य ऑस/ऑसुन** 'वह हँसा'। 4. **असि ऑस** 'हम हँसे'। 5. **त्वहि ऑसुवु** 'आप हँसे'। 6. **हुमव ऑस/ऑसुख** 'वे हँसे'।

मध्यम पुरुष की स्थिति में वाक्य में सर्वनाम के प्रयोग के उपरान्त भी अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त होता है। देखिए उदाहरण दो और पाँच। शेष पुरुषों में सर्वनाम शब्द का प्रयोग होने पर अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त नहीं हो सकता। उत्तम पुरुष बहुवचन में सार्वनामिक प्रत्यय शून्य होता है।

॥ कर्मणि पुंब्रहुत्वे इदाद्यस्वरस्य ॥ ४ ॥

कर्मिणां धातूनां पुंलिङ्गस्य बहुवचने कर्मणि संति सर्वेषां प्रत्ययानामादिस्वरस्य इकारो भवति ॥ लीखिन्। तेन अलिख्यन्त ॥ लीखिख्। तैर्लिखिताः पुं० ॥ लीखिथ्। त्वया लिखिताः पुं० ॥ लीखिव। युष्माभिर्लिखिताः ॥ लीखिम्। मया लिखिताः पुं० ॥ लीखि। अस्माभिर्लिखिताः ॥ लेख लेखने भावकर्मिणां भूत (सू० ३) इति उन्.आदिप्रत्ययाः। अनेनादिस्वरस्य इकारः। पुंस्येकारस्य यूदीतौ (सू० २१) इत्यनेन सूत्रेण एकारस्य ईकारः ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.4**

कर्म के पुंलिंग बहुवचन होने की स्थिति में कर्म प्रयोग धातुओं के सभी प्रत्ययों में आदि स्वर का इकार हो जाता है।। **लीखिन** 'उस ने लिखे'। **लीखिख** 'उन्होंने लिखे'। **लीखिथ** 'तूने लिखे'। **लीखिवु** 'आप ने लिखे'। **लीखिम** 'मैंने लिखे'। **लीख्य** 'हम ने लिखे'।

लेख 'लिख'। भाव और कर्म के भूत में **उन** आदि प्रत्यय होते हैं। (पूर्ववर्ती सूत्र) प्रस्तुत सूत्र से आदि स्वर का इकार। 8.3.21 सूत्र से एकार का ईकार।

व्याख्या–

कर्म प्रयोग में क्रिया की अन्विति कर्म के साथ होती है। पुंलिंग बहुवचन कर्म होने की स्थिति में प्रत्यय के आदि स्वर का इकार सिद्ध है। सार्वनामिक प्रत्यय यथावत रहता है। धातु के उपधा स्वर का भी रूपांतरण होता है। स्पष्टीकरण में दिए गए उदाहरण **लेख** 'लिख' के एकार का रूपांतरण ईकार में हो जाता है। भाषा में व्याप्त पश्चगामी स्वरसमतालता इस का कारण है। प्रत्यय का आदि स्वर उकार उच्च स्वर है। उसी के प्रभाव से उपधा का स्वर भी उच्च हो जाता है।

॥ स्त्रियां यत् ॥ ५ ॥

सकर्मकाणां धातूनां स्त्रीलिङ्गस्य बहुत्वे कर्मणि सति प्रत्ययादिस्वरस्य यकारः भवति ॥ कर्यन् । तेन ताः कृताः ॥ कर्यख् । तैस्ताः कृताः ॥ लेछ्यन् । तेन ता लिखिताः ॥ रछ्यन् । तेन ता रक्षिताः ॥ कर करणे । लेख लेखने । रछ रक्षायाम् । उन् उख् प्रत्ययौ । अनेन उकारस्य यत्वम् । स्त्रियामी-देतौ सर्वत्र (सू० २३) इति उपधाया एकारः । कवर्गस्यैकत्वे ऽपि (सू० ७१) इत्यनेन लेखः खकारस्य छकारः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.5

कर्म के स्त्रीलिंग बहुवचन होने की स्थिति में सकर्मक धातु के आदि स्वर का यकार होता है। **कर्यन** 'उस ने किए (स्त्रीलिंग)'। **कर्यख** 'उन्होंने किए (स्त्रीलिंग)'। **लेछन** 'उन्होंने लिखीं'। **रछन** 'उन्होंने पालीं'। **कर** 'कर'। **लेख** 'लिख'। **रछ** 'पाल' के साथ **उन** अथवा **उख** प्रत्यय संयुक्त होने से प्रस्तुत सूत्र उकार को यत्व में परिवर्तित करता है। 8.3.23 सूत्र से उपधा के एकार का इकार। 8.3.71 सूत्र के अनुसार खकार का छकार सिद्ध है।

व्याख्या—

कर्म स्त्रीलिंग बहुवचन होने पर निर्देश है, कि प्रत्यय के उकार का यत्व हो जाता है। यह रूपांतरण तब प्रभावी है, जब प्रत्यय के साथ अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त हो। उक्त सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त न होने की स्थिति में यत्व संभव नहीं है। यथा— **तॅम्य लेछि वार्याह चिठि** 'उस ने बहुत सी चिट्ठियां लिखीं'। **मे लेछि वार्याह चिठि** 'मैंने बहुत सी चिट्ठियां लिखीं'।

॥ इकारान्तादेकत्वे ऽपि ॥ ६ ॥

इकारान्ताद्धातोरेकत्वे कर्मणि च प्रत्ययादिस्वरस्य यकारो भवति ॥ ख्यन् ॥ तेन सा भुक्ता ॥ च्यन् । तेन सा पीता ॥ नियन् । तेन सा नीता ॥ खि खादने । चि पाने । नि हरणे । उन् प्रत्ययः अनेनोकारस्य यत्वम् । सर्वत्राकारागमो निदियिर्शजितात् (सू० ८।२।११) इति सूत्रेण प्रथमयोः अका-रागमः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.6

कर्म प्रयोग में इकारान्त धातुओं के एकवचन में भी प्रत्यय के आदि स्वर

का यकार होता है। **ख्येयन** 'उस ने खाई'। **च्येयन** 'उस ने पी'। **नियन** 'उस ने ली'। **खे** 'खा' **चे** 'पी' **नि** 'ले' के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होने पर प्रस्तुत सूत्र से उकार का यत्व। 8.2.11 सूत्र के अनुसार नि, दि, यि को छोड़ कर सर्वत्र अकारागम अर्थात **ख्ये** और **च्ये** में अकारागम।

व्याख्या—

पूर्ववर्ती सूत्र में केवल स्त्रीलिंग बहुवचन में ही यत्व का निर्देश था। प्रस्तुत सूत्र के अनुसार ईकारान्त एकवचन धातुओं में भी यत्व संभव है। **खि** 'खा' और **चि** 'पी' का वर्तमान उच्चारण **खे** और **चे** है। इसलिए प्रस्तुत सूत्र ऐकारान्त धातुओं पर भी प्रभावी है। **नि** धातु के सन्दर्भ में 8.2.11 सूत्र और जानकारी प्रदान करता है।

॥ ह्दियोरत् ॥ ७ ॥

हि ग्रहणक्रीणनधारणेषु। दि दाने। इत्यनयोः स्त्रीबहुत्वे कर्मणि सति आदिस्वरस्य अकारो भवति। चानुकृष्टं नानुवर्तत इति एकत्वे कर्मणि न भेदः॥ हच्चन्। तेन ता धृताः॥ दिच्चन्। तेन ता दत्ताः॥ उन् प्रत्ययः प्रथमस्य सर्वत्राकारागमो निदिधिवर्जितात्'(सू० ८।२।११) इत्यकारागमः। 'हिद्योस्तकारागम (सू० ३२) इति तकारागमः। अनेन प्रत्ययादिस्वरस्य अकारः। तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इत्यप्रसिद्धचकारादेशः। हिद्योः किम्। ख्ययन्। सा भुक्ता॥ च्ययन्। सा पीता। नियन्। सा नीता॥ पूर्वं साधितान्येव॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.7

हि 'खरीद', 'धारण कर' **दि** 'दे' इन दोनों धातुओं के साथ स्त्रीलिंग बहुवचन कर्म होने की अवस्था में आदि स्वर का अकार होता है। कर्म एकवचन होने की स्थिति में प्रस्तुत नियम प्रभावी नहीं है। **हेच़न** 'उस ने खरीदीं'। **दिच़न** 'उस ने दी'। 8.2.11 सूत्र के अनुसार **उन** प्रत्यय के पूर्व अकारागम। 8.3.32 सूत्र के अनुसार **हि** और **दि** में तकारागम। प्रस्तुत सूत्र में आदि स्वर का अकार। 8.3.72 सूत्र के अनुसार तवर्ग का अप्रसिद्ध च़कार। **हि** और **दि** ही क्यों? **ख्ययन** 'उस ने खाई'। **च्ययन** 'उस ने पी'। **नियन** 'उस ने ली'। रूप पूर्व सिद्ध हैं।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र **हि** 'खरीद, धारण कर' और **दि** 'दे' धातुओं की विलक्षणता व्यक्त करता है। प्रत्यय से पूर्व तकारागम तथा इस तकार का च़कार में रूपांतरण। उदाहरण— **मे हेचु अम्बु** 'मैंने आम खरीदे (**अम्ब** 'आम' कश्मीरी में स्त्रीलिंग है)। **मे दिचु अम्बु हुमिस** 'मैंने उस को आम दिए'। यह ध्यान देने योग्य

बात है कि उक्त दोनों धातु द्विकर्मक हैं।

॥ एकत्वे ऊमात्रादेशः ॥ ८ ॥

सकर्मकाणां धातूनां स्त्रीलिङ्गस्यैकत्वे कर्मणि सति प्रत्ययादिस्वरस्य ऊमात्रादेशो भवति ऊमात्रान्तत्वे सिद्धे पूर्वोक्तलिङ्गप्रकरणपरिभाषया पूर्ववर्णस्वरस्याप्रसिद्धतावधार्या ॥ करून्। सा कृता ॥ मारूथ्। त्वया सा हता ॥ खारूम्। मया सारोहिता ॥ कर करणे। मार मारणे। खार आरोहणे। उन् उथ् उम् प्रत्ययाः। अनेनादिस्वरस्य ऊमात्रादेशः ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.8

कर्म के स्त्रीलिंग एकवचन होने की स्थिति में कर्म प्रयोग में प्रत्यय के आदि स्वर का ऊमात्रादेश होता है। ऊमात्रा सिद्धि के उपरान्त लिंग प्रकरण में वर्णित 2.1.7 सूत्र के प्रभाव से पूर्व स्वर की अप्रसिद्धता अवधार्य है।* कॅरुन 'उस ने की'। मॉरुथ 'तूने मारी'। खॉरुम 'मैंने चढ़ाई'। कर 'कर'। मार 'मार'। खार 'चढ़ा'। इन धातुओं के साथ उन, उथ, उम प्रत्यय संयुक्त होने पर, प्रस्तुत सूत्र से आदि स्वर का ऊमात्रादेश।

व्याख्या–

स्त्रीलिंग धातु रूपों में स्वर की अप्रसिद्धता भाषा में सर्वत्र व्याप्त है। अप्रसिद्धता का अभिप्राय है, पश्च अवर्तुलाकार स्वर में रूपांतरण। स्पष्टीकरण के उदाहरणों में सूत्र के अनुसार प्रत्यय के आदि स्वर उकार का दीर्घीकरण अंकित है, तथा उसी दीर्घ स्वर ऊकारान्त का अप्रसिद्धीकरण संकल्पित है। वर्तमान में यह दीर्घ स्वर उच्चरित नहीं है। कर्मयुक्त वाक्यों के उदाहरण प्रस्तुत हैं। यथा– चॅर मॉरुन 'उस ने चिड़िया मारी'। किताब पॅरुम 'मैंने किताब पढ़ी'।

॥ चुवमोरवयोर्नित्यम् ॥ ९ ॥

चुव कलहे। मोरव पीडासहने। इत्यनयोरेकत्वे कर्मणि नित्यं प्रत्ययादिस्वरस्य ऊमात्रादेशः स्यात्। तयोः पुंलिङ्गकर्माभावस्वाभिव्यक्तग्रहणम् ॥ चुवून्। तेन युद्धम् ॥ मोरवून्। सोढा ॥ एकत्वे किम्। चुव्यन्। युद्धाः ॥ मोरव्यन्। सोढाः ॥ भावकर्मिणाम् (सू० २) इति उन्। स्त्रियां यत् (सू० ५) इति वकारस्य यकारः ॥

[* ऊदन्तत्वे सिद्धे पूर्वस्वरस्याव्याततता ज्ञेयेति २।१।७ सूत्रे द्रष्टव्यम्।]

अनुवाद— **सूत्र 8.3.9**

कर्म एकवचन होने की स्थिति में **चुव** 'झगड़' **मोरव** 'पीड़ा सह' इन दोनों धातुओं के प्रत्यय के आदि स्वर का ऊमात्रादेश है। इन दोनों के क्रिया पद में पुलिंग कर्म का अभाव है। **चुवुन** 'उस ने झगड़ा किया'। **मोरवुन** 'उस ने पीड़ा सही'। एकवचन में क्यों? **चुव्यन** 'उस ने झगड़े किए'। **मोरव्यन** 'उस ने पीड़ाएँ सही'। 8.3.3 सूत्र के अनुसार **उन** प्रत्यय। 8.3.5 सूत्र के अनुसार स्त्रीलिंग में उकार का यकार।

व्याख्या—

चुव 'झगड़' धातु के साथ **उन** आदि प्रत्यय संयुक्त होने पर उकार का दीर्घीकरण उच्चरित नहीं होता। इस के तीनों पुरुषों के एकवचन और बहुवचन रूप तालिका बद्ध है।

	अन्य पुरुष	**मध्यम पुरुष**	**उत्तम पुरुष**
एकवचन	चुवुन	चुवुथ	चुवुम
बहुवचन	चुव्यन	चुव्यथ	चुव

सामान्यतया **चुव** धातु कर्म की अपेक्षा नहीं करता। इस के बहुवचन रूप व्यवहार में नहीं के बराबर है। **मोरव** 'पीड़ा सह' धातु वर्तमान में प्रयुक्त नहीं है।

॥ पुंकर्तृप्रत्ययोकारस्य स्त्रियां च ॥ १० ॥

पुंलिङ्गस्य यः कर्तृप्रत्ययसंबन्धी उकारस्तस्य स्त्रीलिङ्गविषये ऊमात्रादेशः स्यात् ॥ वोतु । प्राप्तः ॥ वाचू । प्राप्ता ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.3.10**

कर्तृप्रत्यय संबन्धी पुंलिंग के उकार का स्त्रीलिंग में ऊमात्रादेश होता है। **वोत** 'वह पहुँचा'। **वॉच़** 'वह पहुँची'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र तथा आगामी सूत्रों में अकर्मक धातुओं का वर्णन है। 8.3.6 सूत्र की व्याख्या में इस तथ्य का उल्लेख है, कि स्त्रीलिंग रूपों में स्वर अवर्तुलाकार सिद्ध है। उकार के दीर्घीकरण का व्यवहार वर्तमान नहीं है। **वात** 'पहुँच' धातु के भूतकालिक स्त्रीलिंग रूपों के उदाहरण— **1. बु वॉचुस सति बजि** 'मैं सात बजे पहुँची'। **2. चु वॉचुख सति बजि** 'तू सात बजे पहुँची'। **3. हृव वॉचु सति बजि** 'वह (प्रत्यक्ष) सात बजे पहुँची'। **3. स्व वॉचु सति बजि** 'वह (परोक्ष) सात बजे पहुँची'।

॥ इकारस्य यत् ॥ ११ ॥

पुंलिङ्गस्य यः कर्तृसंबन्धी इकारस्तस्य यकारो भवति स्त्रीलिङ्गविषये ॥ थंकि । श्रान्तास्ते ॥ थच्य । श्रान्तास्ताः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.11

कर्तृप्रत्यय संबन्धी पुंलिंग के इकार का स्त्रीलिंग में यकार होता है। **थंक्य** 'वे थके'। **थचि** 'वे (स्त्रीलिंग) थकीं'।

व्याख्या—

बहुवचन पुंलिंग अन्य पुरुष रूप में यत्व का उच्चारण व्यवहार में है। स्त्रीलिंग बहुवचन में यह यत्व इकार में परिवर्तन होता है। यथा— **हुम थंक्य** 'वे थके'। **हुम थचि** 'वे थकीं' इस दृष्टि से सूत्र के स्पष्टीकरण की व्याख्या बहुवचन रूपों में वर्तमान उच्चारण से भिन्न है। स्त्रीलिंग एकवचन रूप **थंच** 'वह थकी' में भी यकार नहीं है।

॥ अप्रसिद्धचवर्गादकारः ॥ १२ ॥

अप्रसिद्धचवर्गात्परस्य स्त्रीलिङ्गकर्तृसंबन्धिनो यकारस्य अकारो भवति ॥ वाच्च । प्राप्तास्ताः ॥ खछ् * । आरूढास्ताः ॥ दज । दग्धास्ताः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.12

स्त्रीलिंग कृत संबन्धी यकार का अप्रसिद्ध चवर्ग के पश्चात अकार होता है। **वाचु** 'वे पहुँचीं' **खचु** * 'वे चढ़ीं'। **दजु** 'वे जलीं'।

व्याख्या—

स्त्रीलिंग बहुवचन में चवर्ग व्यंजन के पश्चात उकार का उच्चारण है, अकार का नहीं। इस संदर्भ में 8.3.10 सूत्र की व्याख्या के अन्तर्गत दिए गए वाक्य संख्या 1 एवं 2 देख सकते हैं।

॥ सकाराच्च ॥ १३ ॥

सकारात्परस्य प्रत्ययकारस्य अकारो भवति ॥ आस । आसन्नास्ताः ॥ वस । निवसितास्ताः ॥ क्लोस । श्रान्तास्ताः ॥ पक्षे । क्लोछ् ॥

[* खछ् इति छकारस्थाने खच् इति चकारेणोच्चार्यते ।]

अनुवाद–

सूत्र 8.3.13

सकार के पश्चात भी प्रत्यय के यकार का अकार होता है। **आसु** 'वे थीं'। **बसु** 'वे बसीं'। **लोसु** 'वे थकीं'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में भी अकार के स्थान पर अकार ही उच्चरित है।

॥ सामान्यभूते ओन् ओख् ओथ् ओव ओम् ओव् प्रत्ययाः पुंसि ॥ १४ ॥

भावकर्मणां धातूनां सामान्यभूते ओन् आदिप्रत्ययाः पुंलिङ्गैकत्वे कर्मणि बोध्याः ॥ कर्योन्। तेनाकारि ॥ कर्योख्। तैरकारि ॥ कर्योथ्। त्वयाकारि ॥ कर्योव। युष्माभिरकारि ॥ कर्योम्। मयाकारि ॥ कर्योव्। अस्माभिरकारि ॥ कर करणे सामान्यभूते आन् आदिप्रत्ययाः। यागमः सर्वेषु सामान्यपूर्णेषु च (सू० ४६) इति यकारागमः ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.14

पुंलिंग एकवचन कर्म की स्थिति में भावकर्मी धातुओं के सामान्य भूत में **ओन** आदि प्रत्यय संयुक्त होते हैं। **कर्योन** 'उस ने किया (दूरवर्ती भूत काल)। **कर्योख** 'उन्होंने किया (दूरवर्ती भूत काल)'। **कर्योथ** 'तूने किया (दूरवर्ती भूत काल)'। **कर्योवु** 'आप ने किया (दूरवर्ती भूत काल)'। **कर्योम** 'मैंने किया (दूरवर्ती भूत काल)'। **कर्योव** 'हमने किया (दूरवर्ती भूत काल)'। **कर** 'कर' के साथ सामान्य भूत में **ओन** आदि और पूर्ण भूत में सर्वत्र यकारागम होता है।

व्याख्या–

संस्कृत और कश्मीरी में दूरवर्ती भूतकाल व्यक्त करने की व्याकरणिक व्यवस्था है। धातु के साथ उपसर्ग अथवा प्रत्यय संयुक्त करने से यह कार्य सिद्ध होता है। हिन्दी में ऐसी व्यवस्था नहीं है।

यकार और ओकार का संयोग दूरवर्ती भूतकाल का अर्थ सम्प्रेषित तो करता ही है, साथ ही साथ क्रिया में निहित कार्य फलीभूत होने के विषय में संदेह भी ज्ञापित करता है। 8.3.46 सूत्र के अन्तर्गत उक्त संदर्भ का पुनः उल्लेख होगा।

॥ बहुत्वे एकारः ॥ १५ ॥

पुंलिङ्गस्य बहुत्वे कर्मणि सति प्रत्ययादिस्वरस्य एकारो भवति ॥ कर्येन्। तेनाकृपत ॥ कर्येख्। तैरकृपत ॥ कर्येथ्। त्वयाकृपत ॥ कर्येव। युष्माभिरकृपत ॥ कर्येम्। मयाकृपत ॥ कर्येय्। अस्माभिरकृपत ॥ साधनं पूर्ववत्। अनेन प्रत्ययौकारस्य एकारः ॥

'अनुवाद— सूत्र 8.3.15

पुंलिंग बहुवचन कर्म की स्थिति में प्रत्यय के आदि स्वर का एकार हो जाता है। **कर्येन** 'उस ने किए (दूरवर्ती भूत काल)'। **कर्येख** 'उन्होंने किए (दूरवर्ती भूत काल)'। **कर्येथ** 'तूने किए (दूरवर्ती भूत काल)'। **कर्येवु** 'आप ने किए (दूरवर्ती भूत काल)'। **कर्येम** 'मैंने किए (दूरवर्ती भूत काल)'। **कर्येय** 'हम ने किए (दूरवर्ती भूत काल)'। साधन पूर्ववत। प्रस्तुत सूत्र से ओकार का एकार।

व्याख्या—

8.3.3 सूत्र की व्याख्या में स्पष्ट किया गया है, कि ये सभी प्रत्यय अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय हैं। वहीं पर प्रत्ययों को, तालिका में निर्दिष्ट भी किया गया है। ओकार और एकार क्रम से एकवचन और बहुवचन द्योतित करते हैं। यकार और एकार का संयोग क्रिया में निहित कार्य फलीभूत होने के विषय में संदेह ज्ञापित करता है, जैसा कि पूर्ववर्ती सूत्र में अभिव्यक्त किया गया है।

॥ स्त्रियामेयादेशः सर्वत्र ॥ १६ ॥

सर्वत्र सामान्यपूर्णभूते एकत्वबहुत्वयोः कर्मणि च प्रत्ययादिस्वरस्य एय 'आदेशो भवति स्त्रीलिङ्गे एव ॥ कर्येयन्। तेन साकारि ॥ कर्येयन्। तेन सा अकृपत ॥ कर्येयख्। तैः साकारि ॥ कर्येयख्। तैस्ता अकृपत ॥ कर करणे। ओन् ओख् प्रत्ययौ। अनेन ओकारस्य एयादेशः। यागमः सर्वेषु सामान्यपूर्णेषु च (सू० ४६) इति यागमः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.16

स्त्रीलिंग कर्म के दोनों वचनों में सामान्य और पूर्णभूत के प्रत्यय का आदि स्वर सर्वत्र एय हो जाता है। **कर्येयन** 'उस ने की (दूरवर्ती भूतकाल)'। **कर्येयख** 'उन्होंने की (दूरवर्ती भूतकाल)'। **कर** 'कर' के साथ **ओन, ओख** प्रत्यय संयुक्त होते हैं। प्रस्तुत सूत्र से ओकार का **एय** आदेश। 8.3.46 सूत्र के अनुसार **य** का आगम।

व्याख्या–

सामान्य और पूर्ण भूत में स्त्रीलिंग कर्म प्रत्यय के ओकार को **एय** में रूपांतरित करता है। वचन के आधार पर प्रत्यय में कोई परिवर्तन नहीं होता। इस स्थिति में भी यकार और एकार क्रिया में निहित कार्य के फलीभूत होने के विषय में संदेह ज्ञापित करता है।

वर्तमान में उक्त क्रिया पद में वर्णित दो यकारों का उच्चारण नहीं है। एक ही यकार का उच्चारण सिद्ध है। यथा– **करेयन, करेयख**। अन्य उदाहरण– **1. फिलिम वुछेयन** 'उसने फिल्म देख तो ली थी।' **2. फिलिमु वुछेयन** 'उसने फिल्में देख तो ली थी।' **3. फिलिम वुछेयथ** 'तूने फिल्म देख तो ली थी।' **4. फिलिमु वुछेयथ** 'तूने फिल्में देख तो ली थी।'

॥ अप्रसिद्धच़वर्गादॉयः ॥ १७ ॥

स्त्रीलिङ्गस्य सर्वत्र सामान्यपूर्णभूते एकत्वबहुत्वयोः कर्मणि च अप्रसिद्ध-चवर्गात्परस्य प्रत्ययादिस्वरस्य ऑय आदेशो भवति ॥ ब्रज़ॉयन्। सा प्रत्यग्राहि तेन ॥ दित्सॉयन्। सा तेनादायि ॥ ह्रियोस्तकारागमः (सू० ३२) इरकारागमः (८।३।११ सूत्रेण) तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इति चत्वम्। अनेन ऑयादेशः। मर्च़ॉयस्। अस्य नित्यं संबन्धप्रत्ययत्वात् तस्यैवादिस्वरस्य ऑयादेशः ॥ तत्रा-लुप्तपकारेभ्यः कर्तृधातुभ्य (४९ सूत्रस्थेभ्यः) ऑयादेशो विकल्पेन विज्ञातव्यः ॥ ओच़ॉय। वा। ओचेय। शुद्धीबभूव सा ॥ त्रेज़ॉय। वा। तेजेय। तीक्ष्णीब-भूव सा ॥ बावज़ॉय। वा। बावजेय [। रुरुचे सा]। इत्यादि ॥ खोच़ॉय। बिभाय सा ॥ पच़ॉय। प्रतीयाय ॥ रॉच़ॉय। रुरुचे सा ॥ वुछ़ॉय। उत्तस्थौ सा ॥ वछ़ॉय। अवरुरोह सा ॥ खछ़ॉय। आरुरोह सा ॥ दज़ॉय। देहे सा ॥ रोज़ॉय। तस्थौ सा ॥ बुज़ॉयन्। बभ्रज्ज ताम् ॥ खोच़ भये। पच़ ऋणादि-विश्वासे। रॉच़ रोचने। वुथ उत्थाने। वस अवरोहणे। खस आरोहे। दज़ भस्मीभवने। रोज़ स्थितौ। बुज़ भर्जने। ओबावादयः सामान्यपूर्णयोः (सू० ७८) इत्युक्त्या स्त्रियाम् एय प्रत्ययः। तस्य एकारस्य अनेन ऑया-देशः। खस वसोस्थः सर्वत्र (सू० ६६) इति सकारस्य थकारः। तवर्गस्या-प्रसिद्ध (सू० ७२) इति थकारस्य छकारः। बुज़ भर्जने इत्यस्य उन् प्रत्ययः। शेषं पूर्ववत् ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.17**

स्त्रीलिंग कर्म के दोनों वचनों में सामान्य और पूर्णभूत की स्थिति में अप्रसिद्ध च़वर्ग के साथ प्रत्यय संयुक्त होने पर प्रत्यय के आदि स्वर का **ऑय**

आदेश है। ह्यचॉयन 'उस ने खरीदी (दूरवर्ती भूतकाल)'। दिचॉयन 'उस ने दी थी (दूरवर्ती भूतकाल)'। 8.3.32 सूत्र के अनुसार तकारागम। 8.2.11 सूत्र के अनुसार अकारागम।

8.3.72 सूत्र के अनुसार तवर्ग का अप्रसिद्ध च़वर्ग। प्रस्तुत सूत्र से **ऑय** का आदेश, अर्थात संबन्ध प्रत्यय के साथ संलग्न स्वर का **ऑय** आदेश। 8.3.49 सूत्र के अनुसार कर्तृधातुओं में **ऑय** आदेश विकल्प से होता है। **श्रोचॉय** अथवा **श्रोचेय** 'शुद्ध हुए'। **तेज़ॉय** अथवा **तेज़ेय** 'तेज हुए'। **बावज़ॉय** अथवा **बावज़ेय** 'रुचिकर हुए'। इत्यादि **खोचॉय** 'डरे'। **पचॉय** 'विश्वस्त हुए'। **रोचॉय** 'रुचिकर लगे'। **व्वछॉय** 'उठे'। **वछॉय** 'उतरे'। **खछॉय** 'चढ़े'। **दज़ॉय** 'जले'। **रोज़ॉय** 'रहे'। **बुज़ॉयन** 'उसने भुने (दूरवर्ती भूतकाल)'। **खोच़** 'डर'। **पच़** 'विश्वास कर'। **रोच़** 'रोचक बन'। **व्वथ** 'उठ' **वस** 'उतर' **खस** 'चढ़' **दज़** 'जल' **रोज़** 'रह' **बुज़** 'भुन'। 8.3.78 सूत्र से **एय** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से एकार का **ऑय** आदेश। 8.3.66 सूत्र से **खस** और **वस** के सकार का सर्वत्र थकार। 8.3.72 सूत्र से तवर्ग की अप्रसिद्धता अर्थात थकार का छ़कार। **बुज़** 'भुन' इस के साथ **उन** प्रत्यय। शेष पूर्ववत।

व्याख्या–

च़वर्ग के पश्चात **ऑय** के स्थान पर वर्तमान में **एय** का उच्चारण ही सिद्ध है। ग्रन्थकार ने अकर्मक धातुओं के संदर्भ में भी इस विकल्प का उल्लेख किया है। स्पष्टीकरण में पर्याप्त उदाहरण प्रस्तुत हैं।

॥ एयश्च पुंसि ॥ १८ ॥

अप्रसिद्धच़वर्गात्परस्य एय् प्रत्ययस्य पुंलिङ्गविषये ऑय आदेशो भवति। यकारो ऽस्वरः ॥ लॉछ़ॉय्। जिजीवुः ॥ खछ़ॉय्। आरुरुहुः ॥ लस सम्यग्जीवने। खस आरोहे। पुंकर्तरि (सू० ३९) इति एय् प्रत्ययः। लसंश्च (सू० २९,३३,६७,७२) इति। खसवसोस्थ (६६) इति सकारस्य थकारे कृते अनेन एय प्रत्ययस्य ऑय् आदेशः। एयः किम्। लॉछ़ाय्। जिजीवुः ॥ सामान्यपूर्णयोः आय् (सू० ४०)। शेषमुक्तवत् ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.18**

पुंलिंग में अप्रसिद्ध च़वर्ग के पश्चात **एय** प्रत्यय का **ऑय** आदेश है। यकार स्वर रहित है। **लॉछ़ॉय** 'जिए (दूरवर्ती भूतकाल)'। **खछ़ॉय** 'चढ़े (दूरवर्ती भूतकाल)'। **लस** 'दीर्घायु हो' **खस** 'चढ़'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार **एय** प्रत्यय। 8.3.29, 33, 67, 72 सूत्रों के अनुसार **लस** का भी। 8.3.66 सूत्र के अनुसार **खस**

के सकार का थकार। प्रस्तुत सूत्र से एय प्रत्यय का ऑय आदेश। एय क्यों? लॉछाय 'जिए (दूरवर्ती भूतकाल)'। 8.3.40 सूत्र के अनुसार सामान्य और पूर्णभूत में ऑय प्रत्यय। शेष उक्तवत।

व्याख्या–

खस के सकार का वर्तमान में छ़कार के स्थान पर च़कार का व्यवहार ही है। यथा– खच़ॉय। लॉछ़ॉय शब्द भाषा में बहुत कम प्रयुक्त होता है।

॥ इदुदूयुतानां पूर्ववर्णस्वराप्रसिद्धता ॥ १९ ॥

इकारतन्मात्रायुतानामुकारतन्मात्रायुतानामूकारतन्मात्रायुतानां च वर्णानां तत्पूर्ववर्णसंबन्धिनः स्वरस्य अप्रसिद्धता अवधार्या सा चावर्णस्यैव ॥ वाॅत्य । प्राप्ताः ॥ तॉरिन् । तारिताः ॥ पौक । गतः ॥ वॉच़ । प्राप्ता ॥ मॉरुन् । हता ॥ वात प्रापणे । अकर्मिणां भूते कर्तरि एय् (३९ सूत्रेण) । वातस्तात् (सू० ८६) इत्यनेन छिह् आदेशः छकारहकारयोर्लोपः । तार तारणे उन् प्रत्ययः । कर्मणि पुंबहुत्वे इदाद्यस्वरस्य (सू० ४) इत्युकारस्य इकारः । पक गतौ । थकपकोरीवादीनां पुंवर्तमानादेशाश्छहोर्लोपश्च भूते (सू० ७७) इत्यनेन छुह् आदेशः छकारहकारयोर्लोपः । वात प्रापणे ओव् प्रत्ययः । वातस्तात् (सू० ८६) इति छुह् आदेशः छहोर्लोपौ । पुंकर्तृप्रत्ययोकारस्य स्त्रियां च (सू० १०) इत्युकारस्य ऊमात्रादेशः । तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इति चत्वम् । अनेन पूर्ववर्णस्वरस्याप्रसिद्धता । मार मारणे उन् प्रत्ययः । एकत्वे ऊमात्रादेशः (सू० ७) । अनेनोपधाया अप्रसिद्धता ॥

अनुवाद– . सूत्र 8.3.19

इकार उकार तथा ऊकार मात्राओं से युक्त वर्णों के पूर्ववर्ण का स्वर अप्रसिद्ध अवधार्य है। वह स्वर आ वर्ण है। वॉत्य '(वे) पहुँचे'। तॉरिन '(उस ने) उन को पार कराया'। पौक '(वह) चला'। वॉच़ '(वह) पहुँची'। मॉरुन 'उस ने वह मार डाली'। वात 'पहुँच'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार अकर्मक धातु के भूतकाल में एय प्रत्यय। 8.3.86 सूत्र के छकार और हकार का लोप (वर्तमान में छिह का आदेश)। तार 'पार करा' के साथ उन प्रत्यय। 8.3.4 सूत्र के अनुसार कर्म पुंलिंग बहुवचन होने की स्थिति में आदि स्वर का इकार। पक 'चल'। 8.3.77 सूत्र के अनुसार थक, पक आदि धातुओं का पुंलिंग वर्तमान काल में छिह आदेश तथा छ और ह का भूतकाल में लोप। पुंलिंग कर्तृप्रत्यय सूत्र उकार का 8.3.10 सूत्र के अनुसार ऊमात्रा आदेश। 8.3.72 सूत्र के अनुसार तवर्ग का अप्रसिद्ध च़वर्ग। प्रस्तुत सूत्र से पूर्व वर्ण स्वर की अप्रसिद्धता। मार 'मार डाल' के साथ उन प्रत्यय। 8.3.8 सूत्र के अनुसार ऊमात्रादेश। प्रस्तुत सूत्र से उपधा की अप्रसिद्धता।

व्याख्या–

संकल्पित अन्तिम स्वरों द्वारा पूर्व वर्ण के पश्च स्वरों का अवर्तुलीकरण भाषा में सर्वत्र व्याप्त है। यह पश्चगामी स्वरसमतालता का प्रभाव है। इकार निश्चित रूप से इस रूपांतरण का प्रेरक है। उकार तथा ऊकार पश्च स्वर को अवर्तुलाकार बनाने में सहायक नहीं हो सकते। ये स्वर पूर्व स्वरों को वर्तुलाकार बना सकते हैं। अगले सूत्र में यही कथन है। उदाहरण– पर+उ (भूतकालिक प्रत्यय)->**पॊर** 'पढ़ा'। पॊर+इ (स्त्रीलिंग प्रत्यय)->**पॆर** 'पढ़ी'। ये संकल्पित स्वर पश्चगामी रूपांतरण उत्पन्न करने के पश्चात लुप्त होते हैं।

स्पष्टीकरण में छकार और हकार के लोप के विषय में पुनरावृत्तियाँ हुई हैं।

॥ उद्युतस्योपधाया आत ओत्वम् ॥ २० ॥

उकारयुतस्य वर्णस्य य उपधाभूत आकारस्तस्य ओत्वं भवति ॥ तोरुन्। तारितः ॥ वोतु। प्राप्तः ॥ तार तारणे उन्। व्यञ्जनं परेण संधेयम् (सू० ११२) रुकारस्य उपधाया आकारस्य ओकारः। वात प्रापणे। अकर्मिणामिति (३९ सूत्रेण) ओव्। वातस्ताव् (सू० ८६) इति छुह् आदेशः छहोर्लोपश्च। तकारस्य उकारान्तत्वे सिद्धे अनेन उपधाकारस्य ओकारः॥ ओसु। आसीत्॥ आस सत्तायाम् उक्तवत् छुह् आदेशः। अनेन उपधाकारस्य ओकारः। उयुतस्य किम्। तारिन्। तारितास्ते ॥ पूर्वं साधितम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.20

भूतकाल में उकार युक्त धातु के उपधा के आकार का ओकार होता है। **तोरुन** 'उस को पार कराया'। **वोत** 'वह पहुँचा'। **तार** 'पार करा' के साथ **उन** प्रत्यय। 1.1.3 सूत्र के अनुसार संधि। उकार के कारण उपधा के आकार का ओकार। **वात** 'पहुँच'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार अकर्मक के साथ **ओ** प्रत्यय। 8.3.36 सूत्र के अनुसार आदेशित **छुह** के **छ** और **ह** का लोप। तकार के उकार के कारण प्रस्तुत सूत्र से उपधा के आकार का ओकार। **ओस** 'था'। **आस** 'हो'। उक्तवत **छुह** आदेश। प्रस्तुत सूत्र से उपधा के आकार का ओकार। **उ** युक्त वाले क्यों? **तॊरिन** 'उस ने उन को पार कराया। पूर्व सिद्ध।

व्याख्या–

प्रक्रियात्मक भूतकालिक प्रत्यय **उ** उपधा के आकार को ओकार में रूपांतरित करके लुप्त हो जाता है। धातु में एक से अधिक अकार होने की स्थिति में सभी के ओकार होने की संभावना रहती है। यथा– **आपराव** 'खिला' + उ (भूतकालिक प्रत्यय)->**ओपरोव** 'खिलाया'।

॥ पुंस्येकारस्य यूदीतौ कर्मैकत्वानेकत्वे ॥ २१ ॥

पुंल्लिङ्गस्य एकत्वबहुत्वे कर्मणि सति उपधाभूतस्य एकारस्य क्रमेण यूदीतौ भवतः भूतविषये। एकत्वे यूकारः बहुत्वे ईकारः॥ ल्यूखुन्। लिखितम्। लीखिन्। लिखिताः॥ पूर्वं साधितम्। च्यूटुन्। कुट्टितः॥ च़ीटिन्। कुट्टिताः॥ चेट कुट्टने उन्। कर्मणि पुंबहुत्वे (सू० ४) इत्यादिना उकारस्येकारः। अनेन क्रमादुपधाया यूकार ईकारौ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.21

भूतकाल में पुंलिंग कर्म के एकवचन और बहुवचन के उपधा का एकार क्रम से यूकार और ईकार होता है। एकवचन में यूकार बहुवचन में ईकार। **ल्यूखुन** 'उस ने लिखा'। **लीखिन** 'उस ने लिखे'। पूर्व सिद्ध। **च्यूटुन** 'उस ने कूटा'। **च़ीटिन** 'उस ने कूटे'। **चेट** 'कूट' के साथ **उन** प्रत्यय। 8.3.4 सूत्र के अनुसार उकार का इकार। प्रस्तुत सूत्र द्वारा क्रमानुसार उपधा के स्वर का यूकार अथवा ईकार, का निर्देश।

व्याख्या–

भाषा में बहुवचन का संकल्पित प्रत्यय इ है। उक्त इ के प्रभाव से पूर्ववर्ती स्वर वर्तुलाकार नहीं रहते इसलिए ऊकार ईकार में रूपांतरित होता है। यथा– च़्यूट 'कूटा' + इकार (बहुवचन का प्रत्यय)→**च़ीट्य** 'कूटे'। प्रत्यय इ स्वर की मात्रा में परिवर्तन नहीं करता। यदि स्वर दीर्घ है, तो दीर्घ ही रहेगा और ह्रस्व है तो ह्रस्व ही।

॥ फेरव्यहमेलां च ॥ २२ ॥

एते धातवः कर्तर्येव नित्यं भवन्ति। एषां धातूनामुपधाया यूकार-ईकारौ भवतः। भूतविषये॥ फ्यूरु। परिवर्तितः॥ फीरि। परिवर्तिताः॥ व्यूठु। आसितः॥ वीठि। आसिताः॥ म्यूलु। संगतः॥ मीलि। संगताः॥ फेर भ्रमणविह्नीभवन-पश्चात्तापवैलोम्येषु। व्यह उपवेशने। मेल संगमे। पुंकर्तरि (सू० ३९) इति ओव् एय् प्रत्ययौ। खरतरफरफेरमरमोरां रात् (सू० ९१) इति। व्यहो हात् (सू० ९७) इति। गलचलदलडोलफलफुलमेलां लात् (सू० ९३) इति सूत्रैः छुह् छिह् आदेशौ छहांलोपश्च। व्यहः डेपव्यहरोपमषां ठ (सू० ६२) इति हस्य ठः। अनेन सर्वत्र क्रमात् यूदीतौ। मोक्तानां धातूनां किम्। मेठ्यौव्। मधुरीबभूव॥ पेठ्यौव्। मसृतीभूव॥ ब्रठ्यौव्। मूर्खीबभूव॥ मेठ मधुरीभवने।

पेह निर्यासे। ब्रेठ मूर्खीभवने। पुंकर्तरि (सू० १९) इति ओव्। यागमः सर्वेषु सामान्यपूर्णेषु च (सू० ४६) इति यकारागमः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.22

ये धातु नित्य कर्तृप्रयोग में ही रहते हैं। इन धातुओं के उपधा का **यूकार** भूतकाल में **ईकार** में परिवर्तन होता है। **फ्यूर** '(वह) पलटा' **फीर्य** '(वे) पलटे'। **ब्यूठ** '(वह) बैठा'। **बीठ्य** '(वे) बैठे'। **म्यूल** '(वह) मिला'। **मील्य** '(वे) मिले'। **फेर** 'पलट' **ब्यह** 'बैठ'। **मेल** 'मिल'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार पुंलिंग कर्ता की अवस्था में **ओव, एय** प्रत्यय। 8.3.91, 93, 97 सूत्रों से आदेशित **छुह, छिह** के **छ** और **ह** का लोप। 8.3.62 सूत्र से **ब्यह** के **ह** का **ठ** आदेश। प्रस्तुत सूत्र से क्रमानुसार **यू** का **ई**। प्रोक्त धातुओं में ही क्यों? **मेठ्यव** मीठा बना'। **पेड्यव** 'फैला (द्रव्य पदार्थ)' **ब्रेठ्यव** 'मूर्ख बना'। **मेठ** 'मीठा बन'। **पेड** 'फैल'। **ब्रेठ** 'मूर्ख बन'। पुंलिंग कर्ता की स्थिति में 8.3.39 सूत्र से **ओव** प्रत्यय। 8.3.46 सूत्र से सामान्य और पूर्वभूत में सर्वत्र यकारागम।

व्याख्या—

उक्त सूत्र में **फेर**, **ब्यह** और **मेल**। इन तीन अकर्मक धातुओं के बहुवचन रूप की व्याख्या है। **मेठ, पेड** और **ब्रेठ** इन तीनों अकर्मक धातुओं के व्युत्पन्न रूप प्रस्तुत सूत्र से प्रेरित नहीं होते।

॥ स्त्रियामीदेतौ सर्वत्र ॥ २३ ॥

सर्वत्र एकत्वबहुत्वे कर्मणि कर्तरि च स्त्रीलिङ्गविषये उपधायाः क्रमात् ईकार-एकारौ भवतः। एकत्वे ईकारः बहुत्वे एकारः भूतविषये ॥ च्रीटुन्। कुट्टिता ॥ च्रेट्यन्। कुट्टिताः ॥ च्रेट कुट्टने उन्। एकत्वे ऊमात्रादेशः (सू० ८)। अपरत्र। स्त्रियां यत् (सू० ९) इति उकारस्य यकारः। स्त्रियां भूतानेकत्वकर्मणि च (७० सूत्रण) इति टकारस्य चकारः। अनेन क्रमादीदेतौ ॥ फीरु। भ्रान्ता सा ॥ फेर्य। भ्रान्ताः ॥ बीठु। निविष्टा ॥ बेछ्य। निविष्टाः ॥ मीजू। मिलिता ॥ मेज्य। मिलिताः ॥ फेर भ्रमणे। ब्यह उपवेशने। मेल संगमे। पुंकर्तरि (सू० १९) इति ओव् एय्। पूर्ववत् छुह् छिह् आदेशः छहोर्लोपः। पुंकर्तृप्रत्ययोकारस्य स्त्रियां च (सू० १०) इति एकत्र ऊमात्रादेशः। अपरत्र इकारस्य यत् (सू० ११) इति यः। ब्यहः हेपब्यहरोपमर्पा ठ (सू० ६२) इति हस्य ठः। सादेशकर्तृभूतानेकत्वे च (सू० ७०) इति ठकारस्य छकारः। लान्तस्य ज (७४) इति लकारस्य जकारः। अनेन सर्वत्र क्रमादीकार-एकारौ ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.23

स्त्रीलिंग रूपों में उपधा का स्वर एकवचन में **ईकार** बहुवचन में **एकार** सर्वत्र हो जाता है। यह कर्मणि और कर्तरि दोनों प्रयोगों के भूतकाल में संभव है। **च़ीट्न** 'उस ने उस (स्त्रीलिंग एकवचन) को कूटा'। **च़ेच्यन** 'उस ने उन (स्त्रीलिंग बहुवचन) को कूटा'। **च़ेट**, 'कूट' में **उन** प्रत्यय का एकवचन में ऊमात्रादेश (8.3.8 सूत्र)। 8.3.5 सूत्र से स्त्रीलिंग में **यत** अर्थात उकार का यकार। 8.3.70 सूत्र से भूतकाल में स्त्रीलिंग एकवचन कर्म होने पर टकार का चकार। प्रस्तुत सूत्र से क्रमानुसार **ई** और **ए** का आदेश। **फीर** 'वह पलटी'। **फेरि** 'वे पलटीं'। **बीठ** 'वह बैठी'। **बेछि** 'वे बैठीं'। **मीज** 'वह मिली'। **मेजि** 'वे मिली'। **फेर** 'पलट', **ब्यह** 'बैठ', **मेल** 'मिल'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार पुंलिंग कर्तरि प्रयोग में **ओव, एय**। आदेशित **छुह, छिह** के **छ** और ह का लोप पूर्ववत। 8.3.10 सूत्र के अनुसार पुंलिंग कर्तृ प्रत्यय के ओकार का स्त्रीलिंग में भी ऊमात्रादेश। 8.3.11 सूत्र से इकार का यकार। 8.3.62 सूत्र से **ब्यह** के हकार का ठकार। 8.3.70 सूत्र के अनुसार भूतकाल में कर्त्ता के एकवचन होने पर भी ठकार का छकार। 8.3.74 सूत्र से लकार का जकार। प्रस्तुत सूत्र से सर्वत्र क्रमानुसार ईकार तथा एकार।

व्याख्या—

अकर्मक धातुओं में, भूतकाल में, कर्त्ता क्रिया को प्रभावित करता है, और सकर्मक में कर्म। धातु के उपधा का स्वर स्त्रीलिंग रूपों के एकवचन में ईकार तथा बहुवचन में एकार में रूपांतरित होता है। स्पष्टीकरण में पर्याप्त उदाहरण प्रस्तुत हैं।

॥ ओकारस्योकारः सादेशपुंकर्तरि च ॥ २४ ॥

सर्वस्मिन्नेकत्वबहुत्वे पुंकर्मणि प्रत्ययादेशयुते सर्वस्मिन्पुंकर्तरि च उपधाभूतस्य ओकारस्य ऊकारो भवति भूतविषये ॥ चूजुन् । श्रुतः ॥ चूजिन् । श्रुताः ॥ बूलुन् । भाषितम् ॥ बूलिन् । भाषिताः ॥ बोज निशामने । बोल पक्षिशब्दे च । उन् बहुत्वे उकारस्य इत् (४ सूत्रेण) अनेनोपधाया ऊत्वम् ॥ कर्तरि यथा । रूठु । रुष्टः ॥ रूठि । रुष्टाः ॥ रोष रुष्टौ । पुंकर्तरि (सू० ३९) इति ओव् एय् । द्वयपोपमपरोयां याव् (सू० ९५) इति छुह् छिह् आदेशौ छहोर्लोपश्च । ठेपव्यहरोपमपां ठ (सू० ६२) इति पस्य ठत्वम् । अनेन उपधाया ऊकारः । सादेशकर्तरि किम् । पोठ्योव् । पुष्टं तेन ॥ पोर्योव् । पर्याप्तम् ॥ पोठ स्थूलीभवने । पोर पर्याप्त्यनार्द्रत्वयोः पुंकर्तरि (सू० ३९) इति ओव् । यागमः (सू० ४६) ॥

अनुवाद—

सूत्र 8.3.24

पुंलिंग कर्म के दोनों वचनों अथवा पुंलिंग कर्त्ता के दोनों वचनों की स्थिति में उपधा के ओकार का भूतकाल में ऊकार होता है। **बूजुन** 'उस ने सुना'। **बूज़िन** 'उस ने सुने'। **बूलुन** 'उस ने कहा'। **बूलिन** 'उस ने कहे'। **बोज़** 'सुन' **बोल** 'कह'। 8.3.4 सूत्र के अनुसार बहुवचन में उकार का इकार। प्रस्तुत सूत्र से उपधा के स्वर का ऊकार।

कर्तरि के उदाहरण— **रूठ** 'वह रूठा'। **रूठ्य** 'वे रूठे'। **रोष** 'रूठ'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार पु।लिंग कर्ता की स्थिति में **ओव, एय** प्रत्यय। 8.3.95 सूत्र के अनुसार आदेशित **छुह, छिह** के छकार और हकार का लोप। 8.3.62 सूत्र से शकार का ठकार। प्रस्तुत सूत्र से उपधा के स्वर का ऊकार। कर्तरि में ही क्यों आदेश है? **पोठ्योव** 'पुष्ठ किया'। **पोर्योव** 'सामना किया'। **पोठ** 'स्थूल बन' **पोर** 'सामना कर'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार **ओव** तथा 8.3.46 सूत्र के अनुसार **य** का आगम।

व्याख्या—

भूतकाल में वर्तुलाकार स्वर उम्ल्वट (umlaut) के उदाहरण माने जाते हैं। कुछ भाषा शास्त्री कश्मीरी में भी उम्ल्वट की संकल्पना करते हैं। प्रस्तुत सूत्र इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह उम्लव्ट की संकल्पना को निरस्त करता है। क्योंकि मूल धातु में वर्तुलाकार स्वर **ओ** विद्यमान है। भूतकालिक प्रत्यय उ के प्रभाव से ओकार, उकार में परिवर्तित होता है। उदाहरण स्पष्टीकरण में प्रस्तुत हैं।

॥ स्त्रियामूदोतौ ॥ २५ ॥

सर्वस्मिन्नेकत्वबहुत्वे कर्मणि प्रत्ययादेशयुते एकत्वबहुत्वे स्त्रीकर्तरि च उपधाभूतस्य ओकारस्य ऊकार-ओकारौ भवतः भूतविषये ॥ बूजुन् । श्रुता तेन ॥ बोजन् । श्रुतास्तेन ॥ कर्तरि यथा । रूठ् । रुष्टा सा ॥ रोछ्य । रुष्टास्ताः ॥ एवमन्येषां बोध्यम् ॥

अनुवाद—

सूत्र 8.3.25

भूतकाल में स्त्रीलिंग कर्म के एकवचन बहुवचन होने पर अथवा कर्त्ता के स्त्रीलिंग एकवचन बहुवचन होने पर उपधाभूत ओकार का ऊकार—ओकार होता है। **बूज़ुन** 'उस ने सुनी'। **बोज़न** 'उस ने सुनीं'।
कर्तरि के उदाहरण— **रूठ** 'वह रूठी'। **रोछि** 'वे रूठीं'। इसी प्रकार अन्य भी।

व्याख्या—

भूतकाल स्त्रीलिंग कर्म एकवचन होने की स्थिति में उपधाभूत ओकार का

ऊकार हो जाता है। यथा– तॅम्य बूज़ कथ/कथ बूज़न 'उस ने कहानी सुनी।' कर्म के बहुवचन होने की स्थिति में ओकार का निर्देश है। तॅम्य बोज़ु कथ/कथ बोज़न 'उस ने कहानियाँ सुनीं'। दोनों स्थितियों में मूलधातु बोज़ 'सुन' ओकार युक्त है। उदाहरण के वाक्यों से स्पष्ट है, कि सर्वनाम शब्द तॅम्य का प्रयोग करने से अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय न संयुक्त नहीं हो सकता।

॥ मरश्च पुंसि ॥ २६ ॥

मर मरणे इत्यस्य धातोः सर्वस्मिन्कर्तरि पुंलिङ्गविषये उपधाया ऊत्वं भवति भूतविषये॥ मूद्व। मृतः॥ मूदि। मृताः॥ मर मरणे। पुंकर्तरि (सू० ३९) इति ओव् एय्। खरतर (सू० ९१) इत्यादिना छुह् छिह् आदेशछहोर्लोपौ। मरश्च मरणे (सू० ६५) इति रस्य दत्वम्। अनेन उपधाया ऊत्वम्॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.26

भूतकाल में मर 'मर' धातु के साथ कर्त्ता पुंलिंग होने की स्थिति में उपधा के स्वर का ऊकार हो जाता है। मूद 'वह मरा'। मूद्य 'मरे'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार पुंलिंग कर्त्ता होने पर ओव, एय। 8.3.91 सूत्र के अनुसार आदेशित छुह छिह के छ और ह का लोप। 8.3.65 सूत्र के अनुसार मर के रकार का दकार। प्रस्तुत सूत्र से उपधा के स्वर का ऊकार।

व्याख्या–

मर 'मर' धातु के उपधा का अकार, ऊकार में रूपांतरित होता है, तथा र, द में। मध्यम पुरुष एकवचन की स्थिति में – चु मूदुख/मूदुख 'तू मरा'। इस बात का पहले भी निर्देश किया गया है, कि सर्वनाम चु का प्रयोग होने पर भी अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय ख प्रयुक्त हो सकता है।

॥ लसश्च ॥ २७ ॥

लस सम्यग्जीवने इत्यस्य पुंलिङ्गे उपधाया ऊकारो भवति। सर्वैकत्वे रूपातो बहुत्वे अप्रसिद्ध इति ज्ञेयम्॥ लूस्तु। जीवितः॥ लूस्ति। जीविताः॥ लूस्तुख्। जीवितस्त्वम्॥ लूस्तिव। जीविता यूयम्॥ लूस्तुस्। जीवितोऽहम्॥ लूस्ति। जीविता वयम्॥ लस सम्यग्जीवने। पुंकर्तरि (सू० ३९) इति ओव् एय् ओख् एव ओंस् एय् प्रत्ययाः। आसखसफस (सू० ९६) इत्यादिना छुह् छिह् छुख् छिव छुस् छिह् क्रमादादेशाः छहोर्लोपश्च। लसश्च पुंभूते (सू० ११) इति तकारागमः। अनेन उपधाया ऊत्वम्॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.27

पुंलिंग में लस 'दीर्घायु हो' के उपधा का स्वर ऊकार में बदलता है। एकवचन में ख्यात रूप तथा बहुवचन में अप्रसिद्ध रूप होता है। लूस्त 'वह जिया'। लुस्त्य 'वे जिए'। लूसतुख 'तू जिया' लुस्यतव 'आप जिए'। लूसतुस 'मैं जिया'। लुस्त्य 'हम जिए'। लस 'दीर्घायु हो'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार पुंलिंग कर्ता की स्थिति में ओव, एय, ओख, एव, ओस, एय प्रत्यय। 8.3.96 सूत्र के अनुसार आदेशित छुह, छिह, छख, छिव, छुस, छि के छ और ह का लोप। 8.3.33 सूत्र के अनुसार लस में तकारागम प्रस्तुत सूत्र से उपधा के स्वर का ऊकार।

व्याख्या—

लस के उपर्युक्त रूपों का वर्तमान में व्यवहार नहीं है। वर्तमान रूप निम्नलिखित तालिका में अंकित हैं।

	अन्य पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एकवचन	लौस	लौसुख	लौसुस
बहुवचन	लॅस्य	लॅस्यवु	लॅस्य

लस धातु के जो रूप व्यवहार में हैं। उन के आधार पर कह सकते हैं, कि उपधा का स्वर ऊकार में नहीं अपितु ह्रस्व ओकार अर्थात औकार में रूपांतरित होता है। तालिका के सभी एकवचन औकार युक्त हैं। बहुवचन रूपों में इसी औकार का अवर्तुलाकार रूप अॅ सिद्ध है, तथा स का यत्व भी।

॥ स्त्रियामेकत्वानेकत्वे ऊदातावप्रसिद्धौ ॥ २८ ॥

लस सम्यग्जीवने इत्यस्य स्त्रीलिङ्गस्य एकवचनबहुवचनयोः क्रमात् उपधाया अप्रसिद्धौ ऊकार-आकारौ भवतः ॥ [अत्रापि पूर्ववद्बहुत्वे एवाप्रसिद्धतास्तीत्यवधेयम् ॥] लूछ्रु । जीविता ॥ लाछ्र । जीविताः ॥ लूछूख् । जीविता त्वम् ॥ लाछ्रव । जीविता यूयम् ॥ लूछूस् । जीविताहम् ॥ लाछ्र । वयं जीविताः ॥ लसधातोः ओव् आदयः प्रत्ययाः (३९ सूत्रेण) तेषां छुह् आदय आदेशाः छहोर्लोपश्च (९६ सूत्रेण)। पुंकर्तृप्रत्ययोकारस्य स्त्रियां च (सू० १०) इति उकारस्य ऊमात्रादेशः । इकारस्य यत् (सू० ११) इति यः । लसश्च स्त्रियाम् (सू० ६७) इति सकारस्य षकारः । तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इति षकारस्य छकारः । अप्रसिद्धचवर्गादकार (सू० १२) इति सूत्रेण प्रत्ययकारस्याकारः । अनेन उपधायाः क्रमात् अप्रसिद्धौ ऊकार-आकारौ ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.28

स्त्रीलिंग के एकवचन बहुवचन रूपों में उपधा का स्वर क्रम से अप्रसिद्ध तथा ऊकार का ऑकार होता है। स्वरों की अप्रसिद्धता बहुवचन रूपों में पूर्व में वर्णित है। **लूछ़** 'जियी'। **लॉछ़** 'वे जियीं'। **लूछ़ख** 'तू जियी'। **लाछ़व** 'आप जियीं'। **लूछ़स** 'मैं जियी'। **लॉछ़** 'हम जिये'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार **लस** धातु के साथ **आव** आदि प्रत्यय। 8.3.96 सूत्र के अनुसार आदेशित **छुह** आदि के **छ** और **ह** का लोप। 8.3.10 सूत्र के अनुसार उकार का ऊमात्रादेश। 8.3.11 सूत्र के अनुसार इकार का यकार 8.3.67 सूत्र के अनुसार सकार का थकार। 8.3.72 सूत्र के अनुसार तवर्ग का अप्रसिद्ध च़वर्ग अर्थात थकार का छ़कार। 8.3.12 सूत्र के अनुसार यकार का अकार। प्रस्तुत सूत्र से उपधा के स्वर का क्रमानुसार अप्रसिद्ध स्वर।

व्याख्या–

8.3.19 तथा 23 सूत्रों में भी स्त्रीलिंग रूपों के लिए उपधा स्वर अवर्तुलाकार होने का निर्देश है। प्रस्तुत सूत्र भी इसी रूपांतरण की ओर संकेत करता है। वर्तमान में इन सभी स्त्रीलिंग रूपों में छ़कार के स्थान पर, विकल्प से **स** का व्यवहार है।

॥ सामान्यपूर्णयोरन्तिमः सर्वत्र ॥ २९ ॥

सर्वत्र पुंलिङ्गे स्त्रीलिङ्गे च एकत्वे बहुत्वे च सामान्यभूतपूर्णभूतयोर्विषये अन्तिमः अप्रसिद्धाकारादेश एव उपधाया भवति ॥ पुंलिङ्गे यथा । लांछ़ोव्। अजीवीत् ॥ लांछ़ाय्। अजीविषुः ॥ लांछ़ाव्। जिजीव ॥ लांछ़ाय्। जिजीवुः ॥ स्त्रीलिङ्गे यथा । लांछ़ाय । जिजीव सा ॥ लांछ़ाय । जिजीवुः ॥ साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.29

सामान्य भूत और पूर्णभूत के पुंलिंग और स्त्रीलिंग विषयक दोनों वचनों में उपधा के स्वर का आकार तथा अन्तिम स्वर की अप्रसिद्धता का सर्वत्र आदेश है। पुंलिंग यथा– **लॉछ़ोव** 'वह जिया तो था'। **लॉछ़ाय** 'वे जिए तो थे'। **लॉछ़ाय** 'वह जियी'। **लॉछ़ाय** 'वे जियीं'। सिद्धि पूर्ववत।

व्याख्या–

लस धातु के सामान्य तथा पूर्णभूत के सभी स्त्रीलिंग रूपों में छ़कार के स्थान पर सकार का विकल्प है। पुंलिंग रूपों में **छ़कार** की अव्याप्ति है। स्पष्टीकरण में **लॉछ़ाव** और **लॉछाय** शब्दों में, संस्कृत अनुवाद की दृष्टि से,

मध्यम पुरुष के एकवचन तथा बहुवचन प्रत्यय माने गए हैं। यह मुद्रण की त्रुटि हो सकती है। मध्यम पुरुष रूप– लॉछ़ाख और लॉछ़ॉवु मुद्रित होना चाहिए था।

॥ मरो वकारः ॥ ३० ॥

मर मरणे इत्यस्य सर्वत्र पुंलिङ्गे स्त्रीलिङ्गे च एकत्वबहुत्वयोश्च सामान्य-भूतपूर्णभूतयोर्विषये उपधाया वकारो भवति ॥ म्वयोव्। अमृत ॥ म्वयाव्। मम्रे ॥ म्वयेय्। अमृ न्त ॥ म्वयाय्। मम्रिरे ॥ स्त्रीलिङ्गे यथा। म्वयेय। अमृत सा ॥ म्वयाय। सा मम्रे ॥ मर मरणे। पुंकर्तरि (सू० ३९) इति ओव् आव् एय् आय्। यागमः सवर्णे सामान्यपूर्णेषु च (सू० ४६) इति यकारागमः। अनेनोपधाया वत्वम्। मरश्चापुंभूते (सू० ५९) इति रकारलोपः ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.30

सामान्यभूत और पूर्णभूत के दोनों लिंगों तथा दोनों वचनों में मर 'मर' धातु के उपधा का सर्वत्र वकार होता है। **म्वयोव** 'वह मरा तो था'। **म्वयाव** 'वह मरा तो था (दूरस्थ भूतकाल)' **म्वयेय** 'वे मरे (दूरवर्ती भूतकाल)'। **म्वयाय** 'वे मरे तो थे (दूरस्थ भूतकाल)'।

स्त्रीलिंग यथा– **म्वयेय** 'मरी तो थी' **म्वयाव** 'वह मरी तो थी (दूरस्थ भूतकाल)' **मर** 'मर'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार **ओव, आव, एय, आय** प्रत्यय। 8.3.46 सूत्र के अनुसार यकारागम। प्रस्तुत सूत्र से उपधा का वत्व। 8.3.59 सूत्र के अनुसार रकार का लोप।

व्याख्या–

8.3.26 सूत्र के अनुसार **मर** धातु में रकार के दकार का निर्देश है। वर्तमान में पुंलिंग रूपों में दकार तथा स्त्रीलिंग रूपों में यकार का ही प्रयोग व्याप्त है। तीनों पुरुषों के एकवचन बहुवचन रूप तथा स्त्रीलिंग पुंलिंग रूप तालिका बद्ध है।

अन्य पुरुष		मध्यम पुरुष		उत्तम पुरुष	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
		पुलिंग			
मूद	मूद्य	मूदुख	मूदिवु	मूदुस	मूद्य
		स्त्रीलिंग			
म्वयि	म्वयि	म्वयख	म्वयिवु	म्वयस	म्वयि

इस धातु के दूरवर्ती भूतकालिक रूप भी नियमानुसार व्यवहृत है, जहाँ

पर पुंलिंग रूप में भी यकार की संभावना रहती है। यथा– सु म्वयेयव वार्याह काल ब्रोंठ 'वह बहुत समय पहले मरा था'।

॥ स्त्रियां भूते ऽपि ॥ ३१ ॥

मर मरणे इत्यस्य स्त्रीलिङ्गविषये भूते ऽपि उपधाया वकारो भवति ॥ म्वय। मृता ॥ मरधातोः ओव्। तस्य छ्यह् आदेशः छहोर्लोपश्च। अनेनोपधाया वत्वम्। मरश्चापुंभूते (सू० ५९) इति रकारलोपः। स्त्रियां किम्। मूद्। मृतः ॥ पूर्वं साधितम् ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.31

स्त्रीलिंग के भूतकाल में भी **मर** 'मर' के उपधा का वकार होता है। **म्वयि** 'मरी'। **मर** धातु के साथ **ओव** तथा आदेशित **छ्यह** के **छ** और **ह** का लोप। प्रस्तुत सूत्र से उपधा का वत्व। 8.3.59 सूत्र से रकार का लोप। स्त्रीलिंग में क्यों? **मूद** 'मरा'। पूर्व साधित।

व्याख्या–

पूर्व सूत्र में **मर** धातु के सामान्य भूत और पूर्णभूत का वर्णन है। प्रस्तुत सूत्र स्त्रीलिंग के भूतकालिक रूप दर्शाता है। पूर्व तालिका में इन्हीं रूपों का अंकन है।

॥ ह्दियोस्तकारागमः ॥ ३२ ॥

हि ग्रहणक्रीणनधारणेषु। दि दाने। इत्यनयोर्भूतादिषु सर्वत्र तकारागमो भवति ॥ ह्यतुन्। प्रतिगृहीतः ॥ दितुन्। दत्तः ॥ ह्यत्रोन्। प्रत्यग्रहीत् ॥ दित्रोन्। अदात् ॥ ह्यत्रान्। प्रतिजग्राह ॥ दित्रान्। ददौ ॥ भूते उन् (३ सूत्रेण)। सामान्यभूते ओन् (१४ सूत्रेण)। भूत विशेषे आन् (१५ सूत्रेण)। अनेन तकारागमः। इरकारागमः (८।२।११ सूत्रेण)। तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इति तकारस्य चत्वम्।

अनुवाद– सूत्र 8.3.32

है (हि) 'ग्रहण कर, ले, खरीद, धारण कर।' **दि** 'दे।' इन दोनों के भूतकाल में सर्वत्र तकारागम होता है। **ह्योतुन** 'उस ने लिया।' **दितुन** 'उस ने दिया'। **ह्यच़ोन** 'उस ने लिया' (दूरवर्ती भूतकाल)। **दिच़ोन** 'उस ने दिया तो था।' **ह्यच़ान** 'उस ने लिया तो था।' **दिच़ान** 'उस ने दी तो थी।' 8.3.3 सूत्र के अनुसार भूतकाल में **उन**। 8.3.14 सूत्र के अनुसार सामान्य भूत में **ओन**।

8.3.35 सूत्र के अनुसार पूर्णभूत में आन। प्रस्तुत सूत्र से तकारागम। 8.3.11 सूत्र से है का अकारागम। 8.3.72 सूत्र के अनुसार तकार का च़कार।

व्याख्या–

है और दि के सन्दर्भ में तकारागम तथा तकार का च़कार में रूपांतरण भाषा की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।

॥ लसश्च पुंभूते ॥ ३३ ॥

लस सम्यग्जीवने इत्यस्य पुंलिङ्गविषये भूते तकारागमो भवति ॥ लूस्तु । जीवितः ॥ लूस्ति । जीविताः ॥ साधितचरम् । पुंलिङ्गे किम् । लूछु । जीविता सा ॥ भूते किम् । छांछाव् । भिजीव ॥ पूर्वं साधितानि ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.33

लस 'दीर्घायु हो' के पुंलिंग भूतकाल में भी तकारागम होता है। लूस्तु 'वह जिया'। लुस्ति 'वे जिए'। पूर्व सिद्ध। पुंलिंग में क्यों? लुछ़ 'वह जियी'। भूतकाल में क्यों? लॉछ़ाव 'वह जिया (दूरवर्ती भूतकाल)' पूर्व सिद्ध।

व्याख्या–

8.3.27 सूत्र की व्याख्या में वर्णन है, कि लस धातु के उपर्युक्त रूपों का वर्तमान में व्यवहार नहीं है। वर्तमान व्याप्त रूप उसी सूत्र की तालिका में अंकित हैं।

॥ नेरूदीतौ प्रत्ययोकारेकारयोः ॥ ३४ ॥

नि हरणे । अस्माद्धातोः प्रत्ययसंबन्धिनोरुकार-इकारयोः क्रमात् ऊकार-ईकारौ भवतः ॥ न्यून् । हृतः ॥ नीन् । हृताः ॥ नि धातोः उन् । क्रर्पाण धुप् (सू०४) इत्यादिना अपरत्रोकारस्य इकारः । अनेन ऊकार-ईकारौ क्रमात् । पूर्वत्र यत्वम् । अपरत्र स्वरः सवर्णे दीर्घपरलोपौ (सू० १५) ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.34

नि 'ले जा'। इस धातु के साथ प्रत्यय संयुक्त होने पर उकार और इकार का क्रम से ऊकार और ईकार होता है। न्यून 'वह ले गया (पुंलिंग एकवचन वस्तु)'। नीन 'वह ले गया (पुंलिंग बहुवचन वस्तु)'। नि धातु के साथ उम प्रत्यय। 8.3.4 सूत्र के अनुसार अन्य स्थितियों में उकार का इकार परन्तु प्रस्तुत सूत्र के अनुसार क्रमानुसार ऊकार और ईकार। पूर्व की तरह यत्व। दूसरे स्थान में सवर्ण

की स्थिति में स्वर के दीर्घत्व का लोप (1.1.5 सूत्र)।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में **नि** धातु की विशेषता वर्णित है। कर्म का वचन और लिंग **नि** के भूतकालिक रूपों को प्रभावित करता है। इन स्थितियों में सार्वनामिक प्रत्यय अनिवार्य हैं। यथा– **1. दांद न्यून** 'वह बैल ले गया'। **2. गाव नियन** 'वह गाय ले गया'। **3. दांद न्यूथ** 'तू बैल ले गया'। **4. गाव नियथ** 'तू गाय ले गया'। **5. दांद न्यूम** 'मैं बैल ले गया'। **6. गाव नियम** 'मैं गाय ले गया'। **3. दांद नीम** 'मैं बैल (एक से अधिक) ले गया'।

॥ पूर्णभूते आन् आख् आथ् आव आम् आव् प्रत्ययाः पुमेकत्वे ॥ ३५ ॥

भावकर्मिणां धातूनां पूर्णभूते पुंलिङ्गस्य एकत्वे कर्मणि सति आन् आदयः प्रत्ययाः स्युः ॥ बोज़ान्। तेन शुश्रुवे ॥ बोज़ाख्। तैः शुश्रुवे ॥ बोज़ाथ्। शुश्रुवे त्वया ॥ बोज़ाव। युष्माभिः शुश्रुवे ॥ बोज़ाम्। मया शुश्रुवे ॥ बोज़ाव्। अस्माभिः शुश्रुवे ॥ बोज निशामने। पूर्णभूते आन् आदयः प्रत्ययाः। यागमः सर्वेषु सामान्यपूर्णेषु च (सू० ४६) इति यकारागमः। तस्य अप्रसिद्धचवर्गाल्लोप् (सू० ४७) इति लोपः ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.35

कर्म के पुंलिंग एकवचन होने की स्थिति में भावकर्मी धातुओं के पूर्णभूत रूप में **आन** आदि प्रत्यय संयुक्त होते हैं। **बोज़ान** 'उस ने सुना तो था'। **बोज़ाख** 'उन्होंने सुना तो था'। **बोज़ाथ** 'तूने सुना तो था'। **बोज़ाव** आप ने सुना तो था'। **बोज़ाम** 'मैंने सुना तो था'। **बोज़ाव** हम ने सुना तो था'। **बोज़** 'सुन'। पूर्णभूत में **आन** आदि प्रत्यय। 8.3.46 सूत्र के अनुसार सामान्य और पूर्णभूत में यकारागम। 8.3.47 के अनुसार अप्रसिद्ध चवर्ग के आगे यकार का लोप।

व्याख्या–

बोज़ धातु के साथ पूर्णभूत में अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्ययों की संयुक्ति प्रस्तुत सूत्र में स्पष्ट की गई है। वर्तमान में **बोज़** के इन रूपों का पूर्णभूत में व्यवहार नहीं है। 8.3.3 सूत्र के अन्तर्गत वर्णित भूतकालिक रूप ही पूर्णभूत के वर्तमान अभिप्राय में सिद्ध हैं, अतः अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय भी उसी रूप में संयुक्त होते हैं, जैसे वहाँ वर्णित हैं। उदाहरण– **1. बॉथ बूज़ुन** 'उस ने गाना सुना'। **2. बॉथ बूज़ुख** 'उन्होंने गाना सुना'। **3. बॉथ बूज़ुथ** 'तूने गाना सुना'।

4. **बॉथ बूज़वु** 'आपने गाना सुना'। 5. **बॉथ बूज़ुम** 'मैंने गाना सुना'। 6. **बॉथ बूज़** 'हमने गाना सुना'। 8.3.24 सूत्र में ओकार, ऊकार में रूपांतरित होने की प्रक्रिया स्पष्ट की गई है।

॥ धातोरे बहुत्वे ॥ ३६ ॥

पूर्णभूते बहुत्वे कर्मणि सति धातोः पर एकारः प्रयोज्यः ॥ करेयेन् । तेन चक्रिरे ॥ करेयेख् । तैश्चक्रिरे ॥ करेयेथ् । त्वया चक्रिरे ॥ करेयेव । युष्माभिश्चक्रिरे ॥ करेयेम् । मया चक्रिरे ॥ करेयेय् । अस्माभिश्चक्रिरे ॥ कर करणे । पूर्णभूते आन् आदयः । बहुत्वे एकार (सू० १५) इत्याकारस्य एकारः । यकारागमः (४६ सूत्रेण) । अनेन धातोः पर एकारः ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.3.36**

कर्म के बहुवचन होने की स्थिति में पूर्णभूत रूप में धातु के साथ एकार प्रयुक्त होता है। **करेयेन** 'उस ने किया था'। **करेयेख** 'उन्होंने किया था'। **करेयेथ** 'तूने किया था'। **करेयेवु** 'आप ने किया था'। **करेयेम** 'मैंने किया था'। **करेयेय** 'हम ने किया था'। **कर** 'कर'। पूर्णभूत में **आन** आदि प्रत्यय। 8.3.15 सूत्र के अनुसार इकार का एकार। 8.3.46 के अनुसार यकारागम। प्रस्तुत सूत्र से धातु के साथ एकार।

व्याख्या—

पूर्व सूत्र की व्याख्या के अनुरूप ही **कर** के वर्णित पूर्णभूत रूपों का व्यवहार व्यापक नहीं है। 8.3.14 सूत्र के अन्तर्गत वर्णित सामान्य भूत रूप दूरवर्ती भूतकाल रूप का आभास कराते हैं। ग्रन्थकार द्वारा वर्णित 'पूर्णभूत' भी ऐसी ही प्रतीति कराता है। संभवतः इसीलिए वर्तमान में प्रस्तुत रूपों के स्थान पर भूतकाल के रूपों का प्रयोग ही व्यापक है और दूरवर्ती भूतकाल के लिए **करेयोन, करेयोथ, करेयोम** आदि रूप व्यवहृत हैं।

॥ अप्रसिद्धचवर्गाद्ाॅ ॥ ३७ ॥

अप्रसिद्धचवर्गान्ताद्धातोरप्रसिद्ध ऑ प्रयोज्यः ॥ बोज़ॉयेन । तेन शुश्रुविरे ॥ ह्यच़ॉयेन् । प्रतिजगृहिरे ॥ साधितचरम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.3.37**

अप्रसिद्ध चवर्गान्त धातु की स्थिति में धातु के अन्त में अप्रसिद्ध स्वर **ऑ** प्रयुक्त होता है। **बोज़ॉयेन** 'उस ने सुना तो था'। **ह्यच़ॉयेन** 'उस ने लिया तो

था'। सिद्धि पूर्ववत।

व्याख्या–

चवर्ग अर्थात च़, छ़, ज़ से अन्त होने वाले धातुओं के साथ ऑकार संयुक्त होता है। पूर्व सूत्रों की तरह क्रिया के उक्त रूपों का व्यवहार भी वर्तमान भाषा में व्यापक नहीं है।

॥ सामान्यवत्स्त्रीकर्मणि ॥ ३८ ॥

पूर्णभूते स्त्रीलिङ्गस्य एकत्वादिके कर्मणि सति सामान्यभूतवत्स्वरूपाणि भवन्ति। एकत्वबहुत्वयोरेकरूपाणीत्यवधार्यम् ॥ उदाहरणानि सामान्यभूते विशदीकृतानि ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.38

कर्म के स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन की स्थिति में पूर्णभूत के रूप सामान्यभूत के रूपों के समान ही होते हैं। एकवचन तथा बहुवचन के रूप भी समान हैं। सामान्यभूत के स्पष्टीकरण के अन्तर्गत उदाहरण प्रस्तुत हैं।

व्याख्या–

8.3.16 सूत्र की व्याख्या में स्पष्ट किया गया है कि सामान्य और पूर्णभूत में स्त्रीलिंग कर्म प्रत्यय के ओकार को एय में रूपांतरित करता है। वचन के आधार पर प्रत्यय में कोई परिवर्तन नहीं होता। सूत्र की सम्पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत सूत्र पर यथावत प्रभावी है। वहाँ उल्लिखित चारों उदाहरण प्रस्तुत स्थिति में भी प्रासंगिक हैं।

॥ पुंकर्तरि ओव् एय् ओख् एव ओस् एय् भूते प्रत्ययाः ॥ ३९ ॥

अतीतकाले कर्तरि नियतानां धातूनां पुंलिङ्गे कर्तरि सति भूते ओव् आदयः प्रत्ययाः स्युः। ओव् प्रत्ययस्य क्वचित् औव् इति च व्यवह्रियत इति ज्ञेयम् ॥ वुफ्योव्। सा। वुफ्यौव्। उड्डीनः ॥ वुफ्येय्। उड्डीनाः ॥ ईर्योख्। उत्क्रान्तस्त्वम् ॥ ईर्येव। यूयमुत्क्रान्ताः ॥ ग्वब्योस्। गुर्वीभूतोऽहम् ॥ सार्येय्। समीक्षिता वयम् ॥ वुफ विहायसा गतौ। ईर ऊर्ध्वभ्रमणे। ग्वब गौरवे। सार समीक्षणे। अनेन ओव् आदिप्रत्ययाः। यागमः (४६ सूत्रेण) ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.39

भूतकाल में कर्ता पुंलिंग होने की अवस्था में धातु के साथ **ओव** आदि प्रत्यय संयुक्त होते हैं। **ओव** प्रत्यय के स्थान पर कभी कभी **औव** का भी व्यवहार होता है। **वुफ्योव/वुफ्यौव** 'वह उड़ा तो था'। **वुफ्येय** 'वे उड़े'। **यीरयोख** 'तू बहा तो था'। **यीरयेव्** 'आप बहे तो थे'। **ग्वब्योस** 'मैं भारी हुआ तो था'। **प्रारेय** 'हम ने प्रतीक्षा की तो थी'। **वुफ** 'उड़', **यीर** 'बह' **ग्वब** 'भारी हो' **प्रार** 'प्रतीक्षा कर'। प्रस्तुत सूत्र से **ओव** आदि प्रत्यय। 8.3.46 सूत्र से यकारागम।

व्याख्या–

अकर्मक क्रिया की अन्विति भूतकाल में कर्ता के साथ होती है। ये रूप अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्ययों के बिना संभव नहीं है। 8.1.12 सूत्र की व्याख्या के अन्तर्गत इन प्रत्ययों की तालिका अंकित है। प्रत्यय संयुक्त करने के लिए धातु के साथ जिन स्वरों की आवश्यकता रहती है, उन का उल्लेख प्रस्तुत सूत्र में किया गया है। उक्त तालिका में अन्य पुरुष एकवचन बहुवचन तथा उत्तम पुरुष बहुवचन के सार्वनामिक प्रत्यय शून्य अंकित हैं। प्रस्तुत सूत्र में अन्य पुरुष एकवचन बहुवचन के लिए क्रम से **ओव**, **एय** तथा उत्तम पुरुष बहुवचन के लिए भी **एय** प्रत्यय का निर्देश है। वस्तुतः ये प्रत्यय सभी धातुओं के साथ वर्तमान में संभव नहीं है। **ओव** के विकल्प में **औव** का प्रयोग अव्याप्त है। वर्तमान भाषा **ओव** के स्थान पर एअव स्वीकार करती है। यथा– **वुफेयव** 'वह उड़ा तो था'।

॥ सामान्यपूर्णयोः आव् आय् आख् आव आस् आय् प्रत्ययाः ॥ ४० ॥

अतीतकाले कर्तृनियतानां धातूनां पुंलिङ्गे कर्तरि सति सामान्यपूर्णभूतयोर्विषये आव् आदयः प्रत्यया अवधार्याः ॥ सामान्ये यथा। वुफ्याव्। उड्डिड्ये ॥ वुफ्येय्। उड्डिड्यिरे। इत्यादीनि स्वरूपाणि। साधनं पूर्ववत् ॥ पूर्णभूते यथा। म्वकलियाव्। मुमुचे सः ॥ म्वकलियेय्। मुमुचिरे ते ॥ म्वकलियाख्। मुमुचिषे ॥ म्वकलियाव। मुमुचिध्वे ॥ म्वकलियास्। मुमुचेऽहम् ॥ म्वकलियाय्। मुमुचिमहे ॥ म्वकल मुक्तौ। सामान्यपूर्णयोः आव् आदयः प्रत्ययाः। यागमः सर्वेषु सामान्यपूर्णेषु च (सू० ४६) इति यागमः। व्यञ्जनान्तानां पूर्णे यात्पूर्वं इजनादेशप्रत्ययानाम् (सू० ५०) इति इच् आगमः। चकारः स्वरार्थः ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.40

पुंलिंग कर्त्ता की स्थिति में सामान्य और पूर्णभूत में धातु के साथ **आव** आदि प्रत्यय संयुक्त होते हैं। सामान्यभूत यथा– **वुफ्याव** 'वह उड़ा'। **वुफेय** 'वे

उड़े' इत्यादि रूप। सिद्धि पूर्ववत।

पूर्णभूत यथा– **म्यकलियाव** 'वह मुक्त हुआ'। **म्यकलियेय** 'वे मुक्त हुए'। **म्यकलियाख** 'तू मुक्त हुआ'। **म्यकलियाव** 'आप मुक्त हुए'। **म्यकलियास** 'मैं मुक्त हुआ'। **म्यकलियाय** 'हम मुक्त हुए'। **म्यकल** 'मुक्त हो' के साथ सामान्य और पूर्णभूत में **आव** आदि प्रत्यय। 8.3.46 सूत्र के अनुसार **य** का आगम। व्यंजनांत धातुओं के पूर्णभूत धातुओं में 8.3.50 सूत्र के अनुसार **इच** का आगम। (चकार मात्र स्वरार्थ है)

व्याख्या–

पूर्व सूत्रों के उदाहरणों की तरह ही प्रस्तुत सूत्र के उदाहरण भी भाषा में व्यापक नहीं हैं। दोनों सूत्रों के उदाहरण वर्तमान में समान अर्थ सम्प्रेषित करते हैं। प्रत्यय भिन्न होने के उपरान्त भी, आर्थी दृष्टि से रूपों में कोई अन्तर नहीं है। दूरवर्ती भूत के अभिप्राय में इन रूपों का प्रयोग संभव हो सकता है।

॥ संबन्धिप्रत्ययेषु वयोर्लोपः ॥ ४१ ॥

सर्वत्र पुंलिङ्गकर्तृभूतसामान्यपूर्णभूतयोर्विषये संबन्धिप्रत्ययेषु परेषु प्रत्ययसंबन्धिनोर्वकारयकारयोर्लोपो भवति। स च सस्वरस्य न विज्ञेयः किंतु व्यञ्जनयोर्वयोरेव ॥ कुमल्योस्। कोमलपभूत्तस्य ॥ कुमल्येस्। कोमल्यभूवंस्तस्य ॥ कुमल कोमलीभवने। पुंकर्तरि (सू० ३९) इति ओव्-एय् प्रत्ययौ। तच्छब्द (सू० ८। १। ३१) इत्यादिना अस् प्रत्ययः। यागमः। अनेन वयोर्लोपः ॥ आस्। तमागतः ॥ आस्। तमागताः ॥ आहस्। तमागतस्त्वम् ॥ आसस्। तमागतोऽहम् ॥ आस्। तमागता वयम् ॥ व्यञ्जनान्तयोः किम्। कुमल्येवस्। कोमल्यभूत तस्य ॥ आवस्। तमागता यूयम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.41

पुंलिंग कर्त्ता की स्थिति में सामान्य और पूर्णभूत धातुरूपों के साथ सम्बन्ध प्रत्यय संयुक्त होने पर वकार और यकार का सर्वत्र लोप होता है। स्वर के परिवेश में ये लोप संभव नहीं है। व्यंजन की स्थिति में ही **व** और **य** का लोप संभव है। **कुमल्योस** 'वह उस के निमित्त पिघला'। **कुमल्येस** 'वे उस के निमित्त पिघले'। **कुमल** 'पिघल, द्रव्यीभूत हो' के साथ 8.3.39 सूत्र के अनुसार **ओव, एय** प्रत्यय। 8.1.33 के अनुसार **अस** प्रत्यय यकार का आगम। प्रस्तुत सूत्र से **व** और **य** का लोप। **आस** 'वह उस के निमित्त आया'। **आस** 'वे उस के निमित्त आए'। **आहस** 'तू उस के निमित्त आया'। **आसस** 'मैं उस के निमित्त आया'। **आस** 'हम उस के निमित्त आए'। व्यंजनांत ही क्यों? **कुमल्येवस** 'आप उस के निमित्त पिघले'। **आवस** 'आप उस के निमित्त आए'।

व्याख्या–

8.1.35 सूत्र की व्याख्या के अन्तर्गत उल्लेख है, कि भाषा में दो प्रकार के सार्वनामिक प्रत्ययों की व्यवस्था है; अनिवार्य तथा निमित्तार्थ। अन्य पुरुष निमित्तार्थ एक वचन प्रत्यय **स** है। प्रस्तुत सूत्र में इसी निमित्तार्थ **स** प्रत्यय की संयुक्ति के उदाहरण दिए गए हैं। 8.1.33 सूत्र में स्पष्ट किया गया है, कि उत्तम पुरुष एकवचन का अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय भी **स** ही है। परन्तु उक्त उदाहरणों में **स** का प्रयोग निमित्तार्थ प्रत्यय के रूप में ही किया गया है। **आसस** में दोनों प्रकार के **स** विद्यमान हैं। **कुमल्येवस** तथा **आवस** रूप भाषा में वर्तमान नहीं है।

॥ तयोः पूर्वाकार ओदप्रसिद्धत्वे ॥ ४२ ॥

तयोर्वकारयकारयोः पूर्वो य आकारः स क्रमेण ओकारमप्रसिद्धतां चाप्नोति वकारात्पूर्व ओकारं यकारात्पूर्वः अप्रसिद्धतामिति [॥ अयं विधिस्त्वच्छन्द-संबन्धविहिताय् प्रत्ययसद्भाव एव बोध्यः] ॥ ओय्। आगतस्ते ॥ ऑय्॥ आगतास्ते ॥ द्रोय् निर्गतस्ते ॥ द्रॉय्। निर्गतास्ते ॥ च़ोय्। प्रविष्टस्ते ॥ च़ॉय्। प्रविष्टास्ते ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.42

वकार और यकार के पूर्व जो आकार है, वह क्रम से ओकार अथवा अप्रसिद्ध ऑकार हो जाता है। वकार के पूर्व ओकार तथा यकार के पूर्व अप्रसिद्ध ऑकार। यह विधि अन्य संबन्ध प्रत्ययों को छोड़ कर मात्र **य** प्रत्यय के लिए समझनी चाहिए। **ओय** 'वह तेरे निमित्त आया'। **आय** 'वे तेरे निमित्त आए'। **द्रोय** 'वह तेरे निमित्त गया'। **द्रॉय** 'वे तेरे निमित्त गए'। **च़ोय** 'वह तेरे निमित्त घुसा'। **च़ॉय** 'वे तेरे निमित्त घुसे'।

व्याख्या–

मध्यम पुरुष एकवचन निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्यय **य** है। उक्त प्रत्यय संयुक्त होने की स्थिति में एकवचन में अकार का ओकार तथा बहुवचन में ऑकार हो जाता है। शेष निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त होने पर आकार में कोई परिवर्तन नहीं होता। यथा– **(सु) आम** 'वह मेरे निमित्त आया'। **आयम/आम** 'वे मेरे निमित्त आए। **आस** 'वह उस के निमित्त आया'। **आयस/आस** 'वे उस के निमित्त आए'। निमित्तार्थ प्रत्ययों की तालिका निम्नांकित है।

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	स	ख
मध्यम पुरुष	य	वु

॥ ओदतौ वत्वाप्रसिद्धत्वे ॥ ४३ ॥

तयोर्वकारयकारयोः पूर्वौं ओकार–अकारौ क्रमेण वकारमप्रसिद्धतां च प्राप्नुतः ॥ ग्वंयू । गतस्ते ॥ गंयू । गतास्ते ॥ प्यवंयू । पतितस्ते ॥ प्यंयू । पतितास्ते ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.43

वकार और यकार के पूर्व, ओकार तथा अकार क्रम से, वकार एवं अप्रसिद्धता को प्राप्त होते हैं। **ग्वंय** 'वह तेरे निमित्त गया'। **गंय** 'वे तेरे निमित्त गए'। **प्यवंय** 'वह तेरे निमित्त गिरा'। **प्यंय** 'वे तेरे निमित्त गिरे'।

व्याख्या–

उपर्युक्त उदाहरणों के वर्तमान रूप हैं **गोय** 'वह तेरे निमित्त गया'। **गंय** 'वे तेरे निमित्त गए'। **प्योय** 'वह तेरे निमित्त गिरा'। **पेय** 'वे तेरे निमित्त गिरे'। मूल धातु हैं– **गव** 'गया' **प्यव** 'गिरा'।

॥ स्त्रियाम् एय एय एयख् एव एयस् एय प्रत्ययाः ॥ ४४ ॥

स्त्रीलिङ्गे कर्तरि सति भूतादिषु प्रोक्ताः प्रत्यया विज्ञेयाः । तत्र सामान्यपूर्णयोरेकरूपत्वमिति च ध्येयम् ॥ भूते यथा । व्यठ्येय । स्थूलाभूत्सा ॥ लार्येयख् । त्वं स्पृष्टा ॥ नव्येव । नव्या अभूत ॥ वड्येयस् । अवर्धि ॥ वाँवर्येय । चञ्चलीभूता वयम् ॥ व्यठ स्थूलीभवने । लार स्पर्शानुगमनपेशलीकरणेषु । नव अतिशयीभवने नूनतायां च । वड गतिवृद्ध्योः । वाँवर त्वरायाम् । अनेन एयादयः प्रत्ययाः । यागमः (सू० ४६) । लारः स्पर्शानुगमनयोरेव कर्तृप्रत्ययत्वम् पेशलीकरणे तु कर्मप्रत्ययत्वमित्यनुसंधेयम् ॥ सामान्यपूर्णभूतयोर्यथा । व्यठियेय । स्थूलीबभूव ॥ लारियेयख् । पस्पर्शिथ ॥ नवियेव । नूना बभूव यूयम् ॥ वडियेयस् । ववृधे ऽहम् ॥ वाँवरियेय । चञ्चलीबभूविम ॥ पूर्ववत् धातुप्रत्ययाः । यागमः (सू० ४६) । व्यञ्जनान्तानां पूर्णे यात्पूर्वं इजनादेशप्रत्ययानाम् (सू० ५०) इति इच् आगमः । चकारः स्वरार्थः ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.44

उपरोक्त प्रत्यय स्त्रीलिंग कर्त्ता की स्थिति में भूतकाल रूपों के साथ संयुक्त होते हैं। सामान्य तथा पूर्णभूत के रूप समान हैं। भूतकाल यथा– **व्यठेय** 'वह मोटी हो गई'। **लारेयख** 'तू चिपक गई'। **नव्येव** 'आप नवीन हुई'। **बड्येयस**

'मैं बड़ी हुई'। **बाम्बरेय** 'हम तिलमिलाए'। **व्यठ** 'मोटी हो', **लार** 'चिपक', **नव** 'नवीन हो', **बड** 'बड़ी हो', **बाम्बर** 'तिलमिला'। प्रस्तुत सूत्र से **एय** आदि प्रत्यय। 8.3.46 सूत्र के अनुसार **य** का आगम। 'भाग' और 'स्वयं चिपक' के अर्थ में **लार** कर्तृप्रत्ययात्मक तथा 'चिपका' के अर्थ में कर्मप्रत्ययात्मक विदित होता है। सामान्यपूर्णभूत के उदाहरण– **व्यठियेय** 'मोटी हो तो गई थी (दूरवर्ती भूतकाल)'। **लारियेयख** 'तू चिपकी तो थी (दूरवर्ती भूतकाल)'। **नवियेव** 'आप नवीन हो तो गए थे (दूरवर्ती भूतकाल)'। **बडियेयस** 'मैं बड़ी हो तो गई थी (दूरवर्ती भूतकाल)'। धातु प्रत्यय पूर्ववत हैं। 8.3.46 सूत्र के अनुसार **य** का आगम। 8.3.50 सूत्र के अनुसार **इच** का आगम। च मात्र स्वरार्थ है।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में स्त्रीलिंग रूपों के अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय निर्दिष्ट हैं। 8.1.12 सूत्र की व्याख्या में अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्ययों की तालिका अंकित है। स्त्रीलिंग रूप, प्रत्यय के साथ आने वाले स्वर को नियंत्रित करता है। स्पष्टीकरण में दिए गए सामान्य तथा पूर्णभूत रूपों का व्यवहार वर्तमान में अत्यन्त सीमित है।

॥ त्यंबो नित्यम् ॥ ४५ ॥

त्यंब इञ्चाञ्चल्ये इत्यस्य नित्यं स्त्रीलिङ्गप्रत्यया भवन्ति ॥ त्यंब्येयम्। चञ्चल्यभूत्तस्य ॥ त्यंबियेयस्। चञ्चलीबभूव तस्य ॥ साधनं सुगमम् ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.45

त्यंब 'वितृष्ण बन' के साथ नित्य स्त्रीलिंग प्रत्यय ही संयुक्त होते हैं। **त्यंबेयस** 'मैं वितृष्ण हुई'। **त्यंबियेयस** 'मैं वितृष्ण हुई तो थी (दूरवर्ती भूतकाल)'। साधन सुगम है।

व्याख्या–

वर्तमान में **त्यंब** धातु के साथ पुंलिंग प्रत्यय रूप की संयुक्ति भी सम्भव है। यथा– **त्यंब्योस** 'मैं वितृष्ण हुआ'। **त्यंब्योख** 'तू वितृष्ण हुआ'।

॥ यागमः सर्वेषु सामान्यपूर्णेषु च ॥ ४६ ॥

सर्वेषु कर्तृकर्मधातूनां सामान्यभूतेषु पूर्णभूतेषु च यकारागमो भवति च-शब्दात्प्रोक्तानादेशकर्तृधातूनां भूते ऽपि भवति ॥ व्रुतल्योव् । उदमज्जत् ॥ व्रुतल्याव्। उदमज्जत् ॥ व्रुतलियाव्। उन्ममज्ज ॥ तत्योव्। अतप्यत ॥ तत्याव्।

अतप्यत ॥ ततियाव्। तेपे ॥ दर्योव्। अध्रोचत् ॥ दर्याव्। अध्रुवीत् ॥ दरियाव्। दुध्रोव ॥ नम्योव्। अनमत् ॥ नम्याव्। अनामीत् ॥ नमियाव्। ननाम ॥ व्तल ऊर्ध्वीभवने। तत तप्तीभवने। दर स्थैर्याविस्मृतिवर्पनिरोधेषु। नम नम्रीभवने। पुंकर्तरि (सू० ३९) इति ओव्। सामान्यपूर्णयोः आव् (सू० ४०)। अनेन सर्वत्र यकारागमः। व्यञ्जनान्तानां पूर्णे यात्पूर्वं इजनादेशप्रत्ययानाम् (सू० ५०) इति इच् ॥ सादेशकर्तृधातुसामान्यपूर्णयोर्यथा ॥ चज्योव्। पलायांचकार ॥ चज्याव्। पलायामास ॥ तर्योव्। अतारीत् ॥ तर्याव्। ततार ॥ म्वयोव्। अमृत ॥ म्वयाव्। मम्रे ॥ चल चलने। तर तरणे। मर मरणे। ओव् आव् प्रत्ययौ। अनेन यागमः। लान्तस्य ज (सू० ७४) इत्यादिना लकारस्य जकारः। मरो वकार (सू० ३०) इति मर उपधाया वत्वम्। मरश्चापुंभूते (सू० ५९) इति रकारलोपः ॥ कर्मधातुसामान्यपूर्णयोर्यथा। कर्योन्। अकार्षीत् ॥ कर्यान्। चकार ॥ वव्योन्। अवाप्सीत् ॥ वव्यान्। उवाप ॥ कर करणे। वव वापने। ओन्-आन् प्रत्ययौ। अनेन यकारागमः ॥ सादेशकर्तृधातुकर्मधातुसामान्यपूर्णयोः किम्। चलु। पलायितः ॥ चलि। पलायिताः ॥ करुन्। कृतम् ॥ करिन्। कृताः ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.3.46**

कर्त्ता प्रभावित अथवा कर्म प्रभावित सभी धातुओं के सामान्य भूत एवं पूर्णभूत रूपों में यकारागम होता है। सूत्र के **च** शब्द का अर्थ है, कि भूतकाल कर्तृ प्रभावित रूप यकार प्राप्त कर सकते हैं, यदि वह अनादेशित हों। **व्यतल्योव** 'वह उतावला हुआ' **व्यतल्याव** 'वह उतावला हुआ'। **व्यतलियाव** 'वह उतावला हुआ (दूरवर्ती भूतकाल)'। **तत्योव** 'वह तप्त हुआ'। **तत्याव** 'वह तप्त हुआ'। **ततियाव** 'वह तप्त हुआ (दूरवर्ती भूतकाल)' **दर्योव** 'वह स्थिर हुआ'। **दर्याव** 'वह स्थिर हुआ'। **दरियाव** 'वह स्थिर हुआ (दूरवर्ती भूतकाल)'। **नम्योव** 'वह नत हुआ'। **नम्याव** 'वह नत हुआ'। **नमियाव** 'वह नत हुआ (दूरवर्ती भूतकाल)'। **व्यतल** 'उतावला हो' **तत** 'तप्त हो' **दर** 'स्थिर हो' **नम** 'नत हो'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार **ओव**। 8.3.40 सूत्र के अनुसार **आव**। प्रस्तुत सूत्र से सर्वत्र यकारागम। 8.3.50 सूत्र से **इच**। आदेशित कर्ता प्रभावित धातुओं के सामान्य और पूर्णभूत रूप इस प्रकार हैं। **चज्योव** 'वह भागा (दूरवर्ती भूतकाल)'। **चज्याव** 'वह भागा'। **तर्योव** 'वह पार हुआ (दूरवर्ती भूतकाल)'। **तर्याव** 'वह पार हुआ'। **म्वयोव** 'वह मरा (दूरवर्ती भूतकाल)'। **म्वयाव** 'वह मरा'। **चल** 'भाग' **तर** 'पार हो' **मर** 'मर' के साथ **ओव-आव** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से यकारागम। 8.3.74 सूत्र से लकार का जकार। 8.3.30 सूत्र से **मर** के उपधा में वत्व। 8.3.59 सूत्र के अनुसार रकार

का लोप। कर्म प्रभावित धातुओं के सामान्य और पूर्णभूत रूप इस प्रकार हैं। **कर्योन** 'उस ने किया (दूरवर्ती भूतकाल)'। **कर्यान** 'उस ने किया'। **वव्योन** 'उस ने बोया (दूरवर्ती भूतकाल)'। **वव्यान** 'उस ने बोया'। **कर** 'कर'। **वव** 'बो' के साथ **ओन आन** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से यकारागम। आदेशित कर्ता प्रभावित एवं कर्म प्रभावित धातुओं के सामान्यभूत एवं पूर्णभूत रूपों में ही क्यों? **च़ौल** 'वह भागा'। **च़ेंल्य** 'वे भागे'। **कौरुन** 'उस ने किया'। **करिन** 'उस ने किए'।

व्याख्या–

क्रिया रूपों में यकारागम दूरवर्ती भूत का अभिप्राय सम्प्रेषित करता है। 8.3.14 सूत्र की व्याख्या में यह स्पष्ट किया गया है, कि यकार और ओकार का संयोग दूरवर्ती भूतकाल का अर्थ सम्प्रेषित तो करता ही है, साथ ही साथ क्रिया में निहित कार्य फलीभूत होने के विषय में संदेह भी ज्ञापित होता है। वर्तमान में यह रूप सन्देह के अर्थ में अधिक प्रयुक्त होते हैं। ऐसे वाक्य के उपरान्त तत संबन्धी उपवाक्य की आकांक्षा रहती है। यथा– **च़ूर च़ज्योव/च़ज्याव मगर पुलसन रोंट** 'चोर भागा तो था मगर पुलिस ने पकड़ लिया।' वर्तमान में य के साथ ओव, आव इ, आव अंशों का प्रयोग सीमित है। **व्वतलेयव, ततेयव, च़जेयव** आदि रूपों का ही प्रयोग व्यापक है।

॥ अप्रसिद्धच़वर्गाल्लोपः ॥ ४७ ॥

अप्रसिद्धच़वर्गात्परस्य यकारस्य लोपो भवति ॥ कच़्रान्। सूत्रयामास ॥ प्च़्रान्। प्रतिजग्राह ॥ दिज़्रान्। ददौ ॥ मछ़ान्। मर्दयामास ॥ इछ़ान्। इयेष ॥ गिन्ज़ान्। चिक्रीड ॥ ग्रज़ान्। गर्जयामास ॥ वज़ान्। रुरोद ॥ वच़ान्। उवाच ॥ कत सूत्रवेष्टने। हि प्रतिग्रहणक्रीणनधारणेषु। दि दाने। मथ मर्दने। इछ़ इच्छायाम्। गिन्द क्रीडायाम्। ग्रज़ गर्जने। वद रोदने। वन भाषणे। पूर्णभूते (१९ सूत्रेण) आन्। तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२-७१) इति तथदनानां च़ छ़ ज़ झा आदेशाः। हेरकारागमः (८।२।११ सूत्रेण)। यागमः (४६ सूत्रेण)। अनेन लोपः ॥ वाच़्न्। प्राप्ता ॥ वाच़्न। प्राप्ताः ॥ पूर्वं साधितम्। अनेन इकारस्य यत् (सू० ११) इत्यादेशप्राप्तस्य यकारस्य लोपः। अप्रसिद्धात्किम्। च़्रच्यान्। चिच्छेद ॥ च़्रट छेदने। पूर्णभूते (१९ सू०) आन्। यागमः। सामान्यपूर्णयोष्टवर्गस्य चवर्ग (सू० ६९) इति टकारस्य चत्वम् ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.47

अप्रसिद्ध च़वर्ग के पश्चात यकार का लोप होता है। **कच़ान** 'उस ने

काता (तो) था'। **ह्यचा़न** 'उस ने खरीदा (तो) था'। **दिचा़न** 'उस ने दिया (तो) था'। **मछा़न** 'उस ने मला (तो) था'। **यछा़न** 'उस ने इच्छा (तो) की थी'। **गिंज़ान** 'वह खेला (तो) था'। **ग्रज़ान** 'वह गरजा (तो) था'। **वज़ान** 'वह रोया (तो) था'। **वन्यान** 'वह बोला (तो) था'। **कत** 'कात' **है** 'खरीद'। **दि** 'दे'। **मथ** 'मल'। **यछ** 'इच्छा कर'। **गिंद** 'खेल'। **ग्रज़** 'गरज'। **वद** 'रो'। **वन** 'बोल'। 8.3.35 सूत्र के अनुसार **आन**। 8.3.72 और 73 के अनुसार तवर्ग का अप्रसिद्ध च़वर्ग आदेश। 8.2.11 सूत्र के अनुसार **है** का अकारागम। पूर्व सूत्र से यकारागम। प्रस्तुत सूत्र से यकार का लोप। **वॉच़** 'वह पहुँची'। **वाच़ु** 'वे पहुचीं'। अप्रसिद्ध क्यों? **च़चान** 'उस ने फाड़ा (तो) था'। **च़ट** 'फाड़'। 8.3.35 सूत्र से पूर्णभूत में **आन**। 8.3.46 से यकारागम। 8.3.69 से टकार का चकार।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में पूर्व वर्णित यकार के लोप की स्थिति स्पष्ट की गई है। धातु के अन्त में च़वर्ग व्यंजन होने पर यकार लुप्त हो जाता है। स्पष्टीकरण में पर्याप्त उदाहरण प्रस्तुत हैं।

॥ पिगछ़ोर्भूते ॥ ४८ ॥

पि पतने। गछ्ऌ गतौ इत्यनयोर्भूतविषये यकारस्य लोपो भवति॥ प्यौव्। पतितः॥ गौव्। गतः॥ धातोः पुंकर्तरि (सू० ३९) औव् प्रत्ययः। पेरः कारागमः (८।२।११)। गतौ गछ्रो ऽन्त्यस्यैव (सू० ५८) इति छ्लोपः। यागमः। अनेन लोपः। उभयत्र ओकारे औ (सू० १।९) इत्यकारस्य औ परलोपश्च। पूर्वस्य इकारो ऽसवर्णे यो ऽपरलोपं (सू० १।१०) इति यत्वम्। प्यय। पतिता॥ गय। गता॥ धात्वोः एय प्रत्ययौ। यागमः। अनेन लोपः। पेरकारागमः। गछः छ्लोपः। पिगछ्रोः स्त्रियामत्प्रत्ययस्वरस्य (सू० ६०) इति एकारस्य अकारः। तस्य स्वरादल्लोपः (सू० ८।१।१९)। यत्वम्॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.48

प्य (पि) 'गिर', **गछ़** 'जा'। भूतकाल में इन दो के यकार का लोप होता है। **प्योव** 'वह गिरा'। **गोव** 'वह गया'। 8.3.39 सूत्र पुंलिंग कर्ता होने की स्थिति में धातु के साथ **ओव** प्रत्यय। 8.2.11 सूत्र के अनुसार **प्य** के साथ अकारागम। 8.3.58 के अनुसार **गछ़** के **छ** का लोप। प्रस्तुत सूत्र से आदेशित यकार का लोप। 1.1.9 के अनुसार **औ**। 1.1.10 के अनुसार यत्व। **पॅय** 'गिरी'। **गॅय** 'गई'। धातुओं के साथ **एय** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से आदेशित यकार का लोप। **पे** के साथ अकारागम। **गछ़** के **छ** का लोप। 8.3.60 के अनुसार स्त्रीलिंग में एकार का

अकार। 8.1.39 सूत्र से स्वर का लोप। यत्व।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। **पे** और **गछ़** धातु रूपों में भी यकार का लोप होता है। इन दो धातुओं के स्त्रीलिंग रूप, वर्तमान में– **पेयि** 'वह गिरी' तथा **गयि** 'वह गई' हैं।

[॥ सकाराच्च बहुलम् ॥ ४८ क ॥

सकारात्परस्य यकारस्य विभाषया लोपो भवति ॥ फसौव्। वा। फस्यौव्। बद्धीभूतः ॥ फस बद्धीभवने। पुंकर्तरि औव् प्रत्ययः। यागमः। अनेन विकल्पेन लोपः। एवं ठास, दस, बास, मुस, सुसानां ज्ञेयम् ॥ बाहुलकत्वात्क्वचिन्नित्यम्। असौन्। अहासीत् ॥ असान्। जहास ॥ इत्यादि ॥ आवसादीनां निषेधः ॥ आवस्यौव्। विशीर्णः ॥ आवस विशरणे औव् प्रत्ययः। यकारागमः। तस्य बहुलग्रहणाल्लोपाभावः ॥ आवसादयस्तु। आवस ड्वस चस त्रस रस र्स लिस विस व्वलस व्वस इत्यादयः ॥]

अनुवाद– सूत्र 8.3.48 (क)

सकार के पश्चात यकार का विकल्प से लोप होता है। **फसोव/फस्योव** 'वह फँस गया था'। **फस** 'फँस'। पुंलिंग कर्ता की स्थिति में **ओव** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से आदेशित यकार का विकल्प से लोप। **ठास, दस, बास, मुस, सुस** ऐसे ही शब्द हैं। अधिकांश में यह लोप नित्य है। **असोन/असान** 'वह हंसा तो था'। **आवस** आदि में निषेध है। **आवस्योव** 'वह जीर्ण हुआ'। **आवस** 'जीर्ण हो' के साथ **ओव** प्रत्यय। यकारागम का लोप नहीं। **ड्वस, चस़, त्रस, रस, रिस, लिस, विस, व्वलस, व्वस** आदि भी **आवस** की तरह हैं।

व्याख्या–

यदि धातु के अन्त में **स** हो तो यकार का लोप विकल्प से हो सकता है। वर्तमान में यह स्थिति नहीं है। भूतकाल के ऐसे रूपों में यकार यथावत रहता है। यथा– **ठास्योम** 'मैंने टकराया (तो) था। **ठास्योथ** 'तूने टकराया (तो) था'। **ठास्योन** 'उस ने टकराया (तो) था'।

॥ न क्नच् ग्वृच् च्वृच् छ्वच् तेज् पज् रोच् व्यच् ब्रज् बावज् ल्यच् श्रोचाम् ॥ ४९ ॥

क्नच आर्द्रीभवने। ग्वृच पात्रस्थजलादिचेष्टायाम्। च्वृच वृत्तिसंकोचे। छ्वच निःसारीभवने। तेज तीक्ष्णीभवने। पज युक्तीभवने। रोच रोचने। व्यच संभवे। ब्रज दीप्तौ। बावज रोचने। ल्यच निर्बलीभवने। श्रोच शुद्धौ। एभ्यः परस्य यकारस्य लोपो न भवति ॥ क्नच्यौव्। आर्द्रीबभूव ॥ ग्वृच्यौव्। अचेष्टत ॥ च्वृच्यौव्। समकोचीत् ॥ छ्वच्यौव्। निःसारीबभूव ॥ तेज्यौव्। वितेजे ॥ पज्यौव् [। युयुजे] ॥ रोच्यौव्। अरोचिष्ट ॥ व्यच्यौव्। अव्याचीत् ॥ ब्रज्यौव्। अभ्राजिष्ट ॥ बावज्यौव्। अरोचिष्ट ॥ ल्यच्यौव्। निर्बलीबभूव ॥ श्रोच्यौव्। शुद्धोभूत् ॥ धातुभ्यः। पुंकर्तरि (सू० ३९) औव् प्रत्ययः। यागमः (सू० ४६)। तस्य पूर्वोक्तसूत्रेण लोपे प्राप्ते अनेन निषेधः ॥ [अछ् त्रच वुचां च ॥ अछ्यौव्। दुर्बलोभूत् ॥ त्रच्यौव्। अभैषीत् ॥ वुच्यौव्। दग्धोभूत् ॥]

अनुवाद— सूत्र 8.3.49

क्नच् 'भीग' **ग्वृज्** 'धो पात्र के जल से' **च्वृच्** 'वृत संकुचित कर' **छ्वच्** 'सार रहित हो' **तेज्** 'तीक्ष्ण हो' **पज्** 'युक्त हो' **रोच्** 'रुच' **व्यच्** 'समा' **ब्रज्** 'प्रदीप्त हो' **बावज्** 'रुचिकर हो' **ल्यच्** 'निर्बल हो', **श्रोच्** 'शुद्ध हो' इन के पश्चात यकार का लोप नहीं होता। **क्नच्योव** 'वह भीगा (तो) था'। **ग्वृच्योव** 'वह धोया (तो) था'। **च्वृच्योव** 'वह संकुचित हुआ (तो) था'। **छ्वच्योव** 'वह सार रहित हुआ (तो) था'। **तेज्योव** 'वह तीक्ष्ण हुआ (तो) था'। **पज्योव** 'वह युक्त हुआ (तो) था'। **रोच्योव** 'वह रुचिकर बना (तो) था'। **व्यच्योव** 'वह समाया (तो) था'। **ब्रज्योव** 'वह प्रदीप्त हुआ (तो) था'। **बावज्योव** 'वह रोचक हुआ (तो) था'। **ल्यच्योव** 'वह निर्बल हुआ (तो) था'। **श्रोच्योव** 'वह शुद्ध हुआ (तो) था'। 8.3.39 सूत्र के अनुसार पुंलिंग कर्ता की स्थिति में **ओव** प्रत्यय। 8.3.46 के अनुसार यकारागम। प्रस्तुत सूत्र से आदेशित लोप का निषेध। (**अछ्, त्रच्, वुच्** शब्द भी)। यथा **अछ्योव** 'वह दुर्बल हुआ' (तो) था। **त्रच्योव** 'वह डरा (तो) था'। **वुच्योव** 'वह जला (तो) था'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र में यकारागम यथावत रहने के उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।

व्यञ्जनान्तानां पूर्णे यात्पूर्वं इजनादेशप्रत्ययानाम् ॥५०॥

अनादेशप्रत्ययानां येषां धातूनां भूते प्रत्ययानामादेशो न स्यात् तेषां

व्यञ्जनान्तानां पूर्णभूतविषये यकारागमात्प्राक् इच् आगमो भवति चकारः स्वरार्थः ॥ ज़ेठियाव् । दीर्घोबभूव ॥ तम्बलियाव् । चचाल ॥ बडियाव् । ववृधे । पूर्वं साधितानि ॥ अनादेशेभ्यः किम् ॥ म्वयाव् । मम्रे ॥ मेज्याव् । युयुजे ॥ प्रियाव् । पिप्रिये ॥ मर मरणे । मेल संगमे । प्रिय प्रीणने । भूतपूर्णे (३५ सूत्रेण) आव् । यागमः (सू० ४६) । मरो वकार (सू० ३०) इति वत्वम् । मर-श्चापुंभूते (सू० ५९) इति रकारलोपः । लान्तस्य ज (सू० ७४) इत्यादिना लकारस्य जकारः । व्यञ्जनान्तेभ्यः किम् । प्ययाव् । पपात ॥ पि पतने आव् । यागमः । सर्वत्राकारागमो निर्दिष्टवर्जितात् (सू० ८।२।११) इत्यकारागमः । पूर्णभूते किम् । ज़ेठ्योव् । दीर्घीभूतः ॥ साधितचरम् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.50

उन व्यंजनान्त धातुओं का पूर्णभूत में यकारागम से पहले इच आगम होता है, जिन के प्रत्यय भूतकाल में अनादेशित हों। चकार स्वर के लिए है। **ज़ेठियाव** 'वह लंबा हुआ (दूरवर्ती भूतकाल)'। **तम्बलियाव** 'वह ललचाया (दूरवर्ती भूतकाल)'। **बडियाव** 'वह बड़ा हुआ (दूरवर्ती भूतकाल)'। पूर्व सिद्ध। अनादेशित क्यों? **म्वयाव** 'वह मरा (दूरवर्ती भूतकाल)'। **मेज्याव** 'वह मिला (दूरवर्ती भूतकाल)'। **प्रियाव** 'वह प्रिय हुआ (दूरवर्ती भूतकाल)'। **मर** 'मर' **मेल** 'मिल' **प्रिय** 'प्रिय हो'। 8.3.35 सूत्र के अनुसार **आव**। 8.3.46 सूत्र के अनुसार यकारागम। 8.3.30 सूत्र के अनुसार **मर** का वत्व। 8.3.59 के अनुसार **मर** के रकार का लोप। 8.3.74 के अनुसार लकार का जकार। व्यंजनान्त का क्यों? **पैयाव** 'वह गिरा (दूरवर्ती भूतकाल)'। **पे** 'गिर' के साथ **आव** तथा यकारागम। 8.2.11 के अनुसार अकारागम। पूर्णभूत में क्यों? **ज़ेठ्योव** 'वह लंबा हुआ। पूर्व साधित।

व्याख्या—

वर्तमान में **ज़ेठियाव** आदि रूप व्यवहृत नहीं हैं। **ज़ेठ्यव** आदि रूपों का व्यवहार है। अर्थात आधुनिक कश्मीरी में **इच** के स्थान पर **एच** तथा **आव** के स्थान पर **व** का ही आगम मान्य है। 8.3.44, 46 आदि सूत्रों में भी **इयाव** को **एयव** के रूप में ही ग्रहण किया गया हैं।

॥ न गछोऽप्रसिद्धचवर्गाच्च ॥ ५१ ॥

गछ गतौ इत्यस्मात्तथा अप्रसिद्धचवर्गाद्धातोः पूर्वं इच् आगमो न भवति ॥ गयाव् । जगाम ॥ गछ गतौ । पूर्णभूते आव् । यागमः । गतौ गछोऽन्त्यस्यैव (सू० ५८) इति छकारलोपः । खोञ्जाय । बिभाय सा ॥ पञ्जाय । प्रतीपाय सा ॥ खछ्याय । आरुरोह सा ॥ रोजाय । अवतस्थौ सा ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.51

गछ़ 'जा' इस के तथा अप्रसिद्ध च़वर्ग के पूर्व **इच** का आगम नहीं होता। **गयाव** 'वह गया (तो) था। **गछ़** 'जा' के साथ पूर्णभूत में **आव** तथा यकारागम। 8.3.58 सूत्र से छ़कार का लोप। **खोच़ॉय** 'वह डरे (तो) थे'। **पच़ॉय** 'उन्होंने विश्वास किया (तो) था'। **खच़ॉय** 'वह चढ़े (तो) थे'। **रोज़ॉय** 'वह रहे (तो) थे'।

व्याख्या–

गछ़ तथा अन्य प्रोक्त धातु रूप वर्तमान में एकार ही ग्रहण करते हैं। यथा– **गयेयव, खोच़ेयव, पच़ेयव, खच़ेयव, रोज़ेयव**। ये सभी रूप पुंलिंग एकवचन के हैं। स्पष्टीकरण में दिए गए उदाहरणों का लिंग और वचन निर्देशित नहीं है।

॥ अच़्प्रसोराकारः ॥ ५२ ॥

अच़ प्रवेशे। प्रसः कृतादेशस्य च यात्पूर्व आकारागमो भवति ॥ च़ायाव्। विवेश ॥ प्यायाव्। सुषुवे ॥ अच़ प्रवेशे। प्रस प्रसवे। पूर्णभूते आव्। यागमः। अच़ आदेर्लोप (सू० ५७) इति अकारलोपः। प्रसः पिश्च (सू० ५५) इति पि आदेशः। अनेन यात्पूर्व आकारागमः ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.52

अच़ 'प्रवेश कर' तथा **प्रस** 'प्रसवित हो' में यकार के पूर्व आकारागम होता है। **च़ायाव** 'वह प्रविष्ठ हुआ (तो) था'। **प्यायाव** 'वह प्रसवित हुई (तो) थी'। **अच़** 'प्रवेश कर' **प्रस** 'प्रसवित हो' पूर्णभूत में **आव** तथा यकारागम। 8.3.57 सूत्र के अनुसार **अच़** के आदि अकार का लोप। 8.3.55 सूत्र के अनुसार **प्रस** का **पि** आदेश। प्रस्तुत सूत्र से यकार के पूर्व आकारागम।

व्याख्या–

प्रस्तुत उदाहरणों के वर्तमान रूप भी **एयव** युक्त हैं यथा– **च़ायेयव**। **प्रस** स्त्रीपरक कर्म हैं, अतः इस के पुंलिंग रूप संभव नहीं हैं। स्त्रीलिंग रूप में व के स्थान पर **यि** संयुक्त होता है। यथा– **प्यायेयि** 'वह प्रसवित हुई (तो) थी (दूरवर्ती भूतकाल)।

॥ येरात्प्रत्ययादिस्वरस्य च ॥ ५३ ॥

यि आगमने इत्यस्य आकारादेशो भवति प्रत्ययादिस्वरस्य च भूते एव आकारो भवति ॥ आव्। आगतः ॥ यि धातोः ओव् प्रत्ययः। अनेन द्वयोरेवा-

कारः। स्वरः सवर्णे दीर्घपरलोपौ (सू० १।१)। भूत एव किम्। आयोव्। आगमत्सः॥ आयाव्। आजगाम॥ धातोः ओव्-आव् प्रत्ययौ। यागमः। अनेन केवलधातोरेव आकारादेशः॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.53

यि 'आ' इस के आदि स्वर का आकार आदेश है। भूतकाल में प्रत्यय के आदि स्वर का भी आकार होता है। **आव** 'वह आया' **यि** धातु तथा **ओव** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से दोनों का आकार। 1.1.3 सूत्र से दीर्घकरण का लोप। भूत में क्यों? **आयोव** 'वह आया (तो) था। **आयाव** 'वह आया (तो) था (दूरवर्ती भूतकाल)'। धातु पर **ओव, आव** प्रत्यय तथा यकारागम। प्रस्तुत सूत्र से केवल धातु का आकारादेश।

व्याख्या—

आव रूप यथावत भाषा में वर्तमान है। शेष रूपों के लिए **एयव** प्रत्यय ही स्वीकार्य है। यथा— **आयेयव** 'वह आया तो था'।

॥ ज़ेरन्त्यस्वरस्य पूर्ववच्च ॥ ५४ ॥

जि जनने इति धातोरिकारस्याकारो भवति पूर्ववत्प्रत्ययादिस्वरस्य भूत एव आकारो भवति॥ जाव्। जातः॥ जि धातोः ओव्। अनेन धातुप्रत्ययस्वरयोराकारौ। भूत एव किम्। जायोव्। अजनिष्ट सः॥ जायाव्। जज्ञे सः॥ अत्र केवलं धातुस्वरस्यैव न प्रत्ययादिस्वरस्य॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.54

ज़ि 'उत्पन्न हो' धातु के इकार का आकार होता है। प्रत्यय के आदि स्वर का भी भूतकाल में पूर्ववत आकार होता है। **ज़ाव** 'वह उत्पन्न हुआ' के साथ **ओव** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से धातु और प्रत्यय के स्वरों का आकार होता है। भूतकाल में ही क्यों? **ज़ायोव** 'वह उत्पन्न हुआ (तो) था। **ज़ायाव** 'वह उत्पन्न हुआ (तो) था (दूरवर्ती भूतकाल)'। यहाँ केवल धातु का स्वर परिवर्तित होता है प्रत्यय का आदि स्वर नहीं।

व्याख्या—

धातु के रूप में **ज़ि** के स्थान पर **ज़्यव** 'उत्पन्न हो' रूप वर्तमान है। भूतकालिकरूप यथापूर्व सार्वनामिक प्रत्यय ग्रहण करते हैं। जैसे— **ज़ास** 'मैं उत्पन्न हुआ'। **ज़ाख** 'तू उत्पन्न हुआ'। **ज़ाव** 'वह उत्पन्न हुआ'। दूरवर्ती भूतकाल रूप में **एयव** प्रत्यय का व्यवहार व्याप्त है। यथा— **ज़ायेयव** 'वह उत्पन्न हुआ

(तो) था' (दूरवर्ती भूतकाल)।

॥ प्रसः पिश्च ॥ ५५ ॥

प्रस प्रसवे इत्यस्य पि आदेशो भवति प्रत्ययादिस्वरस्य पूर्ववदाकारो भवति ॥ प्याव्। प्रसूतः ॥ प्रस धातोः ओव् प्रत्ययः। अनेन धातोः पि आदेशः

अनुवाद– सूत्र 8.3.55

प्रस 'प्रसवित हो' का **पि** आदेश है। प्रत्यय के आदि स्वर का पूर्ववत आकार हो जाता है। **प्याव** 'वह प्रसवित हुआ'। **प्रस** धातु के साथ **ओव** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से धातु का **पि** आदेश। प्रत्यय के आदि स्वर का आकार। यत्व भी। भूतकाल में ही क्यों? **प्यायोव** 'वह प्रसवित हुआ (तो) था। **प्यायाव** 'वह प्रसवित हुआ (तो) था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **प्यायेय** 'वह प्रसवित हुई (तो) थी'। इन रूपों में केवल **पि** आदेश है।

व्याख्या–

8.2.52 सूत्र की व्याख्या में उल्लेख है, कि **प्रस** स्त्रीपरक कर्म है, अतः इस के पुंलिंग रूप संभव नहीं है। वर्तमान में **प्यायेयि** तथा **प्यायेय** दोनों प्रचलित हैं।

॥ नेरो द्रा च ॥ ५६ ॥

नेर निर्गमने इत्यस्य द्रा आदेशो भवति पूर्ववत्प्रत्ययादिस्वरस्य चाकारो भवति ॥ द्राव्। निर्गतः ॥ द्राय। निर्गता ॥ धातोः ओव्-एय प्रत्ययौ। अनेन धातोर्द्रा आदेशः प्रत्ययस्वरयोराकारः। भूत एव किम्। द्रायोव्। निरगमत् ॥ द्रायाव्। निर्जगाम ॥ द्रायेय्। निर्जग्मुः ॥ अत्र केवलं द्रा आदेशः ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.56

नेर 'निकल' का **द्रा** आदेश है। प्रत्यय के आदि स्वर का आकार पूर्ववत ही है। **द्राव** 'वह निकल गया'। **द्राय** 'वह निकल गई'। धातु के साथ **ओव, एय** प्रत्यय। प्रस्तुत सूत्र से धातु का **द्रा** आदेश। प्रत्यय के स्वर का आकार। भूतकाल में ही क्यों? **द्रायोव** 'वह निकला (तो) था'। **द्रायाव** 'वह निकला (तो) था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **द्रायेयि** 'वह निकली तो थी। इन रूपों में केवल **द्रा** आदेश है।

व्याख्या–

आदेशित **द्रा** के साथ यथा पूर्व सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त होते हैं। जैसे– **अ‍ॅस्य द्राय** 'हम निकले'। **तोह्य द्रॉव्** 'आप निकले'। **हुम द्राय** 'वे निकले'। दूरवर्ती भूतकाल रूप में **एयव** प्रत्यय का ही व्यवहार है यथा– **द्रायेयव** 'वह निकला (तो) था (दूरवर्ती भूतकाल)'।

॥ अच् आदेर्लोपश्च ॥ ५७ ॥

अच् प्रवेशे इत्यस्य धातोराद्यक्षरस्य लोपो भवति चशब्दात्पूर्ववत्प्रत्ययादिस्वरस्याकारो भवति ॥ चाव्। प्रविष्टः ॥ चाय। प्रविष्टा ॥ साधनं पूर्ववत् ॥ भूत एव किम्। चायोव्। अविशत् ॥ चायाव्। विवेश ॥ चायेय। सा विवेश ॥ अनेन केवलम ऽकारलोपः। अत्र प्रसोराकार (सू०५२) इति यात्पूर्वं आकारागमः ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.57**

अच़ 'प्रवेश कर' धातु के आदि अक्षर का लोप होता है, तथा प्रत्यय के आदि स्वर का पूर्ववत आकार। **चाव** 'वह प्रविष्ट हुआ'। **चाय** 'वह प्रविष्ट हुई'। सिद्धि पूर्ववत। भूतकाल में ही क्यों? **चायोव** 'वह प्रविष्ट हुआ (तो) था'। **चायाव** 'वह प्रविष्ट हुआ (तो) था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **चायेय** 'वह प्रविष्ट हुई तो थी'। प्रस्तुत सूत्र से केवल अकार का लोप। 8.3.52 सूत्र के अनुसार आकारागम।

व्याख्या–

भूतकाल के सभी भेदों में **अच़** धातु का मात्र च़कार शेष रहता है। सभी प्रत्यय इसी च़ के साथ संयुक्त होते हैं। यथा– **चास** मैं प्रविष्ट हुआ'। **चाख** 'तू प्रविष्ट हुआ'। **चाव** 'वह प्रविष्ट हुआ'। दूरवर्ती रूपों के लिए अन्य पुरुष एकवचन **एयव** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **चायेयव** 'वह प्रविष्ट हुआ था (दूरवर्ती भूतकाल)'। उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष एकवचन रूप **एयो** प्रत्यय प्राप्त करते हैं। यथा– **बु चायेयोस** 'मैं प्रविष्ट तो हुआ था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **चु चायेयोख** 'तू प्रविष्ट तो हुआ था (दूरवर्ती भूतकाल)।

॥ गतौ गछो ऽन्त्यस्यैव ॥ ५८ ॥

गछ् गतौ युक्तीभवने च। इत्यस्य धातोर्गतौ विषये अन्त्याक्षरस्यैव लोपो भवति न प्रत्ययादिस्वरस्याकारः। गोव्। गतः ॥ गय। गता ॥ साधितवत्म्। गतौ किम्। गंछु। गंछि ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.58**

गछ़ 'जा' का प्रयोग 'चाहिए' के अर्थ में भी हो सकता है। 'जा' अर्थ विषयक धातु के रूप में अन्तिम अक्षर का लोप होता है। प्रत्यय के आदि स्वर का आकार नहीं होता। **गव** (गोव्) 'वह गया'। **गयि** (गय) 'वह गई'। पूर्व सिद्ध। 'जा' अर्थ में ही क्यों? **गोछ़, गॅछ़।**

व्याख्या–

गछ़ का मूल अर्थ 'जा' है। इस के भूतकालिक रूपों में **छ़** का लोप हो जाता है। यथा– **बु गोस** 'मैं गया'। **अँस्य गयि** 'हम गए'। **चु गोख** 'तू गया'। **तौह्य गॅवु** 'आप गए'। **हु गव** 'वह गया'। **हुम गयि** वे गए'। वृतिमूलक अर्थ 'चाहिए' में **छ़** का लोप नहीं होता। यथा– **बुलबुल गोछ़ वन्य पकुन** 'बुलबुल को अब चलना चाहिए था'। **ननु गॅछ़ वन्य पकुन्य** 'नन्हीं को अब चलना चाहिए था'।

॥ मरश्चापुंभूते ॥ ५९ ॥

मर मरणे। इत्यस्य धातोः पुंलिङ्गभूतं वर्जयित्वा शेषे सर्वत्रातीते अन्त्याक्षरस्य लोपो भवति॥ म्वयोव्। अमृत॥ म्वयाव्। मम्रे सः॥ म्वय। मृता॥ म्वयेय। मम्रे सा॥ साधितचरम्। अपुंभूते किम्। मूद्। मृतः॥ मर धातोः ओव् प्रत्ययः। तस्य (९१ सूत्रेण) छुह् आदेशः छहोर्लोपश्च। मरश्च पुंसि (सू० २६) इत्युपधाया ऊत्वम्। मरश्च मरणे (सू० ६५) इति रकारस्य दत्वम्॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.59

मर 'मर' इस धातु के पुंलिंग भूत को छोड़ कर शेष सभी रूपों में अंतिम अक्षर का लोप होता है। **म्वयोव** 'वह मरा तो था'। **म्वयाव** 'वह मरा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)। **म्वयि** 'वह मरी'। **म्वयेय** 'वह मरी तो थी (दूरवर्ती भूतकाल)'। पूर्व सिद्ध। पुंलिंग भूतकाल वर्जित क्यों? **मूद** 'वह मरा'। **मर** धातु के साथ **ओव** प्रत्यय। 8.3.91 सूत्र से आदेशित **छुह** के **छ ह** का लोप। 8.3.26 सूत्र से उपधा का ऊत्व। 8.3.65 सूत्र से रकार का दकार।

व्याख्या–

पुंलिंग भूतकाल में **मर** के अन्तिम अक्षर **र** का **द** हो जाता है। इसलिए अंतिम अक्षर का लोप नहीं है। शेष सभी रूपों में प्रत्यय संयुक्त होने पर अंतिम अक्षर अर्थात **र** का लोप हो जाता है। उदाहरण स्पष्टीकरण में प्रस्तुत हैं।

॥ पिगछ़ोः स्त्रियामत्प्रत्ययस्वरस्य ॥ ६० ॥

पिं पतने। गछ़ गतौ। इत्यनयोर्भूते प्रत्ययादिस्वरस्य अकारो भवति॥ प्यय। पतिता॥ प्यय। पतिताः॥ प्ययख्। पतिता त्वम्॥ प्ययव। पतिता यूयम्॥ प्ययस्। पतिताहम्॥ प्यय। पतिता वयम्॥ गय। गता॥ गय। गताः॥ गयख्। गता त्वम्॥ गयव। गता यूयम्॥ गयस्। गताहम्॥ गय।

गता वयम् ॥ धातोः पराः एय् आदिप्रत्ययाः। यागमः। तस्य पिगच्छोर्भूतः (सू० ४८) इति लोपः। अनेन प्रत्ययस्वरस्य अकारः। एव प्रत्ययस्य (६१ सूत्रेण) यः। पेरकारागमः (८।२।११ सूत्रेण)। यत्वम् ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.60

पे (पि) 'गिर'। गछ् 'जा' इन दोनों के भूतकालिक रूप में प्रत्यय के आदि स्वर का अकार हो जाता है। पेयि 'वह गिरी'। पेयि 'वे गिरीं'। पेयख 'तू गिरी'। पेयवु 'आप गिरीं'। पेयस 'मैं गिरी'। पेयि 'हम गिरी'। गयि 'वह गई'। गयि 'वे गईं'। गयख 'तू गई' गयिवु 'आप गईं'। गयस 'मैं गई' गयि 'हम गईं'। धातु के साथ एय आदि प्रत्यय संयुक्त हैं। य का आगम। 8.3.48 सूत्र से (प्रत्यय के यकार का) लोप। प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के स्वर का अकार। 8.3.61 सूत्र से प्रत्यय में यकार। 8.2.11 सूत्र से पे का अकार तथा यत्व।

व्याख्या–

पे और गछ् के भूतकालिक स्त्रीलिंग रूपों के प्रत्ययों के स्वरूप इस सूत्र में प्रस्तुत हैं। साथ ही साथ मूल धातु पे और गछ् के रूपांतरण का भी उल्लेख है।

॥ मध्यमानेकत्वे यत् ॥ ६१ ॥

यत् यकारो भवतीति स्पष्टम्। उदाहरणं पूर्वसूत्रे साधितमेव ॥ प्यपव। पतिता यूयम् स्त्री० ॥ गयव। गता यूयम् स्त्री० ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.61

यकार का आगम स्पष्ट है। उदाहरण पूर्व सूत्र में निर्दिष्ट हैं। पेयिवु 'आप गिरीं'। गॅयिवु 'आप गईं।

व्याख्या–

पूर्व सूत्र में मध्यम पुरुष बहुवचन स्त्रीलिंग रूपों के उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। यहाँ उन्हीं उदाहरणों की पुनरुक्ति है।

॥ डेषव्यहरोषमषां ठः सर्वत्र ॥ ६२ ॥

डेष प्रेक्षणे। व्यह उपवेशने। रोष रुष्टौ। मष विस्मृतौ। एषां धातूनां सर्वत्र पुंलिङ्गे स्त्रीलिङ्गे एकानेकत्वे च सर्वेषु भूतेषु चान्त्याक्षरस्य ठकारो भवति ॥ ड्यूठुन्। दृष्टः ॥ डीठिन्। दृष्टाः ॥ डीठून्। दृष्टा ॥ डेठ्यन्। दृष्टास्ताः ॥ धातोः

पर उन् प्रत्ययः । कर्मणि पुंबहुत्वे (सू० ४) इति उकारस्य इकारः । पुंस्येका- रस्य यूदीताव् (सू० २१) इत्युपधायाः क्रमात् यू-ईकारौ । स्त्रीलिङ्गे तु । एकत्वे ऊमात्रादेशः (सू०८)। स्त्रियां यत् (सू०५) इति। बहुत्वे यकारः(सू०५)। स्त्रिया- मीदेतौ सर्वत्र (सू० २३) इत्युपधाया ईकार-एकारौ । अनेन सर्वत्र अन्त्यस्य ठकारः । स्त्रियां भूतानेकत्वकर्मणि च (७० सूत्रेण) इति ठस्य छः । एवं । डेछ्योन्। अद्राक्षीत्॥ डेछ्यान्। ददृशे ॥ स्त्रीलिङ्गे यथा ॥ डेछ्येयन्। ददृशे सा॥ ब्यूठु। उपविष्टः॥ रूठु। रुष्टः॥ मेठु। विस्मृतः॥ धातूनां परः ओव् प्रत्ययः। तस्य छुह् आदेशः छहोर्लोपश्च। ब्यहः फेरव्यहमेलां च (सू० २२) इत्यनेन यूकारः। रोष ओकारस्योकारः सादेशपुंकर्तरि च (सू० २४) इत्युपधाया ऊकारः। अनेन सर्वत्र ठकारः। मषः इदुदूद्युतानां पूर्ववर्णस्वराप्रसिद्धता (सू० १९)। एवं बेछ्याव्। समास्त सः॥ रोछ्याव्। रुरोष सः। मछ्याव्। विसस्मे सः॥ साधनं पूर्ववत्॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.62

डेष 'देख' **बेह** (ब्यह) 'बैठ' **रोष** 'रूठ' **मष** 'भूल'। इन धातुओं के पुंलिंग, स्त्रीलिंग एवं एकवचन, बहुवचन के सभी भूतकालिक रूपों में अंतिम अक्षर का ठकार होता है। **ड्यूठुन** 'उस ने देखा'। **डीठिन** 'उस ने देखे'। **डीठुन** 'उस ने देखी'। **डेछ्यन** 'उस ने देखीं'। धातु के साथ **उन** प्रत्यय। 8.3.4 सूत्र के अनुसार कर्म के पुंलिंग बहुवचन होने पर उकार का इकार। 8.3.21 सूत्र के अनुसार उपधा के स्वर का क्रम से यूकार और ईकार। स्त्रीलिंग एकवचन रूप में 8.3.8 सूत्र से ऊ मात्रादेश (तथा ऊकार का अप्रसिद्ध स्वर में रूपांतरण)। 8.3.5 सूत्र से स्त्रीलिंग बहुवचन में यकार। 8.3.23 से स्त्रीलिंग रूपों में उपधा का ईकार, एकार। प्रस्तुत सूत्र से अंतिम अक्षर का ठकार सर्वत्र। 8.3.70 से ठकार का छकार। **डेछोन** 'उस ने देखा (तो) था'। **डेछान** 'उस ने देखा (तो) था (दूरवर्ती भूतकाल)'। स्त्रीलिंग में जैसे— **डेछेयन** 'उस ने देखी (तो) थी'। **ब्यूठ** 'वह बैठा' **रूठ** 'वह रूठा'। **मोठ** 'वह विस्मृत हुआ'। इन धातुओं के साथ **ओव** प्रत्यय। आदेशित **छुह** के **छ** और **ह** का लोप। 8.3.22 सूत्र के अनुसार **ब्यह** के साथ यूकार। 8.3.24 के अनुसार **रोष** के ओकार का ऊकार। प्रस्तुत सूत्र से सर्वत्र ठकार। 8.3.19 के अनुसार **मष** धातु के पूर्व वर्ण के स्वर की अप्रसिद्धता। **बेछाव** 'वह बैठा तो था'। **रोछाव** 'वह रूठा तो था'। **मछाव** 'वह भूला तो था'। (सिद्धि पूर्ववत्)।

व्याख्या—

डेश, ब्यह, रोश और **मश** इन धातुओं की विशेषता यह है, कि भूतकालिक रूपों में दोनों लिंग और दोनों वचन, अन्तिम अक्षर को ठकार बनाते हैं। अतिरिक्त भूतकालिक रूपों में नियमानुसार ठकार का रूपांतरण छकार में होता है। **बेछाव** आदि वर्तमान में **बेछेयव रोछेयव/रोशेयव, मछेयव/मशेयव** रूप में व्यापक है।

॥ कुच़ह्वचोस्तः ॥ ६३ ॥

कुच़ आर्द्रीभवन। ह्वच़ विक्लीभवने। इत्यनयोरन्त्याक्षरस्य तकारो भवति सर्वत्र॥ कुत। अतिम्यत्॥ कुत्य। अतिम्यन्॥ कुच़्योव्। अतिमीत्॥ कुच़्याव्॥ तितेम॥ ह्वत॥ अकुथ्यत्॥ ह्वत्य। अकुथ्यन्॥ ह्वच़ोव्। अक्रोथीत्॥ ह्वच़ांय्। चुकुथुः॥ धात्वोः परौ ओव्–एय् प्रत्ययौ। प्रथमयोः छुह् छिह् आदेशौ छहो-र्लोपश्च। अनेन चकारस्य तकारादेशः। स च तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इति निर्देशादप्रसिद्धो ज्ञेयः। अपरयोश्चकारस्य तकारे कृते तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इत्यनेन तकारस्य चकारः। एयश्च पुंसि (सू० १८) इत्यनेन एकारस्य आंय आदेशः॥

अनुवाद— **सूत्र 8.3.63**

कुच़ 'भीग' **ह्वच़** 'सड़' इन दोनों धातुओं के अन्तिम अक्षर का सर्वत्र तकार हो जाता है। **कुत** 'वह भीगा' **कुत्य** 'वे भीगे'। **कुच़्योव** 'वह भीगा तो था'। **कुच़्याव** 'वह भीगा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **हौत** 'वह सड़ा' **हौत्य** 'वे सड़े'। **हौच़ोव** 'वह सड़ा तो था'। **हौच़ॉय** 'वे सड़े तो थे' (दूरवर्ती भूतकाल)। धातु के साथ **ओव, एय** प्रत्यय। आदेशित **छुह, छिह** के **छ** और **ह** का लोप। प्रस्तुत सूत्र के चकार का तकार। 8.3.72 सूत्र से तवर्ग का चवर्ग निर्देश। 8.3.18 सूत्र से **एकार** का **ऑय** आदेश।

व्याख्या—

कुच़ और **ह्वच़** के चकार का, भूतकाल के सभी रूपों में, तकार हो जाता है। अतिरिक्त व्युत्पन्न रूपों में पुनः चकार प्रकट होने का कारण यह है, कि 8.3.72 के अनुसार तकार का सर्वत्र चकार सिद्ध है। अर्थात यह मूल धातु का चकार न होकर तकार से रूपांतरित चकार है।

॥ दज़रोज़व्वुपजां दः ॥ ६४ ॥

दज भस्मीभवने। रोज स्थितौ। व्वुपज उत्पत्तौ। इत्येषां धातूनामन्त्यस्य दकारो भवति ॥ दंद्व। दग्धः ॥ दंद्दि। दग्धाः ॥ रूद्व। अवस्थितः ॥ रूद्दि। अवस्थिताः ॥ व्वुंद्व। उत्पन्नः ॥ व्वुंद्दि। उत्पन्नाः ॥ धातुभ्यः ओव्-एय् प्रत्ययौ। तयोः छुह् छिह् आदेशौ ॥ रोजः ओकारस्योकारः सादेशपुंकर्तरि च (सू० २४) इत्युपधाया ओकारस्य ऊकारः। अनेनान्त्यस्य दत्वम् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.64

दज़ 'जल' रोज़ 'रह', व्वपज़ 'उत्पन्न हो' इन धातुओं के अन्त्य अक्षर का दकार होता है। दौद 'वह जला'। दॅद्य 'वे जले'। रूद 'वह रहा' रूद्य 'वे रहे'। व्वपुद 'वह उत्पन्न हुआ'। व्वपुद्य 'वे उत्पन्न हुए'। धातुओ के साथ ओव, एय प्रत्यय। आदेशित छुह्, छिह के 'छ व ह का लोप। 8.3.24 सूत्र के अनुसार रोज़ के ओकार का ऊकार। प्रस्तुत सूत्र से अंतिम अक्षर का दकार।

व्याख्या—

इन तीन धातुओं का अंतिम अक्षर अर्थात ज़, द में रूपांतरित होता है। पूर्व सूत्र की तरह प्रस्तुत सूत्र में भी भाषा का सर्वव्यापी नियम प्रत्यावर्तित होता है। सर्वव्यापी नियम यह है, कि व्युत्पन्न रूपों में कवर्ग और टवर्ग, चवर्ग में रूपांतरित हो सकता है, तथा तवर्ग, च़वर्ग में। प्रस्तुत दोनों सूत्रों में यह नियम विपरीत दिशा में सिद्ध है। अर्थात च़वर्ग का तवर्ग निर्देश है, अर्थात दज़ आदि रूप दौद आदि रूपों में परिणत होते हैं। व्वपज़ का प्रयोग सीमित है।

॥ मरश्च मरणे ऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥

मर मरणसंधापनयोरित्यस्य मरणार्थे अन्त्याक्षरस्य दकारो भवति अस्त्रियाम् ॥ मूद्व। मृतः ॥ मूद्दि। मृताः ॥ मरश्च पुंसि (सू० २६) इत्युपधाया ऊत्वम्। अनेन रकारस्य दकारः। अस्त्रियां किम्। म्वय। मृता ॥ धातोः ओव् प्रत्ययः। तस्य। मरः स्त्रियां स्त्रीप्रत्ययादेशा (सू० ९२) इति सूत्रेण छ्यह् आदेशः छहोर्लोपश्च। स्त्रियां भूतेऽपि (सू० ३१) इत्युपधाया वत्वम्। मरश्चापुंभूते (सू० ५९) इति रकारस्य लोपः। मरणार्थे किम्। मंरुन। संधापितः ॥ मंरून्। संधापिता ॥ सुगममेव ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.65

स्त्रीलिंग रूपों को छोड़ कर 'मर' अर्थ वाले **मर** धातु के अन्तिम अक्षर का दकार होता है। (मर का दूसरा अर्थ है चिपका)। **मूद** 'वह मरा'। **मूद्य** 'वे मरे'। 8.3.26 सूत्र के अनुसार उपधा के स्वर का ऊत्व। प्रस्तुत सूत्र से रकार का दकार। स्त्रीलिंग में क्यों नहीं? **म्वयि** 'वह मरी'। धातु के साथ **ओ** प्रत्यय। 8.3.92 के अनुसार आदेशित **छ्यह** के **छ ह** का लोप। 8.3.31 के अनुसार भूत के स्त्रीलिंग में उपधा के स्वर का वत्व। 8.3.59 के अनुसार भूतकाल के पुंलिंग रूप में रकार का लोप। 'मर' अर्थ वाला क्यों? **मोरुन** 'उस ने चिपकाया'। **मॅरिन** 'उस ने चिपकाए'। यह सुगम है।

व्याख्या—

'मर' के अर्थ में **मर** धातु अकर्मक है। **चिपका** के अर्थ में यह धातु सकर्मक है। इसलिए कर्म का लिंग-वचन ही क्रिया को प्रभावित करता है।

॥ खसवसोस्थः सर्वत्र ॥ ६६ ॥

खस आरोहणे। वस अवतरणे। इत्यनयोः सर्वत्र पुंलिङ्गे स्त्रीलिङ्गे च अन्त्यस्य थकारो भवति॥ खंथु। आरूढः॥ वंथु। अवतीर्णः॥ खंछ़ू। आरूढा॥ वंछ़ू। अवतीर्णा॥ साधनं पूर्ववत्। स्त्रियामन्त्यस्य थकारे कृते तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इत्यादिना छकारः॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.66

खस 'चढ़' **वस** 'उतर' इन के अंतिम अक्षर का, सर्वत्र पुंलिंग और स्त्रीलिंग में, थकार हो जाता है। **खोत (खोथ)** 'वह चढ़ा'। **वोथ** 'वह उतरा'। **खॅच (खॅछ)** 'वह चढ़ी'। **वॅछ** 'वह उतरी'। सिद्धि पूर्ववत। 8.3.72 सूत्र के अनुसार स्त्रीलिंग में अन्त के थकार का अप्रसिद्ध छकार।

व्याख्या—

खस का भूतकालिक रूप आज की भाषा में **खोत** है। अर्थात यहाँ सकार का रूपांतरण थकार में नहीं, अपितु तकार में सिद्ध है। इसी प्रकार स्त्रीलिंग रूप **खॅच** ही व्यवहार में हैं।

॥ ळसश्च स्त्रियाम् ॥ ६७ ॥

ळस सम्यग्जीवने इत्यस्य स्त्रीलिङ्गविषये अन्त्यस्य थकारो भवति॥ ळोसधातोरपि चेष्यते॥ ळंछ़ू। जीविता॥ ळांछ़। जीविताः॥ धातोः ओव् एय्

प्रत्ययौ तयोरादेशौ। पुंकर्तृप्रत्ययोकारस्य स्त्रियां च (सू० १०) इत्युकारस्य ऊमात्रादेशः। इकारस्य यत् (५ सूत्रेण)। अनेन सकारस्य थकारः। तस्य तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इति छः। अप्रसिद्ध (सू० १२) इत्यादिना प्रत्यययकारस्य अकारः। स्त्रियामेकत्वानेकत्वे ऊदात्वाप्रसिद्धाव् (सू० २८) इति धातूपधाया अप्रसिद्धौ ऊकार–औकारौ ॥ स्त्रियां किम्। लूस्तु। जीवितः॥ प्रत्ययादेशे कृते। लसश्च पुंभूते (सू० ३३) इति तकारागमः। लसश्च (सू०२७) इत्युपधाया ऊत्वम्॥

अनुवाद– सूत्र **8.3.67**

लस 'दीर्घायु हो' के स्त्रीलिंग विषय में अंतिम अक्षर का थकार हो जाता है। यह थकार विकल्प से होता है। **लॅछ़** 'वह दीर्घायु हुई'। **लॉछ़** 'वे दीर्घायु हुईं'। धातु के साथ **ओव, एय** प्रत्यय। 8.3.10 सूत्र के अनुसार उकार का ऊमात्रादेश। 8.3.5 के अनुसार इकार का यत्व। प्रस्तुत सूत्र से सकार का थकार। 8.3.72 के अनुसार थकार का छ़कार। 8.3.12 के अनुसार प्रत्यय के अकार का अप्रसिद्ध स्वर। 8.3.28 सूत्र के अनुसार उपधा के स्वर का अप्रसिद्धिकरण। स्त्रीलिंग में क्यों? **लॊस** 'वह दीर्घायु हुआ' **लूस्त** (8.3.33 सूत्र के अनुसार तकारागम) 8.3.27 सूत्र के अनुसार उपधा का ऊत्व।

व्याख्या–

स्त्रीलिंग रूपों में **लॅछ़** आदि रूपों का व्यवहार व्यापक नहीं है। **लॅस** आदि रूप ही प्रयुक्त होते हैं। 8.3.28 सूत्र में भी इस विकल्प का उल्लेख है।

इस धातु के उपधा का स्वर ऊकार न हो कर **ओकार** में रूपांतरित होता है, तथा तकारागम का भी प्रयोग नहीं होता। इसलिए **लूस्त** के स्थान पर **लॊस** का प्रयोग व्याप्त है।

॥ अनादेशकर्तृधातुभूतादौ नो आदेशाः ॥६८॥

येषां धातूनां कर्तरि प्रत्ययस्यादेशो न भवति तेषां भूतसामान्यभूतपूर्णभूतेषु वक्ष्यमाणा आदेशाः नो भवन्ति॥ क्रश्योव्। कृशोभवत्॥ क्रश्याव्। कृशोभूत्॥ क्रशियाव्। कृशीबभूव॥ जेठ्योव्। दीर्घोभवत्॥ जेठ्याव्। दीर्घोभूत्॥ जेठियाव्। दीर्घीबभूव॥ बुड्योव्। वृद्धीबभूव॥ बुड्याव्। वृद्धीबभूव॥ बुडियाव्। वृद्धीबभूव॥ कान्योव्। काणीबभूव॥ कान्याव्। काणीबभूव॥ कानियाव्। काणीबभूव॥ ठीक्योव्। अतिष्ठत्॥ ठीक्याव्। अस्थात्॥ ठीकियाव्। तस्थौ॥ स्वग्योव्।

सुमूल्यीबभूव ॥ स्वग्याव्। सुमूल्यीबभूव॥ स्वगियाव्। सुमूल्यीबभूव ॥ तत्योव्। अतप्यत ॥ तत्याव्। अतापि ॥ ततियाव्। तेपे॥ तन्योव्। अकृष्यत ॥ तन्याव्। तन्वीबभूव ॥ तनियाव्। तन्वीबभूव॥ क्रट कार्श्ये। जेठ आयतीभवने। बुड स्थविरीभवने। कान काणीभवने। ठीक स्थितौ। स्वग मूल्याल्पतायाम्। तत तप्तीभवने। तन विरलीभवने॥ ओव् आव् आव् प्रत्ययाः। यागमः। तृतीये। व्यञ्जनान्तानां पूर्णे यात्पूर्वं इजनादेशप्रत्ययानाम् (सू० ५०) इति इच्। चकारः स्वरार्थः। एवं स्त्रीलिङ्गेष्वपि बोध्यम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.3.68**

अनादेशित कर्तृ धातुओं के प्रत्ययों का भूत, सामान्य भूत एवं पूर्णभूत में वक्ष्यमान आदेश नहीं होता। **क्रट्योव** 'वह दुबला हुआ'। **क्रट्याव** 'वह दुबला हुआ तो था'। **क्रटियाव** 'वह दुबला हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **ज़ेठ्योव** 'वह लंबा हुआ'। **ज़ेठ्याव** 'वह लंबा हुआ तो था'। **ज़ेठियाव** 'वह लंबा हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **बुड्योव** 'वह बूढ़ा हुआ'। **बुड्याव** 'वह बूढ़ा हुआ तो था'। **बुडियाव** 'वह बूढ़ा हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **कान्योव** 'वह काना हुआ'। **कान्याव** 'वह काना हुआ तो था'। **कानियाव** 'वह काना हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)', **ठीक्योव** 'वह टिका'। **ठीक्याव** 'वह टिका तो था'। **ठीकियाव** 'वह टिका तो था (दूरवर्ती भूतकाल) **स्वग्योव** 'वह सस्ता हुआ' **स्वग्याव** 'वह सस्ता हुआ तो था', **स्वगियाव** 'वह सस्ता हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **तत्योव** 'वह तप्त हुआ', **तत्याव** 'वह तप्त हुआ तो था'। **ततियाव** 'वह तप्त हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **तन्योव** 'वह पतला हुआ'। **तन्याव** 'वह पतला हुआ तो था'। **तनियाव** 'वह पतला हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **क्रट** 'दुबला हो'। **ज़ेठ** 'लंबा हो'। **बुड** 'बूढ़ा हो'। **कान** 'काना हो'। **ठीक** 'टिक'। **स्वग** 'सस्ता हो'। **तत** 'तप्त हो'। **तन** 'पतला हो' के साथ **ओव, आव, आव** प्रत्यय। यकार का आगम पूर्णभूत में। 8.3.50 सूत्र के अनुसार यकार के पूर्व **इच** का आगम। (चकार स्वरार्थ)। इसी प्रकार स्त्रीलिंग में भी जानना चाहिए।

व्याख्या—

प्रत्यय संयुक्त होने पर प्रोक्त धातु यथावत रहते हैं, उन में कोई भी रूपांतरण नहीं होता। उद्धृत व्युत्पन्न रूप वर्तमान में व्यवहृत नहीं हैं। वर्तमान में भूतकालिक रूप, **क्रट्यव** 'वह दुबला हुआ'। **क्रट्योख** 'तू दुबला हुआ'। **क्रट्योस** 'मैं दुबला हुआ', व्यवहृत हैं। दूरवर्ती भूतकाल के रूप हैं— **क्रटेयव, क्रटेयोख, क्रटेयोस**। उपरोक्त सभी धातुओं के रूप इसी प्रकार सिद्ध हैं।

॥ सामान्यपूर्णयोष्टवर्गस्य चवर्गः ॥ ६९ ॥

अनादेशव्यतिरिक्तानां शिष्टानां कर्तृभावकर्मधातूनां सर्वेषां सामान्यभूते पूर्णभूते च टवर्गस्य क्रमेण चवर्गादेशो भवति ॥ चेच्योन् । अकुट्टयत् ॥ चेच्यान् । कुट्टयामास ॥ डेछ्योन् । अदृश्यत ॥ डेछ्यान् । ददृशे ॥ गंज्योन् । अबान्त्सीत् ॥ गंज्यान् । बबन्ध ॥ रञोन् । अपाक्षीत् ॥ रञान् । पपाच ॥ चेट कुट्टने । डेष प्रेक्षणे । गंड ग्रन्थे । रन पाके । ओन्-आन् प्रत्ययौ । डेषव्यहरोषमषां ठः सर्वत्र (सू० ६२) इति षकारस्य ठकारः । यागमः (सू० ४६) । अनेन ट ठ डानां च छ जा आदेशाः [। रनस्तु । नान्तस्य ञ (सू० ७३) इत्यनेन नकारस्य ञत्वम् । अप्रसिद्धचवर्गाल्लोप (सू० ४७) इति यकारस्य लोपः] । कर्तृधातूनां यथा । फच्याव् । उद्भिद्यते स्म सः ॥ रोछ्याव् । रुरोष ॥ ब्रज्याव् । निममज्ज ॥ छ्यञाव् । छिद्यते स्म ॥ फट काष्ठभेदाङ्कुरोद्भेदयोर्जलनिमज्जनादिषु । रोष रुष्टौ । ब्रड निमज्जने । छ्यन छेदे । आव् प्रत्ययः । रोषः डेषव्यहरोषमषां ठः सर्वत्र (सू० ६२) इति ठकारः । यागमः । अनेन ट ठ डानां च छ जा आदेशाः [। छ्यन इत्यस्य नकारस्य नान्त (सू० ७३) इति ञत्वम् । अप्रसिद्ध (सू० ४७) इत्यनेन यलोपः । शेषं पूर्ववत्] ॥ एवं भावधातूनामपि बोध्यम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.3.69**

कर्तृभावकर्म धातुओं के सामान्य और पूर्णभूत सभी आदेशित रूपों के अंतिम टवर्ग का क्रम से चवर्ग आदेश है। **चेच्योन** 'उस ने कूटा तो था'। **चेच्यान** 'उस ने कूटा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)। **डेछोन** 'उस ने देखा तो था'। **डेछान** 'उस ने देखा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **गंज्योन** 'उस ने बांधा तो था'। **गंज्यान** 'उस ने बांधा तो था (दूरवर्ती भूत)'। **रन्योन** 'उस ने पकाया तो था'। **रन्यान** 'उस ने पकाया तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **चेट** 'कूट'। **डेष** 'देख'। **गंड** 'बाँध' **रन** 'पका' के साथ **ओन, आन** प्रत्यय। 8.3.62 सूत्र के अनुसार शकार का ठकार। 8.3.46 सूत्र के अनुसार **य** का आगम। प्रस्तुत सूत्र से **ट, ठ, ड** का **च, छ, ज** में आदेश। 8.3.73 सूत्र के अनुसार **रन** के नकार का यकार। 8.3.47 के अनुसार यकार का लोप। कर्तृधातुओं के उदाहरण— **फच्याव** 'वह डूबा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **रोछाव** 'वह रूठा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **ब्वजाव** 'वह

डूबा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **छन्याम्न** 'वह पतला हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **फठ** 'डूब'। **रोष** 'रुठ'। **ब्वड** 'डूब'। **छन** 'पतला हो' के साथ **आव** प्रत्यय। 8.3.62 सूत्र के अनुसार **रोष** के षकार का ठकार। **य** का आगम। प्रस्तुत सूत्र से **ट,ठ,ड** का क्रम से **च,छ,ज** का आदेश। 8.3.73 सूत्र के अनुसार **छन** के नकार का न्यकार। 8.3.47 से **य** का लोप। इसी प्रकार भाव धातु भी।

व्याख्या–

इन सभी धातुओं के साथ प्रत्यय संयुक्त होने पर अंतिम वर्ण का रूपांतरण होता है। सकर्मक धातुओं के उदाहरण में **चे़च्यान** आदि रूप व्यवहार में नहीं हैं। वर्तमान में **चे़च्योन** आदि रूप ही दूरवर्ती भूतकाल का अर्थ सम्प्रेषित करते हैं। **डेश** में **श** का **छ** रूपांतरण विकल्प से होता है अर्थात **डेशोन** का प्रयोग भी व्यवहार में है। किन्तु अकर्मक धातुओं में **रोश** के शकार का छकार में रूपांतरण संभव नहीं है।

॥ सादेशभूतकर्तृकर्मिणोरनेकत्वे च स्त्रियाम्॥७०

भूते प्रत्ययादेशयुतानां कर्तृधातूनां भूते कर्मिधातूनां स्त्रीलिङ्गे कर्तरि कर्मणि सति बहुत्वविषये टवर्गस्य चवर्गादेशो भवति सर्वत्र सामान्यभूते पूर्णभूते च ॥ स्त्रीकर्तरि यथा। फंटू। मग्ना सा ॥ फच्य। मग्नास्ताः ॥ मंठू। विस्मृता सा ॥ मछ्य। विस्मृतास्ताः ॥ ब्वंडू। निमग्ना सा ॥ ब्वज्य। निमग्नास्ताः ॥ छ्यंञ्‌। छिन्ना सा ॥ छ्यञ्‌। छिन्नास्ताः ॥ फट काष्ठभेदादिषु। मष विस्मृतौ। ब्वड निमज्जने। छ्यन छेदे। ओव्-एय् प्रत्ययौ तयोः छुह् छिह् आदेशौ छहोर्लोपश्च। पुंप्रत्ययोकार (सू० १०-११) इत्यादिना ऊमात्रादेशः इकारस्य च यः। मषः ठकारः। अनेन टादीनां बहुत्वे चाद्या आदेशाः [। नस्य (सू० ७३) ञः]। स्त्रीकर्मणि च यथा। च्रेच्यन्। कुट्टितास्ताः ॥ डेछ्यन्। दृष्टास्ताः ॥ गंज्यन्। बद्धास्ताः ॥ रञन्। पच्यन्ते स्म ताः ॥ च्रेच्येयन्। कुट्टयामास स ताम् ॥ डेछ्येयन्। ददृशे सा तेन ॥ गंज्येयन्। बबन्धे सा तेन ॥ रञेयन्। पेचे सा तेन ॥ अत्र सामान्यपूर्णभूतस्वरूपेषु पूर्वसूत्रेणादेशे सिद्धे ऽपि भूतस्वरूपार्थमेव योगारम्भः। धातोः उन्। स्त्रियां यत् (सू० ९) इति उकारस्य यकारः। डेषः ठः (सू० ६२)। अनेन क्रमात् टवर्गस्य चवर्गादेशः [। नस्य (७३ सूत्रेण) ञः]। बहुवचने किम्। च्रीटून्। कुट्टिता सा तेन ॥ डीठून्। दृष्टा सा तेन ॥ गंडून्। बद्धा सा तेन ॥ रंधून्। पक्वा सा तेन ॥ साधितचरम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.70**

भूतकाल में आदेशित प्रत्यय युक्त कर्तृधातु तथा कर्मधातु के स्त्रीलिंग

बहुवचन रूपों में सर्वत्र सामान्य भूत और पूर्णभूत में टवर्ग का चवर्ग हो जाता है। स्त्रीलिंग कर्तृ रूप– **फॅट** 'वह डूबी'। **फचि** (फच्य) 'वे डूबीं'। **मॅठ** 'वह भूली'। **मछि** (मछ्य) 'वे भूलीं'। **बॅड** (ब्यॅड) 'वह डूबी'। **ब्यजि** (ब्यज्य) 'वे डूबीं'। **छेन्य** 'फटी'। **छेनि** (छ़न्य) 'वे फटीं'। **फट** 'डूब', **मश** 'भूल', **छ्यन** 'फट' **ब्यड** 'डूब' के साथ **ओव, एय** प्रत्यय। आदेशित **छुह् छिह** में **छ** और **ह** का लोप। 8.3.10, 11 सूत्र के अनुसार ऊमात्रादेश और इकार का **य**। **मश** के शकार का ठकार। प्रस्तुत सूत्र से **ट** आदि का बहुवचन में **च** आदि आदेश। 8.3.73 के अनुसार **न** का **न्य**। स्त्रीलिंग कर्म रूप– **चे़च्यन** 'उस ने कूटीं'। **डेछ्यन** 'उस ने देखीं'। **गंज्यन** 'उस ने बाँधी'। **रन्यन** 'उस ने पकाई'। **चे़च्येयन** 'उस ने कूटी तो थी (दूरवर्ती भूतकाल)'। **डेछयेयन** 'उस ने देखी तो थी (दूरवर्ती भूतकाल)'। **गंज्येयन** 'उस ने बांधी तो थी (दूरवर्ती भूतकाल)'। **रन्येयन** 'उस ने पकाई तो थी (दूरवर्ती भूतकाल)'। सामान्य और पूर्णभूत स्वरूपों में पूर्व सूत्र की आदेश सिद्धि भूतकालिक अर्थ में ही योजक है। धातु के साथ **उन**। 8.3.5 के अनुसार स्त्रीलिंग में उकार का यकार। 8.3.62 के अनुसार **डेश** के **श** का ठकार। प्रस्तुत सूत्र से टवर्ग का क्रम से चवर्ग आदेश। 8.3.73 से नकर का न्यकार। बहुवचन में ही क्यों? **चीट़ुन** 'उस ने कूटी'। **डीठ़ुन** 'उस ने देखी'। **गॅँडुन** 'उस ने बाँधी। **रॅनिन** 'उस ने पकाई'। सिद्धि पूर्ववत।

व्याख्या–

स्त्रीलिंग बहुवचन के अकर्मक एवं सकर्मक धातु रूपों में टवर्ग का क्रम से चवर्ग रूपांतरण हो जाता है। स्त्रीलिंग एकवचन में इस प्रकार के चवर्ग रूपांतरण की संभावना नहीं है। उदाहरण स्पष्टीकरण में प्रस्तुत हैं।

॥ कवर्गस्यैकत्वे ऽपि ॥ ७१ ॥

प्रत्ययादेशयुतानां स्त्रीलिङ्गे कर्तरि सति कर्मिधातूनां कर्मणि सति एकत्व-बहुत्वयोः कवर्गस्य चवर्गादेशो भवति सर्वत्र सामान्यपूर्णयोरपि॥ थंचू। श्रान्ता सा ॥ थच्य। श्रान्तास्ताः ॥ ह्रंछू। शुष्का सा ॥ ह्रछ्य। शुष्कास्ताः ॥ लंजू। लग्ना ॥ लज्य। लग्नाः ॥ थक श्रमे। ह्रख शोषे। लग संगे पीडायां साम-ञ्जस्ये च। ओव्-एय् प्रत्ययोः छुह् छिह् आदेशौ। पुंप्रत्ययोकार (सू० १०।११) इत्यादिना ऊमात्रा-यकारौ। अनेन कादीनां चादयः॥ कर्मिणां यथा। छंचून्।

अवकीर्णा तेन ॥ छच्यन्। अवकीर्णास्तेन ॥ लीछून्। लिखिता तेन ॥ लेछ्यन्। लिखितास्तेन ॥ दंजून्। आहता तेन ॥ दज्यन्। आहतास्तेन ॥ छक कीर्णने। लेख लेखने। दग घातने। उन् प्रत्ययः। उकारस्य एकत्वे

ऊमात्रादेशः (सू० ८)। बहुत्वे यकारः (सू० ५)। स्त्रियामीदेतौ सर्वत्र (सू० २३) इत्युपधाया ईकार-एकारौ। अनेन कखगानां चछजा आदेशाः॥ सर्वेषाम् सामान्यपूर्णयोर्यथा। थच्योव्। थच्याव्। शश्राम॥ ह्छ्योव्। ह्छ्याव्। चस्कन्द॥ लज्योव्। लज्याव्। ललाग॥ छच्योन्। छच्यान्। अवाकिरत् तं सः॥ लेछ्योन्। लेछ्यान्। लिलेख तं सः॥ दज्योन्। दज्यान्। आजघान तं सः॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.71

कर्तरि प्रयोग में कर्ता तथा कर्मणि प्रयोग में कर्म धातुओं के साथ स्त्रीलिंग प्रत्यय संयुक्त होने पर एकवचन तथा बहुवचन दोनों रूपों में सामान्य और पूर्णभूत में कवर्ग का सर्वत्र चवर्ग आदेश है। **थॅच** 'वह थकी'। **थचि (थच्य)** 'वे थकीं'। **हॊछ** 'वह सूखी'। **ह्वछि (ह्वछय)** 'वे सूखीं'। **लॅज** 'वे लगीं'। **लजि (लज्य)** 'वे लगीं'। **थक** 'थक'। **ह्वख** 'सूख' **लग** 'लग' के साथ **ओव, एय** प्रत्यय। आदेशित **छुह, छिह** के **छ** और **ह** का लोप। 8.3.10, 11 के अनुसार ऊमात्रा का यकार। प्रस्तुत सूत्र से **क** आदि का **च** आदि। कर्मणि प्रयोग के उदाहरण— **छॆचुन** 'उस ने बिखेरीं'। **छॆच्यन** 'उस ने बिखेरीं'। **लीछुन** 'उस ने लिखी'। **लेछ्यन** 'उस ने लिखीं'। **दॅजुन** 'उस ने कूटी'। **दज्यन** 'उस ने कूटीं'। **छख** (छक) 'बिखेर' **लेख** 'लिख' **दग** 'कूट' के साथ **उन** प्रत्यय। 8.3.8 के अनुसार उकार का एकवचन में ऊमात्रादेश। 8.3.5 सूत्र के अनुसार बहुवचन में यकार। 8.3.23 के अनुसार ईकार का एकार। प्रस्तुत सूत्र के अनुसार **क, ख** और **ग** का **च, छ** और **ज** आदेश। सामान्यभूत और पूर्णभूत के उदाहरण— **थच्योव, थच्याव** 'वह थका तो था'। **ह्छोव, ह्छाव** 'वह सूखा तो था'। **लज्योव, लज्याव** वह लगा तो था'। **छच्योन, छच्यान** 'उस ने बिखेरा तो था'। **लेछ्योन, लेछ्यान** 'उस ने लिखा तो था', **दज्योन, दज्यान** 'उस ने कूटा तो था।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र स्पष्ट करता है, कि स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन दोनों प्रकार के धातु रूपों में कवर्ग का क्रम से चवर्ग रूपांतरण होता है। दूरवर्ती भूतकालिक पुंलिंग रूपों में भी चवर्ग आदेश सिद्ध है। स्पष्टीकरण में पर्याप्त उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।

॥ तवर्गस्याप्रसिद्धः सर्वत्र सामान्यादौ ॥ ७२ ।

तवर्गान्तानां धातूनां सर्वत्र सामान्यभूते पूर्णभूते च सादेशस्त्रीकर्तैकत्व-बहुत्वयोश्च स्त्रीकर्मैकत्वबहुत्वयोश्च अप्रसिद्धः चवर्गो भवति॥ कॅचून्। सूत्रिता सा तेन॥ कच्चन्। सूत्रितास्तास्तेन॥ कच्चायन्। सूत्रयामास तां सः॥

मॅछून् । लिप्ता सा तेन ॥ मछ़न् । लिप्तास्तास्तेन ॥ मछ़ॉयन् । लिलेप तां सः ॥ लॅजून् । प्रेषिता सा तेन ॥ लज़न् । प्रेषितास्तास्तेन ॥ लज़ॉयन् । प्रेषयामास तां सः ॥ कत सूत्रवेष्टने । मथ उपदेहे । लद वस्तुप्रेषणे गृहादि-निर्माणे च । उन्-ओन् प्रत्ययौ । उकारस्य एकत्वे ऊमात्रादेशः (सू० ८)। बहुत्वे यकारः (सू० ५)। अनेन तथदानां च़छ़ज़ा आदेशाः। अप्रसिद्धच़वर्गादकार (सू० १२) इति यकारस्य अकारः । ओनः अप्रसिद्धच़वर्गादॉय (सू० १७) इति ओकारस्य ऑय आदेशः ॥ सादेशस्त्रीकर्तरि यथा । वॉचू । प्राप्ता ॥ वाच़ । प्राप्तास्ताः ॥ वॅछू । उत्थिता ॥ वछ़ । उत्थितास्ताः ॥ दॅज़ू । दग्धा ॥ दज़ । दग्धास्ताः ॥ वात प्रापणे । व्वथ उत्थाने । दज़ भस्मीभवने । धातोः ओव्-एय् प्रत्ययौ तयोः छुह् छिह् आदेशौ । दज़ोजव्वएजां द (सू० ६४) इति ज़कारस्य दः । पुंप्रत्ययोकार (सू० १०-११) इत्यादिना क्रमात् ऊकार-यकारौ । अनेन तथदानां च़ छ़ ज़ा आदेशाः । अप्रसिद्धच़वर्गादकार (सू० १२) इति यकारस्य अकारः ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.72

सामान्य भूत, पूर्णभूत में सर्वत्र तथा आदेशित स्त्री कर्तरि प्रयोग के एकवचन बहुवचन तथा स्त्री कर्मणि प्रयोग के एकवचन बहुवचन रूपों में तवर्गान्त धातुओं के तवर्ग का अप्रसिद्ध च़वर्ग हो जाता है। **कॅचुन** 'उस ने काती'। **कच़न** 'उस ने कातीं'। **कच़ॉयन** 'उस ने काता तो था'। **मॅछुन** 'उस ने मली'। **मछ़न** 'उस ने मलीं'। **मछ़ॉयन** 'उस ने मला तो था'। **लॅज़ुन** 'उस ने परोसी'। **लज़न** 'उस ने परोसीं'। **लज़ॉयन** 'उस ने परोसा तो था'। **कत** 'कात', **मथ** 'मल', **लद** 'परोस' के साथ **उन, ओन** प्रत्यय। 8.3.8 सूत्र के अनुसार एकवचन में उकार का ऊमात्रादेश। 8.3.5 के अनुसार बहुवचन में यकार। प्रस्तुत सूत्र से **त, थ और द** का **च़, छ़ और ज़** आदेश। 8.3.12 के अनुसार यकार का अकार। 8.3.17 के अनुसार **ओन** के ओकार का **ऑय** आदेश। आदेशित स्त्री कर्तरि रूप– **वॉच़** 'वह पहुँची'। **वाच़ु** 'वे पहुचीं'। **वॅछ़** 'वह उठी'। **वछ़ु** 'वे उठीं'। **दॅज़** 'वह जली'। **दज़ु** 'वे जलीं' **वात** 'पहुँच'। **व्वथ** 'उठ'। **दज़** 'जल' धातुओं के साथ **ओव, एय** प्रत्यय। आदेशित **छुह, छिह** के **छ** और **ह** का लोप। 8.3.64 के अनुसार **दज़** के ज़कार का दकार। 8.3.10, 11 के अनुसार ऊकार का यकार। प्रस्तुत सूत्र से **त, थ** और **द** का **च़,छ़** और **ज़** आदेश। 8.3.12 के अनुसार यकार का अकार।

व्याख्या–

भूतकाल में स्त्रीलिंग कर्ता, अकर्मक धातु के अंतिम तवर्ग को क्रमानुसार च़वर्ग में रूपांतरित करता है। इसी प्रकार सकर्मक धातु का अंतिम तवर्ग

क्रमानुसार चवर्ग में रूपांतरित होता है, यदि कर्म पुंलिंग न होकर स्त्रीलिंग हो। दूरवर्ती भूतकालिक रूपों में यह रूपांतरण लिंग निरपेक्ष है, अर्थात पुंलिंग में भी **तकार** आदि का चकार आदि हो सकता है। उदाहरण में दिए गए **मछ़ॉयन** वर्तमान में **मछ़ेयन** आदि रूपों में व्यवहृत हैं।

॥ नान्तस्य ञः ॥ ७३ ॥

नकारान्तस्य धातोः सर्वत्र सामान्यभूते पूर्णभूते च सादेशस्त्रीकर्त्रेकत्वबहुत्व-योश्च स्त्रीकर्मैकत्वबहुत्वयोश्च ञकारो भवति ॥ रञोन् । अपाक्षीत् ॥ रञान् । पपाच ॥ छ्ञेञ् । छिन्ना ॥ छ्यञ । छिन्नास्ताः ॥ रंञुन् । पक्वा सा ॥ रञन् । पक्वास्ताः ॥ साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.73

सामान्य भूत पूर्णभूत में सर्वत्र तथा आदेशित स्त्री कर्तरि प्रयोग के एकवचन बहुवचन तथा स्त्री कर्मणि प्रयोग के एकवचन बहुवचन रूपों में नकारान्त धातुओं के नकार का न्यकार हो जाता है। **रन्योन** 'उस ने पकाया तो था'। **रन्यान** 'उस ने पकाया तो था'। **छॆन्य** (छ्ॅयन्य) 'वह फटी'। **छॆनि** (छ्यन्य) 'वे फटीं'। **रॅनिन** (रॅन्युन) 'उस ने पकाई'। **रन्यन** 'उस ने पकायीं'। सिद्धि पूर्ववत।

व्याख्या—

भूतकालिक रूपों में न से अन्त होने वाले धातु **न्य** बन जाते हैं। स्पष्टीकरण में उदाहरण प्रस्तुत हैं।

॥ ळान्तस्य जः ॥ ७४ ॥

ळकारान्तस्य धातोः सर्वत्र सामान्यभूते पूर्णभूते च सादेशस्त्रीकर्त्रेकत्वबहुत्व-योश्च स्त्रीकर्मैकत्वबहुत्वयोश्च जकारो भवति ॥ पांजून् । पालिता सा ॥ पाज्यन् । पालितास्ताः ॥ पाज्येयन् । पाळयामास ॥ वांजून । अवतारिता ॥ वाज्ये-यन् । अवतारयामास ताम् ॥ पाळ रक्षणे । वाळ अवतारणे । अनेन ळकारस्य जकारः । शेषं साधनं पूर्ववत् ॥ सादेशस्त्रीकर्तरि यथा ॥ ज़ंजू । पळायिता ॥ ज़ज्य । पळायिताः ॥ फुंजू । फुल्ला ॥ फुज्य । फुल्लाः ॥ फंजू । जीर्णा सा ॥ फज्य । जीर्णास्ताः ॥ एवं सर्वेषाम् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.74

सामान्यभूत पूर्णभूत में सर्वत्र तथा आदेशित स्त्री कर्तरि प्रयोग के

एकवचन बहुवचन तथा स्त्री कर्मणि प्रयोग के एकवचन बहुवचन रूपों में लकारान्त धातुओं का लकार ज़कार हो जाता है। **पॉजिन** 'उस ने पाली'। **पाजन** 'उस ने पालीं' **पाजेयन** 'उस ने पाली तो थी'। **वॉजिन** 'उस ने उतारी'। **वाजेयन** 'उस ने उतारी तो थी'। **पाल** 'पाल', **वाल** 'उतार' धातुओं के लकार का प्रस्तुत सूत्र से जकार। शेष साधन पूर्ववत। आदेशित स्त्रीलिंग कर्ता के उदाहरण– **चॅज** 'वह भागी'। **चज़ि (चज्य)** 'वे भागीं'। **फोज** 'वह विकसित हुई'। **फ्वजि** (फ्वज्य) 'वे विकसित हुईं'। इसी तरह सभी रूप।

व्याख्या–

भूतकाल में सर्वत्र लकारान्त धातुओं के **ल** का **ज** हो जाता है। दूरवर्ती भूतकालिक रूपों के संदर्भ में यह रूपांतरण, आज की भाषा में, वैकल्पिक है। यथा– **वाजेयन/वालेयन, पाजेयन/पालेयन।**

॥ पिहमुहसहगृहचूहां शः ॥ ७५ ॥

पिह संचूर्णने। मुह मोहने। सह सहने। गृह घर्षणे। चूह चूषे। एषां सर्वत्र सामान्यभूतादावन्त्यस्य शकारो भवति ॥ पिशून्। पिष्टा सा ॥ पिश्यन्। पिष्टास्ताः ॥ पिश्येयन्। पिपेष ताम् ॥ मुशून्। मुपिता सा ॥ मुश्यन्। मुपितास्ताः॥ मुश्येयन्। मुमोप ताम् ॥ सशून्। सोढा सा ॥ सश्यन्। सोढास्ताः ॥ सश्येयन्। सेहे ताम् ॥ गृशून्। घृष्टा सा ॥ गृश्यन्। घृष्टास्ताः ॥ गृश्येयन्। जघर्ष ताम् ॥ चूशून्। चूपिता सा ॥ चूश्यन्। चूपितास्ताः ॥ चूश्येयन्। चुचूष ताम् ॥ साधनं पूर्ववत्। एषां धातूनां सादेशकर्तृप्रयोगाभावात्तदुदाहरणाभाव इति बोध्यम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.75

पिह 'पीस' **मुह** 'मोहित कर' **सह** 'सह' **गुह** 'घिस' **चुह** 'चूस' सामान्यभूत आदि में इन धातुओं के अंतिम अक्षर का सर्वत्र शकार हो जाता है। **पिशिन** 'उस ने पीसी' **पिशन** 'उस ने पीसीं'। **पिशेयन** 'उस ने पीसी तो थी'। **मुशिन** 'उस ने मोहित की' **मुशन** 'उस ने मोहित कीं' **मुशेयन** 'उस ने मोहित तो की थी' **सशिन** 'उस ने सही' **सशन** 'उस ने सहीं' **सशेयन** 'उस ने सही तो थी।' **गुशन** 'उस ने घिसीं' **गुशिन** 'उस ने घिसी' **गशेयन** 'उस ने घिसी तो थी। **चुशिन** 'उस ने चूसी' **चुशन** 'उस ने चूसीं।' **चुशेयन** 'उस ने चूसी तो थी।' साधन पूर्ववत। कर्तरि प्रयोग के अभाव में इन धातुओं के तत्संबधी उदाहरणों का अभाव भी समझना चाहिए।

व्याख्या–

मुह, सह धातु, वर्तमान में, व्यापक रूप से प्रयुक्त नहीं है। पिह, गुह, चुह धातु रूपों में ह का श रूपांतरण वैकल्पिक है। यथा– पिशुन/पिहुन, पिशन/पिहन, पिशेयन/पिहेयन।

॥ हहरस्तु मध्यान्त्यवर्णविनिमये वा ॥ ७६ ॥

[हहर विवाहकर्मणि इत्यस्य धातोर्मध्यमान्तिमवर्णयोर्हकाररेफयोर्विकल्पेन विनिमये कृते सति अन्त्यभूतस्य] हकारस्य शकारादेशो भवति ॥ हरंशुन्। विवाहिता ॥ हर्हुन्। विवाहिता ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.76**

हॅहर (हहर) 'ब्याह' इस धातु के मध्यम और अंतिम वर्ण का विकल्प से विनिमय होकर हकार अन्त में आ सकता है, तथा इस अंतिम हकार का **शकारादेश** है। **हॅरशिन** 'उस ने ब्याही' **हहरुन** 'उस ने ब्याही'।

व्याख्या–

वर्तमान में यह धातु रूप शालीन शब्दावली के अन्तर्गत स्वीकृत नहीं है।

॥ थकपकोरोवादीनां पुंवर्तमानादेशाश्छहोर्लो-पश्च भूते ॥ ७७ ॥

थक श्रमे। पक गतौ। अनयोः ओव् एयू ओख् एव ओम् एय् इति पुंकर्तृप्रत्ययानां भूतविषये क्रमेण पुंकर्तृसंबन्धिवर्तमानायाः छुह् छिह् छुव् छिव छुस् छिह् इत्येते आदेशा भवन्ति छकारहकारयोश्च लोपो भवति ॥ ततः स्त्रीकर्तरि सति पुंकर्तृप्रत्ययोकार (सू० १०) इत्यादिसूत्रैः स्त्रीसंबन्धिस्वरूपाणि साध्यानि ॥ थंकु। श्रान्तः ॥ थंकि। श्रान्ताः ॥ पंकु। चलितः ॥ पंकि। चलिताः ॥ पंकुख्। चलितस्त्वम् ॥ पंकिव। चलिता यूयम् ॥ पंकुस्। चलितोऽहम् ॥ पंकि। चलिता वयम् ॥ धात्वोः पुंकर्तरि (सू० ३९) इति ओव् एयू ओख् एव ओम् एय् प्रत्ययाः। तेषामनेन छुह् आदयो वर्तमाना [विभक्तिप्रत्यया] देशाः छकारहकारयोश्च लोपः। एषामेव स्त्रीलिङ्गक्रियारूपसिद्धयै पुंकर्तृप्रत्ययोकारस्य स्त्रियां च (सू० १०) इति सूत्रेण उकारस्य इमात्रादेशः। इकारस्य यत् (सू० ११) इति इकारस्य यकारः। कवर्गस्यै-

कत्वे ऽपि (सू० ७१) इति ककारस्य चत्वम्। पंचू इत्यादीनि संपद्यन्ते॥ पंचू। चलिता सा॥ पच्य। चलितास्ताः॥ पंचूख्। चलिता त्वम् स्त्री०॥ पच्यव। चलिता यूयम् स्त्री०॥ पंचूस्। चलिताहम् स्त्री०॥ पच्य। चलिता वयम् स्त्रियः॥ इति स्त्रीकर्तृस्वरूपाणि भवन्ति। एवमग्रे सर्वत्रावधार्यम्॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.77**

थक 'थक' **पक** 'चल' इन दो धातुओं के साथ पुंलिंग कर्तृ प्रत्यय **ओव, एय, ओख, एव, ओस, एय** भूतकाल में क्रम से संयुक्त होते हैं। वर्तमान काल के पुंलिंग संबन्ध प्रत्यय **छुह, छिह, छुख, छिवु, छुस, छि** में छकार और हकार के लोप का आदेश है। स्त्रीलिंग कर्ता होने की स्थिति में पुंलिंग कर्तृ प्रत्यय उकार के स्त्रीलिंग संबन्ध स्वरूप 8.3.10 आदि सूत्रों के अनुसार साधित हैं। **थौक** 'वह थका'। **थॅक्य** 'वे थके'। **पौक** 'वह चला'। **पॅक्य** 'वे चले'। **पौकुख** 'तू चला' **पॅकिवु** 'आप चले'। **पौकुस** 'मैं चला'। **पॅक्य** 'हम चले'। 8.3.39 के अनुसार धातु के साथ **ओव, एय, ओख, एव, ओस, एय** प्रत्यय संयुक्त होते हैं। प्रस्तुत सूत्र के अनुसार आदेशित वर्तमान विभक्ति प्रत्यय **छुह** आदि के छकार और हकार का लोप। स्त्रीलिंग क्रिया रूप सिद्धि के लिए पुंलिंग कर्तृ प्रत्यय उकार का 8.3.10 सूत्र के अनुसार ऊमात्रादेश। 8.3.11 के अनुसार इकार का यकार। 8.3.71 सूत्र के अनुसार ककार का चत्व। **पॅंच** आदि सिद्ध है। **पॅंच** 'वह चली'। **पचि** 'वे चलीं'। **पॅचिख** 'तू चली'। **पचिवु** 'आप चलीं'। **पचिस** 'मैं चली'। **पचि** 'हम चलीं'। ये स्त्रीलिंग कर्तृ स्वरूप हैं। इसी प्रकार सब जगह अवधार्य है।

व्याख्या–

छु आदि भाषा में सहायक क्रिया का कार्य करते हैं। **आसुन** 'होना', सहायक क्रिया का वर्तमान कालिक रूप **छु**, भूतकालिक रूप **ओस** तथा भविष्यत्कालिक रूप **आसि** हैं। वर्तमान काल में सार्वनामिक प्रत्यय, सहायक क्रिया **छु** के साथ ही संयुक्त होते हैं। 8.3.7 सूत्र में उल्लेख है, कि **आसुन** का वर्तमान कालिक रूप पुंलिंग एकवचन में **छु** और अन्य स्थितियों में **छि** है। 8.1.12 सूत्र में वे सभी अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय तालिकाबद्ध हैं, जो **छु** और **छि** के साथ संयुक्त होते हैं। 8.1.13 सूत्र की व्याख्या में स्पष्ट किया गया है, कि **छु** आदि के साथ **ह** का प्रयोग वर्तमान नहीं है। प्रस्तुत सूत्र में स्त्रीलिंग रूपों में ककार का चकार रूपांतरण भी दर्शाया गया है। भूतकालिक रूपों को वर्तमान कालिक सहायक क्रिया **छु** आदि की सहायता से सिद्ध करना आवश्यक नहीं है। यह बात स्पष्ट है, कि वर्तमान काल व्यक्त करने के लिए सहायक क्रिया की अनिवार्यता है, परन्तु भूतकाल के लिए ऐसी कोई अनिवार्यता नहीं है। भूतकाल में सार्वनामिक प्रत्यय धातु के साथ संयुक्त हो सकता है, यदि वाक्य में सहायक

क्रिया **ओस** उपस्थित न हो। जबकि वर्तमान काल की स्थिति में ये सभी प्रत्यय सहायक क्रिया के साथ संयुक्त होते हैं। सहायक क्रिया किसी भी अवस्था में धातु रूप के साथ संयुक्त नहीं होती अर्थात सहायक क्रिया को प्रत्यय नहीं माना जा सकता।

॥ ओवावादयः सामान्यपूर्णयोः ॥ ७८ ॥

येषां धातूनां भूतविषये वर्तमानप्रत्ययादेशो भवति तेषां सामान्यभूते ओव् आदयः पूर्णभूते आवादयः प्रत्ययाः अवगन्तव्याः ॥ पच्योव्। अचालीद् ॥ पच्याव्। चचाल ॥ पकगतौ। ओव् आव् प्रत्ययौ। यागमः। कवर्गस्यैकत्वे ऽपि (सू० ७१) इति ककारस्य चकारः। एवं सर्वेषां ज्ञेयम् ॥

सूत्र 8.3.78

अनुवाद–

भूतकाल के विषय में जिन धातुओं के साथ वर्तमान कालिक प्रत्यय का आदेश है, उन के सामान्य भूत रूप में **ओव** आदि तथा पूर्णभूत रूप में आव आदि प्रत्यय होते हैं। **पचोव (पच्योव)** 'वह चला तो था'। **पचाव (पच्याव)** 'वह चला तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **पक** 'जा' के साथ **ओव, आव** प्रत्यय। **य** का आगम। 8.1.71 अनुसार ककार का चकार। इसी प्रकार सर्वत्र।

व्याख्या–

वर्तमान में सामान्य भूत और पूर्ण भूत प्रस्तुत आशय के अनुसार सम्प्रेषित नहीं होते। 8.3.46 सूत्र की व्याख्या में दूरवर्ती भूत की व्याख्या भी है। 8.3.53 सूत्र की व्याख्या में इन प्रत्ययों के स्थान पर **एयव** प्रत्यय वर्तमान में स्वीकृत होने का उल्लेख है। अर्थात पक का दूरवर्ती भूतकालिक रूप **पचेयव** का प्रयोग व्यापक है।

॥ समखङ्खोः खात् ॥ ७९ ॥

खान्तेषु धातुषु। समख समक्षीभवने। ङख शोषे इत्यनयोर्भूतविषये ओव् आदीनां प्रत्ययानां वर्तमानप्रत्ययादेशा भवन्ति छकारङकारयोश्च लोपः। ओव् आदयो निरादेशाः सामान्यभूते। आव् आदयश्च पूर्णभूते प्रत्यया विज्ञेयाः ॥ समखु। समक्षीभूतः ॥ समखि। समक्षीभूतास्ते ॥ ङखु। शुष्कः ॥ ङखि। शुष्कास्ते ॥ साधनं पूर्ववत्। स्त्रीलिङ्गे तु। समछू। समक्षीभूता सा ॥ समछ्य। समक्षीभूतास्ताः ॥ ङछू। शुष्का सा ॥ ङछ्य। शुष्कास्ताः। इत्यादयो ज्ञेयाः ॥ समछ्योव्। समक्षीबभूव सः ॥ समछ्याव्। समक्षीबभूव सः। इति सामान्य-पूर्णभूतयोर्बोध्यम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.3.79**

ख अन्त वाले धातु रूप—**समख** 'मिल' **ह्रख** 'सूख' भूतकाल के विषय में इन दोनों धातुओं के साथ आदेशित वर्तमान प्रत्यय छकार और हकार का लोप तथा **ओव** आदि प्रत्यय संयुक्त होते हैं। सामान्य भूत में **ओव** आदि तथा पूर्णभूत में **आव** आदि प्रत्यय हैं। **समुख** 'वह मिला' **समुख्य** 'वे मिले', **हौख** 'वह सूखा'। **हौख्य** 'वे सूखे'। साधन पूर्ववत। स्त्रीलिंग रूप— **समुछ** 'वह मिली'। **समछि** 'वे मिलीं'। **हौछ** 'वह सूखी'। **ह्रछि** 'वे सूखीं' इत्यादि। सामान्य और पूर्णभूत रूप— **समुछोव** 'वह मिला तो था'। **समछाव** 'वह मिला तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'।

व्याख्या—

भूतकाल में चवर्ग रूपांतरण के अन्तर्गत **ख** का **छ** हो जाता है। दूरवर्ती भूतकाल रूप में **एयव** प्रत्यय ही स्वीकार्य है, यथा— **समखेयव/समछेयव, ह्रखेयव/ह्रछेयव।**

॥ तगश्वंगलगां गात् ॥ ८० ॥

गकारान्तेषु धातुषु। तग तज्ज्ञतायाम्। श्वंग शयने। लग संगे पीडायां सामञ्जस्ये च। इत्येषां भूतविषये ओव् आदीनां प्रत्ययानां वर्तमानप्रत्ययादेशा भवन्ति छकारहकारयोश्च लोपः। ओवावादयश्च सामान्यपूर्णयोर्वेद्याः ॥ तंगु [। सुज्ञातम्] ॥ तंगि [। सुज्ञातानि] ॥ लंगु। लग्नः ॥ लंगि। लग्नाः ॥ श्वंगु। सुप्तः ॥ श्वंगि। सुप्ताः। साधनं पूर्ववत्॥ स्त्रीलिङ्गे तु। तंजू [।सुज्ञाता] ॥ तज्य [। सुज्ञाताः] ॥ लंजू। लग्ना ॥ लज्य। लग्नाः ॥ श्वंजू। सुप्ता ॥ श्वंज्य। सुप्ताः ॥ इत्यादयो वेद्याः॥ तज्योव् [। सुज्ञातमभूत्]॥ तज्याव्। [। सुज्ञातं बभूव] ॥ लज्योव्। अलागीत् ॥ लज्याव्। ललाग ॥ श्वंज्योव्। अस्वाप्सीत् सः ॥ श्वंज्याव्। सुष्वाप सः ॥ इत्यादयः सामान्यपूर्णयोर्विज्ञातव्याः ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.3.80**

ग अन्त वाले धातु रूप – **तग** 'आ' (जानने के अर्थ में)। **श्वंग** 'सो'। **लग** 'लग'। भूतकाल के विषय में **ओव** आदि प्रत्यय तथा वर्तमान काल के आदेशित प्रत्यय के छकार और हकार का लोप। **ओव** और **आव** सामान्य और पूर्णभूत में संयुक्त होते हैं। **तौग** 'आया (जानने के अर्थ में)'। **तॅग्य** 'आए (जानने के अर्थ में)' **लौग** 'वह संलग्न हुआ'। **लॅग्य** 'वे संलग्न हुए'। **शौंग** 'वह सोया'। **शौंग्य** 'वे सोए'। साधन पूर्ववत। स्त्रीलिंग रूप— **तॅज** 'आई (जानने के अर्थ में)'। **तजि** 'आई (जानने के अर्थ में)'। **लॅज** 'वह संलग्न हुई'। **लजि** 'वे संलग्न हुईं'। **शौंज** 'वह सोई'। **शौंजि** 'वे सोईं'। इसी प्रकार अन्य भी। **तजोव** 'उस को आया तो था'। **तजाव** 'उस को आया तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **लजोव** 'वह संलग्न

हुआ था'। लजाव 'वह सलग्न हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। श्वंजोव 'वह सोया तो था'। श्वंजाव 'वह सोया तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। इसी प्रकार अन्य सामान्य और पूर्णभूत रूप भी।

व्याख्या–

तग धातु रूप अन्य धातु रूपों से भिन्न है। मध्यम पुरुष एकवचन आदेशात्मक विधि में इस का प्रयोग सम्भव नहीं है। चु व्वथ 'तू उठ'। चु वुछ 'तू देख' की तरह चु तग वाक्य संभव नहीं है। तग के व्युत्पन्न रूपों का प्रयोग भाषा में सामान्य है। भूतकाल में इस धातु के कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं– च़ॆ तॊगुय परुन 'तुम्हें पढ़ना आया'। हुमिस तॊग परुन 'उस को पढ़ना आया'। हुमिस तजि किताबु परनि 'उस को पुस्तकें पढ़नी आईं'। शेष धातु रूप स्पष्ट हैं।

॥ कूच़्खोच़्पच़्रोच़्व्यच़्क्चां च़ात् ॥ ८१ ॥

अप्रसिद्धच़कारान्तानां मध्यात्। कूच़ आर्द्रीभवने। खोच़ भये। पच़ ऋणादिविश्वासे। रोच़ रोचने। व्यच़ संभवे। क्च़ विक्लीभवने। एषां धातूनां भूतविषये ओवादीनां प्रत्ययानां वर्तमानादेशाः स्युः छकारइकारयोश्च लोपः। ओवावादयश्च सामान्यपूर्णयोर्बोद्धव्याः॥ कूतु। तिमितः सः॥ कूति। तिमितास्ते॥ खूचु। भीतः॥ खूचि। भीताः॥ पंचु। विस्रब्धम् तेन॥ पंचि। विस्रब्धं तैः॥ रूचु। रोचितः॥ रूचि। रोचिताः॥ व्यंचु। व्यचितः॥ व्यंचि। व्यचिताः॥ क्वतु। कुथितः॥ क्वति। कुथिताः॥ कूच़क्च़ोस्त (सू० ६१) इति द्वयोस्तकारः। खोच़रोच़ोः ओकारस्योकारः सादेशपुंकर्तरि च (सू० २४) इत्युपधाया ऊकारः। शेषं साधनं पूर्ववत्॥ स्त्रीलिङ्गे तु। कूचू। तिमिता सा॥ कूच़। तिमितास्ताः॥ खूचू। भीता सा॥ खोच़। भीतास्ताः॥ रूचू। रोचिता सा॥ रोच़। रोचितास्ताः॥ व्यंचू। व्यचिता सा॥ व्यच़। व्यचितास्ताः॥ क्वचू। अकुथ्यत्सा॥ क्च़। अकुथ्यन् ताः॥ बहुवचनेषु इकारस्य यत्वे कृते तस्य अप्रसिद्धच़वर्गादकारः (सू० १२)। खोच़रोच़ोः स्त्रियामुदोताव् (सू० २५) इत्युपधाया ऊकार-ओकारौ। क्च़ः पुंलिङ्गसंबन्धिनि तकारे कृते तस्य तवर्गस्याप्रसिद्धः सर्वत्र सामान्यादाव् (सू० ७२) इति च़त्वम्। कूच़्योव्। तितेम सः॥ खोच़्योव्। अभैत्सीत् सः॥ रोच़्योव्। रुरुचे॥ व्यच़्योव्। विव्याच॥ क्च़ोव्। अक्रोधीत्॥ इत्यादयः सामान्यभूतादौ निर्धार्याः। अत्र कूच़रोच़व्यच़ां न कूच़मूच़ (४९) इत्यादिसूत्रेण यकारलोपनिषेधः। शेषं पूर्ववत्॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.81**

अप्रसिद्ध चकारान्त धातुओं के उदाहरण– **कुच़** 'भीग' **खोच़** 'डर' **पच़** 'विश्वास कर'। **रोच़** 'रुच'। **व्यच़** 'समा' **ह्वच** 'सड़'। इन धातुओं के साथ भूतकाल के विषय में **ओव, आव** आदि प्रत्यय। वर्तमान काल के आदेशित छकार हकार का लोप। **ओव, आव** आदि सामान्य और पूर्णभूत में होते हैं। **कुत** 'वह भीगा'। **कुत्य** 'वे भीगे'। **खूच़** 'वह डरा'। **खूच्य** 'वे डरे'। **पॊच़** 'उस ने विश्वास किया'। **पॆच्य** 'उन्होंने विश्वास किया'। **रूच़** 'वह रुचा'। **रूच्य** 'वे रुचे'। **व्यॊच़** 'वह समाया'। **व्यॆच्य** 'वे समाए'। **हॊत** 'वह सड़ा'। **हॊत्य** 'वे सड़े'। 8.3.63 सूत्र के अनुसार **कुच़** और **ह्वच़** के च़कार का तकार। 8.3.24 के अनुसार **खोच़** और **रोच़** के उपधा का ऊकार। शेष सिद्धि पूर्ववत।

स्त्रीलिंग रूप– **कुच़** 'वह भीगी।' **कुचु** 'वे भीगीं।' **खूच़** 'वह डरी' **खोचु** 'वे डरीं।' **रूच़** 'वह रुची।' **रोचु** 'वे रुचीं।' **व्यॆच़** 'वह समाई।' **व्यचु** 'वे समाईं।' **हॊच़** 'वह सड़ी।' **ह्वचु** 'वे सड़ीं।' सूत्र 8.3.12 के अनुसार बहुवचन में इकार का यत्व जिस का अप्रसिद्ध च़वर्ग के कारण अकार होता है। 8.3.25 के अनुसार स्त्रीलिंग में **खोच़** और **रोच़** के उपधा का ऊकार, ओकार। पुंलिंग रूप में– 8.3.72 सूत्र के अनुसार **ह्वच़** के तकार का च़त्व। **कुच़्योव** 'वह भीगा तो था'। **खोच़ोव** 'वह ड़रा तो था'। **रोच़्योव** 'वह रुचा तो था'। **व्यच़्योव** 'वह समाया तो था।' **ह्वच़ोव** 'वह सड़ा तो था', इत्यादि सामान्यभूत निर्धारित है। 8.3.49 के अनुसार **कुच़, रोच़** और **व्यच़** में यकार लोप निषेध। शेष पूर्ववत्।

व्याख्या–

च़ से अन्त होने वाले उक्त छः धातुओं के रूपों में **कुच** और **ह्वच़** के च़कार का पुंलिंग भूतकालिक रूप में, तकार रूपांतरण होता है। स्त्रीलिंग रूपों में तकार पुनः च़कार में परिवर्तित होता है। शेष रूपों के उदाहरण स्पष्टीकरण में अंकित हैं।

॥ गछ़ो योग्यार्थे ॥ ८२ ॥

गछ़ गतौ युक्तीभवने चेत्यस्य योग्येच्छाया अर्थे भूते ओव् आदीनां प्रत्ययाना वर्तमानप्रत्ययादेशाः स्युः छकारहकारयोश्च लोपः ॥ गंछ़ु । गंछ़ि । गंछ़ुव् । गंछ़िव । गंछ़ुस् । गंछ़ि । इति । अस्य सामान्यपूर्णयोः प्रयोगादर्शनात्केवलं भूतप्रयोगा एव साधवः ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.82**

गछ़ प्रथम अर्थ **जा** द्वितीय अर्थ **चाहिए**। **चाहिए** के अर्थ में भूतकालिक रूपों के साथ **ओव** आदि प्रत्यय संयुक्त होते हैं। आदेशित वर्तमानकालिक प्रत्यय

के छकार और हकार का लोप। **गोछ़, गॅछ़्य, गोछुख, गॅछ़्यव, गोछुस, गॅछ़्य।** इस का सामान्य और पूर्णभूत प्रयोग नहीं होता केवल भूतप्रयोग ही होता है।

व्याख्या–

चाहिए के अर्थ में **गछ़** धातु के साथ भूतकाल में सभी अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त होने की व्यवस्था है। यथा– **गोछ़** 'उस को चाहिए था'। **गॅछ़य** 'उन को चाहिए था'। **गोछुख** 'तुझे चाहिए था'। **गॅछ़्यवु** 'आप को चाहिए था'। **गोछुस** 'मुझे चाहिए था'। **गॅछ़्य** 'हम को चाहिए था'।

॥ व्वुपज़दज़रोज़ां ज़ात् ॥ ८३ ॥

व्वपज़ उत्पत्तौ। दज़ भस्मीभवने। रोज़ स्थितौ। इत्येषां ज़कारान्तेषु धातुषु भूतविषये ओव् आदीनां प्रत्ययानां वर्तमानादेशाः स्युः छहोर्लोपश्च। ओवावाद्यश्च सामान्यपूर्णयोर्बोध्याः॥ व्वॅपॅदु। उत्पन्नः॥ व्वॅपॅदि। उत्पन्नाः॥ दॅदु। दग्धः॥ दॅदि। दग्धाः॥ रूदु। स्थितः॥ रूदि। स्थिताः॥ अत्र दज़रोज़व्वपज़ां द (सू० ६४) इति ज़कारस्य दकारः। शेषं पूर्ववत्। स्त्रीलिङ्गकर्तरि तु। दॅज़ू। दग्धा॥ दज़। दग्धाः॥ रूज़ू। अवस्थिता॥ रोज़। अवस्थिताः॥ व्वॅपॅज़ू। उत्पन्ना॥ व्वपज़। उत्पन्नाः॥ अत्रापि पुंलिङ्गस्वरूपेषु ज़कारस्य दकारे कृते तवर्गस्याप्रसिद्ध (७२) इत्यादिसूत्रेण दस्य ज़ः। रोज़ः स्त्रियामूदोताव् (सू० २५) इत्युपधाया एकत्र ऊकारः॥ व्वपज़ोव्। उदपद्यत सः॥ व्वपज़ाव्। उत्पेदे सः॥ दज़ोव्। अदह्यत॥ दज़ाव्। देहे॥ रोज़ोव्। अस्थात् सः॥ रोज़ाव्। तस्थौ सः॥ इत्यादीनि सामान्यभूतयोः स्वरूपाणि वेदितव्यानि॥

सूत्र 8.3.83

अनुवाद–

व्वपज़ 'उत्पन्न हो', **दज़** 'जल', **रोज़** 'रह'। ज़कार अन्त वाले इन धातुओं के साथ भूतकाल में **ओव** आदि प्रत्यय तथा वर्तमान काल के आदेशित प्रत्यय **छ, ह** का लोप। सामान्य और पूर्णभूत में **ओव** तथा **आव** प्रत्यय। **व्वपोद** 'वह उत्पन्न हुआ'। **व्वपॅद्य** वे उत्पन्न हुए'। **दोद** 'वह जला'। **दॅद्य** 'वे जले'। **रूद** 'वह रहा' **रूदय** 'वे रहे'। 8.3.64 सूत्र के अनुसार ज़कार का दकार। शेष पूर्ववत। स्त्रीलिंग कर्तरि रूप **दॅज़** 'वह जलीं'। **दज़ु** 'वे जलीं'। **रूज़** 'वह रही'। **रोज़ु** 'वे रहीं'। **व्वपुज़** 'वह उत्पन्न हुई'। **व्वपज़ु** 'वे उत्पन्न हुई। 8.3.72 सूत्र के अनुसार ज़कार का दकार, तवर्ग का अप्रसिद्ध (चवर्ग)। 8.3.25 के अनुसार स्त्रीलिंग में **रोज़** के ओकार का ऊकार। **व्वपज़ोव** 'वह उत्पन्न तो हुआ था'। **व्वपज़ाव** 'वह उत्पन्न तो हुआ था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **दज़ोव** 'वह जला तो था'। **दज़ाव** 'वह

जला तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **रोज़ोव** 'वह रहा तो था'। **रोज़ाव** 'वह रहा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)' इत्यादि सामान्य तथा पूर्णभूत हैं।

व्याख्या–

उक्त धातुओं के ज़कार का दकार रूपांतरण 8.3.64 सूत्र की व्याख्या में वर्णित है। उक्त रूपांतरण प्रत्यावर्तन का उदाहरण है।

फटफुटरोटां टात् ॥ ८४ ॥

टकारान्तेषु धातुषु । फट काष्ठभेदाङ्कुरोद्भेदयोर्जलनिमज्जनादिषु च । फुट भङ्गे । रोट अवष्टम्भे । एषां धातूनां भूतविषये ओव् आदीनां प्रत्ययानां वर्तमानप्रत्ययादेशा भवन्ति पूर्ववच्छहोश्च लोपः । सामान्यपूर्णभूतयोः ओवावादयो मन्तव्याः ॥ फंटु । उद्भिन्नः ॥ फंटि । उद्भिन्नाः ॥ फुटु । भग्नः ॥ फुटि । भग्नाः ॥ रूटु । स्तम्भितः ॥ रूटि । स्तम्भिताः ॥ साधनं सुगमम् ॥ स्त्रीकर्तरि तु । फंटू । उद्भिन्ना ॥ फच्य । उद्भिन्नाः ॥ फुटू । भग्ना ॥ फुच्य । भग्नाः ॥ रूटू । स्तम्भिता ॥ रोच्य । स्तम्भिताः ॥ अत्र सादेशकर्तृकर्मिणोरनेकत्वे च स्त्रियाम् (सू० ७०) इति सूत्रेण बहुषु टस्य चत्वम् । रोटः स्त्रियामूदोताव् (सू० २५) इति एकत्वे ऊकारः । शेषं पूर्ववद्विधेयम् । फच्योव् । उद्भिद्यते स्म सः ॥ फच्याव् । उद्भिद्यते स्म सः ॥ फुच्योव् । भज्यते स्म सः ॥ फुच्याव् । भज्यते स्म सः ॥ रोच्योव् वा रोठ्योव् । अवाष्टम्भिष्ट ॥ रोच्याव् वा रोठ्याव् [। अवतस्तम्भे] ॥ रोटो ऽत्र विकल्पेन वर्तमानादेशा बोध्याः । आदेशाभावे अनादेशकर्तृधातुभूतादौ नो आदेशा (९८) इति सूत्रेणं चकारादेशनिषेधः । तत्र रोटियाव् इति पूर्णभूतस्वरूपं वेद्यम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.84**

टकारान्त धातु– **फट** 'फट', 'डूब'। **फुट** 'टूट' **रोट** 'स्थिर हो' भूतकाल के विषय में इन धातुओं के साथ **ओव** आदि प्रत्यय। आदेशित वर्तमानकालिक प्रत्यय के **छ, ह** का पूर्ववत लोप। सामान्य और पूर्णभूत रूप में **ओव** तथा **आव** प्रत्यय। **फॊट** 'वह फटा'। **फॅट्य** 'वे फटे'। **फुट** 'वह टूटा'। **फुट्य** 'वे टूटे'। **रूट** 'वह स्थिर हुआ'। **रूट्य** 'वे स्थिर हुए'। साधन सुगम है।

स्त्रीलिंग कर्तरि रूप– '**फॅट** वह फटी'। **फचि** 'वे डूबीं'। **फुट** 'वह टूटी'। **फुचि** 'वे टूटीं'। **रूट** 'वह स्थिर हुई'। **रोचि** 'वह स्थिर हुई'। 8.3.70 के अनुसार स्त्रीलिंग रूपों के बहुवचन में ही टकार का चकार। 8.3.25 के अनुसार **रोट** के ओकार का ऊकार। शेष पूर्ववत। **फच्योव** 'वह फटा तो था'। **फच्याव** 'वह फटा

तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **फुच्योव** 'वह टूटा तो था' (दूरवर्ती भूतकाल)'। **फुच्याव** 'वह टूटा तो था' (दूरवर्ती भूतकाल)'। **रोच्याव/रोट्याव/रोट्योव** 'वह स्थिर हुआ तो था'। **रोच्याव/रोट्याव** 'वह स्थिर हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **रोट** में विकल्प से वर्तमान आदेश। 8.3.68 सूत्र के अनुसार चकार का निषेध। इसी कारण **रोट्याव** रूप (पूर्णभूत में)।

व्याख्या–

टकारान्त धातुओं के भूतकालिक व्युत्पन्न रूप पूर्व सूत्रों के अनुसार ही हैं। अन्तर केवल यह है, कि टकार का चकार मात्र स्त्रीलिंग बहुवचन में ही सिद्ध है। दूरवर्ती भूतकालिक रूप में भी विकल्प से ही टकार का चकार रूपांतरण होता है। यथा– **फुच्येचव/फुट्येयव**। वर्तमान में **रोट** धातु का प्रयोग व्यापक नहीं है।

॥ ब्वडो डात् ॥ ८५ ॥

उकारान्तेषु धातुषु। ब्वड निमज्जने इत्यस्य भूतविषये ओव् आदीनां छुह् आदिप्रत्ययादेशाः स्युः। लोपसामान्यपूर्णभूतप्रत्ययादयश्च पूर्ववज्ज्ञेयाः ॥ ब्वुडु। निमग्नः ॥ ब्वुडि। निमग्नाः ॥ साधनं सुगमम्। स्त्रीकर्तरि यथा। ब्वडू। निमग्ना ॥ ब्वज्य। निमग्नाः ॥ बहुत्वे सादेशभूतकर्तृकार्मिणोट् (सू० ७०) इत्यादिना डस्य जः ॥ ब्वज्योव्। न्यमज्जीत् ॥ ब्वज्याव् । निममज्ज ॥ इति सामान्यपूर्णस्वरूपे ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.85**

उकारान्त धातु। भूतकाल के विषय में **ब्वड** 'डूब' के साथ **ओव** आदि तथा **छुह** आदि प्रत्ययों का आदेश है। सामान्यभूत पूर्णभूत में प्रत्यय आदि का लोप पूर्ववत ही सिद्ध है। **बॊड** 'वह डूबा'। **बॊड्य** 'वे डूबे'। साधन सुगम। स्त्रीलिंग कर्तरि के उदाहरण– **बॅड** 'वह डूबी'। **ब्वजि** 'वे डूबीं'। 8.3.70 सूत्र से स्त्रीलिंग बहुवचन में **ड** का **ज**। सामान्य और पूर्णभूत के रूप। **ब्वजोव** 'वह डूबा तो था'। **ब्वजाव** 'वह डूबा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'।

व्याख्या–

यह पूर्व सूत्र का विस्तार है। भाषा के सामान्य नियम के अंतर्गत स्त्रीलिंग बहुवचन के भूतकालिक रूपों में टवर्ग क्रम से चवर्ग में रूपांतरित होता है। दूरवर्ती भूतकालिक रूप में यह रूपांतरण लिंग, वचन के निरपेक्ष है। यथा– **ब्वजेयव** 'वह डूबा तो था'। वर्तमान में **ब्वड** धातु का प्रयोग सीमित है। स्पष्टीकरण में 'प्रत्यय आदि का लोप' से अभिप्राय है– **छुह** का लोप।

॥ वातस्तात् ॥ ८६ ॥

तकारान्तेषु । वात प्रापणे इत्यस्य भूतविषये वर्तमानप्रत्ययादेशाः स्युः छस्तेर्लोपश्च । सामान्यपूर्णप्रयोगाश्च पूर्ववत् ॥ वोतु । प्राप्तः ॥ वॉति । प्राप्ताः ॥ अत्र लघुतस्योपधाया आत ओत्वम् (सू० २०) इत्युपधाकारस्य ओकारः । अपरत्र इतुतुघतानां पूर्ववर्णस्वराप्रसिद्धता (सू० १९) इति । स्त्रीकर्तरि यथा । वॉचू । प्राप्ता ॥ वाच्च । प्राप्ताः ॥ तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इत्यादिना चत्वम् । बहुत्वे अप्रसिद्धचवर्गादकार (सू० १२) इति यकारस्याकारः ॥ वाचोव् । प्राप्नोत् ॥ वाचाव् । प्राप ॥ इति सामान्यपूर्णयोः प्रयोगौ ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.86

तकारान्त धातु। भूतकाल के विषय में वात 'पहुँच' के साथ आदेशित वर्तमान प्रत्यय छ का लोप। सामान्य और पूर्णभूत प्रयोग पूर्ववत। **वोत** 'वह पहुँचा'। **वॉत्य** 'वे पहुँचे'। 8.3.20 सूत्र के अनुसार उपधा के आकार का ओकार। 8.3.19 के अनुसार पूर्ववर्ण के स्वर की अप्रसिद्धता। स्त्रीलिंग कर्तरि के उदाहरण— **वॉच़** 'वह पहुँची'। **वाचु** 'वे पहुँचीं'। 8.3.72 के अनुसार तवर्ग का अप्रसिद्ध च़वर्ग। 8.3.12 के अनुसार बहुवचन में अप्रसिद्ध च़वर्ग के साथ यकार का आकार। सामान्य और पूर्णभूत के रूप— **वाच़ोव** 'वह पहुँचा तो था'। **वाच़ाव** 'वह पहुँचा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)।

व्याख्या—

स्त्रीलिंग भूतकालिक रूपों में सामान्यतया स्पर्श ध्वनियाँ स्पर्शसंघर्षी ध्वनियों में रूपांतरित होती हैं। तकार का च़कार रूपांतरण इसी प्रकार का उदाहरण है।

॥ वुथस्थात् ॥ ८७ ॥

थकारान्तेषु । वुथ उत्थाने इत्यस्य भूतविषये वर्तमानादेशादयः स्युः ॥ वुथु । उत्थितः ॥ वुथि । उत्थिताः । सुगमम् ॥ स्त्रीकर्तरि यथा । वुछू । उत्थिता ॥ वुछ । उत्थितास्ताः ॥ अत्र तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इति थस्य छत्वम् । यकारस्य अकारः ॥ वुछोव् । उदस्थात् सः ॥ वुछाव् । उत्तस्थौ सः ॥ इति सामान्यपूर्णयोर्भवतः ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.87

थकारान्त धातु। भूतकाल के विषय में **व्यथ** 'उठ' के साथ वर्तमान प्रत्ययों का आदेश है। **वॊथ** 'वह उठा'। **वॆथ्य** 'वे उठे'। सुगम है। स्त्रीलिंग कर्तरि के उदाहरण– **वॆछ** 'वह उठीं'। **वछु** 'वे उठीं'। 8.3.72 के अनुसार थकार का छकार। यकार का अकार। सामान्य व पूर्णभूत रूप– **व्यछ़ोव** 'वह उठा तो था'। **व्यछ़ाव** 'वह उठा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है।

॥ छ्यनसपनोर्नात् ॥ ८८ ॥

नकारान्तेषु। छ्य़न छेदे। सपन संपन्ने। इत्यनयोर्भूतविषये वर्तमानप्रत्ययादेशाद्या भवन्ति। तत्र सपन सहचरयोः सपद संपन्ने। सपज़ संपन्ने। इत्यनयोश्चेत्थं वर्तमानादेशादयो बुद्धिमतोह्याः॥ सपॅन्नु। संपन्नः॥ सपॅन्नि। संपन्नाः॥ स्त्रीलिङ्गे। सपॅन्स्। संपन्ना॥ सपन्स। संपन्नास्ताः॥ साधनं पूर्ववत्॥ सपन्सॊव्। समपादि॥ सपन्स़ाव्। संपेदे। इति च विज्ञेयम्॥

अनुवाद–

सूत्र 8.3.88

नकारान्त धातु। भूतकाल के विषय में **छ्यन** 'कट' **सपन** 'हो' के साथ वर्तमान आदेश आदि होते हैं। **सपन** के सहचर शब्द **सपद** तथा **सपज़** (स्त्रीलिंग में) हैं। इन के साथ वर्तमान आदेश आदि बुद्धिमान स्वयं समझेंगे। **सपुन** 'वह हुआ'। **सपुन्य** 'वे हुए'। स्त्रीलिंग में– **सपन्य** 'वह हुई'। **सपनि** 'वे हुई'। साधन पूर्ववत। **सपन्योव** 'वह हुआ तो था'। **सपन्याव** 'वह हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)।' यही ज्ञातव्य है।

व्याख्या–

वर्तमान में **सपन** शब्द नकारान्त प्रयुक्त नहीं होता। भाषा में **सपद** का ही प्रयोग व्यापक है। **छ्यन** के अन्य पुरुष भूतकालिक रूप तालिका में अंकित हैं।

	एकवचन	**बहुवचन**
पुंलिंग	छ्यॊन	छ़ेन्य
स्त्रीलिंग	छ़ेन्य	छ़ेनि

दूरवर्ती भूतकालिक रूप **छ्यनेयव** 'वह टूटा तो था'।

॥ वुपश्रपोः पात् ॥ ८९ ॥

वुप अन्तर्दाहे । श्रप जीर्णने । इत्यनयोः पकारान्तेषु धातुषु भूतविषये वर्तमानप्रत्ययादेशाः स्युः छहोर्लोपश्च ॥ वुपु [। अन्तर्दग्धः] ॥ वुपि [। अन्तर्दग्धाः] ॥ श्रपु [। जीर्णः] ॥ श्रपि [। जीर्णाः] ॥ वुप्योव् [। अन्तर्दग्धोभूत्] ॥ वुप्याव् [। अन्तर्दग्धो बभूव] ॥ साधनं सुगमम् ॥ विकल्पेन पूर्णभूते । वुपियाव् [। अन्तर्दग्धो बभूव] ॥ श्रपियाव् [। जीर्णो बभूव] ॥ इति स्वरूपे भवतः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.89

वुप 'संतप्त हो', श्रप 'सोख' भूतकाल के विषय में इन दोनों पकारान्त धातुओं के साथ आदेशित वर्तमान कालिक प्रत्यय के **छ**, **ह** का लोप। **वुप** 'वह संतप्त हुआ'। **वुप्य** 'वे संतप्त हुए'। **श्रोप** वह सोखा'। **श्रेप्य** 'वे सोखे'। **वुप्योव** 'वह संतप्त हुआ तो था'। **वुप्याव** 'वह संतप्त हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। साधन सुगम है। पूर्णभूत में विकल्प से **वुयियाव**, **श्रवियाव** रूप भी होते हैं।

व्याख्या—

पकारान्त धातुओं के साथ भी, भूतकालिक रूपों के लिए पूर्ववर्ती नियम प्रभावी हैं। **वुप** धातु का प्रयोग व्यापक नहीं है।

॥ प्रयलयवयां यात् ॥ ९० ॥

यकारान्तेषु धातुषु । प्रय प्रीणने । लय अर्पणे । वय पथ्यीभवने । इत्येषां धातूनां भूतविषये वर्तमानप्रत्ययादेशाः पूर्ववत्स्युः ॥ प्रयु [। प्रीणितः] ॥ प्रयि [। प्रीणिताः] ॥ लयु [। अर्पितम्] ॥ लयि [। अर्पितानि] ॥ वयु [। पथ्यीभूतम्] ॥ वयि [। पथ्यीभूतानि] ॥ साधनं पूर्ववत् । प्रय्योव् । प्रय्याव् । लय्योव् । लय्याव् । वय्योव् । वय्याव् । इति सामान्यपूर्णस्वरूपाणि भवन्ति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.90

यकारान्त धातु। **प्रय** 'प्रिय हो' **लय** 'स्नेही हो' **वय** 'ग्राह्य हो' इन धातुओं के साथ भूतकाल के विषय में वर्तमान कालिक प्रत्यय का आदेश पूर्ववत। **प्रौय** 'वह प्रिय हुआ'। **प्रॅय** 'वे प्रिय हुए'। **लौय** 'वह स्नेही हुआ'। **लॅय** 'वे स्नेही हुए'। **वौय** 'वह ग्राह्य हुआ'। **वॅय** 'वे ग्राह्य हुए'। साधन पूर्ववत। सामान्य और पूर्णभूतरूप— **प्रॅयोव** 'वह प्रिय हुआ तो था'। **प्रॅयाव** 'वह प्रिय हुआ तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। **लयोव, लयाव, वयोव, वयाव**।

व्याख्या–

मूल धातु रूप में इन का प्रयोग व्यापक नहीं है। **प्रेयोव/प्रयेयव, लयोव/लयेयव, वयोव/वयेयव** ये रूप दूरवर्ती भूतकाल की स्थिति में प्रयुक्त होते हैं।

॥ खरतरफरफेरमरसोरां रात् ॥ ९१ ॥

रकारान्तेषु धातुषु। खर अप्रीतौ। तर तरणे। फर स्तेये। फेर भ्रमण-विह्वलीभवनपश्चात्तापवैक्लोब्येषु। मर मरणसंधापनयोः। सोर अवसाने। इत्येषां भूतविषये पूर्ववत् वर्तमानादेशादयः स्युः। तत्र मरः संधापनार्थे कर्मप्रयोगाः कर्तृप्रयोगाश्च भवन्ति। मरणार्थे तु केवलं कर्तृप्रयोगा एवेति निर्णयम् ॥ खॅरु। [। अप्रीणितः] ॥ खॅरि [। अप्रीणिताः] ॥ तॅरु। तीर्णः ॥ तॅरि। तीर्णाः ॥ फॅरु। चोरितं तेन ॥ फॅरि। चोरितं तैः ॥ फ्यूरु। परिवर्तितः ॥ फीरि। परिवर्तिताः ॥ मूदु। मृतः ॥ मूदि। मृताः ॥ सूरु। अवसितः ॥ सूरि। अवसिताः ॥ पूर्वं सर्वाणि साधितान्येव। मरः संधापनार्थे तु। मॅरु। संधापितः ॥ मॅरि। संधापिताः ॥ इत्यादयो भवन्ति। मॅरुन्। संधापितस्तेन सः ॥ मरिन्। संधापितास्ते तेन ॥ इत्यादीनि कर्मस्वरूपाणि स्युः। स्त्रीकर्तृस्वरूपाणि च पूर्ववत्साध्यानि ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.3.91**

रकारान्त धातु। **खर** 'अप्रिय हो' **तर** 'पार हो' **फर** 'टटोल (चुराने के आशय से)' **फेर** 'घूम' **मर** 'मर' **सोर** 'समाप्त हो' 'अस्त हो'। भूतकाल के विषय में इन धातुओं के साथ वर्तमान कालिक आदेश पूर्ववत है। **मर** का दूसरा अर्थ 'चिपका' है। इस अर्थ में इस का कर्म प्रयोग तथा कर्तृप्रयोग (चिपक) दोनों संभव हैं। 'मर' के अर्थ में तो केवल कर्तृ प्रयोग ही है। **खॊर** 'वह अप्रिय हुआ'। **खॅरय** 'वे अप्रिय हुए'। **तॊर** 'वह पार हुआ'। **तॅरय** 'वे पार हुए'। **फॊर** 'उस ने टटोला (चुराने के आशय से)'। **फॅरय** 'उन्होंने टटोला (चुराने के आशय से)'। **फ्यूर** 'वह घूमा'। **फीरय** 'वे घूमे'। **मूद** 'वह मरा'। **मूदय** 'वे मरे'। **सूर** 'वह समाप्त हुआ'। **सूरय** 'वे समाप्त हुए'। ये सभी रूप पूर्व साधित हैं। **चिपक/चिपका** के अर्थ में **मर** के रूप **मॊर** 'वह चिपका'। **मॅरय** 'वे चिपके'। सकर्मक रूप– **मॊरुन** 'उस ने 'चिपकाया'। **मॅरिन** 'उस ने चिपकाए'। स्त्रीलिंग कर्तृ रूप पूर्ववत साधित हैं।

व्याख्या–

इन सभी रूपों की व्याख्या भूतपाद के अन्तर्गत ही पूर्व पृष्ठों में हो चुकी हैं।

॥ मरः स्त्रियां स्त्रीप्रत्ययादेशाः ॥ ९२ ॥

प्रोक्तानां धातूनां मध्यात्। मर मरणे इत्यस्य स्त्रीकर्तरि सति ओव् आदीनां प्रत्ययानां वर्तमानसंबन्धिस्त्रीप्रत्ययादेशाः स्युः । न तु पुंकर्तृप्रत्ययोकार (सू० १०) इत्यादिना सिद्धिः ॥ म्वय । मृता सा ॥ म्वय । मृताः ॥ म्वयख् । मृता त्वम् ॥ म्वयव । मृता यूयम् ॥ म्वयस् । मृता अहम् ॥ म्वय । मृता वयम् ॥ मर मरणे ओव् आदीनां क्रमात् छ्यह् छ्यह् छ्यख् छ्यव छ्यम् छ्यह् इति आदेशेषु कृतेषु छहोर्लोपः । स्त्रियां भूते ऽपि (सू० ३१) इति उपधाया वत्वम् । मरश्चापुंभूवे (सू० ५९) इति रकारलोपः । संधापनार्थे तु । मंरु । संधापिता ॥ मर्य । संधापिताः । इत्यादयो भवन्ति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.92

प्रोक्त धातुओं के मध्य मर 'मर' के स्त्रीलिंग कर्तरि रूप में ओव आदि प्रत्यय तथा वर्तमान काल संबन्धी स्त्री प्रत्ययों का आदेश हैं। रूप सिद्धि। 8.3.10 आदि सूत्रों के अनुसार म्वयि 'वह मरी' म्वयि 'वे मरीं'। म्वयख 'तू मरी'। म्वयिवु 'आप मरीं'। मोयस 'मैं मरी' म्वयि 'हम मरे'। मर 'मर' ओव आदि के क्रम से, छ्यह, छ्यख, छयवु, छस, छयह के आदेश के पश्चात छ ह का लोप। 8.3.31 सूत्र के अनुसार उपधा का वत्व। 8.3.59 के अनुसार रकार का लोप। चिपक/चिपका के अर्थ में मौर 'चिपका' मॅरय 'चिपके'। इत्यादि होता है।

व्याख्या—

8.3.59, 65 आदि सूत्रों में मर धातु की व्याख्या अंकित है। यह सूत्र इस धातु के भूतकालिक रूपों में अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्ययों की संयुक्ति के उदाहरण प्रस्तुत करता है। छ ह लोप के विषय में 8.3.77 सूत्र विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करता है।

॥ गलच्लडलडोलफलफूलमेलां लात् ॥ ९३ ॥

लकारान्तेषु धातुषु । गल नाशे । च्रल चलने । डल उल्लङ्घने । डोल अपरिचयने । फल वस्त्रादिजीर्णने साफल्ये च । फूल विकसने । मेल संगमे । इत्येषां धातूनां वर्तमानप्रत्ययादेशाः स्युः भूतविषये ॥ गंलु । नष्टः ॥ गंलि । नष्टास्ते ॥ च्रंलु । पलायितः ॥ च्रंलि । पलायिताः ॥ डंलु । उल्लङ्घितः ॥ डंलि । उल्लङ्घिताः ॥ डूलु । अपरिचितः ॥ डूलि । अपरिचितं तैः ॥ फंलु ।

जीर्णः॥ फॅल्ि । जीर्णाः॥ फूल्ल् । विकसितः॥ फूल्ि। विकासितास्ते ॥ म्यूल्ल् । संगतः सः ॥ मील्ि । संगतास्ते ॥ डोळः ओकारस्योकारः सादेशपुंकर्तरि च (सू० २४) इत्युपधाया ऊकारः । मेळः फेरव्यइमेकौ च (सू० २२) इत्युपधाया एकत्वे यूकारः बहुत्वे ईकारः । शेषं सुकरम् । स्त्रीकर्तरि यथा । गॅजू । नष्टा ॥ गज्य । नष्टाः ॥ चॅजू । पलायिता सा ॥ चज्य । पलायितास्ताः ॥ डॅजू । उल्ल-ङ्घिता॥ डज्य। उल्लङ्घिताः ॥ डूजू। अपरिचिता ॥ डोज्य। अपरिचितास्ताः॥ फॅजू। जीर्णा ॥ फज्य । जीर्णास्ताः ॥ फूंजू। विकसिता ॥ फ्वज्य । विक-सितास्ताः ॥ मीजू । संगता ॥ मेज्य । संगतास्ताः ॥ अत्र डोळः स्त्रियामूदो-साद् (सू० २५) इत्युपधाया ऊकार-ओकारौ । मेळः स्त्रियामीदेतौ सर्वत्र (सू० २३) इति एकत्वे ईकारः । एवं । चज्योव् । पलायामास ॥ चज्याव् । प्रदुद्राव ॥ इत्यादि स्वरूपाणि साध्यानि ॥

अनुवाद—

सूत्र 8.3.93

लकारान्त धातु। गल 'घुल, नष्ट हो' चल 'भाग' डल 'हट' डोल 'डोल'। फल 'जीर्ण हो, सफल हो'। फ्वल 'विकसित हो'। मेल 'मिल' भूतकाल के विषय में इन धातुओं के साथ वर्तमान कालिक प्रत्ययों का आदेश है। गॉल 'वह नष्ट हुआ'। गॅल्य 'वे नष्ट हुए'। चॉल 'वह भागा'। चॅल्य 'वे भागे। डॉल 'वह हटा'। डॅल्य 'वे हटे'। डूल 'वह डोला'। डूल्य 'वे डोले'। फॉल 'वह जीर्ण हुआ/सफल हुआ'। फॅल्य 'वे जीर्ण हुए/सफल हुए'। फॉल 'वह विकसित हुआ'। फॅल्य 'वे विकसित हुए'। म्यूल 'वह मिला'। मील्य 'वे मिले'। 8.3.24 सूत्र के अनुसार डोल के ओकार का ऊकार। 8.3.22 के अनुसार मेल के एकार का एकवचन में यूकार तथा बहुवचन में ईकार। शेष सुगम है।

स्त्रीकर्तरि के उदाहरण— गॅज 'वह नष्ट हुई'। गजि 'वे नष्ट हुईं'। चॅज 'वह भागी'। चजि 'वे भागीं'। डॅज 'वह हटी'। डॅजि 'वे हटीं'। डूज 'वह डोली'। डोजि 'वे डोलीं'। फॉज 'वह जीर्ण हुई'। फजि 'वे जीर्ण हुईं'। फॉज 'वह विकसित हुई'। फ्वजि 'वे विकसित हुईं'। मीज 'वह मिली'। मेजि 'वे मिलीं'। 8.3.25 के अनुसार डोल के संबन्ध में उपधा के ऊकार का ओकार (बहुवचन में)। 8.3.23 सूत्र के अनुसार मेल के एकार का एकवचन में ईकार। इस के अतिरिक्त चजोव 'वह भागा तो था'। चज्याव 'वह भागा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)' इत्यादि रूप भी साधित है।

व्याख्या—

लकारान्त धातु भी पूर्ववत ही साधित है। स्त्रीलिंग रूपों में लकार का

जकार रूपांतरण भाषा में सर्वत्र व्याप्त है। पूर्व उदाहरणों के अनुसार दूरवर्ती भूतकालिक रूपों में भी लकार का जकार होता है। वर्तमान में स्त्रीलिंग में डूज तथा डोजि का सीमित प्रयोग है।

॥ ब्वरावोर्वात् ॥ ९४ ॥

वकारान्तेषु धातुषु ब्वव उत्पत्तौ । राव नष्टीभवने । इत्यनयोर्भूतविषये प्रोक्तवत् वर्तमानादेशाः स्युः ॥ ब्वॆवु । उद्भूतः ॥ ब्वॆवि । उद्भूतास्ते ॥ रोवु । नष्टः सः॥ रॊवि । नष्टास्ते॥ एकत्र उग्युतस्योपधाया आत ओत्वम् (सू० २०) इति । अन्यत्र इदुदूद्युतानां पूर्ववर्णस्वराप्रसिद्धता (सू० १९) इति ॥ स्त्रीकर्तरि यथा । रॊवॖ । नष्टा सा॥ राव्य । नष्टास्ताः ॥ ब्वॆवॖ । उत्पन्ना ॥ ब्वॆव्य । उत्पन्नास्ताः ॥ राव्योवॖ । व्यनशत् सः ॥ राव्यावॖ । ननाश ॥ इत्यादयश्च सामान्यादिषु विचार्याः ॥

अनुवाद– सूत्र 8.3.94

वकारान्त धातु। ब्वव 'अंकुरित हो'। राव 'गुम हो'। भूतकाल के विषय में इन दोनों के साथ भी प्रोक्त वर्तमान कालिक आदेश है। बॊव 'वह अंकुरित हुआ'। बॆंव्य 'वे अंकुरित हुए'। रोव 'वह गुम हुआ'। रॊव्य 'वे गुम हुए'। 8.3.20 सूत्र के अनुसार उपधा के आकार का ओकार। 8.3.19 सूत्र के अनुसार पूर्व वर्ण के स्वर की अप्रसिद्धता।

स्त्रीलिंग कर्तरि रूप– रॊव 'वह गुम हुई'। रावि 'वे गुम हुईं'। बॆंव 'वह अंकुरित हुई'। बवि 'वे अंकुरित हुईं'। सामान्य भूत आदि रूप इस प्रकार हैं– राव्योव 'वह गुम तो हुआ था'। राव्याव 'वह गुम तो हुआ था (दूरवर्ती भूतकाल) इत्यादि।

व्याख्या–

भूतकाल के विषय में वकारान्त धातुओं पर भी सभी सामान्य नियम प्रभावी हैं।

॥ द्रुषपोषमषरोषां षात् ॥ ९५ ॥

षकारान्तेषु धातुषु । द्रुष च्यवने । पोष पर्याप्ततायाम् । मष विस्मृतौ । रोष रुष्टौ । इत्येषां भूतकालविषये वर्तमानादेशाः प्रोक्तवद्भवन्ति ॥ द्रुषु । क्षयोतितः ॥ द्रुषि । क्षयोतिताः ॥ पूषु । पर्याप्तः ॥ पूषि । पर्याप्ताः ॥ मॆठु । विस्मृतः सः ॥ मॆठि । विस्मृतास्ते ॥ रूठु । रुष्टः सः ॥ रूठि । रुष्टास्ते ॥ पोषरोषोः ओकारस्योकारः सादेशपुंकर्तरि च (सू० २४) इति उपधाया ऊकारः । मष-

ओकारस्योकारः सादेशपुंकर्तरि च (सू० २४) इति उपधाया ऊकारः। मष रोषोः देषव्यद्दरोषमषां ठः सर्वत्र (सू० ६२) इति ठकारः ॥ स्त्रीकर्तरि यथा। द्रूषू। श्च्योतिता सा ॥ द्रुष्य। श्च्योतितास्ताः ॥ पूषू। पर्याप्ता सा ॥ पोष्य। पर्याप्तास्ताः ॥ मंठू। विस्मृता सा ॥ मछ्य। विस्मृतास्ताः ॥ रूठू। रुष्टा सा ॥ रोछ्य। रुष्टास्ताः ॥ पोषरोषोः स्त्रियामूदोतौ (सू० २५) इति। मषरोषोः ठकारे कृते। सादेशभूतकर्तृकर्मिणोरनेकत्वे च स्त्रियाम् (सू० ७०) इति ठस्य छः। द्रुष्योव्। द्रुष्याव्। चुश्च्योत ॥ पोष्योव्। पोष्याव्। पर्याप ॥ मछ्योव्। व्यस्मारि ॥ मछ्याव्। विसस्मे ॥ रोछ्योव्। अरोषीत् ॥ रोछ्याव्। रुरोष ॥ इति सामान्यपूर्णयोः साध्यानि ॥

अनुवाद—

सूत्र 8.3.95

षकारान्त धातु। **द्रुष** 'चू' **पोष** 'पूरा पड़' **मष** 'भूल' **रोष** 'रुष्ट हो' भूतकाल के विषय में इन के साथ भी वर्तमान कालिक आदेश पूर्ववत होता है। **दोष** 'वह चुआ' **दोष्य** 'वे चुए'। **पूष** 'वह पूरा पड़ा' **पूष्य** 'वे पूरे पड़े'। **मौठ** 'वह भूला' **मॅठ्य** 'वे भूले'। **रूठ** 'वह रूठा' **रूठ्य** 'वे रूठे'। 8.3.24 के अनुसार **पोष** और **रोष** के ओकार का ऊकार। 8.3.62 सूत्र के अनुसार **पोष** और **रोष** का ओकार स्त्रीलिंग में, उकार अथवा ओकार (बहुवचन में) हो जाते हैं। **मष** और **रोष** के षकार का ठकार।

स्त्रीलिंग कर्तरि के रूप— **दोष** 'वह चुई' **द्रुषि** 'वे चुईं' **पूष** 'वह पुरी पडी'। **पोषि** 'वे पूरी पडीं'। **मॅठ** 'वह भूली'। **मछि** 'वे भूलीं'। **रूठ** 'वह रूठी'। **रोछि** 'वे रूठीं'। 8.3.25 के अनुसार **मष** और **रोष** के **षकार** का **ठकार**। 8.3.70 के अनुसार स्त्रीलिंग बहुवचन में **ठकार** का छकार।

सामान्य और पूर्णभूत के रूप— **द्रुषेव, द्रुषाव** 'वह चुआ तो था'। **पोषोव, पोषाव** 'वह पूरा पड़ा तो था' **मछोव** 'वह भूला तो था'। **मछाव** 'वह भूला तो था (दूरवर्ती भूतकाल) **रोछोव** 'वह रूठा तो था' **रोछाव** 'वह रूठा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)।

व्याख्या—

इन रूपों की सिद्धि पूर्वोक्त नियमों पर ही आधारित हैं। दूरवर्ती भूतकालिक रूपों में शकार का ठकार वर्तमान में विकल्प से होता है। यथा— **रोशेयव/रोठेयव, मशेयव/मठेयव।**

॥ आसखसफसबसलसलोसवसां सात् ॥ ९६ ॥

सकारान्तेषु धातुषु। आस सत्तायाम्। खस आरोहे। फस बद्धीभवने। बस निवासे। लस सम्यग्जीवने। लोस श्रमे। वस अवरोहणे। इत्येषां भूतकालविषये वर्तमानादेशाः प्रोक्तवत्स्युः॥ ओसु। आसीत् सः॥ ओसि। आसन् ते॥ खथु। आरूढः सः॥ खथि। आरूढास्ते॥ फसु। बद्धीबभूव सः॥ फसि। बद्धीबभूवुस्ते॥ बसु। निवसितः सः॥ बसि। निवसितास्ते॥ लूस्तु। जीवितः सः॥ लूस्ति। जीवितास्ते॥ लूसु। श्रान्तः सः॥ लूसि। श्रान्तास्ते॥ वथु। अवरूढः सः॥ वथि। अवरूढास्ते॥ प्रथमस्य लघुतस्योपधाया आत ओत्वम् (सू० २०) इति। खसवसोस्थः सर्वत्र (सू० ६६) इत्यनयोः सकारस्य थकारः। लसः लसश्च पुंभूते (सू० ३३) इति तकारागमः। लसश्च (सू० २७) इत्युपधाया ऊत्वम् एकत्वे स्यातः बहुत्वे अप्रसिद्धः। लोसः ओकारस्योकारः सादेशपुंकर्तरि च (सू० २४) इत्युपधाया ऊकारः। स च लसधातुवत्प्रसिद्धाप्रसिद्धो निर्णेयः॥ स्त्रीकर्तरि यथा। आसू। आसीत् सा॥ आस। आसन् ताः॥ खछू। आरूढा सा॥ खछ। आरूढास्ताः॥ फसू। बद्धीबभूव सा॥ फस। बद्धीबभूवुस्ताः॥ बसू। निवसिता सा॥ बस। निवसितास्ताः॥ लूछू। जीविता सा॥ लाछ। जीवितास्ताः॥ लूसू वा लूछू। श्रान्ता सा॥ लोस वा लोछ। श्रान्तास्ताः॥ वछू। अवतीर्णा सा॥ वछ। अवतीर्णास्ताः॥ आस एकत्व इदुदूद्युतानाम् (सू० १९) इति आकारस्य अप्रसिद्धता। बहुत्वे सकाराच्च (सू० १३) इति मकारस्याकारः। खसवसोस्थकारे कृते। तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इति छकारः थकारस्य चाकारः। लसः स्त्रियामेकत्वानेकत्वे ऊदातावप्रसिद्धाव् (सू० २८) इति ऊकार आकारौ। लोसः स्त्रियामूदोताच् (सू० २५) इति ऊकार-ओकारौ। विकल्पेन थकारछकारौ। शेषं पूर्ववत्। आस धातोः सामान्यपूर्णभूतप्रयोगाः साधुशब्दवन्नोच्चार्यन्ते अतो नोदाहृताः॥ खछोव्। खछाव्। आरुरोह॥ फसोव्। फसाव्। बबन्धे॥ बसोव्। बसाव्। उवास॥ लाछोव्।

लाछाव्। जिजीव॥ लोसोव्। लोसाव्। शश्राम॥ वछोव्। वछाव्। अवरुरोह॥ इत्यादयः सामान्यपूर्णयोः प्रयोगा वेदितव्याः। लसधातोः। लसोव्। लसाव्। जिजीव। इति विकल्पेन स्वरूपाणि सेत्स्यन्ते परंतु [अ]साधुशब्दतया नादीयन्ते। फसबसलोसां यागमस्य प्रत्ययाद्यवयवत्वे सिद्धे। सकाराच्च

(सू० ११) इति निर्देशतः [सकाराच्च बहुलम् (सू० ४८ क) इति सूत्रेण] तस्य लोपः। यद्वा खसवसोस्थ (सू० ६६) इति ज्ञापकात् सकारस्थकारपरिणतो भवति थकारस्य तवर्गस्याप्रसिद्ध (सू० ७२) इत्यनेन 'छकारपरिणामः सिद्ध एव अतः सकारात्परस्यापि यकारस्य अप्रसिद्धस्तवर्गाल्लोप (सू० ४७) इति लोप-विधिः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.3.96

सकारान्त धातु। **आस** 'हो', **खस** 'चढ़' **फस** 'फस', **बस** 'बस' **लस** 'दीर्घायु हो' **लोस** 'थक', **वस** 'उतर'। भूतकाल के विषय में पूर्वप्रोक्त वर्तमान कालिक आदेश। **ओस** 'वह था'। **ऑस्य** 'वे थे'। **खोत** (खोथ) 'वह चढ़ा'। **खॅत्य** (खॅथ्य) 'वे चढ़े'। **फोस** 'वह फसा'। **फॅस्य** 'वे फसे'। **बोस** 'वह बसा'। **बॅस्य** 'वे बसे'। **लोस** (लूस्त) 'वह दीर्घायु हुआ'। **लॅस्य** 'वे दीर्घायु हुए'। **लूस** 'वह थका'। **लूस्य** 'वे थके'। **वोथ** 'वह उतरा'। **वॅथ्य** 'वे उतरे'। 8.3.20 सूत्र के अनुसार उपधा के आकार का ओकार। 8.3.66 सूत्र के अनुसार **खस** और **वस** के सकार का थकार। 8.3.33 सूत्र के अनुसार पुंलिंग भूतकाल में **लस** के साथ तकारागम। 8.3.27 सूत्र के अनुसार **लस** के एकवचन में उपधा का ऊत्व तथा बहुवचन में अप्रसिद्ध। 8.3.24 के अनुसार **लोस** के ओकार का ऊकार। यहाँ भी **लस** धातु की तरह प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध निर्णीत है।

स्त्रीलिंग कर्तरि के रूप— **ऑस** 'वह थी'। **आसु** 'वे थीं'। **खॅच़** (खॅछ) 'वह चढ़ी'। **खचु** (खछु) 'वे चढ़ीं'। **फॅस** 'वह फसी'। **फसु** 'वे फसीं'। **बॅस** 'वह बसी'। **बसु** 'वे बसीं'। **लॅस** (लूछ) 'वह दीर्घायु हुई'। **लसु** (लॉछ) 'वे दीर्घायु हुईं'। **लूस/लूछ** 'वह थकी'। **लोसु/लोछु** 'वे थकीं'। **वॅछ** 'वह उतरी'। **वछु** 'वे उतरीं'। 8.3.19 के अनुसार एकवचन में **आस** के आकार की अप्रसिद्धता। 8.3.13 के अनुसार बहुवचन में सकार के पश्चात भी यकार का अकार। 8.3.72 के अनुसार तवर्ग का अप्रसिद्ध च़वर्ग तथा यकार का अकार। 8.3.28 सूत्र के अनुसार स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन में ऊकार का ऑकार। 8.3.25 सूत्र के अनुसार स्त्रीलिंग में ऊकार का ओकार तथा विकल्प से थकार का छ़कार। शेष पूर्ववत। सामान्यभूत व पूर्णभूत में प्रयोग की दृष्टि से साधु शब्दवत उच्चरित न होने के कारण **आस** धातु के उदाहरण प्रस्तुत नहीं किए जा रहे हैं। **खचोव** (खछ़ोव/खछ़ाव) 'वह चढ़ा तो था'। **फसोव/फसाव** 'वह फसा तो था'। **बसोव/बसाव** 'वह बस तो था'। **लॉछ़ोव/लॉछ़ाव** 'वह दीर्घायु हुआ तो था'। **लोसोव, लोसाव** 'वह थका तो था'। **वछ़ोव, वछ़ाव** 'वह उतरा तो था'। इसी प्रकार अन्य धातुओं के सामान्य पूर्णभूत प्रयोग समझ सकते हैं। **लस** धातु के

वैकल्पिक रूप **लसोव** और **लसाव** हैं, परन्तु ये साधु शब्द नहीं माने जाते हैं। **फस, वस, लोस** के साथ प्रत्यय आदि अवयवों से यकार का आगम सिद्ध है। 8.3.13 सूत्र के अनुसार प्रत्यय के यकार का अकार और 8.3.48 (क) सूत्र के अनुसार इस का लोप होता है। 8.3.66 के अनुसार **खस** और **वस** के सकार का थकार होता है। 8.3.72 के अनुसार थकार का छ़कार। 8.3.47 के अनुसार यकार से व्युत्पन्न अप्रसिद्ध चकार का लोप।

व्याख्या–

सकारान्त धातुओं के व्युत्पन्न रूप स्पष्टीकरण में पर्याप्त मात्रा में प्रस्तुत हैं। वर्तमान में इन में से कुछ रूप भिन्न प्रकार से उच्चरित होते हैं, यथा– **खोथ** के स्थान पर **खोत** 'वह चढ़ा' का प्रयोग व्यापक है। इसी प्रकार **लूस्त** के स्थान पर **लूस** का प्रयोग किया जाता है। स्त्रीलिंग रूपों में तवर्ग के चवर्ग रूपांतरण का सीमित प्रयोग है।

॥ व्यहो हात् ॥ ९७ ॥

हकारान्तेषु धातुषु व्यह उपवेशने इत्यस्य भूतविषये वर्तमानादेशाः स्युः ॥ व्यूठ् । उपविष्टः ॥ बीठि । उपविष्टाः ॥ डेपव्यहरोपधषां ठः सर्वत्र (सू० ६२) इति ठकारः । फेरव्यहमेकां च (सू० २२) इति उपधाया एकत्वे यूकारः बहुत्वे ईकारः । स्त्रीकर्तरि । बीठ् । उपविष्टा ॥ बेछ्य । उपविष्टाः ॥ अन्त्यस्य ठकारे कृते । सादेशभूतकर्तृकर्मिणोरनेकत्वे च स्त्रियाम् (सू० ७०) इति छकारः । स्त्रियामीदेताव् (सू० २३) इत्युपधाया ईकार-एकारौ । शेषं पूर्ववत् । बेछ्योव् । उपाविशत् ॥ बेछ्याव् । उपविवेश ॥ इत्यादयः सामान्यपूर्णयोर्विवेच्याः ॥ क्रियातिपत्त्यपरपर्यायापूर्णभूतस्योभयोर्भविष्यदतीतयोरन्तर्गतत्वात्तन्निरूपणं द्वितीये भविष्यत्पादे यथासंभवं विरचितमिति चतुष्प्रकारो ऽतीतकालः ॥

सूत्र 8.3.97

अनुवाद–

हकारान्त धातु **व्यह** 'बैठ' के साथ भी भूतकाल के विषय में वर्तमान कालिक आदेश है। **ब्यूठ** 'वह बैठा'। **बीठ्य** 'वे बैठे'। 8.3.62 सूत्र के अनुसार ठकार। 8.3.22 सूत्र के अनुसार एकवचन में उपधा का यूकार और बहुवचन में ईकार। स्त्रीलिंग कर्तरि के उदाहरण – **बीठ** 'वह बैठी'। **बेछि** 'वे बैठीं'। 8.3.70 सूत्र के अनुसार स्त्रीलिंग बहुवचन में ठकार का छकार। 8.3.23 सूत्र के अनुसार उपधा के ईकार का एकार। शेष पूर्ववत। सामान्य और पूर्णभूत रूप– **बेछोव** 'वह बैठा तो था'। **बेछाव** 'वह बैठा तो था (दूरवर्ती भूतकाल)'। भविष्यतकाल और

अतीत काल के अन्तर्गत क्रियातिपति के अपर पर्याय, अपूर्णभूत का निरूपण किया गया है। द्वितीयपाद में भविष्यतकाल तथा इस पाद में अतीत काल के चारों प्रकारों की यथासंभव विवेचना की गई है।

व्याख्या–

8.3.83 सूत्र से ईश्वर कौल ने ज़कारान्त, टकारान्त, डकारान्त, तकारान्त, थकारान्त, नकारान्त, पकारान्त, यकारान्त, लकारान्त, वकारान्त, षकारान्त और सकारान्त धातुरूपों का निरुपण किया है। इसी क्रम में प्रस्तुत सूत्र हकारान्त **ब्यह** की विवेचना करते हैं। सूत्र के अंत में भविष्यपाद तथा भूतपाद के विषय में उपसंहार स्वरूप दो वाक्य भी लिखे हैं।

इति

शारदा क्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीरशब्दामृतं

की आख्यात-प्रक्रिया का भूतपाद (तृतीय) 8.3

आख्यात प्रक्रिया-8
हेतु पाद 4

इस पाद के अन्तर्गत 34 सूत्र उल्लिखित हैं। ग्रन्थकार ने 'हेतु' शब्द के परंपरागत शास्त्रीय अभिप्राय का निर्वहन किया है। भट्टोजिदीक्षित के अनुसार प्रथम कर्ता को प्रयोज्य कर्ता और प्रेरणा देने वाले कर्ता को प्रयोजक कर्ता कहते हैं। वाक्य में प्रयोजक कर्ता उपस्थित होने पर मूल धातु के साथ प्रेरणार्थक प्रत्यय संयुक्त होता है।

मॉज छि दायि अथि शुर अनुनावान 'माँ धाई से बच्चा लिवा ला रही है।' यहाँ प्रयोजक कर्ता **मॉज** 'माँ' का प्रयोग है, इसलिए मूल धातु **अन** 'ला' का अंतिम अकार **अुकार** में परिणत होकर प्रेरणार्थक प्रत्यय **नाव** प्राप्त करता है, तथा अंत में **आन** संयुक्त होकर **अनुनावान** रूप सिद्ध है। ईश्वर कौल ने हेतुपाद के अन्तर्गत व्युत्पन्न सकर्मक रूपों की भी व्याख्या की है। 8.4.31 सूत्र इसी प्रकार का उदाहरण है। **ज़ाल** 'जला' को **दज़** 'जल' का हेतु रूप माना गया है। **दज़** अकर्मक है, तथा **ज़ाल** सकर्मक। प्रेरणार्थक रूप **ज़ाल** 'जला' से व्युत्पन्न कर सकते हैं, **दज़** 'जल' से नहीं।

हेतुपाद के अन्तर्गत ग्रन्थकार ने केवल वर्तमान कालिक हेतु रूपों का वर्णन किया है, इसीलिए सहायक क्रिया **छु** क्रिया पद का अनिवार्य अंग है। सभी उदाहरण अन्य पुरुष एकवचन के हैं। बहुवचन में **छु** का रूप **छि** हो जाता है। मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष के दोनों वचनों में सहायक क्रिया के साथ लगने वाले प्रत्यय भिन्न है। 8.1.11 तथा 12 सूत्र में इन सभी प्रत्ययों का उल्लेख है। भूतकाल और भविष्यत्काल में प्रेरणार्थक प्रत्यय को, इन कालों के रूप प्रभावित करते हैं।

भूतकाल में, पुंलिंग एकवचन रूप **अनुनोव** 'लिवा लाया', पुंलिंग बहुवचन रूप **अनुनॉव्य** 'लिवा लाए, स्त्रीलिंग एकवचन रूप **अनुनॉव** 'लिवा लाई', स्त्रीलिंग बहुवचन रूप **अनुनावि** 'लिवा लाई'। इन रूपों के साथ सार्वनामिक प्रत्यय भी संयुक्त हो सकते हैं। भविष्यत्काल में प्रेरणार्थक रूप के लिए अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय महत्वपूर्ण है। इस रूप को लिंग प्रभावित नहीं करता। उदाहरण– **बु अनुनावु** 'मैं लिवा लाऊँगा'। **ॲस्य अनुनावव** 'हम लिवा लाऐंगे'। **चु अनुनावख** 'तू लिवा लाएगा'। **तोह्य अनुनॉविव** 'आप लिवा लाऐंगें'। **हु अनुनावि** 'वह लिवा

लाएगा'। हुम अनुनावन 'वे लिवा लाएंगें'।

भूतकाल में कर्म का लिंग, वचन रूप को प्रभावित करता है। भविष्यत्काल में कर्ता का वचन रूप को प्रभावित करता है, परन्तु कर्ता का लिंग रूप पर कोई प्रभाव नहीं डालता।

॥ स्वाकर्तृत्वावसरे परक्रियाकर्तृत्वारोपो हेतुः॥१॥

निखिलस्य वस्तुजातस्य कर्तृत्वं भवत्येव अतो यस्य कस्यचिद्वस्तुन आत्मनः कर्तृत्वाकाले क्रियाकरणे प्रवर्तमानस्य तदितरस्य वस्तुनः कर्तृत्वे य आरोपः स हेतुरवधार्यः। यथा लोभः कुरुते पापमित्यत्र लोभस्य स्वकर्तृत्वं। लोभः कारयति पापमित्यत्र लोभव्यतिरिक्तस्य पापक्रियाप्रवर्तमानस्य जीवस्य कर्तृत्वे लोभस्य कर्तृत्वारोपः। अस्यामवस्थायां लोभः स्वयं करणक्रियां न विदधाति किंतु जीवस्य पापक्रियाया हेतुः संपन्नः क्रियायाश्च कर्तेत्यभिधीयत इति ॥

अनुवाद— सूत्र **8.4.1**

सभी वस्तुजात कर्ता होते हैं। स्वयं कर्तृव्य के अभाव में, वस्तु को यदि कोई अन्य क्रिया में प्रवृत्त होने के लिए आरोपित करता है, तो वह हेतु है। यथा— 'लोभ पाप करता है' यहाँ लोभ स्वयं कर्ता है। 'लोभ पाप करवाता है' यहाँ लोभ किसी जीव को पाप में प्रवृत्त करता है, अर्थात 'लोभ' किसी अन्य पर कर्तृत्व आरोपित करता है। इस अवस्था में 'लोभ' स्वयं क्रिया नहीं करता किन्तु जीव को पाप-क्रिया हेतु कर्ता बनाता है।

व्याख्या—

यह अधिकार सूत्र है। कर्ता को प्रेरित करने की अवस्था में धातु के साथ विशेष प्रत्यय संयुक्त होता है। प्रत्यय युक्त इसी क्रिया पद को ग्रन्थकार ने 'हेतु' कहा है। अर्थात हेतुपाद के अन्तर्गत प्रेरणार्थक क्रिया की भी व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

॥ हेतौ धातोराव् ॥ २ ॥

क्रियाया अर्थे हेतोः कर्तृतया अभिधेये सति धातोः पर आव् भवति स च धातुवद्भवति। यथा केवलो धातुर्विभक्तिसमुदायेषु परिणतो भवति तथा आव् प्रत्ययविशिष्टो ऽपि भवतीत्यर्थः ॥ करनावान् छुह् । कारयति ॥ परनावान् छुह्। पाठयति ॥ रननावान् छुह् । पाचयति ॥ साधनमुत्तरसूत्रे ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.4.2**

क्रिया के लिए कर्ता के रूप में हेतु अभिधेय होने पर **आव** प्रत्यय संयुक्त होता है। यह रूप भी धातुवत हो जाता है। जिस तरह मूल धातु विभक्ति समुदाय द्वारा परिणत होता है, उसी प्रकार **आव** प्रत्यय युक्त रूप भी हो जाता है। **करनावान छु** 'करवाता है'। **परनावान छु** 'पढ़वाता है'। **रननावान छु** 'पकवाता है'। सिद्धि अगले सूत्र में प्रस्तुत है।

व्याख्या–

प्रेरणार्थक प्रत्यय संयुक्त होने के उपरान्त, व्युत्पन्न रूप वह सभी प्रत्यय ग्रहण कर सकता है, जो मूल धातु ग्रहण करता है। प्रेरणार्थक प्रत्यय के साथ अन्य आगमों का वर्णन अगले सूत्र में प्रस्तुत हैं।

॥ आव्य ऽनागमः ॥ ३ ॥

धातोः आवि आव्हेतौ परे अन् आगमो भवति ॥ करनावान् छुह् । कारयति ॥ परनावान् छुह् । पाठयति ॥ रननावान् छुह् । पाचयति ॥ कर करणे । पर पठने । रन पाके । हेतौ धातोराव् (सू० २) इति आव् । अनेन अन् आगमः । करनाव् । परनाव् । रननाव् इति सिद्धे वर्तमानायां छुह प्रत्ययः (८।१।११ सूत्रेण) । धातोरानागमः (सू० ८।१।१९) ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.4.3**

आव संयुक्त होने की अवस्था में धातु के पश्च **(अन)** **अुन** का आगम होता है। **करनावान छु** 'करवाता है'। **परनावान छु** 'पढ़वाता है'। **रननावान छु** 'पकवाता है'। **कर** 'कर', **पर** 'पढ़', **रन** 'पका' के साथ 8.4.2 सूत्र के अनुसार **आव**। प्रस्तुत सूत्र से **अुन** का आगम **करुनाव, परुनाव, रनुनाव** सिद्ध होते है। 8.1.11 सूत्र के अनुसार वर्तमान कालिक **छुह** प्रत्यय। 8.1.19 सूत्र के अनुसार धातु के साथ **आन** आगम।

व्याख्या–

प्रेरणार्थक प्रत्यय संयुक्त होने के पूर्व अधिकांश रूपों में **अुन** का आगम होता है। सहायक क्रिया **छु** को वर्तमान कालिक प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। भूतपाद के प्रवेश में सहायक क्रिया **छु, छि** आदि की स्थिति स्पष्ट की गई है। 8.1.19 सूत्र की व्याख्या में स्पष्ट किया गया है, कि **आन** प्रत्यय संयुक्त होने के उपरान्त इस क्रिया को कोई भी व्याकरणिक सूचना प्रभावित नहीं कर सकती। सभी व्याकरणिक प्रत्यय तथा प्रक्रियाएँ सहायक क्रिया **छु, छि** को ही प्रभावित करती हैं।

॥ वुफो नो लः सूचनायाम् ॥ ४ ॥

वुफ विहायसा गतावित्यस्य मनुष्यादिसूचनाया अर्थे अनागमसंबन्धिनो नकारस्य लकारो भवति ॥ वुफलावान् छुह् । सूचयति ॥ सूचनायां किम् । वुफनावान् छुह् । उड्डाययते ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.4

वुफ का प्रयोग, 'आकाश की ओर उड़' के अतिरिक्त मनुष्य आदि को सूचित करने के अर्थ में भी होता है। इस स्थिति में आगम होने वाले अंश **अन** के नकार का लकार हो जाता है। **वुफलावान छु** 'सूचित करता है'। सूचना अर्थ में क्यों? **वुफनावान छु** 'उड़वाता है'।

व्याख्या—

वर्तमान में **वुफ** का प्रयोग 'उड़' के अर्थ में ही व्यापक है। 'सूचित करने के' अर्थ में इस का प्रयोग नहीं होता। ग्रन्थकार ने **वुफलावान** का संस्कृत अर्थ प्रेरणार्थक रूप में नहीं किया है। जबकि **वुफनावान** का अर्थ प्रेरणार्थक रूप में किया गया है।

॥ वुज़कॉम्पप्रसां वा ॥ ५ ॥

वुज़ जागरणे । कॉम्प कम्पने । प्रस प्रसवे । एषां धातूनां आवि परे विकल्पेन अन् आगमो भवति [१४-१५ सूत्राभ्याम् आव आदेर्ह्रस्वः] ॥ वुज़वान् छुस् । जागरयति तम् ॥ कॉम्पवान् छुस् । कम्पयति तम् ॥ प्रसवान् छुस् । प्रसावयति ॥ पक्षे । वुज़नावान् छुस् । जागरयति ॥ कॉम्पनावान् छुस् । कम्पयति ॥ प्रसनावान् छुस् । प्रसावयति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.5

वुज़ 'जाग' **कॉम्प** 'काँप' **प्रस** 'प्रसवित हो' इन धातुओं में **आव** के पूर्व **अन** का आगम विकल्प से होता है। 8.4.14, 15 सूत्र के अनुसार **आव** के **आ** का ह्रस्वीकरण। **वुज़वान छुस** 'उस को जगाता है'। **कॉम्पवान छुस** 'उस को कंपवाता है'। **प्रसवान छुस** 'उस को प्रसवित करता है'। विकल्प में— **वुज़नावान छुस** 'उस को जगाता है'। **कॉम्पनावान छुस** 'उस को कंपवाता है'। **प्रसनावान छुस** 'उस को प्रसवित करता है।'

व्याख्या—

निर्देशित तीन धातुओं में **अन** के आगम का विकल्प है। आगम न होने

पर प्रत्यय **आव** का आकार अकार में परिणत होता है। निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्यय सहायक क्रिया **छु** के साथ संयुक्त हो जाता है। प्रस्तुत उदाहरणों में **स** अन्य पुरुष एकवचन का द्योतक है।

॥ येरनादेशो ऽनि ॥ ६ ॥

यि आगमने इत्यस्य आव्संबन्धिनि अनि परे अन् आदेशो भवति ॥ अननावान् छुह्। आनाययति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.6

यि 'आ' के साथ **आव** संयुक्त होने पर **अन** आगम के साथ **यि** का **अन** आदेश होता है। **अनुनावान छु** 'लिवा ला रहा है'।

व्याख्या—

यि का प्रेरणार्थक रूप **अन** है, यथा— **मॉज छि न्यचिविस अनान** 'मां बेटे को ला रही है'। **अनुनावान** द्वितीय प्रेरणार्थक रूप है, यथा— **मॉज छि दायि अथि न्यचुव अनुनावान** 'मां दाई से बेटे को लिवा ला रही है'।

॥ सादेशानादेशभूतेभ्यस्त्र्यक्षरधातुभ्यो ऽनो लोपः ॥ ७ ॥

येषां कर्तृधातूनां भूतकालविषये प्रत्ययानामादेशः कृतो न भवति येषां च कृतो भवति ते त्र्यक्षराश्चेत्स्युस्तेभ्य आवि परे अन् आगमस्य लोपो भवति ॥ व्वरावान् छुह्। समापयति ॥ कान्नरावान् छुह्। पिङ्गलीकरोति ॥ कुमलावान् छुह्। कोमलीकरोति ॥ चॉखरावान् छुह्। संकोचयति ॥ छ्वँछ्नावान् छुह्। लघ्वीकरोति ॥ मन्दछावान् छुह्। ह्रेपयति ॥ व्वजलावान् छुह्। उज्ज्वलीकरोति ॥ व्वर समाप्तौ। कान्नर पिङ्गलीभवने। कुमल कोमलीभवने। चॉखर संकोचने। छ्वँछ्न लघ्वीभवने। मन्दछ मन्दाक्षे। व्वजल रक्तीभवने। हेतौ धातोराव् (सू० २) इत्याव्। आव्यनागमः (सू० ३)। अनेन लोपः। सादेशानां यथा। समखावान् छुह्। समक्षीकरोति ॥ व्वपज़ावान् छुह्। उत्पादयति ॥ सादेशानादेशभूतेभ्यः किम्। कमवनावान् छुह्। अर्जयति ॥ कतरनावान् छुह्। कृन्तयति ॥ कपटनावान् छुह्। शकलीकरोति ॥ त्र्यक्षरेभ्यः किम्। बुडनावान छुह्। स्थविरीकरोति ॥ खल्रावान् छुह्। विस्तारयति ॥ वंज़्रावान् छुह्। भावयति ॥ थकनावान् छुह्। श्रामयति ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.4.7**

तीन अक्षर वाले कर्तृ धातु जिन का भूतकाल के विषय में प्रत्यय आदेश न हुआ हो, अथवा हुआ हो, उन में **आव** के पूर्व **अन** आगम का लोप होता है। **व्बरावान छु** 'समाप्त करवाता है'। **काच़रावान छु** 'भूरा करवाता है'। **कुमलावान छु** 'पिघला रहा है'। **चोंखरावान छु** 'संकुचित करता है'। **छ़ों॑छ़नावान छु** 'लघु करवाता है'। **मंदछावान छु** 'शर्मिन्दा करवाता है'। **व्वज़लावान छु** 'लाल करवाता है'। **व्बर** 'समाप्त हो'। **काच़र** 'भूरा हो'। **कुमल** 'पिघल'। **चोंखर** 'संकुचित हो'। **छ़ों॑छ़न** 'लघु हो'। **मंदछ** 'शर्मा'। **व्वज़ल** 'लाल हो'। 8.4.2 सूत्र के अनुसार **आव**। 8.4.3 सूत्र के अनुसार **अन** का आगम। प्रस्तुत सूत्र से **अन** का लोप। **व्यपज़ावान छु** 'उपजाता है'। भूत में आदेशित और अनादेशित क्यों? **कमावनावान छु** 'कमवाता है'। **कतरनावान छु** 'कटवाता है'। **कपटनावान छु** 'दर्ज़ी द्वारा कटवाता है'। त्र्यक्षरी क्यों? **बुडनावान छु** 'बूढ़ा कराता है'। **खॅलरावान छु** 'ढ़ीला करवाता है'। **बॆन्यरावान छु** 'अलग करवाता है'। **थकनावान छु** 'थकवाता है'।

व्याख्या—

अकर्मक त्रिअक्षरी धातुओं का प्रेरणार्थक रूप **अ़न** आगम रहित होता है। स्पष्टीकरण में पर्याप्त उदाहरण प्रस्तुत हैं। सकर्मक धातुओं में **अ़न** का लोप नहीं होता। तीन अक्षरों से कम धातुओं के प्रेरणार्थक रूप में भी यह लोप नहीं है। उपयुक्त उदाहरण स्पष्टीकरण में दिए गए हैं।

॥ वुष्णश्च ॥ ८ ॥

वुष्ण उष्णीभवने इत्यस्य आवि परे अनागमस्य लोपो भवति ॥ वुष्णावान् छुह् । उष्णीकरोति ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.4.8**

वुशन (वुष्ण) 'ऊष्ण हो' के साथ भी **आव** प्रत्यय संयुक्त होने पर **अन** के आगम का लोप होता है। **वुशनावान छु** 'ऊष्ण करता है'।

व्याख्या—

यह सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। **वुशन** के प्रेरणार्थक रूप में भी **आव** प्रत्यय के पूर्व **अ़न** का आगम नहीं होता। अगले सूत्र में दो अन्य धातुओं का उल्लेख है, जिन के प्रेरणार्थक रूप में **अ़न** का आगम नहीं होता।

॥ पिद्योरिंलोपश्च ॥ ९ ॥

पि पतने । दि दाने ।' इत्यनयोः आविं परे अनागमस्य लोपो भवति धातोरिकारस्य च लोपः ॥ पावान् छुम् । पातयतिं तम् ॥ दावान् छुह् । दापयति ॥

अनुवाद– सूत्र 8.4.9

पे (पि) 'गिर' दि 'दे' इन दोनों धातुओं के साथ **आव** प्रत्यय के पूर्व **अन** आगम का लोप है। धातुओं के इकार का भी लोप होता है। **पावान छुस** 'उस को गिराता है'। **दावान छु** 'दिलाता है'।

व्याख्या–

वर्तमान में 'गिर' के अर्थ में **पि** का नहीं **पे** का प्रयोग किया जाता है। व्युत्पन्न रूप में 'इ' की तरह 'ऐ' का भी लोप हो जाता है। स्पष्टीकरण का उदाहरण **पावान छुस** में निमित्तार्थ सार्वनामिक प्रत्यय **स** का प्रयोग है। यह स्पष्ट है, कि इन दोनों के प्रेरणार्थक रूपों के **अन** का आगम नहीं होता।

॥ इकारान्ताद्वा ॥ १० ॥

इकारान्ताद्धातोर्विकल्पेन अनागमस्य लोपो भवति ॥ न्यावान् छुह् । नाययति ॥ ख्यावान् छुह् । खादयति ॥ च्यावान् छुह् । पाययति ॥ ह्यावान् छुह् । हारयति ॥

अनुवाद– सूत्र 8.4.10

इकारान्त धातुअें में **अन** के आगम का लोप विकल्प से होता है। **न्यावान छु** 'लिवाता है'। **ख्यावान छु** 'खिलाता है'। **चावान छु** 'पिलाता है'। **ह्यावान छु** 'खरीदवाता है'।

व्याख्या–

नि 'ले' को छोड़ कर शेष तीनों धातु वर्तमान में इकारान्त नहीं है। ये धातु ऐकारान्त हैं। यथा– **खे** 'खा' **चे** 'पी' **हे** 'खरीद'। स्पष्टीकरण में **अन** आगम युक्त वैकल्पिक रूपों के उदाहरण प्रस्तुत नहीं हैं। वर्तमान में भी ऐसे विकल्प की व्यवस्था नहीं है। ग्रंथकार ने अगले सूत्र में जिन **अन** आगम युक्त व्युत्पन्न रूपों के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं, वे प्रथम प्रेरणार्थक रूप नहीं है।

॥ अनः पूर्वमाव् वा ॥ ११ ॥

इकारान्ताद्धातोः अनागमात्पूर्वं विकल्पेन आव् प्रयोज्यः [पक्षे अनागम-लोपश्च] ॥ ख्यावनावान् छुह् वा ख्यावान् छुह्। खादयति ॥ च्यावनावान् छुह् वा च्यावान् छुह्। पाययति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.11

इकारान्त धातुओं में अन आगम के पूर्व विकल्प से **आव** प्रयुक्त होता है। (**अन** आगम का लोप भी संभव है) **ख्यावनावान छु** अथवा **ख्यावान छु** 'खिलाता है'। **चावनावान छु** अथवा **चावान छु** 'पिलाता है'।

व्याख्या—

अन आगम युक्त रूप द्वितीय प्रेरणार्थक रूप हैं। 8.4.6 सूत्र के अन्तर्गत द्वितीय प्रेरणार्थक रूप का उदाहरण प्रस्तुत है। प्रस्तुत सूत्र में **ख्यावनावान छु** 'खिलवाता है' और **चावनावान छु** 'पिलवाता है' द्वितीय प्रेरणार्थक रूपों के उदाहरण हैं, जबकि **ख्यावान छु** 'खिलाता है' तथा **चावान छु** 'पिलाता है' प्रथम प्रेरणार्थक उदाहरण हैं।

॥ निद्योरावादिलोपः ॥ १२ ॥

नि हरणे। दि दाने। इत्याभ्यां परस्य आव आदिलोपो भवति ॥ निवनावान् छुह्। हारयति ॥ दिवनावान् छुह्। दापयति ॥ [अन्लोप] पक्षे। न्यावान् छुह्। हारयति ॥ दावान् छुह्। दापयति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.12

नि 'ले' **दि** 'दे' इन दोनों धातुओं के पश्च में **आव** आदि प्रत्यय का लोप होता है। **निवनावान छु** 'लिवाता है'। **दिवनावान छु** 'दिलवाता है। पक्ष में— **न्यावान छु** 'लिवाता है'। **दावान छु** 'दिलवाता है'।

व्याख्या—

निवनावान छु 'लिववाता है'। **दिवनावान छु** 'दिलवाता है' ये दोनों द्वितीय प्रेरणार्थक रूप हैं। **न्यावान** रूप वर्तमान में व्यापक नहीं है। **दावान छु** 'दिलाता है' प्रथम प्रेरणार्थक रूप है। यहाँ पर **आव** का लोप द्वितीय प्रेरणार्थक में संभव नहीं है।

॥ हेर्ह्रस्वः ॥ १३ ॥

हि प्रतिग्रहणादिषु । इत्यस्मादाव आदेर्ह्रस्वो भवति ॥ ह्यवनावान् छुह् । प्रतिग्राहयति ॥ [अन्लोप]पक्षे । ह्यावान् छुह् । प्रतिग्राहयतिं ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.13

है (हि) 'खरीद' इस धातु के साथ **आव** आदि का ह्स्वीकरण होता है। **ह्यवनावान** छु 'खरीदवाता है'। पक्ष में— **ह्यवान** छु 'खरीदवाता है'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र में **ह्यवनावान** छु 'खरीदवाता है' प्रेरणार्थक रूप है। **ह्यावान** रूप व्याप्त नहीं है। **ह्यवान** छु 'खरीदता है' प्रेरणार्थक रूप नहीं है।

॥ वुज़ब्वडलारपिलकॉम्परन्ज़्भ्य आवो ह्रस्वः ॥ १४ ॥

वुज़ जागरणे । ब्वड निमज्जने [। लार स्पर्शानुगमनस्निग्धीकरणेषु] पिल पर्याप्तौ । कॉम्प कम्पने । रन्ज़ प्रीतौ रागे च । एभ्यः परस्य [विकल्पेन् अनो लोपे कृते आव् प्रत्ययस्य ह्रस्वो भवति ॥ वुज़वान् छुह् । जागरयति ॥ ब्वडवान् छुह् । निमज्जयति ॥ [लारवान् छुह् । स्पर्शयति ॥] पिलवान् छुह् । प्रापयति ॥ कॉम्पवान् छुह् । कम्पयति ॥ रन्ज़वान् छुह् । रन्जयति ॥ [* अन आगमस्य लोपाभावपक्षे तु ।] वुज़नावान् छुह् । जागरयति ॥ ब्वडनावान् छुह् । निमज्जयति ॥ [लारनावान् छुह् । स्पर्शयति ॥] पिलनावान् छुह् । पर्यापयति ॥ कॉम्पनावान् छुह् । कम्पयति ॥ रन्ज़नावान् छुह् । रन्जयति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.14

वुज़ 'जाग', **ब्वड** 'डूब', **लार** 'चिपक', **पिल** 'पकड़', **कॉम्प** 'काँप', **रंज़** 'प्रसन्न हो' इन के पश्च में विकल्प से **अन** का लोप होता है और **आव** प्रत्यय ह्स्व हो जाता है। **वुज़वान** छु 'जगाता है' **ब्वडवान** छु 'डुबाता है'। **लारवान** छु 'चिपकाता है'। **पिलवान** छु 'पकड़ाता है।' **कॉम्पवान** छु 'कँपाता है'। **रंज़वान**

[* अस्मिन्स्थाने मूलपुस्तके एभ्यः परस्य किंगिति पाठो ऽसंगतार्थो ऽभूत् ।]

छु 'प्रसन्न करवाता है'। **अुन** आगम के लोप से ये रूप भावपक्ष में है। **वुज़ुनावान छु** 'जगाता है/जगवाता है। **ब्वडुनावान छु** 'डुबवाता है'। **लारुनावान छु** 'चिपकवाता है'। **पिलुनावान छु** 'पकड़ाता है/पकड़वाता है **कॉपुनावान छु** 'कम्पवाता है'। **रंज़ुनावान छु** 'प्रसन्न कराता है'/प्रसन्न करवाता है'।

व्याख्या–

स्पष्टीकरण में इस बात का उल्लेख है, कि **अुन** आगम रहित तथा **वान** सहित, व्युत्पन्न रूप अकर्मक नहीं रहते, सकर्मक हो जाते हैं, परन्तु प्रेरणार्थक अर्थ सम्प्रेषित नहीं करते। **अुन** आगम युक्त अधिकांश शब्द प्रेरणार्थक अर्थ सम्प्रेषित करते हैं। **वुज़ुनावान**, **पिलुनावान** और **रंज़ुनावान** के संदर्भ में वाक्य ही स्पष्ट करता है, कि शब्द रूप प्रेरणार्थक है अथवा नहीं।

पाद टिप्पणी में संम्पादक उल्लेख करते हैं कि मूल पुस्तक में 'एभ्यः परस्य किम्' वाक्यांश भी लिखा हुआ है, संम्पादक का मत है कि यह वाक्यांश असंगतार्थ है।

॥ प्रसः पीनादेशश्च वा ॥ १५ ॥

प्रस प्रसवे इत्यस्मात्परस्य आव् प्रत्ययस्य ह्रस्वो भवति विकल्पेन पीन आदेशः [अनो लोप] श्च स्यात् ॥ प्रसवान् छुह् । प्रसावयति ॥ पक्षे । पीनवान् छुह् । प्रसावयति ॥ प्रसनावान् छुह् इति तृतीयं स्वरूपमुक्तचरमेव [सू० ५] ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.4.15**

प्रस 'प्रसवित हो' इस के साथ **आव** प्रत्यय ह्रस्व होता है, विकल्प से **पीन** आदेश तथा **अुन** का लोप भी है। **प्रसवान छु** 'प्रसवित करता है' विकल्प में– **पीनवान छु** 'प्रसवित करता है। **प्रसनावान छु** 8.4.5 सूत्र में वर्णित तीन धातुओं के अन्तर्गत व्याख्यायित है।

व्याख्या–

यहाँ भी **आव** प्रत्यय का आकार, अकार में परिणत होता है। वर्तमान भाषा में **पीनवान** शब्द का प्रयोग ही व्यापक है।

॥ फट उपधादीर्घश्च ॥ १६ ॥

फट काष्ठभेदादिषु इत्यस्मात्परस्य आव् प्रत्ययस्य ह्रस्वो भवति धातोरुपधायाश्च दीर्घः स्यात् ॥ फाटवान् छुह् । निमज्जयति ॥ [अनो लोपाभाव] पक्षे । फाटनावान् छुह् । उद्भेदयति ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.4.16

फठ (फट) 'डूब' इस के उपरान्त **आव** प्रत्यय का आकार ह्रस्व होता है, *तथा धातु के उपधा का स्वर दीर्घ।* **फाटवान छु** 'डुबाता है'। पक्ष में, *अ़न* के लोप के अभाव में **फाटनावान छु** 'डुबवाता है'।

व्याख्या–

फाटवान सकर्मक रूप है, परन्तु प्रेरणार्थक नहीं। **फाटनावान** प्रेरणार्थक रूप है।

॥ न क्च़ादिभ्यो ऽनो लोपादि ॥ १७ ॥

क्च़व धातुर्धातुपाठे सिद्ध एव पठितः क्च़ आर्द्रीभवने। ग्वह दीप्तौ। ग्रक चाञ्चल्यपाकातिशययोः। ज़ोत दीप्तौ। ट्रक धावने। तेळ विस्फोटादिदंशे। तोप तोषे। दोर गतिचातुर्ये। नोम्प दीप्तौ। नीळ हरितीभवने। पिस पाकेन बहिर्निःसरणे। पेड निर्यासे। पोर पर्याप्त्यनार्द्रत्वयोः। प्रार समीक्षणे। फब प्रशस्तीभवने। फर स्तेये। फल वस्त्रजीर्णने। फुह फुश अन्तःकोपे। फेर भ्रमणादिषु। फोर स्फुरणे। ब्राद प्रबलीभवने। बास भासने। बुड स्थविरीभवने। ब्रज़ दीप्तौ। याप व्याप्तौ। रम्भ शोभायाम्। रस सरसीभवने। रोच़ रोचने। रोट अवष्टम्भे। रुड रूढीभवने। रुण जीर्णने। ल्यड पराजयीभवने। लोर वैकल्ये इत्यादयः [क्च़ादयः]॥ एषामनो लोपादि न भवति आदिशब्दात् ह्रस्वविकल्पादि च न भवति॥ क्च़नावान् छुह्। आर्द्रीकरोति॥ ग्वहनावान् छुह्। दीपयति॥ ग्रकनावान् छुह्। पाचयति॥ ज़ोतनावान् छुह्। दीपयति॥ ट्रकनावान् छुह्। धावयति॥ इत्यादि॥ [अत्रानो लोपादिविधेरप्राप्तावपि वक्ष्यमाण (सू० २०) शिष्टेत्यादिसूत्रविध्याश्रयपरिशिष्टधातुपर्युदासज्ञापनार्थमयं योगारम्भः॥]

अनुवाद–

सूत्र 8.4.17

क्च़व धातु धातुपाठ में सिद्ध और उद्धृत है। **क्च़** का अर्थ है 'भीग'। **ग्वह** 'चमक', **ग्रक** 'उबल', **ज़ोत** 'चमक', **ट्रख** (ट्रक) 'दौड़' **तेल** 'पीड़ित हो', **तोष** 'खुश हो', **दोर** 'दौड़', **नॉम्प** 'चमक', **नील** 'नीला हो', **पिस** 'पिस', **पेड** 'फैल', **पोर** 'सूख', **प्रार** 'रुक', **फब** 'उन्नत हो', **फर** 'चुरा/टटोल', **फल** 'जीर्ण हो', **फुह** 'कुपित हो', **फेर** 'घूम', **फोर** 'फड़क' **बाद/ब्राद** 'लोलुप हो', **बास** 'भास', **बुड** 'बूढ़ा हो' **ब्रज़** 'चमक' **याप** 'शक्त हो' **रम्भ** 'शोभित हो', **रस** 'सरस हो', **रोच़** 'रुच' **रोट्** 'स्थिर हो'। **रुड** 'मचल' **रुन** 'जीर्ण हो' **ल्यड** 'डरपोक हो' **लोर**

'विकल हो' इन में **अुन** 'लोप नहीं है। सूत्र के आदि शब्द का अभिप्राय है, कि (आव के आकार का) ह्स्वीकरण नही होता तथा (**अुन** के लोप का) विकल्प भी नही है। **कचुनावान छु** 'भिगवाता है'। **ग्वहुनावान छु** 'चमकवाता है'। **प्रकुनावान छु** 'उबलवाता है'। **ज़ोतुनावान छु** 'चमकवाता है'। **टकुनावान छु** 'दुड़वाता है इत्यादि। यहाँ पर **अुन** का लोप आदि विधियाँ अप्राप्त होने पर भी 8.4.20 सूत्र वक्ष्यमाण नही है। उक्त सूत्र शिष्ट आदि शब्दों के लिए है। प्रस्तुत सूत्र ज्ञापित करने से स्पष्ट होता है, कि उपर्युक्त शब्दों पर रकारागम सिद्ध नहीं है।

व्याख्या–

स्पष्टीकरण में परिगणित धातुओं के साथ प्रेरणार्थक प्रत्यय **आव** संयुक्त होने पर **अुन** का आगम होता है। **आव** प्रत्यय का आकार भी यथावत रहता है। परिगणित धातुओं में जिन का प्रयोग वर्तमान नहीं है, वे हैं– **ग्वह, फुह, बाद** और **लोर**। **तेल** और **तोश** के प्रेरणार्थक रूप व्यापक नहीं है। शेष सभी का प्रेरणार्थक रूप **अुन** तथा **आव** संयुक्त होने से सिद्ध है। **पोर** का वर्तमान प्रयोग 'पछाड़' के अर्थ में व्यापक है। 'सूख' के अर्थ में नहीं।

॥ मरः संधापने ॥ १८ ॥

मर मरणसंधापनयोरित्यस्य संधापनार्थे अनो लोपादि न भवति ॥ मरनावान् छुह् । संधापयति ॥ संधापनार्थे किम् । मारान् छुह् । मारयति ॥ यद्यपि मार मारणे इत्यादयः केचिद्धातवो धातुपाठे सिद्धा एव पठिताः परं-त्वत्र पाठकानां भ्रमनिरसनाय तेषां कारितक्रिया विशदीकृता ॥

अनुवाद–

सूत्र 8.4.18

मर 'मर, चिपक'। इन दो अर्थों में 'चिपक' अर्थ के लिए **अुन** आदि का लोप नहीं होता। **मरुनावान छु** 'चिपकवाता है'। 'चिपक' अर्थ में ही क्यों? **मारान छु** 'मारता है'। यद्यपि **मार** 'मार' धातु के रूप में धातुपाठ में अंकित है, फिर भी पाठकों का भ्रम दूर करने के लिए, इस को कारित क्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या–

चिपक के अर्थ में **मर** धातु का प्रेरणार्थक रूप **अुन** आगम युक्त होता है। धातु अथवा प्रेरणार्थक प्रत्यय में कोई विकार भी नहीं आता। 'मर' के अर्थ में धातु का सकर्मक रूप **मार** है। यह प्रेरणार्थक रूप नहीं है। ग्रंथकार इस को हेतु रूप मानते हैं। प्रेरणार्थक रूप व्युत्पन्न करने के लिए **अुन** तथा **आव** दोनों प्रत्यय संयुक्त होते हैं यथा– **मारुनावान छु** 'मरवाता है'।

॥ त्यठो वा ॥ १९ ॥

त्यठ तिक्तीभवने इत्यस्य विकल्पेन अनो लोपादि न भवति ॥ त्यठनावान् छुह् । तिक्तीकरोति ॥ पक्षे । त्यॅठ्रावान् छुह् । तिक्तीकरोति ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.4.19**

त्यठ 'कड़वा हो'। विकल्प के रूप में इस के साथ **अन** का लोप तथा अन्य विकार नहीं होते। **त्यठनावान छु** 'कड़वा करवाता है', अन्य पक्ष में **त्यॅठरावान छु** 'कड़वा करवाता है।

व्याख्या–

त्यठ धातु का प्रेरणार्थक रूप **अन** तथा **आव** संयुक्त होने से सिद्ध है। इस स्थिति में मूल धातु, यथावत रहता है, परन्तु विकल्प यह है कि **अन** प्रत्यय के **न** के स्थान पर रकारागम हो सकता है। रकारागम होने की स्थिति में उपधा का अकार ॲकार में परिणत होता है। दोनों उदाहरण स्पष्टीकरण में उपस्थित है।

॥ शिष्टेभ्य आवि रागमो ऽनादेशेषु ॥ २० ॥

अनादेशभूतप्रत्ययेषु मध्याच्छिष्टेभ्यो धातुभ्य आव् प्रत्यये परे रकारागमो भवति ॥ कॅल्रावान् छुह्। मूकीकरोति ॥ खॅल्रावान् छुह् वा खॅज्रावान् छुह्। विस्तारयति ॥ ग्वॅब्रावान् छुह्। गुर्वीकरोति ॥ चॅक्रावान् छुह्। अम्लीकरोति ॥ चुक्रावान् छुह्[1] । कोपयति ॥ पॅद्रावान् छुह्। स्थूलीकरोति ॥ व्यॅद्रावान् छुह्। स्थूलयति ॥ तीज्रावान् छुह्। उत्तेजयति ॥ ठीक्रावान् छुह्। स्थापयति ॥ इत्यादयः स्वयमेव साधनीयाः ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.4.20**

जहाँ, भूतकाल के विषय में प्रत्यय का अनादेश हो वहाँ, **आव** प्रत्यय के पूर्व मध्य में शिष्ट रूपों के लिए रकारागम होता है। **कॅलुरावान छु** 'गूँगा करवाता है', **खॅलुरावान छु/खॅजुरावान छु** 'चौड़ा करवाता है', **गोबुरावान छु** 'भारी

[१ चूक धातुर्धातुपाठे चकारोपधः पठ्यते चुक्रावान् छुह् इत्येतत्प्रयोगनिष्पत्त्या अत्रोकारोपधो ज्ञेयः ॥]

करवाता है', **चोकुरावान छु** 'खट्टा करवाता है', **चुकुरावान छु** 'गुस्सा कराता है', **पूठरावान छु** 'स्थूल करवाता है', **व्यठुरावान छु** 'मोटा करवाता है', **तीज़रावान छु** 'उत्तेजित करवाता है', **ठीकुरावान छु** 'स्थिर करवाता है', इत्यादि स्वयं साधनीय है।

व्याख्या–

उपर्युक्त उदाहरणों में यदि रकार के स्थान पर **अुन** का आगम किया जाए तो व्युत्पन्न पद शिष्ट रूप नहीं माना जाएगा यथा– **खेंजुनावान, पूठुनावान, व्यठुनावान** आदि। **कॅलुरावान** के विकल्प में **कुजरावान** का भी प्रयोग हो सकता है। पाद टिप्पणी में अंकित है, कि **चुकरावान** को धातुपाठ में **च़्वक** अंकित किया है।

॥ च़लछ्य़न्नथकफसफुटफ्ल्लमषरावङ्कखङ्कच़श्र-पेभ्यो वा ॥ २१ ॥

सादेशभूतप्रत्ययधातुषु प्रोक्तेभ्यो धातुभ्यः आव् प्रत्यये परे रकारागमो विकल्पेन स्यात् ॥ च॑लुरावान् छुह् । प्रद्रावयति ॥ च॑लनावान् छुह् । विद्रावयति ॥ छ्य॑न्सुरावान् छुह् । छेदयति ॥ छ्य़न्ननावान् छुह् । छेदयति ॥ थ॑कुरावान् छुह् वा थकनावान् छुह् । श्रमयति ॥ फ॑सुरावान् छुह् वा फसनावान् छुह् । निबद्धयति ॥ फुटुरावान् छुह् वा फुटनावान् छुह् । भनक्ति ॥ एवमितरेषामपि ज्ञेयम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 8.4.21**

सादेशित भूतकालिक प्रत्यय वाले धातुओं के साथ **आव** प्रत्यय से पूर्व, विकल्प से, रकारागम होता है। **चॅलुरावान छु** 'भगवाता है/भगाता है', **च़लुनावान छु** 'भगवाता है/भगाता है', **छ्य़नुरावान छु** 'कटवाता है', **छ्य़नुनावान छु** 'कटवाता है', **थॅकुरावान छु** 'थकाता है', **थकुनावान छु** 'थकवाता है', **फॅसुरावान छु** अथवा **फसुनावान छु** 'फसाता है/फसवाता है', **फुटुरावान छु** अथवा **फुटुनावान छु** 'तोड़ता है/तुड़वाता है', इसी प्रकार अन्य भी।

व्याख्या–

रकारागम युक्त व्युत्पन्न पद अधिकतर सकर्मक क्रिया के रूप में ही ग्राह्य हैं, जबकि **अुन** आगम युक्त पद प्रेरणार्थक अर्थ सम्प्रेषित करते हैं।

छपचेनमानां भूतकर्मधातुषु ॥ २२ ॥

भूतकाले ये धातवः कर्मप्रयोगिणो भवन्ति तेषु मध्यात्। छप वृष्टिकालयोः क्षेपे। चेन चेतने। मान स्वीकरणे। इत्येतेभ्य आव् प्रत्यये रकारागमो वा भवति ॥ छंप्रावान् छुह्। क्षेपयति ॥ चीन्रावान् छुह्। संज्ञापयति ॥ मांन्रावान् छुह्। स्वीकारयति ॥ पक्षे। छपनावान् छुह्। चेननावान् छुह्। माननावान् छुह् ॥ प्रथमो वकारविशिष्टो ऽपि दृश्यते ॥ छ्वप्रावान् छुह्। इति ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.4.22**

भूतकाल में जिन धातुओं का कर्म प्रयोग है, उन के मध्य में (रकारागम) होता है। **छप** '(वर्षा काल में) छिप', **चेन** 'चेत' **मान** 'मान' इन धातुओं में भी विकल्प से, आव प्रत्यय के पूर्व रकारागम होता है। **छंपुरावान छु** 'छिपाता है', **चीनुरावान छु** 'चितवाता है' **मॉन्यरावान छु** 'मनवाता है', पक्ष में:— **छपुनावान छु, चेनुनावान छु, मानुनावान छु**। प्रथम (उदाहरण) वकार युक्त भी देखिए। **छ्वपुरावान छु**। इति

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। इन धातुओं में भी हेतु अर्थ के लिए, रकार अथवा **अुन** आगम का विकल्प है।

॥ छकः स्वार्थे ॥ २३ ॥

छक कीर्णने इत्यस्य आव् प्रत्यये परे रकारागमो भवति स्वार्थे एव ॥ छकान् छुह्। अवकिरति ॥ छंक्रावान् छुह्। अवकिरति ॥ छंक्रान् छुह्। अवकिरति ॥ हेतौ तु। छकनावान् छुह वा छंक्रनावानं छुह्। इति स्वरूपे स्तः ॥

अनुवाद— **सूत्र 8.4.23**

छख (छक) 'बिखेर', इस में **आव** प्रत्यय के पूर्व रकारागम होने पर भी रूप अपने ही अर्थ में रहता है। **छकान छु** 'बिखेरता है', **छकुरावान छु** 'बिखेरता है'। **छंकुरान छु** 'बिखेरता है'। **छकुनावान छु** अथवा **छंकुरनावान छु**। ये रूप हैं।

व्याख्या—

छख 'बिखेर' धातु सकर्मक है, इसलिए रकार का आगम इस के अर्थ में' कोई परिवर्तन उत्पन्न नहीं करता। उक्त रकार रहित **आव** प्रत्यय संयुक्त होने

के बाद ही प्रेरणार्थक अर्थ सम्प्रेषित होता है।

॥ रादावो लोपो वा ॥ २४ ॥

रकारात्परस्य आव्प्रत्ययस्य विकल्पेन लोपो भवति ॥ चुकुरान् छुह्। कोपयति ॥ छ्यॅट्रान् छुह्। उच्छिष्टीकरोति ॥ छ्यॅव्रान् छुह्। शमयति ॥ छ्वॅट्रान् छुह् । संक्षेपयति ॥ पूट्रान् छुह्। स्थूलयति। इत्यादि ॥ पक्षे। चुकुरावान् छुह्। कोपयति ॥ छ्यॅट्रावान् छुह्। उच्छिष्टीकरोति ॥ छ्यॅव्रावान छुह्। शमयति ॥ छ्वॅट्रावान् छुह्। शमयति ॥ पूट्रावान् छुह्। स्थूलयति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.24

रकार के उपरान्त विकल्प से **आव** प्रत्यय का लोप होता है। **चुकुरान छु** 'गुस्सा करता है', **छ्यॅटुरान छु** 'जूठा करता है', **छ्यवुरान छु** 'शमित करता है', **छौटुरान छु** 'छोटा करता है'। **पूठुरान छु** 'स्थूल करता है', इत्यादि विकल्प में– **चुकुरावान छु** 'गुस्सा करता है' **छ्यॅटुरावान छु** 'जूठा करता है', **छ्यवुरावान छु** 'शमित करता है', **छौटुरावान छु** 'छोटा करता है', **पूठुरावान छु** 'स्थूल करता है'।

व्याख्या—

उदाहरण के सभी रूप हेतुरूप तो हैं, परन्तु प्रेरणार्थक रूप नहीं। प्रेरणार्थक रूप व्युत्पन्न करने के लिए **आव** युक्त पद के साथ **अुन** तथा **आव** संयुक्त होता है यथा– **छ्यटुरावुनाव, छ्यवुरावुनाव, पूठुरावुनाव।**

॥ तवर्गस्याप्रसिद्धचवर्गो रे ॥ २५ ॥

तवर्गान्तस्य धातोः रे रप्रत्यये परे अप्रसिद्धचवर्गादेशो भवति ॥ छॅच्र्‌रावान् छुह्। श्वेतयति ॥ तॅच्‌रावान् छुह् । तापयति ॥ स्वॅच्‌रावान् छुह्। शमयति ॥ श्वॅज़्रावान् छुह्। शोधयति ॥ थॅज़्रावान् छुह्। उन्नतीकरोति ॥ वॅञ्‌रावान् छुह्। भावयति ॥ तॅञ्‌रावान् छुह्। कर्शयति ॥ क्यॅञ्‌रावान् छुह्। छेदयति। इत्यादयो विज्ञेयाः ॥ छत श्वैत्ये। तत तप्तीभवने। स्वत शमने। श्वद शोभने। थद उन्नतीभवने। वन भवने। तन विरलीभवने। क्यन छेदने। हेतौ (२ सूत्रेण) आव्। शिष्टेभ्य आवि रागमो ऽनादेशेषु (सू० २०) इति रकारागमः। अनेन क्रमात्तवर्ग्याणामप्रसिद्धचवर्ग्यादेशः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.25

तवर्गान्त धातुओं के पश्च में र प्रत्यय होने से तवर्ग का अप्रसिद्ध च़वर्ग में आदेश होता ह। **छॅचुरावान छु** 'रंग हल्का करता है' **तॅचुरावान छु** 'गर्म करता है', **सॊचुरावान छु** 'शमित करता है', **शॊज़ुरावान छु** 'सुधारता है', **थज़ुरावान छु** 'उन्नत करता है', **बॅन्युरावान छु** 'बनवाता है', **तॅन्युरावान छु** 'पतला करता है', **कॅन्यरावान छु** 'भिगोता है' इत्यादि। **छत** 'श्वेत हो' **तत** 'गर्म हो' **स्वत** 'शमित हो' **श्वद** 'सुधर, शुद्ध हो' **थद** 'उन्नत हो' **बन** 'बन' **तन** 'पतला हो' **क्यन** 'भीग'। 8.4.2 सूत्र से **आव** प्रत्यय। 8.4.20 सूत्र से रकारागम प्रस्तुत सूत्र से तवर्ग का क्रमानुसार अप्रसिद्ध च़वर्गादेश।

व्याख्या—

उदाहरणों के सभी मूल धातु अकर्मक रूप हैं। रकार के आगम से सकर्मक में परिणत होते हैं। **बॅनिराव** 'बनवा' प्रेरणार्थक रूप है। शेष पदों के प्रेरणार्थक रूप, पूर्व सूत्र के उदाहरणों की तरह ही **अुन** तथा **आव** प्रत्यय संयुक्त होने के उपरान्त सिद्ध हैं।

॥ ज़ेरन्त्यस्योव् ॥ २६ ॥

ज़ि जनने इत्यस्य रकारे परे अन्त्यस्वरस्य ओव् आदेशो भवति ॥ ज़ोवुरान् छुह्। जनयति ॥ पक्षे ज़ोवुरावान् छुह्। जनयति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.26

ज़े (ज़ि) 'उत्पन्न हो' के साथ रकार होने पर अन्त के स्वर का **ओव** आदेश होता है। **ज़ोवुरान छु** 'उत्पन्न करता है'। विकल्प में— **ज़ोवरावान छु** 'उत्पन्न करता है'।

व्याख्या—

अंतिम स्वर **ऐ** का वर्तमान रूपांतरण दीर्घ **ओ** के स्थान पर ह्रस्व 'ओ' अर्थात **ऒ** में होता है। परिणामतः **ज़ोवर** रूप सिद्ध है। उदाहरण— **काँगुर छु ज़ोवुरान** 'काँगड़ी सुलगाता/तैयार करता है'।

॥ भूतोक्तस्त्र्येकत्ववदुपधादेशादयश्च ॥ २७ ॥

धातूनां रकारे परे उपधादेशादयः भूतोक्तस्त्रीलिङ्गैकत्ववत् भवन्ति। ये भूतकाले स्त्रीलिङ्गैकवचनसंबन्धिन उपधाया आदेशादयो भवन्ति ते हेतुसंबन्धिनि रकारे ऽपि भवन्तीत्यर्थः ॥ मांनुरावान् छुह्। मानयति ॥ कांनुरावान् छुह्। काणीकरोति ॥ म्रीदुरावान् छुह्। मृदीकरोति ॥ मीदुरावान् छुह्। मधुरीकृ-

रोति ॥ पूठ्रावान् छुह् । स्थूलयति ॥ लूक्रावान् छुह् । क्षुद्रीकरोति ॥ मान स्वीकरणे । कान काणीभवने । ब्रेठ मूर्खीभवने । मेठ मधुरीभवने । पोठ स्थूलीभवने । लोक क्षुद्रीभवने । हेतौ धातोराव् (सू० २) इति आव् प्रत्ययः । छपत्रेनमानां भूतकर्मधातुषु (सू० २२) इति रकारागमः । शिष्टानां पञ्चानां शिष्टेभ्य आवि रागमो ऽनादेशेषु (सू० २०) इति रकारागमः । तवर्गस्याप्रसिद्धत्रवर्गो रे (सू० २५) इति नकारस्य ञकारः । एकत्वे ऊमाभादेशः (सू० ८।३।८) इति सूत्रवृत्तिसिद्धा उपधाया आकारस्याप्रसिद्धता । स्त्रियामीहेतौ सर्वत्र (सू० ८।३।२३) इति एकारस्य ईकारः । स्त्रियापूदोताव् (सू० ८।३।२५) इति ओकारस्य ऊकारः । मांञ्राव् इत्यादिसिद्धौ वर्तमानायां छुह् (सू० ८।१।११) । धातोरानागमः (सू० ८।१।१९) ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.27

भूतकाल के स्त्रीलिंग एकवचन में उपधा का जो आदेश होता है, वही आदेश हेतु के संबंध में धातु के साथ रकार संयुक्त होने पर भी होता है। **मॉन्यरावान छु** 'मनवाता है', **कॉन्यरावान छु** 'काना करवाता है', **ब्रीठुरावान छु** 'मूर्ख बनवाता है', **मीठुरावान छु** 'मीठा करता है'। **पूठरावान छु** 'मोटा करना है' **लूकरावान छू** 'छोटा करता है', **मान** 'मान', **कान** 'काना हो', **ब्रेठ** 'मूर्ख बन', **मेठ** 'मीठा बन', **पोठ** 'मोटा हो', **लोक** 'छोटा हो'। 8.4.2 सूत्र के अनुसार **आव** प्रत्यय। 8.4.22 सूत्र के अनुसार रकारागम। 8.4.20 सूत्र के अनुसार भी रकारागम। 8.4.25 सूत्र के अनुसार नकार का न्यकार। 8.3.8 सूत्र के अनुसार आकार की अप्रसिद्धता। 8.3.23 सूत्र के अनुसार एकार का ईकार। 8.3.25 सूत्र के अनुसार ओकार का ऊकार। 8.1.11 सूत्र के अनुसार **छुह** प्रत्यय। 8.1.19 सूत्र के अनुसार **आन** का आगम।

व्याख्या—

रकारागम के कारण उपधा के स्वर का रूपांतरण होता है। यह रूपांतरण भूतकाल के स्त्रीलिंग एकवचन रूपों के लिए 8.3.8., 23, 25 सूत्रों में अंकित हैं। उपधा के स्वरों का वही रूपांतरण हेतुरूपों के लिए भी प्रासंगिक है।

॥ तरमरडललगां हेतुप्रत्ययागमलोपोपधादीर्घौ ॥२८॥

तर तरणे । मर मरणसंधापनयोः । डल उल्लङ्घने । लग संगे पदार्थां संगतीभवने च । एषां धातूनां हेतोः कारितस्य संबन्धिनोः प्रत्ययागमयोर्लोप उपधायाश्च दीर्घो भवति ॥ मरः मरणार्थ एव । लगः संग एव ॥ तारान् छुह् । तारयति ॥ मारान् छुह् । मारयति ॥ डालान् छुह् । उल्लङ्घयति ॥ लागान्

छुह्। संगमयति ॥ मरणार्थे किम्। मरनावान् छुह्। संधापयति ॥ संगे किम्। लगनावान् छुह्। साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.28

तर 'पार हो', **मर** 'मर', 'चिपक' **डल** 'हट' **लग** 'लग, चोटिल हो, जुड़'। इन धातुओं के हेतुरूपों में प्रत्यय तथा आगम का लोप एवं उपधा का दीर्घीकरण होता है। **मर** शब्द का 'मर' अर्थ में तथा **लग** शब्द का जुड़ अर्थ में। **तारान छु** 'पार करवाता है', **मारान छु** 'मारता है', **डालान छु** 'हटाता है', **लागान छु** 'जोड़ता है'। 'मर' अर्थ में क्यों? **मरनावान छु** 'चिपकवाता है'। जुड़ अर्थ में क्यों? **लगनावान छु** "चोट लगवाता है'। साधन पूर्ववत।

व्याख्या—

यहाँ पर भी व्युत्पन्न सकर्मक रूपों को हेतुरूप स्वीकार किया गया है। प्रेरणार्थक रूप के लिए **अुन** तथा **आव** प्रत्यय आवश्यक है। यथा— **तारुनाव** 'पार करवा', **मारुनाव** 'मरवा', **डालुनाव** 'हटवा', **लागुनाव** 'लगवा'। **मर** तथा **लग** के अन्य अर्थ वाले प्रेरणार्थक रूप स्पष्टीकरण में अंकित हैं।

॥ खसवसोरन्त्यस्य रश्च ॥ २९ ॥

खस आरोहे । वस अवरोहणे । अनयोर्हेतुप्रत्ययागमलोपौ भवतः अन्त्याक्षरस्य च रकारो भवति ॥ खारान् छुह्। आरोपयति ॥ वारान् छुह्। अवतारयति ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.29

खस 'चढ़' **वस** 'उतर' इन दोनों के हेतुरूपों में प्रत्यय और आगम का लोप होता है, तथा अन्त के अक्षर का रकार। **खारान छु** 'चढ़ाता है', **वालान छु** 'उतारता है'।

व्याख्या—

खारान और **वालान** व्युत्पन्न सकर्मक रूप हैं। प्रेरणार्थक रूप में, यथापूर्व **अुन** और **आव** आवश्यक हैं। यथा— **खारुनाव** 'चढ़वा', **वालुनाव** 'उतरवा'।

॥ श्वङ्गः सावादेशो वा ॥ ३० ॥

श्वङ्ग शयने इत्यस्य हेतुप्रत्ययागमलोपौ सावादेशश्च विकल्पेन भवति ॥ सावान् छुह्। शाययति ॥ पक्षे । श्वङ्गनावान् छुह् ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.30

श्वंग 'सो' इस के हेतुरूप में विकल्प से प्रत्यय तथा आगम का लोप और **साव** का आदेश है। **सावान छु** 'सुलाता है'। विकल्प में— **श्वंगनावान छु** 'सुलाता है'।

व्याख्या—

साव सकर्मक के साथ साथ प्रेरणार्थक रूप भी है। द्वितीय प्रेरणार्थक रूप के लिए **अ़न** तथा **आव** प्रत्ययों की आवश्यकता है। यथा— **मॉज छि कोरि अथि शुर साव़नावान** 'माँ बेटी के द्वारा बच्चे को सुलवाती है'।

॥ दज़ो ज़ालः ॥ ३१ ॥

दज भस्मीभवने इत्यस्य हेतुमत्ययागमलोपौ जाल आदेशश्च भवति ॥ जालान् छुइ । दाहयति ॥ दजनावान् छुइ इति न साधुशब्दः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.31

दज़ 'जल' इस के हेतुरूप में प्रत्यय और आगम का लोप तथा **ज़ाल** का आदेश है। **ज़ालान छु** 'जलाता है'। **दज़नावान छु** साधु शब्द नहीं है।

व्याख्या—

दज़ का सकर्मक रूप **ज़ाल** है। प्रेरणार्थक रूप के लिए **अ़न** तथा **आव** प्रत्यय संयुक्त होते हैं। यथा— **ज़ाल़नाव** 'जलवा'।

॥ डेषो हावो वा ॥ ३२ ॥

डेप प्रेक्षणे इत्यस्य धातोर्हेतुमत्ययागमलोपौ हावादेशश्च भवति ॥ हावान् छुइ । दर्शयति ॥ पक्षे । डेपनावान् छुइ । इति गौणः ॥

अनुवाद— सूत्र 8.4.32

डेश (डेष) 'देख' इस धातु के हेतुरूप में प्रत्यय तथा आगम का लोप एवं **हाव** का आदेश है। (यह विकल्प से होता है।) **हावान छु** 'दिखाता है'। विकल्प में **डेश़नावान छु** यह रूप गौण है।

व्याख्या—

पूर्व सूत्र की तरह प्रस्तुत सूत्र में भी ये दोनों रूप नितांत भिन्न है, यद्यपि दोनों सकर्मक रूप हैं। पूर्व सूत्र में **दज़** और **ज़ाल** में **ज़** अक्षर समान तो है, परन्तु व्युत्पति की दृष्टि से यह समानता सार्थक नहीं है।

प्रेरणार्थक रूप के लिए **अुन** तथा **आव** प्रत्यय संयुक्त होते हैं। यथा– **हावुनाव** 'दिखवा'।

॥ गछ्ः पकः ॥ ३३ ॥

गछ् गतौ इत्यस्य हेतुप्रत्ययागमलोपौ पकादेशश्च भवति॥ पकनावान् छुह्। गमयति॥ गछ्नावान् छुह् इति न साधुशब्दः। किं तु गंगाय गछ्नावान् छुस्। गङ्गां गमयति। इत्येवंविधे स्थाने यत्र स्वसाहचर्यं न स्यात्तत्रापर एव मुख्यः। यत्र तु स्वसाहचर्यं स्यात् यथा गोवन् पकनावान् छुह्। गा गमयति॥ इत्येवंविधे स्थाने प्रथम एव मुख्य इति निर्णयम्॥

अनुवाद– सूत्र 8.4.33

गछ़ 'जा' इस के हेतु रूप में प्रत्यय और आगम का लोप तथा **पक** का आदेश है। **पकुनावान छु** 'चलवाता है'। **गछुनावान छु** साधु शब्द नहीं है, किन्तु **गंगायि गछुनावान छुस** '(वह) उस को गंगा के लिए भिजवाता है।' यहाँ पर गंगा यात्रा में सहचर्य नहीं है, इसलिए दूसरा रूप ही ठीक है। जहाँ सहचर्य है, यथा– **गॉवन पकनावान छु** 'गायों को ले जाता है। यहाँ प्रथम रूप ही सही है।

व्याख्या–

गछ़ और **पक** दोनों अकर्मक क्रियाएँ है। प्रेरणार्थक की व्युत्पत्ति **पक** धातु से ही संभव है। यथा– **पकुनाव** 'चलवा'। **गॉवन पकुनावान छु** वाक्य का वर्तमान शब्द क्रम रूप **गॉवन छु पकुनावान** है।

॥ व्वथस्तुलः ॥ ३४ ॥

व्वथ उत्थाने। इत्यस्य हेतुप्रत्ययागमलोपौ तुलादेशश्च भवति॥ तुलान् छुह्। उत्थापयति॥ व्वथनावान् छुह्। इति गौणः। अत्रापि स्वहस्तेन वस्तुन उत्थापने आद्यो मुख्यः। प्रेरणादिना सजीवस्योत्थापने ऽपरो मुख्यः॥

अनुवाद– सूत्र 8.4.34

व्वथ 'उठ' इस के हेतुरूप में प्रत्यय और आगम का लोप तथा **तुल** का आदेश है। **तुलान छु** 'उठाता है'। **व्वथुनावान छु** यह गौण है। यहाँ भी अपने हाथ से वस्तु उठाने में प्रथम (रूप) मुख्य है। प्रेरणा आदि से सजीव को उठाने में दूसरा (रूप) मुख्य है।

व्याख्या—

व्वथ 'उठ' का सकर्मक रूप **तुल** 'उठा' है। वर्तमान में **व्वथ** के आधार पर व्युत्पन्न प्रेरणार्थक रूप व्यापक नहीं है। **तुल** का प्रेरणार्थक रूप **तुलनाव** 'उठवा' सिद्ध है।

ग्रन्थकार ने पहली बार हेतुपाद के अन्तर्गत प्रस्तुत सूत्र में प्रेरणा शब्द का प्रयोग किया है, अर्थात हेतु के अन्तर्गत प्रेरणा की भूमिका स्वीकार की गई है।

इति

शारदा क्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीरशब्दामृतम्
की आख्यात प्रक्रिया का हेतुपाद 8.4
आख्यात प्रक्रिया भी समाप्त 8

कृदन्त प्रक्रिया 9
कृत्क्रियादि पाद-1

इस प्रक्रिया के अन्तर्गत कृत्क्रियादिपाद तथा भावपाद की व्याख्या की गई है। कृत्क्रियादिपाद 51 सूत्रों पर आधारित है। धातु के साथ निश्चित प्रत्यय संयुक्त होने से कृदन्तीय रूप व्युत्पन्न होता है। यहाँ पर इन्हीं प्रत्ययों का उल्लेख किया गया है। कृदन्त के साथ क्रियापद के अन्तर्गत एक अन्य क्रिया भी आ सकती है। 'तिङ्' से भिन्न प्रत्ययों को पाणिनी ने कृत की संज्ञा दी है। 'कृदतिङ्' 3.1.93 अष्टाध्यायी सूत्र के अनुसार कृत युक्त पद क्रिया के रूप में काम नहीं करता। अधिकांश स्थितियों में यह पद रूढ़ हो जाता है।

ईश्वर कौल ने कृत्क्रियादिपाद में अनेक प्रत्यय निरूपित किए हैं। कुछ प्रत्यय इस प्रकार के भी हैं, जिन का वर्तमान प्रयोजन भिन्न है। 9.1.20 से 24 सूत्र तक **क्युत** को प्रत्यय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। **क्युत** का वर्तमान प्रयोग परसर्ग के रूप में ही किया जाता है, प्रत्यय के रूप में नहीं। 9.1.41 सूत्र में **हे** को **मुत** के साथ उपसर्ग के रूप में संयुक्त करके **मुत** प्रत्यय का एक और व्यापार भी अभिव्यक्त किया गया है। 9.1.42 सूत्र तथा उस के आगे विधिमूलक रूपों की व्याख्या की गई है।

भावपाद की व्याख्या करते हुए पुंलिंग और स्त्रीलिंग प्रत्यय अलग अलग निरूपित किए गए हैं। यह पाद 92 सूत्रों पर आधारित है। इस संदर्भ में **उन** को पुंलिंग भाव प्रत्यय कहा गया है। धातु के साथ **उन** प्रत्यय की संयुक्ति नामधातु रूप व्युत्पन्न करता है। अधिकांश भारतीय भाषाओं के शब्दकोश में क्रिया की प्रविष्टि नामधातु रूप में ही संभव है। हिन्दी की तरह कश्मीरी में भी नामधातु रूप पुंलिंग एकवचन में होता है। 9.2.22 सूत्रों तक पुंलिंग भाव प्रत्ययों का वर्णन है। स्त्रीलिंग भाव रूपों की तरह पुंलिंग भाव भी धातु के समरूपी होते हैं। यथा– 9.2.13 सूत्र में **गंड** का अर्थ 'बांध' भी है और 'गाँठ' भी। 9.2.13 सूत्र से स्त्रीलिंग भाव प्रत्ययों का उल्लेख किया गया है, जिस में **अ़न्य** और **इन्य** मुख्य प्रत्यय हैं। वास्तव में ये दोनों प्रत्यय **उन** के स्त्रीलिंग रूप हैं। पुंलिंग रूप का वर्तुलाकार स्वर स्त्रीलिंग रूप में अवर्तुलाकार हो जाता है, इसीलिए **उन** का **उ, अ़** अथवा **इ** में रूपांतरित होता है। भाषा में यह भी सिद्ध है, कि स्त्रीलिंग रूप में शब्दांत का व्यंजन तालव्यकृत हो जाता है, और **उन** का **न, न्य** में परिणत होता है। इस प्रकार **उन, अ़न्य** अथवा **इन्य** में बदल जाता है।

इन सभी प्रत्ययों का विस्तार से वर्णन किया गया है। यहाँ पर कुछ ऐसे रूप भी हैं, जिन का वर्तमान भाषा व्यवहार सीमित है। 9.2.52 सूत्र में आमन तथा इस से व्युत्पन्न रूप हामनय इसी प्रकार के उदाहरण हैं।

॥ चादृते ऽनेककालक्रियायुगपदुक्तावप्रधाना कृत्क्रिया ॥ १ ॥

चशब्दं तदपरपर्यायमपिशब्दं च विना द्वयोः कालयोस्त्रयाणां वा वर्तमानातीतभविष्यद्रूपाणां कालानां क्रिययोः क्रियाणां वा युगपदुक्तौ एककाले प्रापणे सति कृदन्तसंबन्धिनी क्रिया अप्रधाना आख्यातक्रिया कृदन्तमुख्यक्रिया वा एकैव प्रधाना ऽवधार्या । यथा द्वयोर्वर्तमानक्रिययोर्युगपदुक्तावेका मुख्या अपरा अप्रधाना। अतीतवर्तमानयोर्युगपदुक्तौ तयोरन्यतरा मुख्या। अतीतमुख्यतायां वर्तमानः अप्रधानः । वर्तमानमुख्यतायामतीतोऽप्रधान इति । एवं वर्तमानभविष्यन्तौ ३ अतीतातीतौ ४ अतीतभविष्यन्तौ ५ भविष्यद्भविष्यन्तौ ६ वर्तमानभविष्यदतीताः ७ अतीतभविष्यद्वर्तमानाः ८ अतीतवर्तमानभविष्यन्तः ९ वर्तमानातीतातीताः १० वर्तमानभविष्यद्भविष्यन्तः ११ अतीतभविष्यद्भविष्यन्तः १२ अतीतवर्तमानवर्तमानाः १३ अतीतभविष्यदतीताः १४ भविष्यद्वर्तमानवर्तमानाः १५ इति पञ्चदश स्वरूपाणि भवन्ति । तत्र द्वयोः क्रिययोर्वर्तमानद्वयसत्त्वे भविष्यद्वर्तमानसत्त्वे वा परस्परमुख्यगौणकल्पनया न कोऽप्यर्थस्य विनिमयः स्यात्। केवलं मुख्यक्रियागौणक्रियानिर्देश इति। क्रियाद्वये वर्तमानातीतकालयोः सत्त्वे मुख्यगौणकल्पनयार्थविपर्यास इति। एवं क्रियात्रितयसमुदाये वर्तमानद्वयसत्त्वे मुख्यगौणकल्पनयार्थविलोमता न संभवति। वर्तमानैकसत्त्वे तु भविष्यदप्रधानक्रियया संबन्धे सति मुख्यगौणकल्पनयार्थविनिमयः । प्रधानक्रियया तु नार्थविपर्यय इति। अत्रातीतादिकालाः क्रियाकालापेक्षया निर्णेयाः न तु वर्तमानकालापेक्षयेति ॥ क्रमादुदाहरणानि ॥ ख्यवान् गछ़ान् छुह्। खादन् गच्छति ॥ ख्यथ् गछ़ान् छुह् । भुक्त्वा गच्छति ॥ ख्यवान् गछ़ि । खादन् गमिष्यति ॥ ख्यथ् गयाव्। भुक्त्वा जगाम ॥ ख्यथ् गछ़ि । भुक्त्वा गमिष्यति ॥ परनस् किनु गछ़ि। पठितुं गमिष्यति ॥ ख्यवान् ख्यवान् परनस् किनु गयोव्। खादन्पठितुं जगाम ॥ परिथ् जेननस् किनु गछ़ान् छुह्। पठित्वा जेतुं व्रजति ॥ ख्यथ् ख्यथ् दवान् पकि । हृत्वा धावन्गमिष्यति ॥ दिथ् ख्यथ् दवान् गोव्। दत्वा धावञ्जगाम ॥ जेननस् किनु दवान् गछ़ि । जेतुं धावन्गमिष्यति ॥ दिथ् ख्यथ् ख्यवन-

स् कितु गछि। दत्वा भोक्तुं गमिष्यति ॥ च्यथ् क्यथ् असान् यिवान् छुह्। पीत्वा हसन्नायाति ॥ थान् करिथ् परनस् कितु गयोव्। स्नात्वा पठितुं ययौ॥ नच्चान् वसनस् कितु गछान् छुह्। नृत्यन्निवसितुं याति ॥

अनुवाद– सूत्र 9.1.1

'एवं', 'तथा', 'और' जैसे शब्दों के प्रयोग बिना दो अथवा तीनों कालों अर्थात वर्तमान, भूत और भविष्यत् की क्रियाओं को युगपत प्रयोग में कृदन्तीय सम्बन्ध होने पर आख्यात क्रिया अथवा कृदन्त क्रिया में एक ही क्रिया प्रधान होती है। यथा– दो वर्तमान कालिक क्रियाओं के युगपत प्रयोग में एक मुख्य दूसरी क्रिया अप्रधान होती है। इसी प्रकार भूतकाल और वर्तमान काल के युगपत प्रयोग में एक ही क्रिया प्रधान होती है। ये कुल मिला कर 15 भेद हैं। यथा–
1. भूतकाल मुख्य वर्तमान अप्रधान, 2. वर्तमान काल मुख्य भूतकाल अप्रधान, 3. वर्तमान काल तथा भविष्यत्काल, 4. भूतकाल तथा भूतकाल, 5. भूतकाल तथा भविष्यत्काल, 6. भविष्यत तथा भविष्यत्काल, 7. वर्तमान तथा भविष्यत्काल, 8. भूत भविष्यत् तथा वर्तमान, 9. भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्, 10. वर्तमान, भूत तथा भूतकाल, 11. वर्तमान, भविष्यत् तथा भविष्यत्काल 12. भूत, भविष्यत् तथा भविष्यत् काल 13. भूत, वर्तमान तथा वर्तमान काल 14. भूत, भविष्यत् तथा भूतकाल, 15. भविष्यत् वर्तमान तथा वर्तमान काल।

वर्तमान कालिक और वर्तमान कालिक अथवा भविष्यत् कालिक और वर्तमान कालिक क्रियाओं में मुख्य और गौण अर्थ का पारस्परिक विनिमय नहीं होता। केवल मुख्य क्रिया और गौण क्रिया निर्देश मात्र होता है। वर्तमान तथा भूतकालिक क्रिया होने पर मुख्य और गौण अर्थ में विपर्यय संभव है। तीनों कालों का एक साथ प्रयोग अथवा दो वर्तमान कालिक क्रियाओं के प्रयोग में मुख्य और गौण अर्थ विलोम में संभव नहीं है। एक वर्तमान कालिक क्रिया तथा भविष्यत् कालिक प्रधान क्रिया के संबन्ध में मुख्य और गौण अर्थ का विनिमय संभव है। प्रधान क्रिया के अर्थ का विपर्यय नहीं होता। दूरवर्ती भूतकाल में उसी काल की अपेक्षा है, वर्तमान काल की नहीं। क्रमानुसार उदाहरण निम्नांकित हैं– 1. **ख्यवान गछ़ान छु** 'खाता जाता है', 2. **ख्यथ क्यथ गछ़ान छु** 'खाकर जाता है', 3. **ख्यवान गछ़ि** 'खाता जाएगा', 4. **ख्यथ गयाव** 'खा कर गया था', 5. **ख्यथ गछ़ि** 'खा कर जाएगा', 6. **परनस क्युत गछ़ि** 'पढ़ने के लिए जाएगा', 7. **ख्यवान ख्यवान परनस क्युत गयोव** 'खाते खाते पढ़ने के लिए गया था', 8. **परिथ ज़ेनुनस क्युत गछ़ान छु** 'पढ़ कर जीतने के लिए जाता है', 9. **ह्यथ क्यथ दवान पकि** 'लेकर दौड़ता हुआ जाएगा।' 10. **दिथ क्यथ टुकान गव** 'देकर भागता हुआ गया', 11. **ज़ेनुनस क्युत दवान गछ़ि** 'जीतने के लिए दौड़ता हुआ जाएगा', 12. **दिथ क्यथ ख्यनस क्युत गछ़ि** 'दे कर खाने के लिए जाएगा', 13. **च्यथ क्यथ**

असान यिवान छु 'खा पी कर हँसता हुआ आता है', **14. श्रान करिथ परनस क्युत गयोव** 'नहा कर पढ़ने के लिए गया था', **15. नचान बसुनस क्युत गछ़ान छु** 'नाचते हुए बसने के लिए जाता है'।

व्याख्या–

कृदन्त प्रक्रिया के अन्तर्गत यह कृत क्रिया का अधिकार सूत्र है। संयोजक शब्द के बिना दो या दो से अधिक क्रियाओं का एक साथ प्रयोग कृत क्रिया का विषय है। ग्रन्थकार ने इस प्रकार से 15 भेद निरूपित किए हैं। भेद और उन के उदाहरण स्पष्टीकरण में उल्लिखित हैं।

कृत क्रिया के अन्तर्गत समान अथवा भिन्न कालों की क्रियाएँ एक साथ प्रयुक्त हो सकती हैं। कृत क्रिया के साथ **आन/वान** अथवा **इथ** प्रत्यय संयुक्त होता है। उदाहरणों में क्रिया के साथ कर्म कारक प्रत्यय **अनस** तथा परसर्ग **क्युत** की सहायता के आधार पर भी कृत क्रिया सिद्ध की गई है। मुख्य क्रिया के रूप सामान्य क्रिया की तरह सिद्ध हैं। वर्तमान में **क्युत** परसर्ग युक्त उदाहरण व्यवहार में नहीं हैं। इसी प्रकार **च्यथ क्यथ असान यिवान छु** अथवा **नचान बसुनस क्युत गछ़ान छु**, जैसे वाक्य प्रयोग में नहीं है।

॥ वर्तमाने धातुभ्य आन् ॥ २ ॥

मुख्यक्रियाया वर्तमानकाले चशब्दं विना अपरक्रियायां वाच्यायां सत्यां धातुभ्य आन् प्रत्ययो भवति स चाव्ययः ॥ करान् । कुर्वन् ॥ बोजान् । शृण्वन् ॥ परान् । पठन् ॥ इत्यादि । कर करणे । बोज निशामने । पर पठने। अनेन आन् प्रत्ययः ॥

अनुवाद– सूत्र 9.1.2

वर्तमान काल में मुख्य क्रिया संयोजक शब्द के रहित होती है, तथा दूसरी क्रिया के धातु के साथ **आन** प्रत्यय संयुक्त होता है, और वह अव्यय रूप धारण करती है। **करान** 'करते' **बोज़ान** 'सुनते' **परान** 'पढ़ते' इत्यादि। प्रस्तुत सूत्र के अनुसार **कर** 'क़र', **बोज़** 'सुन', **पर** 'पढ़, के साथ **आन** प्रत्यय।

व्याख्या–

वर्तमान कालिक कृदन्त रूप में व्यंजनांत कृत क्रिया के धातु के साथ **आन** प्रत्यय संयुक्त होता है। प्रत्यय संयुक्त होने के बाद व्युत्पन्न रूप रूढ़ हो जाता है। वाक्य में रूढ़ रूप का दो बार प्रयोग संभव है। यथा– **ग्यवान ग्यवान छु श्वंगान** 'गाते गाते सोता है'।

॥ वपूर्वः स्वरान्तात् ॥ ३ ॥

स्वरान्ताद्धातोरान् प्रत्ययः वकारपूर्वो भवति क्रियावर्तमाने गम्यमाने सति ॥ दिवान् । ददन् ॥ ख्यवान् । खादन् ॥ च्यवान् । पिबन् ॥ दि दाने । खि खादने । चि पाने । अनेन वान् प्रत्ययः । चिख्योः सर्वत्राकारागमो निर्दिधिवर्जितात् (सू० ८।२।११) इत्यकारागमः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.3

स्वरान्त धातुओं में प्रत्यय के पूर्व वकार का आगम है। क्रिया रूप वर्तमान कालिक ही है। **दिवान** 'देते', **ख्यवान** 'खाते' **च्यवान** 'पीते'। प्रस्तुत सूत्र के अनुसार **दि** 'दे' **खे** (खि) 'खा' **चे** (चि) 'पी' के साथ **वान** प्रत्यय। 8.2.11 सूत्र के अनुसार **चे** और **खे** में सर्वत्र अकारागम।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। स्वरान्त धातुओं के साथ **आन** के स्थान पर **वान** प्रत्यय संयुक्त होता है।

॥ आभीक्ष्ण्ये द्विश्च पदम् ॥ ४ ॥

आभीक्ष्ण्ये असकृत्कर्मणि गम्यमाने पदं द्विर्द्विवारं प्रयोज्यम् ॥ दिवान् दिवान् गोव् । ददद्ददगतः ॥ च्यवान् च्यवान् आव् । पिबन्पिबन्नागतः ॥ परान् परान् कौरुन् । पठन्पठन्नकरोत् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.4

कृत क्रिया का कार्य अनवरत होने की स्थिति में पद का दो बार प्रयोग होता है। **दिवान दिवान गव** 'देते देते गया', **च्यवान च्यवान आव** 'पीते पीते आया', **परान परान कौरुन** 'पढ़ते पढ़ते किया'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र भी पूर्व सूत्रों का विस्तार है। कृत क्रिया का रूढ़ रूप दो बार प्रयुक्त होने से उस कार्य की निरन्तरता सिद्ध होती है।

॥ अतीते इथ् ॥ ५ ॥

मुख्यक्रियाकाले चशब्दं विना तदितरातीतक्रियायां गम्यमानायां धातोः इथ् प्रत्ययः स्यात् ॥ करिथ् । कृत्वा ॥ परिथ् । पठित्वा ॥ दारिथ् । धृत्वा ॥ साधनं सुगमम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.1.5**

मुख्य क्रिया का काल-संयोजन शब्द के रहित होता है, तथा दूसरी क्रिया के धातु के साथ, भूतकालिक रूप के लिए **इथ** प्रत्यय संयुक्त होता है। **करिथ** 'कर के' **परिश** 'पढ़ कर' **दॉरिथ** '(पात्र में) पकड़ कर'। साधन सुगम।

व्याख्या—

कृत क्रिया के भूतकालिक रूप में व्यंजनांत धातुओं के साथ **इथ्** प्रत्यय संयुक्त होता है। प्रत्यय संयुक्त होने के बाद व्युत्पन्न रूप **रूढ़** हो जाता है।

॥ इथः क्यथ् वा ॥ ६ ॥

इथ् प्रत्ययात्परो विकल्पेन क्यथ् प्रत्ययो भवति ॥ करिथ् क्यथ् । कृत्वा ॥ परिथ् क्यथ् । पठित्वा ॥ दॉरिथ् क्यथ् । धृत्वा ॥ पक्षे । करिथ् । कृत्वा ॥ परिथ् । पठित्वा ॥ दॉरिथ् । धृत्वा ॥ इति पूर्वं साधितानि ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.1.6**

इथ प्रत्यय के उपरान्त विकल्प से **क्यथ** प्रत्यय होता है। **करिथ क्यथ** 'कर के' **परिथ क्यथ** 'पढ़ कर' **दॉरिथ क्यथ** '(पात्र में)' पकड़ कर'। विकल्प में— **करिथ** 'कर के', **परिथ** 'पढ़ कर' **दॉरिथ** '(पात्र में) पकड़ कर'। सिद्धि पूर्ववत।

व्याख्या—

वर्तमान भाषा व्यवहार में **क्यथ** के प्रयोग का विकल्प अव्याप्त है।

॥ स्वरान्तादिथो ऽत् ॥ ७ ॥

स्वरान्ताद्धातोः इथः इकारस्य अत् अकारो भवति ॥ ह्यथ् क्यथ् । धृत्वा ॥ ख्यथ् क्यथ् । खादित्वा ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.1.7**

स्वरान्त धातुओं में **इथ** के इकार का अकार हो जाता है। **ह्यथ क्यथ** 'लेकर' **ख्यथ क्यथ** 'खा कर'।

व्याख्या—

स्वरान्त धातुओं के संदर्भ में भी **क्यथ** के प्रयोग का विकल्प नहीं है।

॥ निदियिभ्य इलोपः ॥ ८ ॥

नि हरणे । दि दाने । यि आगमने । एभ्य इकारलोपो भवति ॥ निथ् । हृत्वा ॥ दिथ् । दत्त्वा ॥ यिथ् । आगत्य ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.8

नि 'ले जा', दि 'दे', यि 'आ', इन में इकार का लोप होता है। **निथ** 'ले जा कर', **दिथ** 'दे कर', **यिथ** 'आ कर'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र में, उक्त तीनों इकारान्त धातुओं के साथ **इथ** प्रत्यय संयुक्त होने पर **इथ** का इकार, लुप्त होने का कथन है।

॥ वुडो ज इथि मोक्षे ॥ ९ ॥

वुड उड्डयने इत्यस्य इथ् प्रत्यये परे डकारस्य जकारो भवति मोक्षे गम्यमाने ॥ वुजिथ् गौव् । मोक्षं गत इत्यर्थः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.9

वुड 'उड़' इस का दूसरा अर्थ मोक्ष भी हो सकता है। मोक्ष के अर्थ में **इथ** प्रत्यय संयुक्त होने पर डकार का जकार हो जाता है। **वुजिथ गव** 'मोक्ष को प्राप्त हो गया'।

व्याख्या—

वर्तमान में डकार का जकार किसी भी अर्थ में संभव नहीं है। **इथ** प्रत्यय संयुक्त होने पर सिद्ध रूप **वुडिथ** 'उड़कर' ही है।

॥ मंषूरावो रलोपः स्वरविनिमयश्च मरणकर्मणि ॥ १० ॥

मंषूराव विस्मारणे इत्यस्य धातोर्मरणपदे कर्मणि सति इथ् प्रत्यये परे रकारस्य लोपो भवति पूर्वापरस्वरविनिमयश्च स्यात्। पूर्वस्य दीर्घो द्वितीयस्य ह्रस्वो भवतीत्यर्थः ॥ मरुन् मापविथ् । मरणं विस्मारयित्वेत्यर्थः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.10

मॅंशराव 'भूल जा' इस धातु के साथ कर्म पद रूप में **मरुन** 'मरना' का प्रयोग होने पर **इथ** प्रत्यय संयुक्त होने से रकार का लोप तथा पूर्व और पश्च स्वरों का विनिमय होता है। अर्थात स्वर दीर्घ और दूसरा स्वर ह्रस्व हो जाता है। **मरुन मॉशविथ** 'मरना भूल कर'।

व्याख्या—

मॉशविथ पद वर्तमान में प्रयुक्त नहीं होता। **इथ** प्रत्यय संयुक्त होने पर **मॅंशराव** का व्युत्पन्न रूप **मॅंशरिथ** अथवा **मॅंशरॉविथ** है।

॥ इ प्रत्यय आभीक्ष्ण्ये द्विश्च पदम् ॥ ११ ॥

अतीते काले आभीक्ष्ण्ये गम्यमाने धातोः इ प्रत्ययो भवति पदं च द्विर्भवति ॥ कॅरि कॅरि । कारं कारम् ॥ बूज़ि बूज़ि । श्रावं श्रावम् ॥ लूनि लूनि । लावं लावम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.11

भूतकाल में क्रिया की निरन्तरता के लिए धातु के साथ **इ** प्रत्यय संयुक्त होता है, तथा पद का दो बार प्रयोग किया जाता है। **कॅर्य कॅर्य** 'कर कर के', **बूज़्य बूज़्य** 'सुन सुन कर' **लून्य लून्य** '(फसल) काट काट कर'।

व्याख्या—

व्युत्पन्न रूपों में **इ** प्रत्यय विद्यमान नहीं है। इस के स्थान पर अंतिम व्यंजन का यत्व अर्थात अंतिम व्यंजन का तालवीकरण हो जाता है। इस के अतिरिक्त **इथ** प्रत्यय का इकार पश्चगामी स्वर समतालता उत्पन्न करता है, जिस के प्रभाव से धातु का स्वर, यदि उच्च न हो तो वह उच्च हो जाता है। **कर** का अकार ॲकर, **बोज़** का ओकार, ऊकार तथा **लोन** का ओकार भी ऊकार हो जाता है।

॥ स्वरान्ताद्वा ॥ १२ ॥

स्वरान्ताद्धातोः अतीतकाले आभीक्ष्ण्ये गम्यमाने विकल्पेन इ प्रत्ययो भवति। पदं च द्विर्भवति ॥ दि दि। दायं दायम् ॥ यि यि। एत्यैत्य ॥ च्य च्य । भुक्त्वा भुक्त्वा ॥ प्रथमयोः निदियिभ्य इल्लोपः (सू० ८) । तृतीयस्य स्वरान्ता-दियो ऽत् (सू० ७) इति इकारस्य अकारः । इकारो ऽसवर्णे यो ऽपरलोपः (सू० १।१०) । पक्षे दिथ् दिथ् । दायं दायम् ॥ यिथ् यिथ् । एत्यैत्य ॥ च्यथ् च्यथ् । भुक्त्वा भुक्त्वा ॥ च्यथ् च्यथ् । पायं पायम् ॥ साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद–

सूत्र 9.1.12

अतीत काल की निरन्तरता अभिधेय होने पर स्वरान्त धातुओं में विकल्प से **इ** प्रत्यय संयुक्त होता है, तथा पद का दो बार प्रयोग होता है। **दि दि** 'दे दे कर' **यि यि** 'आ आ कर' **खेय खेय** 'खा खा कर'। 9.1.8 सूत्र के अनुसार **इ** का लोप। 9.1.7 सूत्र के अनुसार इकार का अकार। 1.1.10 सूत्र के अनुसार असवर्ण स्वर होने की स्थिति में **यत्व**। विकल्प में– **दिथ दिथ** 'दे दे कर', **यिथ यिथ** 'आ आ कर' **ख्यथ ख्यथ** 'खा खा कर', **च्यथ च्यथ** 'पी पी कर'।

व्याख्या–

कृत क्रिया के रूप में **दि दि** और **यि यि** का प्रयोग व्यापक नहीं है। **दी दी** का प्रयोग संभव है, यथा– **आलव दी दी थोकुस** 'मैं आवाज़ दे दे कर थका' **ख्यथ ख्यथ** और **च्यथ च्यथ** के स्थान पर **ख्येय ख्येय** और **च्येय च्येय** का प्रयोग अधिक किया जाता है।

॥ आदुपधाया अप्रसिद्धता ॥ १३ ॥

अतीतक्रियायां धातोरुपधाभूतस्याकारस्याप्रसिद्धता भवति ॥ कॉरिथ्। क्वथित्वा ॥ मॉरिथ् क्यथ्। हत्वा ॥ तॉरिथ्। तारयित्वा ॥ एवं। कॉर्रि कॉर्रि। क्राथं क्राथम् ॥ मॉर्रि मॉर्रि। मारं मारम् ॥ तॉर्रि तॉर्रि। तारं तारम् ॥ साधनं सुगमम् ॥

अनुवाद–

सूत्र 9.1.13

भूतकाल में धातु के आकार की अप्रसिद्धता होती है। **कॉरिथ** 'उबाल कर' **मॉरिथ क्यथ** 'मार कर' **तॉरिथ** 'पार करवा कर' **कॉर्स्य कॉर्स्य** 'उबाल उबाल कर' **मॉर्स्य मॉर्स्य** 'मार मार कर' **तॉर्स्य तॉर्स्य** 'पार करवा करवा कर'। सिद्धि सुगम है।

व्याख्या–

कार 'उबाल', **मार** 'मार', **तार** 'पार करवा' इन धातुओं की उपधा में आकार है। **इथ** प्रत्यय संयुक्त होने पर **आ** स्वर उच्च होकर **ऑ** में परिणत हो जाता है। अन्य उदाहरणों में प्रत्यय **इ** है। यह प्रत्यय उपधा के आकार को ऑकार तथा अंतिम व्यंजन को तालव्यकृत करता है, जिस से **कॉर्स्य कॉर्स्य** आदि रूप व्युत्पन्न होते हैं।

॥ एत ईत् ॥ १४ ॥

अतीतक्रियायां धातोरुपधाभूतस्य एकारस्य ईकारो भवति ॥ च़ीट्टि च़ीट्टि । कुट्टं कुट्टम् ॥ बीह्रि बीह्रि । आसमासम् ॥ ळीखि ळीखि । ळेखं ळेखम् ॥ च़ेट कुट्टने । ब्यह उपवेशने । लेख लेखने । इ प्रत्यय आभीक्ष्ण्ये द्विध पदम् (सू० ११) इति इ प्रत्ययः ॥ [ब्यह धातुरस्य विधेरनाश्रयः । किंच बिह्रि बिह्रि इति ह्रस्वेकारेणैव पाठः शुद्धो ऽस्ति ॥]

अनुवाद— सूत्र 9.1.14

भूतकाल में धातु के उपधा का एकार ईकार हो जाता है। **च़ीट्य च़ीट्य** 'कूट कूट कर' **बीह बीह** 'बैठ बैठ कर' **लीख्य लीख्य** 'लिख लिख कर'। **च़ेट** 'कूट', **बेह** (ब्यह) 'बैठ', **लेख** 'लिख'। 9.1.11 सूत्र के अनुसार **इ** प्रत्यय। **ब्यह** धातु पर यह विधि लागू नहीं हैं, क्योंकि शुद्ध व्युत्पन्न रूप में **इकार** ह्रस्व है, यथा **बिह बिह**।

व्याख्या—

प्रस्तुत उदाहरण भी इसी प्रक्रिया का प्रमाण है, कि उच्च स्वर **इ** उपधा के स्वर को भी उच्च करता है, जिस के कारण एकार ईकार हो जाता है। **बेह** धातु की स्थिति में एकार ह्रस्व है, इसलिए परिणत स्वर भी ह्रस्व है, और **बिह बिह** रूप सिद्ध है। ह्रस्व ऐकार युक्त व्यंजन तथा तालव्यकृत व्यंजन में, उच्चारण के धरातल पर, अन्तर नगण्य है। इसलिए, लिखित रूप **बेह** और **ब्यह** दोनों प्रयोग में हैं।

॥ ऊदोकारस्य ॥ १५ ॥

अतीतक्रियायां धातोरुपधाभूतस्य ओकारस्य ऊकारो भवति ॥ खूच्चि खूच्चि । भायं भायम् ॥ बूज़ि बूज़ि । श्रावं श्रावम् ॥ तूळि तूळि । तोळयं तोळयम् ॥ एवं । खूच्चिथ् । भीत्वा ॥ बूज़िथ् । श्रुत्वा ॥ तूळिथ् । तोळयित्वा ॥ साधनं सुगमम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.15

भूतकाल में धातु का ओकार ऊकार हो जाता है। **खूच्य खूच्य** 'डर डर कर **बूज़्य बूज़्य** 'सुन सुन कर' **तूल्य तूल्य** 'तोल तोल कर' एवं **खूच़िथ** 'डर कर' **बूज़िथ** 'सुन कर' **तूलिथ** 'तोल कर'। साधन सुगम।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र के आधार पर भी प्रत्यय इ उपधा के स्वर को उच्च तथा अंतिम व्यंजन को तालव्यकृत करता है। तीनों धातुओं की उपधा में आकार है, और अंतिम व्यंजन तालव्यीकृत नही है, यथा– **खोच़** 'डर' **बोज़** 'सुन' **तोल** 'तोल'। कृत्क्रिया के रूप में **ओ** स्वर का ऊ तथा अंतिम व्यंजन का तालवीकरण हो जाता है।

॥ आनाद्यो ऽव्ययम् ॥ १६ ॥

आन् इथ् इथ्-क्यथ् इ इति चत्वारः प्रत्यया अव्ययमव्ययसंज्ञा भवन्ति ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.1.16**

आन, इथ, इथ-क्यथ, इ इन चार प्रत्ययों को अव्यय कहते हैं।

व्याख्या–

उक्त चार प्रत्यय पद को रूढ़ बनाते हैं। किसी भी व्याकरणिक प्रक्रिया से ये रूढ़ रूप अप्रभावी रहते हैं। इसी कारण इन को अव्यय कहा गया है। यह सूत्र भी अधिकार सूत्र है।

॥ भविष्यति कितु पदम् ॥ १७ ॥

प्रधानक्रियाया भविष्यत्काले इतरस्यामप्रधानायां क्रियायां गम्यमानायां धातोः कितु इति पदं भवति। पदग्रहणात् कितु इत्यस्य पुंस्त्रीत्वमेकत्वानेकत्वं च भवतीति विज्ञेयम् ॥ परनस् कितु। पठितुं सः ॥ रननस् कितु। पक्तुं सः ॥ परनस् किचू। पठितुं सा ॥ रननस् किचू। पक्तुं सा ॥ परनस् किति। पठितुं ते ॥ रननस् किच। पक्तुं ताः ॥ पर पठने। रन पाके। अनेन कितु। कितामनस् (सू० २०) इति अनस् आगमः। द्वितीययोः सर्वेषामुकारान्तानामूकारादेश (सू० ६।४) इति सूत्रेण ऊमात्रादेशः। तवर्गान्तानामप्रसिद्ध (सू० ६।११) इति तकारस्य चकारः। तृतीययोरेकस्य उवर्णान्तानामिकारः (सू० २।१।३०) इति उकारस्य इकारः। अपरस्य ऊमात्रादेशे तकारादेशे च कृते। बहुत्वे ऽकारागम (सू० २।१।११) इत्यकारागमः। उवर्णान्तानामिकार (सू० २।१।३०) इति ऊकारस्य इकारः। इकारो ऽसवर्णे यो ऽपरलोप (सू० १।१०) इति यत्वम्। तस्य अप्रसिद्धचवर्गाल्लोप (सू० ८।३।४७)। चेटनस् कितु। कुट्टयितुं सः ॥ चेटस् कितु (सू० ९।२।१२) कुट्टनाय सः ॥ ग्रजनस् कितु। गर्जितुं सः ॥ ग्रजि कितु

(सू० ९।२।६५) गर्जनाय सः ॥ इति चतुर्थीस्वरूपाणि च तेषां धातूनां दृश्यन्ते येषां भावा अनेकधा भवन्ति। येषां तु पुंस्त्रीभेदाद्द्विविध एव स्यान्न तत्र चतुर्थीप्रयोगेन सिद्धिः। किंतु वक्ष्यमाणव्यञ्जनान्तेभ्यो धातुभावशब्देभ्यश्चतुर्थीप्रोक्तप्रत्ययेषु कृतेषु व्यञ्जनान्तस्योकारोपधाया अत् (सू० २। १। ३२) इत्यादिना चतुर्थीस्वरूपं सेत्स्यतीति ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.17

भविष्यत्काल में प्रधान क्रिया के साथ आने वाली इतर अप्रधान क्रिया की धातु के साथ **क्युत** (कितु) पद प्रयुक्त होता है। **क्युत** पद के पुंलिंग स्त्रीलिंग तथा एकवचन बहुवचन रूप है। पुंलिंग एकवचन **परनस क्युत** 'पढ़ने के लिए', **रनुनस क्युत** 'पकाने के लिए'। स्त्रीलिंग एकवचन– **परनस किच़** 'पढ़ने के लिए', **रननस** किच़ 'पकाने के लिए'। पुंलिंग बहुवचन– **परनस कित्य** 'पढ़ने के लिए', स्त्रीलिंग बहुवचन– **रनुनस क़िचु** 'पकाने के लिए'। **पर** 'पढ़' **रन** 'पका'। प्रस्तुत सूत्र से **क्युत**। 9.1.20 सूत्र के अनुसार **अनस** का आगम। 6.1.4 सूत्र के अनुसार **ऊ** मात्रा का आदेश। 6.1.13 सूत्र के अनुसार तकार का च़कार। 2.1.30 सूत्र के अनुसार उकार का इकार। 2.1.11 सूत्र के अनुसार अकारागम। 2.1.30 सूत्र के अनुसार ऊकार का इकार। 1.1.10 सूत्र के अनुसार यत्व। 8.3.47 सूत्र के अनुसार अप्रसिद्ध च़वर्ग का लोप। **च़ेटनस क्युत** 'कूटने के लिए'। 9.2.12 सूत्र के अनुसार **च़ेटस क्युत** 'कूटने के लिए।' **ग्रजुनस क्युत** 'गरजने के लिए'। 9.2.65 सूत्र के अनुसार **ग्रज़ि क्युत** 'गरजन के लिए।' चतुर्थी (कारक विभक्ति) उन्हीं धातुओं के साथ प्रयुक्त होती है, जिन के अनेक भाव हों। जहाँ पुंलिंग और स्त्रीलिंग दो ही भेद हैं, वहाँ भी चतुर्थी का प्रयोग सिद्ध है। व्यंजनान्त धातुओं में चतुर्थी प्रयुक्त होने पर 2.1.32 सूत्र के अनुसार उपधा के उकार का **अत** हो जाता है, तथा इस से चतुर्थी के रूप सिद्ध हो जाते हैं।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र में **क्युत** के विभिन्न रूपों का कथन है। आगामी सूत्रों में भविष्यत्काल की कृत्क्रिया की विवेचना है। प्रधान क्रिया तथा अप्रधान क्रिया की अवधारना भी आगामी सूत्रों में स्पष्ट की गई है। **क्युत** सम्प्रदान कारक का परसर्ग है। सिद्धांततः परसर्ग प्रातिपदिक के साथ ही प्रयुक्त हो सकता है। कभी कभी धातु भी संज्ञावत कार्य करता है। स्पष्टीकरण के उदाहरण **ग्रॅज़ि क्युत** पद में **ग्रॅज़ि** 'गरजन' शब्द संज्ञावत कार्य कर रहा है। क्रिया का नामधातु रूप भी भाषा में संज्ञावत ही प्रयुक्त होता है। 9.1.20 सूत्र में इस प्रक्रिया तथा **अनस** प्रत्यय की व्याख्या विस्तार से की गई है।

॥ अनि च ॥ १८ ॥

प्रधानक्रियाया भविष्यत्काले इतरस्याप्रधानायां क्रियायां गम्यमानायां धातोः परः अनि प्रत्ययो भवति ॥ परनि गछ्रान् छुह् । पठितुं व्रजति ॥ रनिनि गौव् । पक्तुं गतः ॥ ख्यनि गछि । अत्तुं यास्यति ॥

अनुवाद– सूत्र 9.1.18

दूसरी क्रिया को अप्रधान मान कर, भविष्यत्काल में प्रधान क्रिया के धातु के साथ अ़नि (अनि) प्रत्यय संयुक्त होता है। **परुनि गछ़ान छु** 'पढ़ने जाता है', **रनुनि गव** 'पकाने गया', **ख्यनि गछ़ि** 'खाने जाएगा'।

व्याख्या–

पर 'पढ़' **रन** 'पका', **खे** 'खा' इन धातुओं के साथ **अ़नि** प्रत्यय संयुक्त होता है। **अ़नि** युक्त धातु को ईश्वर कौल भविष्यत्काल की संज्ञा देते हैं। इस के साथ क्रम से अप्रधान रूप में वर्तमान, भूत तथा भविष्यत की क्रियाएँ प्रयुक्त की गई हैं।

अ़नि प्रत्यय युक्त धातु रूढ़ रूप हो जाता है, तथा कोई भी व्याकरणिक विकार ग्रहण नहीं कर सकता।

॥ समखः शुक्प्रष्ठ्ये नित्यम् ॥ १९ ॥

समख समक्षीभवने इत्यस्य धातोः शोके प्रष्ठ्ये सति नित्यमनि प्रत्ययो भवति ॥ समखनि गौव् । शोकपृच्छायै गत इत्यर्थः ॥ अन्यत्र । समखन-पुछ्य रूद् । समक्षीभवनाय स्थितः ॥

अनुवाद– सूत्र 9.1.19

समख 'मिल' इस धातु के दूसरे अर्थ 'शोक प्रकट करना' के लिए धातु के साथ नित्य **अ़नि** प्रत्यय संयुक्त होता है। **समखुनि गव** 'शोक प्रकट करने गया'। पहले अर्थ में **समखन पुछ़ि रूद** 'मिलने के लिए रुका'।

व्याख्या–

अ़नि प्रत्यय युक्त होने पर **समख** का अर्थ रूढ़ हो गया है, जिस का प्रयोग केवल शोक प्रकट करने के लिए मिलने जाने में होता है। यथा– **तिमन कर गॅछिव समखुनि?** '(आप) उन के यहाँ, शोक प्रकट करने के लिए, कब जाएँगे' ?

॥ कितावनस् ॥ २० ॥

धातोः कितु प्रत्यये परे अनस् आगमो भवति ॥ करनस् कितु। कर्तुं सः। साधनं सुगमम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.20

क्युत (कितु) प्रत्यय की स्थिति में धातु के साथ **अनस** का आगम होता है। **करनस क्युत** 'करने के लिए'। साधन सुगम है।

व्याख्या—

क्युत सम्प्रदान कारक का परसर्ग है। यह पुंलिंग एकवचन रूप है। पुंलिंग बहुवचन रूप **कित्य**, स्त्रीलिंग एकवचन रूप **किच़** तथा बहुवचन रूप **किचु** है। 2.1.54 तथा 55 सूत्रों में इस परसर्ग की व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

वहाँ इस बात का भी निर्देश है, कि कर्म का लिंग और वचन ही **क्युत** को प्रभावित करता है। इस परसर्ग की स्थिति में कर्ता के साथ कर्म कारक प्रत्यय **स** अथवा **न** संयुक्त होता है। एकवचन की स्थिति में **स** तथा बहुवचन में न। क्रिया के संबन्ध में एकवचन प्रत्यय **स** का ही प्रयोग है। यह प्रत्यय धातु के साथ नहीं अपितु नामधातु के साथ संयुक्त होता है। **कर** धातु है, और **करुन** नामधातु। नामधातु के अंतिम नकार के कारण ही ग्रन्थकार ने **अनस** प्रत्यय का उल्लेख किया है। वास्तव में प्रत्यय **स** ही है। **न** तो पहले से ही नामधातु में उपस्थित है।

9.1.1 सूत्र की व्याख्या में वर्णन है, कि **क्युत** परसर्ग युक्त उदाहरण कृतक्रिया के रूप में व्यवहार में नहीं है। यह तभी सम्भव है, जब वाक्य में कर्म भी उपस्थित हो। यथा— **परनस किच़ गछ़्यस किताब** 'उस को पढ़ने के लिए पुस्तक चाहिए।

॥ निदियिभ्यो ऽकारलोपः ॥ २१ ॥

नि हरणे। दि दाने। यि आगमने। एभ्यः परस्य अकारस्य लोपो भवति ॥ निनस् कितु। हर्तुं सः ॥ दिनस् कितु। दातुं सः ॥ यिनस् कितु। आगन्तुम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.21

नि 'ले जा', **दि** 'दे', **यि** 'आ' इन के साथ (प्रत्यय के) अकार का लोप होता है। **निनस क्युत** 'ले जाने के लिए', **दिनस क्युत** 'देने के लिए', **यिनस क्युत** 'आने के लिए'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र पूर्व सूत्र का विस्तार है। **नि** का नामधातु रूप **न्युन, दि** का **द्युन** तथा **यि** का **युन** है। **क्युत** परसर्ग के सन्दर्भ में नामधातु के साथ **स** प्रत्यय संयुक्त होता है, तथा **निनस क्युत** 'ले जाने के लिए', **दिनस क्युत** 'देने के लिए' एवं **यिनस क्युत** 'आने के लिए' रूप सिद्ध है। 2.1.32 सूत्र के अनुसार उपधा का उकार, अकार में परिणत होता है। 9.1.23 सूत्र में इस बात का वर्णन है कि ये रूप प्रातिपदिक की तरह ही व्यवहृत हैं।

॥ उनु वा ॥ २२ ॥

धातोः क्तिु प्रत्यये उनु (सू० ९ । २ । ३) आगमो विकल्पेन भवति ॥ करुनु क्तिु । कर्तुं सः ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.1.22**

9.2.3 सूत्र के अनुसार **क्यूत** की स्थिति में धातु के साथ, विकल्प से **उन** प्रत्यय का आगम होता है। **करुन क्युत** 'करने के लिए'।

व्याख्या–

वर्तमान भाषा व्यवहार में **उन** प्रत्यय का प्रयोग इस संदर्भ में व्यापक नहीं है।

॥ उन्वन्तं लिङ्गवत् ॥ २३ ॥

अत्र वक्ष्यमाणे भावविकल्पस्वरूपे च उनु (सू० ९। २। ३) अन्ते यस्य तत्पदं लिङ्गवद्भवति। यथा क्तिु प्रत्ययस्य पुंस्त्रीत्वमेकत्वानेकत्वं च संभवति तथैव तस्मात्पूर्वस्य उनु विशिष्टस्य धातोरपि भवति ॥ रनुनु क्तिु। पक्तुं सः ॥ रनुनि क्ति। पक्तुं ते ॥ करुञ् क्ति़च् । कर्तुं सा ॥ करञ किञ । कर्तुं ताः ॥ साधनमुक्तवत् ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.1.23**

9.2.3 सूत्र के अनुसार भाव के विकल्प स्वरूप में भी, जिस पद के अन्त में **उन** संयुक्त होता है। वह लिंगवत कार्य करता है। जिस प्रकार **क्युत** प्रत्यय के साथ पुंलिंग स्त्रीलिंग और एकवचन बहुवचन के रूप संभव हैं, उसी प्रकार की विशिष्टता इस के पूर्व **उन** प्रत्यय युक्त धातु के साथ भी संभव है। **रनुनु क्युत** 'पकाने के लिए' (एकवचन), **रनुनु कित्य** 'पकाने के लिए' (बहुवचन), **करुन्य**

किच़ 'करने के लिए' (स्त्रीलिंग एकवचन), **करुनि किचु** 'करने के लिए' (स्त्रीलिंग बहुवचन)।

व्याख्या–

पूर्व सूत्र में इस बात का उल्लेख है, कि वर्तमान में **उन** प्रत्यय का प्रयोग प्रस्तुत संदर्भ में व्यापक नहीं है। **रनुन** 'पकाना' तथा **करुन** 'क़रना' के साथ **क्युत** परसर्ग प्रयुक्त हो सकता है। 9.1.20 सूत्र की व्याख्या में स्पष्ट किया गया है, कि **क्युत** परसर्ग की स्थिति में कर्म कारक प्रत्यय **स** संयुक्त होता है। **रनुन** और **करुन** नामधातु रूप हैं। **क्युत** परसर्ग प्रयुक्त होने पर, इन के साथ **स** प्रत्यय संयुक्त हो जाता है। **रनुनस क्युत** तथा **करुनस क्युत** पद व्यवहार में है। रूप सिद्धि 2.1.21 सूत्र के अन्तर्गत स्पष्ट की गई है। यह तथ्य भी स्पष्ट है, कि **क्युत** प्रत्यय नहीं, अपितु परसर्ग है।

॥ स्वरान्तेभ्यो ऽनिदियिभ्य आदेरत् ॥ २४ ॥

नि हरणे। दि दाने। यि आगमने एतान्वर्जयित्वा स्वरान्तेभ्यो धातुभ्यः उनु प्रत्ययस्यादेरुकारस्य अकारो भवति ॥ ख्यंनु कितु। खादितुं सः ॥ च्यंनु कितु। पातुं सः ॥ प्यंनु कितु। पतितुं सः ॥ ह्यंनु कितु। वोढुं सः ॥ अनिदियिभ्यः किम्। दिनु कितु। दातुं सः ॥ निनु कितु। हर्तुं सः ॥ यिनु कितु। आयातुं सः ॥ साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद–   सूत्र 9.1.24

नि 'ले जा', **दि** 'दे', **यि** 'आ' इन धातुओं को छोड़ कर शेष स्वरान्त धातुओं में **उन** प्रत्यय के उकार का अकार होता है। **ख्यनु क्युत** 'खाने के लिए', **च्यनु क्युत** 'पीने के लिए', **प्यनु क्युत** 'गिरने के लिए', **ह्यनु क्युत** 'लेने के लिए'। **नि, दि, यि** को छोड़ कर क्यों? **दिनु क्युत** 'देने के लिए'। **निनु क्युत** 'ले जाने के लिए, **यिन क्युत** 'आने के लिए'। साधन पूर्ववत।

व्याख्या–

खे 'खा', **चे** 'पी', **पे** 'गिर', **हे** 'ले' इन चार धातुओं का पूर्व काल में इकारान्त उच्चारण था। इसी कारण ईश्वर कौल इन चार धातुओं को इकार से ही लिपिबद्ध करते हैं। इन चारों धातुओं का नामधातु रूप अन्य सभी धातुओं से भिन्न हैं। इन के साथ **उन** के स्थान पर **ओन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **ख्योन** 'खाना', **च्योन** 'पीना', **प्योन** 'गिरना' एवं **ह्योन** 'लेना'। इसी कारण उकार के अकार रूपांतरण का नियम यहाँ प्रभावी नहीं है।

॥ कर्तरि वुनु ॥ २५ ॥

धातोः कर्तर्यर्थे वुनु प्रत्ययो भवति ॥ करवुनु । कर्ता ॥ परवुनु । पाठकः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.25

'करने वाला' अर्थ अभिप्रेत होने पर धातु के साथ **वुन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **करवुन** 'करने वाला' **परवुन** 'पढ़ने वाला'।

व्याख्या—

वुन प्रत्यय धातु का कार्य भविष्य में होने की सम्भावना व्यक्त करता है यथा— **सु छु नेरुवुन** 'वह निकलने वाला है'। यह प्रत्यय धातु को विशेषणात्मक अर्थ भी प्रदान करता है। यथा— **नेरुवुन लडकु छु खडा** 'निकलने वाला लड़का खड़ा है।' सकर्मक क्रियाओं के साथ **वुन** प्रत्यय की संयुक्ति स्वाभाविक नहीं है। आगामी सूत्र में इस प्रत्यय की वर्तमान स्थिति का वर्णन है।

॥ वुनावकारागमः ॥ २६ ॥

धातोः वुनु प्रत्यये परे अकारागमो भवति ॥ व्यठवुनु । स्थूलीभवन् ॥ पोठवुनु । पोष्टा । सुगमम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.26

वुन प्रत्यय संयुक्त होने के पूर्व धातु में अकार का आगम होता है। **व्यठ्वुन** 'मोटा होने वाला', **पोठ्वुन** 'पुष्ट होने वाला'। सिद्धि सुगम है।

व्याख्या—

उक्त अकार अुकार के रूप में ही उच्चरित है। वर्तमान में **वुन** प्रत्यय का प्रयोग सीमित है। कुछ रूढ़ प्रयोगों को छोड़ कर, जहाँ भी इस प्रत्यय की संभावना होती है, वहाँ पर 'वाला' अर्थ ही अभिप्रेत है। **व्यथुवुन** जैसे पदों का अर्थ रूढ़ हो गया है। इस का अर्थ है उद्यमी अथवा परिश्रमी।

॥ स्वरान्तेभ्यो वपूर्वः ॥ २७ ॥

स्वरान्तेभ्यो धातुभ्यो वपूर्वः अकारागमः वकारागमो भवति ॥ निववुनु । हारकः ॥ दिववुनु । दायकः ॥ यिववुनु । आगन्ता ॥ एवं । ख्यववुनु । खादकः ॥ च्यववुनु । पायकः ॥ ग्यववुनु । गायकः ॥ अत्र वकारागमे कृते सर्वत्राकारागमो निर्दिष्टिवर्जितात् (सू० ८।२।११) इति धातोरेव अकारागमः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.27

स्वरान्त धातुओं में व पूर्व के अकारागम से पहले वकारागम होता है। **निववुन** 'ले जाने वाला', **दिववुन** 'देने वाला', **यिववुन** 'आने वाला'। इस के अतिरिक्त— **ख्यववुन** 'खाने वाला', **च्यववुन** 'पीने वाला' **ह्यववुन** 'लेने वाला'। 8.2.11 सूत्र के अनुसार **नि, दि, यि** को छोड़ कर इन सभी में अुकारागम होता है।

व्याख्या—

स्वरान्त धातुओं में अुकारागम से पूर्व वकारागम होता है। यह वकार प्रत्यय **वुन** के वकार के अतिरिक्त है। वर्तमान में **नि, दि, यि** धातुओं के साथ भी अुकारागम की संभावना है। यथा— **निवुवुन, दिवुवुन, यिवुवुन।**

॥ वोलुग्राक् पदौ च ॥ २८ ॥

धातोः कर्तर्यर्थे वोलु प्रत्ययः ग्राक् प्रत्ययश्च भवति उदाहरणमुत्तरसूत्रे ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.28

करने वाला अर्थ अभिप्रेत होने पर धातु के साथ **वोल** अथवा **ग्राक** प्रत्यय संभव है। उदाहरण आगामी सूत्र में प्रस्तुत हैं।

व्याख्या—

वोल प्रत्यय के विकल्प में धातु के साथ **ग्राख** प्रत्यय की भी संभावना है। वर्तमान भाषा व्यवहार में इस संदर्भ में **ग्राख** प्रत्यय का प्रयोग व्यापक नहीं है।

॥ तयोरनागमः ॥ २९ ॥

तयोर्वोलु ग्राक् प्रत्यययोः परयोर्धातोः अन् आगमो भवति ॥ करन्-वोलु । कर्ता ॥ परन्-वोलु । पठिता ॥ एवं । करन्-ग्राख् । कर्ता ॥ परन्-ग्राख् । पाठकः ॥ पदसंज्ञाव्यपदेशाद्वक्ष्यमाणपुंस्त्रीभावपदात्परौ प्रयुक्तौ सन्तौ प्रोक्त-समासवारितद्धितवधार्यौ ॥ तद्यथा । ज्ञानुन् भावपदात् अग्रे वोलुपदं । व्यञ्ज-नान्तस्योकारोपधाया अत् (सू० २।१।३२) इति उपधाया उकारस्य अकारः ॥ एवं । ज्ञांसू-वोलु । अत्र ज्ञान् (सू० ९।२।७१) भावपदात् अग्रे वोलु पदम् । तवर्गान्त्यानामप्रसिद्ध (सू० ६।११) इति नकारस्य सकारः । कृतादेशानाम्-मात्रा आगम (सू० २।१।१६) इति ऊमात्रा आगमः ॥ ज्ञानन्-वोलु । ज्ञाता ॥ ज्ञांसू-वोलु । ज्ञाता ॥ इति सिद्धम् । यस्यैव धातोः स्वार्थे पुंस्त्रीरूपे भावपदे

स्यातां तस्यैव स्वरूपद्वयं संगच्छत इत्यन्वयार्थम् ॥ [यस्यैवेत्यत्रायमर्थः यस्य धातोः स्वार्थे निजार्थे कर्तुः स्वस्यैवात्मन आन्तरधर्मद्योतके न तु केनचिद्बाह्येन कर्मादिना संयुज्यमानार्थके पुंस्त्रीरूपे पुंसि स्त्रियां च न तु द्वयोरन्यतरस्मिन्नेव निष्पद्यमानप्रयोगे भावपदे वक्ष्यमाणभावप्रत्ययान्तरूपे स्यातां तस्यैवेति। यथात्र ज़ानुन् ज़ान् इत्युभे पुंस्त्रीरूपे भावपदे कर्तृसंबन्धिज्ञानरूपस्यान्तरधर्मस्य वाचके स्त इति बोध्यम् । करादीनां (सू० ९।२।२।) स्वबाह्यकर्मसंयोगात् ज़रादीनां (सू० ९।२।२४) नित्यस्त्रीभावात् छ्वकादीनां (सू० ९।२।९) स्त्रीभावप्रत्ययान्त-भावाभावात् ड्लादीनां (सू० ९।२।२७) बाह्यधर्मसंयोगभावात्पदसंज्ञाव्यपदेशा-दित्यादिना सूचितविधेरप्रसक्ततोक्तेति ॥]

अनुवाद— सूत्र 9.1.29

इन दोनों प्रत्ययों के पूर्व धातु के साथ **अन** आगम होता है **करनवोल** 'करने वाला', **परनवोल** 'पढ़ने वाला', एवं **करनग्राख** 'करने वाला', **परनग्राख** 'पढ़ने वाला'। इन दोनों का प्रयोग पुंलिंग और स्त्रीलिंग भावपद के साथ किए जाने पर, सिद्धि समासवत ही होती है। यथा— **ज़ानुन** भावपद के आगे **वोल** पद की संयुक्ति 2.1.32 सूत्र के अनुसार उपधा के उकार का अकार। 9.2.71 सूत्र के अनुसार **ज़ान** भाव पद है। **वोल** प्रत्यय संयुक्त होने पर **ज़ॉन्यवोल**। 6.1.11 सूत्र संख्या से नकार का न्यकार। 2.1.16 सूत्र से ऊमात्रा का आगम। **ज़ानन वोल** 'जानने वाला', **ज़ॉन्य वोल** 'जानने वाला' सिद्ध है। जिन भी धातुओं के पुंलिंग स्त्रीलिंग रूप भावपद में निजार्थ में होते हैं, उन्हीं के दो रूप अवधार्य हैं। (अर्थात कर्ता के अन्तःधर्म, निजार्थ में दोनों रूप सिद्ध हैं। भावपद के अन्तर्गत कर्म के बाह्य संयुज्यमान अर्थ, भावप्रत्ययान्त रूप में पुंलिंग स्त्रीलिंग दो रूप निष्पादित हैं। **ज़ानुन** और **ज़ान** इन दोनों के पुंलिंग स्त्रीलिंग रूप भावपद में कर्ता के अन्तःधर्म संबद्ध ज्ञान का बोधक है। 9.2.2 सूत्र के अनुसार स्वबाह्य कर्म संयोग। 9.2.24 सूत्र के अनुसार नित्य स्त्रीभाव। 9.2.9 सूत्र के अनुसार स्त्रीभाव प्रत्ययान्त का अभाव। 9.2.27 वाह्यधर्म भाव से (स्त्रीलिंग प्रत्यय रूप में) यह विधि प्रभावी नहीं है।)

व्याख्या—

वोल और **ग्राख** प्रत्यय संयुक्त होने पर **न** का आगम होता है। ईश्वर कौल **कर** 'कर' और **पर** 'पढ़' का अंतिम व्यंजन हल चिन्ह युक्त मानते हैं, इसलिए **अन** का आगम कहते हैं। **ज़ानुन** 'जानना' नामधातु रूप है। 9.2.71 सूत्र के अनुसार भाववाचक संज्ञा रूप **ज़ान** 'जानकारी' है, जो मूलधातु के समरूपी है। यह पुंलिंग रूप है। स्त्रीलिंग रूप है **ज़ॉन्य**। अतः उक्त धातु की, स्त्रीलिंग

और पुंलिंग दो भाववाचक संज्ञाऐं **ज़ाननवोल** और **ज़ॉन्यवोल** हैं।

अकर्मक क्रियाएँ अन्तः धर्म वाली मानी गई है। ऐसी क्रियाओं के दो रूप संभव है, जैसा कि स्पष्टीकरण में स्पष्ट है। सकर्मक क्रियाएँ वाह्यधर्मी मानी गई हैं। ऐसी क्रियाओं में यदि पुंलिंग-स्त्रीलिंग भाव प्रत्यय संयुक्त होने की संभावना हो, तो दोनों प्रकार की भाववाचक संज्ञाएँ निष्पादित हो सकती है। 9.2.30 सूत्र में इसी नियम के आधार पर **कर** 'कर' के साथ स्त्रीलिंग प्रत्यय **इन्य** संयुक्त किया गया है। व्युत्पन्न रूप **करिन्य** 'करनी', स्त्रीलिंग भाववाचक रूप सिद्ध है। पुंलिंग भाववाचक रूप अथवा नामधातु रूप **करुन** 'करना' ही है। 9.2.27 सूत्र में स्त्री प्रत्यय **इन्य** और **अन्य** के आधार पर स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञाओं के उदाहरण प्रस्तुत हैं। नामधातु रूप के लिए इन सभी उदाहरणों के धातुओं के साथ **उन** प्रत्यय ही संयुक्त होगा।

॥ स्वरान्तात्सस्वरः ॥ ३० ॥

सः अन् आगमः स्वरान्ताद्धातोः सस्वरः स्वरान्तो भवति ॥ ख्यन-वोलु । खादिता ॥ च्यन-वोलु । पाता ॥ एवं । ख्यन-ग्राख् । भक्षकः ॥ च्यन-ग्राख् पायकः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.30

स्वरान्त धातुओं का **अन** आगम स्वर सहित होता है। **ख्यनुवोल** 'खाने वाला', **च्यनुवोल** 'पीने वाला' एवं **ख्यनुग्राख** 'खूब खाने वाला', **च्यनुग्राख** 'खूब पीने वाला।

व्याख्या—

मूल धातु स्वरान्त होने की अवस्था में **अन** प्रत्यय का नकार अुकार सहित होता है। यथा— **दिनुवोल** 'देने वाला', **प्यनुवोल** 'गिरने वाला'। 9.1.21 सूत्र के अनुसार **दि** धातु के साथ **अन** संयुक्त होने पर **अन** के अकार का लोप होता है। उक्त अलोप आगामी सूत्र में भी वर्णित है।

॥ न्यादीनामल्लोपः ॥ ३१ ॥

नि हरणप्रापणयोः । दि दाने । यि आगमने । इत्येषाम् अन् आगमस्य अकारलोपो भवति ॥ निन-वोलु । नेता ॥ दिन-वोलु । दाता ॥ यिन-वोलु । आगन्ता ॥ एवं । निन-ग्राख् । नायकः ॥ दिन-ग्राख् । दायकः ॥ यिन-ग्राख् । आगन्ता ॥

अनुवाद–

सूत्र 9.1.31

नि 'ले जा' **दि** 'दे' **यि** 'आ' इन के साथ **अन** आगम होने पर अकार का लोप होता है। **निनुवोल** 'ले जाने वाला', **दिनुवोल** 'देने वाला' **यिनुवोल** 'आने वाला' एवं– **निनुग्राख** 'ले जाने वाला' **दिनुग्राख** 'देने वाला' **यिनुग्राख** 'आने वाला'।

व्याख्या–

वर्तमान भाषा में **ग्राख** प्रत्यय का सीमित प्रयोग किया जाता है। ग्रंथकार के अनुसार **दि** और **यि** के साथ **ग्राख** संयुक्त होने पर 'वाला' अर्थ के साथ क्रिया में निहित कार्य की विपुलता का भी बोध होता है। **ख्यनु ग्राख** 'खूब खाने वाला' पद में इस प्रकार का अर्थ वर्तमान में भी सम्प्रेषित है।

॥ दिदावोर्नल्ललौ व्यभिचारिण्याम् ॥ ३२ ॥

दि दाने ।दाव दापने। इत्यनयोर्व्यभिचारिण्यां स्त्रियां क्रमेण नल् अल् प्रत्ययौ भवतः ॥ दिनल्। व्यभिचारिणी ॥ दावल्। व्यभिचारिणी ॥

अनुवाद–

सूत्र 9.1.32

दि 'दे' **दाव** 'दिलवा' व्याभिचारी स्त्री अभिहित होने पर इन दोनों धातुओं के साथ क्रम से **नल** और **अल** प्रत्यय संयुक्त होता है। **दिनल** 'देने वाली', **दावल** 'देने वाली'।

व्याख्या–

सामाजिक दृष्टि से ये पद अशिष्ट शब्दों की गिनती में आते हैं। शिष्ट समाज में इन का प्रयोग वर्जित है। आगामी तीन सूत्रों में भी इसी प्रकार के अन्य उदाहरण प्रस्तुत हैं।

॥ कर्मोपपदे पुंस्य ऽश्लीले ॥ ३३ ॥

तयोर्दिदात्वोः कर्मण्युपपदे सति पुंसः अश्लीले नल् अलौ भवतः॥ माज्य-दिनल्। मातृगामी ॥व्यस-दिनल्। स्वसृगामी ॥ कोरि-दिनल्। कन्यागामी ॥ एवं। माज्य-दावल्। व्यस-दावल्। कोरि-दावल् ॥

अनुवाद–

सूत्र 9.1.33

पुंलिंग अश्लील द्योतन के लिए कर्म उपपद की स्थिति में **दि** और **दाव** के साथ **नल** तथा **अल** संयुक्त होता है। **माजिदिनल** 'मातृगामी' **ब्यनिदिनल** 'भगिनीगामी', **कोर्यदिनल** 'पुत्रीगामी'। एवं– **माजिदावल, ब्यनिदावल, कोरिदावल।**

व्याख्या–

यह पूर्व सूत्र का विस्तार है। वर्तमान में यौन संबन्धी अपशब्दों के लिए **नल** प्रत्यय अव्याप्त है।

॥ नलो लो वा ॥ ३४ ॥

नल् प्रत्ययस्यादेर्विकल्पेन लकारो भवति ॥ माज्य-दिलल् ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.1.34**

नल प्रत्यय के आदि वर्ण का विकल्प से लकार होता है। **माजिदिलल।**

व्याख्या–

पूर्व सूत्र की व्याख्या में उल्लेख है, कि **नल** प्रत्यय का प्रयोग वर्तमान नहीं है। इसलिए आदि वर्ण **न** के लकार परिवर्तन का विकल्प भी सार्थक नहीं है।

॥ क्वचिल्लोपः ॥ ३५ ॥

नल् प्रत्ययस्यादेः क्वचिल्लोपो भवति ॥ माज्य-दिल्। मातृगामी ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.1.35**

कभी कभी **नल** प्रत्यय के आदि वर्ण का लोप हो जाता है। **माजिदिल** 'मातृगामी'।

व्याख्या–

पूर्व के दो सूत्रों में **नल** प्रत्यय अव्याप्त होने का उल्लेख है। अतः **नल** के नकार का लोप भी सार्थक नहीं है।

॥ प्रधानातीते उः ॥ ३६ ॥

धातोः प्रधाने क्रियारूपे अतीते गम्यमाने उ् प्रत्ययो भवति ॥ कंरु। कृतम् ॥ पंरु। पठितम् ॥ खंनु। खातम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.1.36**

धातु का भूतकालिक प्रधान क्रिया रूप अभिधेय होने पर **उ्** प्रत्यय संयुक्त होता है। **कौर** 'किया' **पौर** 'पढ़ा' **खौन** 'खोदा'।

व्याख्या–

प्रस्तुत **उ्** मात्रिक स्वर का चिह्न है। ग्रन्थकार ने इस **उ्** की संकल्पना

का यत्र तत्र उल्लेख किया है। 2.1.69 सूत्र में भी इसी मात्रिक स्वर का कथन है। वर्तमान उच्चारण में **उ** प्रत्यय, पश्चगामी स्वरसमातालता व्युत्पन्न करने के पश्चात लुप्त हो जाता है। यथा– **कर+उ->कौर, पर+उ->पौर, खन+उ->खौन।** इन तीनों धातुओं में उपधा का अकार उ प्रत्यय के कारण औकार में रूपांतरित हो जाता है, तथा इस रूपांतरण के पश्चात उ प्रत्यय का लोप हो जाता है।

॥ चिख्योरौवादेशः ॥ ३७ ॥

चि पाने। खि खादने। इत्यनयोः उ प्रत्ययस्य औव् आदेशो भवति॥ च्यौव्। पीतम्॥ ख्यौव्। भुक्तम्॥

अनुवाद– सूत्र 9.1.37

चे (चि) 'पी' **खे** (खि) 'खा' इन दोनों मे उ प्रत्यय का **औव** आदेश है। **च्यौव** 'पिया' **ख्यौव** 'खाया'।

व्याख्या–

स्पष्टीकरण में दिए गए **चे** और **खे** के भूतकालिक रूपों का आजकल प्रयोग नहीं है। कहीं कहीं आँचलिक क्षेत्रों में ये रूप विद्यमान हो सकते हैं। आधुनिक मानक भूतकालिक रूप हैं, **च्यव** 'पिया', **ख्यव** 'खाया'। **पे** 'गिर' का भूतकालिक रूप भी इसी प्रकार सिद्ध है। यथा– **प्यव** 'गिरा'। ये तीनों अन्य पुरुष, एकवचन रूप हैं। मध्यम पुरुष एकवचन रूप है, **ख्योथ** 'तुम ने खाया'। शेष रूप भी इसी प्रकार अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय प्राप्त करते हैं।

॥ नेरूव् ॥ ३८ ॥

नि हरणे इत्यस्मात् उ प्रत्ययस्य ऊव् आदेशो भवति॥ न्यूव्। नीतम्॥ तत्र युष्मच्छब्दकर्तरि आख्यातोक्तभूतक्रियैव (सू० ८।३।३४) मुख्या. स्पष्टा च प्रोक्ता इयं गौणेति बोध्यम्॥

अनुवाद– सूत्र 9.1.38

नि 'ले जा' में **उ** प्रत्यय का **ऊव** आदेश है। **न्यूव** 'ले गया'। 8.3.34 सूत्र के अन्तर्गत उक्त क्रिया के वर्णित भूतकालिक रूप ही मुख्य हैं। प्रस्तुत रूप गौण है।

व्याख्या–

न्यूव का प्रयोग आज कल अव्याप्त है। 8.3.34 सूत्र के अन्तर्गत यह स्पष्ट किया गया है, कि कर्म का वचन और लिंग **नि** के भूतकालिक रूपों को

प्रभावित करता है। इन सभी रूपों में अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय भी संयुक्त होता है। उक्त सूत्र के अन्तर्गत पर्याप्त उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।

॥ कर्तृधातूनामाख्यातभूतक्रियैव नित्यम् ॥३९॥

येषां धातूनामतीतकाले कर्तृप्रयोगा एव भवन्ति तेषामाख्यातोक्तभूतकालक्रियैव नित्यं भवति कर्मप्रयोगाभावात्॥ च़ोलु। पलायितः॥ च़ॆलि। पलायिताः॥ व्यठ्योव्। पुष्टः॥ व्यठ्येय्। पुष्टाः॥ आख्यातप्रक्रियायां साधितानि॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.39

जिन धातुओं का भूतकाल में केवल कर्तृप्रयोग है, उन में कर्म प्रयोग के अभाव के कारण आख्यात प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रोक्त भूतकालिक क्रिया रूप ही नित्य हैं। च़ोल 'भागा', च़ॆल्य 'भागे', व्यठ्योव 'पुष्ट हुआ' व्यठ्येय 'पुष्ट हुए'। आख्यात प्रक्रिया के अन्तर्गत सिद्धि प्रस्तुत है।

व्याख्या—

अकर्मक क्रिया रूप की अन्विति कर्ता के साथ ही होती है। कर्ता का लिंग, पुरुष और वचन क्रिया को प्रभावित करता है। आख्यात प्रक्रिया में इस तथ्य की व्याख्या प्रस्तुत है।

॥ भूतपदान्मंतु पदं कर्मणि ॥ ४० ॥

कर्मणि धातुक्रियाविशिष्टे पदार्थे अभिधेये सति कर्मधातोः कर्तृक्तभूतक्रियापदात् कर्तृधातोश्चाख्यातोक्तभूतपदात् मंतु पदं भवति। मंतु पदे तु मुतु इति वकारविशिष्टं च व्यवह्रियते। भूतपदग्रहणेन यथा मंतु पदस्य प्रथमादिविभक्तिपरिणामो भवति एकत्वानेकत्वपुंस्त्रीपरिणामश्च भवति तथा तदन्तूतक्रियापदस्यापि भवति। मंतु विशिष्टं पदं त्वेकमेव भवति न तु द्वितयम्॥ कॊरु-मंतु। कृतम्॥ कॊरू-मंचू। कृता॥ गॊरु-मंतु। घट्टितम्॥ गॊरू-मंचू। घट्टिता॥ कॊरि-मॊंति। कृतानि॥ कर्य-मत्य। कृताः॥ गॊरि-मॊंति। घट्टितानि॥ गर्य-मत्य। घट्टिताः॥ कर करणे। गर घट्टने। प्रधानातीते वुः (सू० ३६)। कॊरु पदात् गॊरु पदाच्चानेन मंतु पदम्। पुंबहुत्वे पूर्वोत्तरपदयोरन्त्यस्वरस्य इकारः। स्त्रीलिंङ्गे ऊमात्रादेशः। तकारस्य च चत्वम्। एवं सर्वत्र विभक्तिगणे विज्ञेयम्॥ कर्तृधातूनां यथा। व्यठ्यो-मंतु। स्थूलीभूतः॥ खूच़ु-मंतु। भीतः॥ व्यठ स्थूलीभवने ओव् यागमः (८।१।२६ सूत्रेण) व्यठ्योव् पदात् मंतु पदम्। संबन्धिप्रत्ययेषु वयोर्लोप (सू० ८।१।४१) इति वकारस्य लोपः। एवं। खोच़ भये ओव् तस्य छुद् आदेशः छकारोलोपश्च। ओ-

कारस्योकारः सादेशपुंकर्तरि च (सू॰ ८।३।२४) इत्युपधाया ऊकारः। खूछु पदात् मंतु पदम्॥ ननु कर्तृधातूनां वकारस्य लोपे ओदन्तावशेषणादोदन्तस्य च लिङ्ग-प्रयोगादर्शनात्कथं पूर्वपदस्य लिङ्गपरिणामः क्रियते। अत्रोच्यते यथा उकारान्तस्य प्रथमाबहुत्वादिषु एकमात्र एव इकारादेशः क्रियते तथैव द्विमात्रस्य संध्यक्षरस्य ओकारस्यापि द्विमात्रसंध्यक्षरस्य एकारस्यादेशो भवतीति बोध्यम्। तेन व्य-ठ्ये-मंति। स्थूलीभूताः॥ यद्वा। व्यठ्येय् इति बहुवचनभूतक्रियाया मंतु पदे कृते प्रोक्तसूत्रेण यकारलोपात्सेत्स्यतीति॥ एकाक्षरावशिष्टानां तु पदसंज्ञानिवृत्तिः॥ तेन। आमंतु। आगतः॥ आमंति। आगताः॥ चामंतु। प्रविष्टः॥ चामंति। प्रविष्टाः॥ द्रामंतु। निर्गतः॥ द्रामंति। निर्गताः॥ प्यामंतु। प्रसूतः॥ प्यामंति। प्रसूताः॥ जामंतु। जातः॥ जामंति। जाताः॥ मूदु इति क्रियापदस्य मंतौ अन्त्यव्यञ्जनादेर्विकल्पेन लोप इष्यते॥ मूदु-मंतु। मृतः॥ पक्षे। मूमंतु। मृतः॥ स्त्रीलिङ्गे तु नित्यमिष्यते॥ मूमंचु। मृता॥ मूमच। मृताः॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.40

कर्म धातु में कर्मणि पदार्थ अभिधेय होने पर भूत पद का कृत्पद तथा कर्तृधातु में भी भूत का कृत्पद **मोत** है। **मोत** पद विशेष उकार युक्त **मुत** के रूप में भी व्यवहृत है। भूत पद की स्थिति में **मुत** पद के साथ प्रथमा आदि विभक्ति जिस प्रकार प्रभाव डालती है, उसी प्रकार पुंलिंग व स्त्रीलिंग के एकवचन बहुवचन रूप भी प्रभावी हैं। ये प्रभाव भूत क्रिया पद पर भी होते हैं। **मुत** युक्त विशिष्ट पद एक ही होता है दो नहीं। **कौरमुत** 'किया हुआ', **कॅरमुच़** 'की हुई', **गौरमुत** 'गढ़ा हुआ' **गॅरमुच़** 'गढ़ी हुई' **करिमत्य** 'किए हुए', **करिमचु** 'की हुई', **गॅरयमुत्य** 'गढ़े हुए', **गरिमचु** 'गढ़ी हुईं', **कर** 'कर', **गर** 'गढ़'। 8.1.36 सूत्र के अनुसार **कौर, गौर** पद के साथ **मोत** पद। पुंलिंग बहुवचन में पूर्व और उत्तर पद के अंतिम स्वर का इकार, स्त्रीलिंग में ऊ मात्रादेश। तकार का च़त्व। इसी तरह से सभी विभक्तियाँ।

कर्तृधातु के उदाहरण— **व्यठ्योमुत** 'मोटा हुआ', **खूच़मुत** 'डरा हुआ'। 8.3.46 सूत्र के अनुसार **व्यठ** 'मोटा हो' के साथ **औव** आगम। **व्यठयौव** के साथ **मुत** पद। 8.3.41 सूत्र के अनुसार **वकार** का लोप एवं **खोच़** 'डर'। **औव** के साथ **छुह्** के **छ ह** का लोप। 8.3.24 सूत्र के अनुसार उपधा का ऊकार। **खूच़** पद के साथ **मुत**। कर्तृधातु में वकार का लोप होने पर ओकारान्त तथा सभी उकारान्त रूपों के पूर्व का लिंग निर्णय कैसे किया जाता है? जिस प्रकार उकारान्त एकपदीय प्रथमा विभक्ति के बहुवचन आदि रूपों में **इकार** आदेश होता है, उसी प्रकार द्विपदीय संधि अक्षर वाले ओकार में भी दोनों पदोंके संधि अक्षरों का एकार

आदेश है। यथा– **व्यठ्ये मुत्य** 'पुष्ट हुए'। यहाँ पर भूतकालिक क्रिया के बहुवचन रूप **व्यठ्येय** के साथ **मुत** पद संयुक्त होने पर पूर्वोक्त सूत्र के अनुसार यकार का लोप। एकाक्षर वाले धातुओं में पद संज्ञा निवृत है। यथा– **आमुत** 'आया हुआ', **आमुत्य** 'आए हुए', **चामुत** 'घुसा हुआ' **चामुत्य** 'घुसे हुए', **द्रामुत** 'निकला हुआ', **द्रामुत्य** 'निकले हुए' **प्यामुत** 'प्रसवित हुआ', **प्यामुत्य** 'प्रसवित हुए' **ज़ामुत** 'उत्पन्न हुआ', **ज़ामुत्य** 'उत्पन्न हुए'। **मूद** क्रिया पद के साथ **मुत** प्रयुक्त होने पर अंतिम व्यंजन का विकल्प से लोप होता है। **मूदमुत** 'मरा हुआ' विकल्प में **मूमुत** 'मरा हुआ'। स्त्रीलिंग में नित्य होता है। **मूमुच़** 'मरी हुई' **मूमचु** 'मरी हुई'।

व्याख्या–

ईश्वर कौल ने **मुत** प्रत्यय को भूत का कृत्पद स्वीकार किया है। मूल धातु के साथ **मुत** संयुक्त होने पर क्रिया में वर्णित कार्य सम्पूर्णता के बिन्दु तक पहुँचता है। इस दृष्टि से **मुत** पूर्णपक्ष का द्योतक है। ऐसे वाक्यों में सहायक क्रिया एक अनिवार्य घटक है। **छु** 'है', **ओस** 'था' अथवा **आसि** 'होगा' का चयन वाक्य के अभिप्राय पर आधारित है। यथा– **माहराज़ु छु आमुत** 'दूल्हा आ चुका है'। **माहराज़ु ओस आमुत** 'दूल्हा आ चुका था'। **माहराज़ु आसि आमुत** 'दूल्हा आ चुका होगा'।

अकर्मक क्रिया के संदर्भ में कर्त्ता तथा सकर्मक क्रिया के संदर्भ में कर्म का लिंग-वचन सहायक क्रिया और **मुत** प्रत्यय को प्रभावित करता है। **मुत** के विभिन्न रूप तालिका में अंकित हैं।

	एकवचन	**बहुवचन**
पुंलिंग	मुत	मुत्य
स्त्रीलिंग	मुच़	मचु

धातु और **मुत** के मध्य **हे** (हि) 'ग्रहण कर' का प्रयोग भी संभव हैं। ऐसी स्थिति में क्रिया में वर्णित कार्य पूर्ण बिंदु तक नहीं पहुँचता। पक्ष की दृष्टि से ऐसा वाक्य अपूर्ण पक्ष का उदाहरण है। अगले सूत्र में इसी तथ्य को स्पष्ट किया गया है।

॥ हेः पूर्वं भावपदं चारब्धे ॥ ४१ ॥

हि ग्रहणादिषु इत्यस्य धातोः कृदुक्तभूतपदात्परं मतु पदं भवति। धातोः पूर्वं च भावपदं (सू० ९।२।३) प्रयोज्यम् आरब्धे कर्मणि अभिधेये सति ॥ ग्यवुनु हेतु मतु। गीयमानम् ॥ करुनु हेतु मतु। क्रियमाणम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.1.41**

कृत में कहे गए भूत पद के उपरान्त **हे** (हि) 'ग्रहण कर-आदि' अर्थ वाले धातु के पश्चात **मुत** पद प्रयुक्त होता है। 9.2.3 सूत्र के अनुसार इस संयुक्ति से क्रिया में निहित कार्य आरम्भ होने की सूचना अभिधेय है। **ग्यवुन ह्यौतमुत** 'गाना आरंभ हुआ है'। **करुन ह्यौतमुत** 'करना आरंभ हुआ है'।

व्याख्या—

हे 'ग्रहण कर-आदि' युक्त क्रिया पद में मुख्य क्रिया नामधातु रूप में रहती है। **हे** का प्रयोग मुख्य क्रिया का कार्य प्रारंभ होने की सूचना देता है। उस के पश्चात **मुत** पद प्रयुक्त होता है। ऐसे वाक्यों में भी सहायक क्रिया एक अनिवार्य घटक है। शब्द क्रम की दृष्टि से वाक्य में सहायक क्रिया का स्थान दूसरा होता है। कर्ता का प्रयोग होने पर, सहायक क्रिया उस के बाद आएगी, अन्यथा नामधातु रूपी क्रिया के पश्चात। यथा— **बुलबुलन छु परुन ह्यौतमुत** 'बुलबुल ने पढ़ना आरंभ किया है'। **परुन छुन ह्यौतमुत** 'पढ़ना (उस ने) प्रारंभ किया है'। दूसरे उदाहरण से स्पष्ट है, कि कर्ता लुप्त होने पर सहायक क्रिया के साथ अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय न संयुक्त होता है। सकर्मक वाक्यों में क्रिया पद के इन सभी घटकों की अन्विति कर्म के लिंग-वचन के साथ होती है।

॥ गछ़ो ऽतीतानागतौ धातुभावतस्तव्यार्थे ॥४२॥

अत्र शब्दशास्त्रे तव्यार्थकः शब्दः अतीतकाले भविष्यत्काले च भवतीति बोध्यम्। गछ सामञ्जस्य इत्यस्य प्रधानभूतकालस्वरूपं प्रधानभविष्यत्कालस्वरूपं च धातोर्भावशब्दाद्वक्ष्यमाणरीत्या पूर्वे परे वा प्रयुज्येते क्रमेण भूततव्यार्थभविष्यत्तव्यार्थके भवतः ॥ च्य गोछु गछुनु। त्वया गन्तव्यं भूते ॥ त्वहि गोछु गछुनु। युष्माभिर्गन्तव्यम् ॥ अनागते यथा ॥ तोतु गछि गछुनु । तत्र गन्तव्यम् ॥ साधनं सुगमम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.1.42**

शब्दशास्त्र की दृष्टि से यहाँ 'चाहिए' शब्द की प्रतीति भूत और भविष्यत्काल में ही होती है। **गछ़** 'चाहिए' का प्रधान भूतकाल स्वरूप तथा प्रधान भविष्यत्काल स्वरूप, धातु के भाव शब्द के पूर्व अथवा पश्च, भूतकालिक अथवा भविष्यत्कालिक अर्थ में, क्रम से प्रयुक्त होता है। **चे गोछ़ गछुन** 'तुम को जाना चाहिए था'। **त्वहि गोछ़ गछुन** 'आप को जाना चाहिए था'। भविष्यत में, **तौत गछि गछुन** 'वहाँ जाना चाहिए'। साधन सुगम है।

व्याख्या–

नामधातु रूपी मुख्य क्रिया के पूर्व **गछ़** 'जा' धातुरूप का प्रयोग भूत अथवा भविष्यत्काल में 'चाहिए' अर्थ में सम्भव है। इस **गछ़** धातुरूप का प्रयोग मुख्य क्रिया के पश्चात नहीं किया जाता। यथा– भूतकाल– **चॆ गोछ़ यनामु द्युन** 'तुझे इनाम देना चाहिए था'। भविष्यत्काल– **चॆ गछ़ि यनामु द्युन** 'तुझे इनाम देना चाहिए'।

उदाहरणों से स्पष्ट है, कि **गछ़** धातुरूप और मुख्य क्रिया के मध्य कर्म का प्रयोग होता है। तब कर्म का ही लिंग-वचन, **गछ़** धातुरूप को प्रभावित करता है।

॥ विधिनिषेधयोर्लगः ॥ ४३ ॥

लग संगे पीडायां च इत्यस्य स्वरूपं धातोर्भावशब्दात्मयोज्यम् विधौ निषेधे च गम्यमाने। तत्र अतीतक्रियाया विधिनिषेधयोर्निषेधादनागतस्वरूपमेव न्यायः न भूतस्वरूपं। किंत्वपूर्णभूतस्वरूपं युज्यते॥ तंतु लगिं गछुनु। तत्र गन्तव्यम्॥ तंतु लगि न गछुनु। तत्र न गन्तव्यम्॥ तंतु लगिहे गछुनु [। तत्र गन्तव्यं योग्यमभविष्यत्] ॥

अनुवाद– सूत्र 9.1.43

लग 'लग' के रूप का प्रयोग धातु के भाव शब्द के साथ विधि अथवा निषेध में प्रयुक्त हो सकता है। भूतकालिक क्रिया में निषेधार्थक प्रयोग भविष्यत ही होता है, भूत नहीं। किन्तु अपूर्णभूत संभव है। **तोत लगि गछुन** 'वहाँ जाना चाहिए'। **तोत लगि न गछुन** 'वहाँ नहीं जाना चाहिए'। **तोत लगिहे गछुन** 'वहाँ जाना चाहिए था'।

व्याख्या–

'चाहिए' के अर्थ में **लग** धातुरूपों का प्रयोग निषेधार्थक वाक्यों में ही व्यापक है। सकारात्मक वाक्यों में **लग** के स्थान पर **पज़ि** के रूपों का व्यवहार है। अगले सूत्र में पज़ि की चर्चा है।

॥ भाव्यार्थे पज़श्च ॥ ४४ ॥

पज युक्तीभवने इत्यस्यातीतापूर्णभूतस्वरूपं धातुभावतः प्रयोज्यं चशब्दाद्भूतप्रयोगाश्च भाव्ये सामञ्जस्ये गम्यमाने॥ तंतु पजि गछुनु। तत्र गमनेन भाव्यम्॥ तंतु पजिहे गछुनु। [तत्र गन्तव्यं योग्यमभविष्यत्॥] एवमन्यत्॥

अनुवाद– सूत्र 9.1.44

पज़ 'चाहिए' का प्रयोग अतीत, अपूर्णभूत स्वरूप में धातु के भाव शब्द के साथ किया जाता है। **तोत पज़ि गुछुन** 'वहाँ जाना चाहिए'। **तोत पज़िहे गछुन** 'वहाँ जाना चाहिए था'।

व्याख्या–

'चाहिए' के अर्थ में **पज़ि** का प्रयोग व्यापक है। हालाँकि **पज़** मूल धातु के रूप में प्रयुक्त नहीं होता। भाषा में **चु पज़** जैसे वाक्य संभव नहीं है।

॥ षष्ठी तृतीया वैषा कर्तरि ॥ ४५ ॥

एषां मोक्तानां गछादीनां कर्तरि षष्ठी तृतीया वा स्यात् ॥ च्य गंछु करुन् । त्वया कर्तव्यं भूते ॥ वा । च्योनु गंछु करुन् । ते कर्तव्यं भूते ॥ च्य पजि रनुन् । त्वया पक्तव्यम् ॥ च्योनु पजि रनुन् । तव पक्तव्यम् ॥ च्य लगि दपुन् । त्वया वाच्यम् ॥ च्योनु लगि न दपुन् । तव न वक्तव्यम् ॥

अनुवाद– सूत्र 9.1.45

उपरोक्त **गछ़** आदि रूपों में कर्ता के साथ षष्ठी अथवा तृतीया संयुक्त होती है। **चॖ गोछ़ करुन** 'तुझे करना चाहिए था'। अथवा **चोन गोछ़ करुन** 'तुझे करना चाहिए था'। **चॖ पज़ि रनुन** 'तुझे पकाना चाहिए'। **चोन पज़ि रनुन** 'तुझे पकाना चाहिए'। **चॖ लगि दपुन** 'तुझे कहना चाहिए'। **चोन लगि न दपुन** 'तुझे नहीं कहना चाहिए'।

व्याख्या–

विधिमूलक ऐसे वाक्य कभी कभी द्वयर्थक भी होते हैं। यथा– **चॖ गोछ़ करुन** वाक्य में **चॖ** पद कर्ता **चु** 'तू' का विकारी रूप है। दूसरे अर्थ में– **चॖ** कर्म का विकारी रूप भी सम्भव है। इस अर्थ वाले वाक्य में कर्ता का लोप है। कर्ता सहित वाक्य होगा– **चॖ गोछ करुन हु (नमस्कार)** 'वह तुम को (नमस्कार) करना चाहिए था'। **लग** के सन्दर्भ में नकारात्मक वाक्य ही अधिक स्वाभाविक है।

॥ एभ्य एव संबन्धप्रत्ययाश्च ॥ ४६ ॥

एभ्यो गछादिभ्यः स्वरूपेभ्यस्तत्संबन्धादिप्रत्ययाश्च भवन्ति न तु धातुभावतः ॥ गंछुस् करुन् । तस्मै कर्तव्यं भूते ॥ गंछुय् करुन् । तुभ्यं कर्तव्यम् भूते ॥ एवं । लग्यस् करुन् । कर्तव्यं तस्य ॥ लगिय् करुन् । कर्तव्यं तव ॥ लग्यम् करुन् । कर्तव्यं मम ॥ एवं । पज्यस् परुन् । पाठेन तस्य भाव्यम् ॥ पज्यम् परुन् । पाठेन मम भाव्यम् ॥

अनुवाद—   सूत्र 9.1.46

गछ़ आदि इन स्वरूपों के साथ सम्बन्ध आदि प्रत्यय भी संयुक्त हो सकते हैं, जिन में धातु भाव नहीं होता। **गॊछुस करुन** 'उस के निमित्त करना चाहिए था'। **गॊछुय करुन** 'तेरे निमित्त करना चाहिए था'। एवं **लग्यस करुन** 'उस के निमित्त करना चाहिए'। **लगी करुन** 'तुझे करना चाहिए'। **लग्यम करुन** 'मुझे करना चाहिए। एवं— **पज़्यस करुन** 'उस को करना चाहिए'। **पज़्यम करुन** 'मुझे करना चाहिए'।

व्याख्या—

प्रस्तुत उदाहरणों में सार्वनामिक प्रत्ययों की संयुक्ति का कथन है। **गछ़** के साथ लगने वाले प्रत्यय **स** और **य** निमित्तार्थ हैं। शेष उदाहरणों में अनिवार्य सार्वनामिक प्रत्यय संयुक्त है। इन प्रत्ययों की व्याख्या 8.1.35 सूत्र के अन्तर्गत की गई है।

॥ एकपदे भावतः परा वा ॥ ४७ ॥

एकस्मिन्नेव क्रियारूपे 'पदे वक्तव्ये सति गछ़ादीनां प्रयोगा भावतः परा वा प्रयोज्याः ॥ गंछ़ गछुन् वा गछुन् गंछ़ [। गन्तव्यम्]॥ लगि परुन् वा परुन् लगि [। पठितव्यम्]॥ पज़ि ख्यॆनु वा ख्यॆनु पाज़ि। अत्तव्यम् ॥

अनुवाद—   सूत्र 9.1.47

गछ़ आदि रूप क्रिया पद में धातु के भाव-शब्द से पूर्व अथवा पश्च में प्रयुक्त हो सकते हैं। **गॊछ़ गछुन** अथवा **गछुन गॊछ़** 'जाना चाहिए'। **लगि परुन** अथवा **परुन लगि** 'पढ़ना चाहिए'। **पज़ि ख्यॊन** अथवा **ख्यॊन पज़ि** 'खाना चाहिए'।

व्याख्या—

शब्दक्रम की दृष्टि से **गछ़** आदि क्रियाओं के रूप, जो मुख्य क्रिया को रंजित करते हैं, वाक्य में दूसरे स्थान पर आते हैं। यथा— **तॊत गॊछ़ गछुन** 'वहाँ जाना चाहिए था। **तॊत गछुन गॊछ़** 'स्वाभाविक वाक्य नहीं है। इस वाक्य में **तॊत** का लोप करने पर वाक्य स्वाभाविक बन जाता है। **गछुन गॊछ़** 'जाना चाहिए था'। अन्यथा वाक्य होगा **तॊत गॊछ़ गछुन**। अर्थात **गॊछ़** शब्द वाक्य के दूसरे स्थान पर ही स्थापित होगा। **लग** और **पज़ि** के विषय में भी यही नियम लागू है। ऐसे सभी वाक्यों में मुख्य क्रिया **गछुन** ही है। उसी का शाब्दिक अर्थ सम्प्रेषित होता है। **लग, पज़ि** और **गछ़** रंजक क्रियाएँ हैं, जो विधि लक्षित करती हैं।

अगले सूत्र में इसी कथन की व्याख्या करते हुए वाक्यों में शब्दक्रम स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है।

॥ अनेकपदेषु वाक्यारम्भपदात् ॥ ४८ ॥

एकाधिकपदैर्वाक्ये वक्तव्ये सति वाक्यस्य आरम्भपदादग्रे ते गछादीनां प्रयोगाः स्युः ॥ अद् गंछ् तंत गछुन् । ततस्तत्र गन्तव्यम् ॥ एवं । अद् लगि तति बिहुन् । ततस्तत्रासितव्यम् ॥ एवम् । अद् पज़ि तति दपुन् । ततस्तत्र वक्तव्यम् ॥ एवमन्यत् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.1.48

वाक्य में एक से अधिक पद होने की स्थिति में आरंभिक पद के आगे गछ़ आदि रूपों का प्रयोग किया जाता है। अद् गोछ़ तोत गछ़ुन 'तो वहाँ जाना चाहिए था'। अद् लगि तति बिहुन 'तो वहाँ बैठना चाहिए।' अद् पज़ि तति दपुन 'तो वहाँ कहना चाहिए'। इसी प्रकार अन्य भी।

व्याख्या—

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है, कि गछ़ आदि रंजकात्मक क्रिया रूप वाक्य में दूसरा स्थान ही ग्रहण करते हैं। इन क्रियाओं का शाब्दिक अर्थ संप्रेषित नहीं होता, जिस का अर्थ संप्रेषित होता है, वह मुख्य क्रिया कहलाती है।

॥ गछो गतागतप्रयोगा उदन्तभावतः कामार्थे ॥ ४९ ॥

इच्छार्थे गम्यमाने सति गछ् गतौ सामञ्जस्ये च इत्यस्य अतीतानागत-कालिकाः सर्वे प्रयोगा उकारान्तभावतः प्रयोज्याः। ते तु कर्तर्येव ज्ञेयाः। भाव-स्योकारान्तत्वं च धातुवत् एकत्वानेकत्वपरिणामार्थमिति ॥ तत्रानागते यथा। सुह् गछि गछुन् [। स गच्छतु] ॥ तिम् गछन् गछुनि [। ते गच्छन्तु] ॥ च़ह् गछख् गछुन् [। त्वं गच्छ] ॥ त्वहि गछिव् गछुनि [। यूयं गच्छत] ॥ बुह् गछ् गछुन् [। अहं गच्छानि] ॥ असि गछव् जेननि [। वयं जयेम ॥ इत्या-दयो वाक्यार्था इच्छार्थे बोध्याः] ॥ अतीतकालिकेषु यथा। ताफ् गंछ् करुन् [। आतपो ऽभविष्यत्] ॥ कुलि गंछि लसनि [। वृक्षा अरुक्ष्यन्] ॥ च़ह् गंछुख् गछुन् [। त्वमगमिष्यः] ॥ त्वहि गंछिव गछुनि [। यूयमगमिष्यत] ॥ बुह् गंछुस् गछुन् [। अहमगमिष्यम्] ॥ असि गंछि बडनि [। वयमवर्धिष्याम ॥ इति वाक्यार्था आशंसापरा बोध्याः। अतीतकालश्चात्र क्रियातिपत्तौ चार-तार्थः ॥ सर्वेषाम्] साधनं पूर्ववत् ॥

अनुवाद—

सूत्र 9.1.49

इच्छा अथवा कामना के अर्थ में **गछ़** 'जाना' के अतीतात्मक तथा अनागत काल के सभी रूपों में उकारात्मक प्रयोग होता है। यहाँ पर कर्ता की इच्छा अथवा कामना का कथन है। धातु के भाव-शब्द का अंतिम उकार, परिणामार्थक एकवचन अथवा बहुवचन में धातुवत होता है। अनागत के उदाहरण— **सु गछ़ि गछ़ुन** 'उस को जाना चाहिए'। **तिम गछ़न गछ़ुन्य** 'उन को जाना चाहिए'। **चु गछ़ख गछ़ुन** 'तुझे जाना चाहिए'। **तोह्य गछ़िव गछ़ुन्य** 'आप को जाना चाहिए'। **बु गछ़ गछ़ुन** 'मुझे जाना चाहिए'। **ॲस्य गछ़व ज़ेनुन्य** 'हम को जीतना चाहिए'। ये वाक्य इच्छार्थक हैं। अतीतात्मक के उदाहरण— **ताफ गौछ़ करुन** 'धूप होनी चाहिए (थी)' **कुल्य गॅछ़्य खसुन्य** 'पौधे अगने चाहिए (थे)'। **चु गछ़ुख गछ़ुन** 'तुझे जाना चाहिए (था)'। **तोह्य गछ़िव गछ़ुन्य** 'आप को जाना चाहिए (था)'। **बु गौछ़ुस गछ़ुन** 'मुझे जाना चाहिए (था)'। **ॲस्य गॅछ़्य बड़ुन्य** 'हम को बढ़ना चाहिए (था)'। ये वाक्य इच्छार्थक नहीं है। यहाँ अतीत काल में क्रिया सम्पन्न नहीं हुई। साधन पूर्ववत।

व्याख्या—

सूत्र में **गछ़** धातु की दोनों प्रक्रियाएँ परिभाषित हैं, अर्थात **गछ़** का मूल अर्थ 'जाना' तथा इस का विधिमूलक प्रकार्य। 'जाना' के अर्थ में **गछ़** नामधातु रूप में प्रयुक्त हुआ है, जिस को ईश्वर कौल धातु का भाव-शब्द कहते हैं। इसी नामधातु के अन्त में ग्रन्थकार उकार की संकल्पना करते हैं। पहले भी यह बात स्पष्ट की गई है कि वर्तमान में उक्त उकार उच्चारण के धरातल पर अव्याप्त है।

सभी कश्मीरी वाक्यों का संस्कृत अनुवाद ईश्वर कौल ने, कोष्ठकों में रखा है। अभिप्राय यह है कि अनुवाद सटीक नहीं है। अनागत उदाहरणों का अनुवाद लोट लकार में किया गया है, तथा अतीतात्मक वाक्यों का कृदन्तपरक। इच्छा अथवा कामना का अर्थ, मात्र अनागत वाक्यों में निर्दिष्ट है। आधुनिक भाषा प्रयोग में अतीतात्मक वाक्य भी कभी कभी इच्छा अथवा कामना का अर्थ सम्प्रेषित करता है। यथा— **पगाह गौछ़ ताफ करुन** 'कल (आने वाला) धूप खिलनी चाहिए'। **वन्य गॅछ़्य कुल्य खसुन्य** 'अब पौधे उगने चाहिएँ।' वाक्यों का अभिप्राय है, कि विगत समय में यह कार्य नहीं हुआ, परन्तु अब होना चाहिए। इसीलिए वाक्य अतीतात्मक है।

॥ भावकर्मणोरनी ॥ ५० ॥

धातोर्भावकर्मणोर्विषये अनी प्रत्ययो भवति ॥ करनी । करणीयम् ॥ पकनी । गमनीयम् ॥ वुपनी । वस्तेयम् ॥ दिनी । देयम् ॥ ह्यनी । क्रेयम् ॥ इः सर्वत्राकारागमो निदिग्विवर्जितात् (सू० ८।२।११) इत्यकारागमः । शेषं स्पष्टम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.1.50**

धातु के भाव कर्म विषय में **अनी** प्रत्यय संयुक्त होता है। **करनी** 'करना ही', **पकनी** 'चलना ही', **व्यथनी** 'उठना ही', **दिनी** 'देना ही', **ह्यनी** 'खरीदना ही'। 8.2.11 सूत्र के अनुसार अकारागम। शेष स्पष्ट है।

व्याख्या—

भाषा के अधिकांश नामधातु रूप **उन** प्रत्यय युक्त होते है। इस रूप के साथ **ई** की संयुक्ति क्रिया विषयक कार्य की अनिवार्यता व्यक्त करती है। पुंलिंग एकवचन रूपों को छोड़ कर शेष सभी रूप इस ईकार को स्वीकार करते हैं। पुंलिंग एकवचन में **उय** संयुक्त होता है। **ई** संयुक्त होने पर उकार के लोप का विकल्प है। **वुछुन+उय→वुछुनुय/वुछनुय, हावुन+उय→हावुनुय/हावनुय, वुछुन+ई→वुछनी**। पुंलिंग एकवचनः— **नाटक छु वुछुनुय** 'नाटक देखना ही है'। अन्य रूप— **फिलिमु छि वुछनी** 'फिलिमें देखनी ही है' (स्त्रीलिंग बहुवचन)। **नाटक छि वुछनी** 'नाटक देखने ही हैं' (पुंलिंग बहुवचन)।

स्पष्टीकरण में **पकुन** 'चलना' **व्यथुन** 'उठान' इन दो अकर्मक क्रियाओं के उदाहरण भी हैं। इन दो अकर्मक क्रियाओं के साथ भी **ई** संयुक्त किया गया है। वाक्य में प्रयोग है— **यिमु वतु छि पकनी** 'ये रास्ते चलने ही हैं'। **यिमु कथु**

॥ नञो ऽर्थे धातोरनय् ॥ ५१ ॥

धातोः नञ्शब्दस्य अभावस्यार्थे वाच्ये अनय् भवति स चाव्ययम् ॥ करनय् । अकृतम् ॥ गरनय् । अघट्टितम् ॥ परनय् । अपठितम् ॥ पोठनय् । अपुष्टम् ॥ दिनय् । अदत्तम् ॥ ह्यनय् । अक्रीतम् ॥ साधनं सुगमम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.1.51**

धातु के निषेध अर्थात अभाव अर्थ के लिए **अनय** संयुक्त होता है। यह अव्यय है। **करुनय** 'बिना किए', **गरुनय** 'बिना गढ़े', **परुनय** 'बिना पढ़े', **पोठुनय** 'बिना पुष्ट हुए'। **दिनय** 'बिना दिए', **ह्यनय** 'बिना खरीदे'। साधन सुगम है।

व्याख्या—

9.1.5 सूत्र में **इथ** प्रत्यय की व्याख्या है। **इथ** संयुक्त होने पर क्रिया का कार्य संपन्न माना जाता है। इस के विपरीत **नय** संयुक्त होने से क्रिया का कार्य संपन्न न होना सिद्ध है। यथा— **बुलबुल शोंग परिथ** 'बुलबुल पढ़ कर सोया'। **बुलबुल शोंग परनय** 'बुलबुल बिना पढ़े सोया'।

इति

शारदा क्षेत्र के भाषा व्याकरण में कश्मीरशब्दामृतम्

की कृदन्त प्रक्रिया का कृत्क्रियादिपाद-प्रथम 9.1

कृदन्त प्रक्रिया 9
भावपाद 2

॥ भावे ॥ १ ॥

इतः परं ये वक्ष्यमाणाः प्रत्ययास्ते सर्वे भावे विज्ञेयाः ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.2.1**

आगे वर्णित सभी प्रत्यय भाव प्रत्यय मानने चाहिए।

व्याख्या—

यह भावपाद का अधिकार सूत्र है। ईश्वर कौल धातु के भाव-शब्द का प्रयोग नामधातु के लिए करते हैं। पूर्व पाद में भी इस कथन का उल्लेख है।

॥ पुंस्युन् ॥ २ ॥

धातोर्भावे उन् प्रत्ययो भवति स च पुंलिङ्गे वर्तते ॥ करुन् । करणम् ॥ परुन् । पठनम् ॥ द्युन् । दानम् ॥ असुंन् । हसनम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.2.2**

भाव के लिए धातु के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। व्युत्पन्न रूप का प्रयोग पुंलिंग में होता है। **करुन** 'करना', **परुन** 'पढ़ना', **द्युन** 'देना', **असुन** 'हँसना'।

व्याख्या—

धातुपाठ में इस बात का उल्लेख है, कि **उन** प्रत्यय युक्त मूल-धातु, नामधातु कहलाता है। ग्रन्थकार मूलधातु को ही धातु से अभिहित करते हैं। ऊपर लिखित नामधातुओं के संस्कृत अनुवाद भाववाचक कृदन्तरूप में प्रस्तुत हैं यथा— **करुन** 'करणम्', **परुन** 'पठनं' आदि। कश्मीरी शब्द पुंलिंग एकवचन रूप हैं, और यही नामधातु है।

॥ अंनु [उनु] वा ॥ ३ ॥

धातोर्भावविषये अंनु प्रत्ययो वा विकल्पेन भवति:सो ऽपि पुंलिङ्गे ॥ च़रंनु। उपचयनम् ॥ जुवंनु। जीवनम् ॥ [अंनु प्रत्ययस्थाने उनु प्रत्ययव्यवहारो दृश्यते। यथा ९।१ सूत्रेषु २२,२३,४१,४२ इत्यादिषु]॥ पक्षे। च़रुन्। जुवुन। इति स्वरूपे स्तः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.3

पुंलिंग में विकल्प से धातु के भाव विषय में **ऑन** प्रत्यय भी हो सकता है। **च़रॉन** 'बीनना', **जुवॉन** 'जीना'। **ऑन** प्रत्यय के स्थान पर **उन** प्रत्यय का व्यवहार पूर्व पाद के– 22, 23, 41, 42 इत्यादि सूत्रों में देख सकते हैं। विकल्प में **च़रुन** और **जुवुन** रूप भी हैं।

व्याख्या—

आजकल के भाषा व्यवहार में उक्त उदाहरणों के लिए **ऑन** प्रत्यय अव्याप्त है। 'बीनने' के अर्थ में **चारुन** का व्यवहार है, **च़रुन** का नहीं।

॥ तलबज़ोर्यागमो वा ॥ ४ ॥

तल स्नेहपाके। बज़् सेवायां स्नेहने च। इत्यनयोः उन् प्रत्यये परे विकल्पेन यकारागमो भवति। तत्र बजः स्नेहन एव ॥ तल्युन्। स्नेहपाकः ॥ बज़्युन्। स्नेहपाकः ॥ पक्षे। तलुन्। बज़ुन् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.4

तल 'तल', **बज़** 'बघार' इन दो शब्दों में **उन** प्रत्यय के पूर्व विकल्प से यकारागम होता है। **तल्युन** 'तलना', **बज़्युन** 'बघारना'। विकल्प में **तलुन, बज़ुन**।

व्याख्या—

यहाँ पर यकारागम की सहायता से भाववाचक संज्ञा व्युत्पन्न होती है। नामधातु के रूप में **तलुन** 'तलना', तथा **बज़ुन** 'बघारना' रूप ही स्वीकार्य है। भाववाचक संज्ञा रूप को अगले सूत्र में और स्पष्ट किया जाएगा।

॥ मषश्च़ रव् ॥ ५ ॥

म़ष विस्मरणे इत्यस्य भावे रव् प्रत्ययो भवति ॥ मष्रव्। विस्मरणम् ॥ पक्षे। म़षुन् ॥

अनुवाद–   सूत्र 9.2.5

मश (मष) 'भूल' के साथ भाव रूप में विकल्प से, **रब** प्रत्यय संयुक्त होता है। – **मशरब** 'भूलना', विकल्प से **मशुन**।

व्याख्या–

मशरब शब्द भाषा में भाववाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है। यथा– **तमिस छु मशरब्** 'वह भुलक्कड़ है।' हिन्दी वाक्य कश्मीरी का यथावत अनुवाद नहीं है। कश्मीरी वाक्य में सर्वनाम **सु** 'वह' के साथ कर्मकारक विभक्ति संयुक्त हो कर **तमिस** रूप व्युत्पन्न होता है। हिन्दी वाक्य में सर्वनाम अविकारी रूप **वह** है, विकारी **उस** नहीं। 'भुलक्कड़' **मशरब्** का पर्याय भी नहीं है। 'भुलक्कड़' विशेषण है, और **मशरब्** संज्ञा। **मशरब्** का प्रयोग रोग के रूप में किया जाता है। हिन्दी में भी यदि किसी शब्द का रोग के रूप में प्रयोग होगा, तो कर्ता कारक विभक्ति युक्त होगा। यथा– 'उस को बुखार है'।

कश्मीरी में नामधातु रूप **मशुन** ही है और **मशरब्** भाववाचक संज्ञा।

॥ द्वद़रज़्वज़रस्वसरां च उ् ॥ ६ ॥

द्वदर जीर्णीभवने । ज़्वज़र जर्जरत्वे । स्वसर काष्ठादिजीर्णने । इत्येषां भावे उ् प्रत्ययश्च स्यात् ॥ द्वदुर् । जीर्णनम् ॥ ज़्वज़ुर् । जीर्णनम् ॥ स्वसुर् । जीर्णनम् ॥ पक्षे । द्वदरुन् । ज़्वज़रुन् । स्वसरुन् ॥

अनुवाद–   सूत्र 9.2.6

द्वदर 'जर्जरित हो', **ज़्वज़र** 'जर्जरित हो', **स्वसर** 'जर्जरित हो' भाव रूप में इन शब्दों के साथ विकल्प में, **उ** प्रत्यय संयुक्त होता है। **द्वदुर, ज़्वज़ुर, स्वसुर** विकल्प में **द्वदुरुन, ज़्वज़ुरुन, स्वसुरुन**।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में भी यही स्थिति है। **द्वदुर, ज़्वज़ुर** और **स्वसुर** भाववाचक संज्ञाएँ हैं, नामधातु नहीं। दूसरी बात यह है, कि प्रत्यय का **उ** संकल्पनात्मक स्वर है। जिस का कार्य है उपधा के अकार को उकार में रूपांतरित करना, तत्पश्चात लुप्त होना। इसीलिए **द्वदर** आदि के रूपों में उपधा का अकार **उ** बन जाता है और व्युत्पन्न रूप **द्वदुर** आदि हो जाते हैं। यहाँ पर भी नामधातु रूप **द्वदुरुन, ज़्वज़ुरुन** और **स्वसुरुन** ही है।

॥ छ्रम्बज़्वसबगारव्यहलमलोसवुनाम ऽच ॥७॥

छ्रम्ब कणमर्दने । ज़्वस कासे । बगार भ्रक्षणे । व्यह उपवेशने । मल

आकर्षणे । लोस श्रमे । बुन दैवानार्जवे । एषां भावे अ प्रत्ययश्च भवति ॥ छ्वम्ब । मर्दनम् ॥ ज़्वस । कासः ॥ बगार । भ्रक्षणम् ॥ ब्यह । आसनम् ॥ लम । आकर्षणम् ॥ लोस । श्रमः ॥ बुन [। दौर्भाग्यम्] ॥ पक्षे । छ्वम्बुन् । इत्यादयो भवन्ति ॥

अनुवाद–

सूत्र 9.2.7

छ्वम्ब 'फटक', **ज़्वस** 'खाँस', **बगार** 'बगार', **ब्यह** 'बैठ', **लम** 'खींच', **लोस** 'थक', **बुन** 'संतप्त हो'। भाव रूप में इन शब्दों के साथ विकल्प से **अ** प्रत्यय संयुक्त होता है। **छ्वम्ब, ज़्वस, बगार, ब्यह, लम, लोस, बुन** विकल्प से **छ्वम्बुन** आदि।

व्याख्या–

अ प्रत्यय युक्त रूप मूल धातुओं के समान ही हैं। इन का प्रयोग भाववाचक संज्ञा के रूप में प्रचलित नहीं है। इन के नामधातु रूप **छ्वम्बुन, ज़्वसुन, बगारुन, ब्युहुन, लमुन, लोसुन** और **बुनुन** ही हैं।

॥ लदश्चाव् वेतनेऽपि ॥ ८ ॥

लद वस्तुप्रेषणे गृहादिनिर्माणोर्ध्वान्तरीकरणयोः सूत्रादिकर्मणि च इत्यस्य भावे आव् प्रत्ययश्च भवति ॥ तद्वेतनेऽपि गृहादिनिर्माण एव बोध्यम् । इतर-योस्तु गौणतया ॥ लदाव् । [गृहादि] निर्माणम् । तद्वेतनं च ॥

अनुवाद–

सूत्र 9.2.8

लद 'ठूँस' '(गृह) निर्माण कर' भाव रूप में इस शब्द के साथ विकल्प से, **आव** प्रत्यय संयुक्त होता है। निर्माणकर्ता का वेतन भी अभिप्रेय है। अन्य अर्थो में गौण। **लदाव** 'गृहनिर्माण' तथा 'निर्माणकर्ता का वेतन'।

व्याख्या–

लदाव का अर्थ निर्माणाधीन गृह सम्पदा नहीं है। इस का अर्थ है निर्माण का कार्य। दूसरा अर्थ है निर्माण कार्य सम्पन्न करने वालों को दी जाने वाली मज़दूरी। इस रूप में **लदाव** भी भाववाचक संज्ञा है। यहाँ भी नामधातु रूप **उन** प्रत्यय युक्त अर्थात **लदुन** ही है।

॥ छ्वकवछ्वकटकटुकट्वकठुकत्रुकथकपाकवफुकफूक ब्रकामुंल्लोपो वा ॥ ९ ॥

छ्वकव जलावगाहने। छ्वक वाङ्नैर्बल्ये। टक शब्दवदन्तैश्छेदने। टुक आखुवच्छेदे। ट्वकव कूटाद्याघाते। ठुक उत्खनने। त्रुक कणशश्छेदने भक्षणे च। थक श्रमे। पाकव पचने। फुक अङ्गारप्रदीपने। ब्रक दंष्ट्राघाते। एषां भावे उन् प्रत्ययस्य लोपो वा भवति ॥ तत्र छ्वको दाहवैदग्ध्ययोः। टकश्छेदन एव। ट्वकवछ्वकवपाकवानामन्त्यस्वरादिलोपः॥ फुकः फूत्कारे उपधाया वत्वमिष्यते ॥ छ्वख्। जलशोधना ॥ छ्वख्। दाहः वैदग्ध्यं वा ॥ टख्। छेदः ॥ टुख्। छिद्रवच्छेदः ॥ ट्वख्। मृगादिहननम् ॥ ठुख्। उत्खननम् ॥ त्रुख्। कणभक्षणं छेदनं वा ॥ थख्। श्रमः ॥ पाख्। पाकः ॥ फुख्। अङ्गारप्रदीपनम् ॥ फ्वख्। फूत्कारः ॥ ब्रख्। आघातः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.9

छ्वकव 'खंगाल', छ्वक 'निर्बल हो (वाणी से)', टक 'पीस (दाँतों से)' टुक 'कुतर (चूहे द्वारा)'। ट्वक 'पीस (दाँतों से), ठुक 'ठोक', त्रुक 'चबा' थक 'थक' पाकव 'पका' फुक 'फूँक से जला'। ब्रक 'तोड़ (दांतों से)'। इन शब्दों के भाव रूपों में उन प्रत्यय का लोप, विकल्प से, होता है। यहाँ छ्वक का अर्थ झुलसना भी है, और टक का अर्थ छेद भी। ट्वकव, छ्वकव और पाकव के आदि स्वर का लोप। फुक के उपधा के स्वर का वत्व होता है।

छ्वक 'खंगाल (संज्ञा रूप), छ्वख 'झुलसना', टख 'छेद', टुख 'छोटे छोटे छेद', ट्वख 'टूटन (माला का), ठुख 'आवाज (ठोकने की)', त्रुख 'चबाने की आवाज', थख 'थकान', पाख 'उबाल (संज्ञा रूप)', फुख 'फूँक', फ्वख 'फूँक', ब्रख 'तोड़'।

व्याख्या—

ककारान्त इन धातु रूपों की भाववाचक संज्ञा खकारान्त हो जाती है, अर्थात अल्पप्राण महाप्राण में रूपांतरित हो जाता है। नामधातु रूप में यह रूपांतरण नहीं होता। मूलधातु के साथ मात्र उन प्रत्यय संयुक्त हो जाता है। यथा— छ्वकुन 'खंगालना', ठुकुन 'ठोकना', ब्रकुन 'तोड़ना'।

॥ द्वगरङ्गसगां गात् ॥ १० ॥

द्वगव अवखण्डने । रङ्ग रञ्जने । सगव वृक्षादिसिञ्चने । गकारान्तेषु एषां धातूनां भावे उन् प्रत्ययस्य विकल्पेन लोपो भवति । द्वगवसगवयोर्मूलधातू अनुपलब्धावपि कारितोत्पन्नो व प्रत्ययो ऽनुमीयते । अतः द्वकत्रधातुवदत्रापि अन्त्यस्वरादिलोपे गान्तेषु पठितौ ॥ द्वग् । खण्डनम् ॥ रङ्ग् । रागः ॥ सग् । सेकः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.10

द्वगव 'कूट', **रंग** 'रंग', **सगव** 'सींच'। इन गकारान्त धातुओं में भी भाव रूप के लिए, विकल्प से, **उन** प्रत्यय का लोप होता है। **द्वग** और **सग** उपलब्ध धातु रूप न होने के कारण इन के साथ **व** प्रत्यय की संकल्पना की जाती है। यहाँ भी अन्त्य स्वर का लोप है। **द्वग** 'ठोक (संज्ञा रूप) **रंग** 'रंग' **सग** 'सिंचाई'।

व्याख्या—

गकारान्त धातु रूपों की भाववाचक संज्ञा में गकार महाप्राण में रूपांतरित नहीं होता, क्योंकि भाषा में घोष-महाप्राण ध्वनियाँ उपलब्ध नहीं हैं। नामधातु रूपों में यहाँ पर भी **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा— **द्वगुन** 'कूटना', **रंगुन** 'रंगना', **सगुन** 'सींचना'।

द्वग और **सग** में वकारागम का व्यवहार व्यापक नहीं है। ये दोनों मूलधातु के रूप में स्वीकार्य हैं।

॥ वाँच्श्यात् ॥ ११ ॥

अप्रसिद्धचवर्गान्तेषु धातुषु वाँच्च वञ्चने इत्यस्य धातोर्भावे उन् प्रत्ययस्य लोपो वा भवति ॥ वाँछ् । वञ्चनम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.11

अप्रसिद्ध च़वर्गान्त धातु **वाँच़** 'वंचित हो' के साथ भी **उन** प्रत्यय का लोप, विकल्प से, होता है। **वाँछ़** 'वंचित'।

व्याख्या—

भाववाचक संज्ञा रूप में **च़** का **छ़** रूपांतरण है। नामधातु रूप में धातु के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होगा। यथा— **वाँछ़ुन** 'वंचित होना'। वर्तमान भाषा व्यवहार में यह धातु व्यापक नहीं है।

॥ चेटलूटवाटां टात् ॥ १२ ॥

टकारान्तेषु धातुषु । चेटकुट्टने । लूट लुण्ठने । वाट संधापने । इत्येषां भावे उन् प्रत्ययस्य लोपो वा भवति ॥ चेद् । कुट्टनम् ॥ लूद् । लुण्ठनम् ॥ वाद् । संधिः ॥

अनुवाद— सूत्र **9.2.12**

चेट 'कूट', **लूट** 'लूट' **वाट** 'जोड़':— टकारान्त धातुओं में भी भाव रूप के लिए **उन** प्रत्यय का, विकल्प से, लोप हो जाता है। **चेठ** 'चोट' **लूठ** 'लूट' **वाठ** 'जोड़'।

व्याख्या—

भाववाचक संज्ञा रूपों में टकार महाप्राण में परिवर्तित होता है, अर्थात ठकार बन जाता है। नामधातु रूप के लिए **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है, तथा टकार का ठकार नहीं होता। यथा— **चेटुन** 'कूटना', **लूटुन** 'लूटना' **वाटुन** 'जोड़ना'।

॥ गण्डो डात् ॥ १३ ॥

डकारान्तेषु । गण्ड ग्रन्थे । इत्यस्य भावे उन् प्रत्ययस्य लोपो वा भवति ॥ गंड् । ग्रन्थिः ॥

अनुवाद— सूत्र **9.2.13**

गंड 'बाँध' डकारान्त धातु के भाव रूप में भी विकल्प से **उन** प्रत्यय का लोप है। **गंड** 'गाँठ'।

व्याख्या—

भाववाचक संज्ञा रूप में **गंड** 'बाँध' ही रहता है, और इस का अर्थ 'गाँठ' हो जाता है। भाषा में घोष-महाप्राण ध्वनियों की अव्याप्ति के कारण डकार का रूपांतरण नहीं होता। नामधातु रूपों में **उन** की संयुक्ति अनिवार्य है। यथा— **गंडुन** 'बाँधना'।

॥ खनछ्यनोनात् ॥ १४ ॥

नकारान्तेषु । खन अवदारणे । छ्यन छेदे । इत्यनयोर्भावे उन् प्रत्ययस्य लोपो वा भवति ॥ खन् । खातः ॥ छ्यन् । छेदः ॥

अनुवाद–   सूत्र 9.2.14

खन 'खोद' **छ्यन** 'फट' नकारान्त धातु के भाव रूप में भी, विकल्प से, **उन** प्रत्यय का लोप है। **खन** 'खुदाई' **छ्यन** 'विच्छेद'।

व्याख्या–

खन और **छ्यन** धातुओ का भाववाचक संज्ञा रूप यथावत रहता है। नामधातु के लिए **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **खनुन** 'खोदना' **छ्यनुन** 'फटना'।

॥ कांम्पकृपचापज़पटपां पात् ॥ १५ ॥

पकारान्तेषु । कांम्प कम्पने । कृप कर्तने । चाप अदने । ज़प जपने । टप परोक्षपरिभाषणे । एषां धातूनां भावे उन् प्रत्ययस्य लोपो वा भवति । टपः अश्वाघाते कार्यघाते च ॥ कांम्फ् । कम्पः ॥ कृफ् । कृन्तनम् ॥ चाफ् । अद-नम् ॥ ज़फ् । जपः ॥ टफ् । अश्वपादादिप्रहारादि ॥

अनुवाद–   सूत्र 9.2.15

कॉँप 'काँप' **क्रुप** (**कृप**) 'काट' **चाप** 'चबा' **ज़प** 'जप' **टप** 'बता (पीठ पीछे)' इन पकारान्त धातुओं के भाव रूप में भी, विकल्प से **उन** प्रत्यय का लोप है। घोड़े के पदप्रहार अथवा कार्य-विघ्न के लिए भी **टप** का प्रयोग होता है। **कॉँफ** 'कंपन, **कृफ** 'काट', **चाफ** 'चबाना', **ज़फ** 'जाप' **टफ** 'घोड़े आदि का पदप्रहार'।

व्याख्या–

भाववाचक संज्ञा रूप में शब्दान्त का पकार फकार में बदलता है अर्थात महाप्राण बन जाता है। नाम धातु रूप के लिए **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। परन्तु पकार का फकार नहीं होता। यथा– **कॉँपुन** 'काँपना', **क्रुपुन** 'काटना', **चापुन** 'चबाना', **ज़पुन** 'जपना', **टपुन** 'टापना'।

॥ ब्रमो मात् ॥ १६ ॥

ब्रम भ्रान्तौ । इत्यस्य मकारान्तेषु धातुषु भावे उन् प्रत्ययस्य लोपो वा भवति ॥ ब्रम् । भ्रान्तिः ॥

अनुवाद–   सूत्र 9.2.16

ब्रम 'भ्रमित हो' इस प्रकार के मकारान्त धातुओं के भाव रूप में भी,

विकल्प से, उन प्रत्यय का लोप है। ब्रम 'भ्रान्ति'।

व्याख्या–

ब्रम 'भ्रमित हो' की भाववाचक संज्ञा भी ब्रम 'भ्रान्ति' ही है। नामधातु रूप के लिए उन की संयुक्ति अनिवार्य है। यथा– ब्रमुन 'भ्रमित होना।

॥ च्चारचीरतारफुकारफ्यारमारस्वरां रात् ॥१७॥

रकारान्तेषु धातुषु। चार बलाद्बन्धने। चीर निष्पीडने। तार तारणे। फुकार कोपालापे। फ्यार रसनिष्कासने। मार मारणे। स्वर. स्मरणे। इत्येषां भावे उन् प्रत्ययस्य लोपो वा भवति॥ फुकारः पाकभेदे च। स्वरश्चेष्टायां च॥ चार्। अतिबन्धनम्॥ चीर्। निष्पीडनम्॥ तार्। तारणम्॥ फुकार्। ऊष्मनिर्गमः॥ मार्। मारणम्॥ स्वर्। चेष्टा स्मृतिश्च॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.17

चार 'कस', **चीर** 'निचोड़', **तार** 'पार करा', **फुकार** 'फुंकार', **फ्यार** 'निथार', **मार** 'मार', **स्वर** 'स्मरण कर' इन रकारान्त धातुओं के भाव रूप में भी, विकल्प से, उन प्रत्यय का लोप है। पाक क्रिया में पात्र से गर्म हवा की फुकार तथा स्वर चेष्ठा में निकलने वाली भी **फुकार** है। **चार** 'कसावट', **चीर** 'निचोड़ना', **तार** 'पार कराना', **फुकार** 'फुँकार', **मार** 'मार (संज्ञा रूप)', **स्वर** 'सुध', 'स्मृति'।

व्याख्या–

रकारान्त धातुओं का भाववाचक संज्ञा रूप यथावत रहता है। नामधातु रूप के लिए **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **चारुन** 'कसना', **चीरुन** 'निचोड़ना', **तारुन** 'पार कराना', **फुकारुन** 'फुँकारना'। **फ्यारुन** 'निथारना', **मारुन** 'मारना', **स्वरुन** 'स्मरण करना'।

॥ च़्यलछ़लज़ुलतोलदलमेलां लात् ॥१८॥

लकारान्तेषु धातुषु। च़्यल बलात्प्रवेशने। छ़ल छलने। ज़ुल नखैस्त्वक्षणे। तोल तोलने। दल विदारणे। मेल संगमे। एषां धातूनां भावे उन् प्रत्ययस्य लोपो वा भवति॥ च़्यल्। बलात्प्रवेशः॥ छ़ल्। छलम्॥ ज़ुल्। नखक्षतम्॥ तोल्। तौल्यम्॥ दल्। अवखण्डनम्॥ मेल्। सङ्गः॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.18

च़्यल 'दबा', **छ़ल** 'छल कर', **ज़ुल** 'खुरच', **तोल** 'तोल', **दल** 'दल', **मेल**

'मिल' इन लकारान्त धातुओं के भाव रूप में भी **उन** प्रत्यय का लोप, विकल्प से होता है। **च़्यल** 'दबाव', **छ़ल** 'छल', **ज़ुल** 'खरोंच', **तोल** 'तोल (संज्ञा रूप)', **दल** 'दल (संज्ञा रूप)', **मेल** 'मिलन'।

व्याख्या–

इन सभी धातुओं के भाववाचक संज्ञा रूप यथावत रहते हैं। नामधातु रूप में **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **च़्यलुन** 'दबाना', **छ़लुन** 'छलना', **ज़ुलुन** 'खुरचना'। **तोलुन** 'तोलना', **दलुन** 'दलना', और **मेलुन** 'मिलना'।

॥ ज़ुवडुवतावव्वह्वां वात् ॥ १९ ॥

वकारान्तेषु। ज़ुव जीवने। डुव संमार्जने। ताव तापने। व्वह्व शापे। इत्येषां भावे उन् प्रत्ययस्य लोपो वा भवति ॥ ज़ुव्। जीवः ॥ डुव्। नाशः ॥ ताव्। तापः ॥ व्वह्व्। शापः ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.19

ज़ुव 'जीवित हो, जी' **डुव** 'बुहार', **ताव** 'तप्त कर', **व्वहव** 'गाली दे', इन वकारान्त धातुओं के भाव रूप में, विकल्प से, उन प्रत्यय का लोप होता है! **ज़ुव** 'जीवन', **डुव** 'विनाश', **ताव** 'ताप' **व्वहव** 'गाली'।

व्याख्या–

इन धातुओं के भी भाववाचक संज्ञा रूप यथावत रहते हैं। नामधातु रूप में **उन** प्रत्यय अनिवार्य होता है। **ज़ुवुन** 'जीना', **डुवुन** 'बुहारना', **तावुन** 'तापना', **वोहवुन** 'गाली देना'।

॥ रसह्सवोः सात् ॥ २० ॥

रस सरसीभवने। ह्सव श्वादिसूचनायाम्। इत्यनयोर्भावे उन् प्रत्ययस्य लोपो वा भवति॥ ह्सवो ऽत्रापि पूर्ववद्वकारलोप इष्यते॥ रस्। रसः॥ ह्स्। सचना॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.20

रस 'सरस हो', **हुसव** 'उकसा' इन दोनों धातुओं के भाव रूप में, विकल्प से, **उन** प्रत्यय का लोप है। **हुसव** के वकार का लोप पूर्वोक्त लोप के अनुसार ही है। **रस** 'रस', **हुस** 'उकसावा'।

व्याख्या–

भाववाचक संज्ञा रूप धातु रूप के समान ही रहते हैं। नामधातु रूपों में **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **रसुन** 'रसना', 'रुचिकर लगना', **हसुन** 'उकसाना'

॥ गृहः सकारो वा ॥ २१ ॥

गृह घर्षणे इत्यस्य भावे उन् प्रत्ययस्य लोपो वा भवति। धातोरन्त्यस्य च विकल्पेन सकारो भवति ॥ गृह्। घर्षणम् ॥ पक्षे। गस्। घर्षणम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.2.21**

गुह (गृह) 'घिस' धातु के भाव रूप में भी, विकल्प से, **उन** प्रत्यय का लोप होता है। धातु के अन्त का विकल्प से सकार भी हो जाता है। **गुह** 'घिसाव' विकल्प में **गस**।

व्याख्या–

गुह शब्द का भाववाचक संज्ञा रूप यथावत रहता है। विकल्प से हकार का सकार होने की अवस्था में उपधा के अुकार का अकार हो जाता है। नामधातु रूप में **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है, तथा हकार के सकार का विकल्प नहीं है। यथा– **गुहुन** 'घिसना'।

॥ चूह्श्च ॥ २२ ॥

चूह् चूषे इत्यस्य भावे उन्प्रत्ययस्य लोपो वा भवतिं ॥ चूह्। चूषणम् ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.2.22**

चुह 'चूस' धातु के भाव रूप में भी **उन** प्रत्यय का, विकल्प से, लोप होता है। **चुह** 'चुसकी'।

व्याख्या–

चुह का भाववाचक संज्ञा रूप **चुह** ही है। नामधातु रूप में **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **चुहुन** 'चूसना'।

॥ स्त्रियाम् ॥ २३ ॥

इत उत्तरं ये वक्ष्यमाणाः प्रत्ययास्ते स्त्रियां भावे विज्ञेयाः ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.2.23**

आगे जिन प्रत्ययों का वर्णन है, वे स्त्रीलिंग भाव रूप के हैं।

व्याख्या–

भाषा में सर्वत्र यह व्यवस्था है, कि स्त्रीलिंग रूप में वर्तुलाकार स्वर अवर्तुलाकार तथा अंतिम व्यंजन तालवीकृत हो जाता है। इसी नियम के आधार पर उन प्रत्यय अुन्य बन जाता है, जिस का वर्णन आगामी सूत्रों में प्रस्तुत है।

॥ चृरचुवमोरवमर्चृां नित्यमिञ् ॥ २४ ॥

चृर अन्तःकोपे। चुव कलहे। मोरव पीडासहने। मर्चृ अमर्षे। इत्येषां भावे नित्यम् इञ् प्रत्ययो भवति स च स्त्रियामेव ॥ चृरिञ्। अन्तःकोपः ॥ चुविञ्। कलहः ॥ मोरवूञ्। सहनम् ॥ मर्चूञ्। अमर्षणम् ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.24

चृर 'क्रुध हो', चुव 'झगड़', मोरव 'पीड़ा सह', मरुच़ (मर्च़) 'क्रुध हो', इन के साथ भाव रूप में अुन्य (इन्य) संयुक्त होता है। व्युत्पन्न रूप स्त्रीलिंग सिद्ध है। चृॅरिन्य 'कुढ़न', चुवुन्य 'कलह', मोरुवुन्य 'सहना', मरचुन्य 'कुढ़न'।

व्याख्या–

अुन्य प्रत्यय संयुक्त होने पर भाववाचक संज्ञा स्त्रीलिंग रूप में है। चृॅरिन्य पद में प्रत्यय का अुकार इकार में रूढ़ हो गया है। इस तथ्य को ग्रन्थकार ने अगले सूत्र में स्पष्ट किया है।

॥ मोरवमर्चृखुसफिचादिभ्य ऊदादेः ॥२५॥

मोरव पीडासहने। मर्चृ अमर्षे। इत्याभ्यां परस्य उत्तरसूत्रे वक्ष्यमाणफिचादिभ्यश्च इञ् प्रत्ययस्य आदिस्वरस्य ऊमात्रादेशो भवति ॥ मोरवूञ् [। सहनम्] ॥ मर्चूञ् [। अमर्षणम्] ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.25

मोरव 'पीड़ा सह', मरुच़ 'क्रुध हो', इत्यादि शब्दों, तथा उत्तर सूत्र में कहे गए फिच़ आदि में इन्य प्रत्यय के आदि स्वर का ऊमात्रादेश है। मोरवुन्य 'सहना' मरचुन्य 'कुढ़न'।

व्याख्या–

सूत्र इस तथ्य की पुष्टि करता है, कि स्त्रीलिंग रूपों में उन प्रत्यय अुन्य प्रत्यय में परिणत होता है। मोरवुन्य और मरचुन शब्दों का आधुनिक भाषा में अत्यन्त सीमित प्रयोग है।

॥ फिच़् [खुस] फुहफ्वशवज़ववुचा़ं वा ॥२६॥

फिच़ विस्मरणे । [खुस ततूरुहकर्षणे ।] फुह फ्वश अन्तःकोपे । वज़व सार्द्रीकरणे । वुच़ दग्धी भवने । इत्येषां भावे स्त्रियां विकल्पेन इञ् प्रत्ययो भवति ॥ फिच़ूञ् । कार्यविस्मृतिः ॥ [खुसूञ् । तनूरुह + + कर्षणम् ॥] फुहूञ् । अन्तःकोपः ॥ फ्वशूञ् । अन्तःकोपः ॥ वज़वूञ् [। सार्द्रीभावाय जलादौ स्थापनम्] ॥ वुच़ूञ् । दाहः [अत्रापि क्रोधेनैवान्तर्दाह इव संताप इत्यर्थः] ॥ पक्षे । फिच़ुन् । [खुसुन् ।] फुहुन् । फ्वशुन् । वज़वुन् । वुच़ुन् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.26

फिच़ 'भूल' खुस 'खुजा' फुह 'कुपित' फ्वश 'कुपित हो', वज़व 'भिगो' वुच़ 'दग्ध हो' इन स्त्रीलिंग भाव रूपों में विकल्प से **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। **फिचुन्य** 'भूलना', **खुसुन्य** 'खुजली', **फुहुन्य** 'कोप', **फ्वशिन्य** 'कोप', **वज़वुन्य** 'भिगोना', **वुचुन्य** 'दग्ध, जलन' (अर्थात क्रोध से संतप्त होना)' विकल्प में— **फिचुन, खुसुन, फुहुन, फ्वशुन, वज़वुन, वुचुन।**

व्याख्या—

यह विकल्प स्त्रीलिंग तथा पुंलिंग रूपों पर आधारित है। पुंलिंग रूप के लिए **उन** तथा स्त्रीलिंग रूप के लिए **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा—

पुंलिंग — **कोठ त्राव वज़वुन** 'कोट भिगोने (के लिए) डालो।

स्त्रीलिंग— **कमीज़ त्राव वज़वुन्य** 'कमीज़ भिगोने (के लिए) डालो।

॥ सारखुतटुवडुवडलत्रुकथ्यकनच़नटनमवुज़-वुठवुपां च ॥ २७ ॥

सार स्वारादिषु । खुत अन्तःखनने । टुव संकोचने । डुव संमार्जने । डल उल्लङ्घने । त्रुक भक्षणे । थ्यक श्लाघायाम् । नच़ नर्तने । नट कम्पे । नम नम्रीभावे । वुज़ जलादिव्यक्तीभावे । वुठ वेष्टने । वुप अन्तर्दाहे । इत्येषां भावे स्त्रियां विकल्पेन इञ् प्रत्ययो भवति ॥ सारिञ् । स्वारः ॥ खुतिञ् । अन्तःखननम् ॥ टुविञ् । संकोचः ॥ डुविञ् । संमार्जना ॥ डलिञ् । प्लवणम् ॥ त्रुकिञ् । कणभक्षणम् ॥ थ्यकिञ् । श्लाघा ॥ नच़िञ् । नर्तनम् नर्तकी च ॥ नटिञ् । कम्पः ॥ नमिञ् । नम्रता ॥ वुज़िञ् । जलादेराविर्भावः ॥ वुठिञ् ।

वेष्टनम् ॥ वुपिञ् । अन्तर्दाहः ॥ तत्र प्रसङ्गागतस्ताद्धितोक्तः अल्प्रत्ययश्चेञन्त-भावादेव व्यवह्रियते नान्यत इति धीमद्भिरवधार्यम् । तद्यथा । थ्यकिञल् । श्लाघी ॥ नटिञल् । कम्पवान् । इत्यादि ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.27

सार 'ढो' **खुत** 'नीचे खोद', **टुव** 'बंद कर, भाग' **डुव** 'बुहार', **डल** 'हट', **त्रुक** 'चबा, कुतर', **थ्यक** 'बघार (बातें)', **नच़** 'नाच', **नट** 'काँप', **नम** 'नम', **वुज़** 'उत्सित हो, जाग', **वुठ** 'बट', **वुप** 'संतप्त हो'। स्त्रीलिंग भाव रूप में इन के साथ विकल्प से **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। **सॉरिन्य** 'ढुलाई', **खुतिन्य** 'खुदाई', **टुवुन्य** 'बन्द करना, भागना' **डुविन्य** 'बुहारी', **डालिन्य** 'ढलान', **त्रुकिन्य** 'कुतरन', **थ्यकिन्य** 'बघारना', **नचिन्य** 'नर्तन', **नटिन्य** 'कंपन', **नॅमिन्य** 'नमन', **वुज़िन्य** 'अन्तर्वाणी', **वुठिन्य** 'बट', **वुपिन्य** 'संताप'। तद्धित प्रक्रिया में वर्णित **अल** प्रत्यय का प्रसंग से भाव रूप में भी व्यवहार है। यथा— **थ्यकिन्यल** 'बघारने वाली', **नटिन्यल** 'काँपने वाली' इत्यादि।

व्याख्या—

उपरोक्त अधिकांश शब्दों के स्त्रीलिंग रूपों में **इन्य** और **अुन्य** प्रत्यय का विकल्प है। **उन** संयुक्त होने पर व्युत्पन्न रूप नामधातु होता है। हिन्दी में इन सभी धातुओं के भाववाचक संज्ञा रूप संभव नहीं हैं, इसलिए कश्मीरी भाषा के भाववाचक संज्ञा रूप का अनुवाद नामधातु रूप में ही दिया गया है। यथा— **टुवुन्य** 'बन्द करना, भागना'।

॥ लिवल्यवोश्च ॥ २८ ॥

लिव लेपने । ल्यव लेहने । इत्यनयोर्भावे स्त्रियां विकल्पेन इञ् प्रत्ययो भवति ॥ लिविञ् । लेपनम् ॥ ल्यविञ् । लेहनम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.28

लिव 'लीप', **ल्यव** 'चाट' स्त्रीलिंग भाव रूप में इन दोनों के साथ विकल्प से **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। **लिविन्य** 'लेपन', **ल्यविन्य** 'चाटना'।

व्याख्या—

स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा रूप में **लिविन्य** का प्रयोग आधुनिक भाषा में सीमित है, परन्तु **ल्यविन्य** का प्रयोग व्यापक है। नामधातु रूप में दोनों के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा— **लिवुन** 'लीपना', **ल्यवुन** 'चाटना'। कर्म स्त्रीलिंग होने की अवस्था में **उन**, **अुन्य** में परिणत होता है। यथा—

पुंलिंग – **कुठ छु लिवुन** 'कमरा लीपना है'।
स्त्रीलिंग – **दॉर छि लिवुन्य** 'खिड़की लीपनी है'।

॥ लिवो वस्य पश्च ॥ २९ ॥

लिव लेपने। इत्यस्य वकारस्य पकारश्च भवति ॥ लिपिन्। लेपनम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.29

लिव 'लीप' इस के वकार का पकार होता है। **लिपिन्य** 'लेपन'।

व्याख्या—

आधुनिक भाषा प्रयोग में **लिपिन्य** का, इस अर्थ में, व्यवहार नहीं है। चुपके से भागना के अर्थ में प्रयुक्त हो सकता है। यथा – **तॅम्य थॅव लिपिन्य** 'वह चुपके से भाग गया'। यहाँ **लिपुर** का प्रयोग भी संभव है।

॥ करो लेपकायुधे ॥ ३० ॥

कर करणे। इत्यस्य लेपकायुधे गम्यमाने स्त्रियाम् इन्‌ प्रत्ययो भवति ॥ करिन्। लेपकायुधः ॥ भावे करुन् इति पुंलिङ्गमेव भवतिं ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.30

लीपने का आयुध बोध कराने की अवस्था में, **कर** 'कर' के साथ स्त्रीलिंग प्रत्यय **इन्य** संयुक्त होता है। **करिन्य** 'करनी'। भाववाचक रूप **करुन** पुंलिंग है।

व्याख्या—

राज-मिस्त्री का आयुध **करिन्य** 'करनी' कहलाता है। इस की सहायता से मिस्त्री सीमेंट लगाने का कार्य करता है। लीपने के कार्य में **करिन्य** का उपयोग नहीं होता। **करुन** नामधातु रूप है, जिस का स्त्रीलिंग **करुन्य** सिद्ध है।

॥ वटः संग्रहे ॥ ३१ ॥

वट वेष्टने। इत्यस्य संग्रहार्थे स्त्रियाम् इन्‌ प्रत्ययो भवति ॥ वटिन्। संग्रहः॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.31

वट 'लपेट' संग्रह के अर्थ में इस के साथ स्त्रीलिंग में **इन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। **वटिन्य** 'संग्रहीत (धन)।

व्याख्या–

ल्यविन्य की भाँति **वॅटिन्य** भी ऐसा ही स्त्रीलिंग भावरूप है, जिस का **इन्य** प्रत्यय, नामधातु प्रत्यय **उन** से सम्बद्ध नहीं है। **वॅटिन्य** ऐसा संग्रहीत धन है, जो गोपनीय रहता है। नामधातु रूप में **वटुन** 'लपेटना' ही है।

॥ फरश्चौरिण्याम् ॥ ३२ ॥

फर स्तेये । इत्यस्य चौरिण्या अर्थे स्त्रियाम् इञ् प्रत्ययो भवति ॥ फरिञ् । चौरिणी ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.32

फर 'टटोल (चुराने के आशय से)', चुराने के अर्थ में स्त्रीलिंग प्रत्यय **इन्य** संयुक्त होता है। **फरिन्य** 'चुराने की दृष्टि से टटोलना'।

व्याख्या–

पूर्व सूत्र की भांति, प्रस्तुत **इन्य** प्रत्यय भी स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा व्युत्पन्न करता है। **फरिन्य** इसी रूप का उदाहरण है। नामधातु रूप **फरुन** 'टटोलना (चुराने के आशय से)' सिद्ध है।

॥ च्वकतपलङ्गामिश् ॥ ३३ ॥

च्वक क्रोधे ऽम्लीभवने च । तप औष्ण्योपादाने । लङ्ग पङ्गवीभवने । इत्येषां भावे स्त्रियाम् इश् प्रत्ययो भवति । च्वकिश् । क्रोधः ॥ तपिश् । तापः ॥ लङ्गिश् । पङ्गुता ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.33

च़्वक 'खट्टा हो' **तप** 'तप' **लंग** 'लंगड़ा हो' स्त्रीलिंग भाव रूप में इन के साथ **इश** प्रत्यय संयुक्त होता है। **च़ोकिश (च़्वकिश)** 'खट्टापन', **तपिश** 'तपन', **लंगिश** 'लंगड़ापन'।

व्याख्या–

च़्वक, तप और **लंग** इन तीन धातु रूपों के साथ **इन्य** के स्थान पर **इश** प्रत्यय संयुक्त होने से समानान्तर स्त्री भाव रूप प्राप्त होता है। नामधातु रूप के लिए **उन** प्रत्यय की संयुक्ति ही सिद्ध है। यथा– **च़्वकुन** 'खट्टा होना' **तपुन** 'तपना' **लंगुन** 'लंगडाना'।

॥ मिळ्वो ऽन्त्यस्य मश्च ॥ ३४ ॥

मिळव संयोजने इत्यस्य भावे इश् प्रत्ययो भवति। अन्त्याक्षरस्य च मकारो भवति ॥ मिळमिश्। संयोगः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.34

मिलव 'मिला' इस के भाव रूप में **इश** प्रत्यय संयुक्त होता है, तथा अन्त्याक्षर का मकार। **मिलमिश** 'मिला जुला'।

व्याख्या—

मिलमिश शब्द का व्यवहार व्यापक नहीं है। नामधातु रूप के लिए **मिलव** के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा— **मिलवुन** 'मिलाना', हालाँकि इस का वर्तमान प्रयोग भी व्यापक नहीं है।

॥ कपटद्ननह्वावपिळफिरमाज़मिळ्वमुच़रमूर-ल्यववुठवुह्वामन् ॥ ३५ ॥

कपट कृन्तने। दुन दुनव वस्त्रादिरजोपहरणे। नहाव क्रियाघाते। पिळ प्राप्तौ। फिर पुस्तकादिपरिवर्तने। माज़ तत्परतायां शोधने च। मिळव संयोजने। मुच़र उद्घाटने। मूर त्वचो निष्कर्षे। ल्यव लेहने। वुठ वेष्टने। वुह अनिर्वाणे। इत्येषां भावे स्त्रियाम् अन् प्रत्ययो वा भवति ॥ कपटन्। कृन्तनम् ॥ दुनन्। [वस्त्रादेः] रजोपहरणार्थं कम्पनम् ॥ नहावन्। क्रियाघातः ॥ पिळन्। प्राप्तिः ॥ फिरन्। परिवर्तनम् ॥ माज़न्। शोधना। सा तु धान्यादिक एव व्यवह्रियते ॥ मिळवन्। संयोजना ॥ मुच़रन्। उद्घाटनम् ॥ मूरन्। त्वङ्निष्कर्षणम् ॥ ल्यवन्। लेहः ॥ वुठन्। वेष्टनम् ॥ वुहन्। अनिर्वाणः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.35

कपट 'काट', **दुन** 'झाड़', **नहाव** 'मिटा', **पिल** 'पकड़', **फिर** 'पलट', **माज़** 'शुद्ध कर', **मिलव** 'मिला', **मुच़र** 'खोल', **मूर** 'मरोड़', **ल्यव** 'चाट' **वुठ** 'बट', **वुह** 'आतप्त हो'। स्त्रीलिंग भाव रूप में इन के सथ विकल्प में, **अन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **कपटन** 'काट (दर्ज़ी की)', **दुनन** 'झाड़ना', **नहावन** 'मिटाना', **पिलन** 'पहुँच', **फिरन** 'पलटी', **माज़न** 'शोधन', **मिलवन** 'मेलजोल', **मुच़रन** 'उद्घाटन', **मूरन** 'मरोड़ना', **ल्यवन** 'चाटना', **वुठन** 'बटना', **वुहन** 'जलाव'।

व्याख्या–

मूल धातु के साथ **अन** अथवा **न** संयुक्त होने से स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा रूप व्युत्पन्न होता है, (यदि मूल धातु हलन्त माना जाए तो **अन** अन्यथा न) 'चाटने' के लिए **ल्यवन** रूप का व्यवहार आजकल सीमित है। **ल्यविन्य** व्यापक है। इन सभी के नामधातु रूप **उन** प्रत्यय संयुक्त होने से ही प्राप्त होते हैं। यथा– **कपटुन** 'काटना', **दुनुन** 'झाड़ना', **नहावुन** 'मिटाना', **पिलुन** 'पकड़ना, पहुँचना', **फिरुन** 'पलटना', **माजुन** 'शुद्ध करना', **मिलवुन** 'मिलाना', **मुच़रुन** 'खोलना', **मूरुन** 'मरोड़ना', **ल्यवुन** 'चाटना', **वुठुन** 'बटना', **वुहुन** 'आतप्त होना, जलना'। वर्तमान में **माजुन** के स्थान पर **माँजुन** अधिक स्वीकार्य है।

॥ गिलवश्चेष्टार्थे ऽन्त्यलोपश्च ॥ ३६ ॥

गिलव भ्रामणे। इत्यस्य चेष्टाया अर्थे अन् प्रत्ययो भवति अन्त्याक्षरस्य च लोपो भवति ॥ गिलन्। चेष्टा ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.2.36**

गिलव 'घुमा' चेष्टा के अर्थ में **अन** प्रत्यय संयुक्त होने पर अन्तिम अक्षर का लोप होता है। **गिलन** 'चेष्टा'।

व्याख्या–

आधुनिक भाषा व्यवहार में अप्रिय चेष्टा के लिए **गिलन** शब्द का व्यवहार किया जाता है। **गिलव** का नामधातु रूप **गिलवुन** सिद्ध है।

॥ आंड्रखण्ड्रछ्वंट्रजीठ्रट्वंट्रपीठ्रफुट्रबंड्रवांग्रम्वंट्रवोवूरां च ॥ ३७ ॥

आंद्र मिश्रणे। खण्द्र विभाजने। छ्वंद्र ह्रस्वीकरणे। जीद्र दीर्घीकरणे। ट्वंद्र वृत्तिसंकोचे। पीद्र सशिक्षं प्रतिक्षेपणे। फुद्र भञ्जने। बंद्र वर्धने। वांग्र विभाजने। म्वंद्र घनीकरणे। वोवूर धातूनां तक्षणे। इत्येषां भावे अन् प्रत्ययो भवति ॥ आंद्रन्। मिश्रणम् ॥ खण्द्रन्। खण्डना ॥ छ्वंद्रन्। संक्षेपता ॥ जीद्रन्। विस्तारः ॥ ट्वंद्रन्। वृत्तिसंकोचः ॥ पीद्रन्। सशिक्षमुपालम्भः ॥ फुद्रन्। भञ्जनम् ॥ बंद्रन्। वर्धनम् ॥ वांग्रन्। विभागः ॥ म्वंद्रन्। घनता ॥ वोवूरन्। तक्षणम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.37

ऑडर 'गूँध', **खण्डर** 'तोड़', **छ्वटर** 'छोटा कर', **ज़ीठर** 'लंबा कर', **ट्वटर** 'संकुचित कर', **पीठर** 'विलम्ब कर (अनावश्यक)', **फुटर** 'तोड़' **बॅडर** 'बड़ा कर', **बॉगर** 'बाँट', **म्वटर** 'गाढ़ा कर', **वोवर** 'बुन', भाव रूप में इन के साथ **अन** प्रत्यय होता है। **ऑडरन** 'मिश्रण', **खण्डरन** 'हिस्सा (टूटा हुआ), **छ्वटरन** 'संक्षेपन', **ज़ीठरन** 'विस्तार', **ट्वटर** 'संकोच', **पीठरन** 'अनावश्यक विलम्ब', **फुटरन** 'तुड़ाई', **बॅडरन** 'विस्तरण', **बॉगरन** 'बाँट', **म्वटरन** 'गाढ़ा करने का पदार्थ', **वोवरन** 'बुनाव, बुनाई'।

व्याख्या—

उपरोक्त स्त्रीलिंग भाव रूपों में **ट्वटरन, पीठरन, म्वटरन** और **वोवरन** का प्रयोग वर्तमान भाषा में सीमित है। नामधातु रूप **उन** प्रत्यय संयुक्त होने से प्राप्त होता है।

॥ नव उपधाया वश्च ॥ ३८ ॥

नव नूतनतायाम् । इत्यस्य अन् प्रत्ययो भवति उपधाया अकारस्य वकारश्च भवति ॥ न्वव्रन् । दोषोपचयनम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.38

नव 'नया हो, उन्नत हो', इस के साथ **अन** प्रत्यय संयुक्त होने पर उपधा के अकार का वकार हो जाता है। **न्ववरन** 'नयापन।

व्याख्या—

स्त्रीभाव रूप **न्ववरन** का अर्थ ग्रन्थकार ने 'दोषोपचयनम्' किया है। संभव है, कि वस्तु से दोष युक्त अंश पृथक करने के लिए **न्ववरन** शब्द प्रचलित रहा होगा। वर्तमान में इस का प्रयोग 'नया करने' अथवा 'उन्नत करने के लिए' संभव है, और उच्चारण **नोवरन** है। नामधातु रूप में **उन** प्रत्यय की संयुक्ति सिद्ध है।

॥ तंज़्रतंच़्रस्यंज़्रां च क्वचित् ॥ ३९ ॥

तंज़्र विरलीकरणे । तंच़्र तापने । स्यंज़्र ऋज्वीकरणे । इत्येषां भावे क्वचित् अन् प्रत्ययो भवति ॥ तंज़्रन् । तनुता ॥ तंच़्रन् । तप्तता ॥ स्यंज़्रन् । ऋजुता ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.39

तॅन्यर 'दुबला कर, पतला कर', **तॅच़र** 'गर्म कर', **स्यॅंज़र** 'सीधा कर', भाव रूप में इन के साथ कभी कभी **अन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **तॅन्यरन** 'दुबलापन', **तॅच़रन** 'तपन', **स्यॅंज़रन** 'सीधा करना'।

व्याख्या—

उक्त स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग व्यापक नहीं है। नाम धातु रूप में इन तीनों धातुओं के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा— **तॅन्यरुन** 'दुबला करना, पतला करना', **तॅच़रुन** 'गर्म करना', **स्यॅंज़रुन** 'सीधा करना'।

॥ लारः कम्पे ॥ ४० ॥

लार स्पर्शानुगमनस्निग्धीकरणेषु । इत्यस्य कम्पार्थे अन् प्रत्ययो भवति ॥ लारन् । कम्पः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.40

लार 'चिपक' काँपने के अर्थ में इस के साथ **अन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **लारन** 'कम्पकपी'।

व्याख्या—

'चिपक' के अतिरिक्त **लार** धातु का प्रयोग भागने के अर्थ में भी संभव है, परन्तु कम्पकपी से इस का अर्थ दूरस्थ प्रतीत होता है। **लारुन्य** एक प्रकार की कम्पकपी है, जो अचेतन अवस्था में हो सकती है।

॥ चिखिह्यां पुंस्येव ॥ ४१ ॥

चि पाने । खि खादने । हि धारणादिषु। इत्येषां भावे पुंसि अन् प्रत्ययो भवति ॥ च्यन् । पानम् ॥ ख्यन् । अशनम् ॥ ह्यन् । धारणम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.41

चे (चि) 'पी' **खे** (खि) 'खा' **हे** (हि) 'खरीद' इन के पुंलिंग भाव रूप में **अन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **च्यन** 'पेय पदार्थ' **ख्यन** 'खाना' **ह्यन** 'लेने का पदार्थ'।

व्याख्या—

ह्यन शब्द का प्रयोग पुंलिंग भाववाचक संज्ञा के रूप में बहुत कम किया जाता है। इन तीनों शब्दों के नामधातु रूप में **उन** के स्थान पर **औन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा— **चौन** 'पीना' **ख्यौन** 'खाना' **ह्यौन** 'खरीदना'।

॥ कडपांसुरश्रुकामञ् ॥ ४२ ॥

कड निष्कासने । पांसुर धिकरणे । श्रुक क्रन्दने । इत्येषाम् अञ् प्रत्ययो भवति । तेषां तु नित्यं बहुत्वमेव ॥ कडञ । धिकारः ॥ पांसुरञ । धिकारः ॥ श्रुकञ । रोदनम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.42

कड 'निकाल' **पॉसुर** 'धिक्कार' **श्रुक** 'बिलख' इन के साथ **अन्य** प्रत्यय संयुक्त होता है। व्युत्पन्न रूप नित्य बहुवचन में होता है। **कडन्य** 'निकासी' **पॉसरन्य** 'धिक्कारना' **श्रुकन्य** 'बिलखना'।

व्याख्या—

प्रस्तुत प्रत्यय व्यवहार में **अुन्य** है। भाववाचक संज्ञा रूप, जो नित्य बहुवचन में होता है, **कडुन्य** 'निकासी' और **श्रुकुन्य** व्यवहार में हैं। **पॉसरुन्य** का प्रयोग आधुनिक भाषा में सीमित है। नामधातु रूप के लिए **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है।

॥ चे़नश्चावागमः ॥ ४३ ॥

चेन चेतने । इत्यस्य अञ् प्रत्ययो भवति अव् आगमश्च ॥ चेनवञ् । संज्ञापनम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.43

चे़न 'चेत' **अन्य** प्रत्यय के साथ इस में **अव** का आगम भी होता है। **चे़नवन्य** 'चैतन्यता'

व्याख्या—

व्यवहार में यहाँ भी प्रत्यय **अुन्य** ही है। **अन्य** नहीं। **चेनुवुन्य** शब्द का प्रयोग प्रचलित है। नामधातु रूप के लिए **उन** प्रत्यय युक्त **चे़नुन** 'चेतना' का प्रयोग किया जाता है।

॥ अर्ज़्बावव्रपज़्श्रप्स्यद्गरवटशहल्ह्यकामत् ॥४४॥

अर्ज अर्जने । बाव अभिप्रायाविष्करणे । व्रास उत्पत्तौ । श्रप जीर्णने । स्यद सिद्ध्यामृज्वीभवने च । गरग्रहन । वट वेष्टने । शहल शीतीभवने । ह्यक शक्तौ । एषां भावे स्त्रियाम् अत् प्रत्ययो भवति ॥ व्राजां ऽन्त्यस्वरादि-

लोपश्चेष्यते ॥ वटः संग्रहे ॥ गरः पुंसि च ॥ अर्जथ्। अर्जनम् ॥ बावथ्। अभिप्रायाविष्करणम् ॥ व्वपथ् । उत्पत्तिः ॥ श्रपथ् । अन्नादेर्जीर्णनम् ॥ स्यदथ्। सिद्धिः ॥ गरथ्। घट्टना ॥ वटथ्। संग्रहः ॥ शहलथ्। शीतलता ॥ ह्यकथ्। शक्तिः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.44

अर्ज़ 'कमा', **बाव** 'व्यक्त कर', **व्वपज़** 'उत्पन्न हो', **श्रप** 'सोख', **स्यद** 'सीधा हो', **गर** 'गढ़', **वट** 'लपेट, बटोर' **शहल** 'शीतल हो', **ह्यक** 'सामर्थ्य कर' इन के स्त्रीलिंग भाव रूप में **अत** प्रत्यय संयुक्त होता है। **व्वपज़** के अन्तिम वर्ण का लोप इच्छित है। **अर्ज़थ** 'कमाई', **बावथ** 'अभिव्यक्ति', **व्वपथ** 'उत्पत्ति', **श्रपथ** 'रुचि', **स्यदथ** 'सिद्धि', **गरथ** 'गढ़ाई', **वटथ** 'बटोरना, संग्रहन', **शहलथ** 'शीतलता', **ह्यकथ** 'सामर्थ्य'।

व्याख्या—

प्रत्यय **अत** का **तकार थकार** में परिणत होता है। भाषा में इस प्रकार का महाप्राणीकरण सामान्यतया व्याप्त है। नाम धातु रूप के लिए **उन** प्रत्यय ही संयुक्त होता है।

॥ पोठो ऽक् शक्तौ ॥ ४५ ॥

पोठ स्थूलीभवने । इत्यस्य धनादिशक्त्यर्थे अक् प्रत्ययो भवति ॥ पोठख्। [धनादिसंचयेन] शक्तिः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.45

पोठ 'पुष्ट हो' धन आदि की शक्ति के अर्थ में। इस के साथ **अक** प्रत्यय संयुक्त होता है। **पोठख** 'संचित धन आदि द्वारा लब्ध शक्ति'।

व्याख्या—

पूर्व सूत्र की भांति यहाँ पर भी प्रत्यय का अंतिम व्यंजन महाप्राण हो जाता है। यह प्रत्यय मात्र **पोठ** शब्द के लिए रूढ़ हो गया है। **पोठक** स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा है। **पोठ** का नामधातु रूप **उन** प्रत्यय के आधार पर **पोठुन** सिद्ध है।

॥ वखनखारज़ागवाळनचक्कखामनाम ऽयु ॥४६॥

वखन व्याख्याने। खार आरोहणे। ज़ाग प्रतिजागरणे। वाळ अवतारणे। नच्च नर्तने। छल धौते। आमन वैवर्ण्ये। इत्येषां भावे स्त्रियाम् अयु प्रत्ययो भ-

वति ॥ खारवालोर्निन्दार्थे तयोस्तु अन् आगमो वेष्यते ॥ वखनय् । व्याख्यानम् ॥ खारनय् वा खारय् । आरोहणम् ॥ ज़ागय् । प्रतिजागरणम् ॥ वालनय् वा वालय् ॥ अवतारणम् ॥ नच़य् । नर्तनम् ॥ ह्खय् । शोषणम् ॥ आमनय् । वैवर्ण्यम् ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.46

वखन 'व्याख्या कर', **खार** 'चढ़ा', **ज़ाग** 'ताक', **वाल** 'उतार', **नच़** 'नाच', **ह्ख** 'सूख', **आमन** 'निष्प्रभ हो' स्त्रीलिंग भाव रूप में इन के साथ **अय** प्रत्यय संयुक्त होता है। निन्दा के अर्थ में **खार** और **वाल** के साथ, विकल्प से, **अन** का आगम होता है। **वखनय** 'व्याख्या', **खारनय** अथवा **खारय** 'सीढ़ी', **ज़ागय** 'ताक-झाँक', **वालनय** अथवा **वालय** 'उतराई', **नच़य** 'नर्तन' **ह्खय** 'शुष्कता' **आमनय** 'निष्प्रभता'।

व्याख्या–

उपरोक्त मूल धातुओं के साथ **य** प्रत्यय संयुक्त होने से स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा रूप व्युत्पन्न होता है। **आमन** का प्रयोग वर्तमान भाषा में उपलब्ध नहीं है। भाववाचक संज्ञा के रूप में **खारनय** अथवा **खारय** तथा **वालनय** अथवा **वालय** का प्रयोग भी नहीं है। नाम धातु रूप के लिए **उन** प्रत्यय ही संयुक्त होता है। यथा– **वखनुन** 'व्याख्या करना' **खारुन** 'चढ़ाना' **ज़ागुन** 'ताकना' आदि।

॥ मङ्गो दीर्घश्च ॥ ४७ ॥

मङ्ग याचने। इत्यस्य भावे अय् प्रत्ययो भवति पूर्ववर्णस्य च दीर्घः स्यात् ॥ माङ्गय् । याच्ञा ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.47

मंग 'माँग' इस के साथ **अय** प्रत्यय संयुक्त होने पर पूर्व वर्ण का स्वर दीर्घ हो जाता है। **मांगय** 'माँग (भाववा़चक संज्ञा रूप)'।

व्याख्या–

य प्रत्यय संयुक्त होने से व्युत्पन्न भाववाचक संज्ञा **मांगय** संभवतः भाषा का एक मात्र उदाहरण है। ईश्वर कौल ने ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करके विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया है। नामधातु रूप **मंगुन** 'माँगना' सिद्ध है।

॥ वागुरो रलोपश्च ॥ ४८ ॥

स्पष्टम् ॥ वागय् । विभागः ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.2.48**

सूत्र स्पष्ट है। **बागय** 'भाग, हिस्सा'।

व्याख्या—

बॉगर 'बांट' के साथ **य** प्रत्यय संयुक्त होने पर **र** के लोप का आदेश है, तथा उपधा का ऑकार आकार में परिणत होता है। इसीलिए व्युत्पन्न रूप **बागय** है। नामधातु रूप में **उन** प्रत्यय संयुक्त होकर **बॉगरुन** 'बाँटना' रूप सिद्ध है।

॥ ज़ेन उपधाया इदाद्यन्तलोपो ऽपि प्रत्ययधात्वोः ॥४९॥

ज़ेन जये। इत्यस्य अय् प्रत्ययो भवति उपधायाश्च इत्वं भवति प्रत्ययस्य आद्यक्षरस्य धातोश्चान्त्याक्षरस्यापि लोपो भवति ॥ ज़िय्। जयः ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.2.49**

ज़ेन 'जीत' के साथ **अय** प्रत्यय संयुक्त होने पर उपधा के स्वर का इत्व तथा प्रत्यय के आदि स्वर एवं धातु के अंतिम अक्षर का लोप होता है। **ज़िय** 'कमाई'।

व्याख्या—

स्त्रीलिंग भाववाचक प्रत्यय **य** संयुक्त होने से धातु रूप में परिवर्तन का यह एक और उदाहरण है। यहाँ पर धातु के अंतिम अक्षर **न** का लोप तथा एकार का ईकार में रूपांतरण निर्दिष्ट है। **ज़िय** स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा है। नामधातु रूप **ज़ेनुन** ही सिद्ध है।

॥ उदोपपदे साव उन्निद्रतायाम् ॥ ५० ॥

साव शायने। इत्यस्य उदशब्दे उपपदे सति उन्निद्रताया अर्थे अय प्रत्ययो भवति ॥ उदसावय्। उन्निद्रता ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.2.50**

साव 'सुला' इस के साथ उपपद **उद** संयुक्त होकर **अय** प्रत्यय की संयुक्ति 'जागृति' का अर्थ द्योतित करती है। **उदसावय** 'जागृति'।

व्याख्या—

वर्तमान भाषा प्रयोग में **उदसावय** रूप प्रचलित नहीं है। **साव** का नाम धातु रूप **सावुन** है। आगामी सूत्र में इसी धातु का सुख बोधक अर्थ प्रस्तुत है।

॥ केवलात्सुखार्थे ॥ ५१ ॥

साव शापने । इत्यस्मात्केवलात् सुखार्थे अय् प्रत्ययो भवति ॥ सावय् । सुखम् ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.2.51**

साव 'सुला' इस के साथ **अय** प्रत्यय मात्र सुखार्थ के लिए संयुक्त होता है। **सावय** 'सुख'।

व्याख्या—

वर्तमान भाषा प्रयोग में **सावय** का पृथक प्रयोग व्यापक नहीं है। समस्त पद के रूप में **स्वख-सावय** 'सुख-सुविधा' का व्यवहार है।

॥ होपपदे आमनो मिथ्याभियोगे ॥ ५२ ॥

आमन वैवर्ण्ये । इत्यस्य हशब्दे उपपदे सति मिथ्याभियोगार्थे अय् प्रत्ययो भवति ॥ हामनय् । मिथ्याभियोगः ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.2.52**

आमन 'निष्प्रभ हो' के साथ मिथ्या अभियोग के अर्थ मे **ह** उपपद तथा **अय** प्रत्यय संयुक्त होता है। **हामनय** 'मिथ्या अभियोग'।

व्याख्या—

9.2.50 सूत्र में उपसर्ग **उद** का प्रयोग है। प्रस्तुत सूत्र में **ह** का प्रयोग इसी रूप में है। इस के उपरांत **य** प्रत्यय संयुक्त होता है। व्युत्पन्न रूप **हामनय** का व्यवहार वर्तमान भाषा में नहीं है। मिथ्या अभियोग के लिए **हान** 'लाँछन' का प्रयोग प्रचलित है।

॥ लागो ऽनय् कृष्यर्थे ॥ ५३ ॥

स्पष्टम् ॥ लागनय् । कृषिः ॥

अनुवाद— **सूत्र 9.2.53**

सूत्र स्पष्ट है। **लागनय** 'खेती'।

व्याख्या–

लाग 'लगा, रोप' का स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा रूप **नय** प्रत्यय संयुक्त होने से प्राप्त होता है। व्युत्पन्न रूप **लागनय** का व्यवहार नागर भाषा में प्रचलित नहीं है। **लाग** का नामधातु रूप **लागुन** 'लगाना, रोपना' है।

॥ बॉग्रो रलोपश्च ॥ ५४ ॥

स्पष्टम् ॥ बागनय् । विभागः ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.2.54**

सूत्र स्पष्ट है। **बागनय** 'भाग'।

व्याख्या–

बॉगर धातु का उल्लेख 9.2.48 सूत्र में किया गया है। वहाँ पर भाववाचक संज्ञा रूप के लिए **य** प्रत्यय का उल्लेख है। प्रस्तुत सूत्र में इसी रूप के लिए **नय** प्रत्यय की संयुक्ति है। व्युत्पन्न रूप में यथापूर्व ऑकार का आकार तथा रकार का लोप निर्दिष्ट है।

॥ सादो निमित्ते ॥ ५५ ॥

स्पष्टम् ॥ सादनय् । मुख्यहेतुः ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.2.55**

सूत्र स्पष्ट है। **सादनय** 'मुख्य हेतु'।

व्याख्या–

साद 'साध' के साथ **नय** प्रत्यय संयुक्त होकर, स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा रूप **सादनय** निर्दिष्ट है। कार्य संपन्न करने के लिए उपलब्ध प्रधान साधन को **सादनय** कह सकते हैं। **साद** का नामधातु रूप **उन** प्रत्यय संयुक्त होने से **सादुन** 'साधना' बनता है।

॥ छकछिकचमकट्कफूँकशौंकाम्इमो लोपः ॥५६॥

छक कीर्णने । छिक सेचने प्रमेहने च । चमक दीप्तौ । ट्क धावने । फूँक आघ्राणे । शॅक शङ्कायाम् । इत्येषां धातूनां भावे इम् प्रत्ययस्य लोपो भवति ॥ छख् । कीर्णनम् ॥ छिख् । सिञ्चनम् ॥ चमख् । दीप्तिः ॥ ट्ख् । धावनम् ॥ फूँख् । आघ्राणम् ॥ शॅख् । शङ्का ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.56

छक 'बिखेर', **छिक** 'छिड़क', **चमक** 'चमक', **ट्रक** 'दौड़, **फूँक** 'सूँघ', **शेंक** 'शंका कर', इन धातुओं के भाव रूप में **इन्य** प्रत्यय का लोप होता है। **छख** 'छितराव, बिखेरना' **छिख** 'छींट', **चमक** 'चमक (भाववाचक संज्ञा रूप)' **ट्रख** 'दौड़ (भाववाचक संज्ञा रूप)' **फूँख** 'सूँघना' **शेंख** 'शंका'।

व्याख्या—

9.2.9 सूत्र की व्याख्या में स्पष्ट किया गया है, कि भाववाचक संज्ञा रूप में अंतिम अल्प प्राण व्यंजन महाप्राण व्यंजन में रूपांतरित होता है। यहाँ पर भी यही नियम प्रभावी है। नामधातु रूप में यह रूपांतरण नहीं होता। मूल धातु के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त हो जाता है। यथा— **छकुन** 'बिखेरना' **छिकुन** 'छिड़कना' **चमकुन** 'चमकना' **ट्रकुन** 'दौड़ना' **फूँकुन** 'सूँघना' तथा **शेंकुन** 'शंका करना'।

॥ ज़ागटाँगदगमङ्गलगलागवुङ्श्वङ्गां गात् ॥५७॥

गकारान्तेषु धातुषु । ज़ाग प्रतिजागरे । टाँग घोरवाशिते । दग घातने । मङ्ग याचने । लग सङ्गे पीडायां संगतीभवने च । लाग अनुकरणादिषु । वुङ्ग श्वरवे । श्वङ्ग शयने । इत्येषां धातूनां भावे इन्य् प्रत्ययस्य लोपो भवति ॥ ज़ाग् । अवेक्षा ॥ टाँग् । घोरवाशितम् ॥ दग् । घातः ॥ मङ्ग् । याच्ञा ॥ लग् । सङ्गः ॥ लाग् । नियमाल्लगनम् ॥ वुङ्ग् । श्वादिरवः ॥ श्वङ्ग् । निद्रा ॥ वुङ्गस्तु अकारान्तस्वरूपं मनुष्याणां चिन्तया रात्रिक्षेपे चेति ॥ [वुङ्ग] ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.57

ज़ाग 'ताक, देख (चोर की तरह)', **टाँग** 'हिनहिना', **दग** 'कूट', **मंग** 'माँग', **लग** 'चिपक', **लाग** 'चिपका', **वुंग** 'रो (कुत्ते की भाँति)', **श्वँग** 'सो', इन गकारान्त धातुओं के भाव रूप में **इन्य** प्रत्यय का लोप हो जाता है। **ज़ाग** 'जागरण' **टाँग** 'हिनहिनाहट' **दग** 'पीड़ा' **मंग** 'माँग (भाववाचक संज्ञा)' **लग** 'चिपकन' **लाग** 'छूत' **वुंग** 'कुत्ते का रोदन' **श्वंग** 'निद्रा'। मनुष्यों का चिन्ता स्वरूप नींद में ऊँगना भी **वुंगुन** है।

व्याख्या—

9.2.10 सूत्र में स्पष्ट किया गया है, कि भाषा में गकार का महाप्राण रूपांतरण संभव नहीं है, इसलिए भाववाचक संज्ञा रूप में भी अन्त के गकार में कोई परिवर्तन नहीं होता। धातु के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होने पर नामधातु रूप प्राप्त होता है।

॥ पच़रोच़श्रोचा़ं चा़त् ॥ ५८ ॥

अप्रसिद्धच़कारान्तेषु। पच़ ऋणादिविश्वासे। रोच़ रोचने। श्रोच़ शुद्धौ। इत्येषां धातूनां भावे स्त्रियाम् इन्य् प्रत्ययस्य लोपो भवति ॥ पछ़्। विश्वासः ॥ रुछ़्। रुचिः ॥ श्रोछ़्। शौचः।

अनुवाद— सूत्र 9.2.58

पच़ 'पतिया' **रोच़** 'रुच' **श्रोच़** 'शुद्ध हो' अप्रसिद्ध च़कारान्त इन धातुओं के भावरूपों में स्त्री प्रत्यय **इन्य** का लोप होता है। **पछ़** 'विश्वास' **रोछ़ (रुछ़)** 'रुचि' **श्रोछ़** 'शौच'।

व्याख्या—

यहाँ पर भी भाववाचक संज्ञा-रूप में धातु का अंतिम व्यंजन महाप्राण बन जाता है। **रुछ़** के स्थान पर, आजकल **रोछ़** शब्द का अधिक व्यवहार है। **श्रोछ़** पुंलिंग रूप है। नामधातु के लिए धातु के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा— **पचुन** 'पतियाना', **रोचुन** 'रुचना' **श्रोचुन** 'शुद्ध होना'।

॥ इछ़प्रिछो़श्छा़त् ॥ ५९ ॥

इछ़ इच्छायाम्। प्रिछ़ पृच्छायाम्। अनयोरप्रसिद्धछ़कारान्तेषु इन्य् प्रत्ययस्य लोपो भवति ॥ इछ़्। इच्छा ॥ प्रिछ़्। पृच्छनम् ॥ द्वितीयस्योदाहृतिर्यथा। प्रिछ़् प्यौव्। पृच्छनयोग्यः संपन्नः ॥ यथा च। प्रिछ़-गॉरू कॅरूनस्। पृच्छनादिका रचिता तस्य ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.59

यछ़ (इछ़) 'इच्छा कर' **प्रिछ़** 'पूछ' इन दोनों अप्रसिद्ध छ़कारान्त धातुओं में **इन्य** प्रत्यय का लोप होता है। **यछ़** 'इच्छा' **प्रिछ़** 'पूछ'। इस का अन्य उदाहरण यथा— **प्रछ़ि प्यव (प्रिछ़ प्यौव)** 'उत्तरदायित्व समझने लगा' तथा **प्रुछ़ गॉर कॅरनस** 'पूछ-ताछ की (उस की)'।

व्याख्या—

छ़कारान्त धातु की भाववाचक संज्ञा भी छ़कारान्त ही रहती है। धातु रूप और भावरूप के उच्चारण में कोई अन्तर नहीं है। दोनों धातुओं के नामधातु रूप **उन** प्रत्यय संयुक्त होने से प्राप्त होते हैं। यथा— **यछुन** 'इच्छा करना' **प्रुछुन** 'पूछना'।

॥ दूञ्छ्रो ऽन्त्यव्यञ्जनलोपः ॥ ६० ॥

दूञ्छ्र् पृथक्पृथक्करणे । इत्यस्य भावे इञ् प्रत्ययस्य लोपो भवति अन्त्यव्यञ्जनस्य च लोपो भवति ॥ दूञ्छ् । पृथक्पृथक्करणम् ॥

अनुवाद— सूत्र **9.2.60**

दूँछर 'पृथक कर' इस के भाव रूप में **इन्य** प्रत्यय तथा अंतिम व्यंजन का लोप होता है। दूँछ़ 'धुनने का कार्य'।

व्याख्या—

दूँछ़र के अर्थ में ही **दूँछ़राव** का प्रयोग भी संभव है। दोनों धातुओं की भाववाचक संज्ञा **दूँछ** ही है। नामधातु रूप में **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा— **दूँछ़रुन/दूँछरावुन** 'पृथक करना'।

॥ तछमन्दछरछा छात् ॥ ६१ ॥

प्रसिद्धछकारान्तेषु धातुषु । तछ तक्षणे । मन्दछ मन्दाक्षे । रछ रक्षायाम् । इत्येषां भावे इञ् प्रत्ययस्य लोपो भवति ॥ तछ् । कण्डूः ॥ मन्दछ् । लज्जा ॥ रँछ् । रक्षा ॥

अनुवाद— सूत्र **9.2.61**

तछ 'खुजा' **मन्दछ** 'शर्मा' **रछ** 'पाल' इन प्रसिद्ध छकारान्त धातुओं के भाव रूप में **इन्य** प्रत्यय का लोप होता है। **तॅछ** 'खुजलाहट' **मन्दछ** 'लज्जा' **रछ** 'रक्षा'।

व्याख्या—

इन छकारान्त धातुओं के भाववाचक संज्ञा रूप में **तछ़** को छोड़ कर कोई अन्तर नहीं है। **तछ** के उपधा का स्वर ॲकार हो जाता है। वर्तमान भाषा व्यवहार भाववाचक संज्ञा के रूप में **तॅछ** के स्थान पर **तॅछिन्य** 'खुजली' स्वीकार करता है। नामधातु रूप में यथापूर्व **उन** प्रत्यय की संयुक्ति सिद्ध है। यथा— **तछुन** 'खुजाना' **मन्दछुन** 'शर्माना' **रछुन** 'पालना'।

॥ तछ ऊमावागमो वा ॥ ६२ ॥

स्पष्टम् ॥ तँछू । कण्डूः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.62

सूत्र स्पष्ट है। तॅछ 'खुजलाहट'।

व्याख्या—

ईश्वर कौल के अनुसार **तछ** धातु में ऊकार के आगम का विकल्प है। यह ऊकार संकल्पनात्मक स्वर है, जिस का उल्लेख पूर्व में भी किया गया है। वर्तमान भाषा प्रयोग में इस संकल्पनात्मक स्वर का, उच्चारण की दृष्टि से कोई स्थान नहीं है।

॥ रछो नित्यम् ॥ ६३ ॥

अस्य नित्यम् ऊमात्रागमः स्यात् न तु विकल्पेन ॥ रॅछ् । रक्षा ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.63

इस में ऊ मात्रा का आगम नित्य है विकल्प में नहीं। रॅछ 'रक्षा'।

व्याख्या—

प्रस्तुत सूत्र में भी इसी संकल्पनात्मक ऊ मात्रा के आगम का कथन है। **रछ** का वर्णन 9.2.61 सूत्र में वर्णित है। इस का भूतकाल पुंलिंग रूप **रॊछ** 'पाला' है।

॥ ग्रज़ो ज़ात् ॥ ६४ ॥

जकारान्तेषु धातुषु। ग्रज गर्जने। इत्यस्य इञ प्रत्ययलोपो भवति ॥ ग्रज़्। गर्जनम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.64

ग्रज़ 'गरज' इस ज़कारान्त धातु के भाव रूप में **इन्य** प्रत्यय का लोप है। **ग्रज़** 'गरजन'।

व्याख्या—

ग्रज़ धातु की भाववाचक संज्ञा **ग्रज़** ही है। निम्नलिखित दो वाक्यों की सहायता से अन्तर स्पष्ट हो सकता है। यथा— **चु ग्रज़** 'तुम गरजो'। **ग्रज़ छि खोचनावान** 'गरजन डराती है'। इस का नामधातु रूप **ग्रज़ुन** 'गरजना' है।

॥ चूँटछ़टफ़ुटां टात् ॥ ६५ ॥

चूँट अपानशब्दे। छ़ट उत्क्षेपणे। फुट भङ्गे। इत्येषाम् इञ् प्रत्ययलोपो भवति ॥ चूँट्। पर्दनम् ॥ छ़ट्। उत्क्षेपणम् ॥ फुट्। वलिः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.65

चॉँट 'पाद' **छ़ट** 'फटक, ओसा' **फुट** 'टूट' इन में **इन्य** प्रत्यय का लोप है। **चॉँठ** 'पाद (भाववाचक रूप)' **छठ** 'फटकन, ओसाई' **फुठ** 'शिकन, सिकुडन, झुर्री'।

व्याख्या—

इन टकारान्त धातुओं के भाववाचक संज्ञा रूप में, टकार का ठकार हो जाता है। यहाँ पर भी पूर्वोक्त महाप्राणत्व का नियम प्रभावी है। नामधातु रूप में **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। **चॉँटुन** 'पादना' **छ़टुन** 'ओसाना' **फुटुन** 'टूटना'।

॥ ट्यठः प्रयोज़ने ॥ ६६ ॥

ट्यठ तिक्तीभवने । इत्यस्य प्रयोजनार्थे इञ् प्रत्ययलोपो भवति ॥ ट्यठ् । प्रयोजनम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.66

ट्यठ 'कड़वा हो' तीव्र इच्छा अभिधेय होने पर इस में भी **इन्य** प्रत्यय का लोप होता है। **ट्यठ** 'तीव्र इच्छा'।

व्याख्या—

ट्यठ धातु की भाववाचक संज्ञा समानरूपी है। भाववाचक संज्ञा **ट्यठ** के सभी आर्थी तत्व धातु **ट्यठ** में विद्यमान नहीं है। भाववाचक संज्ञा के रूप में इस का प्रयोग निम्नलिखित वाक्य से स्पष्ट होता है। यथा— **तमिस छि चायि हुँज़ ट्यठ** 'उस को चाय की तीव्र इच्छा है'। नामधातु रूप के लिए **ट्यठ** के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा— **ट्यठुन** 'कड़वा होना'।

॥ मॉँडवेंड्रोर्डात् ॥ ६७ ॥

मॉँड मिश्रीकरणे । वेंड्र निक्षेपे । इत्यनयोरिञ् प्रत्ययलोपो भवति ॥ मॉँड् । मिश्रणम् ॥ वेंड्रो ऽन्त्यव्यञ्जनलोप इष्यते ॥ वड् । उत्कोचः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.67

मॉँड 'गूँद' **वेंडर** 'गाढ़, दबा (भूमि में)' इन दोनों में **इन्य** प्रत्यय का लोप होता है। **मॉँड** 'गूँदना'। **वेंडर** के अंतिम व्यंजन का लोप इच्छित है। **वड** 'उत्कोच'।

व्याख्या–

माँड की भाववाचक संज्ञा समरूपी है। **वॅडर** के रकार का लोप करके ईश्वर कौल ने **वड**, इस धातु की भाववाचक संज्ञा निर्दिष्ट की है, अर्थात उपधा के ॲकार का अकार भी किया है। वर्तमान भाषा प्रयोग में **वड** शब्द का व्यवहार **वॅडर** भाववाचक संज्ञा के रूप में नहीं किया जाता। निश्चितता की स्थिति में **वड** का प्रयोग संभव है। यथा– **अथ छनु वडय** 'इस में कोई शक नहीं है।' नाम धातु रूप के लिए **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है यथा– **माँडुन** 'गूँदना' **वॅडरुन** 'गाढ़ना'।

॥ छ़ाँड ऊमात्रागमो वा ॥ ६८ ॥

छ़ाँड अन्वेषणे। इत्यस्य ऊमात्रा आगमो वा स्यात् ॥ छ़ाँड् वा छ़ाँडू ॥ अन्वेषणम् ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.68

छ़ाँड 'ढूँढ़, खोज' विकल्प से, इस में ऊ मात्रा का आदेश होता है। **छ़ाँड** अथवा **छ़ाॅ"ड** 'खोज (भाववाचक संज्ञा रूप)'।

व्याख्या–

प्रस्तुत **ऊ** मात्रा संकल्पनात्मक स्वर है। **छ़ाँड** और **छ़ाॅ"ड** दोनों शब्द भाववाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होते हैं। नामधातु **उन** प्रत्यय संयुक्त होने से प्राप्त होता है। यथा– **छ़ाँडुन** 'ढूँढना' खोजना'।

[॥ छ़ाडो नित्यम् ॥ ६८ क ॥

छ़ाड अन्वेषणे । इत्यस्य धातोः स्त्रियां भावे इन्‌ प्रत्ययलोप ऊमात्रागमश्च नित्यं भवति ॥ छ़ाडू। अन्वेषणम् ॥]

अनुवाद– सूत्र 9.2.68 (क)

छ़ाड 'खोज' इस धातु के स्त्री भाव रूप में **इन्य** प्रत्यय का लोप होता है। ऊ मात्रा का आगम नित्य है। **छ़ॉड** 'खोज (भाववाचक संज्ञा रूप)'।

व्याख्या–

यह पूर्व सूत्र का विस्तार है। ग्रन्थकार का अभिप्राय है, कि **छ़ाँड** धातु अनुनासिकता के रहित भी संभव है।

॥ न्यतलतोस्तात् ॥ ६९ ॥

न्यत पशुरोमकृन्तने । लतव लत्ताघाते । इत्यनयोः इञ् प्रत्ययलोपः स्यात् । लतवो वकारस्य च लोप इष्यते ॥ न्यथ् । पशुरोमकृन्तनम् ॥ लथ् । लत्ताघातः ॥

अनुवाद— सूत्र **9.2.69**

न्यत 'बाल काट (पशुओं के) **लतव** 'लात मार' इन दोनों में इन्य प्रत्यय का लोप है। लतव में वकार का लोप इच्छित है। **न्यथ** 'बाल काटना (पशुओं के)' **लथ** 'लात'।

व्याख्या—

भाववाचक संज्ञा के रूप में यहाँ पर भी तकार का थकार हो जाता है। अर्थात अल्पप्राण महाप्राण में बदलता है। **लतव** के वकार का लोप निर्दिष्ट है। आधुनिक भाषा व्यवहार **लतव** को धातु रूप में स्वीकार नहीं करता। आँचलिक दृष्टि से इस का प्रयोग संभव है। **न्यत** का नामधातु रूप **न्यतुन** है।

॥ पद्प्यद्प्वन्दां दात् ॥ ७० ॥

पद् कुत्सिते शब्दे । प्यद् गूढज्ञतायाम् । प्वन्द क्षुते । एषां भावे इञ् प्रत्ययस्य लोपः स्यात् ॥ पद् । पर्दनम् ॥ प्यद् । गूढज्ञता ॥ प्वन्द् । क्षुतम् ॥

अनुवाद— सूत्र **9.2.70**

पद 'पाद' **प्यद** 'रहस्य की जानकारी प्राप्त कर' **प्वंद** 'छींक' भाव रूप में यहाँ भी **इन्य** प्रत्यय का लोप है। **पद** 'पाद (भाववाचक संज्ञा रूप)' **प्यद** रहस्य की जानकारी का प्राप्तकर्ता' **प्वंद** 'छ़ींक (भाववाचक संज्ञा रूप)'।

व्याख्या—

इन धातुओं की स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञाएँ समरूपी हैं। विकल्प में **प्यद** के साथ **पयोद** का प्रयोग भी भाववाचक संज्ञा में संभव है, परन्तु यह पुंलिंग रूप है। नामधातु रूप में **उन** प्रत्यय संयुक्त होने पर **प्यदुन** और **प्वंदुन** संभव है। परन्तु **पदुन** का प्रयोग भाषा में नहीं है।

॥ आमनज़ानोर्नात् ॥ ७१ ॥

आमन वैवर्ण्ये। ज़ान अवबोधने। इत्यनयोर्भावे इञ् प्रत्ययस्य लोपो भवति ॥ आमन् । आमता ॥ ज़ान् । ज्ञानम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.71

आमन 'निष्प्रभ हो' **ज़ान** 'जान' इन के भाव रूप में **इन्य** प्रत्यय का लोप हैं। **आमन** 'निष्प्रभता' **ज़ान** 'जानकारी'।

व्याख्या—

यहाँ पर भी भाववाचक संज्ञाएँ समरूपी हैं। नामधातु रूप के लिए **उन** प्रत्यय की संयुक्ति निश्चित है। यथा— **आमनुन** 'निष्प्रभ होना' **ज़ानुन** 'जानना'।

॥ छानदोनोरूदागमश्च ॥ ७२ ॥

छान उत्पवने शातने च। दोन पिचुवद्विवरणे । अनयोः इञ् प्रत्ययस्य लोप ऊमात्रागमश्च भवति ॥ छांञ् । उत्पवनम् ॥ दूञ् । पृथक्पृथक्करणम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.72

छान 'छान' **दोन** 'पींज' दोनों में **इन्य** प्रत्यय का लोप और **ऊ** मात्रा का आगम होता है। **छॉन्य** 'छाननी' **दून्य** 'पींजना'।

व्याख्या—

यहाँ पर भी **ऊ** मात्रा संकल्पनात्मक स्वर है। भाववाचक संज्ञा रूप में इन दोनों धातुओं के उपधा का स्वर रूपांतरित तथा **न** तालवीकृत होता है। **छान** में आकार, ऑकार तथा **दोन** में ओकार, ऊकार बन जाते हैं। व्युत्पन्न रूप **छॉन्य** और **दून्य** सिद्ध है। नाम धातु रूप हैं— **छानुन** 'छानना' **दोनुन** 'पींजना'।

॥ च़ापः पात् ॥ ७३ ॥

च़ाप अदने। इत्यस्य इञो लोपो भवति ॥ च़ाफ् । अदनम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.73

च़ाप 'चबा, चाब', इस में भी **इन्य** का लोप है। **च़ाफ** 'चबाना'।

व्याख्या—

च़ाप की भाववाचक संज्ञा में भी **प** का **फ** हो जाता है। शेष कोई अन्तर नहीं है। हिन्दी में धातु 'चाब' की भाववाचक संज्ञा के बदले नामधातु रूप 'चाबना'

ही प्रयुक्त है। चाप का नामधातु रूप चापुन है।

॥ वुफः फात् ॥ ७४ ॥

वुफ विहायसा गतौ। इत्यस्येञो लोपो भवति ॥ वुफ्। उड्डीतिः ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.74

वुफ 'उड़' इस में इन्य लोप है। वुफ 'उड़ान'।

व्याख्या–

वुफ की स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा वुफ ही है। नामधातु रूप में उन प्रत्यय संयुक्त होता है यथा– वुफुन 'उड़ना'।

॥ लेखो ऽन्त्यस्य च फः ॥ ७५ ॥

लेख लेखने। इत्यस्य इञ् प्रत्ययलोपो भवति अन्त्यस्य खकारस्य च फकारः ॥ लेफ्। लिपिः ॥ शास्त्रदर्शिनां मते एवायं प्रयोगः ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.75

लेख 'लिख' इस में इन्य प्रत्यय का लोप होता है, और अन्त का खकार फकार बनता है। लेफ 'लिपि'। शास्त्रदर्शनों के मत से ही यह प्रयोग किया जाता है।

व्याख्या–

आधुनिक भाषा प्रयोग में लेफ का अर्थ लिपि नहीं है। लेख 'लेख' ही भाववाचक संज्ञा रूप हो सकता है। कश्मीरी का लेख आगत शब्द है, तथा पुंलिंग भाववाचक रूप है, स्त्रीलिंग नहीं। लेख का नामधातु रूप लेखुन 'लिखना' है।

॥ रम्बशूबोर्बात् ॥ ७६ ॥

रम्ब शोभायाम्। शूब शोभायाम्। बान्तेष्वनयोः इञ् प्रत्ययस्य लोपो भवति ॥ रम्ब्। शोभा ॥ शूब्। शोभा ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.76

रम्ब 'शोभित हो' शूब 'शोबित हो' इन दोनों बकारान्तों में इन्य प्रत्यय का लोप होता है। रम्ब 'शोभा' शूब 'शोभा'।

व्याख्या–

रम्ब और **शूब** के स्त्रीलिंग भाववाची रूप भी **रम्ब** और **शूब** ही है। नामधातु रूप में इन के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **रम्बुन** 'शोभित होना' **शूबुन** 'शोभित होना'।

॥ प्रयो यात् ॥ ७७ ॥

प्रय प्रीणने । इत्यस्येञो लोपो भवति ॥ प्रय् । प्रीतिः ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.77

प्रय 'प्रिय हो' इस में **इन्य** प्रत्यय का लोप होता है। **प्रय** 'प्रीति'।

व्याख्या–

प्रय की स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा समरूपी है। इस का नाम धातु रूप **प्रयुन** 'प्रिय होना है'।

॥ आवरडेख्रतूरथाँथरदोरमूरलारसखरां रात् ॥ ७८ ॥

रकारान्तेषु । आवर व्यापने आवरणे च । डेख्र् आधारीकरणे । तूर शीतलीभवने । थाँथर त्वरायाम् । दोर गतिचातुर्ये । मूर त्वचो निष्कर्षे भक्षणे च । लार स्पर्शानुगमनास्निग्धीकरणेषु । सखर प्रस्थाने । इत्येषां भावे इञ् प्रत्ययस्य लोपो भवति ॥ [आवरडेख्रतूराणामूमात्रागमश्च बोध्यः ॥] आवरू । आवृतिः ॥ डेख्रू । आधारः ॥ तूरू । शीतम् ॥ थाँथरू । [सभयं] त्वरा ॥ दोरू । धावनम् ॥ मूरू । निष्कर्षणम् ॥ लारू । पलायनम् ॥ सखरू । प्रस्थानम् ॥ [मूरो ऽनूच । मूरन् ॥]

अनुवाद– सूत्र 9.2.78

आवर 'व्यस्त कर', **डॅखुर** 'टेक', **तुर** 'ठंडा हो', **थॉन्थर** 'कंपित हो', **दोर** 'दौड़', **मूर** 'मरोड़, मसल', **लार** 'चिपक, भाग', **सखर** 'तैयार हो (प्रस्थान के लिए)', इन धातुओं के भाव रूप में **इन्य** प्रत्यय का लोप होता है। **आवर** '**डॅखुर** और **तुर** में ऊमात्रा का आगम भी है। **आवुर** 'व्यस्त', **डॅखुर** 'टेक (भाववाचक संज्ञा रूप)', **तुर** 'ठंड', **थॉन्थर** 'कंपन', **दोर** 'दौड़ (भाववाचक संज्ञा रूप)', **मूर** 'मसलना', **लार** 'भागना', **सखुर** 'तैयारी'। **मूर** के साथ **अन** भी लग सकता है यथा– **मूरन** 'मसलना'।

व्याख्या–

आवर, डॅखर और तुर के साथ ऊ मात्रा का आगम संकल्पनात्मक है। **आवुर** और **डखुर** के उपधा का स्वर उकार हो जाता है। **सखुर** में भी इसी तरह का परिवर्तन है। नामधातु रूप में इन सभी धातुओं के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **आवरुन** 'व्यस्त करना', **डॅखरुन** 'टेकना', **तुरुन** 'ठंड़ा होना' **थॉन्थरुन** 'काँपना', **दोरुन** 'दौड़ना', **मूरुन** 'मरोड़ना, मसलना', **लारुन** 'चिपकना, भागना', **सखरुन** 'तैयार होना'।

॥ थारबाँबरसारहॅन्दूरामूदागमश्च ॥ ७९ ॥

थार त्वरायाम्। बाँबर त्वरायाम् । सार स्वारैकत्रीभवनक्रमानयनेषु । हॅन्दर शीतीभवने। एषां भावे इञ् प्रत्ययस्य लोपो भवति ऊमात्रागमश्च स्यात्॥ थारू । [सभयं] त्वरा ॥ बाँबरू । त्वरा॥ सारू। स्वारः ॥ हॅन्दूरू । शीतम्॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.79

थार 'काँप, थरथरा', **बाँबर** 'सकपका', **सार** 'ढ़ो', **हन्दुर** 'ठंडा हो', भाव रूप में इन के साथ भी **इन्य** प्रत्यय का लोप तथा ऊमात्रा आगम है। **थरु** 'थरथराहट, कंपन', **बाँबुर** 'सकपकाहट', **सॉर** 'खेप', **हन्दुर** 'शीत'।

व्याख्या–

प्रस्तुत सूत्र में भी ऊमात्रा संकल्पनात्मक है। **हन्दुर** को छोड़ कर शेष तीन धातुओं में उपधा का स्वर बदलता है। **थार** में **आ** का ह्स्वीकरण तथा अन्त में **अु**। **बाँबर** में अकार का अुकार तथा **सार** में आकार का ऑकार। नामधातु में सभी के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **थारुन** 'थरथराना', **बाँबरुन** 'सकपकाना', **सारुन** 'ढ़ोना', **हन्दुरुन** 'ठंडा होना'। **थारुन** शब्द, प्रयोग में व्यापक नहीं है।

॥ गाँगलटालतम्बलम्वकलवूललशाहलां लात्॥८०॥

गाँगल ग्राँगल परैश्चाञ्चल्ये।टाल उपेक्षागमने । तम्बल चाञ्चल्ये । म्वकल मुक्तौ । वूलल अलंकरणे । शहल शीतीभवने । लकारान्तेषु एषां धातूनां भावे इञ् प्रत्ययस्य लोपो भवति ॥ गाँगल् वा ग्राँगल् । चञ्चलता ॥ टाल् । उपेक्षागमनम् ॥ तम्बल् । चाञ्चल्यम्॥ म्वकल्। मुक्तिः ॥ वूलल्। वेशः ॥ शहल् । शीतलता ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.80

गाँगल/ग्राँगल 'तिलमिला', **टाल** 'टाल', **तम्बल** 'ललच', **म्वकल** 'निपट,

मुक्त हो', **व्वलल** 'सजा', **शहल** 'ठंडा हो', इन लकारान्त धातुओं के भाव रूप में **इन्य** प्रत्यय का लोप होता है। **गाँगुल** अथवा **ग्राँगुल** 'तिलमिलाहट', **टाल** 'टाल' (भाववाचक संज्ञा रूप), **तम्बल** 'लालच', **म्वकल** 'मुक्ति', **व्वलल** 'वेश भूषा', **शहल** 'शीतलता'।

व्याख्या–

आधुनिक भाषा व्यवहार में इन सभी धातुओं की भाववाचक संज्ञाएँ यथावत प्रयुक्त नहीं होती। धातु रूप में **व्वलल** का प्रयोग भी व्याप्त नहीं है। **म्वकल** की भाववाचक संज्ञा **म्वकजार** 'मुक्ति' है, परन्तु यह पुंलिंग रूप है। नामधातु के लिए सभी के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **गाँगलुन** 'तिलमिलाना', **टालुन** 'टालना', **तम्बलुन** 'ललचना', **म्वकलुन** 'निपटना, मुक्त होना', **शहलुन** 'ठंडा होना'।

॥ दवो वात् ॥ ८१ ॥

दव शीघ्रगतौ। इत्यस्य भावे इञ् प्रत्ययस्य लोपो भवति ॥ दव्। शीघ्रगतिः ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.81

दव 'दौड़' इस के भाव रूप में **इन्य** प्रत्यय का लोप है। **दव** 'दौड़ (भाववाचक संज्ञा रूप)'।

व्याख्या–

दव की भाववाचक संज्ञा समरूपी है। नामधातु रूप में धातु के साथ **उन** प्रत्यय संयुक्त होता है। यथा– **दवुन** 'दौड़ना'।

॥ वेतनार्थे धातोर्वञ् ॥ ८२ ॥

क्रियाया वेतने गम्यमाने सति धातोर्भावे स्त्रियां वञ् प्रत्ययो भवति ॥ करवञ्। कर्मवेतनम् ॥ परवञ्। पाठवेतनम् ॥ लोनवञ्। लवनवेतनम् ॥ रोझवञ्। स्थितिवेतनम् ॥

अनुवाद सूत्र 9.2.82

किए गए कार्य निमित प्राप्त पारिश्रमिक अथवा कमाई व्यक्त करने हेतु, धातु के साथ **वन्य** (वञ्) प्रत्यय संयुक्त होने से स्त्रीलिंग भाव रूप सिद्ध है। **करुवुन्य** (कार्य) करने की कमाई'। **परुवुन्य** 'पढ़ाने की कमाई' **लोनुवुन्य** 'लुनने की कमाई', 'फसल काटने की कमाई' **रोज़ुवुन्य** 'रहने का किराया'।

व्याख्या–

वुन्य प्रत्यय संयुक्त होने से, धातु में निहित कार्य का पारिश्रमिक, स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा रूप में व्यक्त होता है। अन्यत्र **वुन्य** प्रत्यय 'वाला' अर्थ सम्प्रेषित करता है। यथा– **परुवुन्य कूर** 'पढ़ने वाली लड़की'।

आगामी सूत्रों में **वुन्य** प्रत्यय संयुक्त होने के अतिरिक्त उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।

॥ व्यञ्जनान्तादकारागमः ॥ ८३ ॥

व्यञ्जनान्ताद्धातोरकारागमो भवति उदाहरणानि पूर्वसूत्रे (८२) उक्तानि ॥

सूत्र 9.2.83

अनुवाद–

व्यंजनांत धातुओं में अकारागम होता है। उदाहरण पूर्व सूत्र 9.2.82 में दिए गए हैं।

व्याख्या–

9.2.82 सूत्र स्पष्ट करता है कि **वुन्य** प्रत्यय संयुक्त होने पर धातु के अंतिम व्यंजन के साथ अकार का आगम होता है। यथा– **पर+वुन्य→परुवुन्य।** सूत्र में वर्णित अकार का व्यवहार अुकार में होता है।

॥ स्वरान्ताद्वः ॥ ८४ ॥

स्वरान्ताद्धातोः वकारागमो भवति॥ दिववञ्। दानवेतनम्॥ निववञ्। हरणवेतनम्॥ ख्यववञ्। भुक्तिवेतनम्॥ च्यववञ्। पानवेतनम्॥

सूत्र 9.2.84

अनुवाद–

स्वरान्त धातुओं में वकारागम होता है। **दिववुन्य** 'देने की कमाई' **निववुन्य** 'लिवा लेने की कमाई' **ख्यववुन्य** 'खाने की कमाई' **च्यववुन्य** 'पीने की कमाई'।

व्याख्या–

पूर्व में भी अनुभव किया गया है, कि **आन** प्रत्यय संयुक्त होने पर स्वरान्त धातुओं के संदर्भ में वकार का आगम होता है। यथा– **दिवान, ख्यवान** आदि।

॥ छानद्वसिल्भ्यां वय् ॥ ८५ ॥

छानशब्द-द्वसिल्शब्दाभ्यां तयोर्वेतने गम्यमाने वय् प्रत्ययो भवति ॥ छानवय् । तक्षवेतनम् ॥ द्वसिल्वय् । छेपकवेतनम् ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.85

छान और **दॅसिल** का वेतन व्यक्त करने के लिए इन शब्दों के साथ **वय** प्रत्यय संयुक्त होता है। **छानुवय** 'बढ़ई का वेतन' **दॅसिलुवय** 'राज मिस्त्री का वेतन'

व्याख्या—

छान 'बढ़ई', **दॅसिल**, 'राज मिस्त्री' ये प्रातिपदिक हैं, धातु रूप नहीं। वर्तमान भाषा प्रयोग में इन शब्दों के साथ **वय** प्रत्यय की संयुक्ति का व्यवहार नहीं है। पूर्व भाषा प्रयोग में बढ़ई तथा राज मिस्त्री के कार्यो की कमाई व्यक्त करने के लिए **वय** प्रत्यय का प्रयोग संभव था। व्युत्पन्न रूप भाववाचक संज्ञा सिद्ध है।

॥ नावो वलोपश्च ॥ ८६ ॥

नाव् शब्दात्तद्वेतने अभिधेये वय् प्रत्ययो भवति वकारस्य च लोपो भवति ॥ नावय् । आतरः ॥

अनुवाद— सूत्र 9.2.86

नाव शब्द के लिए वेतन व्यक्त करने हेतु **वय** प्रत्यय की संयुक्ति में वकार का लोप होता है। **नावय** 'उतराई (नाव से पार कराने की)'।

व्याख्या—

नाव भी प्रातिपदिक है। नाव द्वारा पार कराने का कार्य सम्पन्न कराने की अवस्था में **वय** प्रत्यय की संयुक्ति की जाती है। व्युत्पन्न रूप में एक 'वकार' के लोप का आदेश है, इसलिए **नावय** भाववाचक संज्ञा के रूप में सिद्ध है।

॥ बार उपधाऽप्रसिद्धता ॥ ८७ ॥

बार्शब्दात्तद्वेतने वाच्ये वय् प्रत्ययो भवति उपधायाश्चाप्रसिद्धता । तदप्रसिद्धत्वे सिद्धे । व्यञ्जनान्तात् (सू० ८३) इत्यादिसूत्रेणोक्ताकारागमस्य च ऊमात्रादेशो ऽत्रगन्तव्यः ॥ बारूवय् । भारवेतनम् ॥

अनुवाद—

सूत्र 9.2.87

बार शब्द का वेतन व्यक्त करने के लिए **वय** प्रत्यय संयुक्त होता है। यहाँ पर उपधा के स्वर की अप्रसिद्धता सिद्ध है। 9.2.83 सूत्र के आधार पर अकारागम तथा ऊमात्रादेश होता है। **बॉरवय** 'भार ढ़ोने की कमाई'।

व्याख्या—

बार 'भार' भी धातु रूप नहीं है, परन्तु भार उठाने का कार्य करने के लिए प्राप्त वेतन व्यक्त करने हेतु **बार** के साथ **वय** प्रत्यय संयुक्त होता है। उपधा का आकार ऑकार में परिणत होकर व्युत्पन्न रूप **बॉरुवय** सिद्ध है। ऊमात्रा आदेश संकल्पनात्मक है।

॥ क्रेयाद्गरु शिल्प्यर्थे ॥ ८८ ॥

[स्त्रियामिति निवृत्तम्] शिल्पिनः अर्थे तस्य [वि]क्रेयाद्वस्तुनः गरु प्रत्ययो भवति ॥ लायगरु । लाजाविक्रेता ॥ गंडन्गरु । पुस्तकसंदर्भी ॥ कङ्गन्गरु । कङ्कतिकाविक्रेता ॥ मण्डन्गरु । और्णमर्दकः ॥ एवमन्येषां रूढपदव्यतिरिक्तानां पदानां बोध्यम् । यथा स्वनुर् इति स्वर्णकारस्य रूढिः तस्य स्वनगरु इति न भवति ॥

अनुवाद—

सूत्र 9.2.88

(स्त्री प्रत्यय समाप्त) शिल्पकार द्वारा वस्तु के क्रेय-विक्रेय अर्थ में **गॊर** प्रत्यय संयुक्त होता है। **लायिगॊर** 'खील वाला', **गंडनगॊर** 'बाँधने वाला (पुस्तकें) **कंगनिगॊर** 'कंघियाँ बनाने/बेचने वाला'। **मंडनगॊर** 'गर्म कपड़ों को मांड़ कर धोने वाला' ये सभी शब्द, रूढ़ पदों को छोड़ कर अन्य पदों के उदाहरण हैं। **स्वनुर** 'स्वर्णकार' यह रूढ़ पद है। **स्वनुगॊर** रूप संभव नहीं है।

व्याख्या—

9.2.23 से लेकर 87 सूत्र तक ईश्वर कौल ने स्त्री प्रत्ययों की व्याख्या की है। प्रस्तुत सूत्र का प्रत्यय **गॊर** पुंलिंग है। इस का स्त्रीलिंग रूप **गॅर** है। दिए गए उदाहरणों के साथ यदि **गॊर** के स्थान पर **गॅर** संयुक्त किया जाए, तो व्यवसायी का स्त्रीलिंग रूप व्युत्पन्न होगा। यथा— **लायिगॅर** 'खीलवाली' **कंगनिगॅर** 'कंघियाँ बनाने/बेचने वाली' इत्यादि। रूढ़ शब्द के विषय में ग्रन्थकार ने 6.1.2 सूत्र में वर्णन किया है, कि स्त्री प्रत्यय के रूप में **स्वनुर** के साथ **बाय** प्रत्यय संयुक्त होता है। प्रत्यय संयुक्त होने पर **स्वनुर** के उकार का लोप हो जाता है, और व्युत्पन्न रूप **स्वनरबाय** सिद्ध है। **गॊर** प्रत्यय संयुक्त होने से व्यावसायिक कार्य का निर्देश होता है। इसी कार्य को महत्व देते हुए ग्रन्थकार ने कृत्प्रक्रिया

॥ दात्र् आदेर्डः ॥ ८९ ॥

दात्रशब्दात् क्रेयाद्वस्तुनः शिल्प्यर्थे गंड्र प्रत्ययो भवति । आद्यक्षरस्य दकारस्य डकारो भवति । उत्तरपदे परे तु ञकारस्यानुस्वारः पूर्वं (सू० ३ । ८) सिद्ध एव ॥ डाँगंड्र । धान्यविक्रेता ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.89

दानि (**दात्र्**) शब्द के साथ, इस वस्तु का क्रेय-विक्रेय करने वाले के निर्देश में, **गोर** प्रत्यय संयुक्त होता है। आदि अक्षर दकार का डकार होता है। उत्तर पद के **न्यकार** का अनुस्वार 9.2.3., 8 सूत्र के अनुसार। **डाँगोर** 'धानविक्रेता'।

व्याख्या–

दानि 'धान' के साथ **गोर** संयुक्त होने पर धान विक्रेता अभिधेय है। उक्त व्यवसाय प्रायः लुप्त होने के कारण **डाँगोर** पद का वर्तमान भाषा में सीमित व्यवहार है।

॥ योग्यार्थे लगो हार् ॥ ९० ॥

लग सङ्गे पीडायां च। इत्यस्मात् हार् प्रत्ययो भवति योग्यार्थे॥ लगहार्। योग्यः ॥

अनुवाद– सूत्र 9.2.90

लग 'लग' इस के साथ **हार** प्रत्यय की संयुक्ति योग्यता का अर्थ सम्प्रेषित करता है। **लगुहार** 'योग्य'।

व्याख्या–

उक्त प्रत्यय से व्यक्ति की योग्यता का कर्म प्रकट होता है। यदि किसी निर्दिष्ट कार्य के लिए व्यक्ति विशेष की योग्यता अथवा अयोग्यता स्पष्ट करनी हो तो **लगुहार** शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। यथा– **सु छुन अथ लगुहार** 'वह इस के योग्य नहीं है।' नकरात्मक अर्थ में **नालगुहार** 'अयोग्य' शब्द का प्रयोग भी व्यापक है।

॥ धातोस्तद्योग्यार्थे ऽनागमश्च ॥ ९१ ॥

तस्य धातोः क्रियाया योग्यत्वे अभिधेये सति हार् प्रत्ययो भवति अनागमश्च स्यात् ॥ करनुहार् । करणयोग्यः ॥ गण्डनुहार् । ग्रन्थनयोग्यः ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.2.91**

धातु में निहित क्रिया की योग्यता अभिधेय होने पर **हार** प्रत्यय संयुक्त होता है। यहाँ **अन** का आगम भी है। **करनहार** 'करने योग्य' **गंडनहार** 'बाँधने योग्य'।

व्याख्या–

हार प्रत्यय की संयुक्ति कुछ एक धातुओं के साथ भी संभव है। **बखुश** 'क्षमा कर' इस के साथ भी **हार** प्रत्यय संयुक्त हो सकता है, तथा **अन** अथवा **न** का आगम भी। **बखशनहार** 'क्षमाशील'। उपधा के अुकार का लोप स्पष्ट है। स्पष्टीकरण के दोनों उदाहरण वर्तमान भाषा प्रयोग में व्याप्त नहीं है। अगले सूत्र में अतिरिक्त उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।

॥ स्वरादागमः स्वरवृद्धः ॥ ९२ ॥

स्वरान्ताद्धातोः अन् आगमः स्वरवृद्धः स्वरेण अकारेण वृद्धः भवति अर्थात् अन आगमो भवति ॥ ख्यनहार् । खादनयोग्यः ॥ च्यनहार् । पान-योग्यः ॥ ह्यनहार् । धारणयोग्यः ॥ तत्र न्यादिभ्यस्त्रिभ्य आगमादिवर्णलोप इष्यते ॥ निनहार् । हरणयोग्यः ॥ यिनहार् । आगमनयोग्यः ॥ दिनहार् । दानयोग्यः ॥

अनुवाद– **सूत्र 9.2.92**

स्वरान्त धातुओं में **अन** आगम और स्वर वृद्धि है। अकार की वृद्धि **अन** में **न** हलन्त नहीं। **ख्यनुहार** 'खाने योग्य', **च्यनुहार** 'पीने योग्य', **हयनुहार** 'लेने योग्य' इकारान्त तीन धातुओं में आगम के आदि वर्ण का लोप होता है। **निनुहार** 'ले जाने योग्य', **यिनुहार** 'आने योग्य', **दिनुहार** 'देने योग्य'।

व्याख्या–

सभी उदाहरणों में आगम के नकार में अुकार है। आगम के आदि अकार का लोप है। वर्तमान भाषा प्रयोग में इन शब्दों का प्रयोग नहीं है। प्रस्तुत धातुओं के नामधातु रूप पूर्व सूत्रों में उल्लिखित हैं।

इति

शारदा क्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीरशब्दामृतम् की
कृदन्त प्रक्रिया का भाव पाद द्वितीय 9.2
कृदन्त प्रक्रिया समाप्त 9.1
तथा कश्मीरशब्दामृतं नामक व्याकरण भी समाप्त।

समापन

निष्प्रत्यूहनिरर्गलत्वविधये योगं जुष्द्भयाभिव
संप्रीत्या विषयेऽत्र पण्डितपटुः प्रोद्भावितोऽहं पुरा।
तत्पादाभ्युपपत्तितः खलु सरस्वत्यां गणेशेन च
ग्रन्थं नूतनमेव पूर्तिमनयं सच्छाब्धिकोल्लासनम् ।१।
वेदव्याकरणे किल त्रिनयनाभ्यस्ते च सारस्वत
ऐन्द्रे सादर ऐन्दवे सुमनसां यो बाहुलेयेऽपि च।
प्रीत्या ईश्वरकौल ईशनिरतः कश्मीरशब्दामृतं
सद्वर्षे सुतिथौ शुभोडुनि शुभे घस्त्रे च मासे व्यधात् ।२।
दोषाच्छादनकृन्भर्त्यः किल देवप्रियो भवेत्।
स देवानां प्रियो यस्तु दोषाच्छादनकृत्भवेत् ।३।

भाव–

पहले श्लोक में ईश्वर कौल प्रवर पंडितों की स्नेहमयी प्रेरणा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, तथा अपनी माता श्री सरस्वती और पिता श्री गणेश कौल के चरणों में पूर्णरूपेण समर्पित हैं। इन्हीं के आशीर्वाद से यह नूतन ग्रन्थ सम्पूर्णता को प्राप्त हुआ है।

दूसरे श्लोक में वेदव्याकरण तथा शिव आदि देवों की अनुकम्पा व्यक्त करते हुए शुभ वर्ष शुभ तिथि शुभ नक्षत्र और शुभ मास में कश्मीरशब्दामृतम् की सम्पूर्णता प्रकट करते हैं। ग्रन्थकार दोषों के प्रति भी संवेदनशील हैं। तीसरे श्लोक में इसी तथ्य की ओर संकेत किया है।

इति श्रीकश्मीरमण्डलान्तर्मध्यनगरवर्तिसिद्धलक्ष्म्युपचितप्राशस्त्यवितस्ता–
कमलाप्लावितव्रीडामठप्रदेश निवासिनेश्वरकौलेनैषा शारदाक्षेत्रभाषाव्याकृतिः
कश्मीरशब्दामृताख्या यथामतिः विस्तरतां नीता। शुभाय भवतु वाचक
श्रोतृपाठकानामोम्। भद्रं पश्येम प्रचरेम भद्रम्। समाप्तं चेदं सांग शब्दशास्त्रम्।

भाव–

कश्मीर प्रदेश के मध्य, सुशोभित वितस्ता नदी के किनारे सुसम्पन्न नगर के निवासी ईश्वर कौल ने इस शारदा क्षेत्र के भाषा व्याकरण कश्मीरशब्दामृतम् का वर्णन यथा मति प्रस्तुत किया है। यह व्याकरण श्रोताओं और पाठकों के लिए मंगलमय हो।

भद्र देखें, भद्र आचरण करें।

शब्दशास्त्र सम्पूर्ण।

अनुक्रमाणिका

प्रमुख विशेष शब्द / शब्द समूह

संदर्भ ग्रंथ

अनुभूति स्वरूपाचार्य–1967,	'सारस्वत व्याकरण मनोरमा विवृति सहित'–चौखम्बा सस्कृत सीरीज़ आफिस, वाराणसी।
अभयंकर भंडारकर–1976,	'परिभाषा संग्रह, आरियेंटल रिसर्च इंस्टिच्यूट, पूना।
जॉन लियोंस–1969,	'इंट्रोडक्शन टु थ्योरिटिकल लिंग्विस्टिक्स' कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, कैंब्रिज।
डेनियल जोन्ज़–1956,	'एन आऊट लाइन आफ इंगलिश फोनेटिक्स' आठवाँ एडिशन कैंब्रिज, हेफर।
बाबूराम सक्सेना–1965,	'सामान्य भाषा विज्ञान' प्रकाशक – मोहन लाल भट्ट
बाल कृष्ण पंचोली (सम्पादक)–1969,	'वैयाकरण भूषणसार (कौंडभट्ट)', चौखम्बा संस्कृत सीरीज़–आफिस, विद्याविलास प्रेस, वाराणसी।
ब्रजबिहारी काचरू–1969,	'ए रेफरेन्स ग्रामर आफ कश्मीरी', डिपार्टमेंट आफ लिंग्विसटिक्स यूनिवर्सिटी आफ इलिनाय एट अरबाना यू.एस.ए.।
भट्टोजिदीक्षित–1966,	'सिद्धान्त कौमुदी लक्ष्मी व्याख्या सहित' मोतीलाल बनारसीदास, पटना–दिल्ली–बनारस।
भोलाशंकर व्यास–1957,	'संस्कृत का भाषा शास्त्री अध्ययन' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन काशी विश्वविद्यालय

मंडन मिश्र (सम्पादित)–1965(सं. 2022), 'विश्व शताब्दी ग्रंथ'– अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन, कश्मीर प्रदेश समिति।

मुरे बी. एमिनो–1964, 'इंडिया एज़ ए लिंग्विस्टिक एरिया' "लैंग्वेजिज़ कलचर एन्ड़ सोसाईटी" में, न्यू यार्क, हार्पर एन्ड रो

मुहम्मद उल्दीन फ़ौक़–1934, 'तवारीख़ अक़वाम कश्मीर' ज़फ़र ब्रदर्स, लाहौर।

मोहन लाल सर–2010, 'रिफ़लेक्टयू वर्बल सफ़िक्सिज़ इन कश्मीरी' "अई.जे.एल." में, डिपार्टमैंट ऑफ लिंग्विस्टिक्स, यूनिवर्सिटी आफ़ कश्मीर, श्रीनगर।

शर्व वर्मण–1316 (बंगाब्ध) 'कातंत्र', सम्पादक व प्रकाशक, श्री गुरु नाथ विद्यानिधि भट्टाचार्य, कलकत्ता।

सत्यकाम वर्मा–1971, 'संस्कृत व्याकरण का उद्भव और विकास' मोतीलाल बनारसी दास (पटना–बनारस–दिल्ली)

सत्यदेव मिश्र (सम्पादित)–1962, 'अमरकोश' (व्याख्याकार–आचार्य कृष्ण मिश्र), मार्गवभूषण प्रेस, वाराणसी।

सुदेश गिरि– 'आचार्य कौण्डभट्ट रचित वैयाकरण भूषण सार का धात्वर्थ प्रकरण' (हिन्दी व्याख्या सहित)

हरिदास संस्कृत ग्रंथमाला–63(1950), 'अष्टाध्यायी सूत्र पाठ' चौखम्बा संसकृत सीरीज आफिस, वाराणसी।

□□□





अयन प्रकाशन

साहित्य संस्कार के 34 वर्ष